MSS Hindi Asmedh purb Mahabharat
by Kavi Tehkan Darbari Kavi of
Guru Gobind Singh Ji. 5000.00

DETAIL

1883 Vik. 1826 A.D. written by Gosain
Indergir on the bank of Jamuna. Kavi
Tehkan was the son of Shri Rangeen Das
of Village Jalalpur, Distt: Gujrat
(Now Pakistan). He was scholar of
Hindi and Sanskrit. He joined Military
to make both ends meet. This was completed
by him during the service of Military.
At that time Guru Gobind Singh was
translating Mahabharat from Sanskrit to
Hindi. Tehkan came to Anandpur Sahib
with translation with Guru Gobind Singh
Guru Gobind Singh admired his translation
and included him in Darbari Kavis.

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

SKM 117/90

(H)
Close size : 15 x 26 } x 8
open size : 16 x 56 } x 8

Pages. 481

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीसारस्वत्यै नमः अथ अश्वमेध भा
षा लिख्यते ॥ चौपई ॥ प्रथमैं श्रीमगौरिजानंदन ॥ शंकरतनय गजानन विघ्न
निकंदन ॥ लंबोदर दुहर सुषदायक ॥ एकरदन गजवदन विनायक ॥ बु
द्धिप्रदन अघओघ विनाशन ॥ मंगलरूप अमंगलनाशन ॥ अरुसमि
सरनि सकलजगवंदन ॥ सेवत सुरनर सिंधुर चंदन ॥ श्रीभाषाके पर्वग्र
ए दृष्टा ॥ जिनमैं अश्वमेध अद्भुतरस ॥ कीनै कृपादास टहकन पद्धि ॥ संप्रत्ता
वरनौ भाषा वपि ॥१॥ दोहरा ॥ अश्वमेध भाषा कहौ मो मनवड्यौ सनेह ॥ श्री
गनपति प्रवगनरहत विमल बुद्धि वरु देहु ॥२॥ चौपई ॥ नमो नमो कालिका भवा
नी ॥ तुम प्रसाद वर नो सुभ वानी ॥ श्री शारदा प्रगट विख्याता ॥ वंदत तीन
लोक जगमाता ॥ शिव विरंच मधुरि गुन गावत ॥ इंद्रादिक सनकादिक ध्या
वत ॥ मो मति मंद तोहि सरनागति ॥ करुणा कीजै विद्यापति ॥ रसना अ
ग्र करउ निजवासा ॥ जो मुहि कै नक रै उपहासा ॥ टहकन कृत कथा संपूरन
कीजै ॥ टहकन दास सुफल वरु दीजै ॥३॥ दोहा ॥ अश्वमेध कृत ग्रंथ की भाषा
र चौव नाइ ॥ वर्नन कीजै काल कांट टहकुन दास सहाइ ॥४॥ दोहा ॥ वंदौ चरन क
मल नंद नंदन ॥ आरति हर्षन दुष्ट निकंदन ॥ पगनष ऊपर कटि किंकिन रा
जै ॥ धुनि धुनि से विघन असुर तिलाजै ॥ कटतट सुरंग काछिनी काछै ॥ अरव

SKM 117/90

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मुरली की अधर धरि धुनि आछै ॥ उर विशाल वनमाल रही फवि ॥ जै जै ति आलिक
जग मग जगति महा छवि ॥ कुंडल लोल कपोलनि राजत ॥ रुचिर भाल शुभ तिलक
विराजत ॥ मोर किरीट सीस पर सोहै ॥ पीतांबर त्रिभुवन को मोहै ॥५॥ दो॰ ॥
नटवर तनु आभरन वसन छवि अंग अंग विशाल ॥ रहत कनहीं ऐव सो सदा
कृपा सिंधु नंदलाल ॥६॥ दो॰ ॥ महाराज राजन के राजा ॥ नाम कहा अखिल लक्षवल
सिरताजा ॥ नंदनंद करुणानिधि स्वामी ॥ सकल निरंतर अंतरजामी ॥ जो जे
सो मन सा करि ध्यावेन ॥ ततछिन मन वांछित फल पावत ॥ हितु चितु तुला धार
धर्म अमला पा ॥ अमृत मेघ कृत वरनों भाषा ॥ मो मति मंद जो गुन गुन सा
गर ॥ संप्रदरन की जै नटनागर ॥७॥ दो॰ ॥ दीन दयाल कृपाल गुरु श्री नंदला
ल सुख धाम ॥ करुणा की जै जगत गुरु सबै ग्रंथ अभिराम ॥८॥ दो॰ ॥ अमृत
मेघ कृत वरनु विसारा ॥ अर्थ संस्कृत अगम अपारा ॥ अपनी मति राई स
मजानों ॥ ग्रंथ समुद्र रूप पहिचानों ॥ परन कौ ज्यों वेग कृपानिधि ॥ सु फ
ल मनोरथ करो सकल सिधि ॥ वरनौ कथा सुधारस वानी ॥ कहत कथा अ
त उत्तम कहानी ॥ पच्य मसर भाषा सुन लीनी ॥ दोहरा सरस चौपई कीनी
कहो कवित सार रुचा की गति ॥ टहक न वरनन की औ अलप गति ॥९॥ दो॰ ॥ स
वत से रद पांच प्रशानत अधिक वर ब षट वीस ॥ वदि असाड विथि पांचमी बुध वा
र सुभ दीस ॥१०॥ दो॰ ॥ शुभ मन तत्र स घर राम हरत कहि हौं कथा सुरस र

नर८ भ१

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सप्त रत ॥ गजपुर नगर बसै शुभ साजा ॥ चतुर वरन जन परम सम
साजा ॥ चहुं दिशि रहत बाग फुलवारी ॥ फल दल फूल सरोवर भारी ॥ नि
कट नदी गंगा जल पावन ॥ अघ नाशन सुकृत उपजावन ॥ जहं तहं सप्त पुन
वेद विलाशा ॥ बहु कर्मन पुन्य प्रकाशा ॥ पंडित प्रजा बसे ता मांही ॥ सप्त
लल लल सो भरे रहाहीं ॥ ११ ॥ दो० ॥ रतन खचित मंदर कनक कलस धुजा फहरात
छहू जा चौ बंडी शुभ गृह हाट पाट बहु भांति ॥ १२ ॥ चौ० ॥ कुरु कुल मंडल धर्म सदा
श्रत ॥ राजु करत जन्मेजा छत्रपति ॥ श्रुत शास्त्र सुमिरत वट कर्मी ॥ गो ब्राह्म
हित सहत सु धर्मी ॥ सत्यावान पराक्रम भारी ॥ महा उदार विवेक विचारी ॥ भज
हित सहत सु धर्मी ॥ दंड तेज जिह सम पृथ्वीपति ॥ विष्णु भगत सत संगत स
वल वंड प्रचंड तेज अति ॥ ज्ञानवान जप तप व्रत कर्ता ॥ सत व्रत व
दान्ति हू ॥ विष्णु नदान दे तनिज हरि बति ॥ १३ ॥ दो० ॥ परदु ष खंडन धर्म धुज अप्र दंडन परकार ॥ प्र
न भाव तन्मति सहै ते ... रणि सहै रौंकु रराज ॥ १४ ॥ चौ० ॥ ऐक दिवस सरराजा हरष तमन
नप रोग हु जनन रणि सहैरौंकु ... आसन पर आस
प्राप्त भए तबे मुनि जैमन ॥ उठि तत जोर दंडवत कीनो ॥ सिंघासन बैठाइ आस
नदीनो ॥ आजु दिवस बड भाग हमारे ॥ सफल मनोरथ दरस तुमारे ॥ हम सराज
नमीकृत तरस्वामभयो ॥ करुणाकर तुम दर्सन दयो ॥ तुम सजग मैं देव चरैपै परका जा
विन तीक रोस सुना रिष राजा ॥ कोई सुतनन की कथा सुनावो ॥ हरि पद संदेह मिटा
वो ॥ १५ ॥ जैमेजे ज ... दो० ॥ धर्म तात तस्य रुमी सपुनाबि जैन कुल सहदेव
कामप्रभए प्रसे नता कहु कै सोहि जदेव ॥ १६ ॥ चौ० ॥ बांधिव सहित तपुधिष्ठरा
ना
रम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २ ॥

हे कृत कैसे कीयो समाजा ॥ नंदलाल लजि हस दास सहाइक ॥ सो कृट समै हो तव
बदापक ॥ हैर अनेकु प तंत्रारा बी ॥ क हृत पुकार त्ति गम जग साबी ॥ तु
मते और न उत्तम जानै ॥ व्यास रूप तुम कै पहिचानै ॥ सकल वृतांत कु
हो प्रभ मेरे ॥ हो व ऊप्र सनदास हम तेरे ॥ १७ ॥ दोहा ॥ कैसे प्री हरि कृपा ते जीते
हे इसचार ॥ अश्वमेध कैसे कीयो कहौ कथा विस्तार ॥ १८ ॥ जैमिनोवाच ॥
चौ ॥ सुनो नरिंद महा बडभागी ॥ कृष्ण भजत हरि रचित अनुरागी ॥ कहौ कथा
श्रवन नि सुन लीजै ॥ सावधान अंब्रत रस पीजै ॥ भीषम मा द्रोण आदिक रन
सव ॥ प्रान तजित रन गए सुरग सव ॥ धर्म तात आकुलित मोह वस ॥ दुष
सुदृ मोप रे या रहे पाफसि ॥ महत शोक चंता वसमन पा ॥ तव त्ति व्यास मुनि दर्श
नु भयो ॥ धवक जोर दंडवत कीनो ॥ सिंघासन परिश्रा सनदीनो ॥ १९ ॥ दो ॥
मुन ऊ व्यास मुनिवर मगुरु मै कीनो कुलघात ॥ जाहित विधय पेहह त्या टरै से
इवता ऊ वात ॥ २० ॥ चौ ॥ तुम प्रवीन सम जग विख्याता ॥ त्रिकाल ज्ञाना नोस
मवाता ॥ मै अपराध कीयो अति भारी ॥ करुणा कुर म ऊलेउ उवारी ॥ मो पर ईपर मअ
नुग्रहु कीजै ॥ पावन करु ऊ अमै पद दीजै ॥ जुह प्रकार यह शोक जाइम
न ॥ सोई वतावऊ मोहित पोपाधनि ॥ भीषम द्रोण आभान नंदन विनु ॥ धगुपह
रानु न वांछहु इक छिनु ॥ राजभोग विवास मसार जानो ॥ मन वच क्रम सभसम
हेतवि बामो ॥ २१ ॥ दो ॥ भीषम भानु ज द्रोण आदि बिनु धनगु वह राजसमाज ॥ राजश्री

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तविपरीत भूहि स्वागति है मुनिराज ॥ २२ ॥ चौ ॥ निविस्तरत तात मम आरु नंदन ॥ जा
की दुति परम पुरंदन ॥ पत्न होम नित स्मृति विख्याता ॥ सो आव तुम्ह वलागत उ
द्याना ॥ महा पराक्रम मय्य र अतुल बल ॥ शत्रु संघार करत प्रतिदल मल ॥ जा
कौ जस त्रैलोक्य वषानत ॥ कंचन दान देत सब मानित ॥ कृष्ण भगति रत तप्रति गुन
सागर ॥ तेजवान सुंदर दुति नागर ॥ इंद्रजित तव अवधपुर पूरा ॥ जाकी सम
सरस्य वरन सूरा ॥ २३ ॥ दो ॥ तिहि मंडप मंगल भयु भग आव लागत दुष मूल ॥ सुद
नकरत जुवती तहा सहो जात नही सूल ॥ २४ ॥ चौ ॥ पदन सपीन सुत प्रति परम उदा
रा ॥ प्रान देत तला गति नही वारा ॥ आगनित दान दिजन निनदीने ॥ जाचक सम भूप
तिसमकीने ॥ देश देश मांगति मन धावति ॥ तत्छिन मन वांछित फल पावति ॥ आ
सूपात अमनंद आवति अति ॥ सो महर्षित नहेत मुदित अति ॥ ते ऊ जाचक अव जात नि
बासा ॥ सुदन करत ऊमेभ रस्वासा ॥ जो आहदान पुन्य कर रचत ॥ सो ऊ अव
देषत दान विवजेत ॥ २५ ॥ दो ॥ धजगव हमे रु राजसु वकरन रहत तर समाज ॥ भी
बमद्रोण विना सकल तलागा दाघि रोज ॥ २६ ॥ चौ ॥ लोचन हीन देषति कि हुका जा ॥ संग
जीष मभानुज विन राजा ॥ आपित वुद्धि भीष मबल वाना ॥ महा सूर त्रैलोक निधाना
रेद्ही जीत जगत विख्याता ॥ निशिदिन कृष्ण चरन मन राता ॥ उग्र तेज गंगोस्नान संप
रन ॥ वचन सत्य प्रदलगन चरन ॥ हर्षित शुद्ध धरम की मूरति ॥ प्रिय वषा देत
भगरि सपूरत ॥ जिहि जग जीत सके नहि कोऊ ॥ हसोपित आभी षमसम सो आ
२७ ॥ दो ॥ जाके दरसन परस ते मिटहि कोटि अपराध ॥ ताको वध कर राज सब

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अपजस सब ब्याधि उपाधि ॥२८॥ दो॥ द्विजद्रोह गुरु को हम महा अन्यो ॥ गुरुन गुरु गं
ध्यन मैं मन्यो ॥ शास्त्र सस्त्र विद्यानि नदीनी ॥ गुन सुणा रते सम बिध बीनी ॥ निह
सगरो कैरव कुल मानत ॥ अति सरातै लोक बिषानत ॥ महा निपुन संग्राम
म बिधाना ॥ नाना भांति प्रहार तवाना ॥ वै रूप रनक हं नभीगा ॥ बितपति
हरि चरनन चित लागा ॥ पालि सकै प गाप जन योगा ॥ ति हं हन राजु महाद
ख भोगा ॥२९॥ दो॥ भी तिव ता गुरु सहद पस मैं है नस्म काज ॥ गजकु
तजि वन तपु करें भीमसैनि जराज ॥३०॥ दो॥ सुनत व्यास मुनि परम बिचारी
मै कुल घात की योग्य अघ भारी ॥ गंगादिक तीरथ इसनाना ॥ यज्ञ होम बहुविध
व तदाना ॥ तपु जपु नित ब्रत सु व्रत शास्त्र सब ॥ ए हनि सकत महा कर अघ
पावन ॥ इन ते अघ पनी कुशल जो नो ॥ होत पवित्र न जीय व क्ति चानो ॥ यहा
अपराध जातन हीं जीयते ॥ महाशोक पहटर तन हीं ये ते ॥ नित प्रति होत
बढ्ढ हत्या अति ॥ करी वेग पावन मनु मनपति ॥३१॥ दो॥ सुनत मुनिंद्र वर
कृपा करि कीजै सो उपाइ ॥ जिह विध कुल हत्या मिटै कहो सुविध समझा
इ ॥३२॥ व्यासोवाच॥ दो॥ सुनत भूमि भव वचन धरम के ताता ॥ मैं जन कहे होता
इ कुशराता ॥ तुम कहो दोष न लागै को ऊ ॥ कहो उपाइ सु पावन हो ऊ ॥ गो
त्र वध्ध हत्या न हीं लागै ॥ हय पक तक रऊ सकल दुख भागै ॥ अश्व मेध क्रतव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रसुषदायक ॥ मङ्गलदे तकिलविषगनघायक ॥ पाप मै हयषकृत रघवरकीनो
सो मैअव तुमकौ कहि दीनो ॥ शीघ्र करउ याकी विधपारषा ॥ भवजल तरउ
सिंधु परमारषा ॥ ३३ ॥ दो॰ ॥ अश्वमेध कृत वरसु पाल वेग करउ कुरराज ॥ पात
क मिटहि सकल विधि कौ धर्म हित पिरराज ॥ ३४ ॥ चौ॰ ॥ श्रीयुत नंदलाल कि रप
वल ॥ नीचे राजतु मरिपुरनदलमल ॥ राजनीति लैसैभ्रा तिक रही ॥ जो जा
तै तिहन नृपति उचरे ही ॥ छत्री धर्म सुफल तुमकौ ना ॥ शत्रु जीत राज सुष
दीना ॥ किम यह राज स्याग वन जावउ ॥ धर्मराज सु जसहि विठावउ
कीध व सकल सेव तुम कर रही ॥ तुमरी आज्ञा मध्ये धरही ॥ जव वर्ल यह श
रीर कुधारा ता ॥ सुकृत करउ धर्म के ताता ॥ ३५ ॥ दो॰ ॥ करउ धर्म को रा
ज नृप प्रान व वैरे के विचार ॥ प्रापति हैहि स्वर्ग सुष संसार हि दनिवार ॥ ३६
जैमिनोवाच ॥ चौ॰ ॥ धर्मराज के तात तसुनै सु धावे च व आसमके ॥ पुनि पृ
छत हे वात तकुंती सुत अमुन राज सौं ॥ ३७ ॥ [illegible] ॥ सुन नम घुनि हूव
रत तव विचारी प्रभु ब्रह्म रूप मम पर उपकारी ॥ हय कृत की तुम आज्ञा दीनी ॥ प
रम कृपाल दया विरउ कीनी ॥ अश्वमेध कृत वडो समाजा ॥ धन वउ द्रव्य सुरतन
ही काजा ॥ सो वउ सपति मोपै नाही ॥ जा सौं दान पुंन्य विध आही ॥ प्रजा दंड कर
ली यो न जाई ॥ कैसे है कृत वनगुसांई ॥ यह दुर्योधन कौ धन सो ॥ दंड आनि तउ

ग

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४

ष्ट सवकरमणा ॥३८॥ दो॰॥ छलकपट मे पतिसत तहनै दुर्वबं मे भिकोराज ॥ मैनहीबां
छ्यो स्वार्ग मे सकेहुरकम द्विजराज ॥३९॥ चौ॰॥ नहिं देषो संग बडे सहाय कसु हु
देस मेंहमभएरनधापकु ॥ भ्रातपच केतभारी संग्रामा ॥ अजहु न हपापावे
संग्रामा ॥ शस्त्रघात तन वलो उनके तन ॥ शोक वंत सुत भ्रात तह नेरन ॥ तिनसो
कछु भाष्या नहि जाई ॥ राजपुरत जैव सोवन जाई ॥ उचत हे इसो कहे मुनी
श्वर ॥ करे पछाविधिदायै तपीश्वर ॥४०॥ दो॰॥ कहो कृपा करि विधसे सो उचत
पछाविधि मोहि ॥ पावन की जो व्यास मुनि चरन सरन हम तोहि ॥४१॥ व्यास
वाच॥ चौ॥ मरुत तनपति भइ तकृतकीनी ॥ सुजसु वजायसु जफलची
नी ॥ कंचन रतन दान वजदानो ॥ तपम पे द्विजवर सज्ञानो ॥ वधवतु दान
व छुहेगयो ॥ ऐक ऐक ते सौगुन भयो ॥ नहि समर्थ द्विजभार उठावन ॥ आन
गन दान दीयेन पपावन ॥ जो जिह मन भायो सो लीनो ॥ रह्यो जु धनु द्विज
न तजि दीनो ॥ परयो हिमाचल मे सवहीधनु ॥ त्याव जन्न पतितातिहर बतम
न ॥४२॥ दो॰॥ बहु धन तधनु पमे प्रभु सुन जु धर्म के तात ॥ त्याव जवे गसु ल
छ तुम रचजु पन कुशरात ॥४३॥ चौ॥ धन्य मरुत नृपकी पासकाजा ॥ की
यो पछाविधि यज्ञ समाजा ॥ सो इविध प्रकृतिशास्त्र मे कही ॥ तै सोय ज्ञुकी यो
नृप सही ॥ कंचन रतन दान वजदीने ॥ तपवान द्विजवर सभकीने ॥ तुष्ट

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मरोद्विजधाइचलेधनु ॥ सोईवतायो माहितपावत ॥ तैसे वचन जु कहत मुनीप
ति ॥ अब बनसुनत संताप बढायो अति ॥ ब्रह्मअंसलैकैकृत करऊं ॥ निहसंसै
नरकमैपरऊं ॥ ४४ ॥ दोहरा ॥ निंद्याकर है सकलनपमहापततमुहिज्ञान ॥
ब्रह्मअंसलैकृतकरैपावैनरकपरान ॥ ४५ ॥ चौपई ॥ ब्रह्मअंसनपकरैअकी
रति ॥ दुषदारुनतिहमनभईमति ॥ ब्रह्मअंसलैकरैयज्ञविधि ॥ नर्कवास हैन
हीकछुसिध ॥ अतिउपहासकरैनपमोकौ ॥ कहैजप्यारप्यमुनिवरतोकौ ॥ ध
नहमरद्विजऐसेकहहीं ॥ देतयुधिष्टरअश्वमेधनेकरहीं ॥ ब्रह्मअंसलैकैकृतकी
नो ॥ हमरादर्वद्विजनकौदीनो ॥ निंदतकूरकरमपहमनिपति ॥ प्रथमभेदो
षवडोबांधवहत ॥ ४६ ॥ दो ॥ गुरुबांधवपितुसुहृदेहनिकीयेसकलकुल
घात ॥ पुनिपहदोषनिकरसकौसुनजुपरासरतात ॥ ४७ ॥ चौ ॥ इकतोव
जुपातककुलघाता ॥ यहतादुषितनहिहितनकुसराता ॥ सोअपराधुटरतन
हीटारौ ॥ द्वितीयदोषपहहृदेविचारौ ॥ ईकवहवडीलाजकुलघायो ॥ प
नहअश्वमेधब्रह्मंसवतायो ॥ नहीसमर्थकउलाजनिवारण ॥ धृजपतिदेतसुर
जसुकिहकारण ॥ जाकोअपजसजगतवषानै ॥ धृगजीवननिश्चकरिजानै
सोईमैत्रमुनिजीयठहरायो ॥ पावनकरऊसुविधसमझावो ॥ ४८ ॥ दो ॥ धं
न्यधन्यसरदूलनपधंन्यतातातुमसात ॥ भायेवचनसुविधभलीहैतुमरो

ग्रं ४

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कुसरातु ॥४८॥ दो॰ ॥ यह सुनि होइ ब्रह्म सुनि राधिप ॥ दीपो दान यह छंद जनन मरुतु
न्नप ॥ जो कछु उठाय सके सो ऊ लीनो ॥ रह्यो जिनक छंद जनन तजि दीनो ॥ वजरो
उनकर हीन हीआसा ॥ सो अब लौ पधन रह्यो निरासा ॥ तिह धन को स्वामी
नहि लहही ॥ सो धन छित पति को आतिक हई ॥ पय मे परशुराम यह कीो
नो ॥ सम पृथ्वी कश्यप पदि दीनी ॥ कश्यप ते असुरनि जीती धरि ॥ तिन
ते पुनि जीती छत्रनि वरि ॥५०॥ दो॰ ॥ तिन जुन पन तेलई अभसुरन अति वत
वान ॥ पुनलीनो छित छत्री पनते ऊकु करत भए दान ॥५१॥ चौ॰ ॥ सुनन नृ
दजी य मे न विचारो ॥ ब्रह्म अस्र संसै निरवारो ॥ लौ पो उठाइ सो इ इन को
धनु ॥ रह्यो सु भय पो दृग मन पवको णन ॥ तुम तो चक्रवरत को राजा ॥ लौ जो धार
न की जै इह काजा ॥ मन वच क्रम मन लै अजी यजानन्ह ॥ वजरो द्व दे सदेहन
मानन्ह ॥ तुम रीअति विवेक उजल मति ॥ वेग कुरहु का रज धिल म हुकति ॥
सो च संसै को चत जहुन्न पन दन ॥ रच्यो जु यज्ञ अरिको टनि कंदन ॥५२॥ सुधि ए
शवाचः ॥ दो॰ ॥ ब्राह्मन भोजन दक्ष नाम अस्वक वन रंग होई ॥ संख्या कहौ विचा
रा ॥ धंत पत्र क्रिय विधि सोई ॥५३॥ आसिवाचः ॥ चौ॰ ॥ सुनहु अश्व वन दैन्न पस
सोना ॥ अश्व मेध कृत कही विधाना ॥ यज्ञ आदि लै यह कृत की जै ॥ वीसस ह
सछि जभोजन दीजे ॥ अति कुलीन श्रुचिपठी तो ज्ञाता ना ॥ शास्त्र वेद पुरान विधा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ना ॥ संध्याभ्रादिक्सिम ऋतषट् ॥ कर्मी ॥ इंद्रजीत पवित्र सुधर्मी ॥ पुनि प्रहदत्त
नाइकरइकछ्द्रजवर ॥ इकगजतइकर थइक पुनि है वर ॥ गौ सहस्र ऐका
प्रभु वरनी ॥ रत्न पद्ध पट तद्वहरनी ॥ ५४ ॥ दो ॥ कंचन दीजै भार इकु
ऐक दीजै प [illegible] जोग ॥ पन्नादिक एहि विधि करइ भ दृष्टि स कुलन्म घरा
क ॥ ५५ ॥ चौ ॥ पद्म चौगच हो पै अस्व ऐसो ॥ कह्यो निगम लौ [illegible] न्य पतैसो ॥
सो ॥ स्वेत वर्ण शो दुग्ध समाना ॥ कुंद कमल सम भपरवाना ॥ वीत पद्ध
भस्या [illegible] वन सदृति ॥ सर्व अंग सुंदर विचित्र गति ॥ अस्व मेध कृत न्य पति
जु कुर हो ॥ ताको है ऐसो उच्चर हो ॥ चैत्र मास पक्ष रत माध्यु भद्दिन ॥ अस्व मेध
की जै ता ही दिन ॥ ऐक वर्ष रक्षा हे की जै ॥ सूर वीर सैना संग दीजै ॥ ५६ ॥ दो ॥
सुत भ्रातरै बांधव सज्जन सेनापति संग होइ ॥ सूर वीर्य धेवलौ रहे के की जे
सोइ ॥ ५७ ॥ चौ ॥ सैना सूर पच्छ जहै सो पा ॥ करइ यज्ञ निपुरनि जहां [illegible]
वृत अस्व पति हो चेर इ धारइ ॥ जीत मदन हू पकृत अग्न सारहु ॥ सावधान
हे विधि सुन लीजे ॥ मतकारज को गज हु तन की जे ॥ अस्व भोग वरष इकु सेव ह
इस्त्री को रितु दान न देवइ ॥ ऐकतल पद्म रा संग सो वइ ॥ मन्मथ जीति सक
लदु ष वोवइ ॥ रति विलास मै चितु न हो दीजे ॥ जब लग है कृत विधि ही कीजै ॥ ५८
॥ दो ॥ ऐकतप [illegible] तनर्दद ॥ मै नजीत विधवत रहे तो पा

CC-0 Shri Krishna Museum: An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मे

वज्रसुखवृंद ॥५८॥ दो॥ उज्वल गंगावृत है गंग हंसा वै॥ तवल गण पहु व्रत वे
दवता वै॥ वृद्धि संपुत्र जतन वज्रकरी ये॥ व्रत समस्त पति हहि ये मै धरी ये॥ जहं
है मन व्रषपुरी षा करहीं॥ ताहा पहु कृया नेगम उच्चरहीं॥ तहा द्विजनके पद
ताकी जै॥ भोजन दान दक्षिना दीजै॥ जो सहस्र ऐक सुअवरनी॥ हेम पजनप
जात हाकरनी॥ न शक्ति नकी जै रसता ताकी॥ पावन पुन्य सुकीरति ताकी॥ ६०॥
दो॥ कनक पात्र निषबांधी ये तिहं तुरंग के भीत॥ तामहं तिलषो प्रतापसा ति
सुनन्द पबुद्धि विशाल॥ ६१॥ चौ॥ कनक पत्र परि लिषी ये ऐसे॥ हृदै धारनै ली
जैन पतैसे॥ पहत तुरंग धर्म नंदनको॥ नृप समर्थन हीं कोऊ बंधनको॥
घोन्न प पहत तुरंगको गहई॥ सो तिहि सम पुरको चहई॥ सो ऊ पृथ्वी प
ति बांधे पको॥ करि संग्राम जीत है ताको॥ जो समर्थ नहीं सस्व गहनको॥
चलि आवै सम पुर हस्तन को॥ मन वच क्रम महं सिद्ध होरकंति॥ व्रत स
मस्त पति धरे प्रीति सुलच्चित॥ ६२॥ दो॥ व्रत समस्त पति है इंकर उवउ फाल्ग
दा यक है सोई॥ विन व्रत पहुंके तप का करै तिहन पसिद्धन होइ॥ ६३॥ चौ॥
पहु व्रत सकल पाप क्षै करता॥ पावन कर तम ऋष अघ हरता॥ विनु व्रत
सुरपति सो मख की नो॥ तिन पर नफलको नहि चीनो॥ व्रत समस्त पतिता
हि उच्चरही॥ सिहजा वीच षडंग को धरहीं॥ तिहं सिहजा पर दंपति सो बहि॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मदन अधीन कबहूं नहीं होवैह ॥ नहीं सपर्शी करै निज अंगा ॥ ब्रह्मचर्ज
रजी त अनंगा ॥ बर्ष ऐक लौं इह विधि रहहीं ॥ ब्रत अ स्वपति के धर्म तिकह
हीं ॥ ६४ ॥ सोरठा ॥ यह बलवंड अनंग बसि कीनौ त्रैलोक जिह ॥ करत ज
गत सभ भंग बिन श्रां तन सुत भीष मति ॥ ६५ ॥ दो ॥ तातें अति भय भीत क
रन सकै न प महा मष ॥ पुन्य मै मन न्याय जीति कौं जे है कृत तन पतिव्रह ॥ ६६
पृथ्वीएडरोवाच: ॥ चौ ॥ सुन मुनि न्याय सदा सहम तेरे ॥ महा सोच उपजत जी
य मेरे ॥ छिष्ट नयरत यज्ञ को साजा ॥ धन समस्त बिन होइ न काजा ॥ पुन बह
अश्व न हीं हम देसा ॥ नहीं सहाय कबडे नरेसा ॥ भीम अरु द्र सरे बल भरी
रन कलेस सुत हने दुर्षो जी ॥ मेघबरन को पिता महा बल ॥ हन न तकी सो
भानु तेरन दल मल ॥ अर्जुन दुष्ट महा कले श अति ॥ जा को सुत अभिम
न्यु भयो हति ॥ ६७ ॥ दो ॥ भानु जने दन महा बल अति उदार बुधिवान ॥ ब
लक बा डश वर्ष को उचत पृथ प्रमान ॥ ६८ ॥ चौ ॥ इनको उचत नहीं कछु
कहन ॥ महा शोक चिंता वॅस रहन ॥ जिह प्रसाद हम राज्य भये ॥ व बर्ष
बीजीत सकल दुष गए ॥ निशदिन रह्या करी हमारी ॥ सो नहि दें निकट
मुरारी ॥ सुन हे भीम सेन बल बंडन ॥ कैसे यज्ञ होइ पसमंडन ॥ कैसे दोष
मिटै कुल घाता ॥ तुम अति विचार करो यह बाता ॥ यज्ञ बिना च बहु पवित्र है अति अ

न

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ति ॥ ताते विकल सोच मेरी मति ॥ ६८ ॥ दो० ॥ यज्ञ वीच उत्पात बड ॥ केध्यौ
हैं पुन्य प्रकाश ॥ जौ प्रबसिद्ध न होवइ जग तेकरु रै उपहास ॥ ७० ॥ भ० मै०
वा० च० ॥ चौ० ॥ सुन प्रभु वचन धर्म के ताता ॥ तुमरे जी पउपजी यह बाता
हृदय शोक उपज्यो जी यतेर ॥ बड़ लोक हेतु कृष्ण नहीं नेरे ॥ पुनि तुम कहे
अस्मन हो हृ सा ॥ वृष्पा पै तप हृत करान के सा ॥ सदा समीप कृष्ण तुमारे
तिन बड़ संकट हरे तुमारे ॥ सब सिपदा कृष्ण निकट जब ॥ नाम लेत पावट
हो तस व ॥ जो कृ ध्यान धरत तस घद लमले ॥ विद्यमान ते हं हेतु मांकाल
॥ दो० ॥ तुम को दोषु न लागे कहु कृष्ण दरस न पनेद ॥ पातक भिट हि ताप
रस घ उपजे रिदे स्मनेद ॥ ७१ ॥ चौ० ॥ विनु माधव मख सिद्ध न होई ॥ कोन उपा
इ करै किन कोई ॥ पावन होत हैं पहृत कृत तव ही ॥ गोपाल आवैं निज जब
ही ॥ सदा हृत मारे पाक सोई ॥ रक्षा जो कहु करत है सोई ॥ राजसु पम ख
स्व मेध पुन ॥ विनु हर पावन करहि न नृपमनि ॥ नहीं समर्थ होइ हरसु
रकहि न ॥ परम पुनीत यज्ञ स्त्री हरि विन ॥ निशा दहह पके कास मरनु कीजे
॥ सोरठा ॥ हम कर है संग्राम कृष्ण क
हृपकृत साधस जसु जगत्तौ जै ॥ ७३ ॥ धाम शोक निवारह धर्म सुत ॥ ७४ ॥
पावत मए हत नाहि ॥ राजु करत मधाम सु नेगम होइ ॥ मघ मेह पग्रह स्मानी पेउ
॥ दो० ॥ पदेन पमति कास पेज हा तुरंग
नेष्ट

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

घमकी जै सोरह ॥ ७५ ॥ जैमिनी उवाच ॥ दोहरा ॥ सुने प्रभु भट वच भीमके धर्मरा
जके तात ॥ पवनपुत्र तन पद्मास पति कहे तुरंगकी बात ॥ ७६ ॥ व्यास उवाचः ॥
चौ ॥ धन्य पवनसुत आप्त वडभागी ॥ सुंदर वचन कहे अनुरागी ॥ भद्रावती
पुरी है वृता ॥ यौवनाश्व नगरी को राजा ॥ रत्नक स्वर वजत है ताके दश
को हना चमूवर ताके ॥ निशदिन हयके राखेर हहीर ॥ [illegible] कोई दिन एन इत
उत करही ॥ हैको वेग पवन ते आगर ॥ अति विचित्र शोभा गुन सागर ॥
जैसे राषा कुपवन महत धनि ॥ सुराखत तनच है हरषत मन ॥ ७७ ॥ दो ॥ क
हनन गहन नतिहं समस्थ को महा वेग वरनानन ॥ जहा पवरक्रम सु धकरि रत
हुं जीत जुवत्नवान ॥ ७८ ॥ सोरठा ॥ हैकृत गंध्रप आनन्द प्रभाषा कीनो सुधारस
हि माकरउक वर्ष्ट [illegible] कन भूलपरी जहा ॥ ७९ ॥ इति श्री महाभारथे पर्व
[illegible] नकाव्य दहकुनपूरण ॥ प्रथमोध्याय समाप्त ॥ २ ॥ कवि
त ॥ अश्वमेध विष्णु [illegible]
दो ॥ मोर किरीट सीस प्रभु के सर तिलक माथे वेशर वनी है नाक मोती ठ
रत है ॥ नगन जटत लोल कुंडल कपोलन पर डसन मक छवि कोटि काम
धरत है ॥ वंसरी अधर राजै उर वनमाल सो जै छुद्र घंटका वाजे दुति
कही न परत है ॥ नूपुर छवि शाल कवि ट्हिकन प्रभने दलालं ऐसो ध्या
न धरे कोट पाप तिक टरत है ॥ १ ॥ जैमिनी उवाचः ॥ चौपई ॥ पुनि वच भीम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स२

सेनसुभकहे॥ ईषदहासुहेतषितन्नहे॥ बहतुरंगवेगगहै त्यावैं॥
मदूाबत्ति एकलोजावे॥ त्यावोन्नमुसोहितपुत्रवीवत्ति॥ जेतेजो
वनासमेनाहति॥ तुमप्रसेजोपदरनिवारउ॥ क्रोधरहतहैका जेस
वारो॥ पुष्पमेवासदेवजोपधरहे॥ तापाछेको ऊंकारजकरहे॥ जोनस
केसेकाजकेजावे॥ चहलेहरिहीपधवानलेगावै॥२॥ दो॥ [illegible]मनोरथ
सुफलफलपुष्पमेप्रापतिहरिदेव॥ सकलत्रमंगलनासहीवृं [illegible]हितिपरन
देव॥३॥ चौ॥ चौ॥ वोजेवाभीमसेजोनपहहरऊं॥ केवलधीरनकेमेपरऊं
जोनहिबहतुरंगगहि त्यावो॥ मातपिताहतकीगतिपावो॥ ताकहेय
सभपुरतलपीवै॥ सगरोताकमचबतुहतीजीवे॥ सोपरशीबपेजा
सतधुनविन॥ तिहपरवसीपेनहीएककीन॥ ताकोदेषमोहिकोर
लागे॥ जोमऊतहियकोप्रणभागे॥ इतनेवाकपवनसुतकहै॥ ति
हंपाछेमोमनगहितरहे॥४॥ युधिष्टिरोवाच॥ दोहरा॥ सेनाभीमप्र
तिमहावलिहेपुत्रएकोनातोहि॥ मृगगहनकौरवमतामहावै त
जीमुमोहि॥५॥ चौ॥ सेनहिभीमसेनसुमहीसुन्दरा॥ भुजवलपावना
सपुष्पवीपति॥ महापराक्रमवानमुतलवल॥ सेनासंगसमहत्स

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

खइल ॥ तुमतौ कह्यौ जै कलेजावौ ॥ कररसंग्रामजीतगहैल्यावौ ॥ तातेम
हाशोकमेरेमन ॥ तेकीनौमहकृठनवडोपन ॥ नंदलालतकरुणावऊक
रई ॥ तवमहतेरोप्रणअनसरई ॥ अथअनेकतुमऐकमहादुत्ति ॥ महा
वचनवौल्यौभानुजसुत ॥ ६ ॥ दो० ॥ ऐकभीमदस्सरहमैवेगचलेहैका
ज ॥ जौवनासहैचमजुतिल्यावौयज्ञसमाज ॥ ७ ॥ भीमकावचा ॥ सोरठा
सु ॥ नौपुत्रहमलाजपाइनतेभानुजहल्या ॥ कीनौवडोअकाजतुममुष
औरनचितसकहि ॥ ८ ॥ कृष्णकेतीवाचा ॥ चौ० ॥ तुमहतीकीयावडोउपका
रा ॥ हमरोजनककीयोसंघारा ॥ तुमतौछत्रीधर्मसंभारयौ ॥ उनकेकु
टलकरमकोमारयौ ॥ दुरयोधनकौदासवंडवर ॥ जौलगिरहैयाभूतम
मंडलपर ॥ लोभनककवहूंजीयतेगयौ ॥ सदाधर्मकौद्रोहीभयौ ॥ नगन
होतद्रौपतीमहारी ॥ सभामध्यकोंपतिदुषभारी ॥ तवतिनरक्षाकरीनिवा
री ॥ अवलौअपकीरतिजगभारी ॥ ८ ॥ दो० ॥ गाइहतसवैरातदिनपुनितु
मलईछुडाय ॥ महाअसतमतिकरनकौदुर्योधनकोभाइ ॥ ९ ॥ चौ० ॥ जुं
कोईचिंतामणिकोदवै ॥ वदलेकाचकौडीकालेवै ॥ पांडवतजिदुर्योधन
सेहित ॥ सकुलत्यागलीनेदुखवकृतहित ॥ जुंकाहुकेसंगमनहरतर
ताकोसादरुपैवंवूलनवर ॥ कुंतीसुततजिदुषसमतापक ॥ भयौसकतैल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मेघ

पततुनकोनाथक॥ भुनवहतुमहिकृतारथकीनो॥ हरिरएवीचरस्वार्गीक
लदीनै॥ तुमप्रसादवहसरेरवुरगचे॥ सुरजमंडलभेदतमयो॥ ११॥ दो
॥ ताकोदेधुनिवारहैंसबरहयज्ञसमाज॥ जौवनाससागरसबलम
थनकरैंकुरराज॥ १२॥ सोरठा॥ जाउतुमारेसंग जौवनाशनृपजीति
हो॥ त्यावौवेगतुरंगमंगीयपालककीकृपाते॥ १३॥ दो॥ सुनप्रभुभवचंववृष
केत [illegible] केभीमस्मलिंगनकीन॥ डाडोनिकटघटोतकच्चलेपावकोंदरसो
न॥ १४॥ चौ॥ सुनहतेमेघवरनघहवाता॥ महासुरवलतुमरोताता
तिनअतिमहापराक्रमकीने॥ पछ्छिवडाइपंडसुतलीने॥ लेगयोव
गगंधमादनपर॥ औरपराक्रमकीयेसुरवर॥ तुमतौतिनकेतातम
हावर॥ कीजैरक्षानृपतिपृथिवर॥ हमसवपकेतजाहिहैकाजा॥ पारथ
सुरूतुमरक्षकराजा॥ त्यावैहमतुरंगकोजौलौं॥ रक्षाकेजोधरमसुत
तौलौं॥ १५॥ दो॥ वरुप्रकाररक्षाकरैकीजेनिशदिनसेव॥ पहितुमारे
पिताप्रिताममापहितुमादेव॥ १६॥ मेघवरनोवाचः॥ चौ॥ कहतेवेनतसि
नोपिताममा॥ पहैंतुम [illegible] जनकमहितनामा॥ प्रगटोतुमपारीरसबवका
री॥ [illegible] नवरुणकीयेपराक्रमभारी॥ पवनपुतवतवहतुमरासुत॥ रुता
पुत्रसुरराकौतकपुत॥ [illegible] सोवतलवाना॥ भीमसेनसुतजगत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वषाना ॥ जैसे नदी सरोवर के जल ॥ जाइ मिलत गंगा प्रवाह वल ॥ सो आं
गोद कु प्रगट कहा यो ॥ नीरनामति है जग तैं मिटायो ॥ १७ ॥ सो ॥ तुं साध
न के संजपा पसमें है तुन नकए ॥ सिला राम पद सैं गपर स भई पावन
जगत ॥ १८ ॥ चौ ॥ सुन जपि ता यह वा त कहत सति ॥ हौ संग चलौ पुरी
भद्रावति ॥ मै है हरण करौं तत काला कौं त कढि षरा वैं तत काला ॥ पष्ट
चडा प तुरंग ल्ले जाऊं ॥ सुन वीर यौध मै रछा ऊं ॥ तुम व षके त कर जु सं
ग्रामा ॥ जीतऊ यौवनास जि है नामा ॥ चलऊ वेग नृप के वंदन कए ॥ सि
ष्य धि जै हौ रक्षी रति वर ॥ तब विलंब कीजै इह काजा ॥ है इ प्रसन्न युधि
ष्टर राजा ॥ १९ ॥ दो ॥ धंन्य पुत्र तुम सकल वच भाषे मति रंणीय ॥ हम
व षके तस है तब लौ तुम रहि हरष तजीय ॥ २० ॥ सो ॥ हम तीनौ इक ठौर
चल है पुरी भद्रावती ॥ नहि विचार जीय औरे हम नहि कर जु समता इस त ॥
२१ ॥ चौ ॥ इन तीनौ के वचन सुनत ताहि त ॥ अति हरषत कुरराज भयौ चित ॥
त ॥ भीम्यो वचन भीम सुनि लीजे ॥ आस कह्यो सो कर ज कीजे ॥ और वि
चारत जो उर अंतर ॥ कर त विचार निशा वऊ गई ॥ आस गवन की मनसा
भई ॥ प्रथम सुमिरि हरि उठि चलेतात प्रधन ॥ संग गए जे नृप नराज मुदित मन ॥ ज
व हा आस मनि ज मग चलेयौ ॥ पुनि चन्द्रप स ताधि त वसि भयौ ॥ २२ ॥ दो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

श्री तन संग राइ भितत वचन कहे धरम के तात ॥ हो है कैसे अम्म कृति महा
कठिन यह वात ॥ २२ ॥ चौ० ॥ अति वै कहु न गहन तु रंग को ॥ महा दुगम तन
अनंग को ॥ महा कठन अगम चित्त को ॥ रत नहीं यह शोक चित्त को ॥ न
हो सुह देप कृत विध भारी ॥ नहीं निकट श्री कृष्ण मुरारी ॥ जिन अनेक आप
दा निवारी ॥ संकट समै होत सुभकारी ॥ धिन वसुदेव देवकी नंदन ॥ को सु
मर्थ्य पतिक एनकंदन ॥ मयो त्रिगम गोत्र हत्या नियम ॥ पितहते काढ कर रक्षे
कृत सिध ॥ २३ ॥ दो० ॥ लाज समुद्र गंभीर रव वूडत राषी द्रोपती ॥ सुरा वो वलवं
र हो वूडे कुल घात विध ॥ २४ ॥ जैमनोवाच ॥ चौ० ॥ यह वच कहि पुनि हर
गुन गावत ॥ दीन वंधु कृत गाइ सुनावत ॥ दर्शन देहु वेग जादौपति ॥ का
वन कर रहु सकल किलविष हति ॥ श्रीपति अपुनो विर्द संभार हु ॥ संकट समै नि
दास विसार हु ॥ श्री वहु वरा गरुड का स्वामी ॥ नाथ अनाथ जगत गुरु स्वामी
सिम नेह दे करतन पजो लो ॥ श्री गोकुल स्यद्वार पर तोलो ॥ आपक सकल
के रप मां पत्ति ॥ कहे सुधी वचद्वार वाल पत्ति ॥ २५ ॥ दो० ॥ सुन हु द्वारपाल व
चन कहो धरम सुत जाई ॥ समै हार जो मिलन की तोवर सौ नृप वार ॥ २६
प्रतिहारोवाच ॥ चौ० ॥ विनती करो सुनो नंदलाला ॥ तुम तो तो न लोक प्रतिपा
ला ॥ सदा समै हम दास तिहारे ॥ यह ते तु म्हरे दास मुरारे ॥ धर्मराज तुम च

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ऐसे दास रत ॥ जिन्ह प्रसाद ते भए सब मंगल मती ॥ तहां ठौर अपुनौ नहीं जानहु
जहां साधुन निंद्या परिहैं चानन ॥ परधन परदारा जिन्ह हरि चित्त ॥ तहां लसो रांठे
रत श्रीपति ॥ पांडुपुत्र है भग तत मारे ॥ तुम स्वजन के संकट सब टारे ॥ २७ ॥ दो
परनिंदा परद्रव्य सो परदारा नहीं हेत ॥ धर्मराज तुम चरिहे तव बांधव समेत
न समेत ॥ २८ ॥ दो ॥ पांडव महल इक ठौर सिंहासन सिंहासन अब तव करत
नहीं रहत कृत्ति हैं अप सकल मनोरथ करहु सिद्धि ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दो
राजनीति ऐसे कहि शास्त्र वेद पुरान ॥ आज्ञा होई न छंद की तो करौ ऐसे पहि
चान ॥ ३० ॥ चौ ॥ हरष तव घर सालु उठि धायो ॥ धर्मराज को सासन पायो
आयो कृष्ण देवकीनंदन ॥ ठाढे द्वार सकल जग वंदन ॥ सुनत वचन मन पहुर षत
भयो ॥ कृष्ण नाम सुन सभ दुख गयो ॥ निति आसन सन उठ धायो भीम आ
द इक वचन सुनायो ॥ कहे प्रकरी पर आनि नटनागर ॥ द्वारे ठाढे श्रीपति सागर
वेग चलहु दरशन हरि कीजै ॥ चरन धोइ चरनोदक लीजै ॥ ३१ ॥ राजोवाच ॥
दो ॥ मन मन सो पूरन करन आए मेघ के काज ॥ मई निशा पावस भी भग
तवछल जदुराज ॥ ३२ ॥ चौ ॥ पांडव अति आनंद भए ॥ सुन अस हरि उप र
जे दुख गए ॥ सभन आइ हरि दर्शन कीनो ॥ सबहिं पद परस को फल लीनो
नवों कृष्ण युधिष्ठिर तव ही ॥ धाइ चरन हरि लाए तव ही ॥ नप विवक करसो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ली पोउ ठाई ॥ सुमताभालरंक निधपाई ॥ आसहपा तनु आनंद द्रिग ढरै
तेऊ कृष्ण सोसंपरजरै ॥ पुनि आलिंगन कीनो परस्पर ॥ प्रमुदित
पेपा पोसुषआति वर ॥ ३३ ॥ दो ॥ भीमसेन आदि लै पंडसुत सभलोग हरिपा
इ ॥ लै आए प्रभ कौ भवन पूजत है चित चाइ ॥ ३४ ॥ चौ ॥ विधवत पूजे तेह
ए मुरारी ॥ धूपदीप आरति उतारी ॥ पूजा करे मन अचरज भयो ॥ ऐसो
मा लकि ह विध प्रगट ऐ ॥ म ए प्रणाम द्रोपती कीनो ॥ आए सब करता
सुषदीनो ॥ कहै द्रोपदी सन कुरुराई ॥ केतन कैत तुम मधि विसमता पाई ॥ कृ
ष्ण वेग आए पाहि चाह्यो ॥ अव लग तुम मधि हम रमन हो जान्यो ॥ दुर्वासा ते
न शाप भिटा यो ॥ आ यो वेग गरुड न हो लैयो पो ॥ ३५ ॥ दो ॥ राजन पर चौ
धन मति मंद नगा करत मुहि सभा मह ॥ लाज काज नंद नंद वस्त्र पूर रखा
करी ॥ ३६ ॥ चौ ॥ जे हानवल कछु ताल मात को ॥ नहीं सहाय कूस बा भीतकै
भीषम द्रोण कर ए ठाडे सब ॥ तिन हूं न करी रखा मोहितव ॥ भीमसेन अर
जुन सहदेव ॥ तेऊ न सकहि मोहि तर ला कर ॥ कोऊ न राख सकयो मुहि ला
जा ॥ भई निरास धिंत्यो पद राजा ॥ पहों कृष्ण लाज मुहि राखी ॥ जान तती
न लोक आति साखी ॥ जहांतहां सह संकट पवरी ॥ ततछिन श्रीपति रखा
करी ॥ ३७ ॥ दो ॥ सोई हरि वैठे निकट तुम सम तन जीयो मान ॥ सदा सहा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पकरई दृसतसाखी भयेतौ यज्ञान ॥ ३८ ॥ जैमिनि उवाच ॥ दो० ॥ अस्तुति क
रीद्रौपदिअतिवर ॥ सुनतिप्रसंन्नभए गिरवरधर ॥ तिपाछै धरमसुतो
ताता ॥ लागौकरनकृस्नपतिवाता ॥ सुनहुकृपानिधिअंतरजामी
आपककहौरहैरनिकोमा ॥ अवहीतुमरोक्षिमरनुकीनो ॥ पाहीछिन
तुमदरशनदीनो ॥ उपज्योशोककलेशदुषारी ॥ तुमविनहमरोकौ
नमुरारी ॥ जहाजहाहमसे[illegible]परी ॥ ततछिन स्रीपतिरत्नाकरी ॥ ३९
दो० ॥ सुफलकाजहमरेभएहौहैसुफलअवतार ॥ आएहौप्रभुकृपाकु
रचक्रसुदरसनधार ॥ ४० ॥ चौ० ॥ पूछततौप्रभुसोइमोमनमैहैवूक्तकरो
करजुसमर्थजोहोइआज्ञातुमरोसुफलकृत ॥ ४१ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
चौ० ॥ सुनकुरुनंदनबुद्धिविशाला ॥ कोसमर्थहैकृतइहकाला ॥ पंच
वीचसंग्रामअपारा ॥ सूरवीरवजहेतिहिसंघारा ॥ भीममंत्रवैहैकृतलक
रई ॥ भलौसुजसुसभजगतउचरई ॥ इनकोतौभिशुद्धिनवेदव्यासा
अल्पबुद्धिनहीज्ञानप्रकाशा ॥ अतिअस्थूलउदरसेजाको ॥ महिमामे
दमतिजानौताको ॥ जाकेभवनराकसीवाला ॥ महाकुरूपवरनविकरा
ला ॥ ४२ ॥ दो० ॥ जाकीमतिराकससुतऐताकोकहाविचार ॥ तिनसौपुछ
हौपञ्चविधसहैकौनप्रकार ॥ ४३ ॥ चौ० ॥ हाहैयज्ञविविधविधइहतौइ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वर ॥

मंत्री तासु चकोदर होई ॥ अंगभंग वधराकुबेर नरतित हसो मंत्र विचारो
भेषद्धि ॥ ताको मंत्री नहीं सुखदायक ॥ कहत सुहृत पंडित श्रुति ध्यायक
का मोजड इस्त्रीजित योनर ॥ सोकै सब मंत्री जीते वर ॥ जिन दैवे है राजस्
यकृत ॥ भीमसेन तेमाद्दन पति अति ॥ धर्म रूप अति सुर महाबल ॥ इं
क्री जीत वचन प्रमाण विचल ॥ ४४ ॥ सो ॥ सो नहीं देखे भीम नृप बल गरव
ते अभिराम ॥ अरजुन जानत सम नृपति जैय पवध धर्मीचान ॥ ४५ ॥ चौ
तस्य अभिराम ॥ अरजुन ज्ञानत सम नृपति मंत्र करउ न पुहम रे साथा ॥ हैकृत वध धर्म
पनि बोले अनाथ के नाथा ॥ तैकी रक्षा महा कठिन अति
नली जै वाता ॥ ताकी जै अरंभ जम ताता ॥ सुर सम हर्षित तिहु संगा ॥ सम नुरगए
ती तेचली ऐसभ पवी पति ॥ तेन्‍न पजीत तनु रंगमली जै ॥ व्रत
गंधर्वन रेसा ॥ बाधे है जो प्रबल नरेसा ॥ महा कठिन धर्म अकृत सन ज्यु
अन्य पतिप्रथम छडु की जै ॥ ४६ ॥ सुर वीर बलवान ॥ ४७ ॥ पुण्य
किए न कान ॥ सकल समग्री चाही ऐसुर बनसव ॥ रक्षा कहै केसु
मै है कृत की पारा मजव ॥ कहे अमल पवध सुनो अवनसव ॥ वंधवर्पए संग सकल कुक ॥ शत्रु हु
ति बलवाना ॥ तौ वरा जअंगद हनुमाना ॥ सकल मती पुरजयो ॥ सुरष्वान्‍न पति तिः कं
ननल कुमन दलनायक ॥ तै है सकल मती पुरजयो ॥ रघुवर की सेना की नीहति ॥ म
धतभयो ॥ ड हनुमान और संग्राम भयो अति ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

क्षितिभतोरनसूरवीरसव ॥ सुनी सर्वविधरामचंद्रतव ॥ ४८ ॥ दो० ॥ महाकठन
संग्राम करि लीनो हे मुकताइ ॥ महाकठनविधयत्नकी मनवचकरिकुरुरा
इ ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ कहा वचन सुनि नृपति युधिष्ठिर ॥ देषु कृष्ण देविचार बुद्धिवर ॥ है
कीरक्षापार पकरई ॥ हम रोसंत जगत उद्धरई ॥ भूतलपरनर पक्षिवलवा
ना ॥ है को वाधक्ति ससमपमाना ॥ जो अरतनन नहीं है मुकतावे ॥ ताकी रक्षा कै करि
नधावै ॥ तातें अति संभ्रम मन मेरे ॥ कैसे यत्न से इ अति वेरे ॥ हम रे ज्ञी यत्न श्रेष्ठ
नहीं आवै ॥ तुम हैं कृतवित न शांतनपावै ॥ ५० ॥ सो० ॥ आव द्वापुरके अंत कलियुग
म तिहि कठन समय ॥ कह्यो सकल विस्तंतु रिदेव चारक्र धरमसुत ॥ ५१ ॥ दो० ॥ दु
ती यध्याइ टहकन सुकवि कह्यो धरमको सार ॥ कृष्णआगमन वचननृपमउ
वरे विवध प्रकार ॥ ५२ ॥ इति श्री भारथ पर्वे [illegible] व्याने दुतीय अध्या
टहकनप्रणजान ॥ २ ॥ ५३ ॥ समस्त ॥ कवित्त ॥ दीनवंधदयासिंधआरतिहर
तिमारी द्रोपती उवारी ॥ तेसा मोहूं को उवारलै ॥ गंनका उधारी गजसंकटनि
वारी ॥ प्रहलादभक्तितकारी दुषदाई कू निवारलै ॥ गौतम ता पतारी चरणांबुज
रजधारी ॥ जो ब्राह्मण कृतकारी भवसागर उतारलै ॥ टहकन प्रभ नंदलाल
दीनदयाल भगतपाल ॥ करुणाकृपाल प्रभ अवरद कै संभारलै ॥ जैमिनी ईवाच ॥
सोरठा ॥ उचरेउ सहजगंभीर कृष्ण चंदके वचन सुन ॥ भीमसेन मतिधीर हस
तकहतिवचकृष्णप्रति ॥ २ ॥ भीमसेनोवाच ॥ चौ० ॥ सुनो ऐ प्रभ कहहों सभ वातो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पत्तसमर्पधर्मकेताता॥ प्रभगसमैरमना पयपरखर॥ सदासमी पीपुग
टदरसहरि॥ हौ पेरे वसिति तिहारी मैरहति॥ मैन पदीपाधरम मत्रैआति॥ तुमही हौ पवि
चारो प्राचित॥ आतिप्रसप्पलेउद रजि हमारी॥ तिरा कहो मतिमंदमरारी॥ वजरक
हौनिनके वजआसा॥ तिनको कव हूंनवुद्धिप्रकाशा॥३॥ दो॥ पहआवरगनसभनुमहि
षेदेषफुरि देषिवार॥ आपनेदूषनआवरको तुमकतदेऊमुरार॥४॥ चौ॥ ब्रह्मा
दिकइंद्रादिकसुरनर॥ सपितासकलसपतसागरवर॥ पृथ्वी दसहुंदिसपवन
आकासा॥ पहसभतुमरे उदरनिवासा॥ तुमसमानआतिउदरनकोई॥ ५॥ तुम
विषप्रगटनही लोई॥ पुनिमाको आतिअनआहारी॥ नाजनआवततुमहितम
रारी॥ तुमतोभागीसकलस एको॥ तोसमआवरनपरे इएमो॥ आपुनेदूष
नआनलगावहु॥ वपाभावषोभा नहीपावहु॥५॥ दोहरा॥ ममम हुवालन
कसीसाचकहेप्रभमोहि॥ रादसतानारीभवनलजनआवततोहि॥६॥
चौ॥ जाहुनतेरुकमनिग्रहआनी॥ भयागुननिनिधिसारंगपानी॥ कुलसपेष
मेहितुरीजपत॥ हमकोद्दसूलगावतहेकृति॥ मदकुकरआवतारा॥ अस
हरूपवामनवपुधारा॥ कहोतप्परप्पनेकुनदेरेऊ॥ तुमरेदोषप्रगटस
भकरेऊ॥ नितपृतितुमराजलमैवासा॥ कामपुत्रतेसभवननिवासा॥ तुम्हस
मंद्रजितनहीकोई॥ सरततवादरोप्याइहलोई॥७॥ दो॥ परघाततरुस्वर्गते
गहिआन्यातातकाल॥ सतभामाकेआगनेरोप्याआनंदलाल॥८॥ चौपई॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ऐ

सद्रढी रनिधतुमरोवसा ॥ ससरेगएहमैकीपोनिवासा ॥ तमरेसभं दषनपछि
चानो ॥ प्रगटनकहोवुरोगिन मानो ॥ पजमंत्र म तन्नपतिवतापे केततुम
हमकोदासलगायो ॥ तुममनाथ्यान नपभीमनदेषे ॥ राजसंपमषकुवर्द्धन
पषे ॥ तुमरीकृपासहाइसदावल ॥ हनेसमहमपरनदलमन ॥ जरासंध
तेआदिप्रबलनप ॥ कीतिघारमपारनिराधिप ॥ ८ ॥ दो ॥ प्रथमैतमरीकृपाते
जीतेनपतिअपार ॥ तेमैहीमूवजीतहेतुमरेवलंदिशाचार ॥ १० ॥ चौ ॥ जैसेपर्व
तुम्हेंभारउतारो ॥ पुत्र जैसेगिरवरकरधास्यो ॥ तेसेपहहैक तमवकी
जे ॥ धर्मराजभरभैपददीजे ॥ जहांचिंतनपकेजीयनिशदिन ॥ कैसपसिंधु
सोइसषहरिविन ॥ सदातुमारेआगमषिंतवत ॥ येकपलककेकलपवितवि
तवित ॥ पंडव है प्रभुतुमरेदासा ॥ तुमविनुनहींआनकीआसा ॥ कोसोंकेहेधि
मानंदनंदन ॥ कवहुंसफलमषकपनिकंदन ॥ ११ ॥ दो ॥ जैसेचातकजलद
कोचिंतवततजिप्यास ॥ तैसेपंडवस्वामीमघनसदाचरनकीआस ॥ १२ ॥ चौ ॥
जैसेघनपंकमेधसी ॥ महाशोकव्याकुलदुषग्रसी ॥ तैसेनपकुलघातकीचम
निकसतसकेमहादुषवीचमे ॥ तिहतेकाढेलेजगधारी ॥ तुमपरआसावडीह
मारी ॥ तुमनिजविचारविरदकीलाजा ॥ नाथकमैबलभवनमिरताजा ॥ रक्षाकी
जैनपतिपुधिष्ठर ॥ दीनवंधस्वामीकरुणाकर ॥ १३ ॥ जैसे नो वाच ॥ दो ॥ भी
मसैनकेवचनसुनप्रसंनभयोगोपाल ॥ हरषवंतहैप्रभिवचकहेनृपप्रति

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

श्री नंदलाल ॥ १४ ॥ श्रीकृष्णो वाचः ॥ चौ ॥ हरिषत कृष्ण आलिंगन कीनो ॥ भीमसेन को
भुजभर लीनो ॥ धंन्य भीमसु भव वचन तिहारे ॥ सुनत भयो हीय हरष हमारे ॥ धुनप
हितित हरि न्नपति युधिष्टर ॥ आसीस तुम सब दुःखन कि एडर ॥ कुल हत्या पातिक जो पै
जान्यो ॥ भीषम द्रोण करण वध मान्यो ॥ सुहृद सहोदर हनन की एरण ॥ लीए
लगाइ दोष आपने मन ॥ सो संकल्प मोहि कर दीजै ॥ हे मन घ्र सकल दुष छी
जै ॥ १५ ॥ दो ॥ कलविष दीजे मोहि करि तेहि न लागै पाप ॥ हरषत हूजै न्नपति
मन तजउ सोक संताप ॥ १६ ॥ भीमो वाचः ॥ चौ ॥ कहै भीम हरि आवन सुनजै
कैसे दुःख कृत तुम कर दीजै ॥ तुम कर दीए बडत व जु सोई ॥ कनक एक को
ट गुने होइ ॥ कुल हत के से तुम कर देवहि ॥ कोट गुनो प्रापति कर लेवहि ॥ अ
ति विवेक जो न्नपत युधिष्टर ॥ का कर पातक दे तुम रे कर ॥ है को यज्ञ सुफल
जब कर रही ॥ सो सुकृत न्नप हरि कर धरही ॥ तुम कर दीए वढित ना पावे ॥ अप
पदारथ सुजस बढावे ॥ १७ ॥ दो ॥ आज्ञा दीजे कृपा करि होउ सहायक संग ॥
जो बनास न्नप जीति के ल्यावै सहित तुरंग ॥ १८ ॥ चौ ॥ कहो वेन तो प्रभ सुनली
जै ॥ धर्मसुतन की रक्षा कीजै ॥ न्नप ते उपजति सब सुकृत फल ॥ विधवतु रक्षा
कर जुम हाबल ॥ विनु सहित अगजीवन ऐसे ॥ राजभोग सु [illegible] सम तेसे ॥
सुफल यज्ञ को पुण्य विशाला ॥ सो संक [illegible] पति तजउ प्रति गुपाला ॥ धर्मराज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

फल यज्ञन वांछा ॥ तुम चरनन विनु सब रन कांछा ॥ कोटि सुकृत फल तु
मरै दरसै ॥ श्रीतम हरि पद पंकज परसै ॥१९॥ तैमि नौवाचः ॥ दो० ॥ धर्मरा
ज सुत मुदित अति सुनि शुभ वचन रसाल ॥ अर्द्ध रैन बीती जबै सैन कीयो गो
पालै ॥२०॥ चौ० ॥ भई प्रभात उठे नंदनंदन ॥ पांडव सुतन कीयो हरि वंदन ॥ भीमस
करनसुत मेघवरन सब ॥ आए कीयो हरिको प्रणाम तब ॥ कीयो प्रणाम सन्तपति
कै आगे ॥ पुनि तीनो कुंती पग लागे ॥ यहि प्याप करली यो उठाई ॥ चूमति सीस स
आसीस सतमाई ॥ दीने मोदक भिष्ण भीमकुंर ॥ भीमसदी हुपुन मेघवरने कर ॥ प्राण
म सब नअरजुन प्रति कीनो ॥ तिनउ आशीरवाद वज दीनो ॥२१॥ दो० ॥ कीयो आप्रति
गन पारथहि पुन वचन कहे उचार ॥ रत्ताकी तै धर्मसुत आरने विविध प्रकार
२२ ॥ चौ० ॥ सेवा करज द्विजन की पारथ ॥ सिद्ध होत सिस्वारथ परमारथ ॥ हरिमके
वेगड़हतापक्षित चानो ॥ त्यावज हेतिन मैजी पतानो ॥ मनताप संनकछु मूलहमए
मनसंतु एसकल दुषगाए ॥ हरि संतु एवातक सभनासहि ॥ भित्र भिलै सभ८
कएविनासे ॥ करनपुत संग मेघवरनतमम ॥ निहसं सैत्या वै तुरंगतम ॥ औ
वनाश्रासैंना समेत सभ ॥ कृष्णकु पाव लले आवत अव ॥२३॥ तैमि नौवाचः ॥ दो० ॥
भीमसैन पह वचन कहि गवन कीयो ततकाल ॥ मेघवरन वषकेत संग समर
तआनी नंदलाल ॥२४॥ चौ० ॥ मारग वीच दिवस वज लाजे ॥ वज्रचे भिकट पुरी आन
राजे ॥ द्वारिकापुरी मदावति नगरी ॥ वसत तुंग गंभीर जमुपर सगरी ॥ वन सहित सपए
वेएतपुरी ॥ पवित तसुष उपजे दुषदुरी ॥ शोभगसरोवर शीत अमल जल ॥ व

ग

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रूपप्रकारफललतंअंबुजजल॥ दशासहसखंभासुवर्णके॥ नगमणीनबचेतअनेन
कवर्णके॥ पन्नहीरामकोधआनिकरअति॥ दृष्टनपरतचलतमानिगगति॥ स
दो॥ निगमघोषप्रतिनगरहित्तधनिषटकार॥ श्रवननसुनीयेकहीकछु
नितप्रतियहव्योहार॥२६॥ चौ॥ मंदरसमटअनगनतअपारा॥ कलसधुजाकं
चनविसतारा॥ तुंगधौलअहतोरनराजत॥ ऊंचशिलागडबंगसुविराजत॥
निरषतअऐमुदतमनतीनो॥ पन्नहीरामपावनपुरचीन्हो॥ निरखिभीमऐकसुद
रवन॥ फलदलफूलरूचरभावतमन॥ रंभाफलकोमलरसपूरन॥ निवततैसे
नरगनसपूरन॥ दीरघहैसरनलऐकद्रुम॥ महासघनतरछाईरहेभ्रम॥२७॥
सोरठा॥ करतशब्दगंभीरनिशदिननूरहलकसुवन॥ फलदलकीअतिभीरप्रग
टेद्रुमपरकाजही॥२८॥ चौ॥ निरखेभीमसविपटअनुरागे॥ तातेअधिकदैनफलला
गे॥ सर्वअंगपूरनद्रुमभारी॥ निरषतभीमप्रभावविसारी॥ कुमकिवरखबढेउर
अंगअति॥ फलसमहलागेअतिभ्रतगति॥ सघनगुच्छफलरसपूरनवल॥
निरषनैनसंतापुजातेटर॥ बीजनिवरिदाडमघट्टीसुन॥ मुषसंवहसेवता
हरिचरनन॥ नारंगीअतिरुचिउपजावति॥ नृतलवधहर्षतापकगावत॥२९॥
दो॥ बहुप्रकारकेबागतहांसेवतवनअनुराग॥ जैसेसाधनकोसदाकहुसचर
नचितुलाग॥३०॥ चौ॥ निकटबहुतशीतलजलपावनतपतकरतमुनसबउ
पजावन॥ पंथपथिकतपथवतविश्रामा॥ अचवतजलछायावासनिरामा॥ अव
बीजपूरभीरविराजत॥ जंबूनिंबकदंबवविशाला॥ अ
वनसुंदरबहुराजत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

षरोट सिंव वदरी फनमाल॥ वदरी आवरो थिंचवण सुभ गाण॥ सुभ गऊ आशो
क चंपक आसुगन॥ गज केशर पुनागव कुलपुन॥ आवत पाटल नाग वे
ल पुन॥३१॥दो॥ शतपत्री ता हाजुरी मौलसिरी पहिचान॥ राय वेल अ
रु केतकी अलगुजतरित मान॥३२॥चौ॥ निरषत वन मग को अमगायो॥
भानुजसुत हिय आवत भयो॥ सुंदर नगरी निरषत मोहित॥ ताहि गएक स
रोवर सोहित॥ नग न षचित सभरी पसलापृत॥ निर्मल शीतल अतिअद्
त गति॥ है जलपान इहां सर करहत॥ रतन के सूर नेकुन हीड रहत॥ तिहिस भ
जल जंतु अपारा॥ सो हरि उदपिली यो संसारा॥ कुज व पके तसु बुधि अभ्यास
किस प्रकार की जै अववकामा॥३३॥सो॥ मध्याहन के काल आवत हैं जल पान को
सतक मृग संव पाल वीर निपुन संग्राम मति॥३४॥दो॥ बुझत सूर वीर रहत संगा
नि मष ऐक न हीत जैतुरंगा॥ जैसे कुपन आपन धनराषा॥ जैसे सूर अस
अभिलाषे॥ मन में है विचार मुरुकीनो॥ शिर पर धाइ च है हत मतीनो॥ वज्र
सम सूस घनव ह जा पर॥ तिए तिहेहि वेग हू मतापर॥ वे ठरहे गिर पर सु
मतै लौ॥ तुरंग निआवत सर पर जौ लौ॥ तव हीव हतु रंग को हहहा॥ नि ह
से से ताको हमग हहा॥३५॥दो॥ प्रपमै मैरण मध्य है गरजो शब्द गंभीर
प एसहा यक तुम दो उभान जसुत रणधीर॥३६॥सो॥ पठ सबद पक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१६

मे

मंत्रसुफलकाजकीनतिश्रमसत्ति ॥ अतिशैवविजैबत्ततंतुरदेषिचारजकरनस्रुत ॥
२७ ॥ दो ॥ ततीयध्यायपटहकनसुकविवरनेवचनविशाल ॥ भीमवाकगंभी
रसुभरसनाकहतप्रकास ॥ २८ ॥ इति श्रीभारथपर्वणिअश्वमेधविष्याने
ततीयोध्यायः ॥ ३ ॥ ४ ॥ जैमिनोवाचः ॥ चौ ॥ भीमवचनसुनभानजनंदन ॥ उ
चरेवचनसकलदुषकंदन ॥ सुनऋपवनसुतहमरीवाता ॥ तुमहतेहोतिसस
कलकुशराता ॥ सैनपवलतनपतिकेकहीं ॥ सेरव्यादसहिहहीं उचरहीं ॥
तिनमेकछुकहेतनपसंगा ॥ कहुंअवरदाकरतहुरंगा ॥ तुमभुजवला
समसहरनकोई ॥ नामसुनतरनस्रतमपहोई ॥ तिएतनाहकोऊतुमस्रा
गे ॥ सुसुरसुरोकहुलसघभागे ॥ १ ॥ दो ॥ जौलगिप्रतिमप्रागरलकौपरसु
कीयानहीइस ॥ तवलगईहीवसपुरुषनहीसमरूपीजगदीस ॥ २ ॥ चौ ॥
तवलोंइंद्रीविषयग्रसतनर ॥ जवलगज्ञानप्रकाशनहीहरि ॥ आवा
गौनहोतजगतौलौ ॥ पापसमूहकरतनरजौलौ ॥ तवलगपितरनरक
मेरहहीं ॥ तौसुतगपाष्पिंडनहीभरही ॥ तवलगसहरवीरवलवाना ॥ ज
वलगनदेवकोदरजाना ॥ धर्मराजकोसुफलयज्ञकर ॥ पुनप्रसंनभो
कोजेशिवरधर ॥ अश्वमेधग्रहणकीसिद्धिमहावर ॥ वेगकाजकीजेइहअव
सर ॥ ३ ॥ दो ॥ ऐसेवरदेषेदुरदमावतसरवीओर ॥ मदमोकलअतिगजजु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

संडचपलजकजोर॥४॥चौ॥कज्जलवरनतुरंगपर्वतसे॥चलतमंदगर
जिआतिगरवतसे॥आएतीरसरोवरकेचलि॥पीवतकलुषभयोनिर्म
लजल॥कबहुंजलतबूडतकबिनिकसत॥जलकलोलकरनीसंगविग
सत॥जैसेकेलकरतदंपतिजन॥छिरकतनीरपरस्परहितमन॥उर
तसंपूरनपरतजलमाही॥हरषतअतिजलजंततहांही॥तगिगजोमध्य
पगजनगंडस्थल॥उठवैठेसोरभकंभम जजल॥५॥दो॥तमसहितर
नारिनसहितकबितकबितकमलमएाल॥देतसहितजनमयोंकपि जैसे
संतकृपाल॥६॥चौ॥आतिशेहरषमीनजलधावत॥जैसेअधनमहाधनपा
वन॥नागकुंभतेसोरभठरही॥मदउन्मतसोउभवनकुरहीं॥चकवाच
कवीत्तितसोपूरन॥निरषभीमसरकविसंपूरन॥तोहिछिनमाजमनतु
रंगा॥महारूपीसुरेवजसंगा॥उठीधूरगगनंतरछायो॥निरषभीम
तुरंगमआयो॥सेतवणिगेवछीरपुभासव॥आवतहैसमहंसवरआव
त॥दो॥वजवजंत्रवाजतशब्दतुमलरह्योभरपूर॥वीरधीरमंडलसहि
तसंगराजतवजसूर॥८॥चौ॥पोवनोसनपपावकतेहोइ॥आसहितसमसेन
सेनिश्चेसोई॥देषीयतसूरधुजाकेआगे॥गीरधरकरतेनिश्चेरनभी
गे॥देदमभशब्दतेतेरीरबआत॥मनबचक्रमजीनकहैयमदेपात॥देषअतिशे
नसकेनप्रभसाजा॥निश्चेहोइसफलहैकाजा॥श्रीपतिकीआज्ञाहमआए

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सिद्धि हेत तिकार जु मन माचे ॥ धारम नोरथ पथ में राम के । फर न कर हे हरि विर
चि मनाइ के ॥ ८ ॥ त्रैलमनोवाच ॥ दो० ॥ मान जसु तपहु वचन सुन कहे भीमपति
भाष ॥ तव लगि है प्रापति भए जल अचवन अभिलाष ॥ १० ॥ चौ० ॥ मध्य हतन हे प्रा
पति भए ॥ नाना वरन निरख द्रुम गए ॥ इक इक हे के तीन सहस संगा ॥ रत्नाकर सह
सुधा रस संगा ॥ जोति नेम अति प्रवल तुरंगा ॥ रत्नाकर तिन दस सहस रथ सज्जा
अति विचित्र उत्तम गति जाकी ॥ नाचत नट वर गति छवि ताकी ॥ पवन वेग छुरव
दन प्रकाशत ॥ सुध्वज पद पंकज मुख भाषत ॥ चलत चाल अपनी अवनी
गति ॥ ईक ती तर इक सारन कुल गति ॥ ११ ॥ दो० ॥ सुन सु वचन खके तके भी
मसेन वलधीर ॥ उदति भयो कछुक हनके कछु जु प्रापति मति धीर ॥ १२ ॥ भी
मो वाच ॥ चौ० ॥ प्रापति भए सकल हे सरपर ॥ दृष्टि न परे स्याम सुंदर वर ॥
तिः निमित्र आए हम नीनो ॥ सो हो अव ले दृष्टि न चीनो ॥ केवह हन पवांध्यो है
शाला ॥ पावत जलति ठो रवि शाला ॥ तिः कारन हम अति श्रमलीनो ॥ तब बी
न परे कहा विध कीनो ॥ हरि विन हमरा कौन सहाई ॥ कोटक एक आपदा मि
टाई ॥ श्रीगुपाल गिरधरन मुरारी ॥ रत्ना कीजे वेग हमारी ॥ १३ ॥ दो० ॥ देस
व देस जहां तहां रत्नाकर अपार ॥ धर्म राज हे काज हित रत्नाकर कर तार
१४ ॥ चौ० ॥ सुसंतान विन सुख ना पावै ॥ सुंदर विन गज पुरन हित तावे ॥ जै सेवक
पण पर वै न हम आसा ॥ व्रत चर्य संपम विन नासा ॥ सुंदर स्त्री जित तवांध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वधीता॥ मंत्री हीन राजु विपरीता॥ कुंन्य हीन के नीति न होई॥ जुं पर भिंद
क सुब नहीं होई॥ कल्प भगत विन मोष न पावै॥ विन सुकृत नहीं सुजस लखावै
प हृ विचार उपज्यो मन माही॥ हैं विन हय मगज पुरन नहीं जाही॥ ५५॥ जैमिनी वा
चः॥ दो॥ भीम सुवचन सुनकर नृपति भाष्यो चाहत वैन॥ तब तुरंग का पापति भए पोह
र षत निरत नैन॥ ५६॥ चौ॥ चतुरंगनी चमू है संगा॥ चमर धुजा जलत कृत बज्र
गा॥ स्वेत छत्र सीस पर शिराजत॥ क्षुद्र घंट का ग्रीव विराजत॥ चंदन अद कुंकुम चच
रचित तन॥ तस नीकर पवि हन नत भावत मन॥ अति विशाल मस्तक उर सो
है॥ निरषत छवि मन्मथ मन मोहै॥ भूप गति के रस अंग सुधारत॥ जे तुम
गल शब्द उचारत॥ कृष्ण सारंग अधिपति हमा गे॥ चलत तवे ग छवि मन
न लागे॥ ५७॥ दो॥ वरनत वृजत पकार वज्र गर जत तबी र अपार॥ घुंघ्रा
रु हिग जस्य स्वजं हा बज्र की तक विस्तार॥ ५८॥ चौ॥ मा ह्तार षी स्पट र है
संगा॥ वज्र विधर लीक नै तुरंगा॥ मेघ वरन अश्व पुने जी पधार्यो॥ अश्व
गत ए को मंत्र विचार्यो॥ हर्षित वदन तुरत को लहर्यो॥ तब पद तव चन
को दर कह्यो॥ सुन सुत तो इच्छा जीय तेरे॥ कहो सस्य वचन आगे मेरे॥ २
जौ तुमन नमै मन साकीनी॥ वदन धिलो क सकल मुष्टि चीनी॥ वचन
कहत नको उदत भयो॥ मन को मंत्र सकल कहि दयो॥ ५९॥ मेघवरनो वा चः

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दो॥ भीमसेन आज्ञा करि उछल्यो वो वेग रंग॥ वत्सरीति गहि शिर चढोवा
धोतरवर संग॥२०॥ चौ॥ जो तुमरी आज्ञा वर पावो॥ अवहीं वहत्तु
रंग गगहि ल्यावो॥ सूरवीर सब भट्ट देषत रहहि॥ आकुल है है कछु
नहि कहहीं॥ बांधि ल्यावों नृप को सुत॥ सब आज्ञा वहीं गहि देवों तु
म हाथ्या॥ जो तुम जीच मैं सब साज्ञा न दउ॥ मो प्रारा कुसीर चौ प्रमान॥
ऊ॥ जौ तु मरी आज्ञा आज्ञा वपाऊं॥ छत्री धर्म जीत के ल्याऊं॥ जो तुम
कहो सो ऊं अब करऊं॥ सूरवीर ते नै कुन डरऊं॥२१॥ दो॥ जो हो
ते सब कौं निकट प्रथ मैं तिहं संग्राम में॥ आज्ञा की जै मोहि को तुम कौ जै षि
श्राम॥२२॥ चौ॥ तुमरी आज्ञा जा सो हरषत अंग॥ आसुग है वाधोतरवर सं
ग॥ लै आज्ञा वर बुद्धि विशाला॥ महिधरि चंड कुद्यो तत काला॥ राकस माया को
प्रगटायो॥ दहदिश अंधकार छवि रायो॥ जेसे प्रलै काल के वादर॥ दमक
त छटा भए सब कागर॥ सिंघानाद के शब्द उचार्यो॥ सूरवीर आकुल कर डा
र्यो॥ दहदिश अंधकार नहि सूझै॥ भाष्यो वचन न कोई बूझै॥२४॥ दो॥ सू
रनरथ सूर दुरि सकल अंधकार नभ माहि॥ भ्रम सति विवान सहित तम अमर इ
त पावत माहि॥२५॥ चौ॥ तिहि औसर दुर्योधन इक आयो॥ वचन सरोष पति भाष सु
नायो॥ सुन हो सूरे सम हम सब माने॥ तुम अपने भ्रम अपने जाने॥ दानव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

व

ऐक प्रगट नभ भयो ॥ तिहं लोगन कै अति दुष दयो ॥ अपनी माया बहु वि
स्तारी ॥ नाश करन की मन मै धारी ॥ तुम तो हम लोकन सुषदायक ॥ बेग
करहु दानव के घायक ॥ यह सुन इंद्र के पत्री पठायो ॥ सब जोद्धन प्रति
बैन बषान्यो ॥ २६ ॥ दो ॥ दानव ऐक प्रगट भयो निरबज ता को नाई ॥ सब लो
कन दुष देष है माया रची बनाइ ॥ २७ ॥ चौ ॥ वज्र तं देव देषन ति हम आऐ ॥ च
ड्यो विमान कै तक को धाऐ ॥ मेघवर को देषन आऐ ॥ दूत ऐक तहं पठाय ग्याऐ
दूत वेग आयो तिहं पासा ॥ कह्यो जाइ यह वचन प्रकासा ॥ तुम है को लष्य
ते आयो ॥ तुम ते सभ देवन दुष पायो ॥ कै नमस्तो रषपातु महि अंतर ॥ सत्य
कहो यह वचन निरंतर ॥ हम को तुम पति इंद्र पठायो ॥ कहो ना मकारन
कि है आयो ॥ २८ ॥ मेघवर नो वचः ॥ दो ॥ अ सु मेघ के काज तहं तप कियो पुष्प
इर मोहि ॥ धर्म के काज है लैन को कहे तप रच्या तोहि ॥ २९ ॥ चौ ॥ मेघवर नम
हि नाम पषाने ॥ भीम पोत्र निश्चै तुम जानो ॥ बैठ वर सत मोहि उचरही ॥ दा
नव देव मनुज ते सभ ठहरही ॥ हम को पठयो यज्ञ के काजा ॥ धर्मनंद पुत्र युधिष्ठि
र राजा ॥ तो बनाय पको लैऊं ॥ धर्मराज सुत को गहि दैऊं ॥ सावरवि
चार न रदै हमारे ॥ कहो इंद्र प्रति सोक निवारे ॥ दूत सुनत वचन तिह भयो
ऊ तहं सुलेश कहो पहं गयो ॥ ३० ॥ सो ॥ भाष्यो सकल भेव तंतु देव सभा महि इंद्र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

श्री
अश्वमेध
लव

पति ॥ सुनत अमरहू हर्षंत चढि विवान कौतक चले ॥ ३१ ॥ चौ ॥ तिहू पाछे
हृप कौतक ठयो ॥ मेघवरन हूं यदेष तभयो ॥ आपो ताहि जहा वहे बुजा ॥
सा परच यहल्की पास माजा ॥ मोहे सूर वीर सेना तव ॥ सहा पवन संग
रे धर निपर ॥ राजस मूह सुंध प्रगटाए ॥ सुभट वीर रवि कुल हे गए ॥ पा
छे शिविरिव ऊकीनी ॥ सब सेना साकुल कर दीनी ॥ हिनाद सुषश
हु उचारे ॥ संवर तें धरणी पग धारे ॥ ३२ ॥ सो ॥ तन छिन लो तुरंग
ने कुन गोंकि तभयो चेत ॥ अति शैल विसे गज अंग गहि आकाश उछिय तय
यो ॥ ३३ ॥ दो ॥ नील मेघ सम वरन धर सी समकट छुवि भीर ॥ भुजा करू
प अंगद सकर मेघवरन बलवीर ॥ ३४ ॥ चौ ॥ हा हो कार कटक मे भयो
सुवर्णहि तको हरलै गयो ॥ सूर चतुर दिशा ठठन लागे ॥ को ऐसो तुरग
लै भागे ॥ पकर ऊताहि वेग हुत कोते ॥ रूपको छंद तुरंग लीजै ॥ चक्रत भए
सभन वल हारयो ॥ तव सकाश की आए निहारयो ॥ दष्यो है समेत नभठा
ढो ॥ विधि निध कुसम वरषि अति कीनी ॥ सभन थ्यसी रवाद अत दीनी ॥ ३५
दो ॥ धंन्य धंन्य वै हुंव सुत कृत सु कुत वर कीन ॥ धंन्य भी मतु मसार षा
जहगृह हवंत्र प्रवीन ॥ ३६ ॥ चौ ॥ कौन होइ पहज्ञव रदाइक ॥ जिहसंग तुम
सम सूर सहाइक ॥ सप्रसंन्न देव सभ भए ॥ देत असीस स्वर्ग को गए ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मेघनाद मन तन खिसिगायो ॥ गहि तुरंग गन भठाठो भयो ॥ नरवभीमवछ
कत हरष अंग ॥ मेघनाद पछित अदमत गति ॥ सेना वीच क एठ पज्ञाय
जब हौ वह तुरंग लै गयो ॥ वीर परस्पर ताड़न लागे ॥ अस्त्र शस्त्र लै हत उत
भागे ॥ ३२ ॥ दो ॥ जौवनास कौ सुत इक कहैयो वतेत सुताप ॥ सुत सम तेहि विस्मे
भयो वो ल्यौ कुवन सुनाइ ॥ ३८ ॥ चौ ॥ नृप कौ हर एक बन नटप सुन्यो ॥ आर
ति सैं दुखित सभी सकर धुन्यो ॥ महा शोक उपजो अति भारी ॥ भीष्म ते से वच
न उचारी ॥ तिन मे रोप [illegible] दरसि लीनो ॥ तेहि स्थान जमपुर कौ कीनो ॥ मन
वच क्रम [illegible] जी पज्ञान ज ॥ ताकी आउ तुम्ह पहिचान ज ॥ सुरन रसास
र हते तिन वाजा ॥ तिहत हमप ठोप रीज मेराजा ॥ व्याकुल महा क्रोध जी
प धायो ॥ कौलीत कर रघु वेग हंकायो ॥ ३९ ॥ दो ॥ महाराज सी सुर रे सबल
ती ने सकल बुलाई ॥ करप [illegible] मतिन वचन कहि आज्ञा दीतै राइ ॥ ४० ॥ सो
कृति भागा वजु जाइ लै तुरंग सुन हो नृपति ॥ हनन कर [illegible] तिहि धाइ अव
है कौ मुकता वही ॥ ४१ ॥ जौवनास वाच: ॥ चौ ॥ सुन जसु [illegible] यह वात तिन
रंतर ॥ आये [illegible] ठाठो गगनांतर ॥ ताको जाइ वेग वध कीजे ॥ रिप कौर
मार तुरंग मली जै ॥ आज्ञा ले कूदे सुर सब ॥ रोक्यो मेघ वरन मारग नभ र
लागे सकल प्रहारन वाना ॥ छायो अंबर सुर वल वाना ॥ मेघनाद वीर
ल्यो सुर रन पति ॥ कत तुम करो पान न अपुने हति ॥ अव तुम कौ पम लौ कप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २० ॥

श्वमेध

ठावो ॥ चूरन करे अंग हरून हीलावो ॥४२॥ दो॰ ॥ मेघवरन तह तब वनकहि
लागो करन प्रहार ॥ तौल मुष्टि तीछन अग्र अंग सैना करी संघार ॥४३॥ चौ॰ ॥
पाहन शिला मेघवर साधो ॥ तिह सो सकल चमू को घायो ॥ चूरन भए तकूरी स
व सैना ॥ सो गतिक ही परति न ही बैन ॥ जनम जनम के शाप मिटाए ॥ तातैं
प्रान स्वर्ग कौ गाये ॥ करन मेघ चमू तव धायो ॥ भीमसेनु कए जपत पयो
यो ॥ तव लगि यौवनास की सैना ॥ आवत तव जतन हारी नैना ॥ मेघवर
न तव ऐ देखि चारयो ॥ भीमसेन तव वचन उचारयो ॥४४॥ दो॰ ॥ तुम रहिआ आज्ञा
सफल हम करी सब वनके पूत ॥ गहि तु रंग गर वांध्यो यव बहु मल्ल संग
भए त ॥४५॥ चौ॰ ॥ तो सम सैनाके मधि गयो ॥ वीर न देषत है लगयो ॥ सो
तर सों वांध्यो गर ऊपर ॥ ताकी रक्षा करो भीमवर ॥ वल मरीति गहि ल्यो
तुरंगा ॥ महावर्ष्य सह रे तु हसंगा ॥ तिह हत यकी रज्ञा तुमकी तै ॥ पु हुकरो
मु अस्मा स्त्रादी तै ॥ भजो लेर नस नमु बधायो ॥ कीयो पुहु सह रन को घायो
करील वैर पप्पूर चमू सब ॥ ओर चहु गयो तुरंग निकट तव ॥४६॥ दो॰ ॥ र
की योभ पानक मेघहि मेघवर नर नै धीर ॥ सैना दल मल गयो चहि अ
श्व निकट वल वीर ॥४७॥ चौ॰ ॥ हाहाकार करत सैना सव ॥ यह राकुस
को वेग हनहि अव ॥ कहा गयो कहाँ भयो पुकारहि ॥ तिन है हयो वेग
तिह मारहि ॥ भागा कहा जा पव हहि मसो ॥ कीनो क्रूरकर्म जिन मम सो

४ क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जिहि हिमरो तुरंग गहि पिल्ली नो ॥ तिहि जमपुरी मै मोरप्पकी नो ॥ सत्रु परस्पर
करै षिवादा ॥ सकल कटक मो भ्रम पो विषाधा ॥ शस्त्र सन उद्धव उद्ध सभ भ्रमते ॥ वङ्ग
शो पुङ्ख करनको गते ॥ ४८ ॥ दो ॥ मेघवरन चढि गगन पर ठाढो महताउ तंग ॥
धनुषबच ठाइस सन्मुष भए एक ढहि तिम्म म निबग ॥ ४९ ॥ चौ ॥ लागनि करचंचला न
वन बाना ॥ महा सत्र रचे धेवलवाना ॥ ततछिन दह दिस रोक तम भए ॥ सत्रन के
सह हहाइ नभ लए ॥ मेघवरन षिकुल सह द्धो पो ॥ गगन ते तर तै धरि नगिरायो
देष्यो गिरत करन नने हन तव ॥ भीमसेन प्रति वचन कहे सब ॥ धंनप हि मे
घवरन तरा कसबल ॥ जिन तव सत्रु सत्र करी रन दलमल ॥ प्रथम मेव हितु रंग ग हि
र ल्या पो ॥ तुमबलते पुध कौतक देषरा पो ॥ ५० ॥ दो ॥ धंन्य धंन्य पहि सत्रव
ल भीमसैन जी जान ॥ पहि कहि तपाहा तेवने अवरनको उसमान ॥ ५१ ॥ चौ
न छिद्यो भीमसेन नि जनैना ॥ रन सम सहि चतुरंगनि सेना ॥ देषी पतमहि
सत्रु वल गाढे ॥ हि इस नद्ध वद्ध महि ठाढे ॥ तिन सो मैं क ए हों सेग्रामा ॥ नि
हसं सैप ठवौ पम धो मा ॥ पहि वचु भाषधनुष कर लीनो ॥ मन मै ध्यान का
म को कीनो ॥ जैसैं सापति धनुष कर लयो ॥ दानव सकल संघारन भयो ॥
तैसे रक्षक कर धनुषउठायो ॥ सभ सेना के सनमुष धायो ॥ ५२ ॥ दो ॥ तिहि छिन
हि भाष्यो वचन ॥ सत्रन प्रति वृषकेत ॥ भाग जाउ रन षेत ते प्रान तजउ कि हे
त ॥ ५३ ॥ चौ ॥ भानुज सुत के वचन सत्र र सुना ॥ नैन सरोज प्र फुल्ल भ्रात मरठन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लागेकरनपरसरवाता॥ कोपहतकीरकवनकोताता॥ भयोहतमारिरुआगे
इरिखयत॥ बोलितबचनकठोरकालवत॥ पतिकहितिलागेअरुगप्रहारन
महाघोरसरपर्दविदारन॥ करनप्रतकोऐसेकीनो॥ जुगघनगगनतआछादि
तलीनो॥ तबबषकेतमहाबलधायो॥ ततछिनसरलैधनुषसंभीयो॥ ५४
दो॥ सरसमूहआवतछिंतकोपाधनुषटंकार॥ दहकदहकसरकोकीयोतीछन
बानप्रहार॥ ५५ चौ॥ षंडषंडबाननकोकीनो॥ ऐकैसरसोसभसरछीनो॥ कं
धरसिंहतमहाभुजभारी॥ सिंहनादपुनिकीयोउचारी॥ काढतीछनबाननिषंगा
बेधिसत्रुनकेअंगअंगा॥ गजरथबाजपदातसेनवर॥ सकलसिंहारीगीरा
धरनिपर॥ बाननकोजलधरबुरसायो॥ सत्रुतकहुनसकलदलछायो
रथअसवाररथीतुरगमअसवारा॥ हतसभनकोकीयोप्रहारा॥ ५६॥ दो॥ सेनाकेलल
भगनकरीयोभोनुजकेतात॥ जैसेस्त्रीहतऐनामतेपापनासहोइजात॥ ५७ चौ॥
भानुजसुतसेनासभमारी॥ कछुकबचेगऐनगरमझारी॥ तिनजुधबातांतकह्यो।
नपआगे॥ प्रपभैबडबुरगलेभागे॥ पुनिसेनाकोबडदुषदीनो॥ दसआसह
समोधाहतकीनो॥ गजतुरंगकोहनवजमारे॥ प्रबलपुहुकरेसकलसंघा
रे॥ महाभ्यानककमकरतहै॥ महाधीरननहीनेकुनठरतहै॥ तिनकीगतिकह
कहीनजावे॥ नेननसोदेषबनिआवे॥ ५८॥ सो॥ जोबनासबरवाजसुनब
चअतिविसमैभयो॥ हीयरेकोधजमाहपरररनकोसांगअंगगहात॥ ५९॥ दो॥
महावीररनपअतिरथीसंगसत्रुबलवान॥ सतसेनाचतुरंगनीचल्यो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

विताइनि शान ॥ ६० ॥ चौ ॥ जौ वनास पुन पछ्छ तुरस्त रन ॥ कहो सु विधउ
न वीर संघरन ॥ केतक है वलवीर महावल ॥ तिन कीनो सेना रनदल
मल ॥ केतक वल तिनके सो ऊं भाषो ॥ सत्य कहो मं तुरन हरि राषो ॥ न्रप वं
च सुन पुन उत्तर दीनो ॥ तीन पुरुष चौथो नहि चीनो ॥ जिनते रो तुरंग गहलली
नो ॥ ताहि निवास गगन मध कीनो ॥ दूजो तरुन महाबलधारी ॥ जिन तुमरी
सभ सेन संघारी ॥ ६१ ॥ दो ॥ तीजो इस्थत देषीये तेजस्वी वलवान ॥ पुह
वि वस्या तिन ऊकी सुन हो न्रपति सुजान ॥ ६२ ॥ जैमिनोवाचः ॥ चौ ॥ के
हे राय मुनि मैं जो पजानो ॥ आए तीनो देव प्रमानो ॥ ब्रह्मा विष्नु महेस देव व
र ॥ हमरे हइ नहि तीनो हरि ॥ कहा शक्ति मानव की होई ॥ हमरे हेह
र सके न कोई ॥ मान सतेइ हहेर न काजा ॥ नहि समर्थ हरि नमस्तिवा जा
तीनो देव वर्जन्नपती को ॥ राम मष वीच न गऊ रुलगावो ॥ पवन वेग रथ शीघ्र
चलायो ॥ रंगभूम में सेना महि आयो ॥ ६३ ॥ सो ॥ इह वच भीषे राय रंगभूम मे
प्रपति मचायो ॥ प्रथम मैं निरख्यो धाइ भीमसेन को दूर सु न्रप ॥ ६४ ॥ चौ ॥ तिहया
हेव वषभानुज देख्यो ॥ ईस्थत पडु वी च अवरेख्यो ॥ धंन्य धंन्य वालक प्रतिकार
ह्यो ॥ मजु देष रन इस्थत रह्यो ॥ हृदे वीच कछु मैं नहीं आन्यो ॥ मजको पर.ष
ह्यो ॥ मजै देषरन इस्थत रह्यो ॥ महासिंह वतु निर्भय ठाढो ॥ तेजवान संदर वलगाडो ॥ उग्र
ज्ञा सुन नहीं मान्यो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२२

मेघ

योगीसुतिमयपनहींकरई ॥ सुंबालकरनमैंनहींहुरहीं ॥ वज्रऐकतोरष्यवहीं
नपुन ॥ देषअजस्सुरमहावालकग्रन ॥ ६५ ॥ दो ॥ योवनासम्नपयहवचनभी
बेसरनसंग ॥ युद्धकरनउद्यमकीयोहरबतहृदेउमंग ॥ ६६ ॥ चौ ॥ निर्षभी
मनरयतरनआयो ॥ वेगजाइहागद्दिसनिमुरषधायो ॥ केतकसूरवीरकोमार
र्यो ॥ भीमनुजमतंपितवचनउचार्यो ॥ मैकर्षहानन्नयसोंसंग्रामा ॥ तुमकपिहार
नतेहिसंग्रामा ॥ वोरुभानुजनंदमहाबल ॥ तुमरेयुद्धसमर्थनयहदल ॥ तीन
लोकसेनाजुरिआवै ॥ सोनरयुद्धकरनमत्रिपतावै ॥ यहसेनाबलतुछदिषा
वै ॥ कैसेतुमरीदृष्टिआवै ॥ ६७ ॥ दो ॥ प्रथममैसेनाअजहुरीभीमसैनवलवा
न ॥ जीतदेषुतुर्हैस्तकरस्तिहसेसेजीयजान ॥ ६८ ॥ चौ ॥ प्रथममैदेषभीमहहम
रोवल ॥ इकछिनकरोचमूसबदलमल ॥ तुमदेषतकारजयहकरऊं ॥ वि
नुविधनाकाहूनहींडरऊं ॥ वदिमानतुमरेहमताता ॥ करहिंयुद्धतेहकुश
राता ॥ याजगमेंइस्थितकछुनाहीं ॥ धनयोवनतेऊंस्थिरनाहीं ॥ कीरतिवा
नसदास्थिररहई ॥ जाकीकीरतिसभजगकहइ ॥ ६९ ॥ दो ॥ शत्रुचमूवज्रवि
धचतरयोधेसूरअपार ॥ जोनरजीतेताहिवनसुजसुवठतसंसार ॥
७० ॥ चौ ॥ यहसेनाहैवधहमारी ॥ भईइस्मुषाबिताजुमारी ॥ ताहितकरोवदा
स्थलषंडन ॥ शस्त्रअरुऊपीनषनप्रचंडन ॥ समसमरवसैनामुषसनम
परन ॥ तुमकोदेषुविसवबताहींछिन ॥ इसप्रकारचितआधरनछविछाजे ॥ ॥

म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सो मुष तुम ह्रिद्धि षाव तला तै ॥ करुणा करि आज्ञा मुक्ति दीजै ॥ क्रोध निवारउ इ
स्थ्य तकौ तै ॥ श्रीपति कौ ही पध्यान लगाऊं ॥ नृपति जीत सेना संगि ल्याऊं
७१ ॥ श्री मैत्रावाचः ॥ दो० ॥ गवनु करउ वष के तत मपष्प मैं सुन मषधाइ ॥ सेना
॥ ७२ ॥ चौ० ॥ सुत वष के तम हाव लधारी ॥ नि
आति चतुरंग नी स्हर वीरद्ध षराय ॥ भेद कुटल भी उद्ध बरावे ॥ रन भी तउ आ तिरोस वढावे
श्रै सेना वध तु मारी ॥ तौ वहकुटल भी ॥ पहकिवार उप ज्यो मउ होते ॥ तव मैं ति हप्रकार करहु
जौ क दांच तुम हाकौ जीतै ॥ पहकिवार उप ज्यो मउ ही ते ॥ गउन क हो मिश्र
वत्ति ॥ गदा दंड सौं कुष्टि सोदल तमल ॥ छिद्र तवध सु पाल देते ताता ॥ ७३ ॥ दो० ॥ वध रर
पहवाता ॥ ताको आधिक सासनादी जै ॥ वध इस्नु षाददंड तकी जै ॥ ७४
स्नु षाहे तर जौ कुष्टि लद्ध षावे भाइ ॥ ताको हननप्रशस्तो कहत महता कविराइ ॥
से ॥ रिपदल तजौ त्यो जाय तुम एक लगमन हिकरउ ॥ विनर षप वृद्धि उदार मोम
न शांति न आवई ॥ ७५ ॥ चौ० ॥ ता पाछे न्य जन्मे जैसु नि ॥ करी भी मद्दि परदच्छि
नपुनि ॥ धा स्यो ध्यान हरि च ल्यो चमू प्रति ॥ अरुन ने चक्रकपि पुर षका सवति ॥ आगे
आवला चमू वरनवर ॥ मग मदमल पा कूप स्वरवासु भरि ॥ शोभत हे गजकुंभ पयोध
र ॥ भेदत चल्यो चमू ती छन सन ॥ वढ ह हठन सभ मर्दन करि ॥ हनत लष्व रवष
रगज न धर ॥ योधवीर स्हराव जु मारु ॥ हर्ष भीमत्ति: श्री रनिहारे ॥ ७६ ॥ दो० ॥ वहुसे
नामर्दन करी भानुज सुतरन धीर ॥ हे गैर षपा यक हने न छित तप त्यो वल वीर
७७ ॥ चौ० ॥ सुरवीर यो धाव ड हने ॥ इकघाय लपर इक मरह ऐ ॥ क हूक वंध
क हू सिर परे ॥ कहू गज घन रन त रपि करे ॥ गज हून उन जीय क्रोध निवारो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

शत्रुभाउ हीय तेन हीटा स्यो ॥ यह जी य जान वज्र पर नगायो ॥ सैनाधिक रसंघा
रतिभयो ॥ वजतन पतिकेसी सउतारै ॥ ति: तेसरव संगंध वज्र ठारै ॥ जो जलह
न मलीन कमल युति ॥ सुछ्द दैसिर परे धरनि युति ॥ १८ ॥ दो ॥ हनन को पेगज
सीस वज्र सत्ता ठरै विशाल ॥ करन पद तपहर रतिभले बीन बीन उर माल ॥ १९ ॥
चौ ॥ जैव नास निज च मन निहारी ॥ भीन जनदन सकल संघारी ॥ सैना निबिकैोध
मन भयो ॥ अस्त्र शास्त्र रधन षकर लयो ॥ भयो आरूढ रूप गज ऊपर ॥ को
पिज प्रतिभाष्यो तुम भट पर ॥ ली जैर पकी जैसंग्रामा ॥ यह प्रशस्त्र स्तर नकोक
मा ॥ तुम धरनी पर हम असवारा ॥ ऐसे तु चतन युद्ध हमारा ॥ मगा भ्रम सहित
त वज्र रपर दे सा ॥ कीयो युद्ध पुनि भयो कुलेसा ॥ २० ॥ दो ॥ वज्र स्तरन पति युद्ध
मति रथ विहीन तुम बाल ॥ दै हो रथली तै प्रभु दरच ज युद्ध ततकाल ॥ २१ ॥ चौ

मै तो जानत नाम तिहारा ॥ कौन गोत्र को पिता तुमारा ॥ कौन देस का शा तुम
आवहु ॥ सत्य वचन कहि मुहि समझावहु ॥ जै सैवि सम गोत्र न जानत ॥ स
कल जगत लिर तैन वषानति ॥ अपुनो कुल मो कौ कहि दीजे ॥ हर्षत तोर
युद्ध पुन कीजै ॥ धंन धंन बाल करन धीरा ॥ मोमत तुम सम अवरन बीरा ॥ प
रम उदार बुद्धि सर ज्ञाना ॥ महा स्तर त्रैलोक निधाना ॥ २२ ॥ दो ॥ कहो वृतं
त सकल अहि सत्य वचन जीय जान ॥ करो युद्ध तो सो प्रभु भट कल निरनै पह
हिचान ॥ २३ ॥ वज्र के ताबा च: ॥ चौ ॥ कश्यप गोत्र हमारा जानहु ॥ स्तर जमो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हि पिता मा मानहु ॥ करन तात सम जग्य ग्रि हु जानत ॥ नाम मोहि वृष केतव
खानित ॥ पिता मोहि दुष वन अति कीनौ ॥ नगन करत द्रोपती [illegible] चीनौ ॥ दुर
योधन को अति हित कारी ॥ धर्मराज प्रति मयो विकारी ॥ अर्जुन पर म अन
ग्र हत कीनौ ॥ रन महि दिद अभै पदु दीनौ ॥ जौवनास नि श्रेजी पजानहु
करन पूत मो को पहिचानहु ॥ ८४ ॥ दो० ॥ नृपति युधिष्ठिर पज्ञाहित तपसा
मोहि है काज ॥ यह तन मित्र अपरा ए हम हित रोतु मारे बाजु ॥ ८५ ॥ सो० ॥ शाक नृप
ति रन माहि रथु ले माराले बानहौ ॥ स्पंदन को पुन नाहि तौ फुन उचत नपुष्ठ महि
८६ ॥ दो० ॥ ध्याय चतुर्थो रुद्र रस व वमध जसंग्राम ॥ यौवनास की चमत्कृत महित की
चरु धर अति रुचा म ॥ ८७ ॥ इति श्री भारथ पर्व णि आश्व मेधि विष्यान ॥ कवि ट हर
न पहरन म यो ध्याय चतुर्थो जान ॥ ८८ ॥ ४ ॥ यौवनाश्व वाचः ॥ सो० ॥ धंन्य करन
सुतस्स्ट रप्पयमे बानप्रहार तुम ॥ चंचल तक्रि [illegible] ए पर रुपहि मैं न चलाउ सम
र ॥ १ ॥ वृषकेतोवाचः ॥ चौ० ॥ सुनहे यौवनाश नृप बाता ॥ तुम स्पृह वृ अव मो
अतिताता ॥ व्रज रोहा पसकुतन ही कीनौ ॥ कृष्णचंद को दरसन चीनौ ॥ जन्म
ग मोल न कव दगवा पो ॥ श्रीपति को तुम दरसन पायौ ॥ याहीते हम अति व
लवानो ॥ कृष्ण दरस कठिमन त्रिपताना ॥ सदा तरुण एहम जरा रहित तनन
भव तौ कै सुंदर गिरधर घन ॥ दीयो अतुल वल मोहि कृपा करि ॥ तुम रा वल
नही हम रे सम सर ॥ २ ॥ कवि० ॥ जाके ध्यान धरे पिंगनर गिर लंघ जात ॥

ले

ल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जाकीकृपाहोतमतिमंदकविभारथी॥गिरवरधारीगर्वइंद्रकोप्रहारीकुल
कौरवसंघारीभयोअर्जुनकोसारथी॥टहकनप्रभनंदलालकरुणा
कृपालघालम्लेच्छतिअनंगकोटपरमप्रुषारथी॥तिहबलुदीयोमो
कोसाचुककहोन्नपततोकोतूंकोबलुपापसरवीरहोमहारथी॥३॥जै
मनोवाच॥चौ॥पहबचसभिकेजोवनासन्नप॥हस्योकछूजीयकोपन
राधिप॥ततछिनन्नपतिधनुषटंकारो॥दशसरबषमहधुजकोमारे॥सार
तसरबषकेतमिहारे॥ऐकैसरसोसकलमिवारे॥इकइकबानदृकत्रैकी
ने॥मगमेछेदनपजचनदीने॥वजुरतीनसरहनेकुरनसुत॥वेध्योजो
वनासममंतगाति॥पैनसरनन्नपधरनगिरायो॥पहकौतकबषकेतदिषा
यो॥४॥दो॥जैसेजूठीसाषतेपितरमुधोगतिजात॥तौबषमधुजबानतेरिपद
लभागपताल॥५॥चौ॥पनसरअर्धचंद्रकरधारयो॥यौबनासकौअरप्रहा
रयो॥धनुन्नपकोषंडनकरदीनो॥गुनसमेतसेनासभचीनो॥वजुरसीस
तेछत्रिगिरायो॥चामरधुजधरनीलपटायो॥जैसेक्वककैठौरप्रीतमप्रीति॥
सनंतिविनासहोतगुणअगनित॥सुंभानजसुतअसुगमारयो॥छत्रधनुषब
गुनछेदषिठारयो॥एकबानसोपहबलुकीनो॥यौबनासकोवजुडुबदीनो॥
६॥दो॥अवरधनुषकरलीनोन्नपगुनचढाइबलबान॥साठबानबषकेतको

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हनेनिशंकततान ॥७॥ चौ॥ साठवानवालकउरलाउं॥ उमड्यो अरुधर
सकलअंगदायो॥ पाडुतभयोमहादुषभारी॥ तीछनवानलगदुषका
री॥ पीवतवानरुधरकौऐसे॥ सरजसोषतिरतजलजैसे॥ वज्रकनैसु
तउद्यमकीनो॥ क्रोधसहिततधनुसरकरलीनो॥ चारवानपठहतनेतुरं
गा॥ सूरुसारथ्योरिस्योहतिहतसंगा॥ क्रोधततीछनसरवरसावै॥ जौवना
सनपहुंचएनआवै॥६॥ दो॥ दृष्टिएनिआवैनपकुहतवरषतवानअपार
भोवनासनपहतभयोरननमैभईप्रकार॥८॥ चौ॥ अंधकाररनभवाम
तिछायो॥ आग्नेयवानवषकेतचलायो॥ मंत्रशक्तिसरकीयोप्रकाशा
भोवनासनपद्दिष्टिआभासा॥ तरतचमूनपनैननिहारी॥ वरुणाश
स्त्रकर्णलीयोसंभारी॥ मंत्रनिवेगप्रहारनकीनो॥ पावकवानशीत
करदीनो॥ वज्रशैपर्वतवानचलायो॥ शिलाअशेषमेघवरषायो॥
तापाछेतीछनसरमारे॥ कर्णिपूतकेशिरदेप्रहारे॥१०॥ दो॥ तीछनवा
नचलाइनपमुरछापायोवषकेत॥ दृष्टिएनिआवतकरनसुतविह्वलभयो
अचेत॥११॥ चौ॥ तुमलयुद्धदारुणअतिभयो॥ सरवीरयाधेअरनर
घयो॥ करनपूतवाननमुरछायो॥ भीमसेनकीदृष्टिएनिआयो॥ कौ
प्योभीमसमहावलभारी॥ धायोपाछगदाकरधारी॥ मुरछायोरा [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भानुजनंदन॥ आयोभीमनृपतिदलकंदन॥ हाहाकारकरतभैभीतो॥
सिमरनरिदेकृस्नकौकीनो॥ आवतभीमचमूसमभददेष्यो॥ गदाहाथिक
ररनआवरेष्यो॥१२॥दो॥ कोप्योभीममहाबलीसुनितावडीअपार॥ कालि
जधनुहस्तनपुरीजैहैमहिधिकार॥१३॥चौ॥ जोकालिजविनुगजपु
रजाऊं॥ सकलजगतमहिअपजसपाऊं॥ धर्मराजसोकहाकहु
होतव॥ तजिवृषकेतजाउगजपुरतव॥ मुहाकलेसवषोउरअं
तर॥ इषसमुद्रमहिपरयोनिरंतर॥ मोष्यधुनैसीतलभरस्वासा॥ अंसी
जतहाथभयोउपहासा॥ कृस्नध्यानचरनदेविचारयो॥ हन्योनृपति
जिनकालिजमारयो॥ पुत्रसोकजीपकोधवढायो॥ करलेगदासमरन
महिआयो॥१४॥दो॥ हाथगदागहिरनपरयोहैगैहतेअपार॥ रथपा
पकदलमलकीचेजुपावकतृणजार॥१५॥चौ॥ हैगैरथपापककसिरमा
हि॥ परेगदाचूरहैजोहि॥ जैसेबिजलीपररपकहाई॥ कारतवारनलरैको
ई॥ गदाहाथिकरपुद्धप्रकासा॥ गजहिनरगहिपठैआकासा॥ चलायो
हीमहावेगभीमजब॥ पुगलजानितेपवनप्रगटतव॥ पि:समीरतेउ
डैभोमगज॥ हैरथपापकगगनभ्रमतलज॥ गजपरगजमारेभटत
लपर॥ सैनाभ्रमतफिरतइतउतधर॥१६॥दो॥ जैसेनरहतिरिभलोविनु

जे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वेगअधोगतिजत ॥ सुरनसेनाहतिभईऊर्द्धपादतनघात ॥ ५७ ॥ चौ ॥ जो
कछुभीमहाप्रमद्दिआवै ॥ हैगरथलैगगनपठावै ॥ सेनाभ्रमतिअका
शअपारा ॥ इस्थितिपानचक्रकीधारा ॥ जोजेसेकरपठ्योसतैसे ॥ सितत
लपंगऊपरनभयेसे ॥ केऊउलटतनभ्रमतगगनमधि ॥ केऊमस्तधेके
ऊद्धकमएमधि ॥ केऊटेढेकेऊप्रसरनहिसाध्या ॥ भ्रमतभोमपठऐनिजुरा
हाथा ॥ जेसेछाइलेतमकरीनभ ॥ तैसेभ्रमतअकाशचमूसभ ॥ ५८ ॥ दो ॥
हितदैभीमवालिकदरदमंत्रीपकसेधाइ ॥ करगहितितसेभूमाइपोदीपाआ
काशपठाइ ॥ ५९ ॥ चौ ॥ संगभंगवजस्तरथपरेरन ॥ लूटहिअधोमुखरुध
रवहततन ॥ कछुअवारमहाबतपरे ॥ वदनमलीनरुधिरतनभरे ॥ राज
पुत्ररनपरेविदीरन ॥ आवतरुधिरमुखअंगअंगवीरन ॥ इकभ्रमतगिरैगगन
तेभूतल ॥ आगतचलतप्रवाहमहीदल ॥ तवसवेगरनप्रापतिभयो ॥ भी
मसेनकेसनमुखभयो ॥ नृपसुतक्रोधवचनमुखकहिहीई ॥ रथतेउतर
गदाकरगहिहीई ॥ २० ॥ दो ॥ तप्पतिछलरूसाप्पमजुतोलिनछाडोवीर ॥ हा
मरोसेनाहतकरीतोहिहनोरनधीर ॥ २१ ॥ चौ ॥ जोवनासुसतमोकोजा
नो ॥ महाबलीमुजकोपहिचानो ॥ नामसवेगजानतीजेमुज ॥ करोर
विदीरनअंगअंगतुज ॥ पहवचभीमगदाकरलीनी ॥ भीमसेनकोता
डुनकीनी ॥ तासीसीसपरआतिडबदीनो ॥ सकलवदनसवलबंदनकीनो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२८

अश्वमेध
...ति ३ ॥
...ना ३

वजरवकोदरगदासंभारी ॥ छंडकरगहि सुवेगतनमारी ॥ लगेगोपर्स
परगदाप्रहारन ॥ परत वज्रसम अंगविदारन ॥ २२ ॥ दो० ॥ मर्दितध
रनगिरे दोऊ महासूरवलवान ॥ वजरउ छेजरेअ लेदोनोएकस
मान ॥ २३ ॥ चौ० ॥ पुन सुवेगको भीमउठायो ॥ करसोंगहि सोंवेरभ्रमा
यो ॥ झकझोरत पछकोधरऊपर ॥ लुटतफिरत आकुलतनऊ
पर ॥ भयो सुचेततउठ्योतातहीछिन ॥ उपज्यो क्रोधमहानपसुतमन ॥
पकर्योभीमसेनकोवलकर ॥ मरदतकंठडार्योधरनीपर ॥ वजर
भीमकरगदासंभारी ॥ छंडसुवेगकेछेदेप्रहारी ॥ पुनसुवेगअतिक्रोध
तभयो ॥ गदादंडभीमसहिदुवदयो ॥ २४ ॥ दो० ॥ मए पुछअतितनमलकरगी
रे दोऊ रनमांहि ॥ मूरछितहैधरनीगिरेतनसंभारककुनाहि ॥ २५ ॥
चौ० ॥ भीमपर्योमुरछाइमूरछासोमूरछासेनाकहै ॥ दुंदुभशब्दवजाईजीव
नासनपहर्षचित ॥ २६ ॥ चौ० ॥ मूरछपरेरजतोरनखेता ॥ जाग्योवाल
कभयोसुचेता ॥ दुंदभशब्दपरेवजकाना ॥ मूरछाभीमसहचमह्व
पाना ॥ सुनतवचनआतुरह्वैधायो ॥ पापमहिभीमसेनपाहि
आयो ॥ परयोमूरछाभीमसुधरनपर ॥ निरखोहीएतेगंगयामृतक
हर ॥ वजतनिसानआनंदछितराजा ॥ हर्षतसैनासुबदसमाजा ॥

३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भीमसैन वान न तन प्रहरन ॥ बेचन निकारे सर संप्रहरन ॥ २७ ॥ दो० ॥ करन प
त क्रुद्ध तभयो वेग गयो रन माहि ॥ क्रोध धनष टंकार पुन सुनत सत्रु म
रद्धाहि ॥ २८ ॥ चौ० ॥ वृषभधुज रन मैं पग धारयो ॥ काल रूप जुवनास नि
हारयो ॥ गर्जे वाल सन्मुष होइ ठाढो ॥ सिंघ सरूप माहावल गाढो ॥ नि
रषन पति जी प क्रोध वढायो ॥ तिः सुत भीमसेन मुरछायो ॥ य हतो
भद्रावती को राजा ॥ सूरवीर संग वढो समाजा ॥ याके वडे पराक्रम सक
हीचे ॥ वान तेज न हकिसी को लहीय ॥ तेज पुंधि षर सर ठहरायो
कृस्न ध्यान धरि वान चलायो ॥ २९ ॥ दो० ॥ श्रीपति को जीय ध्यान धर सक
ल संष सर लाओ अंगराज जान ॥ ३० ॥ चौ० ॥ कृस्नी
ताको कर वान ॥ छाडत भए ... तक भयो गति जात न वरनी ॥ वडेरो सैनो ना
सहत तरिसपान पधर नो ॥ सुत कर्ण प्रहत तरु तिभुज वल भीरी ॥ नपति समेत कूटक स
सकल संघारी ॥ कर्ण प्रहत तरुपति आयो ॥ हरेहरे करु पवन जलावत
भयो पो ॥ हरषत भीमसेन पहि आयो ॥ हरेहरे करु पवन जलावत
तुम सुभीमसेन सुभषपावत ॥ सत कोहुटी नैन न षेल वोले ॥ क्रोध सहित तस
तुमु सुभीमसेन सुभषपावत ॥ भयो निधाता ॥ जैन हत की याकरन को ता
वृकोदर वोले ॥ पावना सको भयो निधाता ॥ जैन हत की याकरन को ता
ता ॥ ३१ ॥ दो० ॥ कर्ण प्रहत दुरषत भयो चिंता भयो मन माहि ॥ सो ऊ आभि ला
षाले तु सौन पति हन्यो किधो नाहि ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ सत कोहुटी भीम वड भागी
उघरे दृग चिंता सम भागी ॥ सुबउपजे दुषभए निकंदन ॥ निरषे मन क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२७

अश्वमेध

रनकों नंदन ॥ पवनसुत लावत मति सुखदीनो ॥ उठिकै भीम प्रसन्न लिंगन कीनो ॥ चू
मत मेघसुबसुबर्णकन्यामावत ॥ निश्चै सुनि तसुत कंठ लगावत ॥ हरष तकुए
जे बचन उचारो ॥ पौवनासन्न पकों मैं मारो ॥ ३३ ॥ दो० ॥ पौवनासहित
कीयो मैं सेनासहित कृपाल ॥ मन बच क्रम जीय जानि हैं कृपाकरी तु
द लाल ॥ ३४ ॥ चौ० ॥ सुनि कै भीम प्रसन्न तम पायो ॥ दुष से तावु संभ्रम मैं
रगयो ॥ धंन्य धंन्य करि जपति कहेयो ॥ रिपर एजीति तुरंग मल हैयो
बेग चलहु हस्तनपुर देसा ॥ जहा कृष्ण रुध मन रेसा ॥ पहब चार सु
न वो लेयो वृषमध्वज ॥ देवो पर्देव विचार सहाय ज ॥ करत युधिष्ठिर यज्ञ
धर सहित ॥ अब हस्यो हम जीय पवं न्य विते ॥ जीव दया सों अत कल्याना
हम तो मारस्यो प्रति वलवाना ॥ ३५ ॥ दो० ॥ पौवनासन्न प सुत सहित तुसेना
हनी अपार ॥ हे पाल्यो इ मैं बन मत सो हम नहि स्यो विचार ॥ ३६ ॥ चौ० ॥ जौन
र ॥ हनुसा धष्टि गोम रहि मति जर ॥ रत ने जीव घात करि जावह ॥ कैसे प
तपुन्य फल पावहु ॥ कहि आप गजपुर पहवा ता ॥ कृष्ण युधिष्ठिर कोतु
मताता ॥ न व हितसहित चमक्कं गल्यावों ॥ भीमसेन तब नामक हावो ॥ तिः
पए कों अब पता सं भारहु ॥ पुहिकर हु विवेक विचारहु ॥ ३७ ॥ दो० ॥ तुमहित

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

राक्षस बज्र की पैसा वधान नृप होइ ॥ जौ पहु राजा रन मरै कीरति करै न
कोइ ॥ ३८ ॥ चौ० ॥ हम महि पराक्रम है इसु कारण ॥ राजा मुए सेरैन ही स्वार
प ॥ हम रावलु को वरन सुनावै ॥ जौ राजा मृतिक गति पावै ॥ जौ जीवत नृप
को ले जावहि ॥ तौ हम महा सुजस जग पावहि ॥ हम जो कीये व राक्षस भारी
नृप व तांतु सभ कहै इस रारी ॥ मेघ बरन तिः औसर आयो ॥ आय गगन ते भू
पर त्यागो ॥ तीन ऊपर हीमंत्र ठहराना ॥ जीवा वज्र नृप को सुरज्ञाना ॥ ३९ ॥
दो० ॥ कहि आपा है प्राए ऊनाकृस पुधिपु रसार ॥ जीव ना सहि च मुसांग ज
पुर त्यावो धाइ ॥ ४० ॥ चौ० ॥ सु सुवचन वृषकेतु कहत है ॥ नृप जीवा पर्वता
ज सहित है ॥ ले जावहि जीवन नृप हसत नपुर ॥ कहै पराक्रम सकल पुधिपु
र ॥ मुनि वर ने अपपति सों वाता ॥ धंन्य कहै हरि तुम को ताता ॥ धर्म सभी मै
जो पग ली नो ॥ सो पुण्य भीम संपूरण कीनो ॥ हरि भीम पहु सब पृधिवी
ही ॥ भीम जसुत को आज्ञा दीनी ॥ सुनत हम रावें चन वृषकेता ॥ पौवना
सकोक रोसु चेता ॥ ४१ ॥ दो० ॥ आज्ञा ले कर कर्ण सुत चलि आ पौन नृप पास
सी सु राष कै गोद मै पवन जला वैतासु ॥ ४२ ॥ चौ० ॥ तीनो उदक करोप्प
ततव ॥ संकुचत्यो हरि दर्शपु ए सव ॥ जल लड़ा स्यो नृप के मुख माहि ॥ जा
गत भए नृपति हाहाही ॥ सुत सैना सभ जागृत भए ॥ आनंद भयो शोक सभ
गए ॥ उठयो नृपति लाज्यो चरनन तव ॥ गए प्रान दीने नृप को तव ॥ हर्षित

द

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लोक करै जैकारा ॥ जहां तहां धुनि मंगलचारा ॥ यौ बनाय उस्तुति बहु कीनी
आपु दान मोहि तुम दीनी ॥ ४३ ॥ दो ॥ जीव दान तुम दीयौ मझ कीनो अपुनो दास
॥ उचत नहीं अब पछ्य मझ हेत हैं जग उपहास ॥ ४४ ॥ चौ ॥ छत्रध(र्म) अपा
ना मझ राषा ॥ जो मन तुम्हारी तिस्य मति की साषा ॥ कीयौ युद्ध जो लोघट प्राना ॥
हनि रनि फुनि जीयौ सुगयाना ॥ अब मुक्ति दास जानत लीजै मनि ॥ परसा बहु
वग कृष्ण स्याम घनि ॥ बहु परि युधिष्ठर कै मष दोषा ॥ सफल जन्म ताही
दिन लेषा ॥ पुनि तीनौ कीउ उस्तुति कीनी ॥ गई आप पर मोको तुम दीनी ॥ द
रसा बहु हम कौ भगवाना ॥ सुफल जनम तुम रे बलवाना ॥ ४५ ॥ दो ॥
जो अस्वमेध कीयौ तु मोहि पर कारज के हेत ॥ हम जैसे हरि मुषु निरषि
कोटि मुकति फल लेत ॥ ४६ ॥ चौ ॥ करी बेनती अवन सनली जै ॥ आप
रथ र अनुग्रह कीजै ॥ चलहु पुरी अपुनी पग धारहु ॥ भद्रावती लोक नि
स्तारहु ॥ पुनि हम कौ ले चलहु तहां ही ॥ कृष्ण युधिष्ठर नृप पति जहां ही
चले पुरी कौ महा मदति मन ॥ बाजहि बजंत्र भेर दंदभ घन ॥ नृप अस रु
भी मदु रद असबारा ॥ स्वेत बरन गज शोभा अपारा ॥ कर्ण जस हित तो
स वेग आरूढ़ त ॥ सकल बरन गज के चन पहुरत ॥ ४७ ॥ मेघ बरन रत्ना
करन हंस तुरंगम संग ॥ रथ बैठे हरि ध्यान धरि पुर कौ चले उमंग ॥
४८ ॥ दो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नृपति प्रजा को आज्ञा दीनी ॥ सकल पुरी को चहु सुधि कीनी ॥ हाटबाट
मग सुभग बनावहु ॥ कंचन कलस धुजा गृह छावहु ॥ चंदन अव
रअरगजा बासा ॥ छिरकावहु मग सकल सुवासा ॥ नरनारी सभ क
रहु सिंगारा ॥ ह्वा है आपु नें अपुनें घारा ॥ भीमसेन को भेट दीहु नर ॥ आ
रती वारनि कारहु तिनारवर ॥ इसे बचन नृप भीष सुनाए ॥ सुन पुर लोग
न अनंद वढाए ॥ ४९ ॥ दो ॥ नगर निकट आए जवहि नृपति वेनती कीर
न ॥ आज्ञा दीजै मोहि तिको आगे जा उपवीन ॥ ५० ॥ चौ ॥ ले आज्ञा नृपन
गर सिधारा ॥ प्रभावती प्रति वचन उचारा ॥ सजहु आरती भेट लेहु
वर ॥ मंगल गुन कहु चलहु निकर थाल भर ॥ अपुना सकल वनितन सुना
यो ॥ रानी सुनत महा सुख पायो ॥ कीयो सिंगार सवी सभ साथा ॥ धू
प दीप आरति निज हाथा ॥ कुंकम मृगमद अरु घनसारा ॥ चंदन अ
गर सुगंध अपारा ॥ प्रमुदित चली नृपति के संगा ॥ ससिवदनी सभ नैन
तुरंगा ॥ ५१ ॥ दो ॥ चलि आई तिन के निकट रानी सहु भरतार ॥ कर प्रदछ
ना चरनन लगी उस्तुति करी अपार ॥ ५२ ॥ चौ ॥ धूप दीप आरती उतारी ॥ अ
छित श्रीफल सचिर सुपारी ॥ माणिक मुक्ता भेट वहु दीनी ॥ सवी यतन सुकृ
त आसीसा कीनी ॥ सुफल जन्म अव भयो हमारा ॥ पावन दरसन कीयो तुमा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रा ॥ दानपुंन्यसम सुफल भए ॥ तुमकरुणा ते सम दुष गए ॥ तुमरी कृपा
कृष्णपगावरसाहि ॥ नृपति पृथ्वीछत्र को मुषदरसाहि ॥ धंन्य धंन्य पहूमी
नु जताता ॥ प्रानदीपेन्नपकौरनघाता ॥ ५३ ॥ दोहरा ॥ करनवहे दानी
कहे तीन लोकविष्यात ॥ ताको सुत वृषकेत तुम भए प्रानको दात ॥ ५४ ॥
चौ ॥ पतिविन पुवती किसेनिकाजा ॥ धनुचो बनध गस कलसमाजा ॥
कंठसूत्र मेरो पुबनासा ॥ दीपे प्रान तुमकी पोप्रकाशा ॥ जो कदोचतुम
नृपनजीवावति ॥ मैअप नोतनु अग्नि जरावति ॥ पहदुष तेमृगको मा
कतापो ॥ नृप सैनासुत सहित जीवायो ॥ ने शब्द न तुमको करोअसीसा
चिरुचिरुजीव उलाव वरीसा ॥ पहवचप्रभावती कहि दीए ॥ सप्रसंनतीए
नोमन भए ॥ ५५ ॥ दो ॥ ले आपो पुनु भेटनृप सकलप्रजा लीए संग ॥ वं
दीजनजसगावही पुलकत रिदे उमंग ॥ ५६ ॥ चौ ॥ पोवनासु भेटापहदी
नी ॥ सावधान तीनाको कीनी ॥ इकुइकुसहस्र गति दृप्रवी नो ॥ एक एक कोइ
तनो धनदीनो ॥ कंचनरतन भारसंपूरन ॥ ऐकानवहे मनगजनपूरन ॥
इकुइकुसहस्र टंवरभरपूदीनो ॥ मनि मुक्ता भारि पूरणकीनो ॥ ऐकु
ऐकुगजस्वेतदीयो संगा ॥ महामस्त शोभत संदरअंगा ॥ इकुइकुसहं
समस्यार ष्युअंवर ॥ पहिरेतीनोनवासिनकंवर ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ तीनो

५३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भए प्रसंन मनन कीनो पुरी प्रवेस ॥ अगनित बाजन बाजहीं हरष
तहीं पेन रेस ॥ ५८ ॥ चौ ॥ कन्या हस्ती पर असवारा ॥ गावति भा
वति मंगलचारा ॥ कुसम हाथ लीऐं बरसावै ॥ द्वार द्वार पर युवती
गावैं ॥ करहिं आरती निजनिं हाथा ॥ भेटहिं नारन रिनके साथा ॥
द्विज सम्ह हम्रुति करहिं उचारा ॥ गृह गृह आनंद बधावा पारा ॥ उ
तरे जाइ राजके द्वारे ॥ हरष तन्नप के भवन पधारे ॥ सिंघासन पर बै
ठे जाई ॥ पुत्र पर प्रेम समुद्र बढ़ाई ॥ ५९ ॥ दो ॥ आइ कृष्ण कीं कृपा
करि ॥ पाछे भोजन कीन ॥ पौढ़ाऐ परजंक पर तीनो महा प्रवीन ॥ ६० ॥
चौ ॥ भइ प्रभात जागे बलवाना ॥ कृष्ण नाम मष्र रटत सुजाना ॥ हरष
तन्नपति सभा मद्धि गऐ ॥ सकल लोक उठ ठाढे भऐ ॥ करी बेनती जो
वनास पुन ॥ महापराक्रम भीमसेन सुन ॥ पंडव षकेत महा बलभ
री ॥ सु तम पाते मुझ लीनो उवारी ॥ आब दोदासन तुमारा सुनयो ॥ समसं
रवंसु पुत्रिय परवार पो ॥ पुत्र कलित्र सों सब अपना मुझ ॥ सकल समर्पे
कृष्ण कहा तुझ ॥ ६१ ॥ दो ॥ तन मन धन सरवंस सकल कृष्ण धर्म को
देत ॥ मुझ दीनो है सर्प प हर्ष पुत्र कलित्र समेत ॥ ६२ ॥ चौ ॥ बहुरो पह
रारी रक्षा पुनो पुनि ॥ ह पकत तभि रोपा बुद्धि कीनरन ॥ आज्ञा करत तम धारा

२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ३ ॥

अश्वमेध

जातव॥ देउ ठंठोरापुरी बीचसब॥ चारवरननरनारिसकेलै जन॥ बाल
क वृद्ध तरुन हरषत मन॥ सकल चलहि हरसानपुरु कौ अब॥ अ
लंकार तन साज मन हाद्धवि॥ हैगै रथ साज उ सभसैना॥ अस्त्र शस्त्र व
उ विध संग लैना॥ छत्र अरु चवंर रत्न अपारा॥ हीरा मणि मुकता हल भी
रा॥ ६३॥ दो०॥ सकल समान करत भए पुर परजा सभ लोग॥ वृद्ध मात तपो
वनाश्रा की कह्यो जा इत हत जोग॥ ६४॥ चौ०॥ पाछि पोन वति सु वेग सहाव
ल॥ कह्यो माहि जननी गजपुर चल॥ आज्ञा लै सु वेग उठि धाए॥ हृ
रषत हृदै वचमो बसु नाथ॥ चल उहि मारे संग कृपाक ए॥ दर्शन की
जे कृष्ण पुनि एरि॥ चलहि सकल नगर तर नारी॥ राजा परजा सह
तहित धारी॥ चलउ वेग दरसन हरि कीजै॥ अपना जन्म सुकारथ
कीजै॥ कीजै गंगाजी इसनाना॥ दान पुन्य बहु करउ विधाना॥ ६५॥
दो०॥ मैनि चल्यो गीसं गतु म मन व वचक्र मजी पजान॥ मउलै हननी हि
लहि व उ छाडुन जाउं मान॥ ६६॥ चौ०॥ जव ते पति परोष भउ भयो
साधनु दीयो उधारा मै सव॥ सोव हकेस
वउतल हमउ कौ दे गयो॥ जहाहो तपन निगमउ
काठ जाउं अव॥ इतिना ठौर नवासुहमारा॥ जहाकथाहि
सेवा॥ परसानाहि न देवी देवा॥ जहाकथाहि
चार॥ तहा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रि कौ गुन गावहि ॥ पन्नग तो मसद जोम जनगावहि ॥ जहां हो तपुंन्य वनजदाना
गंगादिक तीरथ फ स्नाना ॥ ६७ ॥ दो ॥ मैं न जावो न हीं ठौर ईन तुमको अ
ज्ञाता त ॥ धनुमाप नोग्घ ठोन हीं स पक हो प हवा त ॥ ६८ ॥ चौ ॥ जह
द्विज बरउप देस सुना वहि ॥ द्रोह कपट परपंच मिटावहि ॥ मैं तो द्व
मउ धारादेऊं ॥ जु ठक पकफिरु गालेऊं ॥ पहजी पजानधरम मन
हीकरऊं ॥ पुंन्य कीयेमति सीघ्र तमरऊं ॥ कवहु धर्म सुन्यो ना
हीं श्रवनन ॥ लोभमोह लल चानो मो मन ॥ मातुपिता मुजुधर्म
न कीनो ॥ पति को पुंन्य द्रिगगगन नहीं चीनो ॥ अब होव द्धि भई हो ताता
धर्म कीये कैसें कुफ राता ॥ ६९ ॥ दो ॥ ताउन तु मरे संग सुत कहो न प
ति को जाई ॥ तीव त धन छातु ओ न हीं कजु पित को समुजाय ॥ ७० ॥ चौ ॥ प
पहह वचसुनि सुवेग फिरआयो ॥ सकल वृ तांतु नरेस सुनायो ॥ प
हवचसुनि तनपति मुसकायो ॥ सुत समेत जननी पहि आयो ॥ बिव
करजोर रन पति वच कहई ॥ पुनपुन चरन मातु के गहई ॥ चलहु सम
तद रसुन हफिकीजे ॥ दुःकृति सागर सुकृत तव रुली जे ॥ मेरो वचन मान
हु न माता जव ॥ बांध चडायो पतु जै रथ पर अव ॥ सुन होमो ली मात त अ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२१

अश्वमेध

पानी ॥ दरसु विलोकउ सारंगपानी ॥२१॥ दो॰ ॥ कहु सुधिष्ठर एव
निश्चय जिह करि दरसन हो जोग ॥ यह समाज देखन हीं जीव अभा
गी सोइ ॥२२॥ चौ॰ ॥ पुनि मृदु वचन प्रभाष सुनावै ॥ सति जननी जा
यह हरि तु उपजावै ॥ चतुर वरन नर नारि महाजन ॥ सकल विलो
कन चलैं प्यास्याम घन ॥ पुनि धर्म तम सरवस त्य वचन को ॥ अरु स
हदेवन कुल अरु जन को ॥ रुकमनि आदिक सकल तीय पावन ॥ दर
सु परस अघ कोट मिटावन ॥ मेरो वचन मान ले माता ॥ तांते होइ
सकल कुसलाता ॥ वेग चलउ उठि गहर न लावउ ॥ कोटि पदारथ
को फल पावउ ॥२३॥ दो॰ ॥ तब जननी राजा सों कहै मैं न जाउ तिन माहि ॥
वह तो धन को ले वहीं फिर देवै कछु नाहि ॥२४॥ चौ॰ ॥ तुम सुत तरा जुक
ढुकि तजावउ ॥ अपुन पुर वैठे सुष पावउ ॥ वउ प्रतापु अपनी ठकु
राई ॥ यह तिविधि तिकतिको तजि जाई ॥ मै तुम संग चलौ नहीं राजा ॥ न
हि काढो वशिप कअनाजा ॥ लेना देना लोगन ते मेउ ॥ सो नहुहि काढो
सांचु कहौ तुम ॥ मेरे गृह धन वनी तुम्ह पारा ॥ गोप चुराय लेहिं इ कबा
रा ॥ गृह गो ... सभ तो मकुजसारा ॥ हरि लेवह सभ दास सहमारा ॥२५॥ दो॰

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कौंनकामहमकृष्णसौंआवरपूछिएरराय॥ तुमपुरतजिकितजात
हौसवलोकदुखपाइ॥७६॥दो॥ पहवचसुनिकेयौवनासन्नप
गहिहारीरथवीचनराधिप॥ बाधीवजततप्रकारजतनकप॥ रुदन
विलापकरतदृगजलभरि॥ कह्योवंतातवकोदरआगे॥ दुखअविर
त्रहतसनसभलागे॥ जैसेकुपएअहितकोदाना॥ ग्रीवपावधरले
तसुजाना॥ सुपहचलीन्नपतिकीमाता॥ सीसधुनततनहीतनकुस
लाता॥ पांचहुदेवसमद्रावतिमाही॥ हरषतपांडवबसेतताही॥७७॥
दो॥ भेटकृष्णन्नपधर्मकोजौवनासन्नपलीन॥ हरिभेटासन्नमैधरि
[illegible]गटयुधिष्ठरकीन॥७८॥चौ॥ यौवनासन्नपअतिवलभारी॥ हृदैमे
टवऊकरीमुरारी॥ धर्मराजभेटसवधाना॥ वरनतनावोसकलविधा
ना॥ चारअपुतहस्तीआतिमाते॥ सेवतवरनमदआभचुचाते॥ आपुतव
चासमरेरथपूरन॥ दविपटंवररत्नसंपूरन॥ दससहस्रहनीचमरचतु
रंगा॥ पजाअसंवचलीन्नपसंगा॥ तिनन्यारीवरभेटउठाई॥ कृष्ण
निमित्तचलेहरषाई॥७९॥दो॥ अरजनअरुसहदेवकीनकुलभेट
जीयजान॥ न्यारीन्यारीलेचल्योयौवनासराजान॥८०॥चौ॥ प्रभाव
तीरानीहरषतमन॥ संगवधूदससहस्रअरुचिरतन॥ भेटउठाईवि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बध परकारा ॥ रत्नन करगज मोतन हारा ॥ हीरा मनगन चीर अपारा
आभरन कनक ब ऊत बिसारा ॥ तिन पर अरू तच्छित्र बनाए ॥ शुक
सार कपि कमोर लिषाए ॥ चात्रक हंस चकोर रुचिर षग ॥ लिषे चि-
त्र छबि हरत छबि जगमग ॥ कुकम निद्रु पद सुतकुं तोषित ॥ प्रभावती लेचली
मुदित चित ॥ ८१ ॥ दो ॥ पहर एक रजनी रही आज्ञा कीनी राज ॥ है गै रथ
पायक अरु बहित चले जु सकल दल साज ॥ ८२ ॥ चौ ॥ बाजु दुंदुभ मेरन शा-
ना ॥ तुमल शबद अंबर घहराना ॥ ब्रह्म महूरत चले मुदित मन ॥ भद्रावति
गजपुर सो जोजन ॥ बजतिद्द बसमार गच तिगए ॥ समै पाइ कै प्रभावतीभ-
ए ॥ जोजन बीस दूर दपुर रहेयो ॥ तबै पवनसुत आगे गयो ॥ भीमसेन आगे
उठ धायो ॥ निमष एक गजपुर महि आयो ॥ कृष्णचंद अरु पुनै मंदरतव ॥ प्रा-
पति भयो पवन को सुत जब ॥ बृदन बिलोकचर नल पटानो ॥ उदत रंक निध
पावति मानो ॥ बजुर पृध एकपगलागा ॥ दूरसेन देषसकल अनुभागा
अर्जुन आस हदेव नकुल तन ॥ हर्षित कीये अलिंगन सभन मन ॥ हयवतां-
तु सभ भाव सुनायो ॥ यौवनास ससेना संग ल्यायो ॥ ८३ ॥ दो ॥ आयो हयपसै-
ना सहित यौवनास राजान ॥ पुत्र कलत्र प्रजा सहित तक्षम दरस सचिमान
८४ ॥ चौ ॥ कृष्णचंद तुम मेंदर सन की ॥ यौवनास सचि पगपरसन की ॥ प्र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भावती तांकी वरनारी ॥ सषी यन सहित तहां पेहुंतु धारी ॥ दर्स देवकी कुंती रु
कमन ॥ द्रुपतिसुता अवलोकन को मन ॥ तुमरी कृपा ते सब है ॥ कुसलाता ॥
महावली भानु जु के ताता ॥ जौं त्यों जिन पावना सै भजन वल ॥ सैना सक
न लकरी रदलमल ॥ वल कृपा करि नृपके आगे ॥ तुमदर्सन को अति अ
नुराजे ॥ ८५ ॥ दो० ॥ पवन पूत पहवचक हे अधिक रीयेधरिभाउ ॥ स्रम स्रम मेध
के यज्ञ को यह पाच मो प्रभाउ ॥ ८६ ॥ इति श्री भारथ पषरवे अस्र्वमेध वि
ध्यान ॥ भीमागमन रूह हके नरुक विधा मोधयाय रवर्ष्या ना ॥ ८७ ॥ सम स्त
५ ॥ जैमिनोवाच ॥ दो० हरा ॥ यौवनास आगमन सुने पांडु सुत पुधि एरारा
इ ॥ भीमसेन प्रति वचक हे मन वांछत सुष पाइ ॥ १ ॥ सो० ॥ भीमसेन तुम
जाइ द्रुपदसुता को कहो वेंच ॥ आगे मिल हैं धाइ यौवनासकी नारि को ॥ १
चौ० ॥ नृपवचन सुनत भीम उठि धायो ॥ द्रुपदसुता के मंदिर आयो ॥ प्रथम मे
कुंती पगलपटानो ॥ कुशलप्रश्न तनुमन न्रिपतानो ॥ पाछे द्रुपदसुता
पहिंगयो ॥ निरष भीम को अतिसुष भयो ॥ आदर करि निज आसन दीनो ॥ प्री द
पति आजु अनुग्रह कीनो ॥ भीमसेन को गातु निहारयो ॥ अस्त्र सस्त्र दत तल
गे निहारयो ॥ गदाघात वड़ भए प्रहारा ॥ अंग अंग प्रति लगे अपारा ॥ २
दो० ॥ मेघवरन वपु के तहुँ नीके कुशल शरीर ॥ कैसे कीनो फिरि तुम क
उव तांतु मति धीर ॥ ४ ॥ चौ० ॥ सुन न्रुभीम जु हा हो तत संग्रामा ॥ तत तान होइ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नैकु विश्रामा ॥ रन मैं मम सुत शस्त्र वज्र घाता ॥ होत प्रहार विदीरन गाता ॥ हम
प्रहार करै स्यंदन के तन ॥ पुनि बहु घाउ करै हम कों रन ॥ तुमरी करु
णा कुशल हमारे ॥ कृष्ण कृपा कारज प्रभु सारे ॥ ल्याए है हम जीत तु
रंगा ॥ यौवनाश्व से नासुत संगा ॥ प्रभावती नारी नृप की वर ॥ तुम द
र्शन की प्यास ही येध ए ॥ ५ ॥ दो ॥ सुत कलत्र सैना सहित प्रजा तुरंग
म साथ ॥ यौवनाश्व आयो निमित दर्शी धर्म पद नाथ ॥ ६ ॥ चौ ॥ प्रभाव
ती को आदर दीजे ॥ कर संगार आय हेली जै ॥ तुम कों ल्याई भेट मैं लाव
र ॥ हीरा माणिक नर तन पटंबर ॥ आभरन जौ रे गज मोतिन हारा ॥ स
कल समग्री वस्तु विस्तारा ॥ अद्भुत दस सहस्र सखी चनयुत ॥ प्रभावती
रानी सुंदर अति ॥ ताको मिली पैआ तसिंगार सजि ॥ चली पेव गज वहि
विलंब तजि ॥ वरपुवती ली जै निज संगा ॥ बहु रक्षी रथ वध वज्र रंगा ॥
७ ॥ दो ॥ द्रौपदी वाच ॥ कैसे वनै सिंगार हम कृष्णचंद जहं होइ ॥ तहां न
जाइ पै भीमसुन जहं हरि भगतन होइ ॥ ८ ॥ चौ ॥ विवीपन सो हम रानी ति
की मां ॥ ता हितन होइ कृष्ण विश्रामा ॥ जो श्रीपति की आज्ञा होई ॥ भीमसैन की
जै कृत सोई ॥ तिह हि आसर आए नंद लाला ॥ द्रुपदसुता के गृह नंद लाला
पवन पद तें चरनन हरि लागा ॥ दरस विलोक सकल दुख भागा ॥ हरि
कौ पुंडरीक तीन मना यो ॥ तुमरी कृपा जीत पहल्याया ॥ यौवनासत्तम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

६

सैनुसमेत ॥ आपोतीतिधंनाव षकेता ॥ ९ ॥ दो० ॥ तिनकेआंसुदीजापैभ
लीपैआगंआइ ॥ चौवुनासतुमरामगतवेगदरसुदषराइ ॥ १० ॥ चौ०
हुपदसुताकोआज्ञादीजै ॥ प्रभावतीकोआदरुकीजै ॥ नवसतसाजिस
कलयुवतीजन ॥ नृपनारीकोमिलहिमुदतमन ॥ श्रीपतिकहोद्रुप
दतनयाको ॥ अविआदुरुदीजेचलिताको ॥ चलिहिरोभृषनवसनविव
धरंगा ॥ आगेजाईमिलोसरवीयनसंगा ॥ तवहिसंगारद्रोपतीकीने
कृष्णचंदवैठेसमचीने ॥ कुंतीआदिसकलहरषतचित ॥ मिलनेचली
प्रभावतीकेहित ॥ ११ ॥ दो० ॥ कृष्णचंदअरुपवनसुतआएधर्मजपास ॥ प्र
जासहितआगेचलहुमिलहुनृपतेचौवुनास ॥ १२ ॥ चौ० ॥ चलेयुधिष्ठि
रश्रीपतिसंगा ॥ भ्रातनसहितप्रफुलितअंगा ॥ सकलकुटंवप्रजानर
नारी ॥ चलेमुदितमनगिरवरधारी ॥ चलेयुधिष्ठिरकोमनुमाना ॥
वाजतहैवहुभेरनिशाना ॥ अवतसुनिधर्मजनंदलाला ॥ आगेकीयोअ
स्वततकाला ॥ वषभधजअग्रपकरलीनो ॥ जिहिप्रसादहरिदरसनुकी
नो ॥ तिहिचाहिनृपचौवुनागनपग ॥ करेप्रणामकृष्णकेडगडग ॥ १३ ॥
दो० ॥ हपकरजेजआगेकीयोपदविचारनृपजाना ॥ मारजीवापकपा
करीपरसाचोभगवान ॥ १४ ॥ चौ० ॥ जिहिनरतेपरकारजहोई ॥ सोईवा

२२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

छालघुक है न कोई ॥ यह बालक प्रानन को दाता ॥ तिहि प्रसाद निरख्यो ज
ग ताता ॥ कोट मुकति फल दरसन जु पालो ॥ दरसा यो इह सुत तिहि को छ
क ऐांज तीन लोक विख्याता ॥ मोर जी या यो पुरख विधाता ॥ ताही ते मांगे क
र लीनो ॥ हंसन तुरंग मन सा घ प्रवीनो ॥ १५ ॥ दो० ॥ हयन भक्त त्रै भगत हरि ज्ञा
ऐं किर पा धार ॥ अश्व विन होता सो कि पै कैसे भैं तमुरारि ॥ १६ ॥ चौ० ॥ जिहि
सब को ब्रह्मा शिव तर से ॥ इंद्रादिक स्वपने न ही दरसे ॥ सो ऊं दर्शन सु
त जे हम पायो ॥ है सि सु करुनाकर सुख पायो ॥ पुलकति हृदै नृपति
अनुरागा ॥ श्री पति के अंग भुज पग लागा ॥ पुन हरि नृप को कंठ ल
गा यो ॥ कोट मुकति फल छिन महि पायो ॥ परकुलित मुदित भयो रा
जा ॥ अंक परस हरि पद रन को जा ॥ हरि नृप धर्मज चरणी लगायो ॥ यौवना
सन मन तन सुख पायो ॥ १७ ॥ दो० ॥ सुत समेत गको नृपति लै ज्ञा सो चरणी मुरारि
पुनि लो यो धर्मज चरन मन व चक्र महि तु धार ॥ १८ ॥ चौ० ॥ यौवनास को
नृपति युधिष्ठर ॥ कीयो अलिंगन अति करुणाकर ॥ यौवना या पुनि व
न ती कीनी ॥ मन करि भेट कृष्ण को दीनी ॥ तुमरी कृपा कृतारथ भयो ॥ क
रुणा करि हरि दरशन दयो ॥ बहुरी दर्शी भेट धर्मज वारि ॥ हय समेत
रथ दुरद भी अरु भारि ॥ अर्जुन कुल सम तेसु हृदे वा ॥ दीनी भेट करी निज
सेवा ॥ पुनि पुनि नृपति कृष्ण पग परई ॥ बार बार दंडवत करई ॥ १९ ॥ दो०

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धंन्य जनम है आजु हम परसे चरनै मुरारि ॥ जिह चरननको लक्ष्मी चा-
पति बारंवार ॥ २० ॥ चौ० ॥ मुकुंद पति पाल्यो ह पर्ह हु काजा ॥ रह्यो पुन
हित पज्ञ समाजा ॥ मानो मुज तु रंग हुट्यो पो ॥ प्रथ मे विस्नु प
री ह प आयो ॥ कोटि जतन कपि लक्ष्यो न जाई ॥ सो मुज दरस्यो पार
त ति छिन आई ॥ ता ते वजु अवध धंन्य तुरंगा ॥ हम कुल तारयो जिस हि
प्रसंगा ॥ तः प्रसाद पांडव सभ देषे ॥ जन्म सुफल तब अब जान्यो लेषे ॥ धं
न्य भीम पुन मेघवरन धन ॥ धंन कर्न जह मम पान दीयो तिन ॥ २१ ॥ दो० ॥ म
हाबली पहुके र्न सुत तम अवरन सुर समान ॥ ऐसो होइ न पराक्रमी बिन कहु त
ग्न भगवान ॥ २२ ॥ चौ० ॥ कर्ण पत्र बिन सुरन को है ॥ मैं तम बिष्यं अब तिन नहि को
ई ॥ जो छत्री के धर्म कहु तस व ॥ सो व बभ्रध जमै देषो अव ॥ धंन्य धंन्य पांडु
व कुलीन वर ॥ छत्री धर्म रह्यो दिड वर पर ॥ पाछे जन्म अकार ष्प गयो ॥ अ
व हो मह क तार ष्प भयो ॥ छूटे गा जब हु प च [illegible] बीप र ॥ तः सहाय पह मो
पहुंच कर हि वर ॥ लछ तुरंग मै पाछे जाऊं ॥ जय पाप सकति कपि बल बुधि परजं
२३ ॥ दो० ॥ छत्र धर्म रन जे मरहि सुरपुर पावहि होइ ॥ जो ब्राह्मन हत जो
पै हरिपद पावै सोइ ॥ २४ ॥ चौ० ॥ मजा करत इहु कहु कृपा करि ॥ सुजन दे
त हरि न पतियु पिपर ॥ को समर्थ हरि के हु पग गहई ॥ जो न पग है सकति

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

फल लहइ ॥ यह हरन मैं कोऊ मन तको पावै ॥ तिनके संग दोऊ फल आवै ॥ छ
त्रन बीच [illegible] सज्जन सब जु होई ॥ हरि फल न मुकति लहै पुनि सोई ॥ हरि सु
प्रसंन भयो पांडव मास पद ॥ मस्तक हाथ धर्यो करुणा करि ॥ पुनि धर्मज
के चरणि लगायो ॥ न्रप हर्षित तन मन सुख पायो ॥ २५ ॥ दो० ॥ धर्मज वज्र आ
दर कीयो पांडव ना सस्सुन बात ॥ चार भ्रात आगे भए जे तुम पांच सो भ्रात ॥ २६
चौ० ॥ जैसें कुंती हमरी माता ॥ तिमि तुम जान नृप पांडव भ्राता ॥ हमरा तुमरा
सरवसु गिरधर ॥ सदा सहाय करत हो तक्रपा करि ॥ पुनि सब वेग हरि चरनन
लागा ॥ करणि ज जस आवत न अनुरागा ॥ यह रवि तब के तुम हाव लव ना ॥ अब
हरि न हि पाहि हम माना ॥ भूपति सत वस उस्तुति कीनी ॥ कृष्ण चंद सवन न
सुन लीनी ॥ करणि पत हरि के छल गायो ॥ हाथ में पहीथि चार छहरायो ॥ २७
दो० ॥ पांडव ना स सभ भगत को रन महिली पोजो वाइ ॥ वचन व्रत पति को साध्य
लेच रणि लगायो आइ ॥ २८ ॥ चौ० ॥ छत्रधर्म राज्यो इन वालहि ॥ तौ ते कंठ की
यो नंदलालहि ॥ कृपा करी वच के तव लीपरि ॥ कीयो पुद्ध समद्धर संकम भरि
व जहि व जंत्र अनंत प्रकारा ॥ आए हस्तनपुर मंझारा ॥ एक मास तह हरि व
से दुरद पुर ॥ निःपाद्धे हरि कहयो बुधिवर ॥ चैत्र मास पर रन माहे होई ॥ अ
श्वमेध करनैतौ ही दिन होई ॥ सो तव वीतो अब वैसाषा ॥ मास रकादस बीच

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अभासा ॥२८॥ दो॥ तौ लौं है द्वारावती जै हो सुनऊ नरेस ॥ कटकुकु
टंब सहित लीयें करत ऐहौं तुम देस ॥२९॥ चौ॥ अब तुम हम महि नि मंत्रि
त कीनौं ॥ मन बच क्रम संसै नौ हीं चीनौं ॥ द्वारावति पुर की नर नारी ॥
चार वरन त्यां बौ हित धारी ॥ तुम अरु यौवनास सै नासव ॥ रत्नाकरऊ
तुरंगम की अब ॥ दूरन की जै दीप अगोचर ॥ मतिको छले देवदानव न
र ॥ प्रति पालौ हय यज्ञ कौं नृप तिन्ह शाढुन ॥ यज्ञ न होइ सिद्ध इह हय बिन ॥
बहुरि वेनती करी पृथ्वीसुर ॥ अब हे क हा कररौ करुणाकर ॥ जब लगि
चैत्र मास पुन आवत ॥ कैसी कृपा करो प्रभ तावत ॥३१॥ दो॥ कही
कृष्ण सुनधर्म सुत रक्षा की जैव ज ॥ बहुत जतन करि राषीयै यज्ञ
न सौ यज्ञ समाज ॥३२॥ चौ॥ सकल समग्री सब की कीजे ॥ सब पभे
बोल सुनारन लीजे ॥ कंचन आभरन निकर करावहु ॥ पात्र मुकु
ट बहु छत्र बिनावहु ॥ कुंडल टोडर चावर माला ॥ पहिरावन को सक
कल भूपाला ॥ रत्न षचित मन जडित व शाला ॥ [illegible] नहि रचि रावहु ध
र्म जत ततकाला ॥ सुरभी कै भूषन ह्रै जैसे ॥ सौंगपीठ पुर की जे तैसे
लोक हु की पोचा हौ पेरहु वेरे ॥ सम्मुकर रावहु धर्म सवेरे ॥३३॥ दो॥
पोवनौं सम सभ गत कौ अति आदर करि राव ॥ च [illegible] धर्म सुन आसप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पद्धपुंन्यरसचाव ॥ ३४ ॥ चौ ॥ पहवातेकहिकृपासिधारे ॥ तिहपादे
धर्मजदूरठधारे ॥ तीनकोसमरअर चौरा प्रमाना ॥ ऊंचा सोच समथप
रमनिचाना ॥ ऊंचाकोटचतुरअतिभारी ॥ रक्षाममहासूरवलकां
री ॥ इच्छाचारी हसतुरंगा ॥ तामधिविचरैअतमतरंगा ॥ जलभोजन
इनिधासोलेई ॥ ठाठापवनजुलावतितेई ॥ वजप्रकाररत्नावजक
रुई ॥ करसामकारजमनअनुसरई ॥ ३५ ॥ दो ॥ धर्मजव्यासबुलाइ
कैचरनपगलागेधाइ ॥ वजप्रकारकरीपहवचनकहेनरेसव
नाइ ॥ ३६ ॥ चौ ॥ धवकरजोरमयेचानपठाठा ॥ पद्धोंकषपाकहतोहि
तुवाठा ॥ वरनधरमसमभमोहि सुनावौ ॥ श्रीमुखवेदव्यासप्रगटा
वउ ॥ तपकृतकीआज्ञातुमदीनी ॥ सोतोहमसभमध्येधरिलीनी ॥ अ
श्वमेधकृतकठनसमाजा ॥ कैसेपदरनतेहेकाजा ॥ मरुतनृपती
हपमबकीनोजव ॥ शक्रधबणाकृतभेआएसव ॥ आचारजम
रु षकेगुभथ ॥ अश्वमेधपदरनकरगाए ॥ ३७ ॥ दो ॥ परनालनृकहि
घतनिकरिदीनोअनुगुअहार ॥ भयोअजीरणपावकहिहृदेमहि
कीनोविचार ॥ ३८ ॥ चौ ॥ पावकपद्धौवेदधनंतर ॥ तिनभोष्यधबंहे
वनअंतर ॥ तातेऔषधविविधप्रकारा ॥ तिसमहिजरावजकुशला

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ति हारा ॥ पावकबनन्हि जरावन लागी ॥ नैरख्यो इंद्र क्रोध हीय जागी ॥ व
र्षो मेघ गगन भै कारी ॥ न तझ्कि नवरसन लागी भारी ॥ अग्नि हार वहु
ल अति भयो ॥ तहां काहू पारथ्य प्रगट्यो ॥ उत तम जआइ वेन तीकीनी ॥ अ
रजन को सम विधि कहूं दीनी ॥ ३९ ॥ दो ॥ अरजन हायो वन सरन है इन यौ
न प्रवेस ॥ परसन कौ गोविंद इक विठ्ठल भयो सुरेस ॥ ४० ॥ चौ ॥ मन वच क्र
म मघवा जी पन ज्ञान्यो ॥ पावक को दू बनन तें मान्यो ॥ अरजन षांडव व
न को जास्यो ॥ तव का इंद्र वै [illegible] जी पधारयो ॥ ता ते संसै हू देह मारे ॥ मतम
घवा वह वैर चितारै ॥ जो बर्ब्रम हम मरे नहीं आवै ॥ कैसे आस पत्त परसुपा
वै ॥ वज्र सेव उतरत हा इव हस्पति ॥ उनविन कछु कीने है मधन हय कृति ॥ मघ
दान वचक हे युधिष्ठर ॥ हसे आस मनिस नेज्ञ नृपति वर ॥ ४१ ॥ दो ॥ मन
वच क्रम ज्ञान न ज्ञन्नपति सत्य वचन यह मोहि ॥ कोट इंद्र पति जो पुरुष सदा
सहाइक तोहि ॥ ४२ ॥ चौ ॥ सहत जहं आ वहिं गेह दरसन ॥ आपति के पद दंव
क जपरसन ॥ कृष्ण कपाभ्र तितु म पधराज्ञा ॥ तांते हीइ इस फल समका ज्ञा ॥ व
चन मान नहीं यधि तुनिवारऊ ॥ कृष्ण चंद चरनन चितु धारऊ ॥ तुम रो यत्न कर
त पदु नाप्पा ॥ मवमि सकि तनेकीचे सनाप्पा ॥ स्त्य तके मनन हा वज्र सवधाना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वरनधर्मसुनहोदेकाना ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र पुनि ॥ तिनके लछन कहो
धरम गुन ॥ ४३ ॥ दो० ॥ प्रथम मैं बरनन धर्म सुन समदृष्टी पुन साध ॥ सर्व जग
निरवैर साध कर जानै को न अगाध ॥ ४४ ॥ चौ० ॥ परम शांत सुचित सुचि पवित्र नित
हरि सुमरन को सदा मुदित चित ॥ पर निंदा पर धन पर दारा ॥ इन्हीं ने अहरह
तजि विकारा ॥ ज्ञान ध्यान ज्ञाता षट्कर्मी ॥ साधे योग अष्टांग सुधर्मी ॥ दान क्षमा
नद्या उर धारी ॥ महा संतुष्टी तत्व विचारी ॥ वर्णं सुन क्षत्री के धरमा ॥ ऐ
से निगम बतावहि करमा ॥ ते जग्यान सूर रास्ति दाता ॥ अति मति तकी रति विख्या
ता ॥ ४५ ॥ दो० ॥ पीठ न दे वैरन विषै हरि सुमरन चित लीन ॥ गो ब्राह्मण हि
तु चित धरै क्षत्री धर्म प्रवीन ॥ ४६ ॥ चौ० ॥ वैश्य धर्म अब सुनहु नरेसा ॥ त्रै
से अकृत मा सउपदेसा ॥ निरद्रोही ही येद्या वत नित ॥ सत्य वचन विव
हार धर्म हित ॥ आपुने धर्म विषै सवधाना ॥ गो ब्राह्मण से वै रुचि माना ॥ प
रदुख सहित तन सकै उर अंतर ॥ वैश्य धर्म यह सुनहु निरंतर ॥ शूद्र धरम
लछन सुनकाना ॥ खेती वाणिक कर्म कुसाना ॥ गो ब्राह्मण पद ताव सकर रहै
कृषि प्रीति मब सस तुचर है ॥ ४७ ॥ दो० ॥ चार बरन लछन कहे आस धर्म भू
पाल ॥ इह कन सम तेवर सोऊ जो सुमरै नंदलाल ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ सब वरनन ते
उत्तम सोऊ ॥ कमलापति को सुमरै जोऊ ॥ निर्गुण रहत तपत आतम बाना
भक्ति अमन नेम जैम गवाना ॥ तिः समानन नर नारि न कोई ॥ जाके हीये कम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रिति होई॥ तिनकी गति तम्ह तस कै न कोई॥ जिन मन बच क्रम मम ज्यो असुरारी
उनकी मति है सभ ते न्यारी॥ कंचन लोह एक सम जाना॥ पुन्य पाप जिः ए
क समाना॥ मीठो कटुक एक ठहरावै॥ वैरी मीत एक द्रष्टि आवै॥४९॥ दो॥ जा
नी ध्यानी चतुर वर तिनसि मन्दौ भगवान॥ तिन समान नहीं अवर को पा
वो पद निर्बान॥५०॥ चौ॥ अवर इस्त्री लछन उचरही॥ जो भरता सों प्रीति न क
रही॥ सकल धरम महि तितु पर जोई॥ पति सेवा बिनु निहफल सोई॥ पद
पंकज हरि सिमरन चितु लावै॥ कीर्तन कथा सदा मन भावै॥ दान पुन्य पट जोअ
रु सेवा॥ सदा अराधहि देवी देवा॥ जग आदिक तीरथ इसनाना॥ धर्म नेम ब्रत
करै विधाना॥ पति सेवा बिनु सकल निरारथ॥ कब हून पहुंचै ता परमा
रथ॥५१॥ दो॥ बिनु सेवा भरतार की भुंचै नरक दुआर॥ चेरी जनम निकर पाव
ई सूकर स्वान सिआर॥५२॥ चौ॥ पुनि बुझते बग जनमि आवै॥ बुझत ज
नम भ्रम अवज दुख पावै॥ हरि करुणा पुनि पतिब्रत होई॥ तो बहु दोख मि
टावै सोई॥ पतिब्रत तिय के लछन ऐसे॥ कहे निगम सतन लीजै तैसे॥ प्र
थम हि शील सत ठहरावै॥ उठि प्रात गोविंद गुन गावै॥ प्रथम प्रेम सु भरता
को दरसै॥ चाप चरन मल निज सिर परसै॥ दासी भाउ टहल सभ करई॥ म
न क्रिम जो बिधि अनुसरई॥५३॥ दो॥ जब लग पति इसनान करि सिमरन कर
त गोपाल॥ तब लग भोजन न बर सकल सिद्ध करै ततकाल॥५४॥ चौपई॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चरनपखारपीवै जलको सचि ॥ दानकरावे जथाशक्ति सुचि ॥ अति आ
दरसों अन्न जिवावै ॥ सीचसुगंध पत्र पंक पोढावै ॥ मंद मंद कुरपव
न झुलावै ॥ उठै पुरुष तव जल भरि लावै ॥ वज फल फूल दै के त्रिप
तावै ॥ निशि पुनपाक विचित्र बनावै ॥ ५५ दो ॥ पायप्रसाद पलंक प
र पौढावै पति भाई ॥ चरन चाप क्रीडा करै पति को सुख उपजाई ॥ ५६
चौ ॥ आज्ञाकारी रहै रैन दिन ॥ सुमरन करै कंत को छिन छिन ॥ जे भरता
परदेस सिधारे ॥ तौ तीय पवन शाद्दि न पतिगुन गावे ॥ गृह तजि परघा
रन हि जावे ॥ ५८ बन ब सन न अंग बनावे ॥ काहू सौं न करै क कुतार
सा ॥ काजर नैन अंग सुवासा ॥ मधपाहन भोजन लेवे हांपेच्छान सु
दापति सेवै ॥ लज्जा पति परपुरुषन दरसे ॥ तेल फुलेल न अंग न हीं परसे
॥ दो ॥ विभचारनि सौं हित न हीं सस्त्र वचन सुभाष ॥ इहविधपा
वै मुक्ति फल जे हित मन अभिलाष ॥ ५८ ॥ चौ ॥ कोई दानपुन्न पति कर
ई ॥ दुराचार ई स्त्री हित धरई ॥ ताको मुक्ति काऊ नहीं लागै ॥ सकल
कर्म तिह देवत भागै ॥ जेहि गृह नारि पतिव्रत होई ॥ परम संपूरन
ज्ञान ऊ होई ॥ पति के सकल पाप छै होइ ॥ जेहि गृह ऐसी जुवती सो
ई ॥ सती होइ जो पति सो नारी ॥ स्वर्ग भोग ते अति सुखकारी ॥ तन रो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मा वृलि गनति जो प्रावै ॥ ति तनेव र्ष स्वर्ग सुष पावै ॥ ५८ ॥ दो ॥ आस वच
न है सकल हे धर्म ज सों प्रगटाइ ॥ जन्मेजै श्रवन न सुन उक हे कथा सु
ष पाइ ॥ ६ ॥ इति श्रीभारथ पर्वणि आश्रमेध व ष्यान ॥ वरन धर्म मुनि आ
स कहि ब ए मो अध्याय प्रमान ॥ ६१ ॥ ६ ॥ जैमिनो वाच ॥ चौ ॥ अब विधवा को ध
र्म बतावै ॥ धर्म जु को मुनि आस सुनावै ॥ वज्र तजत न विधवा तन राषै
पुरुष बन सो व चुक व हूं न भाषै ॥ हाइ सदी बत गुरु पुन करई ॥ नित सि
मरन हरि को पुन करई ॥ संग्रह करै न धन की वांछा ॥ छिन हरि भगतन
ही कछु वांछा ॥ सदा कांत हीये ध्यान लगावै ॥ व सेषि ताग हला जव ड
वे ॥ करै न मजुन वसन स्रूभं षन ॥ सकल सिंगार तजै कर दूबन ॥ १
दो ॥ दान करै निज साकत तिको प्रेम हृदै धरि भाउ ॥ विधवा त्रुपत्ज व्रत क
रै चित वै मुकति उपाउ ॥ २ ॥ चौ ॥ गवन करै तीरथ परस्नाना ॥ चिं द्राषन
व्रत धरै प्रमाना ॥ गागर जल भरि द्विज ग्रह देही ॥ नु धारथ भोजन दे से
ई ॥ दल न फल सहित प्रीति करि सेवै ॥ जथा शक्ति दान नु द्विज देवै ॥ सच
संध्या सुमरन नु पद्दि चानै ॥ परुन रपिता भ्रात करि जानै ॥ हरि मंदर द
रसन नित जावै ॥ श्रीपति कि सम रुहे धर्म बढावै ॥ कीर्तन कथा सुनै हर
ष तचित ॥ दान करै प्रभु भवस्तपन नि मित ॥ स्वास्ति तजै रंडानि ग्रहतन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

श्वमेध

सतु बांधै विधवा ती पल छिन ॥३॥ दो॥ सदा जरावै आपको अशुभ सती जिस कहोत
ताको दुष है है एक छिन याको मित उदेग ॥४॥ चौ॥ तरुन पुवति विधवा जो
होई ॥ जो सिव वसि पति संग करै न कोई ॥ चंचल मन अनंग रस स्वा
दा ॥ ही चपला लंपट पर पुरुष षिषादा ॥ पति संग सती न भई अभाग
पर मारग चलति जिउ जगमग अनेरा जो ॥ पर घर भ्रमै न घर ठहरावै ॥ सु
दा दुष्ट मति लोक हसावै ॥ बार बार चूमै पर पुरुष सुमुष ॥ नर्क घोर
भोजै जो पति मन मुष ॥ नेश दिन मन भलो न काही चेआ ति सुष ॥ भ्रमै अने
क जन्म जोनी मुरख ॥ दो॥ ऐसी विधवा नारि है पर नर रति तसु प्रीति ॥ सात
जनम भोजै नरक कुटिल जनम है नीति ॥६॥ चौ॥ पोति सति एणी की
पुनि पावै ॥ पति निमित नेक न यानी भरमावै ॥ उव जै विनि सै आवै तावै ॥ पापन
महा तहां दुष पाई ॥ जो तीय ऐ हल छिन पुति होई ॥ ताको मलिन ब्या है को
ई ॥ रसना स्वाम श्याम ता लहि ऊं अंगुल चरन [illegible] रन पर सैतिः ॥ आहत ही
पति को दुष पकरई ॥ बड रोग हके सभ सुष हरई ॥ तीय को कवउ विस्वा
स न कीजे ॥ मन वच क्रम सम वनन सुन लीजे ॥७॥ दो॥ सती होन को मन
करै चढै चिता पर जाई ॥ ताऊ प्रीति न ही की जी चेती पचि पत्र मन लाई ॥
८॥ चौ॥ विभचार न तीय के लछिन सुन ॥ पर नर देष हसत मन तनग
न ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

८८

कंद्रकरैसबन जंभावै॥ नीवीसिथलउदरद्विषरावै॥ कवढापैतिकवद
नउघारति॥ ४ तझूला सब्रीडानविचारति॥ विनकारजपरहारापरैनत
सैरंधीमाहनी करैहित॥ नटीसतद तकरमंजन॥ नशधन प्रीतिकरै
हितसोतिन॥ पनिविधवादासीसंगचोंता॥ तिः तीपकीनाहितकरउपतीत
५॥ दो॥ जोएतवंतीनारिकेपुषिवदेइतदान॥ महानरककूसोउपरहि
उचरतिवैदपुरान॥ ५॥ चौ॥ राजनीतपहन्वपसनिनीते॥ इनकासंगनकवहू
कीजै॥ नंदकचुगलजुआरी जानऊ॥ तस्करमदपानी पहिचानऊ॥ इनकेक
हेनपतिजोलागै॥ ताकी प्रजातजतपुर भागै॥ राजादुष्टमंदमतिहोई॥ प्रजा
नासुसबलहीनकोई॥ महाप्रसन्नयुधिष्टरभयो॥ व्याससवचनसुनसुमदु
षगयो॥ पुनिनपवचनव्याससप्रतिकरही॥ कमलाकिंपुधसर्वपरहै इर
११॥ युधिष्टरोवाचः॥ दो॥ अहोव्याससमुनपरमगुरु श्रीकेसोविचारतोइ॥ तिः
विधइस्वपतिपावईकहोकृपाकरिसोइ॥ व्यासोवाचः॥ १२॥ चौ॥ कह्योव्याससुमु
निसुनऊ पुधिष्टर॥ इहप्रकारकमलाग्रहइस्वर॥ सोनरधर्मसदापा
लतिकरई॥ ब्रह्मचूरपसतवर्चउचरई॥ बुराभलासमुझैहरिध्यावै॥ सं
ध्यादिककर्मसमरनचितलावै॥ सुचसंपमपजाहरिसेवा॥ सदाअराधि
देवीदेवा॥ सेवैपितामातवडभ्राता॥ आचारजपजैकुसराता॥ परध
नपरदारानहितत्यागी॥ नहीदुरोदुरवससुअनुरागी॥ १२॥ दो॥ जहांकार

२

क८ न२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५.

मेध

पाभगवानकीकीर्त्तिनकथ्यावषान॥ तहानवासुरमास्थिप्रेतहाकछजस
सार॥ १४॥ चौ॥ जिः ग्रहतीपावतिव्रतहोई। तिः कैभवतु [illegible] प्रेतहोई॥ जे
उपकारकीयापहिचाने॥ झूठीसाषनमसोदिषाने॥ पितरश्राद्धन
विसोविधकनरई॥ रनसतमुषतनुतिजतनठरई॥ साजेवापाकूप
तडागा॥ गृहदिजदानकुरैस्नानरागा॥ जोरीआऊकरावैरुवृसा॥ वे
दपुरानसुनैहितरुचसो॥ नितप्रतिदाननकरैहरषतमन॥ सेवेस्नभ
गतपावनतन॥ १५॥ दो॥ संध्यादीपकउदैकरिपरषनाथिसंगहोइ॥
नितप्रतिकमलाकोकरहिनमसकारभिलसोई॥ १६॥ सो॥ इहप्रकार
प्रेतहोइरमाजहाहरिकोभजन॥ मावनरनाहितेसोइ जिः विधकमलाना
सई॥ १७॥ चौ॥ मावपहलछनकरैपुकासा॥ जिः हकीसोलछकोनासा॥
दुछसातमातुगलपिमुनसनि॥ निष्किदनमित्रसहितदुरेदुरमतिरति॥ चौ
परषेलकपट जिः स्नासा॥ जिः करकरेसुभऐविनासा॥ पुनपांडवसुत
सातिदुषपावै॥ छादशावधिगुपतित [illegible] बापा॥ परघरभोजनमदिरा
पानी॥ जीवघातजिनदयानजानी॥ निंदकसाधकरतगृहभंजन॥ कंच
नहरनपरितीमनरंजन॥ १८॥ दो॥ रसधातपुस्तकहरैत एकादशीक
फलपाल॥ मामावस्यासंक्रांतिनदानकरतदुषमूल॥ १९॥ चौ॥ जे
वहां [illegible] वनेसततेटरहा॥ गूढवोल [illegible] भीकतकरांहा॥ देषनसकैस्व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वरकी संपति ॥ निशदिन लाल चववक्षि जग जंपति ॥ गर्व क्रोध वैसदा ऐद्री
आपति ॥ ग्रहमै नाशकु चीलमए मात ॥ भवनकु चीलमलीन हदवा वै ॥
अश्रुचि कलिग्र हशाक वढावै ॥ पतिकी आज्ञा नारन मानै ॥ कवूह
न हृदैको नाम सवषानै ॥ त्रीयाविनकाम सममै वशहारे ॥ छूटै रहै कु
चसाजसवारै ॥ २० ॥ दो० ॥ विभचारी लछन सवै नीच नाश सोंप्रीति ॥ मा
लनना इनसिथिनी दासिनसो रसिरीति ॥ २१ ॥ चौ० ॥ गृह वैठेति हवा
हेधशैनी ॥ पजनवपारैकुटलकुकशमी ॥ जवकवरए तारै निज
हाप्पा ॥ वसन मलीन सवक्षिर माप्पा ॥ अतिनिंद्रा संध्या जो सावै ॥
स्तरजत देउ है धनुषोवै ॥ वैठ रसोई उपर हसै ॥ वादक रै लछमी
ति: नसै ॥ जिन पुरुषन मै पहगुन होई ॥ पुन ऐसे पुवती जहसोई
लहाल छमी न हीकरै निवासा ॥ तिन मै एलछन पद्काशा ॥ २२ ॥ दो० ॥
ऐसी कथा सुनावते वीत गए दस मास ॥ पुसकुपद्ताविधमलीधमै
जेता बेव्यास ॥ २३ ॥ चौ० ॥ सकुतन्हपति मसबकी [illegible] ज्ञेसे ॥ सोकहि न
पति सुनाऊं तेसे ॥ कृतनष्टि घमैपद्रनकीने ॥ विधवति दानहिजजु
नकोदीने ॥ वज्रशेकीनोकृतस्रंरंभजव ॥ इंद्रमपोआति [illegible] क हाचे
तव ॥ आपा शाकब्रह्मपतिपाही ॥ नुमहिविचारो गरुमनमाही ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ४१ ॥

अश्वमेध

जैसे पत्रमसुतमनुसरई ॥ जिमि स्वर्गराजु बहुत करई ॥ ताको जाइ
निवारण कीजै ॥ यह हम शाकारजक र्दीजै ॥ २४ ॥ दो ॥ तब कहि ब्रह्म
पति आइ यो मरुत नृपति के पास ॥ कीयो निवारन पत्र ते कहि तव
हु कथा प्रकास ॥ २५ ॥ चौ ॥ त्रि:विध मख निदान मे कीने ॥ सो विधा
स अनुरूप बुद्धि प्रवीने ॥ योजन तीस रची मखशाला ॥ अग्निकुंड म
धि रच्यो विशाला ॥ योजन डेढ प्रमाण कीयो है ॥ घृत जल तौ ति
ल होम दीयो है ॥ निदान मे मण घृत अरु तिल जौ सम ॥ निति प्रति होम
करत तिः संभ्रम ॥ ईस्त्री सहित महा शुचि पावन ॥ यज्ञ करत सकु
त उपजावन ॥ ... डो है विधवत शुभ वाजा ॥ पाछे चमसु समह त
समाजा ॥ २६ ॥ दो ॥ लघुपुरी ब जह हूप करे तह पत्रमाचार ॥ न
दगा ऊ तह दैत है विधवत द्विज नविचार ॥ २७ ॥ सो ॥ उन ते नुमरा
क तब रहाई ॥ ... वहि मख भोग हूप सोइ ॥ पत्री लिख रूपच रूनि
जभाता ॥ त्याव रूवेगि होइ कुशराता ॥ वचन सुनत धर्मज अनु
रागा ॥ तो ... सचरन पुन लागा ॥ कह्यो भीम प्रति वचन उच्च
री ॥ जाऊ द्वारका जहा मुरारी ॥ सभ परवार सहित नंदलाला ॥ चा
रवरन ... र ... जाधि शाला ॥ यादव सभ सैना चतुरंगिन ॥ सहित देव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कौं अएनापकनि ॥२८॥ दो० ॥ गजरथ हय पापक प्रवल त्यावो स
हित गुपाल ॥ पति पालित वदी नीन्नपति च ह्यौ भीम ततकाल ॥२९॥
चौ० ॥ शीघ्र चलत मन मे पहुंचा छ ॥ न्नपति करन दीनी न्नपकों छ
समार रसोई को जीय धायो ॥ चल्यो वेग जी पमंत्रि विचारयो ॥ जो कछु
भीम हृदे महि आन्यो ॥ हरि मंतर जामी सजान्यो ॥ द्वारापुरी प्रवेश
कौ कीयो जव ॥ कृष्ण चंद मन महि जान्यो तव ॥ श्रीपति जीय ऐसी अभिला
षा ॥ हासी करौ भीम के साथा ॥३०॥ दो० ॥ परत हारी को हरि कह्यो द्वारे दे
रु कीवार ॥ भीम जान दु ध्यार प्यो हासी रची मुरारि ॥३१॥ चौ० ॥ चितवत
भीमसेन मग जाते ॥ समोर रसोई को जिन वाते ॥ पहुंती पजान उताव
ल धावत ॥ मत आगे हरि भोजन पावत ॥ श्री गुपाल त्रिभुवन सुधि ज्ञा
नित ॥ भीमहि देकौं विध पहिचानत ॥ कह्यौ देवकी का वच आ हरि ॥ ऽ
सौ रसोई परोसो आनि जकर ॥ एकपंकति ब्राह्मण वैठावो ॥ इती पो
पाति जादव ठहरावो ॥ तती मपात उहके मानव सव ॥ आछिपवि
त्रलोगत आदमुत हवि ॥३२॥ दो० ॥ कनकपात्र रतनन खचित सुरलोक
कोडा भरे ॥ ता महि विजन त्रिविध रचि रानी राखे भरपूर ॥३३॥ चौ० ॥ भोजन
विजन वहु परकारा ॥ षट रस पकरन अनेक अचारा ॥ सरस आदर कभारू

५५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध
पर्व ५
...नाप ५

द्राषाक्ष ॥ निंबू आदिक शाक सभद्रा दाना ॥ बहु प्रकार कीदार वनी बरु ॥ कुं
गुलगइ लवंग धूप करि ॥ धनीयाजीरा संठी अदमृत ॥ ज्यो जोः ज्यो
गजतीक्ष्णः संयुत ॥ मिर्च दारचीनी ऐलापुन ॥ धात्री हरड मुरबा व
रगुन ॥ पापर घेवर खत जितने वी ॥ भरराषी डिगकन करके वी ॥
३४ ॥ दो ॥ दार भरर सु भो र अमल र सुरसु गोरस रक ठौर ॥ भए
दूध मिसरी सहित पके एती अति सिर मोर ॥ ३५ ॥ चौ ॥ बरे अनेक प्र
कार बनाए ॥ के ऊमठा दधि मथि तल पराए ॥ पेठे पाक विविध विध
साजे ॥ सुंदर घृत सम अमृत विराजे ॥ सुंदर रोटी घृत तिमश्री पुत
आभा कुंद इंदु पय रन दुति ॥ सोहाली कापर रैका फुन्न दुति ॥ मोहन भो
गक चौरी विंदुत ॥ क्षीर पाक वर विविध प्रकारा ॥ रूपवरन स्वाद सुगं
ध अपारा ॥ ३६ ॥ दो ॥ क्षीर रचित ताघृत ऐकक श्रीपाक रमेड सुभ साज ॥
वड़े कटाहन मेरची अचवन कितप दुराज ॥ ३७ ॥ चौ ॥ बहु प्रकार खो
आ मिसरी युत ॥ नालकेर मगु तासंग अदमृत ॥ च एक मृदु कीने घृ
त मतर ॥ लौगा मिरच नीबू रस मंजित ॥ नारंगी टेंटी संदर फल ॥ अति
मृ षवा सकर ततु लसी दल ॥ षिंजन अवर अनेक प्रकारा ॥ वरन न
तो तगं चषव स्तारा ॥ निर्मल जल घनसार सुवासा ॥ अचवत मिटत तज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तमकी प्यास ॥ जलतें अचमन अवरस तें तलफत ॥ कोक पवि बरनसकत
तौ सौं जाति ॥ ३८ ॥ दो० ॥ बहु प्रकार विंजन बने मिसबरन षट रसस्वाद ॥ रचे कृ
ष्ण हित देवकी प्रिः प्रीति प्रमाद ॥ ३९ ॥ चौ० ॥ कहत कृष्ण प्रति वच सतभाम
आ जु किवार द्वार किं तिकामा ॥ पहुच एत्र मभुज कवहू न पेख्यौ ॥ भोजन स
मै किवार न देख्यौ ॥ कहौ कृष्ण हसि सतभामा सन ॥ समै रसोई सिंधु
पाक पुन ॥ बुरा भलो कोइ भीतर आवे ॥ तौ तै भोजन शोभ न पावे ॥ वैठी रहै
है देवकी पाक पर ॥ करत जु है पटरानी सविक ॥ जामवती सतभामा
रुकमन ॥ अरु लछमना विमल षत तम भरस्नै ॥ ४० ॥ दो० ॥ वीजन करति चम
र ढरहि श्री पति की तीय चार ॥ कर कंकन कलि धुनक रत पग नूपर झन
कार ॥ ४१ ॥ चौ० ॥ चारनाइ का सजि सिंगारा ॥ अमर न चौर अनेक प्रकारा
आए तिः अवसर द्वारे पर ॥ भीमसेन वलवंड महावर ॥ मै दे द्वार किंवार
निहारे ॥ पवन पूत वच ऊंच पुकारे ॥ रुनसुन कों ऊंन उत्तरु कहे ॥ आ
सौ कृष्ण मौन है रहे ॥ श्री पति वचन ऊंच प्रगटावै ॥ कहै अवर प्रति भी
मसुनावै ॥ आजु अन्न पवनी सिव नि आति ॥ सुधा समान स्वाद अद
भुत गति ॥ ४२ ॥ दो० ॥ श्री पति सिव पर भि व चक हत जे बहु वेगर सोइ ॥ पुनि
पुनि भीम पुकार हैं उत्तर दे ईन कोइ ॥ ४३ ॥ चौ० ॥ आपति अदभुत संदर पक वना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

४२ औंवरुआचारनआवरसमाना ॥ कवहूनरैसेपाकवनरुचि ॥ जैसेविंजनतुम्हा
रुवनेसुचि ॥ वचनयरस्यारहृरियजटावे ॥ कहेउआवरकेभीमसुनावे ॥ क
वहूंहरिमुखकौमचकावे ॥ सुनसुनभीमसमहारिसुआवे ॥ सुतभामारह
विधपकिचानी ॥ कृष्णवकोदरहासीठानी ॥ अवहौंकहौंकृष्णसोंहासी ॥ य
हतौहैगोकुलकौवासी ॥ ४४ ॥ दो ॥ हरिसेसुनिभीमाकहेउसुसवचनसु
नमोहि ॥ अजहूंछिसमिटीनहीवालपनकीतोहि ॥ ४५ ॥ चौ ॥ जवगोकु
लयसुधाऊहरहते ॥ सुनउचरित्रलाजमुसुकहते ॥ माखनचोरघृध
दुधिवांधा ॥ ग्वारनसंगचरावतवांधा ॥ निशदिनभ्रमतकुंजसहवामा ॥
नैकनपावतसुखविश्रामा ॥ जसुमतिहुसकरदेतनमाखन ॥ चोरीक
रतछाछदधिखातन ॥ सोवततनएसिजाइनराती ॥ ग्वारनवछतुमस
दासंगाती ॥ ४६ ॥ दो ॥ ढोरढोरजनमो तुहीयरेयेआवरकेहाथ ॥ माख
नचोरनिहारकेवांध्योऊखलसाथ ॥ ४७ ॥ चौ ॥ वालपननमैमतिदुख
पाया ॥ नंदभवननहितुमविसराया ॥ भीमसेननद्यारेपरेआया ॥ केत
कौऊतुमहिंकिवारदिवाया ॥ अवलोभलागिदूतिहारी ॥ यद्यपियार
सोरातुमरारी नंदभवनतुमकृपाणाकहैसुना ॥ कौछुरावनयसोदे
मैया ॥ सोतुमकहातेपरमउदारा ॥ नहीभीमसेकौकरतकिवारा ॥ नितप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तनु मम पुत्र बिन मगरो करत ॥ सो गात दान मृत की पापे करत ॥ ४८ ॥ दो० ॥ मि
त प्रति चहुम अब हार तुम सधै न चरावत माते ॥ आवत जाव ति ग्वार नी ले
मट की भज जात ॥ ४९ ॥ चौ० ॥ छाक भात भोजन तुम रोतव ॥ मृदनि होत पा
वत सा वन तव ॥ आव देवकी तुम्हरी माता ॥ षटरस भुंच जस भ्रात कुसरा
ता ॥ बाल पून तुम कुपण महा भ्रात ॥ आव लो तुम री गई न वह मति ॥ नी
चो मुख करि भोजन खाव रू ॥ आवत भी मकि बार दुवार रू ॥ अब तुम रा
जनी त पद पाई ॥ बाल चरित्र दी ये बिसराई ॥ पव ते मदेवो न्य पूति तुधि रे
उर ॥ तव तें सी छोरा रा जरी तवर ॥ ५० ॥ दो० ॥ आप खात हो वट मथ हम सको
दे तन काहू ॥ हम ठाढ़ी बीजन कर देहि से वत म्हारी माहि ॥ ५१ ॥ दो० ॥
सा० ॥ चौ० ॥ जै मनु कहे सुन जन मे ज ॥ आगन तिस रकु ष्ण कोत ता
तः अब मम रह से घन स्य मा ॥ काल चरित्र कहे सत भामा ॥ बाल पन पी
तं डु कि सोरा ॥ बलकी ऐव जजग सिर मोरा ॥ जो चरित्र पहसुने सुना
वै ॥ मुक्ति हो इम भव दहु षिपद पावै ॥ सतभामा के वचन सुने सव ॥ मन पुस
नंद नंदन तव ॥ कहे मुसक वचन सतभामा प्रति ॥ मै सुम कमिकी
रीत हम सम ति ॥ ५२ ॥ दो० ॥ कहे वचन पुन देवकी सुन सतभामा बात
कैसारी ऐसे वचन कहत न भी बत हम मरे तात ॥ ५३ ॥ दो० ॥ कति को वचन कहे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४४

अश्वमेध

रउचारज्ञ ॥ विद्यमानहमरेनविचारज्ञ ॥ मातपिताजाकेसवधाना ॥
सोनिहचिंतसदाकतधीना ॥ जोदिनजोकुलमेहपदीते ॥ सोसबविस
रतिनाप्तिनजीते ॥ पसोदेवहुतकरीप्रतिपाला ॥ वृजजनहितविसरैतते
रधरलाला ॥ यहविधिइहतारउजसुखविलसति ॥ वृंदावनजीपकवहुंन
विसरति ॥ ब्रह्मादिकसनकादिकध्यावति ॥ करतकछनेतवगतिनही
पावति ॥ ५४ ॥ दो ॥ सुनसतभीमावचनमुजृपहतोत्रिभुवनताता ॥ ना
रायणजाकोकहैयपहीमपविख्यात ॥ ५५ ॥ चौ ॥ यहीपुरुषपरनमभग
वाना ॥ जाकोआदिअंतनहिजाना ॥ जोकहुवचनकहेइनअंतर ॥ आव
नसुनेसवभीमनिरंतर ॥ मैहासीपुनिकरोगोपालहि ॥ करोभवेशत्रुप्र
गटनंदलालहि ॥ यहिविचारमनमैठहराया ॥ हासुकरोहीयहहुव
ला वे ॥ श्रीगिरधरजीयकीसमजानै ॥ भीमसेनजोहीयमतुठाट
नै ॥ सुनऊकध्याजनमैजेराई ॥ अश्वमेधकृतसहमोध्याइ ॥ ५६

[illegible]

चौ ॥

सुनत्रपजनमेजासवधाना ॥ सतिभामापतिवचनवखाना ॥
सुनऊदेवकीदेविवकाना ॥ जोमीवतहेवेदपुराना ॥ याहीकुलहरिहयरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

न

षपराना ॥ विस्वरूप निश्रेय परमातम ॥ प्रनव ब्रह्म पद कृस सख्या
ता ॥ ताको तुम कहत पसमता ता ॥ ग्रंथ मै तुम पद हृव चसुनायो ॥ पार
कै कृस ब्रह्म ठहरायो ॥ तुम तो वचन में गातवषानो ॥ त्रिभुवनप
ति हृपै सुतक एतानो ॥ १ ॥ दो ॥ आपक भै करत सकल है सत्ति प्रति
हकाम ॥ भवन चतुर्दश मै रह्यो पहि आतमाराम ॥ २ ॥ चौ ॥ यह तोनी
न लोक को ताता ॥ याको कोऊ न हि पितु माता ॥ आप क सर्व सेवते न्या
रा ॥ अगम अगोचर परम अपारा ॥ अवनी भार उतारन के हित ॥
जन्म लीया तुम ऋहहुर बत चित ॥ भगत उधारन सुष उपजावन ॥
कोटि पतित कीने प्रभु च पावन ॥ सुन वच भए प्रसन मुरारी ॥ सतभा
मा पद कर्ना धारी ॥ तुध्या तुर है द्यार पवन सुत ॥ ठाढा सुते वच
न सुद भुत गति ॥ ३ ॥ दो ॥ कहे देवकी सत्य वच सतिभामा काहि तोहि
द्यारे ठाढा पवन सुत सुतरू चरज जीय मोहि ॥ ४ ॥ चौ ॥ ठाढा भीम द्वा
र दुष पावत ॥ तुध्या रथी प्यकत मै जाधावत ॥ करुणाकर रह परम भवे
न बुलावऊ ॥ बहुर सुभोजन देत पतावऊ ॥ सुन वच कृस्न मोन गहि
रहि ई ॥ काहुं सों मन भेद न कहि ई ॥ पापर लेद सन न षबर कावे ॥ सं
त सुन न भीम सहा पै पावै ॥ वरे पकौरे अरु पकवाना ॥ सुर की मशी
कृदु धम्म पाना ॥ जः भीजन ते शद्ध केत उप ॥ भीम सुनाव लिषाव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिपदुपति ॥ ५ ॥ सोरठा ॥ सो व्रत पुनवाइ घेवर भीमसु नाइकै ॥ दही
दूध सुरकार पुन हरि भोजन जस करति ॥ ६ ॥ चौ ॥ ठाढा भीमसु नैहौ
की नी हासी यह समुझ को हरि ॥ जे ऊठे तीन पेकति तब ॥ बहुर स भोजु
नत पति भए सब ॥ तब हरि कह्यो कौन द्वारे पर ॥ बोल्यो केवार निरंज
दिग भए ॥ देष्यो भीमसेन को आपवति ॥ को पोसि जिन हरि हीये हर
षति ॥ पुनि आतापकी पोत वपार धरि ॥ अब हम उठे सकल भोजन कर
जौ ई कढि न तुम आगे आवत ॥ तव अहार मन बांछित पावत ॥ ७ ॥ दोहा ॥
वंजन नव नेअनेक विध ॥ अब ही की यो आहार ॥ विनु पापवति नहीं पा
इये बहुर सविविध प्रकार ॥ ८ ॥ चौ ॥ पीछे ढाढि रह्यौ वचिन्यारी ॥ सो
नहीं लायक भीम तुमारी ॥ देषहु भाई मैं तहु मारे ॥ अब ही भोजन
ल पास कारे ॥ जौ तुमरे मन होइ ढाढ पर ॥ की जै पान भीम करु
णाकर ॥ जौ धरि सकहु धीर धरि प्राना ॥ पुन प्रभात में चहु पकवाना
सुन हरि वचन भीम जाय धारी ॥ मासों हासी करी मुरारी ॥ मै पुन ह
सी करों कृपापति ॥ जो काक है निगम त्रिभुवनपति ॥ ९ ॥
दो ॥ हरि तुम आपु नो पेट भरि हम तु ध्यावरष्य नाहि ॥ द्वार मद भोजु
न की पास तक तुम जग माहि ॥ १० ॥ चौ ॥ जब सब द्वार कि वार निहा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स्यो ॥ वपुबार सुरसि वरूपु कास्यो ॥ आगे कैसहिं न उत्तर दीनो ॥ हृदै वि
चारत बहि मुरारि कीनो ॥ कै तुमरी माता हनु भई ॥ कै रुकमनि निज पुर के
गई ॥ कधौं प्रद्युम्न का लव स ॥ कै अनिरुद्ध महापीडा सुसि ॥ व
सुधा दीन नंदे तम नाजा ॥ कै धीत जीव बासुर राजा ॥ कै तुमरी संतति
मति पाई ॥ महाराज के उदर समाई ॥ ११ ॥ दो ॥ ता ते दीया कि वार मह
की याइ कत्र महार ॥ स्तत कृतान्यो उह विवेकी नो यह विचार ॥ १२
॥ चौ ॥ यह जी पजान कि वा रहै वा को ॥ तु धार की भी मसुन पायो ॥ बा
र जात मत सकल महारा ॥ बडा उदर तुम मो हि निहारा ॥ ता ते हम स
कोना हि बुलायो ॥ अपना उदर तुम मो हि लगायो ॥ उदर तो हि ब्रह्मां
ड समाना ॥ कहते है सब वेद पुराना ॥ तां ते तुम न हि नैकु अघावत ॥ ती
न लोक तुम उदर समावत ॥ बहु रो कीनी रंड भेडारन ॥ तां को है अब
याग पहारन ॥ १३ ॥ दो ॥ कं ह उदर तुम रो बडा आप हि की या महार ॥ क
बहु न पति न हो त तुम तो भुवो सो बार ॥ १४ ॥ चौ ॥ जै न हो हो हि तपति
त हमरी ॥ भक्षन करे अ सा हि गिरधारी ॥ भक्षन करते बार न लागै ॥ यह
बिचार कहि मुझ को त्यागै ॥ मोटा दीरघ बडा दिखावै ॥ मत मेरे न हि उद
र समावै ॥ बलु कर्द भांति करै मुझ अंतर ॥ न ज्यां मोहि यह जान नि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

रंतर ॥ तुम राउदर म्भानं तप्रकारा ॥ जिः तेउपजे स म संसारा ॥ विश्वस
कल उपजी जिः माही ॥ पुनि सब तुमरे उदर समाही ॥ १५ ॥ रूः ॥ भक्तनु
की योन माहि तें कोहू देविचारयो ऐड़ ॥ कुंती सुत जीप जानि कै फुफी कै
ईसनेड़ ॥ १६ ॥ रूः ॥ भक्तन की योन मझ मह जो पधरि ॥ माइ बपा वें कुं
ती मति करि ॥ नहि समहि स क्यो स भद्रा का दुख ॥ तांते मो हि उवारदा यो ॥
मुख ॥ कुपी वह ए भी मह तु स ए ही ॥ महा दुखित है रु सिरधुनही ॥
तन को दुखित जान कर राख्यो ॥ भक्तन की योन मझ अभिलाख्यो ॥ इक तु
म जान की याइ ह का जा ॥ इक व ह देव पुधि छर राजा ॥ पिता पांडु नवम
यो काल वसि ॥ हम बालक प्रति पाले बहु रसि ॥ १७ ॥ रूः ॥ वडा की या प्रति
पालम झ इक वह धर्म जराइ ॥ इक तुम द्वारिका वार दै भोजन की यो घाइ
१८ ॥ रूः ॥ जो तुम ऐसे ध ब्रिद्द डा व ड़ ॥ भोजन स मै कपाट चढ़ा वड़
अभ्यागत कूं केऊ हजा वै दीन अती तब ही बन ही पावै ॥ जो ये तुम
सदे द्वारिका वारा ॥ कैसे चले जगत ब्यो हारा ॥ लोग कहैं गे ऐसी ब्रति
ऐसे ॥ जो हरि कर त करै हम तैसे ॥ लोग कंद जक ता वाहि चा नै
जो अभ्यागत तुम नही माना ॥ तुम लोक दीप तदीन पाला ॥ कु
वारा कर म कत की यो गुपाला ॥ १९ ॥ रूः ॥ केजल स्ट कगयो स कै

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ल्ससागर॥ कैदुरभिदल्प्रनराज॥ छुटेकि बांद्वारनिशव्दिनरहे॥ सुवमं
देमहाराज॥२०॥ चौ॥ बचसुनभहोयप्रसंनमुरारी॥ भीमसेनपरकरु
णाधारी॥ पवनपूतकोकंठलगायो॥ द्रगकरुणाजलसोंतपतायो
ह्रसिकपिकीनेभगतसनाथा॥ त्रैभुवनपतिअनाथकेनाथा॥ मिटगई
तपतबकोदरकीसब॥ ह्रषिकरणाकरिअंकभरयोजब॥ आदरुकरिह
रिवचउचारे॥ भीमसेनतुमसगाहमारे॥ अरजुनहूलघरकोवहु।
णाई॥ लाजतभ्रातनुमारोसोई॥२१॥ दो॥ हासीकरणाप्रसंसहेतवकोदरो
हमतुममीत॥ मनबचकेमनमेंसदाहमरीतुमसोंप्रीत॥२२॥ चौ॥ आ
वउठिलीजैपाककृपाकरि॥ भोजनुकीजैह्यांपगधारि॥ वकुरोंभीमा
वेनतीकीनी॥ तबपतिभपाअपदासभक्तीनी॥ करुणाजलसोंसींचिअ
घापो॥ जानोषटरसभोजनुपायो॥ आज्ञामानगयोरसोईपरि॥ जे
लावनेअंजनअम्रतवर॥ अतिसुंदरवहुविधपकवाना॥ धरेपरो
सभीमसवधाना॥ पवनपूतआदरतबताको॥ कृष्णकृपातेसभल
षपायो॥२३॥ दो॥ मनभावतभोजनकीपालीमोअघाइअहार॥ तो
षभयोजीयभीमकोकरुणाकरीमुरारि॥२४॥ चौ॥ रामकृष्णअरु
भीमबैठकरि॥ पातीवाचपृथिऊरकीतब॥ धर्मराइकेसुनेसंदे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सो ॥ हरषत भयो त्रिलोक नरेसा ॥ सभा मध्य भीमसेन आन्यो ॥ उग्रसे
न यादव सब जान्यो ॥ तब श्री कृष्ण अक्रूर बुलायो ॥ ऊंच पद दे करि
वचन सुनायो ॥ जादव कुल मै जे ऊंचे छ्वर ॥ ते सब लेऊ हंकारि सक
पा करि ॥ आज्ञा लै अक्रूर सिधायो ॥ उत्तम पद कुल के सब ल्यायो ॥ २
५ ॥ दो ॥ सब पाइव इक ठौ भए पत्री पावाच वनाइ ॥ हाथ जोरि विनती
लीषी सब नृप युधिष्ठर राइ ॥ २६ ॥ चौ ॥ पती पाहि लीषी युधिष्ठर जैसे ॥ वा
चत भए सभा मधि तैसे ॥ यदुपति मो पर करुणा कीजै ॥ यह कृत सफ
ल कर जस लीजै ॥ सकल कटंव सहित परवारा ॥ जादव कुल वडा
आरुवारा ॥ राजा प्रजा वरन पुन चारो ॥ करुणा कर गज पुर पग धारो
चतुरंगनि सैना लै साथा ॥ आव हु वेग अनाथन नाथा ॥ कृतवर्मा के
कै हिया रमा पति ॥ आ वहिन गारा कर हु विमल मति ॥ २७ ॥ दो ॥ आज्ञा
पेरहु नगर मधि चल हुं सकल नरनाह ॥ प्रजा लोक सेना सकल
चलहि वरन संग चार ॥ २८ ॥ चौ ॥ समद शास्त्रि काल उपासी ॥ शुच
पावन बहु कर्म प्रकाशी ॥ छत्री चले सूर वलवंते ॥ देहन पीठ सम
र न जे जंते ॥ वैश चलहि धन पति महिमावंत ॥ शूद्र चली ऐ धन न प
ति युधिष्ठर ॥ वहुरौ चलहि प्रभू सम साथा ॥ नीव टरव वसे वहन ज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

८

हा षा ॥ जिंह विधि आज्ञा करी रमापति ॥ चले शाकल तजा वमन हर्षित ॥
२६ ॥ दो० ॥ हलधर अरु वसुदेव के आज्ञा करी गुपाल ॥ इहां रहौ तु
म द्वारका रक्षा करउ भूपाल ॥ ३० ॥ चौ० ॥ कुनि पति आज्ञा करी मुरारी ॥
जो कछु अब है मंत्रि लछ है मोरी ॥ गज रथ वाजि पैदल भार सत ॥ ले संग
ग चलौ ऐल अपारा ॥ दान निमित्त युधिष्ठिर राजा ॥ मत्त चहे धन पत्र
समाजा ॥ कुनि आज्ञा जाकी नीनद नेदन ॥ चल फुव रन चारो घकदन ॥
जिह को चहो दे कछु समाना ॥ सो धन ले वे मो हव जाना ॥ जो कछु वफ तु
चा ही ये जाको ॥ दीजे मोह मंडारे ताको ॥ ३१ ॥ दो० ॥ गज रथ पय सअ सरा
स्त्रु धन चाहै लेवै सोइ ॥ आसन वासन चारो वरन जो जिहि मन सो होइ
॥ ३२ ॥ चौ० ॥ तब अक्रूर कुनीत समाने मबुमतल नीलक वरन रंग माने ॥ भांत
भांत के रंग दुकूला ॥ बांट दीये सभ त्रिभुवन मूला ॥ फुत अनेक प्र पंकाभ
ठारा ॥ फेर दीये ति हुर समे अपारा ॥ सरभा वरन सके तहि कोई ॥ जो
जिहि चा ही चे ले वैसोई ॥ बांट दीए सम लोक रव जाना ॥ जो जिह जो ग
दीए पहचाना ॥ अभरन वसनि रषपदु रक धनु ॥ मद भु त व न्यास
समाज ॥ ३२ ॥ दो० ॥ बांट दीये तातदिन सजन को हरि ॥ ३३ ॥ दो० ॥ [illegible] पन
को रट जा [illegible] वजु रे चले सवल दल साज ॥ रथि सेना चतुरंगनी अ
ज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

न प्रश्न मेघ

हुतबन्योसमाज ॥ ३४ ॥ डेरापरेगोमतीतटपर ॥ चलीसैनाअ
नगनसाजीहरषि ॥ चलीजादौकुलकीसैनाबरनितकहीपरतिनही
बैना ॥ जेभिनकहैसुनकुरुराजा ॥ चल्योकृष्णसंगसकलसमा
जा ॥ ब्रह्मणछत्रीबैससुद्रपुन ॥ काइतिबणीऐअरभावडेभुजन
चलेसराफविजाजसुनारे ॥ बनेपीसारीअरुठठेरे ॥ बेलदार
कुनिहानलहारे ॥ ३५ ॥ बाडीदरजीमासकीअरुपेतलीऐनकास
धावीप्रीपरिरंगरेजपुनमाचीहूदेअलास ॥ ३६ ॥ पनवाईकूंजरेम
केरी ॥ सरकतीधनुसाजिपिजेरी ॥ अगरदीकअरुबाजदारपुने ॥ हल
वाईपनिघारभाडुगान ॥ कंघीगरुनाऊंसभजाता ॥ हरषिसंगचलेसम
सुसनाता ॥ अरुजौहरीलाललबनजारे ॥ नदषऐगाइनगुनजनभारे ॥
बलेबजेत्रबजाबनहारे ॥ ततबिततसुगंधिनहारे ॥ बंदीजननाचक
नरनारी ॥ हरषतचलेसंगऊरधारी ॥ ३७ ॥ पंडितप्रकृतिपाठकुच्च
लतब्रह्मज्ञानकेसार ॥ वेदज्योतिकीसकलपुरचलेमदनतनरनारि ॥ ३
८ ॥ राजनीतजेसेबलिभाई ॥ चिहुराणीचाकरटकपदुराई ॥ संगचल्योक
दसमाप्रापुतमहावर ॥ तुंगदुरदमुकताफिनसिरपर ॥ रथअश्वसकरभ
पैकनहीपारा ॥ चतुरंगिनसैनादलभारा ॥ यादवकुलकीगनतिभिमावे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

निरषत नैन हृदै हुलसावै ॥ केतन हूं गज पर रह छाजाना ॥ केतन हूं पर
अश्वा तुरंग समाना ॥ इक गज अज ध्वजा फहराता केनि साजे ॥ ऐक अंबारी न सो छबि
छाजे ॥ ३८ ॥ केतन हूं सिबका चड़े जाना धुन केतन हूं पर पंच तूर ॥ स्वर्ण
भूषन घंटिका सोभित कुंभ सिंधूर ॥ ४० ॥ बुबभ मल्ला ष केतने न ही
गिनती ॥ गई बमार भरे विध बनती ॥ केतने हय पर जोरे रथ संगा ॥ ति
न पर विलसति सूर उमंगा ॥ तुरीन बन मग धूर उड़ाई ॥ लुके अस
र न हीं दे तहं दिखाई ॥ धरन अकाश एक सम लागे ॥ निरषत कुअहि
पैअनुरागे ॥ फौज फौज के बजे निशाना ॥ महा सूर जादव बलवाना
जहां रथ धरि तहां सेन अपारा ॥ मनवांछित फल देवन हारा ॥ ४१ ॥
पंथ चलत निश को सकल ठतर पर तहं दिन जाय ॥ हय पऊ पर असवा
र है भीमसेन यदुराय ॥ ४२ ॥ सबै पंथ के चलत तिन हारे ॥ शबुरी ऐ
के पर दुख पारी ॥ निरषत भए प्रसन्न भूपाला ॥ करम चढ़ाय चल ई तता
काला ॥ भीमसेन को आज्ञा कीनी ॥ वेग चड़ाय करम पर लीनी ॥ पुनि शी
र पर धरि करम तें पर ॥ महा संताप अपार तिह दुसर ॥ दुखी करम पर वीच
न माहीं ॥ ती पंच विवेक की पावत ताहीं ॥ हम तो छोरी ऊठ तनहि न पुन
लोग हि सनुकत मोहि वचन सन ॥ ४३ ॥ हांस कर ऊतिन को सदा कि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

ननहीहीयेविश्वासु ॥ प्रथमकरूतहरिकीभगतकिरविषयनरसपास
४४ ॥ भगतत्यागजोअंगहैविषेरस ॥ ईश्वरस्वादवादलालचकेप्रेम
मैतोजारीकभतभप्रति ॥ जोरहिभगतेतेतिकैसीगति ॥ तेनरकबहूनपहि
नतिपावहि ॥ भगतभाववतीयतेविसरावहि ॥ तिनकोठौरकहूंजगनाही ॥ ता
नरहरिकीभगतनपाही ॥ वचसुनभयेप्रसंन्नजुपाला ॥ आगेचलतभये
ततकाला ॥ वहुरफुलेलीकीजुवतीवर ॥ बोलेदीनवचनसुनश्रीहरि ४५
सुनश्रीपतिहोमजविषेय कतिभईहोनाथ ॥ तुमरेनिमित्तफुलेलमुख
रचिरउठायोसाथ ४६ ॥ भगमैमहातपतिवहुघामा ॥ जरतपाउन
हीछिनविश्रामा ॥ डरतफुलेलचलयोवहुभूपर ॥ कीजेहरिकरुणामुज्ञा
ऊपर ॥ महातसुगेधउठायोतुमहित ॥ अंगीकारकरउहषितचित ॥ आयेबी
मुजतुजविषेमुरारी ॥ उतरपरेहितुकरिगिरधारी ॥ लीनीघ्राणप्यारीरल
मायो ॥ कोटमुक्तफलसुवतीपायो ॥ हितुकामिनकोजानहीयहरि ॥ बोलेत
तमएवचनकरुणाकरि ४७ ॥ तुमसमागतिहोमुक्तिकोपावतहोहेतेताहि
पत्तविषेवहरनकराकहोयपप्यारपमाहि ४८ ॥ नृपतिपुछियेरकीत
कतिसोलाल ॥ चलेकुपाकरिश्रीनंदलाला ॥ चलेभाउधरिसभनरनारी ॥ सु
भकोदेउअभैपभारी ॥ वहुरचलीआगेसभसेना ॥ वनमाहिनइकसुदरनै
ना ॥ ताकीनामप्रणामनंदनंदन ॥ वलिहारीतैसोजगवंदन ॥ यहतुमरीसेना

न ट

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सुनवैना ॥ चलतइकत्रउडइतहूररैना ॥ गरतहै एकऐककेऊपर ॥ महा
भीरचलिसकतनभपर ४८ ॥ पुनवतातुमसुनाकहाफूलउठाए
माहि ॥ नानाविधमालारचीपहिरावनकोतोहि ५० ॥ फूलमालतुमना
लयातसव ॥ अंगशिंगारकरुरूपहरऊसव ॥ मतसुगंधइनकीमटजावे
गा तवुनावरूजीपसबपवै ॥ वनमालनिकेवचनसुनतहरि ॥ उतरपरे
तुरंगतभवहि ॥ सुगनानाविधकेठलगाए ॥ भीमसेनकेउरपहिराए ॥ तो
बभपोमालिनजीपमाही ॥ कहोकछुसंसेकछुनाही ॥ तुमकोदेहवरउह
कोला ॥ नपतिबुधिफेरकीमतबशालो ५१ ॥ वरुरिकुलेलमिनाप्रेक
वचनकहतमगटाइ ॥ हमतनजारतघामहमछुतछायदुराइ ॥ पर
शवरीचंवेलनिवनमालनितीनो ॥ सदितहसैनंदलालन ॥ वरुरिकहै
वचयुवतिनसोहरि ॥ करउहासतुमसापवकोदर ॥ जेमनकहेसु
नुऊराजाना ॥ कृष्णवचनयुवतिनसुनकाना ॥ अंचरुगहोभीमकोत
तछिन ॥ हमतीनोकोवररूपवनतन ॥ हमहैवद्धभईतुमतेसे ॥ तुमको
वरहिजानजीपऐसे ॥ हमतीनोतुमकोपतिकीया ॥ मनवांछितभरताहि
एदीया ५२ ॥ चंवेलनिवनमालिनीशवरीयुवतीतीन ॥ अंचुरुपक
रुयोभीमकोहमकोवरोप्रवीन ५४ ॥ भीमसेनअपुनेजीयजान्यो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हमकोहासवऊपहूपहान्यो॥ बोल्योभीमसूनऊरीनारी॥ हमतोइकप
वतीव्रतधारी॥ तातेमेरोमंचरुतजऊ॥ बहुतीयभोगीहरिकोभजऊ॥ सु
ऊऊहनारदपिडुंवाजानऊ॥ तातेश्रव [illegible] पालनमानऊ॥ हैराकसीरु
पावकराला॥ मुऊकोवरनीवाष्तिःबाला॥ जावद्रु यहतवातासूनपावे
भीमस्रुवरइस्त्रीऊहत्यावे॥ नतछिनतुमकोमछनेकरई॥ नैकुन
काहतेवहठरई॥ ५५॥ दो॰॥ प्रानतुमारेहरनष्तितसीवदईभगवान
जौतुमममुऊकोवतिकरऊमतपा [illegible] ऊपहिचान॥ ५६॥ चौ॰॥ आगेहे
कनारिऊहहोई॥ तीपदूसरीलेवेकोई॥ ताकेऊहदिनरैनकले
सा॥ सुषनासहितजीयसदुदेसा॥ सोतभावजीपक्रोधवडावति॥ वे
रकर [illegible] मतभाषउपजावति॥ एककहेंद्रसरीकरोहति॥ मुहादुष
तिनिशादिनताकोपत॥ यहतीनपुवतीजाकेघर॥ ऊगरतरैनविह
ततिसहितनर॥ तिःगृहएकनारतातोसुष॥ वऊपुवतीपतिहितमा
हादुष॥ ५७॥ दो॰॥ एकनारितिःपुरुषकेसदासवतिःऊह॥ दंपतिसु
षविलसतिसदानिशादिनबढ्तिसनेह॥ ५८॥ चौ॰॥ वरीयेसोपुरुषबा
लीचारी॥ आजेतिःसहहोइननारी॥ केपतिकौतेवऊपुवतीतिः॥ सदा
सतोषरहततहीपरेतिः॥ मुऊपटुतजऊगसोनेदलाला॥ तिःऊहऊ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वतीवङ्गतविशाला ॥ सोलह सहस्र एक सो आठा ॥ तिशकौ जात सम
न की षाटा ॥ गिरवरधरको भरता की जै ॥ सो चरुगढ़ै भक्ति फल लीजै
उनके उग्र मै सकल समावङ्ग ॥ रीछसुता सो डरु न हीं पावङ्ग ॥ ५८
कृष्ण वरी रिछ्कूरा तकी कन्या हू देवि चार ॥ सो तुम भक्तन नाक रैर
ताकरै मुरारि ॥ ६ ॥ जो तुम को वह भक्त न करई ॥ सो कृपंथ तुम हि
र अनुसरई ॥ आपनि पुवतनि की तरेला जो ॥ करे हेतु मारी गत वजरा
जा ॥ हमरे रूहराक सी महाठर ॥ तुम के भक्तन करै को धकपु ॥ हम तो
नहीं समर्थ देन गति ॥ तुम की जै कमला पति को पति ॥ जैमिनु कहै सुनहु कु
रराई ॥ सुन वचह तस तै चले कन्हाई ॥ सुनी पिकथा हू दे धरि भाऊ ॥ ते क
तभ पा आ एमोधधार ॥ ६१

६२

जैमिनु कहै सुनु जनकुरु राजा ॥ जो चरित्र की नौ
८
सदुराजा ॥ दनतङ्गमाइ कहूं पतिमा पायो ॥ आजु तहाउ रहक मथ्या पायो ॥ कहि
दृष्ट आवत नहीं पानी ॥ कहे सु जैसा रंग पानी ॥ आज्ञा करी नंद के लाला ॥ त
हाजलु तहा चल्लहू ननत काला ॥ हेदेन पंच जहा जल लोको ॥ करि निशान पुन
चले तहीं को ॥ तौ दिन लोगन करि दुपवायो ॥ एक मध्य पारी चचन सुना पा
सै ३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वृषभ चढी अरु सवार मग जनि धाकरत पुकार ॥ नीतनि जानत राजसी
गोकुल व छरे चार ॥ २ ॥ दो० ॥ होत भई रम पो अरु वराजा ॥ अरु न न जानत
राजसमाजा ॥ धाक भातु भोजन पहिचाने ॥ धेनु चरावन की गति जानै ॥ लो
गा जरत मग माहि अति घामा ॥ कहत न करत है नै कवि श्रामा ॥ तिंहन रषा को
राजदी पाहै ॥ तिहु नहि हू देव चारु की पाहि ॥ ग्वाल भेष दधि दूध चुरा घो
ताको सिंघासन बैठायो ॥ निंदा करत मन जल पहुची जव ॥ वृषभ पीठ पर
लागा रही तव ॥ ॥ दो० ॥ सकल दिउ तारन वृषभ ते जतन करषा के लोग ॥ च
क्रत है ठाढे सकल तिंः ती पके धि साग ॥ ४ ॥ दो० ॥ तिः ठाव ड़त लोग जुए गए
हास करत वड़ ठाड़ भए ॥ वचन कहत तिः सो सभ कोई ॥ तिः पति कर ड़उ तारे
साई ॥ तैसें नाभा होत पारषा ॥ वेगउ ताहि तपरवत स्वा ॥ अरु व सेना भै भीम
वली सृति ॥ तु ऊँउ तारत ताहि करि पति ॥ आ जड़ ता महा दुषभारी ॥ पुन अति हा
सकी धान रनारी ॥ रुदन करत व्याकुल है गई ॥ सपुने हू देव चारित भई
प ॥ दो० ॥ मग माहि निंदा कपूत की करी माहू जी पजानि ॥ ताते दुबपल्या अधिक मन
लाजा यकुतान ॥ ६ ॥ दो० ॥ मन वच क्रम मन यह वाति विचारा ॥ निंदा की पेम पा दुषभारी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लोगक है निश्चै पहुंचाता ॥ हरि दुख नकै से कुसराता ॥ तिः अवसर प्रगटे नं
दनंदन ॥ भीम सहित त्रिभुवन दुखकंदन ॥ निरखत की पोपुष्णा मनाइतिः
लागर हो तनु व षमपी ठज्ञा ॥ रोवति भई अधिक दुखपारी ॥ मृगधको रा
षले कृपा रधारी ॥ सहित मात तुमरी अपरअपारा ॥ मैन ही जान्यो मर्म तुमारा
७ ॥ दो० ॥ दीन दयाल कृपाल तुम अरु अनाथके नाथ ॥ तीन भवन रक्षक तु
ही नही रो सकि अससाथ ॥ ८ ॥ नीच जात हमरी प्रभु कीनी ॥ तैसी बुद्धि ज्ञान तुम्ही
पदीनी ॥ हमरी निंद हृदै नहि धारहु ॥ करुणा करि हरि मोहि उबारहु ॥ नीच जो
तम सुष भला न भावै ॥ हरि सो हेतु न हीं मम भलावै ॥ जैसो काक सनरु दुष्मि सरारी ॥ ते
सी वस्तु तन्हि मे डारी ॥ जेहि पर मृवतक ससे तेसे ॥ नीच कुलन मे हम न ते जैसे ॥ उ
तम मध्य म अधम बीच है ॥ कुल सुभाव कपि ऊंच नीच है ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र
रम है एकासे हृष्ट सो आगम ताहि ॥ दीनानाथ कृपा करहु वेग उबारहु मोहि
१० ॥ आपति अपुना विरद संभारहु ॥ उतरहु मासाक प्रभि वारहु ॥ मोहिर
पारी मजऊ कोपहि चानऊ ॥ धाई सकल ले पादव की जानऊ ॥ जादव कुल जनम
तम सहाय ॥ लेऊ पवहान मजऊ पदु नाथा ॥ तुमरा जनम भयो अधरा ते ॥ म
ऊ सुधि करी न तुमरी माता ॥ जो उ हृस मेदेवती तुम सरव ॥ कत कोअवपा
वती महादुख ॥ तुम हरि हम को धाई प्रमानऊ ॥ पहु ऊ सकल लोगत वमा
नऊ ॥ ११ ॥ मऊ पवहान तजो न हीं हाथ्य नि जनमो मोहि ॥ जानत पडकुल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सकल कुटम मात पिता पुन तोहि ॥ १२ ॥ राखले हु हम को वन वारी चा-
रन पारन श्री कृष्ण तुम्हारी ॥ भरे पूसेन कृष्ण तत काला ॥ भीमसेन सा कहि नं-
द लाला ॥ वेग उतार लेहु या को सब ॥ रथ चढाइ दुवद्धी न करो सब ॥ तेभि
नु कहै सुन ऊहि तराजा ॥ लई उतार भीम की पोंका जा ॥ आइ गए वसुदेव
तहां छिन ॥ कृष्ण कह्यो सु नो पिता भ्रावचन ॥ तुम हलधर दाऊ और हा द्वारा की
रवा की ठेउग्रसेन भ्राति ॥ १३ ॥ पुनि पुर की रक्षा करहु वचन कहै भग-
वान ॥ तति विद्या गछि कै रजा ऊ तुम है ईपरम कल्यान ॥ १४ ॥

सभोध

तेसि वच कहि कहत जगुत पति ॥ हम कैसे जैहो द्वारावति ॥ कैसे
होई भ्राति कल्याना ॥ तुम दरसन विन त्यागो प्राना ॥ जैसे दसरथ नृपति
भई गति ॥ प्रान तजे विछुरे रघुवर पति ॥ लोग कहै सरवन के श्रापा ॥ मैता
सत्य रघुवर से तापा ॥ भयो काल वसि राम वियोगा ॥ मैतन ते जो तुमारे सो
गा ॥ यद्यपि तुम हम सरात तन राखहु ॥ महा दुखी मन को अभिलाखहु ॥ १५ ॥ जै
ससी पार घनापवि नु सकै वदन शरीर ॥ तेसे हम तुम विनु दुखी सहि
न सकत अति पीर ॥ १६ ॥ करुणा कहि हरि परम सुधाना ॥ फिर वसुदेव
दे डाय पोत्ताना ॥ हृदै ताहु कहि धीरज दीनो ॥ सुधा वचन कहि सभ दुख छीनो ॥
पुनि वसुदेव वचन उच्चारई ॥ तात ज्ञान हरि सिखा करई ॥ इनका संग कबहुं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नहिंकीजै ॥ हमरीसीखश्रवनसुनलीजै ॥ गोब्रह्मणद्रोहीमदपानी ॥ हरिपु
वतीरसनिंदकप्रानी ॥ कृपाहीनसबदाना ॥ इनकासंगतजहुभगवाना ॥ १
७ ॥ इस्त्रीसोभोजनकरैएकपात्रकेवीच ॥ ससुरगुरुहुवासोकरैतजहुसंग
तिहनीच ॥ १८ ॥ मातपितामातकुलत्यागे ॥ युवतीवसिनिशदिनअनुरा
गे ॥ मनकठोरव्रतदाननकरई ॥ निरदोषीकोदोषउचरई ॥ गुरुहरिहरिसा
वैजनको ॥ जूएरतिपुनसोतनमनको ॥ अन्याजातिहरिलोगसुनावै ॥ निंदक
साधभगतनहींभावै ॥ १९ ॥ कंचनादिपुनधातुकोव्यानरुलेइचुराइ
इनदुष्टनिकेसंगततजिमनवचक्रमसपदुराइ ॥ २० ॥ ध्यानरुदेवपूजनत्या
गुसरई ॥ जीवसंघारवहुरिनितकरई ॥ झूठीसाखसाधपरदेवै ॥ तीरथजा
इकुसंगतिसेवै ॥ राखैवनदेतकउदानो ॥ त्यागीवस्तुगहैमनज्ञानो ॥ २
लोगनप्रतएसवचभाखै ॥ पापपुन्यकछुवेदनराखै ॥ कहिहैनरकसूर
गझूंठेहीं ॥ आजकीजातिकिनदेनलखहीं ॥ देखनसकैअवरकीशोभा ॥ म
शदिनपरतियपरधनलोभा ॥ २१ ॥ सोवहीचहतनिरधनहुतोइहधि
नुपाचाकाहि ॥ पाकोधनकवजाइहेयहुवोकमनमाहि ॥ २२ ॥ तिनसमा
पुनीहोइअपछमति ॥ करलेवेओरनकीनिजगति ॥ वेदरीतितजिदंभदिखा
वै ॥ धर्मध्वजपाखंडलोगवतावै ॥ दुर्वगारवतेवलुद्धिबरोवै ॥ पतिव्रततीय
काधर्मगुण [illegible] ॥ तोकोसंगनकरहुविचक्षन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

सीतलसमैचलजुमारगवनि ॥ उतरउतहांजहांपीतलतल ॥ श्रुतिज्ञाताज्ञा
ज्ञाताबहु ॥ कर्मी ॥ देहदानतिनपेंद्विजधर्मी ॥ २३ ॥ ॥ बटुकमीधश्रीमु
धीज्ञाताँवेदपुरान ॥ ईद्रीजितसतशीलपुत तिहिंद्विजदीजैदान ॥ २४ ॥ ॥
जैमिनकहैसुनजुकुरुराई ॥ पितावचनश्रुतिसुनैकन्हाई ॥ भीमसेन
तवचनउचारे ॥ सुनवचनवसुदेवतुमारे ॥ बिमुखनिकेहरिसंगुनुकर
ई ॥ भगतहीननरितिनतेठरई ॥ मुखवह्निजिनकेजीयमाही ॥ तिनकोसं
गुकरतहरिनाही ॥ सदाकरतभगतनसौंप्रीता ॥ भगतवछलगिरधरकी
रीता ॥ पुनउचरेतबकृष्णपितापति ॥ तुमहलधरश्रीधरजाजदुद्वारवति ॥ २
५ ॥ ॥ उग्रसैनरक्षाकरजुपुरीद्वारकामाहि ॥ गदगदहैवसुदेवदृगम
रजलठहराहि ॥ २६ ॥ ॥ कृष्णपिताकौकंठलगायौ ॥ बिछुरेनहीबिरह
बिरमायौ ॥ लागरह्यौहरिकेउरमाही ॥ कृष्णचंदकौछोरतनाही ॥ जै
मिनकहैसुनजुराजाहित ॥ हरिपदवसतहाथेजिनकेनित ॥ सबसा
गरहरअवलोकनजिन ॥ कठनहोतइकछिनऊँबिछुरनतिन ॥ कृपासिं
धुकरसीतलकीना ॥ हाथपजोरकैरह्योअधीनो ॥ आज्ञालेवसुदेवश्री
मुरबले ॥ चलेद्वारकाकोतजिहरिदल ॥ २७ ॥ ॥ द्वारावतिकोवेचर
लेगजेपुरकीनंदलाल ॥ टहिकनधर्मजयमन्त्रहित ॥ चलतभएतितका

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ला ॥ २८ दो० ॥ चलत कुसुम सर पर तव आयो ॥ सुंदर अंग मनुज सर मन भायो ॥ सुं
दर ठौर देष सुषपायो ॥ गुंजत अलि कलि धुन प्रगटायो ॥ हंस चकोर मोर
चात्रक वर ॥ कोक कपोत रु चरि सर ऊपर ॥ पान करत जल को सम हत
गज ॥ मद माते अति ग्रीव घुंघट सज ॥ देष रुकमनी को नंद नंदन ॥ भाष
त वचन मधुर दुख कंदन ॥ देख रुकमनी परपुरुष बरीत ॥ निलज भई
कु मद वितज ससिवत्ति ॥ २४ दो० ॥ दृढ रहे पतिव्रत बस कल पर पुरुष न उन का
र ॥ मधुप निसेवि हृत रपति मदति ससिवतिदा नो ढोर ॥ ३० ॥ दो० ॥ दृढ पर इन के
सभ पाता ॥ पर पुरुषन रति पहु कुसराता ॥ त्यों जुवती पर नर सों प्रीता ॥ मन
निलज जगत विपरीता ॥ चंचल मन युवती रति भई ॥ निश्चै नरक जान को गई
ई ॥ भई दीन पुनि पवन ऊकोरे ॥ दृढ पर रेपलव चहूं ओरे ॥ चंद उदे की समैप
का नी ॥ कंपत उठ मन मत्ति पहु ता नी ॥ दै वपुष नी की गत ऐसी ॥ ससि उदै
ति धर ऊलहि जैसी ॥ ३१ ॥ दो० ॥ तैसें चचल नार को जब भती ग्रह माह ॥ तब उठ वै
जी पला जब ऊ पर पुरुष निहित नाहि ॥ ३२ ॥ दो० ॥ तब ही पत्ति परदेस सधावै
तब ली पत्नी पत्र आनंद बढावै ॥ ज्यों दिवस को पदनी अलि रति ॥ तिसि पति उर
पति निरषि अनंद पति ॥ बुद्ध मलीन होत जो नारी ॥ पर पुरुष न सों रमति बिका
री ॥ प्रेम हती पत्र ग्रह भती ता निन्न होई ॥ लाज करै ऊपव ऊ सोई ॥ वा ली सु धन रा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कमनीयपटरानी ॥ नैलज्जवचनकहिसारंगपानी ॥ तुमकोकहततलाजन
हीआवै ॥ सुनसुनमुउजीपवउदुखपावै ॥ ३३ ॥ दो ॥ कुमदनकोपतिवं
दहै ॥ हंसचकअलितात ॥ लाडकरतवैठतउठतगारहतिपदनीपात ॥
३४ ॥ चौ ॥ चकवाहंसनकोरमधुपकुल ॥ पाहिनहेपतिपदनिकोसुन
इनमहिदुखपरतिसुतलछन ॥ सरभूपसोधपिवपनितिमछन ॥ उरोजुव
तीसंततिवउहोई ॥ अस्तनपानकरावेसोई ॥ कोऊपुत्रमातातःतोरै ॥ को
ऊपुत्रसंगायाउकजोरै ॥ कोऊगहेअभरनकोऊकेसा ॥ त्रिःवउसंतति
सोईपउभेसा ॥ तेसंइहपदमिनिकेताता ॥ करतप्रहारहींपकुसराता ॥ ३
५ ॥ दो ॥ पदमिनिकोपतिचंद्रमोउदेसमेसुखपाई ॥ संतिपपतिपरदेसतेमु
दतिहोइगहआइ ॥ ३६ ॥ सो ॥ सविपोगकुमदनदुखपावति ॥ उदेहोततनि
शीसुखउपजावति ॥ दिनमेइनकोपतिगहनाही ॥ पुत्रनिसोमिललकेलकरा
ही ॥ तः तपातटूटिजलपरही ॥ सुतादिविलावतिदिनअनुसरही ॥ शशिविग
अतिदुखीवितावति ॥ उदेसमेप्रफुलतविगसावति ॥ कतकोपदमिनिदोष
लगावउ ॥ पुत्रनिकोकहिपतिदिखरावउ ॥ कुमदनिकीसखिसोअतिप्रीत
प्रफुलतिचंदनिरखचहरीता ॥ ३७ ॥ दो ॥ देलहिपाजनशशिवसेपदमिनी
कोभरतार [illegible] महादेतदरसरफवार ॥ ३८ ॥ तुमष

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लेवजसोवजनाषा ॥ कीयेबोलपुसोमतिकेसाषा ॥ ताकोदूषनकौनलगा
वै ॥ वचनकहततुहासीमुनिहिआवै ॥ सुनरुकमनवचहृदैमुसकाने ॥ उतरपरे
सरपरसबसुने ॥ संध्यासबभएइस्नानतसुव ॥ कृतवर्मासोकह्योकृष्न
व ॥ लघुनिशानसुरनाइवजावहु ॥ सभसेनाकोसुषउपजावहु ॥ ऐक
दिशिष्टनहरिसरपररहे ॥ क्रीडाकरीसकलसुषलहे ॥ ३८ ॥ ॥ चलेर
तहातेकूचकरिवजिहितनिशानअपार ॥ मारगचलतआनंदसोहोतशब
द जैकार ॥ ४० ॥ ॥ प्रफुलतवननिरमलजलतहा ॥ क्रीडाकरतमुदित
हरिजहा ॥ भीमकह्योसुनगिरवरधारी ॥ निवाहनऐसेपंथमुरारी
वेगचलहुहरिकारजुहोई ॥ व्यासकहेसुनाऐनृपसोई ॥ सीघचलहु
इस्थतनहीकीजे ॥ धर्मराजकोअतिसुषदीजे ॥ जबतुमऊहाजाऊप
डेरा ॥ तवहरिआरंभकरन्हिमनसाजा ॥ करहुअबेडाव्रतवनमाही ॥ र
हविधगजपुरपहुचतनाही ॥ ॥ ॥ जहाभलोवनदेषहोततहालगा
वहुबार ॥ निशाद्दनकरहुश्रीकारवनआरुजलकेलविहार ॥ ४२ ॥
सहितजेउतरपरहुवनमाही ॥ हसनपुरपोपहुचतनाही ॥ तुमरासगु
धर्मजानितचितवत ॥ ऐकपलकन्नपसुगमश्चितवत ॥ सेनाचोदेषह
रतुमसदवा ॥ निकसप्रभातचल्योनिजभवाना ॥ हसेकहूसुनभीम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वचन सुव ॥ तुम भष्याअ्यापोधा वतत व ॥ सभै रसोई कौ तकि आयो ॥
तो तेषट्रस भोजन पायो ॥ हमरे नहीं भूष की आसौ ॥ जलविहार की
डावन प्यासा ॥ ४३ ॥ दो० ॥ भोजन की चिंता तुमैं हम को चिंतन काइ ॥ तु को
दिन वी तेव ऊत मति राकसी ऐसाइ ॥ ४४ ॥ चौ० ॥ तुमरे तीय पतीप की अ
भिलाषा ॥ वऊत दिवस धीरज तुम राषा ॥ तुम तीय मति क्रीडा रस कौ
छा ॥ इहा वऊत तीय पुरवत वांछा ॥ रुचिर नोरणो कौ तन नहीं उर ॥ दैउ मंग
गाइ प्रवृत्ति सुंदरवर ॥ भीमक होय सु नर भगवाना ॥ तुम तीय पतीय संत
सो अवहीनो ॥ पूव तन की लाल लसो तुमै मन ॥ सुभग होरर सताप स्याम
घन ॥ रनवात न की भष्य तुमारे ॥ तुम करुणा तीय श्रांत हमारे ॥ ४५ ॥ दो० ॥
तुमरे ज्यूह प्रवृत्ति वऊत न गा[illegible] माहि तुम दीन ॥ अव वन मैं वस परी सम
तर हीत तुमै अधीन ॥ ४६ ॥ सोरठा ॥ तुम तीय की नहीं आस हसि वोले हरि
भीमपति ॥ अहै न तुमरी प्यास क्षुध्यातुर तीय रैन दिन ॥ ४७ ॥ चौ० ॥ कृष्ण
वुलाइ रसोइ भंडारी ॥ दैऊ न भोजन भीम विचारी ॥ अति अस्थूल उदर है
जाको ॥ पूरन दै आहार वऊ ताको ॥ करत उताय तल अति क्षुध्यारथ ॥ व
ऊ भोजन दै पुरव ऊस्वा[illegible] ॥ हरि को वचन भीम उच्चारे ॥ आपु न भूष
न हरि देवि चारे ॥ नाऊ रन के प्रभ दोष संभारऊ ॥ आपु न भूष न हरि देवि चा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२७ ॥ तुम तो हरि अच्युत अबिनासी ॥ सकल सृष्टि तुम उदर प्रकासी ॥ ५८
२८ ॥ तीन लोक चौदहि भवन उदर तुमारे माहि ॥ प्रगटा ऐसे छिन महि सकल दु
न तुम बीच समाहि ॥ ५९ ॥ तुम संसार सा उदर न ही देख्या ॥ आदि अंत कहु
नि जोगमन देख्या ॥ प्रलै काल जल उदर समावै ॥ जो तुम सरीर तप तावै ॥ ति
अवसर महि बीच बडु तरहि न ॥ सारथी मत मुनि हिम भडुइ हि छिन ॥ अति हरखत म
न रहत दमोदर ॥ वचन कहत तम सम सब के उदर ॥ बहुरो भीम कहो पंडुराई ॥ ऐसे
दिवस न जिन रहि गुसाई ॥ करत चले हो तुम भवन वासा ॥ दूरे सुम पुन द्वादस मासा
पुं० ॥ रहि चारी सो चलहि दिन महि पड्छ चलि जाइ ॥ धारहि
जेष्टि त चलन के चिंतन कौ जे काइ ॥ ६० ॥ अस्वपति एक बीच वडु न दिन ॥ हम
आगे पहु चहि पुर हस्तिनं ॥ पत तुमारा करो संपूरन ॥ मान हु सुम भीम कारि चू
रन ॥ ति अ सर हरि हीथ वचा स्यो ॥ मतकु रुषेत चलहि जोग धा स्यो ॥ जसे
मति नंद आदि ब्रजवासी ॥ तिन्हा सभन को हृदै आभासी ॥ तार पदान पुन आ
नाना ॥ जननी सो हरि वचन वखाना ॥ तुम सरु कमन सन जाहु नगर पुरा ॥ पर
सउ दरसनु तुम पति गृह आउर ॥ ६१ ॥ भीम तुमारे संग है जाव हु सभ न
त काल ॥ हम में पाछे फिर आइ है ॥ वचन कहे नंद लाल ॥ ६२ ॥ तब
बोले रुकमनि वर नारी ॥ ऐसे वचन कहत कर सौ मुरारी ॥ हम आगे जै हो
कत काजा ॥ तुम नहि तजहि निमिख पंडुराजा ॥ ता कहि धर्म पुत्र व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५१

कदाना यज्ञहोमसवकर्मविधाना ॥ इस्त्रीसंगबद्धिमतिहोई ॥ पुवतीविन
धर्मकरैनकोई ॥ निमवनहूंदुहितुमरासंगा ॥ सोलहसहसनारिवर
संगा ॥ रुक्मनिकह्योकृष्णप्रतिजैसे ॥ कहतभईसभतीयहरितैसे ॥
५४ ॥ तुमतजिहमनैहैंनहीहसनपुरकी:काज ॥ संगतुमारैचलन
हगीसकलतीयाप्रदुराज ॥ ५५ ॥ सत्यकहतहैयगयहवाता
रैकइस्त्रीपतिकौकुसलाता ॥ भरतेकीआज्ञामहिहैहोइ ॥ जोपतिकहैमा
नैहैसोई ॥ देइतीननहीअपरअपारा ॥ तोतनहोइक्लतेकुटकारा ॥
प्राणकौघातलमैजैहीतपति ॥ हीचेमाउधरिकैजेमिनप्रति ॥ कतिको
वरस्त्रीपेहरिनारी ॥ कारनकौनकहौसवकारी ॥ जैमिनकहेसुनजु
कुरुराई ॥ पतिपागाकुलहतकहोई ॥ ५६ ॥ पतिवीलीवदीनीक
सवजवासिनकीपीर ॥ नेदयसौधेतोगावजवलआऐइहतधीम
५७ ॥ यहजीयजाननकहरितियप्रावति ॥ गोपमेवधरिवजैदिबरा
वति ॥ मतिरुकमनीहसेराधाप्रति ॥ निरवतनदयसाधर्मगति ॥ मा
ति ॥ प्रधामाइनदेषलजाई ॥ तीपवरजीरहजानकहोई ॥ बरजीनहिरहै
सववाला ॥ माइसकलसंगनंदलाला ॥ यहजीयजाननसनदकेनंद
न ॥ गरूडबुलाइलीयाजगवंदन ॥ हीचेविचारकीयोमधुसूदनहि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हैऐकलजैसोवजथासहि ॥ ५८ ॥ आगेजारभतोसभनननंदमसो
धवालत ॥ स्वामाजीकेदूरसुहैयहमनुकीचाउजुचाल ५९ ॥ तोल
गपाछेपडचतसैना ॥ तोलतोगोपनिहांशेनेना ॥ कुसलसेदेसवकौ
सवबाता ॥ विदाकरोगोपनकुसलाता ॥ यहकहतभएगरूडआसवारा
रव्यावाहीप्रतिवचनउचारा ॥ मंदमंदरव्युताकिचलावड ॥ डीलेडौ
रकीयेकरआवड ॥ वड़रजेवरीदारबुलायो ॥ मजलचलनकामंत्र
बतायो ॥ ओछुचारतनामटुरावड ॥ डीलीतिमापडबिलमलगावड ॥
६० ॥ ढीलीमावडजेवरीजोलागमहिहिनचार ॥ जिःविधवडतन
पंथ्यहैसेचलीयेजोपधार ॥ ६१ ॥ ऐसेवचनकहेतितकरी ग
रूडआरूडभएवनवारी ॥ ठाडेविवकरजोरबकेंदर ॥ आज्ञादेडकरोंतैर
सेहरि ॥ तवश्रीपतिवचकहेभीमप्रत ॥ तुमकोआज्ञायहविमलमति
सैनालीयेउतायपलआवड ॥ वेगमिचलेतितसेडरपावड ॥ हस्यौभीम
वचकहेउचारी ॥ कंसेसेछलकरडमुरारी ॥ जेवरीदारसाथ्यतुमठार
स्या ॥ सोतोमुजसमसुनयहिकान्यो ६२ ॥ वडरोंमुजकोंकहततेकांक
रडउलाइलजाय ॥ जेवरीदारसहितववचनओरकहोसमुजाइ ॥ ६३ ॥
तुमतोहोढरिडुचारी ॥ हमकोआज्ञादेडमुरारी ॥ मेंआगेहसतनपुरजा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

वो ॥ धर्मराजके खबरसुनावो ॥ धर्मराइ तुम यंचपनि हारत ॥ तुमरे दर्शन
बिनु आतिआरत ॥ ताको जाइ कहौ हरि आऐ ॥ नृपति युधिष्ठर सुन सुख पा
ऐ ॥ पुनि बोले हरि भीमसेन प्रति ॥ भलो कह्यो तुम भीमसेन आति ॥ आगे
जाबऊ कहौ संदेसा ॥ अति सुख पावे धर्मनरेसा ॥ ६४ ॥ ले आज्ञा नागा
जपुर चल्यो भीमसेन ततकाल ॥ हरषत है कुरुषेतके बेग चले नंदला
ल ॥ ६५ ॥ शीघ्रहि गयो भीम हस्तिनपुर ॥ हरषत लागो चरन युधिष्ठि
र ॥ नृपति बृकोदर कंठ लगायो ॥ गयो सकल दुख आति सुख पायो ॥ आव
तिके समाचार कहे संदेसा ॥ हरि कीनो कुरुषेत प्रवेशा ॥ प्रफुलित धर्मजनम कनसमा
वत ॥ जैसे रंक महानिधि पावत ॥ कीयो उद्यम कुरुषेत चलनको ॥ आपति
पद आंबुज परसनको ॥ सभी बुलाई सजायमदत कप ॥ ब्राह्मणगण तावेद
महाबली ॥ ६६ ॥ षट्कर्मी धर्मीजु नीपंडित बडे महंत ॥ हरिदरसन
को ले चले धर्मीज जीय हरषंत ॥ ६७ ॥ ऐसे पुरुष बलीपे नहीं सांच्या
जिन नहीं कीयो दान निज हाथ्या ॥ कामी चोर कपट विश्वासी ॥ बडे पतित
दुजब हुआसी ॥ मतगठ हभोजन करत पुमाना ॥ चार वर्णको लेहि दुजु
दाना ॥ कृपाहीन त्रैकाल न साधहि ॥ इंद्री बसि न नहीं कृष्ण आराधहि ॥ कन्या
द्रव्य लेहि मनहीं त्राणा ॥ परधन परतीयकी जीय प्यासा ॥ दान देतनर करहि नि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वारन ॥ भ्रष्ट करम निततजीपग्रहारन ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ पहुनरतजिकरधर्मसु
तधर्मसभालपेसाष्प ॥ मनहरबततकुरुषेतकोभ्वत्यौमिलनयदुनाथ ॥ ६
८ ॥ चौ ॥ अवसरतहींदूतइकआयो ॥ पातीदैनंदलालपठायो ॥ लीनीहा
थयुधिष्ठरपतीया ॥ वाचतमनयोमहासखछतीया ॥ लिख्याकृष्णतुमकूंहार
नआवहु ॥ मेआवततुमकतभ्रमपावहु ॥ आयोसरनसहाइतुमारी ॥ जुद्ध
वाधवाधुनिवारी ॥ राषीद्रुपदसुताकीलाजा ॥ तैसेसिद्धकरौतुमकाजा ॥ हरि
कीपातीपापठीनरेसा ॥ फिरगजपुरीकोकीयोपरवेसा ॥ ७० ॥ दोहा ॥ पतीयाव
ठीआनंदसो ॥ फिरपुरकीयोप्रवेस ॥ समाचारश्रीकृष्णकेपूछतभीमनरेस
॥ ७१ ॥ चौ ॥ हरिकीकथासुनावहुमोको ॥ कैसेभिरयाभीमपभंतौको ॥ पंथवी
चकैसेचलिआये ॥ श्रीपतिसोंकैसेबधाये ॥ मगधकोसकलवंतातसुनावो ॥ ह
रिजसुकहितनमनुतपतावो ॥ बोल्योभीमसुनहुकुरुराजा ॥ कहालौवरनौ
कृष्णसमाजा ॥ गजपुरतेद्वारावतिजयो ॥ समैरसोईप्रापतिभया ॥ हरिहम
सांहांसीवहुकीनी ॥ भीमसेनसवविधकहिदीनी ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ हस्यायुधिष्ठर
मुदितसुनभीमसेनसवविधकहिदीनी ॥ हरितुमसौंहासीकरीकहीसोक
विख्यात ७३ ॥ चौ ॥ कहैभीमसुनबुधिगंभीरामा ॥ हरिऐसोवचनकहेसतिभा
मा ॥ बहुरोवचनदेवकीभाषे ॥ सुनतसुनकृष्णहदेमोराषे ॥ तुमरीपतीया
पठाहरवत [illegible] हरितजीका ॥ मगधमांहिबलबसुदेव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रु४

बुलाए ॥ विदा की पेहरकाय पठाए ॥ विरह वचन वसुदेव उचारे ॥ करुणा
कर हर शोक निवारे ॥ सब री वन मा लनि सो हासा ॥ चंचेलनि सो कीयो
विलासा ॥ १४ ॥ दो० ॥ बहुर भठारी सो हस हरषत ही ये गुपाल ॥ हास की
यो सुकमनि सहित सरपर श्री नंदलाल ॥ १५ ॥ चौ० ॥ करत अबेड ब्रत बन
मा वनमग ॥ अपुना पकासौ सुख पावत ॥ का हुश्रम गजल केल करत है
है द रसन अघ कोट हरत है ॥ गुरु कौ नाम हतौ तनि तनि तपति ॥ सदा दर
स दे ब्यो त्रिभुवनपति ॥ मो को करत सदा हरिहासा ॥ जा कौ तेज कोट रविभा
सा ॥ बहुरि चले कुरुखेत रमापति ॥ कीये परस्पर वचन भवत नि पति ॥ पुन
हरि भरे गरुड असवारा ॥ विदा कीयो तिः समे हमारा ॥ १६ ॥ चौ० ॥ गजपुर के मे
कौ पठयो आप जाए कुरुखेत ॥ वचन भीम के सुनन पति गद्गद भयो अचे
त ॥ १७ ॥ चौ० ॥ बोल्यो धर्म तभी मसेन पति ॥ धन्य धन्य तुम भीम सबिमल मति
जो सुख तुम मम वलो कामगजमै ॥ सो संपदा न ती नो जगमै ॥ जौ हो ते वड भा
ग हम मारे ॥ हम सहि हित संग तुम्हारे ॥ काहे तुम चह सुष तजि आए ॥ कतकु
रु खेत न सा ध सिधाए ॥ प्रभु की यात्रा मे जे हित पति ॥ कहे कथा जेमि
न मन हरषति ॥ सम कुरुखेत षट् तांत सुनावहु ॥ व्रजवासिन हरि मिलेव
तावहु ॥ १८ ॥ दो० ॥ पुनि चरित्र तेह कहे गुजपर करहे जेहि ॥ क्यु कर गुणन क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

राइ है कहो कृपा करि तोहि ॥ २८ ॥ जैमिन पति कहै नृपति जन्मेजा
चित चाइ ॥ अश्वमेध कृत गंध पकोट हकन नव मोध्याइ ॥ ८ ॥

[illegible]

८१ ॥ ८ ॥ कहै क
पा जैमिन हरषित मन ॥ सुनि नृप पति जनमेजा ॥ श्रवनन ॥ धंन्य धं
न्य कौन नृप मुन कहई ॥ कृष्ण कथा निशि दिन चित चहई ॥ हरिपद प
कज सौं अति प्रीता ॥ पहत तुम रे कुल कौ रस रीता ॥ सुधा सर रस र सक
था सुनी जै ॥ सावधान हो है चित दीजै ॥ जब कुरुखेत गए नंदलाला
न ही आए ति सादिन ब्रजबाला ॥ प्राप्त भए तीसरे दिन तब ॥ नंद पा
साधा गोप बधू सब ॥ १ ॥ गोप सखा ले गोपी सकल जसमति नंद
समेत ॥ मुख आवि लोकन स्याम घन चलि आए कुरुखेत ॥ २ ॥ गो
प भेसु धारी वनवारी ॥ पीतांबर मुरली मुखधारी ॥ लकुट हाथ मक
र मा बेचवर ॥ गुंजदाम वनमाल वनोहर ॥ चक्रत भए से सब देखन गुपा
ला ॥ लोगा कहत नन्द पद तुम्हाला ॥ जो सुरूप व्रज में हम देख्यो ॥ सो
ई रूप श्रवनैन न पेख्यो ॥ कहत इसहि द्वारका राजा ॥ इन के सम्ह गो
पन को साज ॥ मनु तो हम रे वस्त कैहैया ॥ मा बन जोर पसो धमैया
॥ २ ॥ कमल नैन तनि स्याम घन कुंज चरावत धेन ॥ कालिंदी त

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अष्टसखा ध

टमधुरधुनि अधिक बजावति बैन ॥ ४ ॥ श्री ॥ बजुरीं भरि ओद्दार कान्हा ॥ च
तुरंग निसेनातिः सापा ॥ यह कौं ऊ अवर भेस धरि आया ॥ यौं ही पुस
मति नंद बुलाया ॥ निज्री की याद वकी कौ सुत ॥ प्रसंदित भयो गोप वचि
तवत दुति ॥ भेट उतीवु ज लोगन संग आया ॥ सब दीनी यसोमति के
हाथा ॥ श्रीफल अरु नवनीत सुपारी ॥ अछत कुंकुम हार सुभकारी ॥
साजि आरती नंद यसोमति ॥ कंठ लगाइ लीयो कमलापति ॥ ५ ॥ श्री ॥ मु
ख चूमत गदगद भए नंद यसोधा मात ॥ बैठाए हरि गोद मैं आनंद उ
र न समात ॥ ६ ॥ श्री ॥ पसुदे नंद पकक कुसराता ॥ लागे कहन परस्पर बा
ता ॥ मिलि आए हरि सखा ग्वाल सब ॥ करन कुंडी कमरी डोरै तब ॥ निर्ब
क हैप हते हे ग्वाला ॥ लोग कहत तब नंद लाला ॥ का पापण मु
चर एसम भला जे ॥ दुरसु वलोक मध्ये तम नुराजे ॥ लागे वचन कहन
गिरधर प्रति ॥ कमरी तले धि खाव [illegible] पति ॥ [illegible] मीत भी जनम वा
कीजै ॥ कीडा कर [illegible] सब दीजै ॥ ७ ॥ श्री ॥ तन ऊपर कमरी कर
ति [illegible] ॥ आपन सौ मिल परसपर [illegible] भात की या पान
८ ॥ श्री ॥ भोजन कर तब परस्पर ग्वाला ॥ निज निज कर कौर देत मुख लाला ॥
इक हरि सो कहत [illegible] ॥ कौ बरछी [illegible] आपन मुख पावत ॥ ऐक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ऐकु करदीनतग्रासा ॥ क्रीडा करत है तुम तिहासा ॥ जैसे षेलकीऐ
वृंदावन ॥ बालपन के सम स्याम घन ॥ तैसे ही पुन षेल बनाऐ ॥ गो
प मंडली सभ सुषपाऐ ॥ प्रापति भए बन बसन मंगाऐ ॥ दीनी भेट गो
प पहिराऐ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ नंद पसो धेको दई भेट बजत नेद लाल ॥ गो
प प्रसंन भए सकल हरषत गोपी ग्वाल ॥ ९ ॥ चौपई ॥ पुन वचु लीऐ
कहन परस्पर ॥ दुंदभ शब्द भऐ ते अंबर ॥ बजाहि बजंत्र अनंत अने
शाना ॥ चमकत हैं तेग्र अनुमानुलाना ॥ ऐक और रमानेर रुक्म महाबल ॥ सं
ग सेना चतुरंगनी चंचल ॥ अद्भुत रूप अनंग छबि छा जे ॥ महा समर रण
द रहुंतिरा जै ॥ ऐक और तैशी शुकुमार सुत ॥ प्रापति भऐ सुकल सेनापति
ऐक और तेकतवरमा पुन ॥ म्रापावजतनिकर दुंद मधुधुनि ॥ ११ ॥ दोहा ॥ कं
पन कोर जादव जुरे बजत मह पंचतूर ॥ बात कहीसु नीऐनहीं शब्द र
हो नभ पूर ॥ १२ ॥ चौ ॥ जादव कुल की सेना अगनित ॥ … जानी न जात नहीं
कवि बरनित ॥ बजहि बजंत्र अनंत अपारा ॥ चमक हिरव ड धुन षटंका
रा ॥ पूरि रही धुनि अवनि अकासा ॥ सुन गोपन जीप उपजे त्रासा ॥ वृज
बासिन पहुंचा नंदनंदन ॥ महा भट पति ह्व पको दुष कंदन ॥ रन को गमनि
ते हम अति ठर पति ॥ तुम सुध दीजै मो पति रमा पति ॥ मत हम कोले जा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

६०

अश्वमेध

हि विगाग्रा ॥ घासु कटाइ करहि वनि हहरा ॥ १३ ॥ दो० ॥ कुसु ककै होठ रुपजे मीन
करकुयह समहमरेलोग ॥ हम वैठे नही काहू सकहु वुरा वचन तुम ज्ञा
ग ॥ १४ ॥ चौ० ॥ तव सैना सम हहरु गई ॥ औरधर केडिगणठा ठी भई ॥ महासु
र योधा वलवाना ॥ ते नवत त्रैलोक निधाना ॥ देवकी रुकमन और सभनारी ॥
देखा आइ गोवर्द्धनधारी ॥ आप मंडली सभ रसभीनो ॥ अपना भेस गोपको
कीनो ॥ तव रुकमन मुष वचन उचारे ॥ देषे है हरि भेष तुमारे ॥ हम को दीया
विसार मुरारी ॥ अरु माता देवकी विसारी ॥ १५ ॥ दो० ॥ हम तजि आगे गेहु चव
त्यागी ते है दिन तीन ॥ चाहि राऐ है यह हक वन जिन के भऐ आधीन ॥ १६ ॥ चौ० ॥
पुन वोली सतभामा नारी ॥ जव के तुम विछुरे औरधारी ॥ हमरे प्रान वस
त तुम माही ॥ तुम हम री चित वन कहुना ही ॥ नही चित करी देवकी माता
वसुदेव करी रुकमन पहुवाता ॥ जिन सो तुम रोहित तु यदुनाथा ॥ मिल वैठे
हो तिन के साथा ॥ रुकमनि प्रति हरि वचन उचारे ॥ यह ब्रजवासी प्रान
हमारे ॥ मुरु प्रतिपाल वडाइ हुकी या ॥ अव ले हाथ पति हरे दीया ॥ १७ ॥ दो० ॥
जा दिन है जनम तमयो मथुरा मे जग हमात ॥ तहि दिन गोकुल पठाय व
सुदेव करि अधिरात ॥ १८ ॥ चौ० ॥ यसुमति नंद भवन ले राखो ॥ याव तांतु
क नह हन ही माखो ॥ इन प्रतिपाल हमारी करी ॥ दीया महासुख अव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दाहरी ॥ वडभयो जवकमाय संभासो ॥ मुष्ठपुछ्छ करिकंशा विठासो ॥ गो
पनरछ्या करी हमारी ॥ दुष्ट कंस तेली चाउ वारी ॥ तौ यह हर छ्या करत
ननिशाद्दिन ॥ कंस मोहि मारत ताही छिन ॥ व्रज लोग नंदी ने मउ पाना
नहीं वसरति मउ कस संजवि हाना ॥ १८ ॥ दो ॥ प्रश्न की पारु कमनि वडर
कहा कृष्ण समुझाइ ॥ तीन अवस्था तुमर हे व्रज मा माहि सुनाइ ॥ २
॥ चौ ॥ तीन अवस्था तुम व्रज रहे ॥ कीने केल जगत सभ कहे ॥ प्रथ
मकिशोर पौगंड कुमारा ॥ तुम गोकुल मे कीये विहारा ॥ पांच वरख
को बालक हाई ॥ कहे किशोर अवस्था सोई ॥ तिः आगे पौगंड वरवद
स ॥ वर्ष पांच दस सो कुमार रस ॥ तुम तीनो व्रज माहि विताई ॥ इक द्दिन
हम रे मन महि आई ॥ व्रज की विध जानत वल्लु माता ॥ तिः सौंप हुलेउ
सभ वाता ॥ २१ ॥ दो ॥ उपजत थी कव मन विछेव हुल्लेउ विध सर्पी मा ॥ जो
चरित्र व्रज मे कीये सनो कथा अभिराम ॥ २२ ॥ चौ ॥ अव सभ भये इकत्र
मुरारी ॥ पहिला वात कहे गिरधारी ॥ ऐसे जगत तव कंत सुन आवनन
आवत है हम लाज स्याम घन ॥ तुम चरित्र करी नेच जो जैसे ॥ वरन सु
नावत हा सभ ते से ॥ सुन्या सकुन्हा वुरान हामान ऊ ॥ अपुना स्या नम
सव पहि चान ऊ ॥ जो तुम व्रज रहे ते उप्हह जसु सति ॥ मान न छाद्द चुराव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स्यामेध

तिनतपति॥ छपकरभोजनकरतकहै पा॥ मतिआविलोकैयसुदेमै
पा॥२३॥ इकदिनयसुमतिमहीकोमथनिकरतउछाहमाह॥ तुम
आऐपैपानहितहीबांधिलोकननाहि॥२४॥ यसुमतिकहोपनमि
बविलमोसुत॥ मतिमाखनुमिलजाइछकिछपुति॥ तवअस्तनतुमरे
मुबदीनो॥ मनुमटुकीमहिरोपनकीनो॥ कहतदधिउवल्योभंउ
पर॥ वहीजाततदेख्योवैभपर॥ तुमकोंडारयसोमसतधाई॥ तबतु
मउठकीनीलंगराई॥ दधिभाजनउकन्योततकाला॥ वांटहींचोर
माखनतवग्वाला॥ यसुमतिधाईदधिआवरेख्यो॥ उछलपरैग्यास
मभपरदेख्यो॥२५॥ दधिउछरिधरिनीपरआयोयसुमतिनिरख्यो
धोइ॥ पुनदेख्योमटुकीदहीसवफोरीयदुराइ॥२६॥ दधिमाख
नमटुकीउकफोरी॥ लकुटीनिमारसकलतुमफोरी॥ चक्रित
भईयसोधवरानी॥ फिनकोरोमटुकीदधिसानी॥ तुमरेकरख
रमाखनदेख्यो॥ दखनभतुअमैभवरेख्यो॥ लैदोरीदाम
निलिजहाथ्या॥ गोहिवांध्योतुमउंखलसाथा॥ यसुमतिपैक
हिहैसवग्वारनि॥ यहमाखनकोचोरयुकारनि॥ छोडदधिचु
निदहीचुरावति॥ नितलंगरहमरेगृहआवत॥२७॥ लातु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

होत तिःसमै तुम कहि ते वचन विलास ॥ रूठ कहत पहस्मारनी तुमहि
पसों घेमाइ ॥ २८ ॥ दो० ॥ गदगद है तुम वचन उचारत ॥ पहस्मारनि नि
त प्रति मनुहारति ॥ तब तुम करति तोतरी बाते ॥ परत दपाय समपति जो
पताते ॥ पहस्मारनि मोको पकरति नित ॥ चिबुक कपोल चूमती कहि हित
नित प्रात उबटन उदेत न्हवावति ॥ उलटी वऊ तप्रकार न न्हावति ॥ जन
नी पुलक तुम महि उर लावति ॥ वऊ फिर जसोमति उनहि डुठावत ॥ २९
उनको वरजत तक्रोध करि रूठ प्रकार कराइ ॥ पुनि उगरा वऊ ग्वारन
तुमसौं जीपसु षपाइ ॥ ३० ॥ दो० ॥ ढिब राव कुंवर मात पसों मत ॥ ढिः मि
रषे ऐसे सपुष नित प्रति ॥ पुन हपि है वह स्मारनि केसी ॥ क्रीडा करत सो
प तुम ऐसी ॥ ऐसे कौ चिपत्र मयपारा ॥ जो कोऊ अवस्था बालकुमारा ॥ पो
चवर षलोप ष ढकति कीनी ॥ सुनी ष प्याते स कहि दीनी ॥ पुन पौगंडवो
वस्था भई ॥ कढत नंदकुवर तीसुन लई ॥ कैसे वन मैं वछ चरावति ॥ सो
रमंडली के संग धावति ॥ ३१ ॥ दो० ॥ छाक छभात भोजन करत वासी ग्वाल
न साथ ॥ छीन लेत को परसपर ऐक ऐक के साथ ॥ ३२ ॥ चो० ॥ सो तुम
ग्वाल दिषाव ऊ मनको ॥ जूठे गास देय जिन तुजको ॥ जिन सों वेलतार
की पवन नवासा ॥ कालिंद्री तट हास विलासा ॥ कीये केलन वहु विध परका
रा ॥ वरनन अंत न निगम न पारा वारा ॥ वऊ त अवस्था कहा कहि सपेम रा ॥ जामहि

१२८

८२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मा स्वमेध

की ये केलनिशा भोरा ॥ मदनभाउ उपजी रसरीता ॥ करी सकल राधा सं
ग प्रीता ॥ कुसमकली चुनि तल्प विछावति ॥ तिपर वा मा को पौढावति
३३ ॥ दो० ॥ क्रि० मा ज्ञी स्या मा चलत पल्लव छावति ज्ञात ॥ वृंदावन वंसीव
ट जमुना तट कुसलात ॥ ३४ ॥ दो० ॥ क्रि० संग रास मंडली ये ते ॥ कुंज

ते

कुटी ने तुम केले ॥ मनु विरमायो विध प्रकारा ॥ पुनि उठाइ कांधे तन
धारा ॥ जिन तुम को ऐसे वस कीया ॥ स्यामा मा मदि बावझुती या ॥ जिन ये
वन सब ली पा अघाई ॥ वद्धम या हम दी यो कहाई ॥ यो वन सम में सं
ग क्रि० राखा ॥ वद्धमयो तुम को अभिलाख्यो ॥ का [illegible] दी या गहते क्रि० तो
ही ॥ सो स्यामा [illegible] वरा व जमाही ॥ ३५ ॥ दो० ॥ तीन अब स्याम सुवली यो
पुनि तुम तज्यो मुरारि ॥ पुनि हम कीन्ह ज्ञा भई व हूते यो सिरधारि ॥ २
६ ॥ चौ० ॥ जिन तुम री कि शोर वे भोगी ॥ वद्धमयो त क्रिग [illegible] यो गी ॥ क्रि०
कि शोर भोग्यो सुख वाला ॥ सो मुकुंद बरा व ज नंदलाला ॥ यह वच स
न [illegible] ज्ञा ने ॥ मदति ही पे [illegible] मस्का ने ॥ रुकमन मा दिस ह

२

सखा [illegible] ॥ सकल हसी [illegible] मुदति ज्ञी य ॥ दीनी परम सम
स्या [illegible] ति ॥ [illegible] रुकमन राधा गति ॥ यसुदे नंद गो प दिव रा ऐ
इन ही हम प्रति पाल वढाए ॥ ३७ ॥ दो० ॥ नमसकार रुकमन करयो स्या

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मा को कर जोर ॥ धन्य तुही श्री धरनि कीनि तप्रीत तप्रति तुम उर
३८ ॥ श्री ॥ तुम वृषभ की नो श्री नंदनंदन ॥ जा को तीन लोक जग
वंदन ॥ धन्य तुही भगवान तुमारे ॥ पूर्व पुन्य कीये तुम भारे ॥ बा
लचरित्र सभै तुम देषे ॥ बज श्रृंगार सभै सुष पेषे ॥ तुम ता धन्य स
कल ब्रजवाला ॥ नंद पसो मति गाय गुपाल ॥ कुंज कुंज प्रति क्रीडा करी क
लोलै ॥ वृंदावन वंसीवट डोलै ॥ है वलिहारी तुम पर जाऊं ॥ वडो सु
कृति हे गोकुल गाऊं ॥ ३५ ॥ श्री ॥ राज समग्री देष के अचरज भए
गुआर ॥ यह संपदा पाई कहा ता कहो कृष्ण वलिहार ॥ ४० ॥ श्री ॥ तुम ता हो
प्रभ वही गुआला ॥ हम सौ बोलत कीये नंदलाला ॥ यह विभौ तव के से तुम
पाई ॥ हम सो यह विध कहा ता कहाई ॥ गज रथ हय पय पायक नहीं पारा
राज समग्री अपर अपारा ॥ जब लागी मैं गुपाल ता गुपालहि ॥ तब की
भई लखि नंदलालहि ॥ जब कीहि जके चरन लगो तन ॥ तब की संप
द बढी स्याम घन ॥ विप्र प्रसाद भयो यह राजा ॥ अगनित सेना वडो सम
माजा ॥ ४१ ॥ श्री ॥ ग्वालनि तें सब वचक हे सुन जन मेजेराइ ॥ पुनि गोक
लकी ज्वारनी हरि पहि हि तोहि आइ ॥ ४२ ॥ श्री ॥ जब वृज में हरि की सुधि
पाई ॥ आए हैं कुरुषेत कहाई ॥ अब नैनन परषो फूप्रम को नामा ॥ विसर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नस्यमेध

गऐसभगृहकोकुमा॥ सुनपति तजितचली तिः काल॥ आमरनची
रविसरगऐवाला॥ इकतीयपैप्या वति मुतसागे॥ गवनतोक
ऐककेआगे॥ इकआधोसंगारचलीतति॥ पगनृपरपहिरेगीवा
सीि॥ करपोचमिलेयगनिवनाई॥ अतिव्याकुलमातुरउठिधारी॥ ४
२॥ इकनोगृहलेयनततेऐकनतजिस्नान॥ इकतीपकरदेहुनि
तजीदेखनधाईकृ॥ ४४॥ रजेतलपरीवदपुगइकस्यामरनि तिः
तीयकोइकलगनिवारनि॥ इहआवसरनहोइएमुखदरसअ दह
छोडकपटमोवतिपरसऊ॥ वोलीगुवारसुननमतिहीनी॥ दुएवुद्धि
मकोकिनदीनी॥ जबमुकुंदचरननहुदेधीरे॥ कोटजन्मअघमे
लउतारे॥ सुतहकरनमुकुहजाई॥ जवहीदरसुनहुइकहाई
अतिपावननिधिदसीमुरारी॥ निर्वहोइअविदेहहृमारी॥ ४५
मुदितचलीसवजेवधूकनकपालतलीऐहाय॥ तन
मैदीपककुशादधिमावनसुकृतसाथ॥ ४६॥ परसोआ
इवेगनंदकेनंदन॥ निरखतेभपावरहदुखकंदन॥ विगसत
वदनभईमनहरषत॥ द्विवराइमारइआरतिरमापति॥ भम
रीभावनदेतगुपालहि॥ भावउसुवदीजाहिवजवालहि॥ कि
नलेतछवितवनवनीता॥ विनचोरीअवलेतकपटप्रीता॥ उजगरले

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तप्यातव पसुंदेपति ॥ सोमाबनली जैसअवविकसत ॥ हमकों दीयो
विसार मुरारी ॥ आकुल विरह दुखब्रजनारी ॥ ४७ ॥ दो ॥ सुंदर संविस
रगए सभै बलकी पै ममसाध्य ॥ अबआवत है लाज सु निमए द्वार कोना
थ ॥ ४८ ॥ चौ ॥ करत केलतुमकालिंद्री तट ॥ तेदिनतुमकों वि सुनि आ
वत ॥ अबतुम भए त्रिभुवनपति द्वारावति ॥ बालविरह ब्रजसोंने सब म्हीपति ॥ उप
जी हीए प्रीति त्रिभुवनपति ॥ गद्गद नैन तु रेत बोधी गति ॥ सोल हस सहस सो
रु ती बिरनारी ॥ तेसभ बिसर गई गिरधारी ॥ बिसरे मात तपिता सेनासव
प्रेमसजानभयो नंद नंदनतव ॥ धंन्यधंन्य तुम ब्रजके लोगा ॥ निरवाज
ते दुख विरह विथा जो ॥ ४९ ॥ दो ॥ ब्रजवासनकों भेटदै मुदितभए नंदर
लाल ॥ श्रीकृष्ण कहे हित है देत भए ततकाल ॥ ५० ॥ चौ ॥ कुशलपूछि ।
आनंदित भए ॥ मिले परस्पर सभ दुख गए ॥ वचन कहे पुनि नंद पसो
मति ॥ सुनकृष्णवाकपवित्र वचन जग तपति ॥ हमकों बढु सभै दुख दयो
प्रव्य भैसभ बहै के तजि गयो ॥ वही पै पुत्र सदा सुख कारी ॥ मात पिताको
आज्ञाकारी ॥ बडु सभै पितधर्म्म दिढावै ॥ सेवा करै महासुखपावै ॥ तुम
हूं भए द्वारकैराजा ॥ दीयोविसार सकल ब्रजसाजा ॥ ५१ ॥ दो ॥ तु
मराजा द्वारावतीविलसतहोरसभोग ॥ महादुखी हम लोग वब्रज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

आपत्ति विरह वियोग ॥ ५२ ॥ चौ० ॥ कृष्ण कहैं सुनि नंद जसोमति ॥ पुत्र
मातु जी पति तजऊ विमल मति ॥ सुत सनेह तजहु मुज माही ॥ हमरा
मात पिता कोऊ नाही ॥ शत्रु मित्र मुज ऐक समाना ॥ सीत उष्ण सम
ता पहिचाना ॥ पसुदे नंद कृष्ण वचन सुने ॥ दुखित वियोग सीस कर धु
ने ॥ गदगद भऐ सो आगम न मे मति ॥ दुख सु महद्व वृछे न हीं निकसत ॥ जो
कछु भेट कृष्ण की लीनी ॥ सो सब फेर गुपाल हि दीनी ॥ ५३ ॥ दो० ॥ पितांब
र अपार अति नंद पसोध ग्वाल ॥ तब वसुदेव की निहार कै वचन कहे त
तकाल ॥ ५४ ॥ सो० ॥ सुन पसुमति इऊ वचन हमारा ॥ पहु सम वनाश
आगम अपारा ॥ इन कुन ही कोऊ पितु माता ॥ जन्म न मरन नाम न
ही जाता ॥ भगत अधीन दीन के नाथा ॥ सदा सहाय करत जन सा
था ॥ पाकी गति लखस कै न कोई ॥ आदि मध्य अंत है पुरष यसोई ॥ यह
जो पनान तजऊ तुम सोगा ॥ कातदु बपा वढऊ विरह वियोगा ॥ भगत
न के वसि सदा मुरारी ॥ निश्चै जानऊ वात हमारी ॥ ५५ ॥ दो० ॥ संतन ध्या
न धरऊ सदा अविनाशी सो प्रीति ॥ छुटकपर ऊदुख दुंद ते भजऊ पा
गा की रीत ॥ ५६ ॥ तव भाखे वचन सुमत रानी
पागरी तहम सुनन जानी ॥ जोग ध्यान धरि पोफल पावति ॥ अ

ह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गभिमगोचरनिगमभवतावत ॥ सोमसुरूपहमनितप्रतिदेवहि ॥ धरि
राध्यानैनन्निमैपेवहि ॥ कमलनैनपीतांवरधारे ॥ मुषमुरलीकुंत
लघुंघरारे ॥ कटिलकुटीगुंजाविवश्रवनन ॥ वैजंतीमालाधारैतन
मोरकिरीटसीसपरिसोहै ॥ उपमाकहिनसकैकवकोहै ॥ ५७ ॥
पगनूपरकटिकिंकिनीकुंजचरावतिधेनु ॥ कोटिपोगवारनकरोप
हसुषदेध्यानैन ॥ ५८ ॥ चौ० ॥ पोगाकीयेफलत्रावतरूप्या ॥ सोफलुस
दाहमारेसाच्या ॥ श्रीवृंदावनचंदरसंगमजु ॥ पोगसुप्रीपत्तिहेसुन
फलजु ॥ श्रीमततवज्ञिनुमंगारहलवतावजु ॥ हमनपोगजोवतुमहीपा
वजु ॥ पुहपवासुश्रीसुपालकोस्वादा ॥ तिहतजिसठउरजुतिरसवा
दा ॥ छांडततरकोमलतलितरारच्या ॥ सिद्धनहोतकोउपरमारथ
भगतभावनहीहीयेवसावति ॥ तेनरजनमजन्मदुखपावति ॥ ५९ ॥
दो० ॥ तत्ववचनसुषसमतिकहेपरेदेवकीकान ॥ हृदैविचारयोकृष्ण
तवहनकेउपदेशतत्तन ॥ ६० ॥ चौ० ॥ मायाक्षिपकुरीगिरधारी ॥ वजजना
सिनगहुगाइविवतारी ॥ सभनकरयोग्याज्ञादीजे ॥ करुनाकरजुसा
कलदुषदहीजे ॥ जसमतिकोराध्याप्तिःअवसर ॥ औरसभनकोविदा
मो ६२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कीयो हय ॥ तिः पाछे हरि पंचन्ह कीये आति ॥ दीनी दस सहस्र गो पयधव
त ॥ पांच सहस्र वर दीये तुरंगा ॥ सहस्र अढाई स्वेत मतंगा ॥ अव
धात पाट वर भारी ॥ दान दीये कुरुपति मुरारी ॥ ९१ ॥ [illegible]
देवकी पसुमति रोहनी ॥ रुकमन न सुन अरु वात ॥ सकल कुटंब
बुलाइ के कह्यो जगत के तात ॥ ९२ ॥ [illegible] सान पुर मैयप हकुतकी
जे ॥ कुंती की आज्ञा सुन लीजै ॥ सेवा करउ भाउ जं यह रखत ॥ करउ
पसैन मातम्मर जन आति ॥ पांडव हैं सब भगत हमारे ॥ हितकारी मुझ
सम ने प्यारे ॥ महा प्रताप करत हैं इनको ॥ भेइ नका रह कु निसदिन
को ॥ गजपुर माहि मंगल आति भारी ॥ दस सहस्र गावति वर नारी ॥ व
हु प्रकार के अद्भुत गीता ॥ कुंती आदि युवतिः करि प्रीता ॥ ९३ ॥ [illegible] सम
युवतनि कुरधरली ये कंचन ने पात्र अपार ॥ तिन मै दीपक चौमुखे जर
त जोति उजियार ॥ ९४ ॥ [illegible] चंदन अक्षत धूप महावृषि ॥ सोभत पा
त्र युवतिन लीने करि ॥ तहा रहौ तुम आज्ञा कारी ॥ कुंती है हमरी महता
री ॥ माहि सुभद्रा वहन जान जीय ॥ ताकी सेवा करउ सकल तीय
तेमिन कहै सुन अउ पाला ॥ ऐसे वचन कहे नंदलाला ॥ पुनि श्री
कृष्ण प्रद्युम्न बुलायो ॥ सकल कुटंब निकट बैठायो ॥ सुन हो तात

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सकलसैनावर ॥ प्रजाकी जैनरपति जुधिष्ठर ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ जैसआगेश्रा
यो जननगजपुर माहि इक बार ॥ भीषम कर्म दृढव्रत ताकछु श्री पुत्र आचार
६८ ॥ चौ० ॥ भीषम तनु तजि सुरपुर गया ॥ इत उत दुःख जग आति जु सुभ
या ॥ आवगजपुरी धर्म राजा सुत ॥ सत्य वचन भाखत सु धर्म युति ॥ र
की जै सेवा विविध प्रकारा ॥ मानली जै पे वचन हमारा ॥ जैसे भेकर है प्रेन
पसेवा ॥ तैसे तुम पद उर करु गुरुदेवा ॥ मत तुम पहम आपुने जाप जानऊ ॥ सम
ते वठाम रूप महि चानऊ ॥ तुम राव डा युधिष्ठर राजा ॥ हम राम भगत तुम कर ऊ
तिः काजा ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ धर्मसुनन मम भगत महि सदा रहैं सवधान ॥ मे आधी
न ताको सदा मानो सत्य प्रमान ॥ ७० ॥ चौ० ॥ जे जग माहि भगत कहे ताछा
की यो आधीन माहि आव ताकों ॥ उचित तुमे प्रद्युम्न सरवर ॥ टहल कीजा
यो राइ युधिष्ठर ॥ जे मन कहै सुनऊ भुपाला ॥ ऐसे वचन कहे नंदलाला
नपति युधिष्ठर भगत हमारा ॥ सेवि कहैं मरु विविध प्रकारा ॥ ताकी सेव
करऊ सम सेना ॥ हरदे धार लीनै मरु वैना ॥ मे आगे जे हो है लापुर ॥ दर
सनु पर सान पति है रे बत उर ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ याके सम सेना सहित तुम आव
ऊ तत काल ॥ मरु वि नर कपलक लप सम बीतत धर्म भुपाल ॥ ७२ ॥ चौ० ॥
सह्हव हि वे गम ऐसे सब कारा ॥ सेतन रंगन बढे मरु रारा ॥ तजि सेना ऐक
लो असि धायो ॥ निमष ऐक माहि गजपुर आयो ॥ यठे ऊतो ऐ जन धर्म भुपाल

का ७१

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भ्रम भेष

पंचनार

तृतीय ८॥

हि ॥ मग मज्हिमाइ मेले नंद लाल नहि ॥ सगरे आइ कुसम पगला जे ॥ कीरतिक
री हीये मन तृप्त जे ॥ दुर्लभ तुम दर्सन भगवाना ॥ सहु प्रेम यो धर मरा
जीना ॥ हम है तुम रवि व्यभिचारी ॥ सेन उ श्रवन बेनती हमारी
७३ ॥ ॥ यज्ञ करत है योन पति हृदे कामना धार ॥ ते पावहि फल
स्वर्ग सुख कर तन न त तुव विचार ॥ ७४ ॥ ॥ पुन्य भोग फिर यह
ग आवत ॥ फिर फिर गर्भ योनि दुख पावत ॥ राजस गुन मैं यज्ञ
करत है ॥ स्वर्ग भोग फिर धरनि पर रत है ॥ तुम ही सब करता जग
योगी ॥ तुम ही अघ हरता कृत भोगी ॥ लै न दर्स न हारी तुम ही प्रभ ॥ त
म कृपाल सब शुद्ध हे त सम ॥ यज्ञ सु फल तितन यो ज्ञानी आते ॥ यज्ञ
स फल यो तुम हित व खानति ॥ अग्नि होत्र करते जग माही ॥ धूम हा तस
उत क छु नाही ॥ ७५ ॥ ॥ करता अहक न ही ये मत यज्ञ कीये है मोहि त
पावति हे स्वर्ग सुख देखति ना हिम तो हि ॥ ७६ ॥ ॥ उर उत तुछ फल तुम
हि बिसारत ॥ सुरपुर ते फिर धरनी आवति ॥ यज्ञ पुण्य तु उ को न ही
अरपत ॥ हृदे भोग उधपि तु उनचर चति ॥ अग्नि होत्र धर्म पश्चित करते त
पावत स्वर्ग वहु फिर धरपरते ॥ यज्ञ करत अज कुसल ताता ॥ लाग के कर न पर
स्पर बाता ॥ अग्नि होत्र फल न यज्ञ फलन्य चर ॥ सम दरसे संकल्प कुसकर ॥ स

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रघुरकीतजीपेजीपमासा ॥ मुक्तनिमलपुनगर्भनिवासा ॥ ११
दो० ॥ तत्वविचारीपुरषजेपज्ञकरतबडदान ॥ करतेनिवेदन
हरिविषैपावतमुकतिप्रमान ॥ १८ ॥ इतिउपरातिपत्रपाल
दाना ॥ सकहुविहिम्मीकुह्मपमाना ॥ सुनवचमऐप्रसनमुरारी ॥ पी
पोमुकतिफलदिजनविचारी ॥ तिमअवसरसंन्यासीअस्तुमन ॥ उ
रिआऐवडहरिआयोस्तुति ॥ नमसकारकरिठाढेभऐ ॥ दरसपरस
सबदुखदुषगाऐ ॥ लागेउस्तुतिकरनरमापति ॥ आदनारायणतुम
त्रिभुवनपति ॥ अविनासीतमपुरुषपुरातन ॥ भगतहेतअवतारध
र्योतन ॥ १९ ॥ आदिअपानीपुरुषतुमलीनोनरअवतार
जगतउधारनभगतहितमहोउतारनभार ॥ २० ॥ भगतअधी
नदीनबंधवहरि ॥ चलिआयोतुमनपतिपोघिघर ॥ कृपानिधानसया
मसुषदाई ॥ भगतवछलमघहरनकहाई ॥ नरसरीरधारतुमहि
नधयाचो ॥ ध गुवहपुरुषवणयाजगआयो ॥ चौरासीलछपूनरची
कर ॥ तिनमहिमानसजन्मुमहावर ॥ पावनसहीसुचारमुकतिकी
साधतिसमविधपोजपुगतिकी ॥ मारगमुकतभवनकीन्याई ॥ मा
नसवपुहिसिहीचढतोई ॥ २१ ॥ जिनतुमरोसिमरनकीयो ॥ मं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ४७ ॥

स्प्रष्ट मेध

दर चढ्यो पोजार ॥ जिन तुम नाम विसारियो मर जन्मे दुष पाइ ॥ ८२ ॥
जो नर सेइ रु सिद्धी ते गिरई ॥ बांधे नरक सन वज्र फिरई ॥ चार पदा
रथ कौ दाता हरि ॥ नहि सिमरे जो नर देह धार के ॥ पहु वच सभी मु
नी अरक है ॥ ईश्यपति होइ हरि के पग गाहे ॥ कृष्ण कह्यो तुम धन्य मु
नी अर ॥ नारायण के रूप तप ॥ परम हंस सम भक्त पतु मारा
ना के ही पर मंत्र हमारा ॥ विचरति मंगा हंस की न्याई ॥ होत सरोवर
छवि अधिकाई ॥ ८३ ॥ मानसरोवर पद हम मम भगत हंस के रूप
नित विचरत है पीत कव उपजत कीर्ति अनूप ॥ ८४ ॥ जो नर मा
हि भगत मह हिरदई ॥ नित प्रति मऊ को शोभित करई ॥ भगत पुधि एर
राइ करत है ॥ शोभा हम मरे देह धरत है ॥ उनके दरसन को मुझ प्या
सा ॥ मुझ विनु उनके मन वर्नि ग्रासा ॥ संध्या वरत जा फुत तत काला ॥ वि
दा को परम भवर नदलाला ॥ चलि आए हरि नगर दुआरे ॥ देव पुरम
न साजी मधारे ॥ कृष्ण एकलो देव हंसी रक ॥ कह्यो सखी सों वचवा
नी विक ॥ ८५ ॥ मोल लयो मम भगत हित धर्म सहन भगवान ॥ चलि आ
यो मिज एकलो सुना तजि तनि शान ॥ ८६ ॥ चौ ॥ निरव कृष्ण रवि को
ट प्रकाशा ॥ युवती करत घर स्वर हासा ॥ सोलह सहस्र हैं सम भवन वर ना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

री ॥ त्रिपतितनहोतहीपैगारधारी ॥ अवलोदेषतअवरहपनको
कवहूनप्राप्तिहोतहेतनको ॥ ऐककहेसबीयोनहीभाषो ॥ पुरु
षपुरातनपहतअभिलाषो ॥ निराकारभगवानहितकीरी ॥ तातेमान
सकोवपुधारी ॥ ऐककहैजोपुरुषपुरातन ॥ कत्तिउपजावतिपु
त्रपौत्ररतन ॥ ८७ ॥ ऐककहेहमतानहेपहतोइस्त्रीजीत ॥ सत
भामाहितइंद्रतेलीयोकलपतरुजीत ॥ ८८ ॥ ऐककहेउसद
नकोवालक ॥ वडाकीयोजसुमतिपतिवालक ॥ कहहितपरस्परव
चनउचारी ॥ निरषतरूपतृपतिनहीनारी ॥ सोपवचसुनतहमे
नंदनंदन ॥ आगेचलतमऐजगवंदन ॥ पुनपुरकेब्राह्मनजुपश्याऐ
निरषतकृष्णसुनतसुषपाऐ ॥ हमसवजन्मकृतारथभये ॥ करुणाक
रहरिदरसनदये ॥ करिप्रनामउस्तुतिवहुकरही ॥ वारवारकेशव
पगपरही ॥ ८९ ॥ जवतपवृतसमकोलेमऐयज्ञहोमअरुदान ॥ क
रुणाकरपायावतिमऐ ॥ जजपुरुषश्रीभगवान ॥ ९० ॥ धंन्यधर्मसुत
पावनराजा ॥ आऐहरिजाकेकृतकाजा ॥ चडतुरंगजाऐकलोकआयो
नपतिप्रसाददरसहमपायो ॥ कीयोकृतारथआसमरुमनपुर ॥ धं
न्यधन्यहैजाकेहैप्रभुधिएर ॥ उधवसोंआपवलोकनिस्ताऐसो ॥ ता ॥ हित
हरिगजनपरथजगधाऐसो ॥ जैमिनकेहेसुनहृजनमेजा ॥ सरजकोरव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ष्ण के तेजा ॥ कहो कथा सुन लाहु तुम्हि तुलाइ ॥ अस्वमेध कृत दशमोध्याइ ॥ ८१ ॥

८२ ॥ १० ॥ १६८७

जैमिनि कहै सुनौ कुरुराई ॥ गजपुर की ये चरित्र कहाई ॥ ते सम कहौ वन तस सुन लीजै ॥ कृष्ण कथा अमृत रस पीजै ॥ तौ बदि जन करि चले गुपाला ॥ करुणा सिंधु जगत प्रतिपाला ॥ मंगत भाट बहुत जुरि आए ॥ पढत कवित्त कृष्ण मन भाए ॥ उस्तुति करहि अनेक प्रकारा ॥ श्रीपति कीजै सत्य गम अपारा ॥ धर्मराइ के यज्ञ काज हित ॥ आए तौ रूप महा मुद चित्त ॥ १ ॥ बहु प्रकार की रति सुली ॥ श्रीपति भए कृपाल ॥ कंठमाल गल मुक्त की दई उतार गुपाल ॥ २ ॥ पुनि आगे कौ चले मुरारी ॥ आए हस्तिपुर के द्वारा ॥ तहां नटी नट हूं ऐवरु आए ॥ वटि आभरन तन रुचिर बनाए ॥ दिव्य सारंगी देह विचित्र तगावत ये त्रबजावति निर्तत ॥ कृष्ण चेहरे देखति तिम ऐ ॥ नटी नट ता द्धा विवंकद गद ऐ ॥ भेद भाव देखी सद्भावत ॥ तान तरंग रंग उपजावति ॥ ३ ॥ तुम सौ भग जनेन प्रतिम भुवन पतिम गवान ॥ भवरम ऐ हदिग तुहे मा मुष कमल प्रमान ॥ ऐ कच के सो जगम सुर द्धानो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तुमरे हस्त चक्र अभिरामा ॥ चक्र सुदरसन पाको नामा ॥ ऐक चक्र
सो जग मे रह्यो ॥ हमरे चार चक्र पहिचानो ॥ देषरा नंद परररानंत
पुसाला ॥ देक्करकंज लशोभविशाल ॥ जो हमरे चक्रनको निरषत ॥ म
ॐ तहिइकटहन चितवत ॥ तैसे अब तुम देषलुभीम ॥ ठाडे होत लालनल
लचाने ॥ तुम कर चक्र सुदर्शन सोहै ॥ साभी कोट सूर शशि माहि ॥ प
ॐ ॥ हमरे चारो चक्र इहरी ओ भगवान ॥ मैरे तुमारे चक्र सो पावे मक्त
प्रमान ॥ ६ ॥ ॐ ॥ चक्र सुदर्शन की धारा वरि ॥ जाको लगे सरब सुष
तिः नर ॥ प्राप्त होइ वैकुंठ को लोगा ॥ केलवि वनि कर भिटहिनि हसा
गा ॥ सो सुष हम को अब ही दीजे ॥ कृपानाथ कर कैत मझ की जे ॥ भए
पुसंन हस्त चक्र धारी ॥ करी कुतार यन नरक की नारी ॥ सुनि के होइ सुपनगो
मैं निवासा ॥ कहे वचन यह कृपा प्रकाशा ॥ जो को ऊ नित्य कर मझ आगे
हर्षित है मन तन अनुरागे ॥ ७ ॥ ॐ ॥ हमरे आगे नित्य जो करै नितव
ऊभाइ ॥ ताके देह मझ अब र गर्भ पुनि न ही पाइ ॥ ८ ॥ ॐ ॥ सो नर मन
वांछित फल पावे ॥ नित्य करे हमरे गुन गावे ॥ सा पुनि गर्भ पीने नहि
आवे ॥ नित्य ज्ञान कृपा मझ ऊपर आवे ॥ मझि है होइ मझ मे अनतर पत ॥ मु
किहार ध्यावे महि निर्त्य पूपि ॥ जेमिन कहे हस ... पाला ॥ ऐसे वचन नक

७६

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५ ॥ हे नंदलाला ॥ भली भाइ पाछे की सैना ॥ संरक्षा कही परतन हीं वे
ना ॥ हरिष्या ऐ सुन धर्मराजा ॥ सभा सहित हरषित प्रभु सा जा ॥
५ ॥ २ ॥ सेनापती अपार सभ सहित हरि लै नके ॥ मन वांछत स
पसार भावत मया युधिष्ठरहि ॥ ३ ॥ दोहा ॥ दुंदभ भेर निशान वजा
वहि ॥ विवध प्रकार सु मंगल गावहि ॥ मोदित चले सभ कृष्ण तो
न को ॥ सब सागर जातन सु को दैन को ॥ भिजा मन उचार साते सैपढि [?]
त ॥ पाठ करत द्विज बुद्धि मंडित ॥ कंन्या हसत नयर अस्वारा ॥
गावत गीत सु मंगल चारा ॥ निह पाछे जस पठत भाट वर ॥ गान
करत गंधर्व महा वर ॥ नृत करत अपसरा अपारा ॥ ताल मृदंग
झंझुनकारा ॥ ४ ॥ दोहा ॥ बाजत है पचतूर धुनि शंख शब्द अपा
र ॥ झांझ जंत्र सभ जंत्र बीन बजत अनेक प्रकार ॥ ५ ॥ चौ ॥ पांचज
न्य भीर धरकर धारयो ॥ अधर सुधाधर पावृद उचारयो ॥ जै जै कर
करन सभ लागे ॥ वर्षत कुसम अपार अनुरागे ॥ हसत वपुर महि जो
नरनारी देखन धाए सभ अभिलाषी ॥ जो जैसी मनसा करप आयो ॥ ति
न तैसे दरशन फल पायो ॥ तत्व विचारी बुद्धि अभिरामा ॥ तेक है हि
य माता मरामा ॥ कामनि कामरूप अवरेषो ॥ प्रजा मराप [illegible] वीप

अश्वमेध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नैवेद्य ॥ १३ ॥ दो० ॥ बिबिधभांतिरचरुचिरनिकरहिंबरबांहिकुसमअपार
गजमुकुतनिहिमंगलभयोसुखमाऐजवाहिमुरारि ॥ १४ ॥ चौ० ॥ अतहिअनंदपु
रीमहिंभयो ॥ कृपाबिलोकसकलदुखगयो ॥ जैसेमंगलपुररघुरा
जा ॥ जैसेआनंदबढोसमाजा ॥ कौतुकहोतभयोजोईरघुपुर ॥ जैसेसम
भयोपुरीपुष्पपुर ॥ पुनिजन्मेजेमुनिकीयोतब ॥ जैमिनकथा
कहौरघुकीसब ॥ कैसेरघुपुरआनंदभयोअति ॥ भोवहुसकल
वतांतनुमसमुझिद्युति ॥ जैमिनकहेसुनजकुरनंदन ॥ कहौकथा
अघओघनिकंदन ॥ १५ ॥ दो० ॥ ब्राह्मणसुतविद्यारीपीगुरगृह
ठतोसाइ ॥ विद्यासंपूरनपढीग्रंथनिराज्याकोई ॥ १६ ॥ चौ० ॥ हाथजो
रठाढागुरुआगे ॥ बोलतवचनदीनअनुरागे ॥ श्रीगुरुदेवकृपाम
हकीजे ॥ नवग्रामकिमहिदछनादीजे ॥ तुमतोसतगुरमहाप्रवीना ॥ ह
महितोभिछुकअतदीना ॥ गुरुबोल्योसुनसिष्यहमारे ॥ तुमअतिदीन
नलछतुमारे ॥ ताहिकरउभपुनीपुत्रपाला ॥ हमहितुमपरसदाकृ
पाला ॥ सिष्यकह्योगुरुवचनसुनीजे ॥ विद्यामांहिसफलकरिदीजे
॥ १७ ॥ दो० ॥ सतगुरुजाबिनदछनाविद्यासफलनहोइ ॥ पथ्यासुकतिआ
ताकरोप... गुरविचारहेसोसतमाही ॥ सनके

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri Vedic Bharat Inititative

२०

अश्वमेध

तौ संपतकछु नाहीं ॥ बहु प्रकार करि गुरु समझावै ॥ ताके हृदे
नकछु ठहरावै ॥ पुनि पुनि गुरु प्रति वचन उचारे ॥ कहौ हृ
दै नाथ प्रन हमारे ॥ कौ च्यौं गुरु दृढ नाम सुनीजे ॥ ऐक भीरु
चन मुरदीजे ॥ सुन शिवक ध्वै तावस भया ॥ आज्ञा मानतव
उठि गयो ॥ मग महि इक तवैर अभिरामा ॥ तिः तर वैठ कीयो
विश्रामा ॥ ७५ ॥ तिः ठौ सर इक साधजन आयो भयो कपा
ल ॥ लीयौ उठाइ जिगाइ के कौ धैं तारे वाल ॥ २ ॥ तव ब्राह्म
ण सुत वचन उचारे ॥ आज्ञा कीनी गुरू हमारे ॥ मांग्यौ कछु च
न को इक भारा ॥ ता ते मुज को धैं तस पारा ॥ इतनो हम कहा
ते ल्यावो ॥ जिः कर गुरु को तोष दिखावों ॥ संत कहौ वाल कसुन
लीजै ॥ गुरु वे आस चित जिन कीजे ॥ अति वर पह्नर चौर घरा
जो ॥ ता हाजा ऊपर न है का जा ॥ दे तदृढ नाम सवाभा एमधि ॥ कं
चन दान नह जन आदर करि ॥ २१ ॥ पुष्प मह देव सह जजात त
ह चढ़र सहै तर सोइ ॥ गागर पात्र सु नहीं के पावत है सम को भर
रे ॥ पह प्रपमे धन देत दुजन को ॥ वहु रोंकर तिनि मतत्र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिनको ॥ भोजन करद्दकनादि जले ही ॥ सवा भार कंचन को देही
सुनत चले सो बालक तत काला ॥ आनंद रूप बुद्धि विशाला ॥ जे:
पुर माहि ऊतो रघु राजा ॥ पूछत द्विज आयो निज काजा ॥ पूछ्यो ब्रा
ह्मण काहु द्विजन पाहि ॥ पठवत तौ तद यो सभा तिहकाहि ॥ हरख्यो र
मण द्विज बस कालके ॥ सुनत तव ठौ अति चिंत बालके ॥ २३ ॥ तत
छिन आयो नगर माहिकी नो द्वार प्रवेश ॥ देख अपूरव विप्र को कौ
पा प्रणाम नरेस ॥ २४ ॥ द्विज को देऊ होरन्न पमीथ्यो ॥ आदर
सहत विप्र को राख्यो ॥ बहु विध द्विज को पठायो नाजे ॥ माटी पात्र
पठे तेः का जा ॥ शोक व्याप्यो द्विज के मन हिते ॥ माटी पात्र बिलोकन हि
ते ॥ तिन दीने बासन मऊ ऐसे ॥ सवा भार कंचन द्द के से ॥ चिंता बसि
ब्राह्मण को बालक ॥ रघु राजा आयो तिः कालिक ॥ ह्याय जोर ठाठो तिः
आगे ॥ भाख तव वचन नृपति अनुरागे ॥ २५ ॥ कत तुम बालक र
चिंत बसि बदन देखी यति तोहि ॥ तो तुम रेजो यमे दिप्याक होकपा
कहि मोहि ॥ २६ ॥ द्विज सुत तक हि सुन ऊ रघुराजा ॥ हम तो आये
हो इह काजा ॥ गुरु मांग्यो कंचन को भारा ॥ तातें चल आयो तुम द्वारा
जब लग गुरु द्द कना न हि देहो ॥ तब लग जल भोजन न हकर हो ॥ प

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हम्प्रमाण मैंअबपुनैतेजोमधारा ॥ सोसबजानन्नपरवचनहमारा ॥ कह्योरा
इबालकसुनिलीजै ॥ अथमैंसचिकहिभोजनकीजै ॥ पुरनहोइम
नोरथमनको ॥ ऐसेवचनकहेब्राह्मणको ॥ २७ ॥ दो ॥ राजैसचिव
बुलाइकेकह्योबतांतविधान ॥ सबआभारककंचनदिजोहमअबहीदीजै
आन ॥ २८ ॥ चौ ॥ राजैसोंमंत्रीवचुकह्यो ॥ तुमरेगृहकंचननहीरह्यो
सबलैमेरेभंडारवजाना ॥ सोतुमसबमंदोनैद्विजदाना ॥ टंकएकन
हीसबलौभंडारा ॥ सत्यमानजोयहवचनहमारा ॥ राजाकहैसचिव
सुनलीजै ॥ हमकोवेचकनकदिजदीजै ॥ राजाअरुरानीहमदोऊ
हमकोवेचअलैवेकोआं ॥ मंत्रीकहैसुनउराजाना ॥ यहविधदेवी
सुनीनकाना ॥ २९ ॥ दो ॥ राजारानीमोलकरलैनसमर्थनकोइ
मंत्रकहतहैएकतउसिद्धमनोरथहोइ ॥ ३० ॥ चौ ॥ महाधनाढ्यकु
वेरभंडारी ॥ तिःपुरकरउवेगअसवारी ॥ तातेजीतसकलधनलो
जै ॥ तजउविलंबयहहीकृतकीजै ॥ उद्यमकीयोपुद्धकोततदिन
यहप्राततेतिःउरतहीदिन ॥ दूतवंतांतेंकुबेरसुनायो ॥ सुनतकु
वेरज्ञासुजीयभआयो ॥ हमसरावैलनहीराजसमाना ॥ यउत्तावाध
नहींपैउराना ॥ मेघरीतिकंचनवरखावो ॥ रघुपुरमैंआनंदबढ़ा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दो ॥ ३१ ॥ सो० ॥ उठि प्रभात देषत भए कंचन पस्यो अपार ॥ फेर रहो
सभ नगर मध जानि जानि तन लीव जार ॥ ३२ ॥ सो० ॥ ई जस ते बोलत
भौर रघुराजहि ॥ कंचन वर्षा तुम रे काजहि ॥ एह सब धन तुम राष
ऊ देवा ॥ लीजै सकल कर ज गुरु सेवा ॥ श्री नंदि तन पई जब गहला
गा ॥ महा प्रसंन नहीं ऐ मनुरागा ॥ ब्राह्मण कह्यो धंन्य रघुवंस पति
तुम ब्राह्मण धनु दीपा धमगति ॥ जित नो धनु मांगेपा गुरु मउ ते ॥ सि
तनो हम लेउ न्य पतु ऊते ॥ अवर न कंचन हम रे कामा ॥ सब ले जान
न्य प जी प अभिरामा ॥ ३३ ॥ दो ॥ तुम रे बल धन पति डस्यो कंचन वरषा
कीन ॥ ली येजात न हो भार इक जो गुरु कह्यो प्रवीन ॥ ३४ ॥ सो० ॥ ऐक
भौर कंचन भर लीन्हा ॥ अवर सकल तजि नृप को दीनो ॥ बालक धन ले
ग नृप हि आपा ॥ दई दछना जी प सुषपापा ॥ मपा आनंद पुरी रघुराजा
कही पर तन नहीं सु बद्ध समाजा ॥ बांट दी पा कंचन नप लोगा ॥ वहो अम
न रहर हो न हीं सोगा ॥ तैसा में जगल जग जगपुर समपा ॥ कृपा विलोक सरवद
ब जपा ॥ जै भिन कहे सन फकुरराई ॥ कुप कह तहा कप्या कराई ॥ इ
प ॥ सुधा सर सम्मद भूतल प्पा सन फ प्र वन न कुरराई ॥ गजपुर की ऐ
चरित्र कहन कहो सकल प्रगटाई ॥ ३६ ॥ सो० ॥ हस्तनापुर न्य पा प्रवेशा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२२॥

अश्वमेध

सुनत प्रफुलित भयो नरेसा ॥ सकल पुरी मति आनंद भयो ॥ ग्र
हग्रह मंगल दुंदुभि गाजे ॥ सोभित भयो नगर छबि अद्भु
त ॥ दृष्टि परति लोग तिकंचन दुति ॥ धुजा मल्ली नज तेजे ओ मंद
र ॥ अवलागति जनु भवन पुरंदर ॥ कृपाकटाक्ष चितयो पुरके
हरि ॥ सोभित भयो स्वर्ग ते अति वर ॥ पुनि इच्छा कीनी तीर्थ भार
धर ॥ जातु ऐक लोभिलो पृथ्वी पर ॥ ३१ ॥ दो० ॥ सुभ कुटंब सेना
सकल पाछें राखि गुपाल ॥ आप ऐकलो उठि चल्यो हय पर्वेच
है नंदलाल ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ वेग जाइ हरि प्रापत भऐ ॥ पांडुव बदन
कमल बिगसऐ ॥ पुष्प ममिलेंध तराष्ट्र को हरि ॥ सौबकीऐ
पुनली पाछे अकमर ॥ तिःपाछें हरि विदुर भगत के ॥ के ठलगाइ
मिले अति रति सों ॥ पुनि हरि धर्मराज के पग लागे ॥ न्रप हरि अं
क भरे प्रेम अनुरागे ॥ मसा कच्छ्र मत हरि के हित सों ॥ आनंद अ
सु ढार त अति सों ॥ आसू आंठर नव परत हरि भुप पर ॥ हरि जा
नतिदी पाअघि पृथ्वी पर ॥ ३४ ॥ चौ० ॥ तिः अवसर कुंती चरनन लागे र
श्री नंदलाल ॥ हित सो लीयो लगाइ उर [illegible] तिम भई तत काल ॥ ३५ ॥
हरि पग गहे बहुत सो ताप नलागी ॥ परसे तेच रन बहे तस बभागी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पुनिअपरजनहरिपगलपटानो ॥ उदतिरंकनिधपावतिमानो ॥ मे
घवरनवपकेतसररवर ॥ धाइपरेभुविचरननीआहरि
पुनिपगलागेनकुसहदेवा ॥ कष्णचंददेवनकेदेवा ॥ वडिपु
धिष्टिरवचनउचारे ॥ करुणाकरिहरिजननिसारे ॥ जादव
कुलसगरेसंगआन्यो ॥ कृपाकरीअपुनाकरिजान्यो ॥ ४१ ॥
प्रजासकलचरनावरनअयोऐहोप्रभसाथ्य ॥ सोपरकरुणाहरि
करीतुमअनाथकेनाथ ॥ ४२ ॥ हरिआवचपढकेहतयुधिष्ट
र ॥ आपोपोवनासतिःअवसर ॥ आवतिहीहरिपगलपटान्यो
सकलजनअपुनाकरिजान्यो ॥ प्रभावतीअपुनेसुतसाथ्या ॥ कृष्ण
चरनपररराख्योमाथ्या ॥ वचनकहेहरिसुनाहिधर्मवर ॥ लेआएह
मसंगसकलपुर ॥ जादवकुलअरुचारवरनअव ॥ ल्यायातुम
रेमथनमिञ्जसव ॥ [illegible] सेनअनेकडंडुवल ॥ तीनोरहेद्वारका
अस्थल ॥ ४३ ॥ गंगाकेतटछाडुसवआगेआयोमोहि ॥ वडि
तप्रवसकीचाहिहुवि तदर्शनदेख्योताहि ॥ ४४ ॥ राजाअतिहि
आनंदितमयो ॥ धौलभवनहरिआसनदयो ॥ कुसुमसजरीयारहे[illegible]
संचरव[illegible] [illegible] हरि ॥ [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्वमेध
पां अ

पूजा करि तोषेउ जनाया ॥ आज्ञा लै त प्रुधिष्ठर राजा ॥ मिलन चल्यो
यादव सभु भ्रसा जो ॥ अनेगन वजंत बजंत्र अपारा ॥ है गै रथ पायक
दल भारा ॥ राजा षोवनास प्रकुल के ति अंग ॥ प्रभावती रानी लीनी संग ॥
भूप ॥ ॥ दस सहस प्रुवती सुभग प्रभावती के संग ॥ देषन रुकमन
देवकी हरषत चली उमंग ॥ ४६ ॥ प्रमुदत प्रजा सकल नर नारी
चले सकल आनंद जी पधारी ॥ चले लैन यदुकुल के आगे ॥ विकसत
वदन कमल अनुरागे ॥ रुकमन अदिक ए पटरानी ॥ अरु देवकी सं
ग हरि आनी ॥ तिन को मिलन चली प्रुवती सव ॥ दुंदभ शब्द हेत तव अदभु
त छवि ॥ भले जाइ सम गंगा तट वर ॥ देष्या यदुकुल सुन्दर महावर ॥ पु
नि चंडोल देवकी निहारा ॥ मणि मुकता हल जेठ त अपारा ॥ ४७ ॥ ।
गाठी शोभित रत्न की हीरा मन गानि लाल ॥ मरकत झालर चउदिपाज
गमग जोति विशाल ॥ ४८ ॥ भांत भांत के वने चंडोला ॥ रत्न षचि
त अति अमल अमोला ॥ राजा चरन देवकी लाग्या ॥ करी दंडोत अति अ
नुरागा ॥ आजु हूं वसे वड भाग हमारे ॥ भए कृतारथ पद दर्श तुमारे ॥ कोटि
पञ्च फल प्रापति भया ॥ कर एता कर हरि देषो नंद दया ॥ कुंती चरन देव
की लागी ॥ चूमत मुष पुन पुन अनुरागी ॥ वसुदेव द्रोपती प्रुरु प्रुवती
सव ॥ लागी चरन देवकी के तव ॥ ४९ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पवनपूत अरु जनन कुल अरु सुहृद व प्रवीन ॥ चरन परे देवकी सभै
उस्तुति करत अधीन ॥ ५० ॥ ॥ आपो आपुनी भेट आदि नी ॥ महाप्रसंन दे
वकी कीनी ॥ पौवनासराजा पुनि आयो ॥ सुतदारा संग वगलत पटायो ॥ दे
समहंसवती प प्रभावती संग ॥ समभन प्रणाम कीयो हृदय बत अंग ॥ दीनी
भेट प्रभावती रानी ॥ ऐक आभ्रा मुतरथ्य भरि करि आनी ॥ वसन आभूषन
रतन अपारा ॥ हीरा मणि मुकताहल तारा ॥ प्रथ्य मै भेट देवकी आगे ॥ क
रतन भऐ देवकि अनुरागे ॥ ५१ ॥ ॥ वसन आभूषन रतन मणि वजु वेध मु
कताहार ॥ रुकमनि सतभामा द्याऐ भेट प्रभावति नाए ॥ ५२ ॥ ॥ आएन
पकाआदि सकल तीय ॥ जो जिः पास मस्ति वांट दीय ॥ जेतक कहे पडुकुल
केलौगा ॥ दीनी भेट ऊती जिः पोगा ॥ कुंती द्रुपद सुता वरस्नारी ॥ हेमभद्रा
उकुल उजिपारी ॥ तिन व ऊदीनी भेट प्रभावति ॥ भूषन वसन रतन
मणि आगनति ॥ कुसचेद के सभ परवारी ॥ पुत्र पौत्र नहि पारावारा ॥
सभ मिल धर्मराइ पग लागे ॥ कृपाल पृथमन नत न अनुरागे ॥ ५३ ॥ ॥
महाकूः रवर पद्युमन अनुरु अनिरुद्ध कुमार ॥ चरण परे लप धर्म के आ
नंद भयो आपार ॥ ५४ ॥ ॥ आएनो पकाआदि सकल तीय ॥ गा
वत मंगलचार मुदित तीय ॥ रत तेकु पद सुतानाप नसंग ॥ जौ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ७५ ॥

प्रश्नमेघ

तुजि ५ ॥

बनासकीतीमहरबतसंगा॥ गानकरतमननभी बतगीता॥ हस्पति
परस्पर उपतिपरीता॥ सतभामा आपुमे जीयधीसो॥ रुकमन
सोभिलमंत्रविचारैसो॥ कसंहितद्वीपतीसोहमहासा॥ उपजावहित
सविवधविलासा॥ बोलीसतभामा बरनारी॥ सुनऊद्धोपतीवात
हमाशी॥ ५५॥ द्वारापुरतेचलततहांमननमाउपजैयामोहि॥ नर
वाहतऊसंसैनहीपछितहांआवतोहि॥ ५६॥ नाभितहांसरस
कसतभामा॥ बचनबनाइकहैअभिरामा॥ सोपतहसहंसंग्रठांतर
सेतीप॥ नाहिसमनकोइकगिरधरपीय॥ पटरानीतेंसाद्दिपुवति
जनन॥ बसिनकीयोकिनगिरधरकोमन॥ तुमरतीहैपांचभतारा
केसबसिकीनेरकवारा॥ सोईउपाइहमहिंवतलावऊ॥ कृस्नहे
इवसिविधसमऊावऊ॥ जिः विधतुमकीनेवसिपांचो॥ कहौवर
तांतुसकलसवपांचो॥ ५७॥ सुनेहोपसतभामा
बचनतुमराचितुनहींठोर॥ तांतेवुसिनहीहोतहैनागरनंदकिसो
र॥ ५८॥ तुमहेवऊतीतीपरमअमानी॥ काहेकोकरिसकऊमा
पानी॥ एककहतहुपउनतीप्यासा॥ हमसोकवहूनकरतवि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लासा ॥ ऐककहैउनकौपटदीने ॥ ऐककहैउनभूषनलीने ॥ ऐकक
हैउनकेभेखसवसे ॥ ऐककहैउनसोहरिहसे ॥ ऐककहैहसिदेत
नेरादर ॥ हमसोवैरआवरसोआदर ॥ करजुआपमोहिरिसतुम
नेशाप्दन ॥ बसिनहातताते हरिरकछिन ॥ ५८ ॥ वहीदिन चे
तकरजुहीयेनारदरिषकीबात ॥ सुरपुरतेआन्योकुसमदीनोतिम
वनतात ॥ ६० ॥ जोहीपोपलतजुकमनीकोहरि ॥ तुमकोनारदक
ह्योआइकर ॥ तुमजीपक्रोधकोपोउरधरसो ॥ वठोस्वर्गताहीछि
नहरिको ॥ ल्यावोपारजातजाहिआवत ॥ वोयोआनदुवारतुमरेके
त ॥ पुत्रनारदतुमसोयहकह्यो ॥ तिनककुदानकीपातिनलह्यो
उतमजोरदीजाऊदेवहि ॥ सहतसतजुनापावैतिकरलेवहि ॥ मनोव
सुदीजैदिजदाना ॥ वहि [illegible] तवजुसत्यप्रमाना ॥ ६१ ॥ पारजात
अरुकृष्णकोदानुदीयोमोहि मोहि ॥ मनवचकमहि पैसदापीतक
रतिहरितोहि ॥ ६२ ॥ कृष्णअवरपारजाततर ॥ सोकलपदर
नोमपुनेकर ॥ हितुवजतुममहिदोऊपरस्पर ॥ तोतुमलेऊमै
रमजुतेहरि ॥ तुमपैहवातेसत्यकरमाना ॥ तवतुमजोलतेलेमौ

नं६

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

श्वमेध

नि जु हाथा ॥ मन संदेह उरी षकेो व जनाया ॥ द्वौ नो लेच लि योग्ना
रद मुनि ॥ तव तुम कह्यो वचन नारद सुन ॥ और वर धरन फेर
मुजदी जे ॥ कृपा स्वरूप करुणा मुज की जै ॥ ६३ ॥ दो० ॥ जौ संकेल च्यौ
दानुद्दि जपि करते वैकौ ऊ नाहि ॥ तो हि मोल देइ जन सो तौ यवि ब्रजग
ग माहि ॥ ६४ ॥ चौ० ॥ जो तुम पै तौले उहृदय मुज ते ॥ लेउ मो लम्हक ताभि
ग्गा तुज ते ॥ तौल लेउ हीरा मणि सम कंप ॥ ऐक डोर हडी रोत रखवरह
र ॥ सत भामा मे बन बर उदत्याई ॥ तौल ले पार जात पद राई ॥ पवन न हो
हि न कुसुम समाना ॥ तव तुम जो पुष्प पे हम तु ठाना ॥ सोल हस हंस
कुसुम कौ नारी ॥ सब के आभरन ली ये उतारी ॥ मणि मुक्ता हल रतन
अपारा ॥ तेसम न कव हू न हो हि मुरारा ॥ ६५ ॥ दो० ॥ ष्ट रन तो हि न बसु
सम ॥ आभरन जुरे अने क ॥ कैसे हरि सम होत है पहत तुम न ही की या
विवेक ॥ ६६ ॥ चौ० ॥ चिंता तुर तुम कौ हरि देख्यौ ॥ महा कष्ट तुम हीये अ
वरेख्यौ ॥ मुदित तक री आज्ञा नंद लाला ॥ तुलसी दल ल्याव उतत तकाला ॥ तुम
न तौ छिन तुलसी दल आने ॥ पाछे धार दी नी हरि माने ॥ अति शोभा रद लेन
कौ भई ॥ मणि मुक्ता उताप तुम ले पा ॥ रह्यौ एक तुलसी दल पा छे ॥ तिः सं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गा तो तुम ऐ हरि स्याम के ॥ सोई दीनन नारद के कर लीनो ॥ सुरतरु सम हरि
कर तुम लीनो ॥ ६७ ॥ पुनि तुम नारद प्रति कह्यो तुम हि भुलायो मोहि
गावन के रज उठि भवन ते ईहां ठौर नहीं तोहि ॥ ६८ ॥ पुनि तुम वचन तेक
हे नारद प्रति ॥ विधि कराइ यो पुन्य मुनी पति ॥ जीवन मंगल पान के पाना ॥ सोसं
कल्प करायो दाना ॥ ऐसी प्रीति बढ़ाइ के काजा ॥ लै संग चलत तुम यों यदुराजा
आव तुलसी दल लै सिर धारऊ ॥ ठग ऊ स्वर के ऊ वेग सिधारऊ ॥ मद नमस
काइ दैव रिष चल्यो ॥ निज मन के र कृष्ण तुम कह्यो ॥ तुम रे जीय ऐसी ठहराई
लीयो मोल रिष तें यदुराई ॥ ६९ ॥ कहे द्रोपदी वचन सुहृद न सुभी भावात
मोल लीयो भरतार तुम जानऊ त्रिभुवन तात ॥ ७० ॥ भाव सहत हरि ही पे न धा
रऊ ॥ तुम अभिमान मान विस्तारऊ ॥ इह प्रकार हरि वस्य नहीं होई ॥ कोटि उपा
र करै जन कोई ॥ तुम हम सों आगह वचन उचारे ॥ वह की ऐ हे कृष्ण हमारे ॥ प्रेम
सहित हीय परे महि धारे ॥ हमरे संकट कोटि निवारे ॥ तब बोली रुकमन पटरानी
सुनऊ द्रोपदी बात रस सानी ॥ हमरे कृष्ण हीं ते धरि राखे ॥ सो तुम रे आता जगभी
वे ॥ ७१ ॥ कृष्ण तुम्हारे आत पठे तुम राखे हिदे माहि ॥ क्रीडा करत हो आत संग लज्जा
आवति नाहि ॥ ७२ ॥ काम सम आगन की तन अधिकाई ॥ दीनो हे तुम को यदुराई
तुम को लाज न कछु न हीं आवै ॥ पांच कंत ते तन प्रीति न पावै ॥ काम रूप पंचों वास रवर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तेतुमनवसिकीनेकैसेकरि ॥ तोयकरतपोचोकाकैसे ॥ सकलकहोयऐहतमुज
जैसे ॥ एककुसमतेतुमसभनारी ॥ तुयारहेतिनिशाह्दिनहितकारी ॥ पांचपुरषतुम
इकवसिकीने ॥ निशाह्दिनतुमरेरहतअधीने ॥ ७३ ॥ कहेद्रोपतीवचनसु
नरुकुमनहीपेलगाइ ॥ सत्यवचनउतरुकहेसकलवतातुसुनाई ॥ ७४ ॥
॥ भीषमसुतासुनउकुसलाता ॥ कैसेनिसंभारउअपुनीवाता ॥ भ्रातदी
पातुमकोसखिपालहि ॥ तुमहिविचारकीयाततकालहि ॥ एककामकीसे
कतिजानननर ॥ सोतपताइनसकैशांतिकरि ॥ कोटमेनकीशकतिमहावर
पहजीयजानकीपोवतिअगरधरि ॥ एकपुरुषतेतनजानी ॥ तोतेव्यासेसा
रंगपानी ॥ हमकोभावडपांचभतारा ॥ कोटपुरुषसमकंततुमारा ॥ ७५ ॥
महिसबकमनसुनद्रोपदीपांचे तुम्हरे तोहि ॥ कहितुमहीयमहिराखियाठार
वरधरपीयमोहि ॥ ७६ ॥ ठोनाकामनकीयोभातको ॥ तोयोवसीक
रजुगतिताततको ॥ हमरहितबनकरतनइकछिन ॥ ठाढारहततिहारतु
मनिशाह्दिन ॥ मनुहरिलीयोतुमहिनेदलाला ॥ पांडवकुलहिअधाग्य
पालाला ॥ कहेद्रोपदीसुनरुकमनदित ॥ पांचोनहीकामहमरेकिति
धर्मराजमुकोहासयोजब ॥ दीनोहाथदुसासनके तब ॥ सभीमाहि
मोकोलेजयो ॥ निरबलोगमतिअचरजभयो ॥ ७७ ॥
दुरयोध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नग्रा स्ताकुरीन नगानु करोइ हगात ॥ पाचा ठाडे दूष ती कहन सकति के
आवात ॥ ७६ ॥ श्री ॥ ते से रा अंचै द्रुमा के ग्रष्ठि ॥ ते से की लोउ न मज को
वसि ॥ नव मेघ मस्यौं कं तु तु मा रौ ॥ त ताहि ने सेक दु हस्यौ हमारा ॥ वि
रदु संभार त वहि नंद नंदन ॥ वस्त्र संभारे दो पदु बके दन ॥ ठाढे आइ
गगन के अंतर ॥ रा बला जदुब की मध्य कर ॥ तु मम रतार ला जमु हिरा
वी ॥ लान तनु गति नि गाम सम सा बी ॥ जा हाम म हमा म वदा हम वरी ॥ तु
म पति वे ग नि वार न करौ ॥ ७८ ॥ श्री ॥ सा त पि ता सु त बंधस
व स षा स होदर लोग ॥ पहि सम स्वा र्थ के सगा कुटुंम गति वि
न सो ग ॥ ८० ॥ श्री ॥ स तभा मा व र ना र र तु क मन दु पद सुता सुहि
त ॥ कीयो हास रस सार सु ने प हे नि: सो गनर ॥ ८१ ॥ श्री ॥ जे श्रि
तक हे सु नंद नंदन कर ॥ सम न प्र वे सु की यो हस्त न पुर ॥ श्री
ऐ ज हकु ता गर धा जौ ॥ सम न प्र णाम कौ यो हि त कारी ॥ जा च
कवट मचन पहि रा ऐ ॥ सम सर पगा जर व दृ नी व रु पा ऐ ॥ श्री
ते श्री नंद जु धिष्ठ म यो ॥ लो ति: माज्यो सा ति: द यो ॥ रं ग म हल प
र एं ग म हल वर ॥ कु सम म ज रो बा राजति रुचि कर ॥ ता पर कु सुम च
द वे ठा ऐ ॥ कवट हवाला न वस सम सु ष पा ऐ ॥ ८२ ॥ श्री ॥ सा जि र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरती द्रोपदी आनि करी सवधान ॥ अति प्रसंन हरष तन भऐ श्रीप
ति कृपानिधान ॥ ८३ ॥ सभ युवती मिल मंगल गावहि ॥ विहसि
परस्पर आनंद वढावहि ॥ कृष्ण नकोटि पांडव दल आऐ ॥ श्री आने
कन्या सम मुनि आऐ ॥ सभ आऐ गिरधर के दरसन ॥ श्री पति के पद पं
कज परसन ॥ मुनि पूछी मह प्रसन युधिष्ठर ॥ कहौ कृपा कृपा आस मुनी
श्वर ॥ सत्य तेरा जक्त कृपा हो नीवज ॥ हम रहै देसंद हमिटावज ॥ म
रुत नृपति के सम सबकी नो ॥ कैः विध दान दक्षनो दोनो ॥ ८४ ॥ अश्व
मेध को यज्ञ जु मम सत्य तन्रपति तत तकीन ॥ सो विधमो ति सु नाइ सव मुनि
पति आस प्रवीन ॥ ८५ ॥ चौ ॥ कहत व्यास सम मुनि सु नो युधि
ष्ठिर ॥ मरुत यज्ञ विध यज्ञ महा वर ॥ ह्रदे भाउ सौ मुद्धित करत क
त ॥ आ ति ब्रह्म हा ए सदा उजुल मति ॥ गो सह सु रक दान करत नित
विध वत देत दिजन हरष तु चित ॥ यज्ञ की पनि उन मे विधवति ॥ क
रत सत्य ते वज नित प्रति ॥ सत्यावती ताहि जु हनारी ॥ सब कर
ति पति की हित कारी ॥ ताकी महिमा कहि न आवे ॥ सदा भगति करि प
तत पतिवत ॥ ८६ ॥ अंगिरा कुंड प्रकी मक पायाजन ने ढेइ पमान ॥ प
र नालाकप घत दी या सुव वैसं तर मान ॥ ८७ ॥ आचार ज सुर
गुरु तिःम या ॥ विधवति यज्ञ सकल करै द या ॥ वांछा जिः जिः नृपति नु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रंगा ॥ मुकताप्रो करै युद्ध प्रसंगा ॥ सुत्र पत्री षक करै जहा वाजा ॥ त
ता चहित वर पत्र समसाजा ॥ ए कलाष मौदे तदे जनको ॥ सहे समा ठा
सो पद जरै बनको ॥ दे तदहु नाइक इकहे जवर ॥ जात रूप के मछम
रभए ॥ जरे तत ता चहु दिसि के राजा ॥ हा म्यो वे संतत रमहि वाजा ॥ ८८
दो० ॥ इह विध पत्र ते ठान मे मरुतन्न पति सुभ कौन ॥ वउ एक अरे स्यो ए
कुमव बसु तु पति मघो अधीन ॥ ८९ ॥ तव दिसि शक्र सुरगुरु वहि गा
पो ॥ हाथ जोर करि ठाग भयो ॥ करे व नती सोव नसु नीजे ॥ पति हम
रे काजकै की जै ॥ मरुतन्न पति को पत्र निवारउ ॥ जुजा न ऊसु व
ग सिधारउ ॥ तौ पद तप्र करे सुभ सो जा ॥ तौ पावै सुर पुर को रा
जा ॥ ताको जाइ वेगसु मजावऊ ॥ हमरे हृदे अनंद वढावऊ ॥ ततछि
न गयो षबृहलोक तमाला ॥ वराज तकी यो मरुत तत त कोला ॥ ९० ॥
मरुतन्न पति इह तविधु की यो मसु मेध मषसाज ॥ पेता ताष ऊप हुस
कल विधसुन ऊ पु धि ए र राज ॥ ९१ ॥ मा सव वचन सुन धर्म
राज सुत ॥ च क्रतम यो महा चिता पुत ॥ कुल चेद के पग लपटा ना
सो मेध व धसुनत दुरा ना ॥ महा कहन्न हप कत पदु राई ॥ है स
नावतु मरो सरना ई ॥ कीनो है मऊ कल मसपारा ॥ गौ ज्ञ सकल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्वमेध

ति

कीनो संघार ॥ जो हिरणाक्ष आदि वरणा कुन खारे ॥ करि संग्राम सकल सुर
मारे ॥ भीषम द्रोण आदि सुरेवर ॥ तीन लोक कोपति जिन के डर ॥ ८२
॥श्री॥ तिनकौ मारि विजै दिपासभै कैरव कुल माहि ॥ ना सम ताराकौ हू
नीकी पाव षानो तोहि ॥ ८३ ॥ ॥श्री॥ गोप्या पुनि अस्तुति करन तुम हे हेकृत ॥ सो
मति महा कठन कमलापति ॥ मन मै उपजत चिंत अपारा ॥ करुणाक
र ऊपर पाल मुरारी ॥ दूषन ते ऊतार हमारे ॥ पातक निकर महा अ
प्रिमारे ॥ पापपुंज ले अरे पन्न करन अति ॥ दीनो कठन वनी त्रिभुवन प
ति ॥ गदगद होइ दीन वचन कहइ ॥ पुनि पुनि चरनन कुंभ कौ जूं हइ ॥ काट
ऊपह दुष मोनंद लाला ॥ टहक नदी नवेध करयो लो ॥ ८४ ॥ ॥श्री॥ कव
ऊदठा वत हो हृदै आग हरि सवधान ॥ सिद्ध करहि कोरज सकल निज
स त्य प्रमान ॥ ८५ ॥ ॥श्री॥ रछिचारी तुम त्रिभुवन पति ॥ लवापर ते नाहि
न तुमरी गति ॥ तुम ही कुरनन करावन हारा ॥ करुणाकर दुष हर ऊ ह
मारा ॥ तव वऊमे ते प्रसंन मुरारी ॥ रछ्या करन करो तुम भारी ॥ चेतादरे
कर ऊजी परजा ॥ हयक तिक रहि सपर णकाजा ॥ हम मम गात न कोउ
ति कोन्याई ॥ मोल ली पाम ऊके चितेलाई ॥ सदा टहल हम री सवधाना
करहि सवऊन हाथ विकाना ॥ ८६ ॥ ॥श्री॥ एक अवर पुनर राषइ कोऊ अस
होनेदार ॥ टहल करे न हि भाव सो लेने को तेआर ॥ ८७ ॥ ॥श्री॥ जुसद्धेने

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वहुन रुजी पनाधावै ॥ वैन पहुँचेत तछिन उठि जावै ॥ मो लली या प्रिः दास
जु होई ॥ टहल करे पुन डर वैसोई ॥ मत विगरै सो दिव को काजा ॥ कोध ह
इ मझ उ आ पर राजा ॥ प्रभ ते कहूं न भोगे दासा ॥ सन्मुख कहे न बचन प्रका
शा ॥ आज्ञाकारी रहे सदा वशि ॥ जु सपुत्र पेडु तकुल के जस ॥ सुत म
मगत तन हा प्य वि कान्यो ॥ भगति मालत दै मुझ हितप कान्यो ॥ ५८ ॥ म
गत करी तुम धर्म सुत मा लली पा है मो छू ॥ दास रीति भि सर्धन सदा रह
लकरत है तो हि ॥ ५८ ॥ तो ते चिंता दूरि करहु अब ॥ चकै सदसी ते च
मुहु ती सब ॥ जो मन मो रच्छ म मन जो परे से ॥ की पो सं पद रन भार च्य ते से
हु है मो हि रा ख फ भगत हमारी ॥ मन सा पद रन हो इति हारी ॥ इर फ़न ह है
है कल्याना ॥ सदा धर जु जा घह मरोध्याना ॥ हरि मुख बवचन सुने कुरु राई
भ फुल त आनंद उर न समाई ॥ पूजा करी तब पति गिरधर की ॥ भई कृपा
रति राधावर की ॥ ६० ॥ सतिभा मा भी कृष्ण पति कहो वचन रुच मा
न ॥ वाहर काउ फ़ मम सु को पूजा कर हि विधान ॥ ६१ ॥ सतिभामा के
आज्ञाकारी ॥ मानत है सम बाति मुरारी ॥ जैसे रसी जितु नर होई ॥ आ
ता मेटि सके न कोई ॥ बडे लोक जे कहो तनारि ॥ व नदी सुनाव तिय
ब मि सप दरसि ॥ हरि न ही ली पा ना म सत्यभामा ॥ कह्यो पुष्प ए सोधन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥५९॥

अश्वमेध

स्यामा ॥ ऐसे कहत देवकी माता ॥ सभ पुत्र तिके मन यह बाता ॥ वा हरि का
ठ कृष्ण स्यतु रंगा ॥ पत्नी करहि त्रीपा सभ संगा ॥ १२ ॥ दो० ॥ जनमेजै सुनि त
व वचन कहे जैमिनि रिषि चितु लाइ ॥ धर्मराइ ऐसे कह्यो उग्रसेन आज्ञा पठराइ
॥ १३ ॥ चौ० ॥ पुनि हरि के कह्यो सुन नृप भूपाला ॥ दर्शी ले फुसेना ततकाला ॥ यह
प्रभु वचन कहत हि हरषे मन ॥ पुनि उग्र हरि पद सत्ता के गात्रे ॥ धर्मराज वृष
केतु बुलायो ॥ नकुल समेत मंत्र सम मंत्र्यो ॥ विहराले फुसकल सेना सु
व ॥ संख्या लिखि बधि बराव कृष्ण सुजस व ॥ चहराले न चले दो अक्षौहनी ॥ धर्म
लात सेना कुसलाता ॥ प्रथम देखी चमू [illegible] धपुर ॥ मुजरा ली यो लिखे
कागत पर ॥ १४ ॥ दो० ॥ धर्मराज की चमू की संख्या लिखी प्रमान ॥ महा
सुर योधे बली द्वादश अर्बुद प्रमान ॥ १५ ॥ चौ० ॥ ऐ कुल अब बर प्रबल तु
रंगा ॥ तिन पर चढ़े सुभट वर संगा ॥ पुनि पदाति षट् कोटि महा वर ॥ चा
वचमा पुत गज मत्त कुंभ धर ॥ रथ सूत स्यंदन नहीं पारा ॥ दुंदभे
भेर निसान न पारा ॥ यह सरवा धर्मराज की सेना ॥ वान कहि पर तन
ही वेना ॥ सेना पच्छ भीम अरजन की ॥ सजहि गनती करी न उन की
[illegible] सेना [illegible] समेता ॥ [illegible] ॥ १६ ॥ दो० ॥
[illegible] ॥ धर्मराइ आज्ञा करहि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बराबरफ़ पहुलाइ ॥ ९७ ॥ श्री ॥ गाऐ तहां देनौ ततकाल ॥ द्रुपदसुता
कें अह नंदलाला ॥ सुनत तशा हरि हरिवा हरआपो ॥ कनकप्रपकवे
ठ सुषपावो ॥ बेहरेपत्र पुधिछर हुचा ॥ सकलवचावौ सापदुना
ष्वा ॥ वाचत कृष्णभलाकरिमाना ॥ पुनिआज्ञा कीनी भगवाना ॥ देवकीप
कमन मनसुभमारी ॥ पढ़ाकरहुआसुभकारी ॥ आज्ञामानसकलयु
वतीजन ॥ चलीं नचली तुरंगमदृतिमन ॥ ९८ ॥ श्री ॥ हरषत हीयपुवतिव
ली कनकपात्र करधीर ॥ आतिआनंद वाढ़ौ तहां गावति मंगलचार ॥ ९
९ ॥ श्री ॥ पहरवेलीतवतीपपट मेंपन ॥ द्रुपदसुताके कनकपात्र
कर ॥ तामधि सोभतदीपप्रकाशा ॥ धूपदीप मलोपागरवासा ॥ अ
छत कुंशाकुंकमालीने ॥ सातिआरती मद्रतिमनकीने ॥ देवकीकुंती
आदिषुवतिजन ॥ सुक्रमनद्रुपदसुताद्रुविअमनगन ॥ कहौ कृष्णसे
नासखेलीजे ॥ पहरसंजोवकेवचअंगकीजे ॥ शस्त्रअस्त्र कररलेअसे
भीरा ॥ हिम्मवधानकमेंदलुभीरा ॥ १०० ॥ श्री ॥ रहप्रकार आज्ञाकरी
कृष्ण युधिष्ठर राइ ॥ आठौं गजते पाछे तुरंगसजे जुचमेचितलाइ
१०१ ॥ श्री ॥ पहरे कवचअंग गनेदलालो ॥ नरवपमचोचक्रेतमेपाला
सजे जहआअभवनमहिहोहो ॥ कोतकमहाबीरसवहांहो ॥ कहर
निकसेपपमममराठी ॥ सकलकेरेवसहितनगरधारी ॥ मानतनस

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥८८॥

अस्वमेध

श्री

हतपुष्पिफरराजा॥ कर्यो जाइभवनतेवाजा॥ चव्हदिशसैनाजु
रीअपारा॥ प्र॰जाहितठाढेनरनाम॥ निरतकरतअंगअंगमुद्र
करि॥ अतिविचित्रसुंदरतुरंगवर॥ ४२॥ केऊचवरसिरढारहीं
ऊभेठाढेनीर॥ भाजनमेले केऊमुष निरषभेटाहिसभवीर॥ ४३॥
इकठाढेकरतेसीतलजल॥ इकचारीअस्वमहाबल॥ जातरूपनग
रपगसोंहें॥ नगमणिषचितजीनमननमोहें॥ चहुंओरमुकताफल
रहेछवि॥ सुंदरअंगरहेमनुफलरवि॥ देदनवरसचितअंगसुवासा॥ अ
तिउज्जलतनछुन्नप्रकाशा॥ बजतबजंत्रअनेकप्रकारा॥ मधुरम
धुरधुनकरुणाकुनकारा॥ सुरशाहहत्ताइमंदगतिवाजत॥ प्र॰रततानतु
रंगमनाचत॥ ४४॥ प्र॰जालेठाढेसकलसेनाजुरीअपार॥ निर
तकरतवाजीमधुतकरतलोकजेकार॥ ४५॥ आज्ञाकीनीश्रीने
दलालहि॥ प्र॰जाअस्वकरफुततकालहि॥ तेःअवसरदानवअनुशा
ला॥ आयोलभसंगचमनुविशाला॥ निरषभनुपज्योजीयत्रासा॥
सेनासहितठयोआकाशा॥ देतकहेसुनकृष्णयुधिष्ठिर॥ लीयेजा
तहमेहयकेरुर॥ विद्यमानठाढीसभसेना॥ हलोतुरंगमदेखडनेने
ना॥ हरिकोंसुरतोसनेवातकों॥ प्रगटअस्वकोलीयेजातहों॥ ४६॥ दो
जोऊसैनाहिस्वरमायामानछुठावेवाज॥ प्रगटकहेहोछत्रीधर्मसन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रुपुधि छरसाज ॥ ४२ ॥ मतिकोऊ सूरवीर पेभाषे ॥ अबचुराइली
चोअभिलाषे ॥ लीऐजात हो प्रगट तुरंगा ॥ मैतो वैर कृष्ण के संगा ॥ तु
नहतु कीनो हम सेशोभाता ॥ शालनाम सब जग विख्याता ॥ ताको वैर ले
उरह अवसर ॥ पुद्ध करो तुम सो अति रुचि करि ॥ दै तव वचन सुनमछ
करीहरि ॥ सोचकर तचित मैमसकतनर ॥ रूपको बांधव छपरलीनो
वचन उचार स्वर न प्रतिकीनो ॥ ४८ ॥ हैकोऊ ऐसो सूरवल रूपमक
तावेआइ ॥ छरकैदै ततुरंगकी नभ मैठाढोजाइ ॥ ४९ ॥ ठाढो देतगआ
नकेअंतर ॥ कहत वचन प्रतिवचन निरंतर ॥ जवकातु उमासो मनमभीत
हमरेही पेनहीकुसराता ॥ ताके तिलसे जुलीनदेऊ ॥ जबलग वैर न तु
अतेलेऊ ॥ ग्रन्थमे यह हमरे मन भाई ॥ चढो गोकल केल्हे टोजाई ॥ मु
उकोवरजरहा पालोजा ॥ वहतमे हीरन हीतुमरे पाजा ॥ गोकलवासी
वहतनहीराजा ॥ नहीसोपकोऊ मेपसमोजा ॥ १२ ॥ माधन वारअ
हीरवहतुम ततो महानरेस ॥ वरजरहा पालोजामजु पहदीनो उपदेस
२१ वो ॥ आपसार पाजोनरकाई ॥ निःसंगपुधकरे पसमोई ॥ महजो
पजानन अकुलमारी ॥ तुमसो युद्धनकी पोमरारी ॥ अबतुम भएनरूप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिपुंडराई ॥ करीपुष्पवरसंगसजाई ॥ अश्वमेधहितगजपुरआयो
सुनमुनभलासभापहुपायो ॥ तातेहस्योतुरंगमआई ॥ कोहैसूरद
टोवैआई ॥ तुमरेजीतेउपजोअतित्रासा ॥ क्रोधत्यागहैरहेनिरासा
२२ ॥ क्रोधतजेमनकोनिरपक्षत्रिकहीयेनाहि ॥ पक्षकरेतेईपुरु
षजेमतिवलपुजटाहि ॥ २२ ॥ कोउनहीहमपमउतेमुकतावडू ॥ पह
वलसोजगनाथकहावडू ॥ कतमईमहपकनतुमकीनो ॥ पुषमेअपु
नावलननहींचीन्हो ॥ महावलीजगपवनवीपालो ॥ तेवांधेहमपकोततकोहता
कैसेजनसोलेडतुरंगा ॥ पहुंनकरहुहमारेसंगा ॥ शस्त्रवांधठाढेहेतरा
हु ॥ कोउनानेदावसोकहुनकहे ॥ सेनासकलसहितमजवाना ॥ कनकि
नमुषतेवचनुषिवाना ॥ २४ ॥ जैमिनकहेसुननरफनपतिपुनिवोलतेअ
नुशाल ॥ कहोकमसुतपोत्रसुतसंगमआतेहहकोल ॥ २५ ॥ तेअ
दिखातेफुरनसाही ॥ अवहमतुमकोछांडतनाही ॥ तुमरेसेनाम अवह
चलिआयो ॥ झांठेनहीजतनकरपायो ॥ सेनमुषहेसंगामकरइहा
कैत्रीधर्मसंभारडजारधर ॥ भीगाकहाजाइअवमुऊते ॥ हट
कातुऊते ॥ तमसमाननतुमरीसेनासव ॥ एकपलकसोलेउवैरभूता
नुमकोजीतजगतजसपावो ॥ मरोजाभैपावनहीआवो ॥ सुकरोअव ॥ २६ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तुमकोजीतेजगतपसुआहारेअतिकल्यान जोतुमरेकरतेमरेशापावे
मुकतिपरमान २७ यहवचसुनहर्षचडेआकाश निरषदेतउप
त्याजीयत्रासा बांध्योधनुषबानअनुशाला फिरआयेभूपतिनंदलाला
देवलोगअचिंतावशभया दानवकुलजीतनहीगयो सकलकहेहरिएदा
नवतेउरि फिरआयेनमतेधरिनीपरि जेमिनुकहेसनकुरुनंदन कं
सकंधाअघघाघनकंदन सनकहितुवतुरिचकपिधरिभाउ ममधरि
कादशोध्याउ २८

२८ ११ सपकातरु

सुधासारसधर्मसोखमसुखसार रहकनश्रीगुरुकृपातेवरनतअव
पसुधासरसधर्मसोखमसुखसार जेमिनुकहेसनकुमंपाला पुनियहवच
सार १ अतिगरवतिपतिधर्मभूपाला यहवचदेतकहेतिः
नकहेअनुशाला अतिगरवपुधिउर यज्ञरचौतुमपतिःपालायहरि म
काला कहेवचनसुनराइपुधिउर सामजसनमुखभयाअधीनो केयुकरतुमके
अजरेभजनकेवलकीनो सामजसनमुखभयोअधीनो जोतुममाहिसरवलवाना मुकक
रागेवाजा केसजातअगेसवराजा भारथमहिसाईलरहिजोवलसरूपवीन
रैमजसासवधाना २

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मधुमे
५
तुजप·

दीनमऐतुमममुकुंनिरखसमनभयोवलहीन ३ ।। तुमजोत्योंभारथ
हरिकेवल ।। करीगोत्रहहत्याकुलदतमल ।। जानवृजतुमनिमिमराज
के ।। नासुकीयोकुलपुष्टसातके ।। वडुपिलगाईहत्यातनको ।। कीयो
प्रबोधनअपुनेमनको ।। हत्याकोउपायासाइकीयोजित ।। पुनअश्वरए
यहसोअश्वमेधकृत ।। कुठनप्राहचितजाकोसाधन ।। ऐसोकृतपा
पकीयोतुपराजन ।। गोत्रमारसमसेउपजायो ।। राजहैतानितकलुष
लगायो ४ ।। राजुआपनेगोत्रविनआवतननाहितिनकाम ।। जोआव
होतेचमहिमाहिभ्रातकरततजिं नाम ५ ।। मीतवंधुभ्रातातुमसोसो
गुरुपितामासकलसेघोरे ।। जोवहमरफुतेरहअवसर ।। केतवडि
आवतिहरावतिहरि ।। निमितराजकेमेनहीआयो ।। राजुनरकनव
तुमहीकायो ।। हत्याकरिहत्यातुमलीनी ।। अतमगतिअवहूनहीचि
नी ।। राजाधरमधरायोनामा ।। भावहिलोगसवाघनस्यामा ।। तुम
गुपालप्रतिऐसेभाषा ।। मुजकोनहीराजअभिलाषा ६ ।। तुम
गुपालप्रतिथोकहीराजुनिकोछेताहि ।। कोटकलुषजिः नामसेंव
रनहिपावोताहि ७ ।। नहीजानेतुमधमसुरारी ।। महिमासेवर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नकमललगिरधारी जौतुमधरिहिचरनकीआसा तौनकर
तअपुनौकुलनासा कुलविनासकपकद्धानहैस तुममा
हैसभस्रीपतिकैसे कहिउनपन्नकरतिकेःकामा भैहिको
टआघदर्शनकामा तबतुम्हानतुमरेभिटगयो अहं मैवजीव
मतिकरभयो ८ हम तुमारोअरुअमुजपहतिनेमिनुसुन
राज चक्रसुदर्शनसोंमरोंमुकतकरहिपडुराज ८ ज
वहमरेहुसिनमुवआऐ नवमुकुकेष्टपदारथपाऐ चक्रसु
दरशनसोंअवमारहि करएगसिंधमोहिनस्तारहि मुकको
कापीजानवकुरहरि तद्दिनभवेगगऐधरिएगपरि भक्तेम
कारदसमुकुदीनो इहअवसरमुजमुकतिनकीनो मतिका
हकेजीपपहुआयो हरिकेधरिअनुरागतगिरायो रथपसु
मेतगिरपरेगुपाला अपनीरक्षासोनंदलाला १॰ मे
वलिअरायोराजततहिहोयेमुकतिकीआस चक्रसुदर्शनसोंअ
होगर्भनपायोवास ११ चौ इकतुमकुलहसीगिरधारी
तोतेभयोराजअधिकारी बपुहमरीदेसबुद्धिमन कीयो।
विचारसोचअपुनेतन राजभोगमहविबसमजाना होतक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ताख्यजीपसुषमाना ॥ चक्रसुदरसीनकीधारावर ॥ मुकुट होइ लागे
नि:स्वरपर ॥ अवतो हरि मुजके तजिगाऐ ॥ वज्रर भःस्विवर हाडेम
ए ॥ मुव कर होतु मसों संग्रामा ॥ तुमरा दुषन सहत घनस्यामा ॥ मर
तो तुमको दुष दे उगाआवहि जे भगवान ॥ भगत सहाप करहोहि
जे अपनाविरद पहचान ॥ १३ ॥ भगतन के दुष दुष्ट होत तहरि ॥ क
रत सहाइ सदा हित संचिकप ॥ तुमरा दुष सहि सकत न अर्जुनपति ॥ ता
ते आइ कैरहि मुजके हति ॥ तव हा है प्रश्न मुउआसा ॥ वचन कहे
अनुशाल पकाशा ॥ यह वचसुन तमरई से नासव ॥ महाधर्म तवसे
भयो धर्मतव ॥ कै सहै आवे मुजहाथा ॥ सुमरनु करस्यो ही पेप दुना
था ॥ १४ ॥ तेनमे ते पकै वज्र रे जे भन भी अवसु नाई ॥ अमदीपार
अनुसाल नको कैपक था सम जाइ ॥ १५ ॥ जे भिनु कहे सुन दुव
यवीपन ॥ [illegible] रख्या कर पुंध र रमुषप्रति ॥ चिंता तुर जान्यो भःपाला
सहित नसकयो दुख भजे तेगुपाला ॥ तव वा लेनंदनंदकृपा कर ॥ कति
तुम चिंता करहु भःपाला ॥ [illegible] वेगा पकार नशाला ॥ सहित
तुरंग मम सुन हुभःपाला ॥ ले जारेहि तुमरे चरनन नव ॥ अनन्य
ऐवलवानन भःरवर ॥ १६ ॥ सकल तबु मध्धीरजु भयो वचन कहे
नंदलाल ॥ मिलन आए भःरे सकल पापी पाहि ततकाल ॥ १७ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भीमसेनप्रद्युम्नकरनसुत ॥ यौवनासराजासुतसंपुत ॥ स
रवीरयोधेवहुआऐ ॥ आपपतिनिकटसकलठहराऐ ॥ पान
वीरकाकृष्णलीयोकर ॥ हरिकोंईइसहिउठाइस्वरवर ॥ सक
लकरहिजोयेमप्रअनुशाल ॥ वीरालेनसकहितितकाला ॥ धी
रजुहोयेकोऊनहिआने ॥ महावलीदानवपहिचाने ॥ कठन
वीरकृगाहनहाथहर ॥ आगेठाढमहास्वरवर ॥ १८ ॥
हरिकोरीसोस्वरपानगहेभउपानते ॥ दानवअतिवलप्रसरता
कोजातेयुद्धकरै ॥ १९ ॥ ऐकमहूरतपानकृसकर ॥
सकैनकोऊउठाइदैतहर ॥ नहीसमर्थकोऊतःकाला
करिहैयुद्धसाथअनुशाला ॥ लीऐप्रद्युम्नपानहरिहाथा
युद्धकरोहमदानवसाथा ॥ करिप्रणामनंदनंदनकोंतव
रथपरभयोअरूढमहाछवि ॥ पुनिपदवचनकहोगरुड
रपति ॥ तुमहरिप्रणप्रबजगतपति ॥ तोप्रभुकहौपप्र
वगोपाला ॥ जोतोअसहितअनुशाला ॥ २० ॥ पदयोद्ध
नवअतिवलीतानहिमाहिसमान ॥ वहरिहमारेअवस्थ
पवननवेगभगवान ॥ २१ ॥ ज्योपंक्षीउडैचडैआकाशा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ८४ ॥

अश्वमेध

तेउ तुरंग गरण्य महा प्रकाशा ॥ जहां चित वहित तहा न पउचावहि
व लहि पवन गति गहन नलावहि ॥ उहु वादर व पुष्टा निवासा
त सपूरि दल माहि आभासा ॥ होत दिन मिलि कृपा भगवाना ॥ म
हाबलि ए त्रैलोक निधाना ॥ कहि प्रकास माराहि पुसेना ॥ वि
धुमान देष सहित रैन ना ॥ यह वचन कहत शत्रु दिशा धाये ॥ या
के हरि धीरज न हिला पा ॥ २३ ॥ वीरा अवर मंगाइ केली या
कु पुन हाथ ॥ ले व सूरउ ठाइ जो जावे समस्त साथ ॥ २२ ॥
वी रली पा करन केनंदन ॥ की पाप प्रणमु स कृत जगवंदन ॥ व
चन कहे वचके तक प्रपति ॥ तुम री करुणा ते त्रिभुवन पति ॥ अ
स मत तदत अनुशाला ॥ गहि दूरी तु म चरण गुपाला ॥ जो नि
करा कार जु प्रहत तेम ॥ पावत होहि या प्रभु ऐसे ॥ गवन प्राप्त
ति छत्री जरई ॥ रितवंत ताप जो पर हरि ई ॥ साधन मैं तन व प्र
ता होई ॥ करे नारि संग मे पुनि सोई ॥ २४ ॥ आसा करि को उ
भावई जो तिसु पटिनि रास ॥ तन पुरुष न को हात हैं नरक घोर अ
वास ॥ २५ ॥ सा आ घमो हित लते नंद लाला ॥ मे तब आवो हत व
स जो आनु पाला ॥ यह प्रण करत श्याम उठि धाये ॥ आगे जाइ प्र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

शुभ्रसिंधाययो ॥ जनमेजय पूछत जैमिनि पाहिं ॥ उत्तर देहु मोहि
पहं मुनि पति ॥ कथा रकत हरि पठे नदेउं ॥ कहा भव तो तुम्हरो मन
भाव रसो ॥ जैमिनि कहे सुन नृपराज ज्ञानी ॥ हां तें प्रद्युम्न ही पे
अभिमानी ॥ कहं सब देव कोप तब कहा बतत ॥ ता ते मन व उगर्व वग
वत ॥ २६ ॥ दास भाव व षके तहीं पुनि हरि चरनन सो प्रीति ॥
भगति रति धर्म मति पावन परम पुनीत ॥ २७ ॥ अहं मेव त
जि च ल्यो कारन सुत ॥ हरि सुत पा कुसु रमहा दुति ॥ सभ के मात र
जा मो मुझी हरि ॥ आगे पाछे पठे य हाकर ॥ प्रथम हि जाइ प्रद्युम्न
तुला नो ॥ निरख दें य ह व चन व पाने ॥ सुन प्रद्युम्न के हेम आनु
पाला ॥ तुम मुज प चहिं आ यो बाला ॥ कतिन हीं आपुना आपप
का नै ॥ को यो वे चा रन वात मपाने ॥ तुम प्रद्युम्न काम मम वतार
तो न्यो सभा व तातु तुमारा ॥ २८ ॥ मुज सन मुख आ यो बडप
रत को मव र न सा का ॥ को यो वि चा रन का म म प ॥ तुम हि ता तव ज
ना प्प ॥ २९ ॥ कैसे मुज सन मुख तुम हो ई ॥ बाल केतु कि क
री तुम सो ई ॥ हमरे स्वामी तुज हि जरा या ॥ तुम इरि के हसउ
दर महि आ यो ॥ छत्री सूर धर म संग्रामा ॥ सो आन नंग तुम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्त्रमेध

रोनहीकामा ॥ एककुवारभाग्योरनमाही ॥ तुमसोंपुछउचतम्म
वनाही ॥ तुऊहृतकीयासुरजोंतमुरारी ॥ करतुएमसिंधदयाउर
धारी ॥ हमसोंपुधनकामतुमारा ॥ तुमकोयोगवसुपुरीदुआ
रा ॥ ३ ॥ ॥ बालककेलननहीदयपदहहहापुछुसंयोग ॥ रहाका
मतुमरानहीतुमकुहारापुरयोग ॥ ३४ ॥ ॥ तुममघवाकेमा
ताकारी ॥ महातपमकेवतटारी ॥ हरितईदुउनकेतपसाध
न ॥ मतपहहह्लजीकेराजन ॥ संगमवसरातोदुपवकी
तुम उनकेमनकोभरमावति ॥ तुमहीकरतेउनकेवतभंगा
अरदत्रासनहीकरजमनेजा ॥ पुनिहीपवसऊपतिव्रतनारी
मनविचलाइदेऊसतुटारी ॥ उपजावऊतिः जोपरसरीता ॥ सा
तीपकरहिपुरपुरषसोंप्रीता ॥ ३२ ॥ ॥ ऐसौहैरानकोसतुम
पुछनतुमराकाम ॥ सवचरिअपामुऊहिवरकपदेवऊसं
ग्राम ॥ ३३ ॥ ॥ जोनहीकरापुछतुमरेसंजमव ॥ ऐसकहेलो
गमुऊसोसव ॥ महावलीपासतनंदलाला ॥ डरतनपुरकी
योमनपाला ॥ तातेपमेवाएचलावा ॥ तुमपकेमनमेवैठत
वो ॥ वऊसकोटनमावहापा ॥ करऊपछुपितमोवकसाका

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पहु बचसुनत प्रद्युम्न कोप अग्नि ॥ पांच बान पकु येदान व प्रति
वेधी धजा अरु रथ स्वारथ ॥ लागे बान तन हुँ भए अति तारथ
३४ ॥ उठि कै आस्यो बान नइ कहु से दै तब अनु शाल ॥ सात्य
कि तिः बान के कीने पु त्र गुपाल ॥ ३५ ॥ पुनि कोप्यो दानवै
म नु शाला ॥ तीक्षन बान काढि तत काला ॥ काढि दीए सत्य
त भै कारी ॥ लागो प्रभु देता नु गिरधारी ॥ लागे बान उठि गयो
अकाशा ॥ जंबुकार सो उठि तिक पासा ॥ भ्रमत भ्रमत गिरपरयो
धरनि पर ॥ देख्यो पहु च पेत्र सम गिरधर ॥ अचरज भयो
देव सेना सव ॥ चिंता व स भै प्रा लभ पोतव ॥ पसोआ उझा अनपति
के आगे ॥ सकल लोक देव नवि ति: लागे ॥ ३६ ॥ व चन कठोर
गिरधर कहे देव प्रद्युम्न रिसाइ ॥ भली भई पौत्र मकु ल विलोक अपि
को अपायो धाइ ॥ ३७ ॥ भला कहे तेग लोग सकल तनु उ ॥ सः रन
भैल द्वितकी नेमुज ॥ लोग कहे गिरधर को ताता ॥ अपा पौत्र तीत
पात्रु कैरि घाता ॥ कायर लखि तिकी नेमुज को ॥ सकल सः सोधिर
ध कासहि तुज को ॥ के थे धरम के कतन तहि स्वागा ॥ भयो पलायन
रन ते भाजा ॥ पुरुष कहै ते गे पन तगुपाल हि ॥ मधि तकी यादैन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मनुशालहि ॥ एककहेगोछत्रुलजाया ॥ विमुखहोइदानव
तेजाया ॥ ३८ ॥ छत्रीधर्मलजाइकरनतेभाजेयातात
अस्वमेध कततपगाह्याहमरेभवनतकुनगरभगिरजात ॥ ३९ ॥ क
तकोशत्रुनतुउहिविडास्या ॥ छाडुद्याचातुमकोअस्वधजास्यो
पहनभित्रचंदुकुलहितलजावेन ॥ विमुखभयोरनदुबजुपवा
वन ॥ कायरजानईशत्रुमलागयो ॥ हीनपराक्रमरेनतेभा
ज्या ॥ धनुजीवनतजगमहितुमारा ॥ चंदुकुलललुहितकीयाछ
मारा ॥ हाइअतीतवेगवनजावरू ॥ वैराजाहेमेंहउमंडाव
रू ॥ सनमुखजुवहिलरतशारतातनु ॥ वाणलोगभोगहि
शत्रुनहन ॥ ४० ॥ वाणलोकतेभोगहीवारमारण
माहि ॥ तेभाबहिगोकुछास्तनइहाठारतुमनाहि ॥ ४१ ॥
मरलेहसनमरवहुबाना ॥ तेववहुगहिसपुत्रपमाना ॥ नु
मताअस्वानरकअधिकारी ॥ छत्रधमतुमतजुअविकारी ॥ जा
छत्रीहिरणतेभजे ॥ पावेनरकअजसजगजागे ॥ कतनमम
पनावलुनसभीस्या ॥ वीरालेतनाहदेववास्या ॥ सबकायार
घुपनितेतामुग ॥ आरदीयाइकछत्रीऊतभग ॥ भयापलायन

नरकातें आयो ॥ तिः कै भ्राम स्रागन महि पायो ॥ ५२ ॥
वठ परवस्ति नरक तिः जमदूतनके हाथ ॥ रे कायर के सेवकउर
वैठ दुःसह रनसाथ ॥ ५३ ॥ भीमसेनवलवान सुनेवचन सैत
कुसमके ॥ जहां कृते भगवान विद्यमान ठाठे भयो ॥
कति पद्यु धिधकार तेहार ॥ यहतो वालक तुम भ्रोअभ
थिर ॥ तुम कतजरासिंध तेभीजे ॥ भएपलायन दानव भ्राजे ॥ भ्री
पतिम पुनेहूदे विचारऊ ॥ कत पुनि पुनि सुत कौ धिधकारऊ ॥ ज
हां होत युद्धसंग्रामा ॥ जीत हार सु रनकौ कामा ॥ पुनि वालेह
रिदेव व कौदर ॥ कुरमापुत्र ववकेतसु रवर ॥ दुसरय महद्विमदिहौ र
मापव सुपवरन ॥ सुकी तपरासभीरन हीतन ॥ भेघ ॥ वीरा लेक
रकल्हि चलैया करो महासंग्राम ॥ एकवान ले जुद्ध गयो कोया
काकोर तिकाम ॥ ५६ ॥ भीमसेन पुनि वचन
वषाना ॥ सुनऊ भ्रावन त्रैलोक निधाना ॥ शंकर वरदानव भ्रोन
पुनातन ॥ वालक दोसु नदेऊ गुपाला ॥ भ्रव हरि मऊ कौ भ्राज्ञा दी
जे ॥ युद्ध करो ककरूणा महि कीजे ॥ देत जीत तुम चर पालन गावा
डार जेवरी गल्ल ओढ़िल्यावो ॥ भ्राज्ञा दीनी भ्रोधारधारी ॥ के

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

८७

सम्प्रसमेध

धे भीम गदा कर धारी ॥ लीपो उठाइ संग्राम हय ताता ॥ हरिय
हकुरी भीम सों बाता ॥ ४७ ॥ कुन्भकर्ण सेन पखवन सुत स्रा
ओहित बकेत ॥ सब सह रन संग लेइ तुम उतप हसंकेत ॥ ४
८ ॥ मेघ बरन पुन च ल्यो ताता तहि ॥ योवन नासर राजा सह
राबर ॥ तेभिन कहेस मन जगम पाला ॥ जेर गई वज सेना ज्ञान
शाला ॥ कहीन पर तदे त सेना छवि ॥ कंचन बरन संग घोर
धे सब ॥ गज रथ अश्व बदात अपारा ॥ क्रोध सहत ठाढे दल भा
रा ॥ रहदि रात यहु पो च सह रबल ॥ सन्मुख ठाढे भए जहां द
ल ॥ भयापुरुष ढुंढ तद शाम पकारी ॥ कुद्ध भीम गदा कर धारी
५ ॥ दो ॥ उभ वडवानल घास को लेत पलक महि जाइ ॥ भीमसे
न तिम अश्व रथ सेना कुरी संघार ॥ ५० ॥ जैसे हेमन नाल
की तारा ॥ टूटत ताहि न लागे बारा ॥ संग गज रथ हे पाप क
मारे ॥ भीम गदा सों सकल संघारे ॥ चतुरन कुपि सहरन मरह
वे ॥ महा क्रोध जो पत पतिन मारे ॥ रथ विहीन रन महि पद गा
त पतिन पुरुष पवन के ताता ॥ क्रोध बल्यो त रपन उठा पो
दरपद ... त पसा ... ॥ प... चरन सो पकर उठावे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गजरथ हैनभपंथउठावै ॥ ५२ ॥ मारे हस्ती रथ नर पर रथ
संयुत हनै पदाति ॥ बहु ऊपर रहि भूमा रहि करी चमू संघात ॥ ५३ ॥
दवनल एभिनै नासभ भसाङी ॥ पुनि आयो कलिजव लकारी
जैसे खेती पर पकि रहई ॥ काटति बार न लागे साई ॥ तैसे सम से
ना सन नुशाला ॥ भीमसंघार करी तिहकाला ॥ घाय पत पर रस्ट्र र
घाघे रन ॥ अति विचित्र शोभत कंचन तन ॥ सुरन रुधिर अ
गप्रवति से ॥ चर्चत कुंकुम से दुरकुंभ जैसे ॥ ऐक मही नाकाय
पडिपुन ॥ विहल है विधकही भीमत ब ॥ ५४ ॥ दो ॥ कह्यो भीम
व बकेत सनमात स्नचरत जीपमाहि ॥ इन सम स सेना हनाव
ड रितो बावे कोइ ॥ ५५ ॥ इन सम से ना हनि विशाली ॥ वाकी
रहै एक अन शाला ॥ रेनकरो मन साजी पतिसे ॥ हनो दंत को तु
मके सैं ॥ घात का लजाइ रन दे भा ॥ मतक भए जीवत पुन वधा
नित प्रति करो चमू सब घाता ॥ जीवत फुन जिवलावो भ्राता ॥ ग
वरी विद्या बड़े तन पितामहन ॥ देखनको गुरु देव शुक्र मनि ॥ जासे
ना नर सिन तप करत भारत ॥ विद्या बल भूगु तिन दिजीवावत ॥ ५६ ॥
शुक्र आचार जदेख रन ली ना ॥ संग उठाय ॥ विद्या पठे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सो जीवनमीरंत कोले तिजिवाइ ॥५७॥ कह्यो भीमसुत हृदै
विचारउ ॥ प्रभु के विपति न को मति मारउ ॥ निगम कहत है समर
महै लोगा ॥ ब्राह्मण को मारि न हीं योगा ॥ कह्यो करण सुत सुनेउ
पिता मउ ॥ एक उपाय बतावत तेउ ॥ जेहि प्रकार सुन तु है न
सेना ॥ सो विधि करौ सुनहु सुजवेना ॥ अर्जुन ने सा एकला सिधावा
घट समेत प्रभु के गनिकृत्या वो ॥ करुणा कर रिपु जुम्मा ज्ञा दीजै ॥ पा
प मेघ हकारउ ज कर लीजै ॥५७॥ आज्ञा लै ते शर्मदई को गयो
है स्व दल माहि ॥ उहं तप पायो प्रभु के कोसे न का अपना जाहि ॥५८॥
बट समेत दैत्य जग्य रुपायो ॥ लेव बके तप स्या लसि धायो
राखो आम [illegible] तमे [illegible] ॥ जहां [illegible] रतम सहाहि [illegible] शाला ॥ ब
हु कार ज [illegible] कर रन आयो ॥ सभव तात तक [illegible] भीमसुत नायो
जो लग आवत प्रभु [illegible] पालति ॥ तो लग हम जीत [illegible]
लति ॥ नासु कर [illegible] दान वकी सेना ॥ प्रभु के नत [illegible] के दे वतने
ना ॥ जो आज्ञा जो कर त [illegible] का मा ॥ मारे [illegible] तदैत्य संग्रामा ॥५९॥
[illegible] उद्यम आज्ञा जो कर त [illegible] दैत्य [illegible] ॥ [illegible] निमर ते निषि
जो [illegible] गयो इक मास ॥६०॥ [illegible] न म [illegible] धपि पा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

त्ता ॥ पंथुन ही आतिनीरवि शाला ॥ अक्रूर जी कहत हैं आवत जैलग
नासुकरहिआए सेना तैलगी ॥ आज्ञादी जै सो दृप्ति वता आव ॥ ना
सुकरोदानव सेनासव ॥ मैं कर होइन सोंपं संग्रामा ॥ आवतुम
विताकरउवि संग्रामा ॥ यह जो वचन साप अनु पाहलहि ॥ ताको वेग
कुरउवसिकालहि ॥ सेना सकल पंचलाव तम उनको ॥ इन सो युद्ध
ध्यान ही तुमको ॥ ६१ ॥ लोगन हसहि गोपिता तुम पंचत्रपिलाव
तजोइ ॥ योगन होती भी मनको लासुकरी है सोइ ॥ ६२ ॥ वह
ढाडोरन मै अनुशाला ॥ मैजी ताइ सको ततकाला ॥ इनको वलजन
होते वहि समाला ॥ वचन कहत हैं सत्य प्रमाना ॥ जो अनु पालनके
रजुप आवै ॥ तातम रेवलते हरषावै ॥ ताते तुमसब आमकरा आव
मै आवनासुकरदानव सव ॥ मै एक लोसमतको मारो ॥ तिमसब ए
कै मैं शत्रु संघारो ॥ इन मोधि इनआवत मुझको ॥ युद्ध करते तपता
वै तुमको ॥ ६३ ॥ कहियाव कोदरकोऐसो तम हन सै रको कामा
लोगकहे गर्द त्यतेम संग्राम भीम संग्राम ॥ ६४ ॥ ताते मैकर हम
संग्रामा ॥ आवसु तनहि तुमारो कामा ॥ कानी रहै नम उकी बात ॥
आवहि युगट हत विद्याता ॥ युष्यमे युद्ध करन दै मुझको ॥ मनव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भा०अ०मेध

चक्र मक्रहि हे सुतत तुऊ को ॥ भीमसेन बृषकेतु पर स्यार ॥ कहत
वचन संग्राम समर वर ॥ तिः अवसर आयो अनुशाल्व ॥ ताको यु
द्ध करन तत काल्ह ॥ प्रथम भीम चार सर मारे ॥ चार बान अनुशा
ल्व प्रहारे ॥ ६५ ॥ ॥ कडुतकी भीम के चार बान अनुसाल्व ॥ सतु
अपना ठहराइ के सरु मास्यो विकराल ॥ ६६ ॥ ॥ ऐक बान सों भीम
उठायो ॥ भ्रमत पर्यो धरनी मुरझायो ॥ भीम गिरत बृषकेतु निहा
र्यो ॥ सनमुख भयो क्रोध जीय धार्यो ॥ बालक देष कह्यो अनुशाल्व
तुम षोडश वर्ष हु के बाल्ह ॥ देषो यत संघर को तुम माहि ॥ प्र
भु कृपा पायो हे तुऊ पाही ॥ सो चक कहो व लव कव ल कोना ॥ वचन प
र्यो रण स सम प्रमाना ॥ हम राग रुले के हडु रायो ॥ केसे सहित तप पं
कउ ठायो ॥ ६७ ॥ ॥ मुऊ रायो हम जुक के कोड रोन हीं वल तोहि ॥ दे
त संभार रऊ आयो चक आवत हे सर मोहि ॥ ६८ ॥ ॥ तीन बान मारे
बृषकेता ॥ कह्यो रण्य स्वारण्य मैं के केता ॥ पुनि अनुशाल्व अव रस्यो
मान्यो ॥ धंन्य धन्य वा कहि तब षान्यो ॥ दे तीनि को काहि सो अनुशाल्व
लरऊ मरऊ न ठरऊ ई हि काल्ह ॥ पेत का मस सभ के हो कई ॥ गयो जाइ
विडु द्धि कम सरऊ ॥ सात बान अनुशाल्व चलाए ॥ रुष्यु के प्रोढ़ ब
के तनि हाए ॥ पन ईक बान पर्यो अनुशाल्व ॥ मानि तो दिन सर अ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ति विकराल ॥ ६७ ॥ तिन सुरक्षा यो करन लसत ऐक मुहूर तयो
गा ॥ पुनि प्रद्युम्न मोहित कीयो मेघवर नसंयोग ॥ २ ॥ पुनस
रक्षायो जौवनासको ॥ सप्त नदी यों दब मद्धि त्रासको ॥ भयो सबे
त भीम कोड ग्रायो ॥ सु रथ पर धर देखो रेसा यो ॥ पांच बान मारे दा
नव प्रति ॥ यो है ताइ परस्यो यातन शांति ॥ रथ्य के दो सारथ्य हते
कीनो ॥ तव सुनै शालमबरर पती नो ॥ क्रोध वढाइ गइ भयो चढ़ा
ला ॥ तीक्ष्न सरनि बंगते काढा ॥ भीमसेन की ओर चलायो ॥ रथ्य से
मत तः गगन उठायो ॥ ७१ ॥ धृतराष्ट्री रथ्य साहित तमसंधर नवे
रथ्या मुर छाइ ॥ भीमसेन वललवंडु नरर रन भेदी याकीराइ ॥ ७२ ॥ त
वव बके तम यो सवधानो ॥ महा क्रोध धयो ऐक वानो ॥ पवन विवस
कर क्षिसहित चलायो ॥ सेनाकोन भयव्यढयो ॥ काढू रहो ऐक मनसा
ला ॥ उडगई चमू सकल ततकाला ॥ उरस्तुति करी देत विष्याता ॥ धंन्य धं
न्य भानु जकेताता ॥ मात पिता कुल धंन्य तु मारा ॥ महा सूरनु म बुद्धि उदा
रा ॥ सु इतपरी दुहू दिशा सेना ॥ घायल करी परत नहि वेना ॥ ७३ ॥
पुध प्रहारन कीर ची से सेकरैन करे ॥ यो मारत गीरपर स पर रहू वत
ड्रिम हार ॥ ७४ ॥ देत बान शिव शक्ति चलायो ॥ सिः सरसोंव बके त
उठायो ॥ पवन बान पा प्रति वलवानो ॥ शंकर दीयो देत मन मानो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

तुजि ११

तिः सरकरि जुध करि ठीरायो ॥ अति अधीन विहुल मुरछायो ॥ देषो
जरत करन के बालेहि ॥ चिंता भई महा भूपालेहि ॥ म्हित देव महा
बलवाना ॥ अचरज है देहि भगवाना ॥ कृष्ण कह्यो सुन नृपति जु
धिष्ठर ॥ भीम आदि सम सूर बीर धीर ॥ ७५ ॥ कृष्ण युधिष्ठर सों
कह्यो बल दोनो रन ज्ञानि ॥ युद्ध करो हम देत सों चित करो तुम नाहि ॥
७६ ॥ जैमिन कहि सुन जनमेजय भूपाला ॥ ताकै रथ्य धर्म जु नंदलाला ॥
रतन जटत रथ्य जगमगाति छवि ॥ धुजा तुरंग महा सुंदर सब ॥ प
वन वेग रथ्य गरुड समाना ॥ मन सा बहत तहां ठहराना ॥ रत ते कृष्ण
युधिष्ठर गयो ॥ उतते दानव सनमुख भयो ॥ रन में ठाडे [illegible] वाला
हरि सों वचन कहे अनुसाला ॥ तुम तो हरि [illegible] चंडिमा यो ॥ ठाडो
रहो भलो कर पायो ॥ ७७ ॥ तुम बधको नेम [illegible] महा बली रन सार
ल ॥ तो सुध हाती मोहि को [illegible] तातकाल ॥ ७८ ॥ तः अव सुरु
सुधि भई न मा को ॥ ले तव र हनत बहाति सां ॥ ठाठे है [illegible] कृष्ण मुकुंद आगे
कहा ता कू अव मुकुंद ते भागे ॥ [illegible] नृपति युधिष्ठर ॥ मुकुंद वल
पः छले [illegible] मेघवरन [illegible] ॥ जेवनासपुन भीम
समता ॥ जिन [illegible] हमारे ॥ पः छले [illegible] हमारे ॥ ममपने

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स्वरूप छनेदलाला ॥ पुत्र करजपु जसं अनुशाला ॥ ७८ ॥ पो
चवान शिव मोह दीचे ततु मकरौं प्रहार ॥ नगरु द्वारका दूर है मो
जाद्भु कहा मुरारि ॥ ८० ॥ तव हि प्रहारौं शिव के नाना ॥ तव जान
रूझे मुझ भगवाना ॥ कहा [illegible] पडू जैसे हत पृथि [illegible] ॥ अब [illegible] दूर
रह्यो द्वारापुर ॥ जहा [illegible] ज्यौं तुम जाइ मुरारी ॥ जानी मोह अब [illegible] हरतु
मारी ॥ भागतन के हरदे तुम वासा ॥ और ठौर न ही करो निवासा ॥
जौ तुम रे भगतन दुखदाई ॥ तिन्हू के हृदै न बसहु कन्हाई ॥ समता
भाउ न हीं हरि तेरे ॥ ऐ कनत जऊ बस फुर कनेरे ॥ ८१ ॥ जे भि
नुक है सुन कृन्पति पहुवच करि अनुसाल ॥ पे हरि के वचन आ
पो पापु भस्म संग धर्म भस्म पाल ॥ ८२ ॥ ग्रपताल ते प्रापति भये
न रखत असुरन के दुख जाचो ॥ च भै हैं तकी सकल जीवाई ॥ श्री
सु पहर ठाडे [illegible] न आइ ॥ करत विचार हीते अनुशाला ॥ सनमुख
ठाडे हरि भस्म पाला ॥ आरत करुनाकर श्री नंदनंदन ॥ जो हम महन कर
हि अघकंदन ॥ ठाडे आइ भुकति के दाता ॥ कृपा करी मुझ त्रिभुवन
ताता ॥ मन वच क्रम जी परमानंद पायो ॥ असुर सकर स बल अरु सा
यो ॥ ८३ ॥ धरि [illegible] तन कर धन बगा [illegible] ना लभ भगवान ॥ क्रोध निहि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

अनुसाल को मारयो हैतीक बान ॥ ८४ ॥ श्री ॥ जरगई असुर चमू
तः कालौ ॥ पाछे रह्यो एक अनुसालौ ॥ रथ सारथ्यौ तुरंग गोरथ
र ॥ अतितीछ नेसर नंपत पाधि ॥ ९ ॥ र ॥ करेश्र प्रणाम मजीठि गोरखवरुध
र को ॥ दैत चलाये बानन नृपति को ॥ यो जनन चार गयो रथ पाछे
मारयो बानन दैत करि मारे ॥ केघ्यो रथ पुस्पार पांगिरायो ॥ सर तेह
रि धर्म जुत मारे तायो ॥ रा पत्नी मान पको नंदलाला ॥ दानव सर
पाअतिविकराला ॥ ८५ ॥ श्री ॥ पुनि दानव हरिव चक्र हे सुनंद आव
न नंदलाल ॥ कवू निहारे पद्धके रिपि व शेवक अनुसाल ॥ ८६ ॥ श्री
मे शोक सिंधु कों नंदलाला ॥ मेजुवल समन होधमें मन्याला ॥ जोशि
व की शावाजी पधारे ॥ सानर रनमें कवू निहारे ॥ भीमसेन प्रद्युम्न
पर धर ॥ मेघनाद वृषकेतु सरबर ॥ पावनासस्र रवृजी राते ॥
धर्मतन मज को बल नृदिखराए ॥ पांचवान शंकर मुजदी ॥ सासर
मुहि नम्र हरनको ने ॥ लोव हसररन मे पुगटाहू ॥ हांहे पले कालं
तनमाही ॥ ८७ ॥ श्री ॥ मेअमा सगव मे ले पद मनसा तो पधार
मुलकर करमुकरन हनफ चक्र सुदर्शन धार ॥ ८८ ॥ श्री ॥ अवकरन
को ऊमपै जो कादाता ॥ मोहि उधार लेफ तगताता ॥ कृपासिंधुकरु
णा अब की जे ॥ मुजको मारन मे पद दीजे ॥ वदरी पहम अवसरन
हो पाये ॥ तुम कर रम रातेन न हा आवा ॥ केदी धर्मनते जोगपा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हमकिकरुएकशंभुपहिन्वा

ला ॥ पुद्व करेतुमसोनेदलाला ॥ शिवअरथ्योनिरसापलतहाई

यो ॥ ज्ञानुहैनेहीविन्तुविरमाघ्या ॥ ८४ ॥ मजसुनिपाहेनिगमते

फिरवहदेतलेतनहीकोई ॥ सुदर्सनशोभामहैविलुपुरीकोजात

पहविधत्रिभुवनतात ॥ चक्रसुदसब ॥ हीतप्रसंनदेतेसारपरीतव

८५ ॥ ब्रह्मादिककरुद्रादिकदेवसब ॥ जैकतारपसाई ॥ तुमतोश

तुमविनुमकतिदेतनहीकोई ॥ जोतुजभजेकहीपदनाघ्या ॥ मकतिकरे

सलेजनहीहाघ्या ॥ पहविचारतुमजीपसाधी ॥ होइरहीमेमके

देतअपराधी ॥ पहजीवजानमानतमसाधी ॥ कततुमशरलेतनही

मुरारी ॥ दर्शनउपरसीसरवरधारी ॥ कततुमकेवर ॥ ८७ ॥ पहवचक

निजकर ॥ मजकोकबुनहीदेतमकेवर ॥ निरखदेतकोदुख ॥ तवपति

तिमनसालरनमाघ्याहैसवधान ॥ अतिअचरजदानवजीयमभया ॥ सव

भगवान ॥ ८८ ॥ अतिअचरजतदानवजीपमघ्या ॥ पुनकैसे

मकोमगवान ॥ सीसधुनतमीजतपुनहाघ्या ॥ औरधरहम

हीकुकहादुरगाघ्या ॥ दीनवचनमबदेतउचीरे ॥ औरधरहम

पावोवजनाघ्या ॥ दुखमजतेसबकहर ॥ हमदेख्यामनमो

दासतिहार ॥ कतभ ॥ मजतेपापअब ॥ अंतरजामीतुमजान

विचारकुद ॥ मपानकोईमजतेपापअब ॥ पहजीपजानदुरनार

तमव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धारी ॥ ८३ ॥ हम विचार देख्यो हाथ की पोन के ऊपाय ॥ जो
को ऊपर अघ मऊरधुज पर मपो करि है तो हम सुं मास ८४ ॥ ॥ कैकाव
ज्या भ्या तकी मऊरधुर तो तमपे ही जुद्ध करसुं देउं ॥ के मऊरधुर बा
ल तम पो घाता ॥ के कन्या मारी पितु माता ॥ का हस्तुपुर मे दुंद
बाधा ॥ के कहा हमु पुर स्वर्ग जुरा धा ॥ के कि न वे रीधन ली पो पुरे
तम ॥ तः अघ हर्षे दुरजपातज तम म ॥ के कहा हम सम रेजवा सी
मऊरधुर की पो वडो उत्तम सा ॥ का हमु ग हम कन्या पे तवती ॥ इ ले
हनवचकहुउ चरती ॥ ८५ ॥ विन हम न मोरी तजे तिःज
हपवती होइ ॥ करे ए कसो हम पे हितु हती स्मो १ सहोइ ॥ ८६
॥ सुधि न भई र जस्व दा ते तीय ॥ तः संगरा पन करे हर
षत हीय ॥ अ प्रवा हमरे पुर का हम नर ॥ भोजनु की पार जस्वा
लो के कर ॥ गुर तन ली हमरे पुर भुयो ॥ पाते हम र मऊ को तातु
गु यो ॥ आज्ञा भगा करे पितु माता ॥ के का हम दुषदी मोभ्राता ॥ ध
मैं पाप नेकु ल का त्यागी ॥ को बाधवा संग हितु मन रागी ॥ का
ह करी पुन्य की हानी ॥ इन को अघ हरि सत्य प्रमाना ॥ ८७
॥ ता न त हम कन गर माहि मपा के ऊपर परी ध ॥ तः करमो
सो दुखा कर हे क ता पाप बिध मगाध ॥ ८८ ॥ ॥ ऋ न बच कहे हैं न र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सानुसालाला || गुरुगुर गुन्यदायि नंदलाला || जो हरि गुरु सकृत

ध्यानकीनो || ताकौ फल नहु महरि कौं दीनो || दरसनु देऊ मोहि गिरधा

री || परन मनसा करो हु मारी || नैमिनु कहे सुन ऊ जनमेजा

प्रगट ह्यो कृष्ण कौ रूप तेजा || औरद्धि मारग पवरि चढु आयो

निरषदे तजो यसोमा नंद वगो को || दीनवचन कहे गोरु धरप्र

नि || कंत तुम मऊ ते दुरे रमापति || प्रगट भयो है माइ

तुमरन मांहि प्रभु भगवान || दीनो करऊ संभाषत तुम्हा वत है

भगवान || ९ || का छोती छिन सरमनुसालाहि || कीयो प

हार वेग नंदलाला हि || लज्यो व छ पलवान मुरारी || मांहि तप

रे धरन गिरधारी || देत न ह्यो हर कौ मऊ छ पा || दीन वचन कुपरक

सपि ऊ जो || दान वम मन वच क्रम ति तुह रि सों || ता ते मछ कीयो गिरध

को || म कौत हरि स्या र च्यो नि हरि सो || त त छ न लेर च्य ऊ परठ प्यो || ते

गाघात हो पुष्टि र ठाडो || हरि निरषन पति दु प अति वाडो || ११ ||

सति चिंता व सि न पति प्यो निरष क कृष्ण कौ उर || जुवतिन कहे हि विलाप वड

पर स्या च मम मनि ठौर || ११ || मांहि त भए नंद नंदन तव || भाजे सकल

ल लो ग से ना तव || पत्र पिता को नाहि सभारे || पिता न हि सुत माहि

तु धारे || जो कर कु क ते लोक निधा नो || मांहि तभए ते ऊ भगवाना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रुकमनसतभामादेनोतीय ॥ ऊपरठाडीभइकृष्णपीय ॥ मनुभां
तहहू डोसनिहारयो ॥ नहीमरहितमनमाहविचारयो ॥ प्रीतवोना
सोहरिमरमुवयो ॥ भगतहेतहरिधपनगिरायो ॥ ९३ ॥ दो० ॥ तब
सतभामाववचकहेसुनऊमावननंदलाल ॥ तुमरनमहिमरदकाइ
योमहावलीअनुशाल ॥ ९४ ॥ चौ० ॥ महासूरदानवअनुसाला
तुमकोमरदितकोयाजुपाला ॥ कतप्रद्युम्नकरतधधकारा ॥ वह
तोध्यानधरितनुमारा ॥ आपसंभारऊश्रीभगवाना ॥ तुमतोवर
नब्रह्मनिधाना ॥ आधिनाशीतुमअगमअपारा ॥ सदाअलिप
रतोससारा ॥ जलवूडोनहीअग्निनजारे ॥ पवनसोषतनुऊ
तिमुरारे ॥ शस्त्रनवेधनसकहिप्रभतुऊको ॥ अचरजदेखहो
तऊीयमऊको ॥ ९५ ॥ दो० ॥ काहेधपिनीगरवस्यातुमतोसत्य
स्वरूप ॥ आज्ञादोजेमोहिकोधरोचतुरकारूप ॥ ९६ ॥ चौ० ॥ गोवि
त्यावोदानवअनुसाला ॥ ऊरोतुमचंरननंदलाला ॥ करोसं
घारदैतकीसेना ॥ कहिहासत्यऊप्यारसुवेना ॥ दानवल्यावो
सहितनुरंगा ॥ हारनधमिसनवतभगा ॥ आज्ञादिइकुमऊंयडु
नाथ्या ॥ ल्यावोदैतनुरंगमसाथ्या ॥ तुमपरमातपुरषअनंता
॥ ७८ ॥ अर्जुनप्रत्याकहे श्रीभगवंता ॥ कहितसतभामावचधरिमांउ ॥ ९६

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कनपरुद्वादशमोध्याउ ॥ १०७

जैमिनि कहै सुन
॥ १८ १२ ॥ ८३४ हँसे कृष्ण है इस सवधाना ॥ सतिभामा के वचन सुनै स
फुराजाना ॥ कै घोसवार पार्थ को नंदलाल ति ॥ हा
व ॥ उठे कृष्ण रथ पर बैठे तब ॥ कै डुटी करन के नंदन ॥ हरि राय
कौ चलौ रथ को तत काल ॥ मे [illegible] ॥ रथ सो पार्थ दे तके
ताके रिजा स्यंदन ॥ पाच बान न बके ते चलाये ॥ सन्मुष चल्यो सिंघ की न्याई
घाये ॥ सुत अधु जाहू निध कौराई ॥ सवान ॥ एक न पर
॥ आ ऐते अन न्याल पुन छाड दी बेद सवान ॥ चढि आ या रथ अव
सा करा जैत तब खंडन की ए प्रमान २
र वि षाला ॥ ता हि ध्यान दान व अन न्याला ॥ करत युद्ध दो ऊ सर
पर स्पार ॥ करा हि प्रहार घोप ता छन सर ॥ पलै काल व धा जिम हा
रे ॥ त्यां सर चल हि वृंद जिम साई ॥ हनीव फुत सेना स्पर रन महि
दै तनि हार व डी ए सम मन माहि ॥ महा को पक पवान चला या ॥ तिः
सर कलि जतके मर रहा या ॥ फिर ला हि भगवान अपा य च ले ॥ दे व च
त्या मने श्याल महा वे ल ३ ॥ मन महि की या प्रणाम पुनि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वचन कहे अरु न स्यात ॥ मुजहि सुनास्यवन करत हो किः दूषु न नें
दलाल ॥ ४ ॥ ॥ पुनि अमर एक पुमोहि वतावडू ॥ करुणा के एम न
तन स्पपतावडू ॥ तु जेवि ने अवरनि को ऊ उधारे ॥ मुज सेप
पी को निस्तारे ॥ तुमरे भगत कोट जन तरहि ॥ दरसन दे अ
व सकल दुख वारहि ॥ जो तुम ठाढे त्रिभुवन ताता ॥ कोट स्रर
ग्राभी विष्याता ॥ पुनि अमर एक मो को कहि दीजै ॥ हमरा जन सुं
फल मम वकीजै ॥ करुणा कूप वोले भगवाना ॥ कुरम्मा वडुलु
स कर इस्नाना ॥ ५ ॥ ॥ दूप वचन नि ऋषा नें दुख भयो ॥ चरणे
तत्तकाल ॥ मजुन करि पाप तम थाता ही क्षिन मन ने शील
६ ॥ ॥ पुनि वचन कहे दे तम ने श्राला ॥ सुन ऋष्य बचन दे श्रा
ने दलाला ॥ कत तुम मुजहि न सास्त्र चलायो ॥ ततक्षिन गोरख
रनी मुरझायो ॥ यह विचार कीनो मनमाही ॥ दानव दुख वेला
को नाही ॥ यह जो प तो न धर शील पटायो ॥ जान्यो तो के क मम
आश्रायो ॥ तो ताक हे दानव चलवाना ॥ मर कुबा पो वैके निधाना
निःकर तुम रन गोरे मरारी ॥ मजु जानी सम भगोत तिहारी ॥ ७ ॥
महा कलप मुषी ज्ञान मुजकी योन कारण प्रहर ॥ तब मै आप ने हा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ये मुहि है सेवकी यो विचार ॥ ८ ॥ ॥ मनहि विचार जो पहचान मुहि म
र ख्यो प्रद्युम्न को ॥ सहिन सकल हि भगवान सुनंद बदना ते मुकुंद न
हि ॥ ८ ॥ ॥ मुकुंद प्रद्युम्न को अनिरुद्ध बंदीनो ॥ तौ पुनि तुम करशा
सुनि लीनो ॥ मुकुंद प्रद्युम्न ने मन माँहि विचार्यो ॥ पतितन जान ने हरि
मुहिन प्रहार्यो ॥ पुनि बचन के तभी मन मुरझायो ॥ तौ तुम धमस
पर न आयो ॥ प्रद्युम्न मुकुंद सहि बात विचारी ॥ भगत नंद बन स
हे गिरधारी ॥ सुनंद बदन ने क्रोध जगायो ॥ भगत दुबी ते दिन
रन आयो ॥ तुम मयो एध मंजल लेस्यो ॥ ती हनन शस्त्र गगसे निज ह
यो ॥ १० ॥ तुम कोसन्मन अदे के आम न भयो आनंद ॥ भगत न
कोदु बदे वैर न आयो आनंद नंद ॥ ११ ॥ अबन नहीं बऊ तदीन
ताकर ऊं ॥ रन म हि क्षत्र धरम तह रऊं ॥ नांते जी तकु रऊ मुकुंद
सो ॥ बिनु जीते मिल ना उपहास्यो ॥ हम जी ते बिन मीस निवा वा र
नाहिन छत्री धर्म लजावो ॥ प्रद्युम्न जी तुम अपुना की नय मुकुंद ॥ साधु आप
र म्यार पास्यार प्रद्युम्न ॥ वचन सुनन भये प्रसन्न मुरारी ॥ ठाडे हे
तनिकट गिरधारी ॥ बाल केक सुमन फलग शाला ॥ मनहु ठाडे स
भस्म रवि शाला ॥ १२ ॥ पुंडरीक करऊं ॥ अःस्य रसौ सामहि जक
ऊ प्रगटाइ ... ईनमारे सनमुख को तेम पुंडरीक न करऊ रन आइ ॥ १२ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ९५

तेषामेध

॥ सुनवो ह्योदनबमानुशाला ॥ जोमरुउचरतहोनंदलाला ॥ तु
मरुनमिषनउठावोहाप्या ॥ पलिननहीलरेपुछिएरेसाथ्वा ॥ तुमरा
भआतधरमकोनंदन ॥ सोसुहि यागकरेति: वंदन ॥ कणिदतमग्री
सरमहावर ॥ ति: सोपछकरेजोयरुचिधपे ॥ मेवतपछथरोठि
रधारी ॥ उठसरसवमीतिवलकारी ॥ करनपतकोकहोगयवा
लेहि ॥ पछकरेतुमसेजमानुसोहि ॥ १४ ॥ मासाहैबषकेत
कापुन वोलेनंदलाल ॥ पांचवानतुह्यशिवदायेतेकोउहमनो
शाल ॥ १५ ॥ हरिवचमुनतमवनमानुशाला ॥ कोछुदोयशि
वसरततकाला ॥ धरनिमकाशामेधहेगयो ॥ सकलतोकथाकु
लहुलभयो ॥ मानोमलेकालकीवारा ॥ मपठथाशिवकरनसं
धारा ॥ कांपतीनलोकमवरधर ॥ कसमदशीनचकेलीयाकर
हातमयातवमहामकाशा ॥ वानतेतुदरगयामकाशा ॥ तवबव
केतमयासवधाना ॥ कहवरनिधगतेवाना ॥ १६ ॥ पांचवा
नबषकेततवमारे ॥ देतनिसाढ ॥ येठउरपांचोसहितपसुमस
रमुरदाढ ॥ प [illegible] मवरवानचषकेतानकासो ॥ दानवकोढातीर
कसमारेक ॥ मतिवढलतनदेतमयाजव ॥ कदछारपकपिवतत
व ॥ गाढगहदानवमानुशाला ॥ पटकेयापनोपरतिकाला ॥ मर्दे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तत नु व्याकुल है गयो ॥ ऐसो वचन भीम तब कुह्यो ॥ सो सुकाटदा
नवकाली नै ॥ भीम नजर सत तम व बल मने को जु ॥ मति याको पुनि
प्रभु क जीवावे ॥ महम व सर पुन हा पनि आवे ॥ ५८ ॥ कहे
करन सत तस नथि ता महाबली अनु शाल ॥ ऐसे सरन को हन
न योग नहीं रह काल ॥ ५९ ॥ ऐसे सर मह बलवाना ॥ चले
ए व ऊ तथ रम राजा ना ॥ ऐसे प्रभु भट हैं हित हुप संगा ॥ तो के आवा
धन सके तुरंगा ॥ करन पत कर पवन गुल्ला ये ॥ कहि स चेत हुपिव
रन लगा था ॥ कहे करन सत तस न ऊग्र पाला ॥ तुम प्रसाद जी सो अ
नु शाला ॥ इस ही हस्त्यो धमि का बाजा ॥ मान्यो मो हि जीत व जराजा
मकुम्म पुन्ना प्रमाण पर एकीना ॥ दानव जीत हा पतु मदीना ॥ ६०
॥ तुम सरी करुणा ते प्रभ सु फल की या प्रमाण मा हो ॥ म सब संगी त
दान व प कपिचर्ली लगा था तो भो ॥ ६१ ॥ महा प्रसन भरो गा
र धारी ॥ कर ताप पत परकरुणा धारी ॥ धंन्य धंन्य तुम राष पित माता
पह कर जकी नाकु सलाता ॥ तु कप्प पना प्रमाण पनेकीना ॥ जी सो अ
सुरहि जगज सलीना ॥ ते भिन क कहे सनु ऊभपाला ॥ ऐसो वचन कु
हनेह लाला ॥ पुन दानव श्री पति पग लागा ॥ बोल तव चनु हाथ
मनु रोगा ... म हमारा ॥ दरसन पर सो कहे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प्र स्य मेध

मुरारा ॥ २२ ॥ धंन्य धंन्य प्रहकरन सुत तिनकी नै उपका
र ॥ गहि हाथ्यो तुम चरनन परि भव तें लीयो उवार ॥ २३ ॥ प
हवालक प्रानन को दाता ॥ टीः करवर स्यो त्रिभवनु ताता ॥ के
टजन मकौ वृप्यानेवारी ॥ दिवराप्रा मजुगीर खुरधारी ॥ बाल॰
क सममडस्सरन देष्या ॥ पर उपकारी प्रह मजु पेष्या ॥ ऐसा मातन
देष्या कोई ॥ दुबदी जेसु ब प्रापति होई ॥ मजु वालकको स्रति दुबदी
नौ ॥ टीः पुन मोहि कृतरष्य कीनौ ॥ फतु भाउ नहीहा ब संभारी ॥ कृ
रुणा करि मजुको निसतारा ॥ २४ ॥ बालकको बसु धिमत बयम
बभायो नहि तात ॥ प्रानदान मजुको दीऐ याभानु जकेतात ॥ र
प ॥ कहे हिकरन मलतसुनमैने शाला ॥ तुजपर मेवगम्भीनंद
लाला ॥ टीः सगकी नारद सनकादिक ॥ धरत ध्यान नही ये भाव
ब्रह्मादिक ॥ शिव मन तबीजु तनकर ध्यावति ॥ कोट जतन नेसि
मरनक रपावत ॥ ते पद पंकज सुमसबधानौ ॥ दर्शनु कपि
तनु मन तपताना ॥ पुनि बाते दानव मानने शाला ॥ धंन्य पकरन
सुत बाजु विशाला ॥ तुम प्रसाद हरिदरसनु कीनौ ॥ कलिवि
षमेट सभै पदु दीनौ ॥ २६ ॥ तुम प्रसाद प्रपति मेपो दरसु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कुलसकलबालकबुद्धिविशाल
नुश्रीनंदलाल ॥ धंन्यतुमारा अनुशाला ॥ अवलोकोमजश्री
२७ ॥ ॥ सुनवषकेतकहैं ॥ हरिदरसनतेस्व
नंदलाला ॥ इकसोएकपितरमुक्तितास्या ॥ मजकीरतिहित
जसिधास्या ॥ महत्मातुलवलश्रीभगवाना ॥ कोऐमनोर
तनुमरक्षाना ॥ भगतवकुलअंतरजामीहरि ॥ अवनाशत्रै
थसिद्धकृपाकरि ॥ दासभावमजपेपरिछाना ॥ पुद्धकरनआ
लोकनिधाना ॥ समजतलोकवेरभाआगेगा ॥ कहंसाथमन
योदानवसंगा २८ ॥ लोगकहेंहेजनमलेनंदलाल २९
शाल ॥ अंतहिकरनपक्षानकेगदीमी ॥ अपना
दासभाउजिनकेजीयमेतरमकतदेतति: कृष्णनरंतर ॥ व
दुषनविचारतिश्रीहरि ॥ देतसुजसजनकोकुरुणाकर ॥
वसुनमपद्मसनकृष्णजव ॥ कंठलगाइलीयादानवतव
कोटजनमकेकलुषनिवारे ॥ कृपाकरीदानवनिस्तारे ॥ करग
हिहरिदानवअनुशाला ॥ डारयोलेचरननभपाला ॥ आनिअाद
रसोंनवतिपुष्टिकर ॥ भजेभरलीयादेतसतिरुचकरि ॥ ३०
अमुनिरमणनतरमआमकुजोत्याअनुसाल ॥ धंन्यधन्यमजबेत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

कहै स्त्री पति को भूपाल ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ कह्यो कृष्ण सुन हे महाराजा ॥ य
हु मेरे ने शीश सहित तुम बाता ॥ महासुर श्रेष्ठ मति बल अभिरामा ॥ स्वेद
करै तुम मेरे सभ कामा ॥ तैसे मन कहै सन कृष्ण कुरुराई ॥ ऐसे वचन
कहे यदुराई ॥ कृपा करी त्रिभुवन नरेसर ताजो ॥ की पाधर म राजा को
राता ॥ पुनि स्त्री पति मन मांहि विचारे ॥ मजरन के सभ काज सवार
पुनि इनकी पाप भरम प जावर ॥ मुज मा जा लेन पति पृथिवी
३२ ॥ दोहा ॥ सिद्धि यज्ञ इन का करीजी तरह जुधिष्ठिर वार
जास कुल सब दुख धर्म दुमार ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ धर्म नरेस तब तब होम
सभ पृथ्वी पति चरन लगावो ॥ अश्वमेध मध धर्म जग लागो
मगत प्रताप करों न हि त्यागो ॥ ठाढार होमगत तन कम्मा जा
तन कर हो मन राजे ॥ इक इक न वसुधा में वगली वो ॥ सभ भक्त
कोना मब ता वो ॥ अभिमन्यु जन गरीका पहरा जा ॥ आपा तुम मेरे मन जस
मा ना ॥ अश्वमेध कृत होइ पूरन ॥ पाठ करे हवि विधि करों सम पूरन
रके का करा सभ राजन नरेसर ताज ॥ ३४ ॥ सोरठा ॥ यज्ञ का करा वा भगत तेपूरन कै सभ मा ज ॥ न पति पृथिवी
नु सा लत्र भसु र स्तरा चार ॥ लीनो के छल गारु पृथ्वी सर ॥ पुनि अ
है सुनि उ मनु शाला ॥ मधन लीतु मेनु धवि शाला ॥ धर्म जन्म
चार भ्रात ता

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गोस्यारेमउ ॥ तुंपांचमोप्रमानतहैतुज ॥ करउसहाइस्याम
केवाहै ॥ मनवचक्रमजउरनस्याहै ॥ इहप्रकारनववच
नकहैविधाने ॥ सभमनउशालससतकरमाने ॥ ३६ ॥ हर
बतहींयेवचनकहै सनउधरमसभपाल ॥ सूरमहावलकेत
केमहापराक्रमवाल ॥ ३७ ॥ कर्नपूतसुतिसूरमहावल
स्यवरवलीनहीं पाकेसमसर ॥ समधतंग्यामपुनीकीनी
समर्थकरीसफलीकरलीनी ॥ महापराक्रमसूरमतुल
वल ॥ सभसेनाकीनीरनदलमल ॥ इनमपनाप्रणपूरणकी
नौ ॥ छत्रीधर्मसुतसुजगलीयाँ मउ देवतकीनोयहकाजा
जीतसमरसूरगहिलाजा ॥ जेमनकहैसनउकुरुनंदन ॥ पहवचकहैकृष्ण जगवंदन ॥ ३८ ॥ वचनकहेस्य
तुशालपुनसनहैस्यामभगवान ॥ पहतिभितसनमुषवतु
जुहिसोहिप्रहारेवान ॥ ३९ ॥ प्रचमेमउजमनसोहिवि
चारस्यो ॥ तौतुमरसनमुषवानप्रहारस्यो ॥ कमलापतिकोपस
उपजावौं ॥ चक्रसुदर्शनसोंमतपावौं ॥ स्यवर ॥ उतोकहि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

जुधि ५२ ॥

हौ मुकुट काजा ॥ सत्य कहत हैं श्री पदराजा ॥ हम सेवक शिव के
नंदनंदन ॥ तव नहीं कीनौं तुम को वंदन ॥ अपुनो सो महेश के
दीनो ॥ और ठौर निरमापल कीनौ ॥ मुकुट सिर आनत ठौर न
हि दीयो ॥ शिव दीनौ निरमापल मैं यो ॥ ४० ॥ दो० ॥ निरमापल त
वसौं सुन्यो जब वह हरि ते प्रान ॥ अब मुह मार जीवाइ यौ करन प
तन लवान ॥ ४१ ॥ चौ० ॥ दीपक रन सुत नौ तन प्राना ॥ तुम कर सुना
ते श्री भगवाना ॥ जौ हम सेवक को तव तजि आवति ॥ सकल जगत
मैं अपजस पावति ॥ गुरु तजि आन ठौर सिर नावै ॥ सो नर घोर
नरक गति पावै ॥ नौ तन जन्म हमारो भयो ॥ तुम करुणा ते सभ
भाग यो ॥ और जी यह प्रान दान दीनो जिन ॥ कीयो दास अपनो नाम मुकुट के
जिन ॥ बार बार कृष्ण पग लागे ॥ भयो अनंद तार सभ अस घ भाग ॥
४२ ॥ दो० ॥ भयो प्रसन्न जो यातें तब भद्रावती के भाउ ॥ देव जन मुन्या
पति भयो मन में महा हरि हरि राउ ॥ ४३ ॥ चौ० ॥ मस्तक हाथ धार नंद
लाल ललि ॥ अपुनो दास कर्यो अनुसर लाल ॥ पुन अनुशाल च
रन लपटानो ॥ उसतति करत तन नेक अघानो ॥ मन वच क्रम क
र ता पुकी यो रूप ॥ पुनि आयो चलि नेवाट पुध उर ॥ हरबतो
भेटन अधिको दीनी ॥ हाथ जोर रचि न तो वड की नी ॥ एकला बग

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

उदायो संपूरन ॥ कुंभस्थल मुकताक पचूरन ॥ दीये तुरंगला
षटे एकवीसा ॥ मगट चूरन रपञमुत पचीसी ॥ ५४ ॥ दो० ॥ सात
स्या मुत रपच कनक भरे मोती मकताहल चूर ॥ भेट दई नपध
में को दान व कूप्म हजूर ॥ ५५ ॥ दो० ॥ बुद्धि पट सत वचन कहे मान
सालहि ॥ हम सखा पातु मद सिगकालहि ॥ सबहु मम रन तुम्हारे
हापा ॥ चक्र सुदर्शन काटे माथा ॥ तुम भगतन के दापलिका
ने ॥ बलके द्वार पालत गजाने ॥ छत्र धर्म तगतु मतिदंडापा ॥ ध
रिम वतार पुहु पगट पा ॥ ५६ ॥ दो० ॥ मछ रूप नभेत तुम दर्शी को स्या
यो हो भगवान ॥ छत्रधर मत्स्यो वपर मवद दीनो भमऐ प्रमान ॥ ५७ ॥ चो
सुनैया मोहित वैकुंठ ताहि नर ॥ सकल चतुर्भुज रूप कहो हित हूप ॥ दो
धर्म ऊ हाना हीं है ॥ उनत हीनवां कौ हो हरि सोई ॥ मोहित दफ वाल
हरतहा ॥ छत्रधर्म ततिहै हरि जहा ॥ मंगत ताहि तो सांगि रधारी
युग युग छत्रधर्म रखवारी ॥ पहवल मोहि सकल हपद दीजे ॥ करो
एक सिंधक पाम्हित कीजै ॥ सदा हो इमन चरण कमल पर तु ॥ हरि जस सुनो
सदा उत्तम मति ॥ ५८ ॥ दो० ॥ सुनेव वचन मनु शालके मीत ॥ भएक पाल ॥ कर
मेजक एदान व कूप्मला पावग भैपाल ॥ ५९ ॥ दो० ॥ ठाढे जगाच मेमत सोला
हु ॥ फिर छ पपकोताला नद लालनीत ॥ रपाचढित तापर पहुँचे सुधा पोसैना जी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिन्ह सब गहि ल्यायो ॥ उस्तुति करी धर्म के नंदन ॥ धन्य कृष्ण सुत अरिदल खं
डन ॥ प्रथ्व मै हरि धिधकार की पोसत्ता ॥ तातें करी भूपतिः उस्तुति ॥ पुर कों च
लेव जाइ निशाना ॥ गंगा तीर कटुक ठहराना ॥ सकल समुद्र मन हरषतो
मऐ ॥ नगर प्रवेसु की पाडुब गयो ॥ ५० ॥ दो० ॥ आऐ अपुनी ठोर सब करत
मऐ विश्राम ॥ वीतराग ऐहिं नवी सतव कह्यो नृपति को स्याम ॥ ५१ ॥ श्रीकृष्ण
॥ चौ० ॥ कहैं कृष्ण सुन हो महाराजा ॥ दिन थोरे की जैपहकाजा ॥ चैत्र
पूर्णिमा मा मै इकीसइन ॥ उद्यम करइ न विलम करइ कहिन ॥ आज्ञा करी नं
दके लाला ॥ दीजे दानु हिंजनम भूपाला ॥ सभ भराजेन को भोजन दीजे ॥ सभ
नन ता बसादर बङ कीजे ॥ छीर पाक ते स्वादि बहुरस ॥ विंजन सकल
वनावङ नरस कुस ॥ ततछिन तन्ह प्रकार जपहरि कीनो ॥ विधवति दान दि
न को दीनो ॥ ५२ ॥ दो० ॥ प्रथ्म भोजन दिजन कौ दीपापर सहित तमान
दान दक्षना दे सकल पूजा करी विधाना ॥ ५३ ॥ चौ० ॥ पुन सभ राजन दी
पोसहारा ॥ पहरा एम कताहल सारा ॥ हे गैर पपस्मभरन पटदीने ॥ सु
प्रसन राजा सभन कीने ॥ नित प्रति यह विधि करत नृपति सब ॥ वीतराग
रकी सदिवस तव ॥ देव पृथ्वी पुर इंद्र सहित मुनि ॥ नव ग्रह हन जा गंधर्व वि
महामुनि ॥ सावीत्री संग ब्रह्मा आयो ॥ शंकर गौरी सहित बुलायो ॥ इंद्रा
ली सहित इंद्र हरबमन ॥ तीन लोक आऐ हरि दरसन ॥ ५४ ॥ दो० ॥ चारी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दिसके लोक सम वधिय वीपति नरनारि ॥ चलि आयो गजपुर सकल दं
रसन कौतुक मुरारि ॥ ५५ ॥ चौ ॥ नैसु देवत तकि नद्दि भुलायो ॥ सुरति वं
ततहा चलि आयो ॥ हुपद कुमार निको उद्यम कीनो ॥ द्रुपद सुता को अंचरन
लीनो ॥ बांध्यो कृष्ण युधिष्ठिर साथ्या ॥ यज्ञ कंकण बांध्यो हाथ्या ॥ पहकु
तिहरि हरि अपु नेकर कीनो ॥ आनंद है यज्ञ प्रेम कीनो ॥ लो आये गांडिव ग
तुरंगा ॥ करी पतिष्ठा ही पेउ मंगा ॥ गावति गीत मुदित नरनारी ॥ बाजत हैं प
चतुर असवारा ॥ ५६ ॥ रंभा आदि अपछरा नाचत राजद्वार ॥ ग्रह ग्रह मे
आनंद भयो गवत मंगलचार ॥ निगम उचार करत द्विज हरषवति ॥ कैंकों मार
आनंद महुप चरचति ॥ करत प्रणाम मुदित वसुमति राजा ॥ पूजा करत अनेंदित
दिसौरमहुप सस हस्र अग्नि तर सौ तीय ॥ गावत मंगलचार मुदित हीय ॥
राजा ॥ बोडस सहस्र निर्वसमाज वठी मन मुदित रति ॥ रुधावती
देवकि औरसहित एणी जसोमति ॥ गावत मन तन गावति गुन ॥ पट ॥ पूजा करहि
दिशि छनार पुन ॥ अतिहि हरषत मन चरचति परसपरि वेद मंत्र केमीइ
तुरंग की कृष्ण युधिष्ठिर राइ ॥ कुंकुम चरचति षसि षकुंकुम लेपसु धारा ॥ आर
५५ ॥ करी पतिष्ठा विविध प्रकारा ॥ नव सिष कुंकुम केंचन मुकट मगा
तौ हुपलीनी निज हाथा ॥ हुपद अग्न लाग पूजविध सारथा ॥ धर्म जज्ञ करत कृत राजा ॥ मऐ
रली हरि ॥ तावर लीला प्रताप युधिष्ठिर ॥ ताको जीत करहि हुपसे
सहा चक मी पदु राजा ॥ जो ऊ राजा महग हैत रंगा

गर २

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्वमेध

गा ॥ महासुर पो धेवत वाना ॥ ताको जीत करहि वसि प्राना ॥ ९० ॥ ॥ भेट
द्र उठि संग चल लहि हंसमुख रंग महाइ ॥ सैना पति अवर जन बली तृपति अ
लेतिः आइ ॥ ९१ ॥ ॥ अ अस सहाइ नृपति सुरेवर ॥ अकृति की पो हिं नृपति
पुध्यष्टर ॥ धर्मजयज्ञ करनके काता ॥ जीत नृपति की नो कुत साजा ॥ पर्हि
वध लिवराम मस्तक पर ॥ अति विचित्र बाघ ओवल संचि कर ॥ पीत जीन कंव
न की सोहै ॥ रतन जटत तन निरषत मन मोहै ॥ हीरामन मुकता हल लागे
निर्व नैन तन मन अनुरागे ॥ कंठ दुघंटि को कुंठ विराजे ॥ पगघुंघुरू मधुर
धुनि बाजे ॥ ९२ ॥ ॥ अगजओ जर्भ बनन वन पोभाव डौ अपार ॥ रिष अभिमं
त्रे तो अस्व को अस्तुति धुन करत उचार ॥ ९३ ॥ ॥ पढ़ तो अस्वक रहि विधु सोष्या
नपति पुध्यष्टर अरूव जनाष्या ॥ दुपद सुता आरतौ तौ चेकर ॥ धूप दीप वशोर
भित सु गंधवर ॥ जुवतिन सहित महाछबरा जा ॥ पूजा करहि हरब मनेवा
जा ॥ अरजुन नपति श्रीकृष्ण कह्यो तब ॥ अ अस सहाइ चलह अरजन सब ॥ धृ
भजा भिजे नठो रने नहा रह्या ॥ हाष जोर मुष वचन उचार्यो ॥ कर डंडवत नती
सुन मुजभ्राता ॥ कर स्तुति पजपूरन जगत ताता ॥ ९४ ॥ ॥ रहौ की जे अस्व
की ऐक वर्घ लो भ्रात ॥ नेकन को हृतेड रहु तुम रक्षक जगत तात ॥ ९५ ॥ ॥
अ अर्व हाइ सदा गिरधारी ॥ सदा अपदा हरन्हि हमारी ॥ तौ वनासु अनेसाल
सुरसब ॥ ले संगल डुविल मत जहां अब ॥ कृष्ण चरन निपाद्वन हीं पराव
डु ॥ जप हरिनाम मैं अंतर सचाव डु ॥ चेतन संदार हो सवधाना ॥ रहाअ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

श्रीकररुविधनाना ॥ पत्तबीचहेद्वादसमासा ॥ चितराबरुपहुलीयरु
लासा ॥ सकलतचमःकेतुमसेनापति ॥ रुक्मकतमरेहैत्रिभुवनपति ॥ ६६
हमकरकैकनवाधिचोकरुणाकरनंदलाल ॥ बङरसदीबतकरम
जैबैठपामुषशाल ६७ ॥ भीमनकुलसहदेवसःरवर ॥ गजपुरर
हुतिकरहिसेवाहठए ॥ पतकुरमहोकशेसकलनित ॥ तुमपहकोरजकर
भपमिजत ॥ जहताश्रापदाधरेकुठनआति ॥ सिमरजतहापिदकर्मपति ॥ ऐ
सेवचनकहेमःपाला ॥ पहिराचोश्चरजननंदलाला ॥ अपुनेकरहरिशस्त्र
लीपतव ॥ बाधेकटिवनाइपारथजव ॥ फूलमालउरकोहरिदीनी ॥ अर
जनमुदितकंठधरिलीनी ६८ ॥ गजमोतनकीमालनवधमजदई उ
तार ॥ कंठकरीपारथजवहिआतिआनंदजीपधारि ॥ ६९ ॥ अकुतले
अभिषेककीचोतन ॥ नपतियुधिष्ठिरअतिहरषतिमन ॥ मस्तकहाथधार
पगदीसा ॥ धर्मराजवङकरीअसीसा ॥ आज्ञादीनीश्रीनंदनंदन ॥ पार
थचलताआरिषुनिकंदन ॥ पुनिधृतराष्ट्रकेचरननिलागा ॥ गांधारीके
धाइवरपावगा ॥ भीमनकुलसहदेवभ्रातसो ॥ विदालेनपुनिचलेमा
तसौ ॥ कुंतीपगलागेयोहितुधारी ॥ कृपाकरजुअववविदाहमारी ॥ ७०
हरिहमकोआज्ञाकरीअरुधर्मिजमःपाल ॥ अबसहायकमरुकीयाहै
संगचमः[illegible] ७१ ॥ निरषतकुंतीभरिदिपाला ॥ हरषतहीपमे

ला ६

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चुमतभाला ॥ कौनकौनसंगसुरतुमारे ॥ तेसभभाषजुतातहमारे ॥ कैसेव
लौतुमारेसाथा ॥ दीनेधर्मजअरूयदुनाथा ॥ तेसभमजुअर्जुभावसुनावडु
हमरहृदेआनंदवढावडु ॥ पुनिबोलेपारथसुनमाता ॥ सोपप्रद्युम्नकृष्ण
कोताता ॥ सुतकोहरिअनुनोवलुदीनो ॥ हसतुरंगसहायककीनो ॥ १२ ॥ दो०
सुतकुभाख्योकृष्णजीसुनहुअवनदेवाल ॥ अरजनहमरेप्रानहैभ्राताधु
मभूपाल ॥ १२ ॥ चौ० ॥ पारथकीरछाअवकीजै ॥ हमरासुषामहासुषदीजै
सदारहोतुमआज्ञाकारी ॥ सेवाकरहुपरमाहितधारी ॥ जैसेतुममजुअर्जुको
जानो ॥ तेसअरजनकोपहिचानो ॥ जैसहमशेवकभूपाला ॥ तेसतुमअकोकर
कुछ्योगुपाला ॥ जोनप्रवाधेधमितुरंगा ॥ पपमेतुमजहुसतिःसंगा ॥ हम
रेनैनप्रानकुंतीसुत ॥ ताकोकरोप्रसंनकृपायुत ॥ १४ ॥ सो० ॥ ऐसेकरसम
झाइपात्रिभुवनसुतकोवात ॥ महासुरवरजगविष्याता ॥ सुतसमतनप्रतो
वनासमपुन ॥ अरुअनुसालमहासुरागुन ॥ मातकुकतवमोतादवसव ॥ सुर
अनेकदोचमजुअसंगपुन ॥ मसकहापराधुमजुअगरधर ॥ भोतकपालद्यालमो
हिहरि ॥ तीनलोकसुरेमजुअसावा ॥ जोसहिमजुअश्रीयदुनाथा ॥ सुनकुंतीआ
नंदितभई ॥ पारथकचसुनचिंतागई ॥ १६ ॥ दो० ॥ आनंदितभईअतमोतवचु
नकहसुनअरजनि ॥ आताविभुवनताततुमहूएसेनाथती ॥ ११ ॥ चौ० ॥ होहै
सद्धजीतजगहमआवडु ॥ यहहकारजनहीविलमलगावडु ॥ जोतुमसंगकरे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नकोनंदन ॥ कृस्नकृपाप्रएकरैनिकंदन ॥ बालकनामसपरस्योजवका
ननल ॥ कुंतीभयोमहासुषपावननन ॥ पुनेमाताचचकहेनिरंतर ॥ कृस्न
चरनराबझुउरसंतर ॥ कोटसरसेनाऽकिःकाजा ॥ संगसहायकातु
मववजराजा ॥ बझमीसीसदोनीमोहितारी ॥ लागेवझरचरनगिरधा
री ॥ १८ ॥ दो ॥ पुनिअरजनकोकृस्नजोडास्योचरणिभपाल ॥ तुमराहोइस्र
तापुरनयोमसुषकहोगपाल ॥ १९ ॥ दो ॥ पुनयहवचमैषकहेमैरारी ॥
हाहुधमेपझुतेकारा ॥ पुनअरजनदेवकीचरननलगि ॥ वसोरोहणोज
सुमतकेपग ॥ ग्रासरपातकुंतीदृगठारै ॥ देअसीससमशोकनिवारै ॥ प
तरुकमनिद्रोपदीविदाकरि ॥ जेजेकारभयोतिःसबसर ॥ पुनिपारथपतिक
होपृथुधपर ॥ कृपाकृतहेकुवरसरवर ॥ पऊसमैरथातिःकीजे ॥ बालवाह
क्रमहेसबदीजे ॥ ८ ॥ दो ॥ बैत्रपतिमाकोदवसमधवाहतलकेकाल ॥ प
जाकरहतपहोंचिलेराजानंदलाल ॥ २१ ॥ दो ॥ जेभिनकहेसनकुकुक
राजा ॥ मैकतिभयोधमेजेकोराजा ॥ श्रीपतिठगपारथचलितभयो ॥ क
रगांडीवधनषधवकाचा ॥ पुंनपुनकरैदंडवतिहरिको ॥ महाप्रसन
कीयोतिरधरको ॥ पुनिअरजनपतिकहोमुरारी ॥ करनप्रतेवलक
वलमारी ॥ याकीरलानिशद्धिनकीजे ॥ पढवीचवझकएनदीजे ॥ पह
वृषकतस्रसिरतोजा ॥ सिद्धिकरैतुमरेवझकाजा ॥ २२ ॥ दो ॥ सर्वनाम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वृषकेतको सुनहु कछु प्रगटाइ ॥ शिव को वाहन वृषभ है नि शब्दन कै रैस
हाइ ॥ ८३ ॥ ॥ अर्थ सुनहु वृषभ ध्वज नामा ॥ शिव वाहन जिः ध्वज विश्रामा
वाहन नाम कहत नंदीगन ॥ रक्षा करत करन सुतकेतन ॥ शंकर वाहन की
ती न ध्वज पर ॥ शिव पूता पर न होइ विजै कर ॥ ताते पहरन कवहूं न भीगा
नि शब्दन मुरज चरनन चितु लागा ॥ याकी रक्षा कीजे पारथ्य ॥ सिद्ध होहि स्वा
रथ परमारथ्य ॥ विदा कीयो पुन भीन जनर्दन ॥ प्रथम मे चरीव रघो जगवंद
न ॥ ८४ ॥ ॥ पुनि लागे कुंती चरनन वहुरि देवकी पाइ ॥ रुकमन द्रुपद सुत
चरन हरव तला गो धाइ ॥ ८५ ॥ ॥ पुन कर जोरि जइ स्त्री पाहि गयो ॥ वचन क
हत हर्ष तमन नमयो ॥ सुनहु श्रवन भद्रावति नारी ॥ मुरज को आज्ञा काकरी मरा
री ॥ पठहे मोहि सम मा के साथा ॥ धर्मराज तम रुक्मी पुद्युम्ना था ॥ तुमनि तप्रति
रही पासवधाना ॥ टहल पन्ना की करहु विधाना ॥ मन महि राषहु ध्यान हृदि
मारा ॥ होइ पतिव्रत सुफल तुमारा ॥ सेवा करहु देवकी माता ॥ जन्म कृतार
थ है कुसलाता ॥ ८६ ॥ ॥ सुन भरता मुरजवेनती मन
हम रातु मसंग ॥ दासीवत करु एका करहु पतिव्रत होइ न भंग ॥ ८७ ॥ ॥ व
हुरवेनती सुनहु हमारी ॥ सम जग्य की रति करत तुमारी ॥ जो न पवोध [illegible]
य मे पाला ॥ तिःसौ कीजे पुरुष विपाला ॥ करि संग्राम पीठ न हीदीजे ॥ होइ प्र
ताप सुजस जग लीजे ॥ जो तुम रन महि पीठ दिषावहु ॥ सम सरन महि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अपजस पावइ ॥ पुन मउ हस ति कृस्न की नारी ॥ रुकमन सतभामा सु
मकारी ॥ पुन सम लोक के राहिधि धकारी ॥ भा वहिकरन पतरन हारा ॥ ८
८ ॥ पुनि मउ पुवती प्याक है तुम केतो जकी नारि ॥ कृत्रोध मैल जाइ के
भाग चल्यो रन हार ॥ ८८ ॥ तेभिन कहे सुन उरा जातव ॥ सैना वचबव
केत सुनै सव ॥ कहे वचन हसि भानु जतातो ॥ सुन भद्रावति हमरा वाता
हम मतवली सन उती पसेना ॥ कहेवन तनही अपने वैना ॥ कृत्रोध मेस
कल मन माही ॥ युद्ध करो भाजो रन नाही ॥ यद्यपि तीन लोक जुर आव
हि ॥ धर्मराज को हय आदु का वहि ॥ जुराहि सकल दहदि सके राजा ॥ गहि
बांधहि धर्मराज को वाजा ॥ ९० ॥ प्रलै दिन महि सकल कृष्ण कु पाव लधा
र ॥ अब न छाडो धर्म को सुन भद्रावति नार ॥ ९१ ॥ देउं आइ सकल ब्र
सेडा ॥ दिन मै प्रलै करो नव षंडा ॥ तीन लोक मै ना हन कोई ॥ धर्मतुरंग म
राषै जोई ॥ हमरे हे सहाइ नंद नंदन ॥ दिन महि अरिगन करो निकंदन
भगत अधीन दीन दुख भंजन ॥ भगत हेत आपद लगन गंजन ॥ तिन ही क
रायो यज्ञ तुरंगा ॥ सो मुनि पठति अब के संगा ॥ औरन तें पोपी है हम तौ
भिष्या पहवात ॥ वेद वचन प्रहार चन गया पिठ भिष्या त ॥ ९२ ॥ जो
हमरन तें भाज चलाना ॥ पहवा तै भिष्या सव जाना ॥ ९३ ॥ बाणी

करो रा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेधा

मज्जन निहपाल होई ॥ गंगा कलि विष कटै न कोई ॥ हरि स्मि मरन ते गति नहि
लहई ॥ पश्चिम दिशा सुरसरी वहई ॥ जो यह निहपाल होहि सभ कामा
तो हम पीठ देहि संग्रामा ॥ जो रन त्याग व लीयन होवहि ॥ क्षत्री धर्म लाजु
सभ षोवहि ॥ भागा होइ सोई रन भागे ॥ जो संग्राम न कवहु न त्यागे ॥ जो
मनु कहे सुनउ भूपाला ॥ यह वच कहे करन के वाला ॥ ८४ ॥ ॥ विदा
ली या तव नाशि सो संग्राम करन के वाल ॥ हृदे ध्यान धरि कृष्ण को चलत भये
तत काल ॥ ८५ ॥ ॥ तन भूषन वढिराइ बांधे मुकट तुरंग सवार ॥ अ
श्व युधिष्ठर राइ हृप अज्ञा लै छांडि पो ॥ ८६ ॥ ॥ के रविदा करि केसु
पुधिष्ठर ॥ भीमसेन कुल सहदेव संग्राम वर ॥ आऐ तहा जहा मषशाला
हरषत मन गिरधर भूपाला ॥ चलत तुरंग चमू के आगे ॥ नृपति ताहि
तिः पीछे लागे ॥ सभ सेना के अग्रे जन स्वार थ ॥ सेनापती की पाछे ऐवा
रथ ॥ महावली नवरूप के संगा ॥ कृष्ण सहाय कहुं सत तुरंगा ॥ इहा
चारी गवन ति वाजा ॥ पीछे चलै जाहि सभ राजा ॥ ८७ ॥ ॥ मष स्वच र
त्या उत्तर दिशा आपु ने सहज सभाइ ॥ लघु परी वज हह यक रै पञ्न
करहि सुषपाइ ॥ ८८ ॥ ॥ गाइ कुलाव देषि ढिज दीना ॥ विधवत
पजा कर हि विधाना ॥ उत्तर दिशा कि स्याव ऊवाजा ॥ वाधनि सवे को

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ऊतिः राजा ॥ देवांगना तुरंग्यु निहारयो ॥ ऐक कठोर वहु मंत्र विचारयो ॥ त
षस हंस्यकंन्या तुरगई ॥ कामवान लेसन्मुषभई ॥ घस्यौ कटक सकल च
हदिससौं ॥ पकस्यो आइ तुरंगम सिसके ॥ ४८ ॥ दो ॥ दृगकटाक्ष समर मा
दनहन माहस भवलवान ॥ कमलवदन अति के मधुप भौंहन वंक कमान
५०.. ॥ भौंह धनष सर पलक चलावहि ॥ अधर सुधर अति अरुन दि
षावहि ॥ मुसकनि सौं मनहरि सुरवर ॥ चंपकली नासिका मनहा छवि
वेसर मुकता अति सुंदर वरे ॥ गति चंचल लटकति अधरन परे ॥ मुवतं वो
ल मृदु वाल सदन पर ॥ वदन कमल छवि रहीन परि सव ॥ चिवुक चारउ
रुमाल रही फवि ॥ उपमा तिन की कहित सकति कवि ॥ कुच कठोर उर उन
ति विशाला ॥ षोडश वर्ष वहि किमवाला ॥ १०१ ॥ दो ॥ संकीरन भूषन पहरि
सौलह कीपे सिंगार ॥ कारज नैन कुरंग सम जिम केसर अपार ॥ २ ॥
रुप वरन मनमथ ते आगर ॥ गज गति चलहि छीन कटि नागर ॥ मोह
नवान मार सुरछवि वहि ॥ प्रान न जीति पीधि गति लवावहि ॥ हाप्पन ते पि
नाक गिर गए ॥ कामवान मोहित सव भऐ ॥ गहि ले चली तुरंगम साप्या
ष्किन हुन सुर उठा यो मा पा ॥ अरजुन आदि विमोहित सेना ॥ ले तुरंगग
हि देषै नेना ॥ प्रापति मथा करन को नंदन ॥ स्याम स्यौं कृष्ण कुल सनिकं
दन ॥ २ ॥ कृष्ण ध्यान धरि करन सुत ज्ञान षडग कर लीन ॥ हाउमा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१०४

कै ५

न४

उवझकरपाकीमपानबालसुधीन ॥ ४ ॥ जहा ज्ञान तहा काम कवन है
बालक धीर रिषी वेदवन है ॥ तिन मै भ्रष्टता पावव बधविष्याता ॥ लागी
करनपरस्परबाता ॥ हम तो मोहन को एविरधनर ॥ यह तो जोवनवा
लकुवरवर ॥ काम बानन ईके नहीं लागे ॥ हम को देखन मन नेमन नेरागे ॥
ज्ञान षडग लेसन मुषढाढा ॥ इंद्री जीत सुरवर गाढा ॥ देवांगनामध्य
वृषकेता ॥ कृष्णध्यानधर ज्ञानसुचेता ॥ ५ ॥ दो ॥ कवित हकन जिनकेही
एसदावसत नंदलाल ॥ तिनको मोहन सकहि मनको टरमसीवाला ॥ ६ ॥
ढाजाती पमहि वालक्षमरहए ॥ महापराक्रमज्ञानषडगकर ॥ परसन
करहि कामके बाना ॥ करनपहुत हरि भगत सुजाना ॥ क्रोध तहा एवानक
रली ना ॥ पवतन को ताडन व फुकीना ॥ भागचली इकधरमेरहाही ॥ भा
ग्या तीयदल दह दिश माही ॥ जैसे हेमताल की तारा ॥ टूटत ताहि नलागे
बारा ॥ तैसे करी त्रीयानकी सेना ॥ म्हे छितपरीनभावत वेना ॥ ७ ॥ दो ॥ को
ऊ भागनितपुरगई कोऊ परीरन माहि ॥ करनपहुत कोर जकी पामहा सु
रद्दिन माहि ॥ ८ ॥ दो ॥ म्हे वनवसन गोरधरनी पए ॥ टूटि परे सिंगार महा
वए ॥ करहि दीनता विनेसुपारा ॥ मकत करजुवालक हम दारा ॥ बारबार वि
नती जिनकीनी ॥ तेसब छांडकरनसुतदीनी ॥ जेतकयुवीकन्याकुमारी ॥
कछुनकहयो तिनबालविचारी ॥ दीनी छाडिदशाअंदशागई ॥ जेऊभरहीरन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बिछुलभनँ ॥ श्री रघुजुथी सभयो इकनारी ॥ जाहि लीनी बालकभुजभारी
च ॥ दोहा ॥ मुष्य कामुनी जगजाहि सभ नव छो जौ पसो जा ॥ कहि तमई ब
व केत को पहतुमकों नही योग ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ पठन दोइ स्तरन केकामा
पुरुष करहि जौ तहि रनवामा ॥ जो तुम करहु तीयन रननासा ॥ तौ तुम
होइ जगत उपहासा ॥ सेव करहु अव सव पुवतीजन ॥ कीरति होइ तुमारी
त्रिभुवन ॥ चलहु करहु हम रेपुरवासा ॥ तहा करहु वहु भोग विलासा ॥ ७ ॥ बर
तरहि श्राव सहित हम सभ तीय ॥ चलहु तहा अति सुष पावहु जीय ॥ तीय
जत है सभ जगत महि प्रेम तनीन परकार ॥ एक इक के सव ग सुष पहि तीय
प्रेम तफल सार ॥ ११ ॥ दोहा ॥ तौ जो प्रेम न तम धरहु हमारे ॥ पीव तहा तप्रम
रमत वारे ॥ देवांगना जान ली जहु हम ॥ सुनेहु अवन दे साचु कहत म
म ॥ ऐसा प्रेम तजेहु हरष तमन ॥ तजहु शोक रन सुबदी जहु तन
वहु सुष तुमको भोगन योगा ॥ तुम से सुंदर नर इह उहते लोगा ॥ हम सी
दासी आ तौ कारी ॥ निशदिन पहि जो कहहि तिहारी ॥ छत्री धरम सदा गांसर
ष होई ॥ चलहु संग पाप ति तुम हि होई ॥ १२ ॥ दोहा ॥ सुबदि बरावहि प्रेम
त तुमको नैसुष संग्राम ॥ कति शरीर को प्रेम करहु मदन रूप अभिरा
म ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ तीयसन सुष वालक न हीना ले ॥ हसे न हो दगपलकन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

को है ॥ श्री एक मनुष्य होती जो नारी ॥ करम जरपासों मंपरद्वारी ॥ ऐकमा
पुरषपती पभरलीनी ॥ गजपुरको कागजपठदीनी ॥ टहलकरो तुम
धर्मराजकी ॥ देषहु कृतशाला समाजकी ॥ हस्तनपुर तपिप्रापति भ
ई ॥ कृष्णयुधिष्टरको लेदई ॥ देषहु करन पत तवल भारी ॥ धन्यधन्य मु
ष कहत मुरारी ॥ ७४ ॥ दो० ॥ उत्तरदिशाको जीति केचल्यो तुरंगसुभा
इ ॥ पूरवदिश मह्हिषापुरी जहां नीलधुजराइ ॥ ७५ ॥ चौ० ॥ तहां तुरंगम
प्रापति भयो ॥ अरु पुनीइ हासो चलि गयो ॥ मह्हिषापुरी अनूपविराजै ॥ महा
तुंगगिर ऊपर राजै ॥ महामृगंड गंड विसाल रविशाला ॥ नर्मदानदी चरमकी
शाला ॥ तापरि अतिप्रफुलत अंभज जल ॥ गुंजकरत तिनपरि शोभत अ
लि ॥ वनउपवुन फलदल संपूरन ॥ वरनवरन कुसुमनिकरि पूरन ॥
नपदा अपदा गाइ सनौना ॥ जीव सुकर्मी करहिं विधाना ॥ ७६ ॥ दो० ॥ गाय
त्री षटकर्म श्रुति वेदविप्र सवधान ॥ क्षत्री सूर उदार अति देत द्विजन कोदा
न ॥ ७७ ॥ चौ० ॥ नपसुत प्रियावरत तिःकाला ॥ क्रीडाकरत फिरत संगबाला
सषीसहस्त्र संगभ्रमताके ॥ शशिवदनी अंभज दृगजाके ॥ फूलन के हिं
डोलवनावति ॥ प्रियावरतकों तीयाकुलावति सभ फूलन के करहिं संगा
रा ॥ पुहुपकंचुकी चौसरहारा ॥ करत केलवन विविधप्रकारा ॥ मदनमं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जरी ताकी नारी ॥ अतिसुकुमार सुअंग अभिरामा ॥ तातें मदनमंजरी नामा
१८ ॥ दो० ॥ अश्वत ह्यां प्रापति भयो तन विचित्र मन भाइ ॥ निरषतुरंगा
म को गह्यो मदनमंजरी धाइ ॥ १९ ॥ चौ० ॥ पुनि पावरत छवि निरषतुरं
गा ॥ अतिसुंदर रूप के सुभ अंगा ॥ चर्चित गात सकल कुंकुम जुत ॥
मुकुट सीस राजत विशाल दुत ॥ जैसिन्ह कहै सुनन कुंकुरराजा ॥ स्वेत
वरन उज्जल अतिवाजा ॥ शशि आभी दुति दुग्ध समाना ॥ म्हषन अं
ग अंग गव नेविधाना ॥ कलि नेत्र अश्यामम्म हा छवि ॥ कहे कहूं रंग
पीत रह्यो फवि ॥ निरषतुरंग अनंद तम भये ॥ दुपति हरष हीए विग
सये ॥ २० ॥ दो० ॥ मुकट तुरंग मभी लपर पढि देषो नृपतात ॥ अश्वपु
धिष्ठ रराइ को कुसुम सबा जितः भात ॥ २१ ॥ चौ० ॥ सैनापति अरजन तिः संगा
सुंदर अनेक चमू चतुरंगा ॥ सम्भव तात पढि है देषि चास्यो ॥ ताहि दिन इ
क दूत हकार्यो ॥ तिःको सम्भव तात समझायो ॥ वेगपितु ताकी ओर सिधा
यो ॥ कहो संदेस नील धुजराजा ॥ मुरुप कस्यो धर्म जको वाजा ॥ जे
सै तुमरी आज्ञा होई ॥ कहि विचार करो मम सोई ॥ ले संदेस दूत उठि
गयो ॥ वेग नृप पति पहि प्रापति भयो ॥ २२ ॥ दो० ॥ नृपत नीलधुज कों स

२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Initiative

१२

अश्वम
प
तेपर

कलद्दतवतांतसुनाइ ॥ प्रिम्पावरतगतिवाधियोअस्वपुधिएररााइ
२३ ॥ नपतिनीलधुजवचनकहेतव ॥ प्रि
पावरतकोद्दतकहेअव लेअवहमुझपासतुरंगा ॥ सुहकर
फतुमअरजतनसंगा ॥ क्षत्रीधमसदैंठमनकीजे ॥ करिसंग्रामसु
जसजगलीजे ॥ उतरलवसौठिफिरआयो ॥ समवतांतुनपतात
सुनायो ॥ आज्ञाकरीनीलधुजराजा ॥ कीजैयुद्धनदीजैवाजा ॥ प्रिया
वरतसुनहुरखतमयो ॥ सबीपनकोभिजपुरपठयो ॥ २४ ॥
अस्वशासुसंजोहतनपहुरेसकलवनाइ ॥ सेनालेसनमुखमयेप्रि
पावरतचितचाइ ॥ २५ ॥ अस्वपिताकीओरपठायो ॥ चमूजोरवा
हसनमुखधायो ॥ अरजनप्रतिवचकहेक्रोधयुति ॥ हमहैनपतिनी
लधुजकेसुत ॥ प्रिम्पावरतहेहमरोनामा ॥ मुझहीवांधधो हयअभिरामा
तोहेनपतिनीलधुजताता ॥ तुमरीचमूकरोंसववघाता ॥ सकलसूर
धरनीमरइवो ॥ प्रिपावरततवनामकहावो ॥ पारथहमैवचनसुन
श्रवनन ॥ उद्यमयुद्धकीयोहरषतमन ॥ २६ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जैभनक है सनउभेःपाला ॥ जरे दो ऊद लष्य रवि शाला ॥ पृथ्पकु
रन को उद्यम कीनो ॥ करगंडीव धनं जप लीनो ॥ सन्मुष प्रापो सै
न समेता ॥ प्रापति भयो तव हिव बष केता ॥ तिनै वचन वो लम अभी रामा
प्रप्ये मे हम करहे संग्रामा ॥ मह्वावाज को वर जरहा यो ॥ प्राज्ञा लेव बष
केत सिधायो ॥ धनुष बान ले सन मुष भयो ॥ करन पहुंत जोय क्रोध भय
यो ॥ १ ॥ दो० ॥ क्रोध वचन वृषकेत कहि प्रपावर तसुन कान ॥ तुमल्या
यो है जो रद लम हास्ह रव लवान ॥ २ ॥ हम को जान करन को नंदन
कैनम हि कर रोचम सभा केदन ॥ प्रिपावर तसुन क्रोध वढ्यो अति ॥ दससर
काडदी पक ज प्रति ॥ प्रावत सव वृषकेत निहारे ॥ एक बान सों सकल
ल विडारे ॥ प्रिपावर तपुन हने पांच सर ॥ रथ प्रसार पीपछो जमकेथर
चार बान सों चार तुरेगा ॥ जम पुरवठ पैसारि सेगा ॥ नपति नीलधुज स
त ठहरायो ॥ प्रिपावर तइक बान चलायो ॥ ३ ॥ छुटति ही प्रागनित
भए लागे करन सुत जाइ ॥ लागत ही विद्रूलमभ पाप रथाधर नवर जाइ
४ ॥ चौ० ॥ पुन सनमुष आन शाल सिधायो ॥ काडदी ये दस बान रिशायो
प्रिपावर तिको गगन उडायो ॥ रथ समेत पुन धरन गिरायो ॥ इकइक
रथ को कर ठास्यो ॥ पुन सम्मेत स्वार रथ्री मारयो ॥ तम पानी लध
ज का सुत ॥ पुन दै घडी उठ्यो प्रापृध भूत ॥ तीन बान प्रिपावर तन का

न७

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जहि अनुशाल हती एक सिमारे ॥ रथ पसमे ततिः छोम पठायो ॥ भ्रमभ्रम ध
रनि गिरि स्याम कर छायो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ तव पारथ की चमू सब सनमुख भई रिसाइ
ड हँ दिश सर खबाई गगन रहयो सम छाइ ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ जो थावरत दृशवा
न काढि तव ॥ व्रत पुर कठ हूराइ अग्र तव ॥ छाडि दीयो मुरछी सम सेना ॥
कोतक कहयो थावर तन हती वेना ॥ मृग होंकु टी उठो अनुशाला ॥ कर गहि धि
नुष तीया ततकाला ॥ कहँ धाय नधरि वान चलायो ॥ [illegible] थावरत को गगन
उठायो ॥ भ्रमत भ्रमत पुनि गिर्यो धरनि पर ॥ गहि पठ को पुन महा सुखव
र ॥ मूर्छित भयो नील धुज ताता ॥ परम [illegible] सुनी नृपति पदी वाता ॥ ७ ॥ दोहा ॥
सुत मुरछा नो श्रवन सुन नृपति चठायो करि क्रोध ॥ तीन कोट हनी चमू सं
ग अहि सुर अति पाध ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ नृपति नील धुज रन मंडि आयो ॥ सुत
को मूर्छित देखि रिसायो ॥ संग प्रभु भट थाक कवलत वाना ॥ महावली त्रैलोका
निधाना ॥ प्रथम ही निरखी रतन अनुसाल हि ॥ छाडि दीये दश सर ततका
लहि ॥ लागे सर अनुसाल हृदय सव ॥ पर्यो जाइ सम पुरत लेतव ॥ जो वा
नासर जारन गायो ॥ एक वान सो मूर्छित भयो ॥ कतव रमासा तक पुनि
आए ॥ एक एक सर सो मुरछाए ॥ ९ ॥ दोहा ॥ एक वान सो चमू सब मूर्छि
त करी रिसाइ ॥ तव कुरु [illegible] धनुष लै सनमुख ठाढो भो आइ ॥ १० ॥ चौपाई ॥ तव
पारथ दस वान प्रहारे ॥ नृपति एक सर सो कटि डारे ॥ सुत केतु [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धिक पिसा यो ॥ पारथ को कपिसवान चलायो ॥ हन्यो सारथी सहित तुरंगा ॥ त
व अरजन को व्यापो अंग अंगा ॥ एक वान पुनि ससि सो कपिस मारयो ॥ हे ग पाप क
सी गुउतार्यो ॥ नृपति नीलधुज देषी सेना ॥ सी सरहित तन अवलोकी नैना ॥
क्रोधित सात वान कर लीने ॥ अरजन उर प्रहार तन कीने ॥ ११ ॥ अरजु
न चक्र रसा इसर छांडु दीने तत काल ॥ सात वान षंड तत की ऐम हाघोर विक
राल ॥ १२ ॥ मेछो तजि वृषकेतु उठ्यो तव ॥ तीक्षन सर तजि हनी चमू
सव ॥ जो उवरी पारथ ते सैना ॥ सो वृषकेतु हनी सर पैना ॥ गज तुरंग पा
यक वज्र मारे ॥ रथ समूह भंजन कर डारे ॥ जे सिसु वारू के टदु सा रहि
ता ही सम सेना सुक पड़ारहि ॥ ते से सैना करी संघारा ॥ इक छिन माहि लगी न
हीवारा ॥ पाछे रहे नीलधुज पावक ॥ चक्र तहे जैसे मृग सावक ॥ १३ ॥
पावक अव वैरी नीलधुज सम सरज माता होइ ॥ सैना सकल मराइ केर हे
चित वसि सोइ ॥ १४ ॥ पावक नृपति नीलधुज देष्यो ॥ महा सोक वव
तम अव अवरेष्यो ॥ तव पावक मन माहि विचार्यो ॥ मुझ ठाडे ही नीलध
ज हार्यो ॥ प्रिया वरत सालाम्ह धिधर ॥ चम्हे नृपति की नास करी अ
र ॥ चिंता दुषित भयो अति राजा ॥ हम वड संरोइन के किः काजा ॥ पुत्र तमा
ता सम सहि होई ॥ पुन जग नाता ता गने न कोई ॥ प्र ले करो पारथ की सेना
सम सर मन उपजावी चैना ॥ १५ ॥ फूक दीयो मुख क्रोध सों अनिक सी अ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

भि अपार ॥ सेनपारथकीजरीत एतुमई नवार ॥ १६ ॥ जहतातहा
ज्वाला है गई ॥ पारथकी सेना हतुमई ॥ जतं अंबारीदीपकज्यांई ॥ धुजा
पताका जरमुरझाई ॥ गजतुरंगरथधरअरूछनर ॥ भिमव एकमै उठे स
कलवर ॥ वस्त्रजरहि कंचनसं जोइसव ॥ करभतुरंगगयंदजरहितव ॥
चऊदिशपावककी पोप्रवेशा ॥ जरहिस्वाररथीभजाहिनरेसा ॥ सकलवरूर
रथभस्मभए तर ॥ जरहिअस्त्रधनुषसर ॥ १७ ॥ वऊरिसहरमैनपतिस
वजारहिवसनउतार ॥ एकपुकारहिकष्टकरदीनेअग्निप्रनार ॥ १८ ॥
रकपुरैवनकेकेशजरहितन ॥ पस्तुगिरथरहिसहरडराहिमन ॥ एकमहेइ
कधरिमुरझाने ॥ इकभाषतेरनत्याजपराने ॥ पारथसकलनिहारीसैना
मूर्छितसहरनवोलहिवेना ॥ करनपनेसारथपरेरन ॥ जैवनासराजामह
छितन ॥ सभसेनाकोपावकजारयो ॥ तवपारथमनमाहविचारयो ॥ १९ ॥
हृदेविचारतपंडसुतजोछांडेजलवान ॥ कंडतपावकको करैतिसै
सस प्रमान ॥ २० ॥ मेघवानअबहीकसिमारों ॥ पावकतेतरसकसक
लनिवारों ॥ उरपतहुजिनकोधकरेमन ॥ यज्ञरअहमइसहीतोबन ॥
सन्मुषयाजनिवानचालावन ॥ पावकसोंसंग्राममचावन ॥ मतियहमर
नमैवैरुजनावे ॥ हमरेयज्ञसमैनहीआवे ॥ पुनिअतिभावतिमुषमग
वाना ॥ तासोउचतनपुष्यपुमाना ॥ इनसोंहमराहेवऊका ॥ भिक्ष

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करैहमरामपवाजा ॥ २१ ॥ दो॰ ॥ वैरुकरहिमनहपत्नमहिनहीमाऊतीले
हि ॥ तातेइनस्युवैनतीकीयेवनतहेतेहि ॥ २२ ॥ दो॰ ॥ पहुवीचारपा
रथ्यजीयकीनो ॥ धनुषवानकरतेतजिदीनो ॥ सनमुषहुपावक
पहिगये ॥ रूपधजोरकैकाजमंये ॥ प्राघमैपारथवचनवषान्यो ॥
पावकमुऊकोनहीपहिचान्यो ॥ षंडोवनकीवातचितारऊ ॥ हमसरत
नतुमक्रोधनिवारऊ ॥ तुमरेतोसमएकसमाना ॥ निगमकहैतुम
मुखभगवाना ॥ तुमरेवैरभावनहीकोई ॥ शत्रुमित्रतुमरेनहीकोई ॥
२३ ॥ दो॰ ॥ तुमप्रसिद्धसभजगतमहितुमससमअवरनिकोइ ॥ तीनेलो
कचौदहभवनकरहितुमारीसेइ ॥ २४ ॥ चौ॰ ॥ पत्नरच्यौवरधर्मजवा
जा ॥ विद्यमानहवैठेयदुराजा ॥ तीनलोककेदेवबुलाए ॥ मुनीएरषी
श्वरसभचलिआए ॥ यज्ञकरतहैश्रीनंदलाला ॥ शोभादेतधरमभु
पाला ॥ हमकोपठ्योसाथतुरंगा ॥ सूरवीरदीनेवऊसंगा ॥ जोतुम
लेऊछिनाइवाजकौ ॥ विघ्नपरतहैकृष्णकाजकों ॥ यज्ञस्यामहरिनिमि
ततुमारे ॥ सफलकरोतुममीतहमारे ॥ २५ ॥ दो॰ ॥ जोतुमचाहतहो
लीयाहमतेअस्वछिनाइ ॥ हमपिकरजेहैजजपुरीकहैकृष्णकोजा
इ ॥ २६ ॥ दो॰ ॥ देषअश्वंवेगातुमरेकाजा ॥ देहुअश्वहुतीतुमकोवाजा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सगवष्पिवीपरषिरे मामजव ॥ तै जावहि गोमखषा लातव ॥ पुन नु
जुवि बेनि वेदन होइ ॥ हो है पजसंपूरण सोई ॥ जौ तुमरे जो पयहु
विनि स्मारै ॥ अवही भक्ति न करो उठाइ ॥ आगे या है भोग तुमारा ॥ है
सां कहून काज हमारा ॥ तुमरा सुख असुख श्रीभगवाना ॥ दोऊ कहै र
श्रुति एक समाना ॥ २७ ॥ हमकों चिंता नाहि कछु विद्यमान नंद
लाल ॥ पजनमलठाठे जहां पावन पुंज गुपाल ॥ २८ ॥ हमरे ते
सहाइ नंद नंदन ॥ कीन महि करत कोटि अघ के दन ॥ देत तुरंगम
होकि धा नाही ॥ कहो जि कछु तुमरे मन माही ॥ कहो जप्पार तकृपा
कर ॥ तिः प्राकार हम जाइ कहे हरि ॥ यह तो है भारधर कों बाजा ॥ इन
साँ कहून हमरे काजा ॥ कोटि पजनफल हम सब धाना ॥ नितपर सहि
दरसु नै भगवाना ॥ पारप्य वचपावक सुनि काना ॥ भयो प्रसेन क्रोध वि
सराना ॥ २९ ॥ तबवै संतर क्रोध तहि भिल्ल्याध नें जैमाइ ॥ कृपालप
कहरख तमपावचन कहे प्रगटाइ ॥ ३० ॥ अरजन हम तुम को न
पछान्यो ॥ तुमहूं नाम कह्यो तब जान्यो ॥ तुम कोन मसकार हमारे स्म
व ॥ छिमा करो दूषन हमरे सब ॥ तुमको कहो जप्पार प्रवाता ॥ कहा
लाहि त्रिभुवन के ताता ॥ कोटि पजनफल दरशन जाको ॥ नित अवलोक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तहां मखसता को ॥ धर्मराय के सदस सहायक ॥ संकट हरत अमित सुख
दायक ॥ नृपति पुछि अरु अरु कहरि माही ॥ भेद भाउ अस तरु के कछु नहीं ॥
२१ ॥ दो० ॥ सो अब कहो अरजुन तुम्ह पहि यज्ञ मख लै भगवान ॥ नाम लीय अ
घ कुल मिटहि सो ठाढ़ो सवधान ॥ २२ ॥ चौ० ॥ जहां सावधान हरि होई ॥ २
कोटि यज्ञ फल सुकृत होई ॥ यज्ञ करावन भित हमारे ॥ वेद वचन कार
तिअ अनुसारे ॥ मख अपुन ते वेदन का से ॥ नाना विध जग धर्म प्रकासे
ली ये चौरासी निगम दान व जव ॥ मख करहु सवधान सुनो सव ॥ की यज्ञ
जात में विमोह मारी ॥ पच जो करि तसकल संसारा ॥ जो पहु वेद सगर न
हो तजग ॥ न एहि तत वसकल धर्म मग ॥ २३ ॥ दो० ॥ जिः प्रगटो ए धर्म ज
ग सकुत विविध प्रकार ॥ सो हरि हेतु मरे सबा की रति अगम अपार ॥ २
४ ॥ चौ० ॥ पावक अगनि शांत कर लीनी ॥ सावधान सेना कर दीनी ॥ अ
व भाव कहि बोलन लागे ॥ पावक मन अनुरागे ॥ प्रभु की पाजन
म जौ हि तपन्त ॥ यह वतो तुप छयो जेमि नपति ॥ हमरे हृद संद हमि टा
वऊ ॥ करु ताकरि यह कथा सुनावऊ ॥ कैसे कीया नी लधुं राजा ॥
के न्या को पावक सो काजा ॥ किं नाम ऋषि त्रीन पद्द ॥ पावक सो प्रसगा
ई भई ॥ २५ ॥ दो० ॥ और परख त्रैलोक माहि का हू या पान कोइ ॥ कन्या अ
गो कार कर भरता कीनो सोइ ॥ २६ ॥ दो० ॥ देहुं उरत जिनके देवमख ॥

ज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

रा

परसकीऐकं हो इनारिसुष ॥ ताजन्मि भई नीलधुजराजा ॥ पावकसोंपुत्री
कोकाजा ॥ यहीकथाकहिमोहिसुनावहु ॥ केसेब्याहभयोसमझावहु
केकंन्यारक्षावरलीनो ॥ केयहमातपितावरुदीनो ॥ उत्तरदेऊकृपाक
रिमोको ॥ जैमिनमुनिपूछतहोताको ॥ मुनिपतिमोपरकरुणाकोजे
सकवतातुमोहिकोहिदीजे ॥ ११ ॥

१४ १-५५ १८

जैमिनकहैसुनजुधिष्टिप
तिवर ॥ सुनऊकथादेश्रवनहदेधर ॥ पावकआहसुन्योहमजेसे ॥ व
रनसुनावतहोनृपतेसे ॥ महिष्मापुरीकोनृपतिनीलधुज ॥ महाबलीसु
रसमजानत्रजि ॥ तिःऊहपुवतीज्वाल्लानामा ॥ नृपतिभगतहरिकोनिः
कामा ॥ पुत्रीजन्मएकनृपतिघर ॥ महातेजआभासुंदरवर ॥ स्वाह
ताराखीनामसुताको ॥ अतिसुचित्रछविमयप्रभुमनाको ॥ १ ॥ ॥ पा
यवरवककीभईजवतोनृपकीविचार ॥ अतिआज्ञाहेसुताकोदीजेपर
किभतार ॥ २ ॥ ॥ नृपतिनीलधुजविप्रबुलाये ॥ कहितबतोतुदिजको
समझाये ॥ महपुत्रीकोपूछोजाई ॥ जोपतिकहेसुदेऊबुलाई ॥ त
तछिनदिजस्वाहापाहिगये ॥ वचनकहतलजितजोयमभये ॥ स्वाहाको

न४

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पठ्यो तोहि पठि भे पति ॥ मन बांछत तुम लेऊ भोग पति ॥ आज्ञा की नी
पिता तुमारे ॥ जो पति करो सु देऊ हुकारे ॥ सुन कंन्या प्रीडा उपजी आन
उत्तर कह्यो विप्र को न्रप प्रति ॥ ३ ॥ दो० ॥ सुन कंन्या लज्जित भई कहि प
ठ्यो पित ताग ॥ बालदशा हम री अबहि नहि चाहो रस भोग ॥ ४ ॥
चौ० ॥ बहु रोतीन वर्ष वीते जब ॥ आठ वरष की सुता भई तब ॥ करी
सभा रिव ऊपर तब भे पति ॥ कंन्या बडी भई देहो पति ॥ दस वरष ऊउ
परां तसु ता घर ॥ मात पिता तिः हो तपित तिवर ॥ जो रजस्वला सुत
न हारे ॥ ताके मात पिता हत्यारे ॥ चारो वेद कहत विधि ऐसे ॥ क्षत्री
ध मंजी जी ये तेसे ॥ पुनि न्रप ब्राह्मण लावग पठायो ॥ दिज कंन्या पति भी
ष सुनायो ॥ ५ ॥ दो० ॥ मन बांछति पति लीजे पिता कहत है तोहि ॥ वेद व
चन स्मृति पाली ये उत्तर दीजे मोहि ॥ ६ ॥ चौ० ॥ विप्र वचन सो हो सुन कों
ना ॥ आंख्या न्रप प्रति यह वचन वषाना ॥ आज्ञा करी पिता मोहि जैसे ॥ स
त्य प्रमान कहो हम तैसे ॥ हरषत विप्र पुन पति पहि गयो ॥ कंन्या को
वृतांतु कहि दयो ॥ ष जव वचक कहत भे पति मन भायो ॥ ता हित न्रप उत्तर प
ठायो ॥ कंन्या कौ लज्जा अति भई ॥ पिता निरष मन मो सकुचई ॥ पु
त्री प्रति न्रप वचन वषान्यो ॥ पिव कर जो रन ही सकुचान्यो ॥ ७ ॥ दो० ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥११२

अश्वमेध

सुनऊ सुत श्रुति वचन ते कत्ति तुम आव तलाज ॥ इच्छाचारी पति करहि
जे कंन्यारि षराज ॥ ८ ॥ सुरनर सुता नगकंन्या सव ॥ मनेवां
छत पति लेत सकल अव ॥ वेद वचन निश्चै जो धारऊ ॥ तीन लोक
की रीति विचारऊ ॥ जो वर की इच्छा जो पति ते ई ॥ लेऊ मंगा स्वकर ऊप
ते साई ॥ मांगले ऊ पुत्री पितु ते वरु ॥ जैसे जगतरीति तैसे करु ॥ तव
वाली स्वाहा सुन ताता ॥ तुम से कहन उचत न हो वाता ॥ महाकार
म वसि अंतरु जो ऊ ॥ मांगत के तेपि ता पाहि सो ऊ ॥ ७ ॥ तीन लो
क चें दहिभवन जो ते सकल अमेग ॥ ट्टिक नके कोटि निमहि के ऊव
धा साधु के संग ॥ ७ ॥ ब्रह्मा शिव इंद्रादि रिषी सव ॥ सकल अर
धीन की चमन मप्य अव ॥ नित प्रति उतपति करता पितामा ॥ शोक
रविसि जो री अभिरामा ॥ गौतम रिषि पत्नी पश शाप कलु भायो ॥ मेसु अव
र धरि छलु करि आपो ॥ मुख्य देवता यही कहावे ॥ तीन लोक प
जा व ऊ पावे ॥ तेऊ मोहि मोर वसि कीने ॥ त्रिभुवन जन सभ मदन
अधीने ॥ इन सभ के पति श्री गिरधारी ॥ वसि कीनो गोकुल की
नारी ॥ ११ ॥ करत वे नती पग परत जतन मचावत मान ॥ नि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तमगरो षति ज्वरि नीत्ते तमहोकोदान ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ स्वारिनसोर सप्रीति
ननाथ्यो ॥ कोटक्ख रग रुषति नहिदषपो कोघलतईंचठोइ नारिवर
षलकी पनि शुद्धि नतिनसों हरि ॥ हितसो ग्वाएनी चीर चुराए ॥ सचि
सोदुरिदधि माष नेषाए ॥ क्रीडाकरी अनेकप्रकारा ॥ मोहितलीए गोकुल
कीदारा ॥ सुनहु तात तजौ उष लिहारी ॥ यहतो सकलमनवसिकारी ॥ १
३ ॥ दोहा ॥ तीनलोकमाहि जे पुरष इकतीयसौं रतिहोइ ॥ नहिअसक्तमद
नविषे हम करहि पति सोइ ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ यहतोसकलकामवसभौतर
हौ नहि चाहतजीयते सौवर ॥ मोमनन हीमदनकी प्यासा ॥ नहि वांछ
तिहीते भोगविलासा ॥ हम करहि अपनोपति सोई ॥ जाहिमैं तमेंउप
पतिहोई ॥ जीवनमरन एकपतिसंगा ॥ कबहुन होत पतिव्रत भंगा
नीवतिअंगजो ईपतिदरसे ॥ सएसोई भोगेतनेंपरसे ॥ तातेपावककक
रोभतारा ॥ होइसुजस त्रैलोकमंझारा ॥ १५ ॥ दोहा ॥ जौ त्रिय भोगो अवरप
तिसएभोगोयेओर ॥ पावकपति सभतें भलो अहि हदी जेतिः ठोर ॥ १६ ॥ चौ ॥
देहदे पतिभोगे सभदारा ॥ तिनतहीहीएविवेकविचारा ॥ देउपिता मुरु
कौपावकपति ॥ यहकारजकीजे मन हरषत ॥ सुनत नीलधुजविसमै
मभो ॥ चिंतावसिविकुलहुगयो ॥ कंन्यामुषतेकहानिकारयो ॥ पावक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्व मेध

तेजु नहीं ऐवि चार्यो ॥ कह्यो नीलध्वज सुनपत्नी सुज ॥ ऐसो भरता पाग
नहोतुज ॥ निंद्राकराहि सकलसंसारा ॥ जगमाहि अपजस है इह माता
१७ ॥ ॥ कंन्या ऐक मरखी दई सप्नमुख नहीं पाग ॥ पहिक तको नो नील
ध्वज माहि हसि तिगला गं ॥ १८ ॥ ॥ अति सें श्याम वरन है जाको ॥ अव
गुन सरव शोति नहीं ताको ॥ देत महा दुष जगत जरावत ॥ निरषे महा त
पति उपजावति ॥ मुझ को हास्यु कराहि कंन्या सव ॥ स्वाहा की याग ऐ अभर
ता अव ॥ परस की ऐ तो ऊजा रगाता ॥ ति: वर सो कैसी कुसराता ॥ ति: है
षका पतनु डरई ॥ को ऊ जानि ऐसो पति करई ॥ तुम को यो गपुन ही पति
ऐसो ॥ लेहु अवर मागे तो पतेसो ॥ १९ ॥ ॥ पावक वरु नहीं तो ये अव
रक हो तुम कोइ ॥ तीन लोक मैं ताक हो पुरष मंगावो सोइ ॥ २० ॥ ॥ पु
नि स्वाहा मुष वचन उचारे ॥ सुनि रुष अव नदेंपता हमारे ॥ मन वच कर्म
पावक पति कीनो ॥ देह समर्पित : मुझ दीनो ॥ ऐक कृष्ण हेर क भरतारा
ऐक पिता तीन नि जग सारा ॥ याही पति ते हम कुसलता ता ॥ अव
र सकल मि थ्या हवा ता ॥ कति तुमै पावक निंद कृताता ॥ वहते
तीन लोक विष्याता ॥ जहां तहां व्रहर ह्यो समाई ॥ सु मदा ष्टी
जग को सुषदाई ॥ २१ ॥ ॥ भवनमें चतुर्द सम दृष्टा सो जग सोम

ली ८

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिपरवान सिद्धि सकर है मंत्र अस्तुति जाकर तविधान ॥ सो ॥ चौ
सर्व भक्ती इनकी तुम कह्यो ॥ पंचामृत इनहीं दह्यो ॥ बीरबल
असुदा बसुपारी ॥ श्रीफल बटुर सस दा अहारी ॥ तेम पितुक हैं
स्वरग के राजा ॥ ऐसे लव दम से किंकाजा ॥ यज्ञदान तप जो नरक
रही ॥ तिन को अस्तुति पंडित जीय करही ॥ विप्र करावहि विवध प्रका
रा ॥ पढहि अपशरा संग सकुमारा ॥ पंडित करत तपस्या उनकी
उरत स्वरग जिन हैं तिउनकी ॥ २३ ॥ दो० ॥ पाहि पर पेची नाहि वरोक
रहै अग्रभतार ॥ जैमिन जनमे जैक है सन ऊकुक प्रावि स्तार ॥ २४ ॥
चौ० ॥ यह कहि स्वाहा उठी मुदतिमन ॥ जाइ की पा गंगा मजन तन
पाहरे ने तन वस्त्र हरष अंग ॥ भूषन मे अंग सधार पविवधई ग ॥ अ
ग्रकेड ति हीर वनायो ॥ चंदन का पुष्प अगनि मगायो ॥ गोघृत तन्दी
रमधु सकल पात्र मधि ॥ तामधि लोग एला जाती फल ॥ जावत्री अव
रोट सुपारी ॥ मेवा सकल भोग सव कारी ॥ सकल सुगंध औधपद्री
पवर ॥ हेम सम गृ सावधान करि ॥ २५ ॥ दो० ॥ विधवत होम की पात हो
स्वाहा जा पध पुभा दुकी चाप्रवाहन ध्यान धप पावक मुरुपति स्मा उ ॥ २६ ॥
चौ० ॥ यह विधकरि स्वाहा उठ गई ॥ जहा पिता तहा प्रापति भई ॥ सुनऊ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प ९२

अस्वमेध

तातप्रहवचनहमारा ॥ सुकुकीनोपावकमरतारा ॥ प्रथमहिरिव
अगनिहितपतावहि ॥ तिःकरसकलदेवसुषपावहि ॥ तिःतोष
तेवकीसोई ॥ तप्रगअनाजउपजेवउलोई ॥ राजाप्रजादेवनसा
षउपजाहि ॥ जीवजंतमनहोतसुषाहि तातिह ॥ कहतुमपिताअ
गनषिधकारउ ॥ अपुनेहृदेनज्ञानविचारउ ॥ २७ ॥ पुनि
भःपतिचितावठीस्वाहाकीनोध्यानु ॥ दुरवलदिजकोमेसाधप्र
अनिलमयोसावधान ॥ २८ ॥ दिजकोनमसकारनृपकीनो
सिंघासनतजिआसनदीनो ॥ आदरुकरिनृपवचनउचारे ॥ म
एकृतारथदुरसतिहारे ॥ तिःकारननुमकहाकृपाकरि ॥ आए
हमरेग्रहदिजवर ॥ तवपावककहोत्योभःपतिपति ॥ केन्यामुज
दीजेहरषतचित ॥ उनमनमेभरतासुनकीनो ॥ तनसुजस्वीवस
मपुलकीनो ॥ होपेध्यानुधरिमोहिबुलायो ॥ तिहकारनहमतुम
ग्रहआयो ॥ २९ ॥ सुनिराजाहरषतभयोउत्तरुदीनोएहु
हे केन्याहमरेभवनजोउभावेसोलेहु ॥ ३० ॥
पावककहेराइसुनलीजे ॥ स्वाहानामसुतामुहिदीजे ॥ पुनबोल्यो
राजासुनबृहमन ॥ स्वाहापावककपतिकीनोमन ॥ सोइपावककनृपप्र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कुहि पठायो ॥ निरसंसै जो पस सप्रमानो ॥ तुमरी कंन्या ध्यान लगा
यो ॥ कीयो प्रवाहन मुकुहि बुलायो ॥ देह समर्पदीयो उनमो को ॥ स
त्य कहत है न पहम तोको ॥ सचिव प्रधानन पद बुलायो ॥ सभा मै ध
पहिम भाव सुनायो ॥ ३१ ॥ दो० ॥ मंत्री सौनन पभाव पो सभै वतातु समझाइ
सुन प्रधान हम री सुता पावक लीयो मंगाइ ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ कह्यौ प्रधानन
पतिसुन लीजै ॥ पावक कौ कंन्या नहीं दीजै ॥ सप्तम बापुन स्यामवर न
ॠः ॥ अप जसु हो इनिंद कुसुताये ॥ यह ब्राह्मण पावक नहीं होई ॥ प
हतो हि परपंची को ई ॥ सभु जग करै तो हि धिकारा ॥ कंन्या दीनो अग
निभरतार ॥ सुनि कै मन न तके धजो पधारयो ॥ पुन अपने मन मांहि बि
चारयो ॥ स सुर पिता दो ऊ ऐक समाना ॥ वेद बचन यह सस सप्रमाना
३३ ॥ दो० ॥ नप को दो सु कछू नहीं पावक कों पविचार ॥ मंत्री सभा समेत
पहन पविनंद इम प्रजार ॥ ३४ ॥ चौ० ॥ कहु इति है पावक को पर कोप मय ॥ ला
गो जरन सभा दरान दुब ॥ बैठा ध्यान नप मंत्री यहु ॥ अग्नि प्रवेस कीर
यो वकुत हा ॥ प्रगट दीय जु जरहि प्रधाना ॥ प्रपमहि पगं जु रीदुबमा
ना ॥ दाड़ी मूछ केस सभ जारे ॥ बसन भसम करि भः पर डारे ॥ लागा
जरन सचिव कुमाप्या ॥ महादुखित पटक तम वहा प्या ॥ पावक कीनो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

तुजि ५

वऊ विस्तारा ॥ मंदर पर सकी यो फिः वारा ॥ ३५ ॥ डार जेवरी ग्रीव मंहि
चरन परयो लपटाइ ॥ छिमा भई तब अनल की लीयो ब्रधान बचाइ ॥ ३६ ॥
तब पावक जीय क्रोध नेवप्यो ॥ मंत्री जर तप्रधा उवासो ॥ देष प्रतंर
ता को भयो पाला ॥ आहु अरंभ कीयो ततकाला ॥ प्रावति भइ भय पसा ली तब
नव भाष्यो तिः को व तो तसव ॥ नारि कहै यह अग्यान होई ॥ यह तव रपंच
कपट छल होई ॥ स्वा तुप की यो सत्य सुनि आयो ॥ छल करि पावक नाम कं
हायो ॥ तु मही अपने हृदे विचारहु ॥ कति को पुत्री ब्रत को टारहु ॥ ३७ ॥
इस को दो जे सा पय भऊ करो प्रतं ता जाइ ॥ सो तु उह पहु चानि के तु मंहि
कहा गी आइ ॥ ३८ ॥ पावक को अन पक हयो भा विधरि ॥ इन पुव ती संग
जाऊ कपो करि ॥ अग्नि चल्यो ता के उठि संगा ॥ जार न को तीय के सभ अंगा
पावक को ले गरु वे ठा यो ॥ सुनमुष है यह बचन सुनायो ॥ कत तुमइ
हा कपट करि आयो ॥ छल करि पावक नाम धरायो ॥ तुम तो अनल न हु
पन ही होई ॥ कर पर व चदि षाव ऊ लोई ॥ सुन पावक जीय क्रोध तिम
यो ॥ मुष ते अगनि ते तु नि कसयो ॥ ३९ ॥ अंग दहन तीय के भ एउ
र वसन जराई ॥ महा क्रोध पावक की मंदर लागो धाइ ॥ ४० ॥ जर
त भवन तीय नैन निहारे ॥ नगन भई तन वसन उतारे ॥ धाइ आग्नि के

बरनपरीतव ॥ करीबेनतीकमाकरोप्रभाव ॥ पुनिपावककती
यदेहजरजाइ ॥ भोगीनारिन्नपतिपतिआइ ॥ ४९ पतिआगेकरी
जे ॥ ज्वालातेजुशोभितकरलीजे ॥ सुनतवचनराजाउठिधायो
वऊरविनेकरिमनमोहिकमायो ॥ ५० ॥ चरनलागिविनती
करीपावकतोबेपाराइ ॥ तापाछेआयोभवनलीनोमीतबुलाइ
५१ ॥ नामघविनोदसुजानमीतको ॥ तोसोकहोभावतातचीत
को ॥ पावककीकहिकथासुनाई ॥ कहेसकरोमीतसुबदाई
कह्योविनोदसुजानसुनऊनृप ॥ यहपावकनहिहैतनरांध
व ॥ कपटरूपछलकरिकेआयो ॥ मंत्रसकतिकरिलोगज
रायो ॥ चलराजातेःदेषहिजाई ॥ गएसभामहिदेषोवताई ॥ क
ह्योविनोदसुनोरेदिजवर ॥ पावकनकहेतकतिछलकरि ॥ ५२
॥ कहेविनोदब्रह्मणसुनऊआगकहाहोआव ॥ जारेहैवऊ
लोगतेमंत्रशकतिसुप्रताप ॥ ५३ ॥ सुनपावकजोपक्रोध
कीयाघन ॥ मुषतेज्वालाप्रगटकरीघन ॥ प्रथमेहनिविनोदको

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

११५ ॥

अस्वमेध

गयस्यो ॥ दाडीमकुंजारथसमरथो ॥ जरतकुरोबेमटाअवारो ॥ दसि
दिसमगनेकीरनविस्तारी ॥ निरबलौकसविकूवलभरे ॥ प्रजा
सकलराजापर्कीगए ॥ करऊकुलइतोबरनकोंनप ॥ हमसीरक
करऊनरअधिप ॥ राउवेनतीकरीअपारा ॥ वेसंतरकोविवधप्रका
रा ॥ ४५ ॥ सभीसहितनृपनीलधुजेठाढेद्वैकरजोर ॥ मुख्य
देवत्रैलोकतुमकृपाकरऊममओर ॥ ४६ ॥ तवज्वालाजी
पक्रोधनिवार्यो ॥ पावकपतिनृपवचनउचार्यो ॥ जौतुमआ
इवसऊनगरीमऊ ॥ तवस्वामीपुत्रीव्याहोतुऊ ॥ हमरेशत्रुन
पसिवलभारी ॥ तिनतेरछ्याकरऊहमारी ॥ तुमसारषावलीपु
रहोई ॥ हमकोविघ्नलगेकोई ॥ पावकवचनसत्यकरिमान्यो
तुमरेनगरवसोयहठान्यो ॥ तवैनृपतिवालाहितदिजलीनो ॥ आहु
तिषइअगिकोदीनो ॥ ४७ ॥ वेसंतरकोनृपकह्योत्याउ
वरातवनाइ ॥ जितनीसरवातुमकहोकरोसमग्रीजाइ ॥
४८ ॥ तवपावकमुखवचनवषाना ॥ षटहंसहंसनकोकरऊ
प्रमाना ॥ अवलौलौगआवतवऊताहा ॥ मंगलच्या

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ऊ होत है जहां ॥ नृप अस्व ज्यौं ले आयौ हे धायौ ॥ पावक नृपति अ
रंभ रचायौ ॥ दस सहस्र केकी आया कुतव ॥ पट रस भोजन
अ सब विजन सब ॥ लगन सम्मै पावक नृप आयौ ॥ हरषत माथे मुकुट
बनायौ ॥ संग जनन के ऊ बराती त्यायौ ॥ मुनि राजा आगे उठि धायौ
॥ ५८ ॥ सभी सहित राजा चलि आयौ अग्नि लिया यौ जाइ ॥ कुशल प
प्रश्न आदर सबकी पायौ ने दृति अतिशय ॥२॥ पं ॥ इति उत नृपति दि
ष्टि भर देख्यौ ॥ संग बराती कौ ऊ न पेख्यौ ॥ पावक पूछत नृप वच
न बखान्यौ ॥ साथ बराती के ऊ न आन्यौ ॥ मंगल बात कौ कीयौ
समाना ॥ जैसे तुम मम बचन बखाना ॥ षट सहस्र की तुम वि
धि दीनी ॥ तिः तेड गन सम मग ही कीनी ॥ कहो तात की जे अब कैसे
व ष्पापा ककीने हम ऐसे ॥ पावक कह्यौ सकल आवहिंगे ॥ भो
जन तुमरा सब पावहिंगे ॥ ५९ ॥ कहै नृपति पावक सम जन
न को लै ऊह कार ॥ कहि पठव ऊ सम को आवहि आवहि कर पार
धार ॥ ५२ ॥ व जहि व ते अपार पावक की पा प्रवेस पुर
मंगल गावहि नारि महि बापुर आनंद भयो ॥ ५३ ॥ पावक
नृपति भवन महि त्यायौ ॥ हितु करि प्रभु मगठोर बैठायौ ॥ आगनि

है

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१५८

अस्वमेध

भूप प्रति वचन उचारा ॥ हो भूप या कहु करो अहारा ॥ नृप तिरसोई दा
र बुलायो ॥ ताको कहि बृतांत समझायो ॥ पावक को लेजाउ रसोई ॥
जो कछु मांगै दीजे सोई ॥ उत भूग को लै सो पवसिधायो ॥ षटु रस भो
जन सकल जिवायो ॥ जो कछु पाकु रसोई माही ॥ सम भछनु कीनो
छिन माही ॥ ५४ ॥ ॥ पाछे पाकु रह्यो न कछु पावक तृपति न कीन
अधिम भूप सों पुन उठि चल्यो न्रिभय बमहँ व प्रवीन ॥ ५५ ॥ ॥ चक्रत
निरखे रसोई दारा ॥ पावक लीयो सकल अहारा ॥ भूप तपास पु
कारयो आई ॥ पावक की कहि बात सुनाई ॥ पुत्री देइ न नगर निका
रउ ॥ हमरा वचन श्रवन निजु धारउ ॥ नित प्रति करे रसोई हो
से ॥ कहि भूप निव हतव हु कैसे ॥ तब हम पर शत्रु चढि आवहि ॥ त
व पावक को वेग बुलावहि ॥ हम पर चढ़ि आवै नहि कोई ॥ पावक नि
त दुख दायक होई ॥ ५६ ॥ ॥ पुत्री देउ विवाह के वेदो कत परमान
कंचन रथ गज जसांतु दै कार जकर उपधान ॥ ५७ ॥ ॥ पुन राजा
मुख वचन उचारे ॥ सुन पावक तुम तात हमारे ॥ हम को संकट हो
है जबही ॥ तुम रा करे अबाहनु तबही ॥ तब तुम आवउ वेग कृपा क
रि ॥ प्रलय करण की जेकर णाधारि ॥ तब भूप पति वर विप्र बुलायो ॥ प्रा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ति पाठ करत तिहि दिन चलि आए ॥ वेद मंत्र उचारि कार जु भयो ॥ विधवत
दान दई जनमेजय दयो ॥ पावक आपुने भवन सिधारयो ॥ स्वाहा ले
आनंद जाय धारयो ॥ ५८ ॥ जैमिन मुनि नृप बात केअक पावर
तातु समझाइ ॥ अश्वमेध कृत ग्रंथ को पंचदशो अध्याइ ॥ ५९ ॥

छं ५५ ११५९

म

एः वैकप्याव तौ तु जैमिन कहे सुनु हृन्नप
ति जनमेजय हरषत चरन परयौ मुनराज के ॥ १ ॥ जैमिन क
हे सुनऊ भूपाला ॥ एः वैकप्या कहौ सुविशाला ॥ पावक अरजुन
सौं हित कीनो ॥ तब हित प्रबोध समर को दीनो ॥ तुम बाध्यो धर्म
जको बाजा ॥ योगन तुम हित नील चु राजा ॥ लेत तुरंग मिलो हो म
म पार ष्य ॥ कहि हो हि स्वार पवर मारेष्य ॥ सदा सहाय नंद नंद
नहिं ॥ तीन लोकन ही जीत सकत निः ॥ यह सार च्यो है श्री कार
धारी ॥ तिन सौं युद्ध न सकत तिहारो ॥ २ ॥ रसना सहित तच
ऊत हरि हस्तनापुर स्थान ॥ यज्ञ करत हे धर्म सुत तद रस युध्यभि
गवान ॥ ३ ॥ रसना पढ़ जब गह हस्तनापुर ॥ कौरट हल मचन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१०७

अश्वमेध

कहि युधिष्ठर ॥ हम तुम चलहि अश्व के साथा ॥ पुनदर सहित
रि हाथि सनाथा ॥ यह कारज कौ गहरु न कीजे ॥ ल्यावऊ हय
अरजन कर दीजे ॥ वऊपति नीलध्वज बचन उचार्यो ॥ धन्य अग
निपहमं विचार्यो ॥ धन्य महि तुम पारथ पाहि जावऊ ॥ कीतिव
तौ तत तुम्हि माकरावऊ ॥ हम लै आउ नगर ते वाजा ॥ भेट सम
ग्री सकल समाजा ॥ ४ ॥ वावक कै आगै पठौ पारथ पहि मे
पाल ॥ अरगनिव तौ तस कलक हौ अरजन भयो कृपाल ॥ ५ ॥
महिपापुरी नीलध्वज गयो ॥ अपुने मंदर प्रापति भयो ॥ ज्वाला नात
पकी मंत्र अलनायो ॥ हमने तौ लैन तुरंग मगायो ॥ अरजन सूर
सभा भगवाना ॥ तसौं प्रउन उचति पवाना ॥ सुनइ स्त्री जीयप कौ
धति मई ॥ वचन सुनत विसमै है गई ॥ नपकौ वचन कठोर उचा
र ॥ पतन मर राइ भिलऊ हत्यारे ॥ पुनि तुमरी सेनावऊ घ्याजी ॥ भित
ऊ ताहि तुम लाज गवाई ॥ ६ ॥ जगामहि आप जस होव ईविर
हीनो जाध धकार ॥ सुत मरा इ अरि कौ भितयान पति नीलध्वज जज
६ ७ ॥ सकल कुटंब मराइ भिलऊ जव ॥ निंदक रहू गे तो हि
नपति सव ॥ कैवं धरम कीर है नलाजा ॥ हृदै विचार नीलध्वज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सजा ॥ भूप्त समान गगन नहि तुम राजन ॥ सुत के दुष न विचारकी
यो मन ॥ बज्र रोष क्रोध र मन नहि जाष्यो ॥ जीवत अस्व दै न हि भाष्यो ॥ न
ह्य प लै भिल्यान धर्म विचास्यो ॥ कहे न रेस नीलधुज हास्यो ॥ वचन
कहे ती पवि वध प्रकारा ॥ बज्र ए नीलधुज धनुष संभारा ॥ ८ ॥
नारि वचन सुनि क्रोध कस्यि चल्यो नीलधुज राजु ॥ अरजन के सन
मुष भयो बज्र रिच म॰ दल साजु ॥ ८ ॥ अरजन देष्यो आवत से
ना ॥ क्रोधित कहि अस गानि सो बैना ॥ पट्टमंत्र तुम सस रथ पवावो
ई हा हमरा क्रोध धनु मायो ॥ सेना नि रथ को ध्याव बक्रे ता ॥ धनुष
बान गहि हिम याम्रसु चैता ॥ तीन बान तीक्षन कसमारे ॥ हेगे रथ बज्र
स्य रवि हारे ॥ चम॰ जेती बानन के ते ना ॥ जेम न कहे समन अरजन मे
ना ॥ पुनि कलि जइ कु बान चलायो ॥ नपति नीलधुज गगन उठा
यो ॥ १० ॥ [illegible] ॥ भूम तगागन ते गिरि परयो विकल भयो मन रहार ॥
पाव कुठार चंडोल मांहि लै गयो स सरउडा स ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ छिंदु
टी सचत भयो नृप ॥ कीनो अगनि अधिकार नराधिप ॥ बज्र रोष
पमन भय ह्रुतायो ॥ लै न तुरंग नगर पुन आयो ॥ प॰ [illegible] न हि जा
र पुनि ती पह्रो ॥ लयो [illegible] रह परु रथ त हीय सो ॥ बज्र तम टर्दानो ह
य सायो ॥ दीनो अस्व धन जे हा पायो ॥ पन अरजन के पग लपटायो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्व मेध

वहुउस्तुतिकरदोवक्षिमांग्यो ॥ गजरथहयमुकतावहुदीने ॥
सुप्रसंन्नपारथजीपकीने ॥ १२ ॥ दो ॥ केठलगायोनीलधुजअर
जनस्तुतिहितमान ॥ ससुरजमातासंगहयभएसहरवलवा
न ॥ १३ ॥ चौ ॥ कुद्योतुरंगचलततवभयो ॥ दक्षनदिशाओरचलि
गयो ॥ रक्षाचारीचलेतुरंगा ॥ चलीजाइसैनासभसंगा ॥ तापा
छेज्वालाइककीनो ॥ अपनागरहतवहीतजिदीनो ॥ नृपपतिनीलि
धुजकोलालकाख्यो ॥ पुत्रनासकरिसंगमिधारयो ॥ महाशोकउ
पज्योमनमाही ॥ सुतदुखजीयतेविसरतिनाही ॥ भाईआगेजा
रपुकाख्यो ॥ प्रिथावरतकोअरजनमाख्यो ॥ १४ ॥ दो ॥ अरजन
हमरासुतहन्योचमूकरीसभघात ॥ हारमिल्योनृपनीलधुज
कहीपरतनहीवात ॥ १५ ॥ चौ ॥ सुनउठिमतुमभ्रातहमारे ॥
वहुसवभाजेराजतुमारे ॥ पहुकारजाकोवलमनकीजे ॥ हय
छिनाइपारथपतलीजै ॥ वहुणतातकावेरलीजीये ॥ अरजनजी
रसंघारकीजीये ॥ हमराइहुएविचारहुमनमांहि ॥ पांडवचमूप्र
हारकरनमांहि ॥ कहीयथिमसुपालकरिभ्राता ॥ मानलेहुहमरी
कुसलाता ॥ उठमकहेवहुणसुनकाना ॥ तुमरावतहमतेवलवा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ना ॥ १६ ॥ दो० ॥ जीतसकोनहीनीलधुजहमवलतुछसमान
श्रमस्वसरुइछतजातहैसंगसेनावलवान ॥ १७ ॥ दो० ॥ उनहम
कोकछुदुषनहीदीनो ॥ वहस्रतिवलीहुमारिवलहीनो ॥ ह
मकोयोगनहीयहकामा ॥ वहस्रजीतहैरनसंग्रामा ॥ छ
त्रीधर्मसराहेताहू ॥ योनदेस्प्रपमैदुषकाहू ॥ जीतसकोयो
नहीतुमरोपवतजैः ॥ हमस्रतिदीननजीतसकैतैः ॥ पहउपा
यनहीहमतेहोई ॥ मांगऊस्रवरदेउतुजसोई ॥ कुर्वतिहैके
वलीस्रधीरा ॥ यहऊचीजारसुरसुरीतीरा ॥ १८ ॥ दो० ॥ केवटकी
मोछ्याववचनमरुऊकोपारउतार ॥ निकटत्याइतुजनामको
हमचढहैपगधार ॥ १९ ॥ दो० ॥ षेवटकहैयापपमजवपै
हो ॥ पुनतुमचढुनौकापरिवैठो ॥ सुनज्वालाक्रोधतिवचक
हे ॥ यहहगंगाहात्यारीवहै ॥ इनकाजलपसननहीपयोगा
मंजनकरततेऊधगलोगा ॥ षेवटवचसुनिविस्मैभयो
तवहीगंगादरसनदयो ॥ ज्वालाकोसुरसुरीकहयोतव ॥ क
ततुमऐसेवचनकहेअव ॥ अससत्यवचनकतिकहेहमारी
महामंदमतिकुटलितुमारी ॥ २ ॥ दो० ॥ पावनहोवतपरस

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१२८ ॥

आस्वमेध

मजन महापतित तजग माहि ॥ कतितुम हतसारीकहे साचुककहे मज पाहि ॥ २१ ॥ दो० ॥ वैगदेउगो श्रपाप जेत्रो मसत्यमा कोकहा ॥ हृदेविचारउ आपकहे तुपारथवातमजउ ॥ २२ ॥ चौ० ॥ बोलाकहे सनकुवचगंगा ॥ साचु कहेचितुकरैनभंगा ॥ भीषमसतततुम तजगविद्याता ॥ समिवान मकतिसिमतज्ञाता ॥ भीरथमहिपारथ हतकीनो ॥ अवलोतुमसत वैरनलीनो ॥ इहतेहत्यावडी भीकाई ॥ पत्रवैसद नोविसराई ॥ सतदुषसुनतमएकरर ही ॥ लेगल्लाजतत्तुनिशा दनवहाँ ॥ तुमसपवी महावलवाना ॥ सतशत्रु नहीहन्योपछाना ॥ २३ ॥ दो० ॥ तो तेयोगनह हनतजअपराधनजीपजान ॥ अरजनतुमरासतहन्योलीपावेरुनहिकान ॥ २४ ॥

चौ० ॥ श्रीगंगा बोला वचसुनै ॥ सुतसे तापसपसकोधुनै ॥ महाक्रोधउपज्योमतिमनको ॥ दीनोश्रपापतवपतअरनाको ॥ जुमजसतकीनोरनघाता ॥ सछेदेपारथशिरजाता ॥ रनमैसीसकाटलेजावे ॥ हमराश्रापवसससवनिआवे ॥ अरजुनसापवसरससरीदीनो ॥ सनबोलाअनंदमनकीनो ॥ सतकावैरवेगमजपायो ॥ गंगातेयहश्रापद्दिवायो ॥ २५ ॥ दो० ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हमहेहे हो वहीषडुगजिः सोपारथ्यकाल ॥ जरेंयहीमनचिंत
कैचिकारचीततकाल ॥ २८ ॥ अगनजरनमनसाजीयध
री ॥ हेहो शस्त्रमहाभपकारी ॥ तिःसोपारथ्यकोहेतुहोई ॥ म
जकोशस्त्रकरंड हरिसोई ॥ पुत्र्यतताकोकरेसंघारा ॥ अरज
नमोसकरेपरहारा ॥ सोईसस्त्रमजकरिजगनाप्या ॥ अरजनसो
सगिरेजिनसाप्या ॥ पहकेहतनकेअग्निजराया ॥ बोलाइहवह
मनठहराया ॥ ज्वालाइहप्रकारकृतकीनो ॥ क्रोधनिवारअगन
तनदीनो ॥ २७ ॥ पहवतातुरतहांभयोउतहांपचहत्यासुभाइ
दक्षनदिशागवनकीयोचमूचलीसंगजाइ ॥ २८ ॥ अरज
नआदिअवरवडराजा ॥ सूरअनेकसंगतिःवाजा ॥ कुमतातप्र
धुम्नअतुलवल ॥ संगसेनाजोधवअनगनदल ॥ सातकिकृतव
मोदलन्यारा ॥ तिनसंगसेनाअमितअपारा ॥ पुनअनिरुद्धमहा
दलसाजे ॥ महासूरसेदरदतिराजे ॥ जोवनासरुतसेनसमेता
पुनिसंगमहासूरवरषकेतो ॥ मेघवरनअनुशालनीलधुज
पावकअनकनरेसमहाभटा ॥ २९ ॥ सूरवीरनपवअति
वलीअनेकरथचमूचतुरंग ॥ पोहिलोउजाहिसभआजेचलेतुरं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

ग ३० ॥ ॥ बजंत्रि बजंत्र अनेक प्रकारा ॥ दुंदभ भेर निसाण धारा
चतुरंग निसनाग बनंत बल ॥ चूरन हित वहार चरन तल ॥ बंड
न पले हित बनस गरे ॥ जैः सगचम धन हेड गरे ॥ सर जतेज प्र
इनहि आवे ॥ धर उ देगगनंतर छावे ॥ भ भ सकल दक्षिण दिश
वाजा ॥ रन बांधस केको ऊराजा ॥ सिला एक पाप तिम गभई
तास्पूर्व दिशि तुरंगम दई ३१ ॥ सा ॥ उपजो वरस तुरंरा ॥ पी ठपुं
जावहि सिला सो ॥ लागर ह्यो प्रति संगजतन करहि छूटे नही ॥ ३२
॥ सा ॥ दीर्घ सिला एक योजन पर ॥ दस कोस पर ताको विस्तारा ॥
तः पर पर सकी प्राप्तः अंग ॥ छूटी न ही रह्यो लगो संगा ॥ सैना
सकल भई भैकारी ॥ कोट उपाइ जतन कर हारी ॥ पारथ वठीर
चिंत मन माही ॥ यह तो ठोर युद्ध की नाही ॥ सुजन लहि अनेक मन
कुमलावे ॥ सुसेनाह पम पविलला वे ॥ विसमै भए सकल मन ॥
अपुन ॥ नहि दृष्या यह को तक सु सुने ३३ ॥ दो ॥ पारथ अर्जुन प
ति सकल चिंत करे मन माहि ॥ या सांके सजो तह ठोर युद्ध की नाहि
३४ ॥ सो ॥ तब अस्र रजनमन कुम्हलानेसो ॥ शिला चतुरदिश अरु
निहारयो ॥ महासघन वन दृष्टि परे सब ॥ मन मे महा वीचार कीयो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तव ॥ मतकर्ई होइ रहत तपसी मनि ॥ तां सों लेउ सिलाव तां तसु नि
पहुजी यधार चलैया उगि वारप ॥ मनिकों ऊभि लेभगत तपर मारप
ती मस्त रली नेहि नसाप्या ॥ कर्णाप तम्म लेस तपुड नाप्य ॥ पोव
नासराजा संगलीनो ॥ वनकी ओर गवन तवकीनो ॥ २५ ॥ चिंता
तुरचारो चले गहु वर वनकी ओर ॥ रिखी मनी सुरसंतको ऊमतपा
वहि इहि ठौर ॥ २६ ॥ मगमहि तकर तवर स्पर वातो ॥ महाक ए
पहुव नेपाकहाते ॥ पजमल पहुहंसतुरंगा ॥ सोल ठौर होशर
लाकेमेग्गा ॥ शिलाव तां तको ऊहमकहई ॥ तोहमराकारजु निर
वहई ॥ देख परेंद्रुमनुकरसुफलग्राति ॥ चले वेग चारोमन हरख
त ॥ निश्रोरहाकोऊमनेहोई ॥ सकल वतां तक है हमसोई ॥ सम्प्र
वागमहि पावपतिमहि ॥ शोभानिरख सकल इब गए ॥ २७ ॥ वहु
प्रकार के द्रुमतहानि भ्रतफलनके भार ॥ मेवा सकल सुधा सरसे
महापवने विस्तार ॥ २८ ॥ गफुवनवउफल विस्तारा ॥ पग्गुपे
छि सिः वीच ग्रपारा ॥ मित्र भाव सम जीपकलोले ॥ गो मृगा सिघ एकठे
वलै ॥ क्रोध रहत सम जीय मृदसिमन ॥ तां सम हंसम चरता कर
तवन ॥ सुजामा पुइक कठे चरही ॥ सब्बा मिउ जीय नेकु न डर ही ॥ सो
ग्रचल तम एपवनचार ॥ गजतुरंगर पवउ तनिहार ॥ रतनपवत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१२१

अश्वमेध

कृतलरपाठाके भिरषनैनआनंदअतिवाढे २५ धुनि
देष्यौइकुमटताहामननमैभयौउजलास देष्याएकुमनुबतह
पदेष्यौवचनप्रकाश ४: कहोसाधजनमोहिकृपाक
रि कहोनामपहमटकौकोवरि। ततछिनतिनउत्तरदी
नौपुनि सोरमपिषइहठौरअवनसुनि तपसीमोहापुनी
तसुपावन अघनासननसुकृतउपजावन विसुभगतपि

१२

यअतिअभिरामा सुचिसमभगतनिहकामा सुनतवच
नहरषततिवतभए सुवसमहउपजेदुषगए शिलावतांत
सकैलहमकहहरे हुचमकृताइसकलतेसबलहई ४१
चलिआगेजवदेषहि जलसोंभरेतलाउ वडीकेदरासुभगेर
फाआदभेतवन्योप्रभाउ ४२ वडीगुफाकेंदरीअपारा
तपीकरहितपवविधप्रकारा मननजननतहाआधारअनेता बट
कमीरिषवहेमहंता चारोनिर्षमदतमननमए दूरसनुपरसे
हापविगसहे सोरमपिषवेठाढेजहा अनकमनोसुरवैठेला
हा ठाढेवडशेवकतिःआगे धारपापहपदनवचनलोगे अ
रजननअपनानाउवतापा चारोकोंपरवाठेगनेढायो ४२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कह्यौ वृतांतु मैं त्यन सकल सौरभ एव को जाइ ॥ चारस्य रुमरान स
हित द्वारे ठाढे भए ॥ ४४ ॥ सुनि सौरभ एव आने दूत पठाए ॥ चारो भ
तर वेग बुलाए ॥ विष्णु के निरखत दंडवत कीनो ॥ आगे तिन्ह दूर पट दीनो
तब सौरभ एव वचन प्रगटाए ॥ कवन तुम नाम कहा सो तुम आए ॥ आपुने कु
ल का नाम सुनावो ॥ कवन अर्थ आए समझावो ॥ सकल वृतांत माहि
कहि दीजे ॥ सत्य वचन पुनि उत्तर कीजे ॥ प्रापति भए इहा तुम के स
कहि जथारथ हे मन जैसे ॥ ४५ ॥ पारथ व
चन कहे तहा सुनि सौरभ एव तान ॥ हम पांडव हैदा सहदेव अरजु
न मोहि युधिष्ठिर ॥ ४६ ॥ धृतराष्ट्र सु कृष्ण के ताता ॥ ता तप क
रन सुत जग विख्याता ॥ चौथो जे वना सु राजा वर ॥ हम चारो हैद
स भगत हरि ॥ यजम रे मध धर्म सुत कीनो ॥ आयुध सेध कृत सह पा
वीनो ॥ आज्ञा ताकी नौ आर रव वर धीरी ॥ कहा आह प्रधर्म जन्म जमारी ॥ सु
जके प्रहि कृष्ण हय संगा ॥ दीनो साथ चमू चतुरंगा ॥ सेनापति कौ
यो सुज गारधार ॥ कह्यो तुरंग मकीर रक्षाकर ॥ ४७ ॥ प्रथम कूह्यौ
तुरंग वर गह्यो केन्य का देव ॥ तहं हम कृतातो करन सुत जानन वि
ग गर्हि सेव ॥ ४८ ॥ चले तम चो आ गोपुनवाजा ॥ बंध्यो बेडू रनौ
लधुज राजा ॥ भयो पुंडर सट रन व ऊ घाए ॥ केट जत तन क पट्ट य म रा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥१२२॥

अश्वमेध

॥जैमि ५५॥

कलाचे ॥ पुनि आगे को चल्यो तुरंगा ॥ आइ कैयो आइ शिला के सं
गा ॥ हृदसि नाहि शिला स्पर्श ता जान ॥ बल कर हार रहे सभ राज
न ॥ सभ चिंता व्यापि दुर्लभ ए ॥ धान धान सब उजन तजि द्ये ॥ ति:
न भित्र हम तुम पहि आए ॥ दरस परस जो पावउ सब पाते ॥ ५४
करुणा की नेक पानिधि दी जे हय अमुक तानु ॥ सहु मनोरथा
काज तो पेय न बुधि एरराइ ॥ पं ॥ वाल्यो सो उभै सेन उकल्प
हित ॥ रचो यत्न तुम कौन पाँचित ॥ सो दृष्टि न कहि मोहि समनाव
उ ॥ सकल तव तात हम महित समझावउ ॥ वे वे कर जोर कहो पारथ
तव ॥ संतरिष राजक होव तात सव ॥ भारथ मोहित हम कुलहतु
कीनो ॥ सो दूषन मा पेय धरे लीनो ॥ मिल जाय जो कोह नीमहा
रहि ॥ को रवि छेदे मापर अपारहि ॥ गुरु पितामह बंधु सुहृद
तव ॥ नाम की और न हम हति गोत्र सव ॥ ५१ ॥ दो ॥ भाई सुत रे मा
तुल के रथ कनि विहार ॥ चढ़ तरुन वालक सकल हम कुल को मा
सघार ॥ पर ॥ लीनी मान गोत्र द्रुह्या तव ॥ आपना कुल संघा
रकी पो सव ॥ गुरु ब्राह्मणतीर थापथ मारे ॥ लीए लगाइ दोष अ
घ मोर ॥ रकाधा जिर धर की उपही ॥ उपजाइ हम रे मन ते ही

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रन हत हम कुल दोष लगायो ॥ पुन स्वर्ग पाप हक्कू सब तायो ॥ अ
श्वमेध कहि अघ सब हरई ॥ सब कौ ते कुल हत्या टरई ॥ हरि के व
चन मान न मन लीनो ॥ पत्र आरंभ ति हम दिन कीनो ॥ ५३ ॥ उपजा
ई मन अहंकृत हत्या लई लगाई ॥ बचनक हम सब गर्व के हम मारे स
ब घाइ ॥ ५४ ॥ पहसं से उपजो तीपभारी ॥ पुनः चरण पह
कह्यो मुरारी ॥ अश्वमेध कृत कठन विधाना ॥ सो ईवता पौ श्री भगवा
ना ॥ पुन सैर भट्टि ब वचन उचार्यो ॥ पुन स्वर्ग हरि पहं उचार्यो ॥ अ
ब तुम कौसं भ पटिवाजा ॥ तहां होति संग्राम अपारा ॥ कैटजीव भूमि
हिसं घारा ॥ सो अपराध भ्रिटाव ऊकेसे ॥ वचनक हत हो वालक जैसे
५५ ॥ तुम जउ ऊ जे अश्व पटि हाइ च मवऊ घात ॥ ताका पुन्य करऊ
कवन कहो जप्पार प्पावात ॥ ५६ ॥ ज्ञान विचार न मन समझाव ऊ
तुम श्रीपति के सषा कहावऊ ॥ कत तुम कुल हत दोष लगायो ॥ तब
विचार न मन न ठहरायो ॥ विद्यमान जाके हरि होई ॥ तिन अघ नाशि
सकै न कोई ॥ जाके नाम लेत अघ नासहि ॥ ध्यान धरे गन पुण्य प
प्रकासहि ॥ सो तुम रैनि शब्द न सव धाना ॥ कोटि अकृत फल श्री भगवा
ना ॥ पातक के ऊन लागे तहां ॥ कृष्ण निवास होइ निज जहां ॥ ५७ ॥
एक बार दिः नाम ते होहि कोटि अघ नाश ॥ सो अस अपि तुम रस दास

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

विकोट प्रकाश ॥ ५८ ॥ दो० ॥ करन करावन हार रमाहि ॥ जौ तुम हृदय म
हि सकल समर्पित ॥ उतपति प्रतिपालक हो करता ॥ आप सा [illegible] आप ही
हरता ॥ मानस पुत्र व जानत हारा ॥ आप एक सब विसमन ते न्यारा ॥ पा
प पुन्य सम हरि पद धारत ॥ जौ तब ऐसे हृदे विचारत ॥ तौ तुम पाप न ल
गत कोई ॥ सकल समर्पण हृदय महि होई ॥ तब तुम रे ज्ञान महि यह प्रा
वत ॥ कलि र न को तुम दोष लगावत ॥ ५९ ॥ दो० ॥ जौ तुम यह विधि करत
तब हृदय दीन अनाथ ॥ कोटि कलुष पद प्रतिकर रहित तो तुम दरस समना
थ ॥ ६० ॥ दो० ॥ तब तुम हृदे न ज्ञान विचार्यो ॥ करी अहंकृत तब विसार्यो
तुम रे कर्म स्वारथी भए ॥ जहा कह्यो तहा रथ ले गए ॥ तुम श्रीपति को
मर्म न जान्यो ॥ करि अभिमान न कर्म पछान्यो ॥ ह [illegible] सा मान लाई अप
ने पर ॥ कारण रूप न ही जान्यो तुम हरि ॥ जब तुम मन जको दोष लगार
यो ॥ पुन स्मरण यह तुम सब ताथो ॥ कल हत्या तुम मान लई मन ॥ ता
ते व्यो सेताप महातन ॥ ६१ ॥ दो० ॥ नीक ध्यान धरे मिट तके कोटि कलु
षदिक न माहि ॥ मान लई हत्या तुम हि हृदे विचार्यो नाहि ॥ ६२ ॥
तब पार्थ प्रभु वचन उचारे ॥ सत्य वचन थे सक
ल तुमारे ॥ महाप्रबल माया श्रीपति की ॥ ज्ञान हराइ लेत सुधि मत की
तब ज्ञान न हमे सो हमारे ॥ हृदे [illegible] माहि सम सरथी हारे ॥ गजरथ पह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पपापकआवरेषे ॥ सोसरहितमतिवासभदेषे ॥ यहचित्रिमनकल्पि
षायो ॥ आहंमेवपुभजोयउपजायो ॥ जैसीरंकसोत्रिभुवनपति ॥ जैसे
उपजावतिमनमेमति ॥ ९२ ॥ हमरेमनमहिआहंकृतउपजाईभ
गवान ॥ जोइछानंदलालकीसोईकरावतिजान ॥ ९४ ॥ करनक
रावहारंगुपाला ॥ महासकलमायानंदलाला ॥ इछासोभारपप्र
गटायो ॥ आठदशादोहनिनाशकरायो ॥ पुनिमनमेसंसेउपजायो
हत्यामाधिलईकुलघायो ॥ हीऐआहंकृतभाउजगायो ॥ हपैमायाम
नजोनपहरायो ॥ हमरेरपवाहकभगवाना ॥ आजानिवेसदासवधा
ना ॥ तेःहपैकोहमभानसजान्यो ॥ पूरनब्रह्मनहीपहिचान्यो ॥ ९५
दो ॥ मानवकरिजान्यावजरूपवहतोसत्यस्वरूप ॥ भूतभविष्यपरस्व
रतजअटहकनआतमरूप ॥ ९६ ॥ पारसुवाइडापेकरदीनो
जोवबुद्धिभ्रमतवनचीनो ॥ चिंतामणिकोकंठनकीनो ॥ उरमहिको
धुधाकेहमलीनो ॥ कामधेनुतजिआजागहीकपै ॥ कीनोपकआरे
मतज्योहपै ॥ दानपुन्युमखनिमतजगुपाला ॥ उतपतिकरताहेनंद
लाला ॥ सकलसृष्टिजिनमहिउपजावति ॥ वजुपतिसोकेउदरसु
माववि ॥ आदिअंतजगतकीनहनहुवाई ॥ सकलठौररभरह्याक
हाइ ॥ ९७ ॥ जैसीइछाहोइहपैतेसोमतिउपजाइ ॥ प्रगटायो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अभिमान जीय लीनो ज्ञान हिराइ ॥ ६८ ॥ श्रीपति की गति अगम
अपारा ॥ कैसे हू पाइ सकै नहीं पारा ॥ प्रथम मैं छै रूहि ज्ञान उपर
जायो ॥ धनुष बहोरि पर ते धर निर्भीरायो ॥ पुनि अहंकार खडो मन
माहि ॥ जे जे करी योद्धु हम आर न नहु माहि ॥ सो सरहित तसे ताहि वरा
ई ॥ मुष पसार हम को पद राई ॥ पुनि हम ते संग्राम करायो ॥ कैरव कुल
सगरा हम घायो ॥ पुनि मन माहि ऐसी उपजाई ॥ कुलहत्या हम माहि आव
लगाई ॥ ६९ ॥ क्षत्रधर्म कुलनास कहि हत्याल्ली नी मान ॥ हम मा
रे मुष ते व कहि हरि हरलीनो ज्ञान ॥ ७० ॥ हम रे मुष ते मही कुहा
यो ॥ हत्या गोत्र दोष हम लायो ॥ हरता करता श्री नंदनंदन ॥ कै एह
मारे शत्रु निकंदन ॥ उपजायो हम जीय अभिमाना ॥ ममता वढी न
न विशोरानी ॥ भीषम हसम के वे हम मारे ॥ प्रवल पछू करि सकल
से घारे ॥ मारनहार कृष्ण नहीं जान्यो ॥ कुलहत्या दुख मन निजमान्यो
यज्ञ करावन की इच्छा हरि ॥ यह मति दीनी नन्दपति बुधि फेर ॥ ७१ ॥
जो इक्षा नंदलाल की सोई करावै काज ॥ मानी कुल हत्या हम मति हरि पक
तर च्यो समाज ॥ ७२ ॥ ठाढे हैं निर्लेप आप हरि ॥ मुष बकुबता या न
पति बुधि फेर ॥ इ वन हम माहि आप के लगायो ॥ ऐसे हम ते कष्ट करा
यो ॥ कुलहत कीचिंता हम भई ॥ ज्ञान कला आप ते दुरि गई ॥ निरषके

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पा लभ ऐनें दलालो ॥ पुन प्रश्न रण पहक योगपाला ॥ अप्रश्न मे धकत
लविहिवताचो ॥ इहु सोहदपजेर चोयो ॥ लोकहु भाव पदीनप्रया
ला ॥ सोइकरा वर्णे हैत तकाला ॥ ७३ ॥ सो रभपवको जेह पादी जे हय
मुकताइ ॥ अग्रश्रमिला सो लगार हथो हु टेकरउस हइ ॥ ७४ ॥
सो रभपूप मन हरवतमचो ॥ सिलावे तांत सकल कोहदचो ॥ सन
लकपासिलाकी सारपा ॥ सिद्ध हो हि स्यार पपवर सारपा ॥ सन
जनयह सिला न होई ॥ नाशि उदार कु रिवकी सोई ॥ पतके शादसि
लायहमई ॥ कहोकपा जेसे यहपाई ॥ नाम उदालक ऐ अरबी श्वर
ईद्री जीतध्यात तपी श्वर ॥ ऐकदेव सरव स्थिति सुनिश्राचो ॥ श्रम
श्रम चार धर्म मन भाचो ॥ ७५ ॥ ब्रह्मचर्य पुन बाणप्रस्थ बोहि
धार पुन जान ॥ पुनग हस्त सम नम लोश्रम श्रम चारप मान ॥ ७६ ॥
॥ सत्यामनश्राज्ञा स्मृति लोनी ॥ ऊसो की इद्वा रिवकीनी ॥ चंडोसो
रिषबाऊकी यातव ॥ पाति जहणकोसमोभयोजव ॥ नवविप्पनरि
भश्राज्ञा दीनी ॥ श्याहका जरद्रानु जकीनी ॥ सतवेरा फिरती यश्रा गेय
के ॥ स्मृति श्राज्ञानु मधारोम्राह्के ॥ रिषुनहि फिरै नारि केपाछे ॥ ज्ञान
विचार कीयो मन आछे ॥ पुन पूछत तननमे जैराजा ॥ कहोकुपाक
रमनि स्सिरताजा ॥ कैसे तरिय तीय पाछे नहि भयो ॥ वेद वचन कहि

७

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मानन लयो ॥ २७ ॥ दो० ॥ जैमिनि कहै सुनु जनमेजै जैस वधा
न ॥ रिषवती यपा छिपि कासों तहि कहि हो कपा विधान ॥ २८ ॥ चौ० ॥ सु
नन पकाजु सो मैं जव होई ॥ मजनु करहि पुरष तीय दोई ॥ पार
ति गृह एण दंपति तव करही ॥ वेद मंत्र ब्राह्मण उच्चरही ॥ ताही स
मैं अस्वसरा आवति ॥ ताके लहकन हृदै लगावति ॥ जो तीय के पाछु न
र लागहि ॥ तिन को निरषि अपशरा भागहि ॥ पाछु पिक सो भयो इसी
प्रीत ॥ तिः को हो रन स्वर्ग लो कहित ॥ जो नर तीय को आज्ञाकारी ॥ रे
होतन कव हु स्वर्ग अधिकारी ॥ २९ ॥ दो० ॥ पुरष पति तजि के होत त्रिजी
वत तिनि के आधीन ॥ कव हु न पावहि स्वर्ग ते तिन शोद्न बुधि मलीन
ः ॥ दो० ॥ पा पत्र आगे हो हि तीय पाछु ॥ सो नरु सुख पावति है आ छि
तिः नर स्वर्ग पुर प्रापति होई ॥ क रहि अस्वसराभ जो सोई ॥ ताको ते
ग स्वर्ग लै जाहीं ॥ मन वच क्रम ससे कछु नाही ॥ पह विचार रिषवती
प दहरा ये ॥ तीय पाछे न ही आपकि राषे ॥ जो तीय के पाछे पुज
धारे ॥ रहें आधीन जनम जग हारे ॥ पहु तीय जो नन पाछे भए पा
उपज्यो ज्ञान मोहि भर गयो ॥ २९ ॥ दो० ॥ जैमिनि कहि तहि समै चड़ी
की यहि विचार ॥ हमरी आज्ञा हा नेन ता यह के सो भरतार ॥ हरि ॥ चौ०
वड़ी जो यह विचार की नो तवे ॥ तिय पति पाछे किरो नहीं अव ॥ कति को

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

होहिं आज्ञाकारी ॥ याकैं किरौं न यह मनधारी ॥ वचन कठोर कहे
चंडी जैसे ॥ हम ते याकै किरैं न हीं पति ॥ सुनत उद्यालक हीये विचा
री ॥ चंडी नाहिं हद दे हठ धारी ॥ अपनी इह मन मे पहिचान्यो ॥ क्रोध रह
त मुख वचन वृषा न्यो ॥ हठु तजि नाहि कर रूप जु आगे ॥ याकें हीये कि
र हियं प्रण त्यागे ॥ ८३ ॥ दो० ॥ सुनत चंडी ए रस सौं कह्यो वचन न मानो
तो हि ॥ इस ही मुख ते अब तुम सकि कहे कटु कवच मोहि ॥ ८४ ॥
अब ही तुम भी याही प्रकार कर ॥ याकें लागी किरौं न हु नारि वे ॥ अ
व उस ही मुख भाख्यौ ऐसे ॥ याकें फिरौ वेद विध जैसे ॥ प्रगट प्रकार
कहो सु नाहु सब ॥ तो तुम रस आगे लागे अब ॥ सुनत विप्र न मुख वच
न उच्चारे ॥ सो ई भले हि बस मे विचारे ॥ जातीय कहे सो ई कंत की
जे ॥ अपना मानि प्रति कट ले लीजे ॥ तब ही एवं याके उहु लागा ॥ चं
डी हठ तज प्रना प्रण त्यागा ॥ ८५ ॥ दो० ॥ आज्ञाकारी नारि को कहे उ
द्दालक ज्ञान ॥ चंडी को त्याग्यो भवन मह हठी पहिचान ॥ ८६ ॥
चंडी को तजि गृह ले आयो ॥ आश्रम बीच आन बैठायो ॥ कलि कि
र चंडी हहु ठाने ॥ पति को वचन कह्यो न ही माने ॥ जब वेदों को व
चन उचितारे ॥ महा क्रोध अपने जी मे धारे ॥ रूस रहै उत्तर न हीं
दई ॥ पति को कवहु न आदर सौं ई ॥ गारी देत रहे पति को नि त

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कवहूनकरैउद्दालकसोंहित ॥ क्रीडासोंहितुकवहूनलावै ॥ निश
दिनहीयेक्रोधउपजावै ॥ ८७ ॥ दो० ॥ ऐषसमजूतजीयआपनेय
तवालकअज्ञान ॥ जबलगइसकेजीयनहोई तसबकीपहिचा
न ॥ ८८ ॥ चौ० ॥ रैनसमैऐषतीयपहिजावै ॥ चंडीनिरषक्रोधउप
जावै ॥ निठुरवचनऐषकोंभषकहई ॥ सुनऐषमहामोहगह
रहई ॥ तौतुमऐषीनिकटमहिआवहु ॥ तौतुममजूतअतिप्राम
पावहु ॥ देउमहादुषकरोप्रहारा ॥ जौतुमपरसहुअंगहमारा
आवैऐपापककंतनहीपरसै ॥ कवहूनहितसोपतिमषदरसै ॥ १
ऐषचंडीतेअतिडरपावै ॥ चिता वषसक्रहृजीयनसुहावै ॥ ८९ ॥
दो० ॥ गृहकारजसमऐषकुरैचंडीकरैनकोई ॥ वचननिमानैकं
तकोमहाहठीतीयसोइ ॥ ९० ॥ चौ० ॥ हायमनमितजौतिलमागैऐष
ताकोवचनलगैऐषकोविष ॥ तूपावैसाधिनिसुधअनाजा ॥ होयवि
विरोधकरैनहीकाजा ॥ घातुमागैतीयपहिमुनवरजव ॥ अजा
मूत्रल्यावतिचंडीतव ॥ तौमागैऐषकृपाकरमहित ॥ देतकुची
लघासुद्रोसहित ॥ ऐषवीचारकीयोआपुनेजीय ॥ भषनवसन
देउनौतनतीय ॥ होइप्रसंनअनंदुवढावै ॥ आज्ञामानटहलचि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तुला वै ॥ ८१ ॥ दो॥ पट भूषन नव कु विध दीये जुवती को पवस्र
न ॥ तैः कर क्रोध अधिक भयो चंडी मन अभिमान ॥ ८२ ॥ चौ॥ व
रूप उदालक हृदै विचार्यो ॥ यह बालक नहीं ज्ञान विचार्यो ॥
ज्ञ व ज्ञाके संपति कछु होई ॥ दुराकाम तव करै न कोई ॥ यह ही
मत्र रिब मन ठहरायो ॥ सम पाइ चंडी सत जायो ॥ चंडी को
धर्म अधिक फुन करई ॥ लोक लाज ते नेकु न डरई ॥ रिष को
को आगति पजु वआवै ॥ ताही सों अति कलह वढावै ॥ अभ्य
गत कौ दान न देई ॥ लक्षन दुष्ट करै सब सेई ॥ ८३ ॥ दो॥ श्राद्ध ताह
छन क्रोध मन करै कलह उपजाइ ॥ तिन कौ रिष अग्याद तकरै तिन रू
दुषावै धाइ ॥ ८४ ॥ चौ॥ वडे मंत तपरिषी ग्रह आवै ॥ मन सें तौ अब
कछू छुनहि पावै ॥ निंदा करत जाति रिष की सब ॥ होइ है महा विवंत
व सिरिषुतव ॥ सुत रिष को अति आज्ञाकारी ॥ रिष की सेव करै अति हितु
धारी ॥ रिषी पुत्र को ज्ञान दृढावै ॥ श्रुति शास्त्र नहीं विध समझावै
चंडी भरिष क्रोध उपजावत ॥ बालक करै नहीं रिष सों हित ॥ तब
सिसु कह्यो सुन जननी माता ॥ पितु अज्ञा ज्ञा सानी कुसराता ॥ ८५ ॥
श्रुति शास्त्र रिषि मत कहित सेव की जीये ताते ॥ स्वार पथ पर मास्य

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सधुहित है मन तन कुसरात ॥ ५६ ॥ दो० ॥ तिः स्मृवसरधरि रंच स्मृत
स्माचौ ॥ तो रस्यव वव स्मुदर सहित बराचौ ॥ भवु न ठदालकपा वति
भयौ ॥ पिता निरख्यो आदर कद यो ॥ कुशल प्रश्न करि आसन बैठायो ॥
मन तन मुदत रंकधन पायो ॥ चरनन लगद ठवत की नो ॥ हर
षत मन आदर स्वइदीनो ॥ भोजन विवध प्रकार खवाये ॥ पिता प
रम मिल रुचि सौं पाए ॥ चंडी जल में जनन हलई ॥ बात करे गारी म
बदेई ॥ ५७ ॥ दो० ॥ रु ठर ही चंडी तव हि पवथ्या उदालक तात ॥ लोगैम
रन में हित के त्याव उस्म पुनी मात ॥ ५८ ॥ चौ० ॥ पुत्र जाइ जननी सौ क
ह्यौ ॥ हित उपजो रहाउ हार ह्यौ ॥ वचन कहे बालक सुन माता ॥ प्रवप
हित चल उ हाइ कुसलाता ॥ चतुरानन नमत चरनन लागउ ॥ हरषत
ही रिऋोध जो सागरु ॥ मिट हित दोव सम साधद रसते ॥ हो उस पाव
नचरनन परसते ॥ सुनि चंडी क्रुद्ध हित मन भई ॥ महा हठ सन्मुख चलि
गई ॥ निलज वचन मुख ते कट बोले ॥ यह तो साध उदरा हित डोले ॥ ५९
॥ दो० ॥ रोस वउत महत मन्कदे ब्रिविध प्रकार ॥ मिमित रसोई उदरा हित
भ्रम तो फिरत सम द्वार ॥ ६० ॥ दो० ॥ चंडी वचन ब्रह्म सुत सुने ॥ सो जत
हाथ्य सौं सव उधन ॥ तव हित उदालके उरनि हा ह्यो ॥ चिंता तुरस्थित तव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वचन उचास्यो ॥ कहो व तो तउ दोलक मउको ॥ मन तो शोक वसि नर खो
तुउको ॥ कहे रिषीजी मकी तुम जानउ ॥ उप्र प्रगट सर्व विधपतिव
नउ ॥ तुम दरसन ते जो न मिटहि दुष ॥ और समर्थ कोन दवे सुष
तुम रेदसिप रस कल्याना ॥ साधु सम रहरि एक समाना ॥ ९९ ॥ दो० ॥ जो
पै वेद वचन मिटहि मिथ्या वचन भगवान ॥ तो साधु के दरसते होइ नहीं
कल्यान ॥ २ ॥ चौ० ॥ साधु कृपा ते सम सुष होई ॥ कोटक एम घर हो
न कोई ॥ जो हम राहु बजा इन तुम सो ॥ दे हि मवर कवन सुषम उ
कों ॥ वउ रिसि धिक चिंता जी पमेरे ॥ पर सोंपि ता आहुतिः वेरे ॥ आ
धसम गुरी मउको चहीये ॥ गृह चडी ती पकों सा कहीये ॥ मलों वस्तु
चहीये तिः अवसर ॥ तो बकी ये चहीये सवदे जबर ॥ डर पत हे जत
भमि त्रित करउं ॥ ने पदिन ती पचंडी तेडरउं ॥ ३ ॥ दो० ॥ कहो को करें
गी एन ही हम राकछु नव साइ ॥ मलो वस्तु तम मांग हे उसिर भपले
साइ ॥ ४ ॥ चौ० ॥ तो तें मउ चिंता जी पछिन छिन ॥ पिता आधमाई अतर
ढपिन ॥ भयो मृधीन दीन मन माहि ॥ पिता आधजीन जाइ वष्मा ही
पुन्य ही न पुरवे नहीं सो आर घ्य ॥ पिता आध जब जाइ निराट घ्य ॥ पित
रकमें महि हानि नदे तजब ॥ पातक मिटाहि कोटजन्म निन तब ॥ मनि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

करुणाकरिधर्मिदृढावऊ ॥ दुषमसमुद्रतेपारलेघावऊ ॥ भयो
प्रसन्नब्रह्मसुतरिषपर ॥ धन्यऊ हेंऊ पिवीश्वरबुधिवर ॥ ५
॥ कहितउदालकभीषकरुणाकी जैब्रह्मसुत ॥ लीजैदुषतेरा
षकरऊउपाइविचारचित ६ ॥ ॥ पिषतुमरीरद्वाकराहिर
श्रीपतिसदासहाइ ॥ कवितटहिकनपहरनभयोषटदशमाअध्या
य ७ ॥

५८ ५६ ५

६७ पढ्योनहीअावनहीसुन्योहेकदाचअकृततिथो
वाचवाचअाजाकरीतुमकालका ॥ अश्वमेधवऊंजपपाप्रोढ
नतारअस्तुजोमेकपाहेअनंतरुजसमोगुपालका ॥ रारअस
ममेरेमतिगेपमहाविधवक्र ॥ टहकनभयोसाहीऐएकनंद
लालाका ॥ लीजीयेउतारपारकीजीएकृपाअावारविरदकोसभ
रतोहिनामदीनद्यालका ॥ १ ॥ जैभिनुकहै
सुनजराजाना ॥ वऊरब्रह्मसुतवचनविधाना ॥ कहियाहोएव
हासीवामा ॥ महाढीठचंडीदृढनामा ॥ तातेतुमरेसदाचितमन ॥ व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चनक हैं सुन हु दे दै अवनन ॥ अद्भु पिता का हत है जे से ॥ तुमरी
सब अन्न ऊ तुम तैं तसै ॥ मुख वस्तु मांगु ऊ चेडी पृत्ति ॥ त्यावै गीव हा
सुचि पावन अति ॥ जा तुम कहैं सुनो न हि करई ॥ सुद्ध ते उलटा अ
नुसरई ॥ २ ॥ दो ॥ रैन सम मै पृथ पुत्र सो वे नक है सुन वाल ॥ का ल
पिता का अधम मुज कौ न करै जंजाल ॥ ३ ॥ चौ ॥ पुन मन मांहि उपज
त यह वाता ॥ इह विध अधकु रो कुसला ता ॥ अंग हीन ब्राह्मण कुची
ल अति ॥ करो न मंत्रित मुख मंद मति ॥ भिलन अन्नाज वन्ना उरसो
ई ॥ कुदृ अन्न त्यावो हम जोई ॥ मसुर चनन न के व रे व ना वो ॥ आज्ञा
दूध की खीर करावो ॥ तल पाक सुद्ध म प्रकार के करो सकल तेल म
हार जे ॥ टका ऐक दिज दक्षना देहि ॥ पुन मुख वास कछु न करै हो
॥ ४ ॥ दो ॥ आद्ध करो गा य ही विधि ब्राह्मण त्याइ मलीन ॥ कह्या सु
त का मी कुटल जनम करम के दीन ॥ ५ ॥ चौ ॥ त्यावो पुद्र जस अधमी अ
ज्ञानी ॥ मत क वदन अदृ मद यानी ॥ जन के हिंसा मांस अहारी
कुष्टी करमी हानि विकारी ॥ सकल समग्री मुख मंगावो ॥ पावन व
स्तु ऐक न ही त्यावो ॥ न ही मज रो दीपक रुचि कर ॥ ऐक अपार ध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

रोपिंउग्रसर ॥ नीलवसनद्विजअग्रणे धरऊं ॥ पिता ग्राह्य विधवतन
हीकरऊं ॥ पहवचसुतकौकहेरिषीश्वर ॥ चेंडीतीयसुभसुने
ग्रवनधरि ॥ ६ ॥ दोहा ॥ वेहीबोलीक्रौधकैसुनरेपतिअरुतात ॥ मे
त्रकीयातुमपरसपरमुहिसमझीसबबात ॥ ७ ॥ चौ० ॥ वचननतुमारे
हृदेनधरऊं ॥ ग्राधससुरकाबधवतकरऊं ॥ सकलसमग्रीवेद
विधाना ॥ ल्यावोब्रह्मणविद्यावाना ॥ तुमभीवेदिजल्याऊंमेपूमर
ति ॥ मेल्यावोगीविविधविमलमति ॥ ग्रतिसिमतजातापटकमी ॥
तसद्विजवरल्याउसुधमीं ॥ गोपेकीग्रुचिदहिमेगावो ॥ जोऊंदूध
कीखीरबनावो ॥ तुमभीवमवतेलवाकसम ॥ मेकरहोइतयाके
सकलग्रब ॥ ८ ॥ दोहा ॥ वेरचननकेतुमकहैमेनकरोजीपजान ॥ मो
ठभरचयुतिकरोजाउदेवररुचमान ॥ ९ ॥ चौ० ॥ ग्रनोदूधकीबीरे
तुमकहो ॥ मोबीग्रबरग्रजापेदहहो ॥ होगोपेकीसकलबनबो
पुनिदधिकौजुमठासुकरावो ॥ कहौपेडपरएकसुपारी ॥ मेरा
खागीग्रीफलभारी ॥ तुमकहोदेननीलपटद्विजवर ॥ मेदेवोगीग्रु
भगपटंबर ॥ टकौदकनातमधपश्योमन ॥ कनेकमेहरदेवोब्रह्म
नतव ॥ गोपीचंदनतुमभीब्यानर ॥ ल्यावोगीवनमपचंदनवर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

९० ॥ दो० ॥ तिलक तंतेवो तसुवास मुष फूलमाल चाहियराउ ॥ ससुर
श्राद्ध विधवतु करो तुम मेरे वचन मिटाइ ॥ ११ ॥ चौ० ॥ चंडी वचन सु
वसु नेरिषीश्वर ॥ भयो मुदित मन माहि तपीश्वर ॥ कहिउ दाल
कसुत सुनवाता ॥ विधसु श्राद्ध करत तुम साता ॥ चंडी वचन कहि
मुष जैसे ॥ कीनो ससुर श्राद्ध विधि तैसे ॥ संतोष ब्राह्मण पहु जाकरि
दे योदान दक्षना भाउ धरि ॥ फरन श्राद्ध भयो जब विधवत ॥ तब हि
ऋषि को त्यागि रिष चंडी प्रति ॥ विसरि गई रिष उतलट ही वाता ॥ तीय को व
चन कहि कुसराता ॥ पुर ॥ दो० ॥ चंडी सो रिष वच कहे पिततर पिंड लेजा
हि ॥ पावन गंगा जल विषे देहु तहा पर वाहि ॥ १३ ॥ चौ० ॥ सुनि के चं
डी उठी क्रोध करि ॥ तत छिन पिंड उठाइ लीये कर ॥ कुल सो हार षिण
की जहा ॥ पिंड ससुर के डारे तहा ॥ पिंड डार चंडी फिर आई ॥ सब विधपित
ब से पूषी ब सुनाई ॥ ऐसी हो पिंड मल डारे ॥ वसि छिन नरक मांहि पितर
तुमारे ॥ सुन एव बमहा क्रोध जी पम यो ॥ तब हि शाप चंडी को द यो
शिला वज्र की होइ दुष्ट मति ॥ दीरघ तन धारइ तत छिन प्रति
१४ ॥ दो० ॥ सुन चंडी विसमै भई ठाढी विव कर जोर ॥ मुक्ति बताव
हु कृपा करि निरमल करु मोहि कहु कीजे ओर ॥ १५ ॥

कृ० १

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्वमेध
जैमि १६

वचनउदालकरिषतत ॥ द्वापरयुगकोअंतुहोइजब ॥ त
वहीहेउकृष्णअवतारा ॥ पांडवकरहीगोत्रसंघारा ॥ हत्या
मानधर्मसुतलेई ॥ अस्वमेधमषकरिहैतेई ॥ धर्मतातके
बोधवपारथ ॥ होइगोवहीअस्वकोस्वारथ ॥ शिलारूपतुम
परीजहाही ॥ चलिआवैगाअस्वतहाही ॥ परसकरैतुमसौज
वअंगा ॥ लोभरहैगातुमरेसंगा ॥ १६ ॥ अष्टपहोरजबक
रैगाअसरजनतुमरेगात ॥ मुक्तितुमारीहोइतबम्यापुमिटैकु
सलात ॥ १७ ॥
जैमिनकहेसनजराजाकुन
रिसवचनकहेअरमन ॥ होकृपालसमवधमुनिदीनी ॥ पारथ
रिषतेस्राजोलीनी ॥ हरषतहीएकटकमहिमाया ॥ सकलचमूसौ
नदउपजायो ॥ सोवतअरजनमुष्टिप्रहारी ॥ हयमकतायेसिमोउ
वारी ॥ चडीपरीवि जैकेचरनन ॥ हयदेहधएचलीमदतमन ॥ औगौ
चलेतमयापुनवाजा ॥ पाछेपांडवअरुसमराजा ॥ १८ ॥ अरजन
मुष्टिप्रहारकरिमनउपज्योअभिमान ॥ हयमकतायोअस्लासौमैहो
अतिवलवान ॥ १९ ॥ हमहेकलौकरोहयकाजो ॥ कृतिकालीहि
फिरोसगराजो ॥ किनमाहजोतसकलपत्याऊं ॥ धर्मतातवहियज्ञो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करां ॥ तीन लोक के सुर असुर नर जव ॥ निमिष ऐक मधि जीत लेउ
सव ॥ जैमिन कहै सुन जनमेजै राजा ना ॥ अरजन उपजी मन अभिमा
ना ॥ चंपापुर पुनि हय चलि गयो ॥ नगर हंसधुज पालत भया
ऊंचा गगन कंचन के मंदर ॥ छवि जगमग पुर लगत सुंदर ॥ २०
मंदर कनक रतन खचित जगमगात अति जोति ॥ चंपावती
पुरी निरख अति चौंधी जीय होत ॥ २१ ॥ कहि
जैमिन सुन जनमेजय नृप ॥ वरनो चंपावती नराधिप ॥ कंचन
कलस गृहन पर सोहै ॥ जड़ित जराव कोट रवि को है ॥ धुजा पता
का अटा अटारी ॥ चंद्र मन खचित तप अनुभम कारी ॥ धाम अगति व सहित
भले गा ॥ गृह गृह हरि कथा कछ पापनि हति सौ गा ॥ शाल ग्राम सेव सभ करि
हित सौ हरि हरि नाम उचरई ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय ठाकुर वैश्य कमी ॥ छत्रीस
रै महा सुधर्मी ॥ २२ ॥ छत्री रणी सुरे वली सन्मुख करहि प्रहार ॥ तो
तहि रिपु संग्राम कहुँ एक वहन न आवहि हार ॥ २३ ॥ इति [illegible]
इ विचरति हैं पुर के निकट ॥ वचन कहि प्रगटा इ तत [illegible]
वहि ॥ २४ ॥ सुनि [illegible] तिव वचन हंसधुज राजा ॥ तुम रे पुर पावति म
[illegible] ॥ अति [illegible] कनक किरीट जड़ित मन नगन
[illegible] ॥ शोभित कनक पत्र [illegible] माला ॥ ता पर [illegible] पाला ॥ [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

नअलंकार शोभित तन ॥ चंदन चरचत अंग मुदित मन ॥ सेना नृप
नृपति वरुण पाहि ॥ दिखीय तब अश्व यज्ञ को आहि ॥ सुनि नृप हृद वचन नम्र
पमन नमयो ॥ सचिव मुदित को वेग बुलायो ॥ २५ ॥ नृपति हृदै सधु
जमुदित मन नहिं समात सब अंग ॥ मंत्री को आज्ञा करी आन्यो पक
र तुरंग ॥ २६ ॥ नृप आचरज भयो निर्खि तुरंगा ॥ नृप सब तन
चित्र शुभ अंगा ॥ आज्ञा कर तम थाम्ह पाला ॥ पठ्यपत्रका को तत्का
ला ॥ सभा मिली सुर नर मह ॥ लोग पठन पत्र को तहा ॥ हे तुरंग
वर नृपति युधिष्ठिर ॥ यज्ञ अश्व रंभ की यो हस्तिनपुर ॥ भयो सच कृ
नंदनंदन ॥ पार्थ स्वामि शत्रुनिकंदन ॥ चतुरंग नि सेना नृप आन
गान ॥ सुर वीर रनधीर मुदित मन २७ ॥ सो बांधे तः अश्व को २
हो नृप अति बलवान ॥ तौ तहि ते नृपति को कै संग्राम विधान ॥ २
८ ॥ जो न ही जुरि सके मै पाला ॥ आइ मिले हम को तत काला ॥ क
छु न कहे गे हम तिः राजा ॥ अज्ञा मानि कि राहि सज बाजा ॥ छत्र धर्म
कै सुराव साई ॥ हम को थप पाला जेन पसाई ॥ और प्रताप लि यो अधि
जै है ॥ पठ्या सुनाइ पत्रिका तै से ॥ नृप हृद सधु जहां पहरवत आप
ली पा बुलाइ सचिव अपार मति ॥ वरुण पै बुलाइ लीयो नृपताता ॥ कही
उच्चार नृपति पहवाता ॥ २८ ॥ सन उस सचिव अरु ताता तब पुन सेना के

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सिरताज ॥ आज्ञा तुमको हम करी करउ पुछ को सा ज ॥ २॰ ॥ दो ॥ दे
ल्यो वरुष्ट हंसध्वज राजा ॥ सनकु सभा पक कै सुमरु वाजा ॥ ताते हे
इ परमक ह्याना ॥ दोनो बात तलाभ माहि जाना ॥ जो हम जो तैहा
रैं पाये ॥ आ वहि कूष्म भगति के स्वार्थ ॥ अर जनका दुष सहिन स
कति हए ॥ हम दसीनु परस हि अहि म वसर ॥ अरु जोरन माहि हम
हि हराचो ॥ तो पुनि मोहि परे मव दु पायो ॥ तव हम मकि रहि अस्व के
साव्या ॥ मष शालापर सो जगनाथ्या ॥ ३१ ॥ चौ ॥ जिः भगवत के दर
सको बाज तशिव ब्रह्माहि ॥ ताको दरसनु हो इगा मुक कैं अस्व प्र
साद ॥ ३२ ॥ दो ॥ जिः दुरसनकी निशाह्नत प्यौसो ॥ लागी रहत हृदे
मति आसा ॥ विधना सो इविनाई बाता ॥ निभ्रै दरसु रूइ जगता ता
अस्व सा पप्र घुमृ ताततहए ॥ अरु स्वार्थ पार पस हे रावर ॥
सहिन सकति हरि हए निमष भगतदुष ॥ आरत हरत देत निरभौ
सुष ॥ अर जन शोवक श्री गोलको ॥ सखा कहाव तै नंदलाल को ॥ भा
रव्यमे स्वार पीम पापुभ ॥ तो तेजी तदपि कैरव सभ ॥ ३३ ॥ अर
जनतको दुष देउ गार नमहि करसेगास ॥ पाठव प्रीति पद्मान कैं अव
हिगे घने स्याम ॥ ३४ ॥ चौ ॥ घर वेठे तो हे हरि दरसन ॥ श्री पति चरन
कमल को परसन ॥ सेनापति भा बोभ्रै पाला ॥ उद्यम करउ पुढ तनतर
श्री ५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

कोला ॥ तारे जी तमो हि कल्याना ॥ दरसन होहि है श्रीभगवाना ॥ अश्व
पकरो आय हत हि पहु हमारे ॥ ता ते मंत्र ऊ वड भाग विचारे ॥ छत्रधर अश्व
दशम सुराजी ॥ दो नाव वात महा सुख भारी ॥ जैमिन कहे सुन जन्मेजय
वनन ॥ नृपति हि सधु जके मह ह वचनन ॥ ३५ ॥ सेना सभ प्रमुद ना
भई सुने नृपति के वैन ॥ उद्दाम की नो युद्ध को सभ सूर न मन चैन ॥ ३६ ॥
नृपति हि सधु जस चिव वुलायो ॥ तो को सभ वत तो तु सम सजायो ॥ चतुर
रा च म लेजत तहिं न अव ॥ लेखत्याव जकाग त ऊ पर सव ॥ प्रथम मे नायक
सात सेनापति ॥ तेनि कुस सैना सगनित ॥ एक एक नायक के सभ सजा
सरवा कहि च मच तुरंगा ॥ ३७ ॥ सहं सरकी सगापे द वर इक नर का
नायक सजा ॥ मत्त सो सविराज हि मद मातेश्रुम तुरंग ॥ ३८ ॥ इक इ
कला चतुरंग महावर ॥ सूर सकल त्र सवाए तन फुपर ॥ ऐ कुला व
रथ प्रभु जविराजित ॥ ता पर चढे योध छवि छाजत ॥ पायक गने न जाहि
अपारा ॥ इक इक नायक मह छवि सारा ॥ इक इक सौं दुंदभ से साता ॥ वा
जत प्रवनन न सुनीयत वाता ॥ सो तो नायक इसी प्रकारा ॥ सकल चमु
चले दीपन गारी ॥ पांच पुत्र है यो त्र महीपाला ॥ आए चढि ते ऊत त काला
॥ नाम कहो ति: सात के प्रथम सरथ जो प्रजान ॥ दूजो प्रतस
जान ति: महा सूर वलवान ॥ ४१ ॥ ती जो नाम सध्वंना तो को ॥ वृषभ
भगत रवपर गतजा को ॥ चौथो चंद्रभान सुंदर दुति ॥ चंद्रसेन पांचमो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नृपतिसुत ॥ पौत्रे नृपति वुरं तनना मा ॥ महावलि एकसहस्र भरा
मा ॥ पुनि पूत्र सनंद सरहि जानऊ ॥ महावली सहस्र राव हि चानऊ ॥
रेकऊ एक सुत संग चमू अपारा ॥ सहस सचली सुंदर मतवारा ॥ पुनि
रेकउ एक सो लाष तुरंगा ॥ साठ सहस्र पाइक उ एक संगा ॥ ४२ ॥
लाष सहस्र असवार हि ऐक ऐक सुत साथ ॥ है है लाष पदाति तबर ऐक ऐ
क संगाथ ॥ ४३ ॥ चौ ॥ केउ मातंग नि धर केउ धन वपर ॥ चले पुहुकर
दरसन मित हरि ॥ श सुत असु पहरि वनरतन ॥ अगनीत चतुरंगिनी
चमू गन ॥ रथ पहरु स्री कंचन के भरे ॥ कवच संजोए सापव उ करे ॥
इक एक सुत संग सहस नागारा ॥ सूर शहनाइ वजत अपारा ॥ चा
रो पूत पौत्र दोउ सापा ॥ न्याया सभन नृपति की माया ॥ दोहा ॥ भ
पसु नृप रेताता ॥ कहा सुधन्वा रनविष्याता ॥ ४४ ॥
॥ मंत्री कह्यो प्रणाम कर ॥ सुनऊ हंसधुज जोहि ॥ वृत अष उ षेल
न गयो सहस्र सुधन्वा तोहि ॥ ४५ ॥ नहि सुधन्वा को ऐसो सुध
अपाग ह्यो नृपकी पाउ ठाम पुध ॥ माता के रो हंसधुज रानी ॥ तुम
तो चलऊ सहस्र सरता जो ॥ माइ सुधन्वी तुम रेपाहि ॥ विमुष भगत
सुरारि वाके ॥ ऐसे माता करी नृपति उव ॥ चले अपन राह विदा ले
ननतव माता पिता के पाइन लागे ॥ गुरु चरनन नृप हि चमन रो
नतव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ए

१२२

अश्वमेध

गे ॥ इष्टदेवकी पूजा कीनी ॥ तिलक तंबोल तद कीनी दीनी ॥ ४६ ॥ दो० ॥
एक निके रथि वर इष्ट हेतु गो शोचक एक ॥ एक जात शम आराधही मन
म वचन क्रम जीय टेक ॥ ४७ ॥ सो० ॥ इक नके शंकर की सेवा ॥ एक
आराधहि देवी देवा ॥ पूजा करि मांगत वरदाना ॥ तुम को दसु देहि
भगवाना ॥ इष्टदेव हू तेज करषाला ॥ दिनमणि क्रांति पायो धमतवा
ला ॥ वसन पट वर घर हरि मन हपा ॥ अति विचित्र तन महा सरूपा ॥ अ
पुने अपुने गृह ते सरूरे ॥ चले विद्दो कपि हे प्रणाप्रे ॥ ४८ ॥ [illegible] ॥ शस्त्र
बांधि निकसे सकल अगासं जो हर्ष संगार ॥ श्रीफल अक्षत तिलक मुक्ता
फल [illegible] विचार ॥ ४९ ॥ चौ० ॥ दीपा अश्वीर वीर विरुझ कारी ॥ अश्व वझ वेग [illegible] द
जीत धीर धारी ॥ तुम तो चले निमित दरसन हरि ॥ अरु संग्राम करन जो
तन अरि ॥ आगे पार [illegible] अति बलवाना ॥ जाके भ्रात सहाय भगवाना ॥
तुम हु क्षत्री निज धर्म से भीर रहु ॥ जीत रहु हरि सब शत्रु संघार रहु ॥ जे भा
गरु जाग हाइ धिक धिकारा ॥ तो क्षत्री धर्म तुमारा ॥ कायर होय जु र
न ते भागे ॥ ताके कुल कालष [illegible] लागे ॥ ५० ॥ दो० ॥ क्षत्री धर्म सरूनम
बल रहु रहु न त्यागत प्रान ॥ नित प्रति करहु वान नन सहित पूजा
श्रीभगवान ॥ ५१ ॥ सो० ॥ हय को त्याव रहु जीत युद्ध करि ॥ तुम हु सा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दनेहमदरसमहिहृदि ॥ अफलअक्षितहृदरदकुशावदि ॥ दधिकुंकुमच
रचोसवतनपदि ॥ मदपितुमहदिभगतविमलमति ॥ त्यावऊवेगा
जीतपदमापति ॥ दईअसीससभनकेजपजन ॥ दरसऊकृष्णअरु
जीतऊअरिरन ॥ पुनजुवतीजनवचनउचारा ॥ विष्णुभगतवरभ
पतुमारा ॥ तुमपुनभगतसकलजुरिलोगा ॥ जऊऊरनसनमुख
भेहुसोगा ॥ ५२ ॥ दो० ॥ तुमपह[illegible]धारीहृदेमाहिजीताहिगेहृदियोग
आवतराहिगेकुलसहिततराहिगेसभलोग ॥ ५३ ॥ चौ० ॥ जोईपुरु
षजगपरउपकारी ॥ तिनकासंगहोइशुभकारी ॥ आपसुवैष्ण
वरनसुखदेई ॥ दुषीपापीनिरखपीहेरेइ ॥ जैमिनुकहैसुनऊभूपा
ला ॥ पतिकोधमुदऊवत्तिवाला ॥ कहिदिशोतभरतारसुनावति
परकारजकोसुजसुवढावति ॥ जलमहितपुसंधतऊकरिषवरा
पदमापतिकोहोतेध्यानधरि ॥ ऐकनिशाझीवरजलमाही ॥ आइप
सारयोजालतहांहीं ॥ ५४ ॥ दो० ॥ मीनपरेवऊजालमहिदिषपासियार
तिःमाहि ॥ झीवरखैंचभारवऊजतननिकास्योताहि ॥ ५५ ॥ चौ० ॥ झीवर
काढ्योजालजतनकरि ॥ मीनअनेकसापइकुरिखवर ॥ झीवरकह्यो
वचनरिषकोतव ॥ मुक्तहोहुरिषजाऊनिकसअव ॥ झीवरप्रतिरिषव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

वचन उचारे ॥ सुनलेऊ ईश्वर वाक हमारे ॥ जौ तुम सम भजीवन मुकतावऊ ॥ तौ हम कौ निसनावितावऊ ॥ जौ इन घातक रऊ हम साथा ॥ तौ ह्वा ठऊ जौ इन ही साथा ॥ ह्वां ठे ईश्वर शिवआरु मीना ॥ वच मीन संग साध प्रवीना ५६ ॥ दो ॥ तौ तुम पर उपकार हित यह धारी मन माहि ॥ दरसावऊ हरिनगर कौ सार पअपुनौ नाहि ५७ ॥ चौ ॥ हम ही निमित हंस धुज राजा ॥ अट का याध मंज कौ वाजा ॥ लौ गन अरके दरसु करन हरि ॥ न्रपति की यौ उपकार प्रजा पप ॥ पुरु ते निकसी च मेध विदा करि ॥ मन माहि ॥ अमर गणेश देव हरि ॥ केऊ भए गज पर असवारा ॥ केऊ चले चढि तुरंग अपारा ॥ केऊ ... रू ठ भए रथ ऊपर ॥ केऊ नर चले शास्त्र गहि भूपर ॥ व जहि व जं त्र अपार नि शान ॥ सुर सहनाइ शिव स्वि धनाना ५८ ॥ सेना चली इक त्र हेडुं दुभ शावद व जाइ ॥ अश्वमेध के यज्ञ कौ सपृद दे पाय हय ध्याय ५९ ॥

९ ११ १३२२

जैमिन कहै सुनऊ न्रपति जनमेजा सवधान कथा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प्रधावत भिष्ट अति करतौ जे प्रकृति पात ॥ १ ॥ दो ॥ कंपवान
त्रैलोक भयो सकिन ॥ भयो महाभार पद्द जो पवन ॥ चलै सरसि
र चवर अलावति ॥ छवि जगमग समंद पद्दियावति ॥ मंत्री
न पवको सुचित प्रवीनो ॥ सकल कटक कोचतिराले नो ॥ स्रा
ताकरी हंसधुजनपतव ॥ तदिविलब सभसेन चलअस्र व
बाहन अवर वाणी पेन होई ॥ अवर चलै रणके सभ कोई ॥
जेको पुरीर होसनपावो ॥ कलसमत तिः भी तबिनावो ॥ २ ॥
तपत्तिकडाह तेल के भपत्तिदी पेच उगाइ ॥ जो नर पुरी रहे को क
ताके देउ जराइ ॥ ३ ॥ दो ॥ उपत्यो तेल कडाह बीच अति ॥ माणइ
कीसप्रमाण सूरति पति ॥ स्रा ताकरी हंसधुज जैसे ॥ कर तभर
योमंत्री कृत तैसे ॥ भाखोनपतिर है जो ऊपाके ॥ ताको अगनि
प्रजारी आके ॥ सुतसुधन्वा पेत्र मझ होई ॥ पाके रहे जरावउ
स्राई ॥ सपत्तिकरी अतिकठन भमाला ॥ दउदि पाचोवऊ विक
राला ॥ जैभिनक है सुनऊ कुरराजा ॥ सभ चढिचलै सरसिर
ताजा ॥ ४ ॥ चली सकल सेना सुभटर हो गागन रज पूर
ता पाति [illegible] पर तन हती सरर ॥ ५ ॥ दो ॥ चढ़ि देव

CC-0. Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१२५

अश्वमेध

तमंदरपरिजुअजन ॥ दूरसहिपतिहोहे हरषतमन ॥ करहि
असीसजीतत्वावहिहए ॥ वातकहिहसभजुवतिपरस्पर ॥
निरषहिहिडतिआपनभरतार की ॥ जीतहिपहु सेनामुरारिकी
जीतकहुत्वावहिपुरमांहि ॥ दूरसोहिजीहरिसंसैनाही ॥ सक
लपुरीदूरसुनहरिहोई ॥ तातेकिलविवरहैनकोई ॥ एकतीय
कहैहरिपुरआवहिजव ॥ लागोचरनमुकतिमागोतव ॥ ६ ॥
॥ एकजुवतीऐसेकहैजवआवहिभगवान ॥ लेवरहमींवङ[?]
मांगसुतहीइपरमकल्यान ॥ ७ ॥ ॥ एकतीयकहैहरिपुरि
आवहिजव ॥ मांगलेहिजोधनसमहहतव ॥ कोऊतीयकहैव
सनभूषनवर ॥ मांगलेहुगोपुरआवहिहरि ॥ ऐककहैसुतपव[?]
तिकल्याना ॥ मांगहिजीहरिपहियहदाना ॥ एककहैसुतपतिक
ल्याना ॥ मांगहिजीहरिपहियहदाना ॥ एकइस्त्रीरतिबुधिहमा
रे ॥ तातेत्वावहिजीतमुरारे ॥ वहुप्रकारतीयदेहिअसीसा ॥ ह
मरेपतिजीतहिजगदीसा ॥ पुरतेनिकसचलीसभसेना ॥ वान
कहीपरतनहीवेना ॥ ८ ॥ ॥ सजिसंजोहिसेनाचलीपुरवरहो[?]
नहोकोर ॥ तितआवसरप्रापतिभयोसहरसुधंन्वासोइ ॥ ९ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२२

देवसुधन्वाभयोच ऊतमन ॥ सेनादिष्टवरीमतिअनगन
जान्योको ऊअव रयपहराजा ॥ हमवरे चडुआयोदत्तसाजा
यहीविचाकिर तमतमाहो ॥ वौत्वान्नपतिओसचिवतहाहा
चिहराली योसचिवसेनासब ॥ भित्वासुधन्वामारगमेतव
पहुचाभग तसुमतिमंत्रीप्रति ॥ उद्यमपुङ्कको याकतिभपति
कहिव तां तसवमोहिसुनावो ॥ हमरेहदेमदेहभिटावों ॥ १०
सुनऊभगतमंत्रीकहेअस्वपुधि एरराइ ॥ नृपतिहसुध
जवांधियोप्रि: भगवानसहाइ ॥ ११ ॥ पारथअस्वारथअत
वलवाना ॥ अस्वसहायकप्रभगवाना ॥ जीतलेहगवेगतु
रंगा ॥ अरजनसहतनृपतिवऊसंगा ॥ दिवरावऊवऊदुव
अरजनतन ॥ आवहिगेततकालस्यामघन ॥ योंहवकेदु
वसहितनसकतहरि ॥ कृपाधारआवहिगेगिरधरि ॥ जोहम
काजीत्याअरजनअव ॥ हरिदरसहिगेगजवुरमहितव ॥ जी
तहारदोनोविधिहरिकुम ॥ दोऊवातमहिलभजाननृप ॥ १२
वात ॥ ये ॥ तेभिनुकहेसुनऊनृपतिभगतसुनीमह
दमभयोहरषततमवपलकात ॥ १३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बहुरि सुधन्वै वचन उचारे ॥ सुनहु सचिव तुम हित हमारे ॥ पा
र्थ्य को जीतो ततकाला ॥ यद्यपि तिः सहाइ नंदलाला ॥ ऐसे ताहि
न वानन चलावो ॥ प्रलै काल की समै दिखावो ॥ अरजुन निज शिव
कगुपालित ॥ अंगसंग जाके गिरधर निंतु ॥ ताको बानन से
गत पतावो ॥ तापाछे श्रीकृष्ण बुलावो ॥ पकरि हुंगे हरि धनुष
बान करि ॥ मुझकौ करहि सनाथ कृपा करि ॥ १४ ॥ अरज
न अरु श्रीकृष्ण महि भेद न कछु जोय जान ॥ जहां हां तहे देवइंस
तत हागुपाल वढान ॥ १५ ॥ कहे सुधन्वा सुनो सुचितत्व
र ॥ अब हो जाउं नहीं अपुने घर ॥ अस्त्र शस्त्र हथियार संग आवै
स जिस जो हरि सनमुख जावों ॥ पुर महि पुनि नर होय कोऊ अब
कुसुंदर सहित समाए रनसब ॥ कहे प पार पवात सुचित
मुझ ॥ पुर प्रवेस करोन उचत मुझ ॥ पुन मंत्री बोल्यो अति अब
सर ॥ धन्य सुधन्वा तु ही भगत हरि ॥ प्रथम तुम हित जा
हु कृपा करि ॥ सिर धरि रुप पितु मात चरन पर ॥ १६ ॥ ले
असीस पितमात की लागु बहनन के पाइ ॥ पुनि सुबति कोताव
के आर नगढ लेजाइ ॥ १७ ॥ मान ले हम रे उपदेसा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सा ॥ विलमुनकरउ वेगपुनिआवउ ॥
जाउपुरीजहकरउप्रवेसा ॥ सपकरीभ: पतिपहआइ ॥ ति
नप्रतपतजामनमहत्याबउ ॥ लेकठाहिमाहितिःडारी ॥ जोऊकायर
सहितराखारहैजुपाइ ॥ तिःसहमारीर
तिःसग्निप्रजारो ॥ इकदिजऔरददृजेबुनीचेबिन ॥ तुमकोभाखिसुनाईते
हैपुरइकछिन ॥ आज्ञाकरीहसधुज ऐसे ॥ पतिमंत्रीसुन
जैभिनककहैसुनजन
से ॥ १८ ॥ तिःतुरतकीयाप्रवेसु ॥ १९ ॥
उपदेस ॥ चल्यासुधन्वापुरमहि ॥ कहिप्राणामनहिगहाहमयो ॥ सुन
प्रथमहिभगतिपिताप्रहिगयो ॥ नगयोनमहभुज
उसुधन्वाकहैद्वीहसधुज ॥ भजहैतुमरनगयोनमहभुवन
सुनसुतहमरेपुत्रउदेसाति ॥ दरसहिगदरसनत्रिभुवन
पति ॥ जीतहारहमनोकत्याना ॥ दहुबिधदरसहिगमजानी ॥ ते
हमरेभागभऐजुहमअवसर ॥ र
कउधरमदुसरोदसुतिहर ॥ जिःप्रसादपुरहोरसनाप्या
सोआप्रपरस्योहमहाया ॥ सुधंन्वासुनबिताससहाइपवाहेप
कहैसुधंन्वासुनकुसुरुप ॥ २१ ॥ करनकु
क्षत्रधरमसमजामसुनदरसहकेकसुरुपतउनेर ॥ कीयोपरसमे
क्षत्रधरम तोविमपत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१२७

अश्वमेध

हंसध्वज नृप जब ॥ चलगये भगत निकट माता तव ॥ विनती
करी हीये अनुरागा ॥ प्रमुदित भगत मात पग लागा ॥ जननी क
ह्यो सुनहु वच ताता ॥ आजु विजै सर्व विष्याता ॥ भेद नही कछु अ
रजुन सौं हरि ॥ पारथ जीतन कठन सुरवर ॥ जिनके सदा सहा
इ रमापति ॥ तिनको जीतन महा कठन अति ॥ २२ ॥ २ ॥ कृष्ण जीतन
हीको सकै सुनहु पुत्र सहित काज ॥ प्रथ्य मोहि जीता धुज यकौं तो दर
सहु यदुराज ॥ २४ ॥ [illegible] ॥ जीत त्याउ सुत पुर महि गिरधर ॥ हम के
दर्स सुदिखावे गहरु ॥ जौ तुम हम मरे आज्ञाकारी ॥ हम कौ दर्स दिखाव
हु गिरधारी ॥ तुम प्रसाद हम दूर सुनहे ई ॥ हे इस ना पपु रीस
मकई ॥ जौ दर्शनु दत्तम ब्रह्मादिक ॥ खोजत शिव मघवा सनका
दिक ॥ ऐसा दर्शनु मुउ हिकरावहु ॥ जौ हम मरे प्रभु पुत्र कहाव
हु ॥ तौ नंदनंदन तव रूप तमाता ॥ अजहू न तुम उतारे ताता ॥ इक
पिवंदन दूसर देवा ॥ पितर देउ तीसरो अभेवा ॥ सुत परवंदन तरेत
वही ॥ तीरथ पितु वरसा वेजव ही ॥ नित प्रति हरि जसु कथा सुना
वे ॥ हरि सतनको दरसु करावे ॥ देवदंड सुत तत वहि उतारे ॥ मात पि
तमा ज्ञा मन धारे ॥ दानु कराइ पिता पदहि नित प्रति ॥ यज्ञ करा मप्रज्ञा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दूजं विधवत ॥ २४ ॥ दो० ॥ पुत्र रदंड तीसरो पुन गयापिंड भरतात ॥ ती
नौ करहै पुत्र जव पिण्ड उतरै पितमत ॥ २५ ॥ चौ० ॥ तीन दंड तुम सुनो मम
वनधर ॥ माता दंड एक कुहे सुतपर ॥ माता को कैदार लैजावै ॥ वद
नाप्य दर सुपरसावै ॥ तीन वेर खद्र पऊचावै ॥ सुत माता पाद्दहदा नै
करवै ॥ नारी तें नर होइ प्रमाना ॥ स सब वचन यह वेद विधाना ॥ प
ह सब दंड नतु ऊ हितु उतारै ॥ ते सम भव्ह रन तो हितु मारै ॥ कष्ट दर सहै
म को द्धि वरावऊ ॥ करि संग्राम जीत पुर त्यावऊ ॥ २६ ॥ दो० ॥ सुत प्राव
ति का मातम नकरत उपार अनेक ॥ सेवा तवै मह होत रिव की पातु जाइ
धिवेक ॥ २७ ॥ चौ० ॥ हम बोध्दत प्री दरस गुपाला ॥ भ मोन म ऊवी त व
ऊ काला ॥ सो घरि वैठही चलि आय थम ॥ स ह जेन्ह पति अ स्वारटका ध्या ॥
तुम जीत प्रवक्धि संग्रामा ॥ जीत वि जेदर स ऊ घन स्यामा ॥ जो काइ
रहेरन तें भागे ॥ ताको हसत लोगद दुख लागे ॥ त्रिः तननी को करहि
धिकारा ॥ कौन गत्यो सुत गर्भ संजोरा ॥ त्रिः सहंत के वचन कहत
सत ॥ प्रगट भयो यह हृप्र वद हिम्न प्रमति ॥ २८ ॥ दो० ॥ नि दहित तिस हिम
हतको त्रिः आसी सभ यो तात ॥ रणका यर प्रा पति भयो म्हुलजाई मा
त ॥ २९ ॥ चौ० ॥ वऊरा वचन कहत भई माता ॥ सुनऊ सुधन्नो हम
रौ वाता ॥ तो स्पा की जे रन संग्रामा ॥ तजग महस जस हा इस भी रामा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१३८

अश्वमेध

जुति १७

नहीं धिक्कार मो तोहि होई ॥ जननी को धिग जु कहै न कोई ॥ वानन कौ पट
जो कीजै रन ॥ पारथ जो तासह तस्पा मघन ॥ जीत कृष्ण को परम हित स्या
वज्र ॥ सभ लोगन को हरसु द्वेषा वज्र ॥ दंड हमारे तुम मेरे सिर पर ॥ सभ उ
तरे हम मकौ द्विया रहरि ३० ॥ वहुरि सुधन्वे वच कहै
माता सों प्रगटाइ ॥ मन वांछित फल पाइ हो दरसु होइ यदुराइ ३१ ॥
कहै सुधन्वा सुन वच माता ॥ तो तुम जननी हम तुम ताता ॥ जो पित मात
कृष्ण दरस पावो ॥ अरु पुर तो जन्म हि द्विविध बरावो ॥ तुम करुणा ते पूरण
काजा ॥ जि श्रद्धे दरस होइ यदुराजा ॥ हमरे मन न मैं तिनि श्रद्धि न उपजता
कैसे दरसु होइ यदुमापति ॥ अभ मदो ऊ बात बनी इहे अवसर ॥ कृष्ण त्रंथ
मैं पुनि होइ दरसु हरि ॥ धर्मि जन अश्व धुपस्यो हम महापापा ॥ सहज जे दरसु हो
रह हि ना पापा ३२ ॥ सुन जन्मे जप मात पुगधा स्यो सुधनै सीसु
दरसु होइ हरि रन विजे माता दई असीस ॥ ३३ ॥
रच्यो हित माता ॥ श्रीफल दीप मुदित करताता ॥ दधि अक्षत च
माहि ॥ जीत कृष्ण हरि से सकहु नाहि ॥ मात तो षक हरि च तुम रीव जे होइ स्न
ला आश्राइ वहुत चरनन तव ॥ कुंकुम हरद कुशा दधि ल्या भगतु ज व
चति कीया भगत को मापा ॥ वज्र राव हत णकहौ यह वाता ॥ चर
होदि पा तुम भ्राता ॥ वेद वचन मग दीन मोहि ॥ [illegible] देव रम हाकु ची

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नी मंद मति ॥ ३४ ॥ सम्प्रुरा संकट वचन कहे सदा तुमारी निंद
मै ए सकल परवार तें: कोऊ न भगत गोविंद ॥ ३५ ॥ तुम स
नु ऊ फ गेरन सार जतन प्रति ॥ जनकी सदा सहाइ रमापति ॥ संत रन
मोति लजा वऊ भाती ॥ कौ जेपु हृदि जेकु सला ता ॥ व फुर सु धन वचो
न उन्चारे ॥ सत्य वचन सम भव हत ता तुमारे ॥ सुन स सहोदर तुमप्रसा
द करि ॥ जीत सा उ परमा हत सार जतन हृप ॥ सकल तन गार कौ दिर सु
रा वो ॥ तुम सम सु रेके हृदि दर सा वो ॥ तुम पति सावर कुटंब सहित सव
वर सा वो दर मन ह रेके भाव ॥ ३६ ॥ तुम सम सुरेके कुल सकल
ष्टिवरा वो भगवान ॥ हेति पवित्र सकल तन रति हो ईश्वर सक स्यामी ॥ उ
धर स्याम भगत वह ताप गसी सो ॥ मन वच क्रम उन केरी मसो
। ॥ चले स्याम भगत सपु हेग हृसा धो ॥ प्रभाव तीको वचन सु नीया ॥ स्या
सा ॥ चले स्याम भगत सपुहे गह सा धो ॥ विदा लेन सा धो हम तो सो ॥ सा इव न्या हृ
सु सं जो हृदि जी पछि मो को ॥ विदा लेन सा वामा ॥ पति को शाङ्क प सी सव न
प्रिस्यों सं गमा सा ॥ सा पुध वे गदे क्र म तु वामा ॥ म जुन कपि सु गंध च र सो तन
न जव ॥ सा ई वाहृ रव प्रभाव ती तव ॥ ३२ ॥ कमल वर न सु ल के मधुप
व हृदि रेव सन न कसु भम हृदत मन ॥ तन हीन दृति निरख ल ज त म ग मीत
नेनन न सो ज नल दीन ॥ वं जनन के ॥ वं न व धक कु स म द्रु ति रा जे
धि द्र म सा धर म हृदि व धि को जे ॥ ऊं पार रते सु गंध धार ध ए ॥ म ष
३८ ॥ क च क ठ ... कवि द र वर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१६८ ॥ नस्रातेकारसाजेसव ॥ बोउइ शा वर्षवदिक्रम स्रतिछवि ॥ कंचनव
अश्वमेध रनअंगउजलअति ॥ सजिसिंगारराठीसनीबपति ॥ मधुरहा
सकरिवचनउचारे ॥ करतचलतुमन्रन्धहमारे ॥ सुनोमोहितु
मचलेहदरसहरि ॥ शोभजातितीयउचपितावमकर ॥ ४८ ॥ दान
पुण्यहरिदरसपुनितीरथपरसनिजाइ ॥ तहअरधगीचाही
येदानफलैअधिकाइ ॥ ४१ ॥ पजहोमसुकृतकीवरे ॥ वाम
अंगचाहीयेतिः तरे ॥ हमकोतजिरहजाउकतकत ॥ वेदवचनप्र
प्रतिपालकरहुपति ॥ ज्ञानसरूपीजलतुमरेतन ॥ तिसहितदडाहे
लेहुहरषतमन ॥ सकलजगतमहिज्ञानप्रकासत ॥ ज्ञानरूप
अज्ञानअभासत ॥ तिनकेजपहनीज्ञानविचारा ॥ तेनरपाप
नुज्ञानअपारा ॥ ज्ञानसरूपीपुत्रजानुजीपसोतुमरेतनमाझ
व्यातय ॥ ४२ ॥ सुतहोहेजवहीसुफलज्ञानसहतपरमान
पवित्रतितीयकोपुरषजहहेकपुवतिरतिमान ॥ ४३ ॥ एसेन
रतीयतेउपजतसुत ॥ ज्ञानविवेकविचारसहितयुत ॥ जः तायपर
नरकीहोवांछा ॥ मनमपकेलकरनकीकांछा ॥ पुनिस्त्रिः तीयकेपति
वरतायरति ॥ तिःदपतितेजासुतउपजति ॥ महाअपकीरतिदइम
हमति ॥ तजतवेदमतिचलतिमंदमति ॥ तांतेहमहोपतिव्रत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नारी ॥ तुम पुन ऐकनाशि अनधारी ॥ हम तुम तेउपजे सोऊ ताना
ज्ञानवंत तस्सराविज्ञाना ॥ ४४ ॥ दो० ॥ सोऊ ज्ञान जतन तुअ विषे आरप
ऊकरुणाधार ॥ ज्ञानप्र[illegible]उपजे भजत ते वष्टि कुल तउधार
४५ ॥ आई होमन साधए जेसी ॥ पूरन करअभगत तुमते
सी ॥ ज्ञानसरूपी जतन तुअ माही ॥ करुणाकर आरपअमअमा
ही ॥ जेभनु कहे सुनअमे पाला ॥ यह वच कहे प्रभावतवाला
वअरसुध न्हेवचन उचारा ॥ हसिकेकह्यो सुनेअरीदारा ॥ ऐसेव
चनकहे इह अवसर ॥ देवअनहीहदेविचारकरी ॥ कैसेदउतार
हरितदाना ॥ हमतो चलेदरसभगवाना ॥ ४६ ॥ जात्राजातेकिसीकोव
धा ॥ जिः तेउपजहि साधउ बाधा ॥ भकमि तेकरत तनिवारे जोर ॥ ४७
रजरहावे कोइ ॥ ब्राह्मणकोमृगभ ॥ ताकोकदुकरवरजिरहावे ॥ क
पुनिकोईकहु घर आवे ॥ ताकोवर जाहदु एभाउधए ॥ साध
प्यासुनन कोजाइकोऊनेर ॥ ताकोवर जहिअधर्मप्रमाना ॥ तिनकोहेत
संगदरसनभगवाना ॥ इन तेवर जतिप्रापति आइस
नहीकवहुगति ॥ परकार जकरतेजाऊवर जत ॥ लोक हसिसभते
ईइहकालोकि ॥ विघ्नपाइमदिदरसगुपालनहि ॥ ४८
हिधकोकी ॥ [illegible] ते हदे विचारा ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ १७४ ॥

अश्वमेध

॥ जैमिनु कहे सुनउ नृपति भगत तक हे वचसार ॥ बोली वउ
प्रभीवताकरी वउतु मनुहार ॥ ४८ ॥ जुवती विनती करी
अपारा ॥ हाथ जोर कीनी मनुहारा ॥ तुम हम को तजि जाउ निरा
सा ॥ ताते होत न ज्ञान प्रकासा ॥ उपजत है तव हो मन ज्ञाना ॥
तव श्रम सने होत विधनाना ॥ प्रथम मै हरि जन ने ज्ञान दृढावति
ता पाछे विद्यौ और वनावति ॥ शुद्ध शरीर होइ यह तव ही ॥ उ
पजत ज्ञान हृदै ते जव ही ॥ यह जो पुन्य कहे तुम जैसे ॥ होत
न ज्ञान विना यह केसे ॥ ५० ॥ ज्ञान रहत नर पशु जन्म मे स
म घट उपजत नाहि ॥ प्रगट तकि सही पछित न लाख दरसइ
ह माहि ॥ ५१ ॥ प्रथम मै प्रगट होत है सुत जेत ॥ पाछे ज्ञा
न प्रकाश होत तव ॥ ज्ञान सरूपी निश्चै तो ता ॥ सत्य मान ली
जै मन विवाता ॥ ताते ज्ञान सरूप पुत्र विनु ॥ देव पितर रन देवी
यइ कठिन ॥ सुत ते अवर रहत है वउ गुन ॥ सोई ज्ञान है तनु
मरे तन पुन ॥ ज्ञान रूपी वीर ज तुम माही ॥ करुणाकर धार उ
मउ माहि ॥ ५२ ॥ ज्ञान सरूपी जल मे जैसा ॥ जो दी ये दान
मान लीजीये वचन मउ कहे तुम राक त्यो ना ॥ ५३ ॥ शुद्ध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मईआवदेहहमारी ॥ देखज्ञानजलमुकुतिसुधारी ॥ वेगदेख
मुनकापितुदाना ॥ कोउनहीभगतभगवाना ॥ जैमिनकहेसुनो
नरुभूपाला ॥ यहवचकहेप्रभावतीबाला ॥ भगतकहोजुव
तीइहतिअवसर ॥ कोउजमाहिदरसुपरसोहुए ॥ हमरीआज्ञा
मानलीजीपै ॥ मनवचक्रमकरिविवादीजीए ॥ इहवचकहेभ
गतप्रगटाई ॥ पूरनभऐअठारहतिधाई ॥ ५५ ॥

५५ ५८ ५५४७

जैमिनकहेसुनजनपतिजनमेजैसवधार
न ॥ जेऊकहेतीमवचसकलभगतसुनेकान ॥ १ ॥
कहेसुधन्वासुनजुवतीवर ॥ प्रथममातहतउच
तिदरसुकरउहुए ॥ तुमकाहेअतिकरतविलापा ॥ हमकोर
पजावतिसंतापा ॥ हीनकरउनिजुवचनहमारा ॥ तुमअ
पनेमनकरोविचारी ॥ छत्रधरमपहुवेदअचारा ॥ रनसो
नकरेधनुषटंकारा ॥ रनसनमुखतजेजेमनहरखत ॥ प्रोप
तिहोइतिसेवतअगनति ॥ छत्रधरमप्रथमभेरनकरइ ॥ पा
देअवरकाजअनसरई ॥ २ ॥ रनमहितकापरहरिहैनेर

समऽ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जिन मधि होत न ज्ञान ॥ सनमुष रहुन माहि जु जड़ ही ज्ञानवंत बल
वान ॥ ३ ॥ ॥ जिनके मन माहि होत न ज्ञाना ॥ रन मुष देत न कं
पति प्राना ॥ तेनर का पर जग उपहासा ॥ जिनके होत न ज्ञा
न प्रकासा ॥ सोइ ज्ञान तुम मां रात मूड़ सों ॥ तो पर ज्ञान कहा
कहौ तुम सों ॥ रन माहि युद्ध करौ किं केवल ॥ जो तुम हिदे होइ ह
तो न जल ॥ रन माहि जात ते बलवाना ॥ जिनके रिदे प्रकासित
ज्ञाना ॥ तातु उदेउ ज्ञान जल को अब ॥ कैसे पार करो सो जात तब
॥ ४ ॥ ॥ अरजन न सनमुष जात हो जि: सहाइ यदुराइ ॥ ताको ता
तो गात बहि सतके वान चलाइ ॥ ५ ॥ ॥ जो नर जुवती सों क्री
डा करै ॥ युद्ध करै हारै ति: अवसर ॥ निगम कहत ऐसे उपदेसा
युद्ध निमित तम पावा परदेसा ॥ निसि को ब्रह्मचर्य मोर हई ॥ प्रात
काल युद्ध रन करई ॥ ब्रह्मचर्य सुभ लक्षण देषन नर ॥ युद्ध करै र
न जीत आइ घर ॥ ता ते हम को विदा दे तीय ॥ वचन कहे हिय
रहे जीय ॥ जगजा अरजन के सापा ॥ पांच वान ले वानि ता
हि पा ॥ ६ ॥ ॥ जो नाँ तो सर पांच सों अवधेसर न चलाउ ॥ जो मि
ड़ तन मे ज्ञानवंत तौ तकाल गगन त्याउ ॥ ७ ॥ ॥ जो मिजु के हि
सुन कुपप्राव निपाति ॥ वचन कहे देम हम भगत युवति प्रति ॥ पुनि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प्रभावतीवचनकहेतव ॥ हाथपजोरकैसुनहुभगतअब ॥ केहुकह
तअपराधतुम्हिकीप ॥ जोनररतिचिनभागुकरततीप ॥ जोप्रसि
एनुचिनुकरैकामरसु ॥ रनमहिपुत्रहेनतःअपजसु ॥ शतवंती
तीघहेइग्रहेजस ॥ पिःतजिरनमहिलरैअजसतिस ॥ अघवाग
वनुकरैधरहेसा ॥ अतिदुखपाइनिजमनउपदेसा ॥ ८ ॥ ऐसेभी
बतवेदवचसत्यकहेभरतार ॥ ब्रतइकादशीहोइजोअघवाघु
मिनवार ॥ ८ ॥ समैदेखितुदाननदेई ॥ घोरनरकगतिपा
वैतेई ॥ वहिसुधन्नेवचनुवषाना ॥ सुनप्रभावतीतीयअज्ञाना
कतिकोऐसोवचपुगटावति ॥ कृष्णदसितेवजिरहावति ॥ तुमइहा
ऐसीजोपधारी ॥ जोमूर्तिसतिसरवलकारी ॥ मुकुकोसकहतकै
तुम्हिइहअवसर ॥ कहिसुधन्वाकृष्णविजैठर ॥ तातैसभजगकारै
धकारा ॥ अपजसतेवरमरनुहमारा ॥ ९ ॥ जेउनुवमुकक
हतवीवलीसुधन्वासर ॥ तेउकहेगोडररहोजववाजेयचतेर ॥ प
जोराजाजेहेरनमाही ॥ पद्महिगोसभसरनहाही ॥ परपियार
नपववचकहेवनाई ॥ नहींसुधन्वेइसधिआई ॥ असगहनअ
रसपतहमारी ॥ पदसुधनहींभगतगिरधारी ॥ पदपिसरअ
हकारतिधिकिरा ॥ रहीकामरससतिसिसेगदारा ॥ पुनितुमरीजु
[illegible] ॥ तौहमइहारहोमि
गरहैननाजा [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५२

अश्वमेध

पिवाला ॥ अनमुखहो है कुसमंपाला ॥ ५२ ॥ दो ॥ तुमराकारज
अस्तिकहन होतनहीं ततकाल ॥ दिन दी तेनिशि होइ जब वेदवा
चन प्रतिपाल ॥ ५३ ॥ शुभ वेलादी जे रतिदान ॥ ताते है पर
मकल्याना ॥ प्रापति है नभ को फल ताते ॥ पुत्र सुपुत्र सुकीर्ति ता
ते ॥ मनक कठोर होत है जबही ॥ यह कारज कछु नित है तबही ॥
अवहु मरन मति देव उजाना ॥ कहु नकहत तो पसमै पठाना
अवयहु सुफल न होय तुदाना ॥ देउ विदा दरसो भगवाना ॥ हम
राधर्म राखु इह काला ॥ अपुनाम नतु इह तरावो वाला ॥ ५४ ॥
अवसन नमुखमार जन चल्यो ॥ जिः हरि चरन उपास ॥ देउ विदा
प्रभ दरस की पुरवो मन की आस ॥ ५५ ॥ चौ ॥ जैमिन कहे सु
न ऊभूप तबहिं ॥ ऐसे वचन भगत उच्चरे जब ॥ पुन बोली पु
भावती नारा ॥ इम मति कहत तसुन ऊभरतारा ॥ दान दीए पु
त धर्म न नासै ॥ उपजे ज्ञान सुधर्म प्रकासै ॥ जिः दिन श्राद्ध पि
तारन होही ॥ अपवित्रो हपुन्य दिन कोई ॥ वहुरो कप्याकर
माके दरसन ॥ पुनि काहू तीर्थ पवन परसन ॥ अपवा करने
को उ शुभ काजा ॥ पजन होमव्रत संत समाजा ॥ ५६ ॥ ग्रह
रतवंतीनार जिः देन जाइ पितदान ॥ महा नरक सो उ भोगइ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वेदवचनपरवान ॥ ११ ॥ दो० ॥ तौतेतुममनतजोभरतारा ॥ सु
नमबहोतन वेदविचारा ॥ जतनअनेकउपाइकरऊजब ॥
हमनहोइकडोगीतुमकोअव ॥ चतऊससमकेशिनिगमवच
नकौ ॥ विजयहोइजीतऊतवरनकौ ॥ वऊरसुधन्वेनचनऊ
चारा ॥ मानऊतौयआज्ञाभरतारा ॥ तुमतौहमरेनासुकरन
हित ॥ यहमनसाधारीआपनेचित ॥ सपतकरीयहपितुह
मारे ॥ पुरीरहेतिःआजुप्रजारी ॥ १८ ॥ दो० ॥ तपतकडाहेतेल
महिजारऊगाततकाल ॥ आयवाहमरामभ्रातसुतयौआज्ञाभई
पाल ॥ १९ ॥ दो० ॥ अवतुमजौयऐसाप्रणधारा ॥ जोपतिसहरे
करहिधिकारा ॥ हमकोलोगहसावनकेहित ॥ यहविचारउ
पजीतुमरेचित ॥ इहप्रकारहमसरहिआकारथ्य ॥ जरोकडा
हेवीचमिरारथ्य ॥ छत्रधरमकरजौनरमरई ॥ स्वारथ्यपरमा
रथ्यअनुसरई ॥ पतिनितःतौयकोसजसुअपारा ॥ छत्रधरमर
मत्तिसहरभतारा ॥ इकइसत्रीपतिज्ञानदिडावति ॥ छत्रधरमपत्ति
पुद्धदिडावति ॥ २० ॥ दो० ॥ डरऊनचीयसुनमबलरऊछत्रधर
मउरधार ॥ जौभागहरनचीठदेतौयजगकरतखकार
२१ ॥ दो० ॥ तेतकपुरषहोतपरमाहि ॥ समभठाडेरनमभभत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ५१ ॥

अश्वमेध

हाहा ॥ तिन को आपे आपनी कारा ॥ पढि ऐ ज्ञान दड़ाइ भतारा
इक वऊ पुव तो ज्ञान आधारा ॥ इक तुम हृदै न करऊं विचा
रा ॥ पुन पुन आज्ञा तें मुऊ टारऊं ॥ ता तें घोर नर्क मऊ जाऊं
जो ईपितापु णु भि प्याकरई ॥ परे अघो गति निगम उचरई
प शिरा म आज्ञा पित मानी ॥ मारी निज माता निज पानी ॥ २२
॥ वऊरि जीवाई मार वर सत्य वचन कौ ऐतात ॥ तुम सतम
के पितु वचन ते करऊं ती यभि प्यात ॥ २३ ॥ चौ ॥ पुन मुऊ छ
त्र धरम निरवारत ॥ मगन माहि लै माहि प्रजारत ॥ तुम कौ
सभ जग कैर्धकारा ॥ तोरन तें वर तऊ मुऊ दारा ॥ तौ दे दे
आ तारन मुऊ कौ ॥ सभ जग धन्य धन्य कहि तुऊ कौ ॥ नौ मि
न कहे सुन ऊरा जा आव ॥ वऊरि प्रभावति वचन कहे तव
तुम जैसे कहत हौ वचन तात के ॥ लोप होत है कवन वात तें
नरक जाऊ न हि तात नरेसा ॥ सुनि लो लै श्रुति कौ उपदेसा
२४ ॥ जि सुत जनेऊ तिलक मुख छत्री धरम कहाइ ॥ निगम
वाक माने नहीं मन कौ मत ठहराइ ॥ २५ ॥ चौ ॥ घोर नरक
माहि सो न सवरई ॥ जो श्रुति भाष वचन न करई ॥ वेद कहत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

विनुपतुदीयेदारा ॥ रनमहिसुधपानहीजतपकारा ॥ पुनतुमा
करजुवितानकोत्रापसा ॥ तुमस्वतुकेजीमज्ञानुप्रकासा ॥ जोन
पसुनैवातुयहकाना ॥ रहेसंसयधंन्वाहितयतदाना ॥ तोतुमा
कौनहीकरैधिकारा ॥ कपिअपुनेमनज्ञानविचारा ॥ जोनवच
तवचहृदैनधारै ॥ तुमकोअग्यमाफिलेउरै ॥ २६ ॥ ॥ अगे
नज्ञारसकेतुऊअज्ञाश्रीभगवान ॥ तुमकोप्रतिपालेसकहि
वेदवचनपरमान ॥ २७ ॥ ॥ तोईधरमजगवेदषितावत ॥ तु
मप्रतिपालकोचोमनभावत ॥ तिसृष्टिवेदकोपुण्यअपारा ॥ क
रनुसकेतुऊअग्यप्रजारा ॥ श्रुतिकेपुण्यसहाइतुमारे ॥ तातै
तोहिअग्यनितहीजारै ॥ तुममनश्रुतिकेउपदेसा ॥ करैनतुम
तनअग्यप्रवेसा ॥ सुसबवचनश्रुतिकेकरुनाते ॥ मानलेउव
तिहमरीवातें ॥ ततछिनकीतेवेदउच्चारा ॥ जगमहिसुजसहो
इजैकारा ॥ २८ ॥ ॥ जेभनुकहैसुनहुनव
तिवचनप्रभावतिनापि ॥ कहैसंसधंन्वैभगतप्रतिवेदवचनप्र
भसार ॥ २९ ॥ ॥ वउएसंसधंन्वैवचनउचौ
रा ॥ सुनहीवचनप्रभावतिनारा ॥ प्रथमैतुमसहववचनबवा
ना ॥ जेहाकरैपतिविधवंतदाना ॥ यज्ञसेमदर्शनजगमापावा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१२५

अश्वमेध

पातिकौउचरतिपुवतीसंगाथा ॥ ससयकरोपहुवचनतुमारे ॥
अवरच्यचढिचलुसोपहमारे ॥ तुमपतिव्रतसदाशिमरनम
न ॥ तुमनहींतजऊचलऊमेजैसंगरन ॥ मज्जुहोउदर्शनह
पदसेत ॥ होऊकंतारप्यहरिपगपरसत ॥ ३० ॥ चौ० ॥ तहहरिप
दर्शनप्रभुभकरमसप्रोतोमसगोदान ॥ तहअरधंगीचाहीयै
वेदउकतिपरवान ॥ ३१ ॥ चौ० ॥ वामअंगठाढीतवदारा ॥ पुन्य
वउतिअतिहोतअपारा ॥ दानुकरतपतिअतिआचारसों ॥ फ
लपावतिहैअर्धनारसों ॥ जोहोहैपतिव्रतानारी ॥ तोहोवत
अर्द्धमनअधिकारी ॥ अरुजोपुन्यकरैतोपकेई ॥ आधाफ
लपावतिपतिहोइ ॥ अरुजोजुवतिहोइव्यभचारनि ॥ करैदा
ननिजदेहउधारनि ॥ होहैआधाफलपतिपावति ॥ पापक
रतितोयअतिलपनतिपति ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ पुन्यपुवपतिकाअर्द्धपति
पावतिपतनहींहोइ ॥ वेदवचनएसेकहततुजपतिभोषसो
इ ॥ ३३ ॥ चौ० ॥ तोतियपतिआज्ञानहीमानै ॥ ताकोपहगतिवे
दविषानै ॥ करैजोकहुसुकृतपतवाको ॥ अरुजोकरैकंतको
ऊपाया ॥ ताकोफलतोयपहोतसंतापा ॥ तुमतोमहापतिव्रति

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दारा ॥ ज्ञानवानगुनरूपअपारा ॥ अरधंगीचहीयेअनसापा
कोटपजुतदर्शनपदनीप्या कृष्णदर्सकारहेउकेतारप ॥ स
द्धहेहितस्वारथपवरमोरप्प ॥ ३४ ॥ ताते रप्पचाहिवेगवतेव
लमनकी जैनाए ॥ भेटलेउकरहपरनमितकृष्णदरसजेकार
२५ ॥ भगतकहेवचनसारसुनजनमेजे
नपतिवर ॥ वउएप्रभावतिनाए वचनकहेहिभगतको ॥ अ
पतिसोवउएप्रभावतिनारा ॥ हाथजोरमुपवचनउचा
रा ॥ तीरथपरटनकौउजोजावे ॥ दानपुन्यकरिफिरघरआवै
मारु जोजाइकृष्णकेदरसन ॥ नितहकामीचदपंकजपरसन ॥
सोफिरवउएभवननहिआवे ॥ दरसपरसततहिनगतिपावै
जनपरहेतपुसनगोपाला ॥ पठवततवुगमकतिनंदलाला ॥ भव
सागरतेकाढलेतहए ॥ दैतपरमगतिफिरनपठतिमेर ॥ ३७
जन्ममरनतेरहततहरि दूरहेतसंताप ॥ फेरनआवहिभवनम
हिहपदरसरवपरताप ॥ ३८ ॥ कहेसधन्नास
ननुवतीमउ ॥ जोयहवातहीएसमकीतुक ॥ चलुहपदरसवेग
कोजेसवा ॥ जन्ममरनदुषदूरपरहिसव ॥ पठवततहएवेकुंठकौ
वाकैए ॥ आवागवनमिवारलितहए ॥ तोतेउठिचलदरसनेकौज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२४६

अश्वमेध

मनुदेह्रपसचरननमहदीजै ॥ चलुतीपदरसकरहिंततकाला ॥ तन
छतनगतिदेहिंनेदलाला ॥ आनंदकरहिंरकत्रतहाही ॥ कुनिश्चिप
चहिंभवसागरमाही ॥ ३६ ॥ [illegible] ॥ वेदकहैंगृह
सुतउचत्तिपाद्दकैपिडभराइ ॥ आऊपतरप्रतिपालाईनिगमबच
नकहहुराइ ॥ ४० ॥ [illegible] ॥ हीनधरमजुतःग्रहनहीताता ॥ सुतबिनुध
गजीवनपितुमाता ॥ मातपितागतिपाहिनताके ॥ पाहेलोतम
संततिजाके ॥ धनमंदुरसंबंसुततुतावहि ॥ संतविनुअवर
लोगतेऊपावहि ॥ तातेसभजगकरैधकोरा ॥ संततितरहिंजि
नमुगतिहारा ॥ गतिअबगतिसुधिकोऊनिजानै ॥ जसुअपज
सुजगकहैसमानै ॥ ४१ ॥ [illegible] ॥ कहिप्रभावतिसुनेजपतिहम
तुमगतिकोपाऊ ॥ पाहेजगमहिपतिविनुकोऊनिलवेनाऊ ॥
४२ ॥ [illegible] ॥ तुमिपकोनामलेतनहिंकोई ॥ पतिकोनामलेतसभ
कोई ॥ तुमतप्रगटहितजाताता ॥ सास्तरवेदसमतविख्याता ॥
विस्नुभगतत्रैलोकनिधाना ॥ महापवित्रप्रभुधीरननाना ॥ त्रि
गुणातीतजीतईद्रीसव ॥ जन्मरहततयाठांहुमहाकुवि ॥ महा
अचलसमाधिअर्नेतियागी ॥ मनमहिधानुधरैतिहसागी ॥ प्र
गा [illegible] काशा ॥ ४३ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कोउ पै सासु कन्तु करै कुलई स्त्री कौं तारि ॥ अवर लोग निस्तारई क
रहए सिमरन सार ॥ ५६ ॥ सवैया ८ ॥
जौसु पसु तप्राप तिभ पो नहि दे खोद्रि गआस ॥ तैसे सतगुर
रे भवन उपजै ज्ञान प्रकाश ॥ ५७ ॥ कहे प्रभावक्ति सुन ऊ
भगत हरि ॥ सुत धिन धन ग्रआवन इह जगपेर ॥ पुत्र मात पित
कौ कुल तारे ॥ अवर वऊत सुकृत विस्तारे ॥ पुत्र सुपुत्र होई धर
जैसे ॥ राजत सुन्दर सिखर पर तैसे ॥ पूत सपूत करे हरि सिमर
न ॥ ति:पित मात कहत जग धन धन ॥ पुत्र देत वऊ सुख पिता
माता ॥ अउ ताहु करहै कुसलाता ॥ इत उत तेल लोक देत सुत तम
तिसु ब ॥ पुत्र प्रताप पडु हरि जात सकल दुख ॥ ५८ ॥ सुत तै सा
प्राप्ति होहै तव ॥ उजुतल ज्ञान हृदै उपजत जव ॥ साई ज्ञान निर
मल उर मै तुरु ॥ सोऊ कृपा करि देऊ दान मुऊ ॥ तुम नौच लेक
रन संग्राम मो ॥ हर तौ तसूर नकौ काम मो ॥ तुम जन्म ऊसन्मुख पावा
रप्पर न ॥ नाति नल पाव रति गति भगवन ॥ जीवन मरन दोऊ
संगाप्पा ॥ करै जु कछु रक्षा पडु नाप्पा ॥ पाछै गृह तुच हौ पतु हैता
ता ॥ स्वारथ्य परमार थौ कुसलाता ॥ ५९ ॥ तातै पुन पुन मो गहै
मुक्ति दीजै पैर तु दान ॥ सु तउपत तुम कृपा ते गति पव है भगवान
जो मिन्नु कहै सुन ऊपचा पद वीपति
५८

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आश्वमेध
जुग्रि १८

यह वचन कहि पति को परभावति ॥ वेद वचन सुन के तिः अवसर
कहून चले उपारंभ गत है ॥ वजु परसु धंन्ये वचन बिषाना ॥ सु
न प्रभावती अति सुरज्ञाना ॥ अव मेउ कठन वनी इहत वाता ॥ हो
हि लोप सपति मुहि ताता ॥ कुमुदसी की चाहि हमारे ॥ अब उपा
उपाय हजानत तुमारे ॥ पुर मै पुर्बीर हो के आना है ॥ ठाडे सक
ल सूर रनमाही ॥ ४८ ॥ जो हम जानत तुम हद देउपजत
यह उपदेस ॥ तव हि जात संग्राम को पुरी न करत प्रवेश ॥ ५
॥ ऐसी उपजी हद दे तुमारे ॥ जी ए करत हो पुएम हमारे ॥
पुनि प्रभावती वचन बषाना ॥ सुनि दे शिवन वचन भगवाना
तीन धरम यह उपजत समाना ॥ रन संग्राम कं न्प कुदाना ॥ स
म ते वरत सरोदान रत ॥ मन वच क्रम मन निश्री जानो पति ॥ छ
त्र धरम संग्राम होत तव ॥ रति ते उपजत सुत प्रपम ते तव ॥ के
न्या प्रगट होत जव जग पति ॥ प्रथम सद्गुन उरत दे तजु बंतिन र
धव ॥ तीन धरम यह रूप जत समता ॥ ते उत्तम कौन ॥ प्रगट भ
ए रत दान ते याहि ते रति वीन ॥ पर ॥ जव ही अवनी को पति
आवै ॥ जौ न ईंद्र वर पावर पावै ॥ परे न रक म हि व ... बात

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

व ॥ कहहि सत मत पहत बेद वचन सब ॥ बरषा काल पतो ब तजब धर्म नी
हो तब आ बधी जग सो करनी ॥ आरु पुन प्रगट चौ ऊत गुन होई ॥
फल दल फूल तम अम्रत फुलाई ॥ प्रगट तरस अनेक विधि नाना
जव हि ले तवष्यि वी र तदाना ॥ राजा प्रजा चिंतता पवोई ॥ पक्षु पं
छी सु बंधा व तसम कोई ॥ ५२ ॥ दो० ॥ मेष रस धरनी वी जपुनि आर
त वर हहे हे सोइ ॥ दा पवं ऊत जल दान रत तौ उत पत्ति ब ऊ होइ ॥
५४ ॥ चौ० ॥ जैसा वीर ज हत तनिवासा ॥ जैसा स तपि करत प्रकासा ॥
सभ ते उत्तम ज्ञान दान पर त ॥ तिः नदोष ताफिः वि देस पद्म ॥ अस तजा
तु इ पति रोग ग्रास्या तन न ॥ सो तद षनलाज तन तात्हि मन ॥ सु त उत
पति रोग ग्रस्यो तन न प ॥ की पे अपार मति पुष्पिनराधिप ॥ तिः त
पति के हित द सरथ नंदन ॥ फरन ब्रह्म कलस भिकंदन ॥ द ह भइ आति
उपजे सुत रघुनंदन देहि व तहि तौ च तुधारी ॥ ५५ ॥ दो० ॥ हम तुम ते
पुद्ध हमारी ॥ दान देहि ते कार ॥ आरन सब बस पेषाव ई ज्ञान
सुत प्रगट ई सभ कुल न करै ते कार ॥ करम बद वेद वचनन को ॥ की ते र सिर
विवेक विचार ॥ ५६ ॥ कोट उपाइ जतन सु करा जब ॥ आ तुन ही
दी जे सुप मन को ॥ वेद वचन करत प्रमान पत ॥ देज कु पाक प्रेमो
तो गा तुम को तब ॥ वेद वचन करत प्रतीप उद्यम को ना ॥ गाहि र पा ते उता
ह दान ति ॥ पह का कप्रती

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१४३

अश्वमेध

रपतिलीनो ॥ सोकैसीप्रभावतीनारी ॥ अतिसुंदरगुनरूपअ-
पारा ॥ पुनप्रभावतीकरइस्नाना ॥ अंगसुगंधलाइविधनाना-
पा ॥ पतिसन्मुखठाढीभईषोडशाकीयसिंगार ॥ चंद्रवदन
मृगलोचनीअतितननैनसुधार ५८ ॥ नासाचंपककलीसी
सोहै ॥ तापरवेसरअतिमनिमोहै ॥ अरुनअधरविद्रुमवंधुक
छवि ॥ निरषतउपमाकहिनसकतकवि ॥ ग्रीवकंठमालाछविछा-
जत ॥ कुचपरमुकताहारविराजत ॥ नद्रघंटिकाकटिनूपुर
पग ॥ भुजअंगदजराकरगजमग ॥ भूषनभरीकंबुसोग्रीवा
कुंतलमधुपवरूथकीसीवा ॥ पहिरेरुचिसोंकंचुकवसनतन
गजगतिगवनीअतिभावतिमन ५९ ॥ अंगीपावंधनछेमर
कैमुषभएवातरेवान ॥ द्वियसरूपवनाइकैठाढीपतिसन्मुषीन
६० ॥ आइपावविवृद्धिकसवाला ॥ मदनवानअंगअंगविशा-
ला ॥ पकरयोधाइकंतकोहरषत ॥ भुजभरिअंकलगाइलीयोप-
ति ॥ भीतरचलीगेहाकरसोकर ॥ ल्याईतहाविचित्रठौरघर ॥
वेदवचनपढ़रनकरवोहिते ॥ त्याईपतिकोभवनमुदितचित ॥ ज-
बभघरामुहूरतलीना ॥ द्वाभगततीयपकडितदीना ॥ रज-
नीकरीवितीतहाही ॥ खेलतहसतमदनमनमाही ६१ ॥
उठिप्रभातमनुजनकीधाक्रमरनकरिनंदलालल ॥ दानदायापुन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पूजन कौ विधवत तत भूपाल ॥ ६२ ॥ ॥ चिहरे निमित हंसधुज
भूपति ॥ पुरवासिन रभयौ ढाक जाहिर षत न ॥ मजनरा लौ चौ सैन कारा
जन ॥ कह्यौ सुधंन्वा नाहि आयौ रन ॥ उतं करूं दी मादृत नत पवाहो
वस्यौ सुधंन्वा नौ भागत माहि ॥ सुन तत हंसधुज आत कौ धसिम
न ॥ आज्ञा करी दूत कौ तत छिन ॥ ल्यावौ बंध सुधंन्वा ई ता वेग पुन
आज्ञा कीनी भगत ह माहि ॥ ताको कीजै महादु षारी ॥ पुष मैं पाग
उतारौ वाकी ॥ कह्यौ बांधौ दूतौ नौ भूजन ताकी ॥ ६३ ॥ ॥ चरन जे
वरी ठार के ल्यावौ अषेच कपेत ॥ ठाडो गजति आगे माहि का पर रर
एकर तूत ॥ ६४ ॥ ॥ भयौ वि मस्व सठ हृदय दर सन त ॥ तज्यौ
क त्र आयौ न छिरन ते ॥ ऐसे करी सवत भूपाला ॥ सुनदू नगव
ने तत काल ॥ दूत ऊ जाइ भगत तक ऊदे ष्यौ ॥ रूप अरूप है स्तरज
दुतिय पेष्यौ ॥ कंचेन रव मन गहे चम कारा ॥ मे कत ऊ लर वनि
आपारा ॥ पवन वेगर षु महा सुदृ डवल ॥ तह मन सौ नत जार वे
ग चलि ॥ हरष तपान षात संग वाला ॥ आत अनंद मन भगत ग
पाला ॥ ६५ ॥ ॥ तीय कौ विदा करत तत वछिरन कौ मन साधारे
ता हरि छिन पावत भयौ दूतन पतिके द्वार ॥ ६६ ॥ ॥ दूतन कौ ते
वि चौर ह्यौ रतव ॥ यह तौ राजपुत्र सुंदर छवि ॥ महा यौधि सराव
लधारी ॥ कैसे बांध्यौ भगत मुरारी ॥ दूत उआ पने हृदे विचारा ॥

१५८

अस्वमेध

उरझा न्रपति तेउ रहि अपारा ॥ इहां ते जु आन न्रप को ताता ॥ दो० नाव बन
करत न यह है बाता ॥ दूतन्ह कीयो प्रनाम भगत प्रति ॥ सब ते कहे
न कछु हो तो य डर पति ॥ दूत वचन ता त भगत सम झाही य ॥ जो कहे
बात तहं तौ दूतन तौ यह ॥ ६७ ॥ दो० ॥ सभ हु तो त जा न्हो भगत दूतन्ह
हू की बात ॥ आज्ञा मुझ कहु बुदै न्कीव है हो हि गे तात ॥ ६८ ॥ चौ० ॥ कै
है सुधन्वा वचन दूतन प्रति ॥ कहु सो तुम्हारे मन उर पहु कति
जो आज्ञा कीनी मुझ ताता ॥ मुझ सों कहो जस प्रार थ बाता ॥ वो ले
दूत सुन हु विध जैसे ॥ आज्ञा करी है सुधन्व तऐसे ॥ त्यावहु भगत
पकर गाहि के सो ॥ बांधहु सुत को कह्यो नरेसा ॥ भगत मह वहु त
कछु छ्वरा वहु ॥ पागउ ता र वेग गहि ल्यावहु ॥ ऐसे आज्ञा को
रीभूआ ता ॥ सुनहु सुधन्वा भगत तग वाला ॥ ६९ ॥ सुनहु हु भग
त मद त हि ऐमानी आज्ञा वाव ॥ के सद ऐ कर दूत के उतर पसो
र प आव ॥ ७० ॥ चौ० ॥ दूतहु के जी म ज्ञा सभ भयो तव ॥ भगत के सक
र मह पकरे तव ॥ हातु दी ऐ कर तेकुं तल उन ॥ वेठा यो र थ के
ऊपर पुनि ॥ लग ऐ व दी मान राजा ना ॥ प्रथम भगत न्रप वज
ल पटा ना ॥ सुत को निरख हें सुधन्व भूपति ॥ क्रोध त हे वचक हे ता
त प्रति ॥ पापात मादु ए म तेरी ॥ आज्ञा भंग करी क सिमेरी ॥ क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सदरस तें विमुख भयो तब ॥ अंगिका डारि तराक तुरत जब ॥ ७१ ॥ दो
॥ वडरि सुधु अब वचक सिर तिन आज्ञा परमान ॥ सुनेउ नपति जवच
दुचल्यौ रन को सत्य धर्म मान ॥ ७२ ॥ तिः अब संर तुम दासी मम
... रन को करि रहो जतन कीय ॥ क ... दे ... को रेदाना
तीय ॥ अंचु रुक रगरि रहो ... परवाना ॥ वेदवाक न हो कीयो लाय पुना ता तेवा
वेदवचन की जहि तिपरवाना ॥ वो ह्यो ... हम मधु जम ... पति ॥ विमुख भयो
फेर ह्यो नृपति सुन ॥ तुम तो इसी जीत ... मति ॥ तुम री तो ... तम
दरसन तें श्री पति ॥ ... मे आयो सुनि के पार ... ॥ वे ... हो घर तजि ... र
ड ... मति ॥ रन महि आयो सुनि ... मन ... की यो न त्रास
... ॥ ७३ ॥ सपत हमारी तुम सुनी मन ... की यो ... ॥ ७४ ॥ अ
... पार ... तुम ... हरि की यो ... ॥ ७४ ॥ अ
... तें आयो ... रस कल तुम ... हम ... इअ ... र ॥ ... वती
हरसु ... म हा वर ॥ चलि आयो ... रवि चारा ॥ ... र ... गोता
रतन ... पारा ॥ ... देद डीयो ... हमारा ॥ ता ने गा ... जीप
दीनो ... तुम लसि तकीयो गोत्र ... राइ ... ज
हृध कारा ॥ तुम ... के से ॥ छत्र धर ... वराइ ... ज
हो से ॥ ... तो ... ध ... के ... ता ता ॥ व
व ॥ नु वती के पनु दान दे तन तव ॥ त ... तकी यो ... के ... ता ॥ व
... लाय ... तमाता ॥ ७५ ॥ ... हम री लाय के
... कार है ... ज सुदी यो र
सपत न ... ता ... सम ... ता ...

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१५५

अश्वमेध

पितमाति ॥ १६ ॥ चौ० ॥ पारथ भाषै गोपाल पुनै मन ॥ नृपति हंस
धज को अस रूप वचन ॥ लोप करी आज्ञा सत ताकी ॥ रन माहि
जीतहु इन हैं ताकी ॥ ऐसे बल भए बुद्धि मति ज्ञानी ॥ दूरस न की
पोन सारे स्वपानी ॥ तुम जीत जगत में गोपाल मुरारी ॥ निंदक रम
पहु की पापविकारी ॥ तीप रस मध्य वृद्ध बड़ रानी ॥ सुन हम
सो आज्ञा न हि मानी ॥ भली व सलु अपने हरि पोगा ॥ तुम बलु ह
रि काम रस भोगा ॥ १७ ॥ श्री ॥ बलु अपनो दै जु बीत को पुनि आपके
रन माहि ॥ बल बिन प्रद्युम्न नहो तहै वर्तात सैं कारेपा नाहि ॥ १८ ॥
श्री ॥ तुम मन उचत अवरन संग्रामा ॥ कौन गनै वीच विश्रा
मा ॥ भयो हंसध्वज क्रोधमान मन ॥ प्राहित तलीयो बुलाइ तात त
छिन ॥ तिल अरु शंख नाम ताके कहि ॥ दीनो ठाढे आइ नृपति प
हि ॥ तिनको नृप आज्ञा कीनी तव ॥ उर जु भगतक ठाढे बीच अव
प्राहित कहै नृपति मन तबाता ॥ मह तुम्हें नृपति मरोताता ॥ बड़
रा नृपति सुधन्वा तुम री मति ॥ अव तैसे सहित न हि तकी ना कति
१९ ॥ श्री ॥ भेगव वचन तुम राको पातिर दरस न हीकीन ॥ १
नितु मसन मुख वचक हु पापी बुधमलीन ॥ २ ॥ प्रोहित
दी उनउ टेतत काला ॥ वांधली यों द्रडिसु तम पाला ॥ गाहि ल्याले

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

न पसुत को तहा ॥ नवतक इहितेन को जहा ॥ अतिअवटाइ तैत
तिः अवसर ॥ ठाकुरके भगतेंकेतिः घर ॥ गोवप्रपंत तैल ताहि
दीनो ॥ निरखभगत हरिसुमरन कीनो ॥ भगतेसुधन्वा हृदैविचा
वारै ॥ यह इहाकी जीपहमारै ॥ सरखुलाउगा सनमुखवधारेय ॥
दरसोगा अरु तनको सवारैय ॥ ८१ ॥ दो ॥ सनमुखवीन चलाउगा
धनुषसरिडउगोहि हाथ ॥ तोषलेउगा पुहुकपलव जेसहतिय दुना
थ ॥ ८२ ॥ ची ॥ आलाक रविता आवएस ॥ इकाहरिहेतु सविधि तै
से ॥ ठाकुर भचो भगतेक ठाहवर ॥ सभपुर लोगजेरो तिः अवसर
हाहाकार करहि सभ लोगा ॥ ठाढे भगत की याति हसोगा ॥ सु
मतिनाम मंत्री भूपाला ॥ ठाढे आइ निकट तिकाला ॥ सचिव भआ
तकी ओर निहारो ॥ कृपाथई सभ वचन उचारो ॥ मंत्री वचनका
हे प्रगटाई ॥ फिरनभयो उनो समोधपाइ ॥ ८३

८४ १५ १५८१

जैमिन कहै सुनजऊमेपाला ॥ कहिहौ अदभुत तक
थाविसाला ॥ सचिव प्रति पुनवचन उचारे ॥ सुनजऊ सुधन्वा
प्रीतनमुरारे ॥ हमतेतातुम रहाकेकाजा ॥ विनती करी बहुतप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अग्नासोमेध

मर   छार

हे राजा ॥ नहि मानत तन्य प बचन हमारे ॥ पह दे नो पोहि त हरयारे
कहे हैन पति सो सुत नहि तरा ॥ सम जग तुम राकर तध कारा ॥ पह
वच कहे प्रथम तुं सो मुऊ ॥ थल मु करऊ त व कप दे हि तुऊ ॥ १ ॥
हमरी सीषन मन धरी कीपान हृदे विचार ॥ ता ते मैं ग्रजराश तुऊ
व हुत लगाई वार ॥ २ ॥ चऊ र स धन्ने कच न उ
चारा ॥ मन ऊ सु मति तुम बुद्धि अपारा ॥ जो ईस्रा ज्ञा की नी मु ऊ ताता
हम मानी मा पो कुल लाता ॥ ऐसी र का ष्पी हम रे मन ॥ पुङु करे गा पा
र पक्षी र न ॥ वान ले उ गा स त्मु ब मु व पर ॥ दे षो गा द र स न गेर व
र धर ॥ अव र हृ वा त व नी र हृ अ व सर ॥ कहो है कडा हत पत पर ॥ १ ॥
ने से साध निर व पापी जन ॥ अति शोा दुषी है त मु नेमन ॥ २ ॥
ने से भ गता नि हार के तल महा अकुलाई ॥ सी तल ता को पा वई त्या गम
त प्रसु भा र ॥ चौ ॥ लोगन को चिं ता व ऊ भई ॥ तिन को भगत धीर व ऊ
दई ॥ जो हम रे पितु आज्ञा दीनी ॥ मुऊ अ मान स माथ धर लीनी
पिता वचन माने रघुनाथा ॥ सेष्या वन को ध व ती प साथा ॥ मुऊ
को आज्ञा कीन रे सा ॥ अब कहि अग नि मह त्क रो प्रवेसा ॥ र हद
बन मांहि अग्रिप्रजारा त ॥ पुव ती को नि शा दा न दी या र पि ॥ र न्ने

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हरि दर्शन कौ न हौं आयो ॥ ताते नव पहुं दे उव तायो ॥ ५ ॥ ताते
धनगृह मनोरथ गुरु की ध्यान मन बीचार ॥ सोभि कै भोग सुह एव जे
ती चली नीजरधार ॥ ६ ॥ तः अब सब यहु तमु हि ता रहि ॥ अन
मुष दुरि ते मयो विचारहि ॥ हा हरि विमुष कुसंग तै जोई ॥ तः नरक कौ ऐ
सोग तिहोई ॥ तः मन दानो कृष्ण चरन सों ॥ तः रति पाई हरि वतम
न सों ॥ हरि भज जो हितु न पहि मन दर्सो पोदारहि ॥ पवै मजन तिन अग्रप्र
जारहि ॥ अंत समै कौ वेर जो ऊं न र ॥ सिमरन कर त मदृ ति ऊरव
रधर ॥ ताकौ कृष्ट है तम अदुनी गति ॥ जन्म मरन ते रहत ताव मतम
ति ७ ॥ अंत समै अब मुझ भई सिमरन तहो आवा लै ॥ अपुना
गति दे वाहु मुझ कहि करुना कुरि नंदलाल ॥ ८ ॥ गति अब रती
का को न ही जानै ॥ जो जगदेव से सोई पिछाने ॥ ताहि अग्र शरीर
प्रजारयो ॥ इह अपराध मोहि तौ पधारयो ॥ ऐसी इच्छा पायी मुझ मन
पर ॥ पुझ करौ गा सा पविजे हरि ॥ सर चलाई तो कोआगार ध
र ॥ सेवि हप्र सन वचन मधु कै मैं कहि ॥ नहीं से नाउन हनी हमारी
न हु बचम उनको हम मारी ॥ जे भन के हिम न पति वर ॥ स
ते को ऊंजा ते भगत जहदे उर ॥ ८ ॥ मतसे सकौ ऊं जानन हो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

भगतकरतजीयत्रास ॥ नहीसुधन्वेहुदेडरुचरनकमलकीआ
स ॥ १ ॥ ऐसीइछाउतीभगतमन ॥ प तोगावानन सोभगव
न ॥ सन्मुषलेवोगाआवतसर ॥ हेप्रसंनदेवाहिगेगति हरि ॥ पा
रथपकरगोकुवलीएवर ॥ त्रिपतावोगातिसाहियुद्धकरए ॥ ऐसार
सीलालसा [illegible] हमारी ॥ तातेलाजहितगीरधारी ॥ हमरेहुदे
उतीअभलाषा ॥ युद्धकरेंगोपार्थसाच्या ॥ तहां मरेंगा हो
इसुफलगति ॥ दरसहोइगोमकुत्रिभुवनपति ॥ ११ ॥ [illegible] कोा
ममारथमन मगन हवस्योतातेकोपव्योराइ ॥ सत्यकीपेमउवेदक्व
तीपतोबीसुषपाइ ॥ १२ ॥ [illegible] जैमिनकहैसु
नहुभूपतिवर ॥ समतिसुनेवचकहेभगतहरे ॥ वऊरीसुभत
सुवचनबषाना ॥ सोकोआवकहेसुनऊदेकाना ॥ सत्यवभग
तप्रतिवचभाषेतव ॥ उरेहाढेपरतोगतहुसव ॥ सत्यवकहेसुन
भगतमुरारे ॥ पुन्यजो ढहेहेदेहतुमारे ॥ तातेअगुभकरेनहुभा
गा ॥ तुमहरिभगतसदानेहसेजा ॥ मजुन कीयाभगतत्तः आव
सर ॥ हादशाति[illegible]कवनाएतनचर ॥ १३ ॥ [illegible] तुलसीपत्रवगा
वकरचहेनचक्रतनलाइ ॥ हाठाभयोकडाहवरभगतसुधनी
आइ ॥ १४ ॥ [illegible] भयोसंबतलतवविदमाना ॥ तनहदतनपदव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चनवखाना ॥ डारे अग्रानक हडाहु भगत कें ॥ आज्ञा भंग करी रन
पितकों ॥ उपदेश्या पकरकडुहुविभूतव ॥ परस्पत तैलमपोसो तल
तव ॥ तुलसीको तजरन नहीं पायो ॥ भगत प्रताप कहु देवरा
यो ॥ हां ठे देख तहि सभ लोगा ॥ हृदे भगत के हरखन सोगा ॥ क
रत भये सभ जै जै कारा ॥ उपज्यो ह्यो प्रेम नेदु अपारा ॥ ५५ ॥
दूतन कहां राजा न पति उवस्यो तुम राता त ॥ अग्नि जरा रस को
नतिः पह अचरज की वात ॥ ५६ ॥ पुनि प्राहत प्रतिन वात
कह्यो तव ॥ आज्ञा तुम सौं करो सोई अवु ॥ वजर संवाते लवचन
उचारे ॥ सुनहु अव न जजमान हमारे ॥ अप्प डार वहितति का
ला ॥ हम न कते तिः होर भपाला ॥ ... वकऊ तेत हातिः अवसर
... दपापरी उनको मन माही ॥ क
नहीं जरा पोतिः विधवत कर ॥ जे ... नसत प्रण आ कीजे ॥ तौ पु
रिवऊ तत न जरा पो नाहु ॥ जो तुम प्रफु ... करऊ हम
नि हम को आज्ञा दीजे ॥ ५७ ॥ ... ररन काजु ॥ ५८ ॥
आज्ञा दै राज ॥ स प्रति हारीड कर ... ॥ त त ... पतिय ... या
प्रति पा ... व चवलभ पाला ॥ व ... नरा ... प
ला ॥ सस्प की पाव च हरीचंदन ...

२५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

प्रतिपालेव चुभी ब मन रपति ॥ शास्त्र गहाऐ स्त्री पति के कर ॥ प
श्रीराम मरी निज माता ॥ पूरन बचन करत भये ताता ॥ पूरन
बचन न हीं फिर जाके ॥ सुकृत सभ नास तहे ता के ॥ धनुरूपुः
रब जन न म जग ली नो ॥ प्रिः प्रण को पूरन नहीं कीनो ॥ १८ ॥
॥ बचन हीन प्रिः पुरष के के बहु नितिः कुसरात ॥ प्राप्पम
धकारा तिपिता को गलोग रभ न हिमात ॥ २ ॥ ॥ चोहितक
है सुनहु भूपाल ॥ जे बचनन को प्रतिपाला ॥ लोपव नकरहे
बचन जजमाना ॥ की पाचा हतत हे सभ प्रमाना ॥ बडरहे सथ
जन्य प्रविहित के के की तो बकहि बचन न मित के ॥ प्राहित को न
पवे न कहे तव ॥ कारज की जे जतन न सो प्रभ ॥ प ठकार जहे तु
म रोसि रपर ॥ सत्य बचन महि कर उक पाक ॥ आज्ञा लेप्राए
क्रत उधि धारा ॥ जहा कड़ा हत तेहि चलि आए ॥ २१ ॥ ॥ औ बर
तेल नातन तप्त लीनो बड़त मे जाइ ॥ इंधन आने सकट भरि
मन महि क्रोध कढ़ि सार ॥ २२ ॥ ॥ प्रगटित ली पो तेल अपुनो
कर ॥ सत्या बीच कड़ाह जतन करि ॥ भजत सुधन्वा हरि गुन गा
वत ॥ नरसिंह मन नन्द बजावत ॥ आग जरत के मेनकर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तच्चित ॥ मन महि हि समरनु करत कृष्णहित ॥ भगत बछरकी मो
इसनाना ॥ लोचन हनचक्रतननाना ॥ कैठिपचहरनुलसीकी
माला ॥ श्रीमरनुकीपाहदेनदलालाला ॥ लोगनगरकेमिलेश्री
पारा ॥ ऊपरदेवकरहितैकारा ॥ २३ ॥ दोहा ॥ ठाठभगतकराह
परजपैकृष्णनहितसोरा ॥ हहिश्रीसोसाभाउधरिगदगदहैपुर
लोग ॥ २४ ॥ चौ० ॥ पुरलोगनकोभगतकह्योहसि ॥ तुमकहि
जीयहैतसोगवसि ॥ कृष्णनहीकहुदेहहमारी ॥ हमरेर
छकगिरवरधारी ॥ जैमिनुकहैसुनजमपतिवर ॥ पहह
वचकहैभगतितिः श्रवसर ॥ शहुभयोप्रतिःजैजैकारा ॥ प्रेमहि
नकोधतिभयोअपारा ॥ पुनिहरिभगतकह्योसुनलोगा ॥ तु
मकतिकरउहदेमहितसोगा ॥ तैलतपतकामैतहिमानेउ
ताकोगंगानीरप्रमानउ ॥ २५ ॥ दोहा ॥ हमचलहिहरिदरस
कोचाहितप्रभुउ शरीर ॥ पावनहैमज्जनकीयैतैलगंगकै
नीर ॥ २६ ॥ चौ० ॥ पनुकीनेगंगाइसनाना ॥ प्रभुहितहित
हितनमनप्राना ॥ तैलभयोगंगाकोनीरा ॥ मज्जनकरी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हो सुद्ध सरीरा ॥ तीनवेर मज्जन कीजे जब ॥ देखी होत सुद्ध
पवित्र तव ॥ सुने भगत के बचन शत्रुहन ॥ तीनि क्रिन उठे द
ऊ क्रोध तमन ॥ उठ्यो भगत कु डाहबी चपुन ॥ मन मेक
छुन दपाधारी तुन ॥ बैठो बीच कुडाह भगत दृढ ॥ आनो
गंगाजल ति अवसर ॥ २ ॥ दो ॥ शत्रुघ्न पाजे कारत तव सुभजी
मन पा अनेद ॥ तेल श पचको ध उक डिघन्य भगत नंद नंद ॥ उस
॥ दृत गए पुन नप के आगे ॥ सकल वृतांत सुनावन लागे
भगत जन सा द्रुस रीवा रता ॥ सत भयाति तैजे कारा ॥ पुनि प
त्त तकाकह्यो न्रपति तब ॥ आज्ञा करो करो तेसो अब ॥ कुहो
प्रोहत तन न्रपसो वाता ॥ मंत्र सकति करत सरोता ता ॥ तातें तिक
अग्नि नजारत ॥ केवानु नचंदन उरधारत ॥ भे पबित्र चकदेसा
हितसुन ॥ अब आज्ञा के सोसुत कोपुन ॥ २८ ॥ दो ॥ प्रोहत कहे स
नहि न्रपति वड श्रीतो सरीवार ॥ अब ढावज जब तेलन कोलन कहे भज
त प्रजार ॥ २ ॥ चौ ॥ उर सहि अब तांके संग आपकाल ॥ उरे आपकालप
मद दाइ कालै ॥ उरत आपकाल फुर नाहि जब ॥ दोसु आगनकोकोउ
नाहि तब ॥ अरु ना आपकाल जरे न तेसे ॥ मंत्र प्रकत जान कु जो ए

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

से ॥ मुनि भ्रपति सुख बचन उचारा ॥ प्रोहित की जे हृदे विचारा ॥ दे
इ बार दुख दीया भगतन कौ ॥ डारा ते लकड़ा हत तपत मो ॥ जौ उन
के दूषन होतो मन ॥ जर वसिष्ठ के ॥ म महि भसम होत तन ॥ ३१ ॥
कहै परोहत राजसु न तु मन मांह कौ ध्यान विचार ॥ अस सत्यकेत हे भूप
प्रनि नृप कर है निगत धर्मकार ॥ ३२ ॥ प्रोहत कहै सुनउ भूपा
ला ॥ जौ न करौ तुम वचन प्रतिपाला ॥ तौ हम प्रोहत न नहीं नृपति तु
ज ॥ मन वच क्रम मति मैं सांच कहो मुज ॥ हम कौ अब वरवस जत जतमा
ना ॥ कह्यो हम तुम रासभ दाना ॥ सुनत नृप पुन नृप प्रताप पति हारे
राज तु रंग रथ वरु जत हमारे ॥ वचन कहत अत पुनी प्रति पाला ॥ तु
म रे वचन हृदय धर भूपाला ॥ पुर तुम रे वसि है ते ऊ लोगा ॥ ध
गु ति: जनम दुख हू जग सोगा ॥ ३३ ॥ तिः नृप के नहीं सत्य व
चति: उसा प्रति नहीं योगा ॥ जो तिः नृप के पुर वसहि ते ऊ विमुख
ध गु लोगा ॥ ३४ ॥ क्रोध मान प्रोहत छोड़ दोऊ ॥ चले पिसा
इ नृप तते सो ऊ ॥ नृप ब्रह्म प्रेम उठ्यो ति: अब सर ॥ ली ये तो ब
प्रोहित तिपा यन नृप रु ॥ उठ जान कत ते सेक पैल जे ॥ पुनि हरि भग
त अनुराग नि मढ़ि दीजे ॥ आज्ञा ले त चले प्रोहत पुन ॥ नौतन ते ल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१५४

अश्वमेध

॥ जुजि १५८ ॥

वढ़त अनन्योतिन ॥ दीनोद्धारक कडा हत वीच सब ॥ वै सत तर वरस्त्र
वढायो तव ॥ सरण वचा सिक इंद सर रह्यो ॥ जो रहि भगत नृप
हुतन कह्यो ॥ ३५ ॥ भगत तसुधन्वा सुध तमन नेगुन कौ न
इसनान ॥ चिहन च क्र हैं समशि रनर हरि मंत्र प्रवान ॥ ३६ ॥
॥ उरव हरी तुलसी की माला ॥ केसर तिलक दीयो तिः काला
वढ़ रती सरी वे रभगत के ॥ ठाढो वीच कडाहत व पत हौं ॥ सम
रन की यो भगत तिः अवसर ॥ श्री गुपाल हरी रछा कर ॥ २
पावक को सीतल करि लीजे ॥ अपुने दास अभय पद दीजे ॥ जै
से तुम प्रह्लाद छुडायो ॥ अंवरीक को वचन दिढ़ायो ॥ दुष्ट काटे
पांडव सुत जैसे ॥ सकति गयंद को दीनी तैसे ॥ ३७ ॥ अजामेर
जमदूतन ते राखली यो भगवान ॥ रा खे अवर अनेक पल को कहि
सके प्रमान ॥ ३८ ॥ तप्त तेल की यो नीर गंग को ॥ नहि जा सौ
रख्यो भगत को ॥ वीच कडाह भगत हरे रत मन ॥ हरि हरि
तव जप्यो भगवान ॥ निर खे सवति लपिर दिव चारा ॥ मंत पह
ले को ॐ मंत्र प्रकारा ॥ दहि वीच कडाह के श्रीफल ॥ मंत जने कीर
पाहार को ॐ फल वल ॥ जो श्रीफल को फुटि जरावे ॥ तौ प्रतीत
हम रे मन आवे ॥ तेल वीच श्रीफल ते डारयो ॥ परस करत तत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गुप्रजारयो ॥ ३९ ॥ ॥ जरप्रीपालहैहकहैवा[illegible]निकस्योधा ॥ ४० ॥ ॥ जेस
इ ॥ स्याधाल्लागयोसंखमुख[illegible]लमुखजोर ॥ तेमेगेरशंखपू
भारावस्तुसिलापधि ॥ परतउठतिभैभतशब्ददकंपे ॥ तेमेगेरशंखपू
मारावस्तुसिलापधि ॥ माहाद्दुष्टितेगम्भिताइनवरनी ॥ दैत्यनाकामस्तकुजरगपा
लधरिनी ॥ माहाद्दुष्टितेगमिताइनवरनी ॥ सुन्यासुध
जैजैकारशब्ददस्रुतिभयो ॥ सिनासप्रपुनीमहिपारथपतव ॥ सुन्यासुध
जैजैकारशब्दकरिभयो ॥ धन्यधन्यकहिवारवा
वेकावतांतसव ॥ पारथपउस्तुतिकरीसुप्यारा ॥ धन्यधन्यकहिवारवा
रा ॥ उचततनहोततहंसधुजराजा ॥ कौपारथधन्यासोमहकाजा ॥ ४१
॥ ॥ सेसस्यतकोदुवदीपापहनउचततन्तुयपोग ॥ भगतसुधन्यास
॥ सवचनकहेपारथपतव
हावलवेसबगोविंदलोगग ॥ ४२ ॥ ॥ कहिजैमिनसुननपतिसहामभजे ॥ पुत्र
दतननपसोंश्राइकहेसव ॥ राखिलीयोनिजभगतरमापति ॥ सुतउसाति
प्रतंताससुनीहंसधज ॥ चलिस्रायोनपततहिनतहा ॥ भगतकडाहर
सुननवहर्षितचित ॥ सखठाकुरउरतुलसीमाला ॥ मनहरषतहुविवद
वीचवषाजहा ॥ भगतहृदेमहिहरष
नविशाला ॥ निरषप्रणामसुकीयोनपपोगा ॥ उस्तुतिकीनीपुत्रकीवजततहंसधुजराइ ॥ वीचव
नसोगा ॥ ४३ ॥ ॥ नपसुतकेजसकीयेस्र
डाहउठाइकैलीनोकंठलगाइ ॥ ४४ ॥ ॥ सकसपराधकीयोसघभारा
पारा ॥ कनिप्रणामकीनीमनहारा ॥ सकस्र पराधकीयो सघभारा

तम्मां कीजो जे भगत मरारा ॥ सत केतन पुंज वर पहिराये ॥ अस्त्र शस्त्र स
व अंग लगाये ॥ द्रुम सुतन तुम कैकायो सेनपति ॥ सन्मुष षचार रथ पुद्ध
करइ अति ॥ छत्रधर मकौ दंड जो पधारइ ॥ रन सन्मुष है वानप्र
हारइ ॥ जैसे अरजन होइ तौ बमन ॥ तैसे मारइ वानन सूर रन ॥ ४
५ ॥ सूजा वानन कौ कर रह नन महि पारथ योग ॥ कवच धम प्र
तिपाली पैसु जन सुक रहि सब लोग ॥ ४६ ॥ सभ के चनर रथ जड
तन गन मन ॥ तिन पर महलव ने छवि अनगन ॥ वने जरे वा
विवध प्रकारा ॥ बचि तनील मन अवर अपारा ॥ मुकता जाल रव
नी अनूपा ॥ दिनमणि कौ ति महा दुति रूपा ॥ चार अश्व रथ इक
इक सोहा ॥ नृप पर घंट वन्नाइ संजोहा ॥ चतुरंगनि सेना दल भा
जा ॥ चले भगत दल जन पद राजा ॥ चकुलेन्याई सेन करी सब
वी च भुच न्वा अमप महा छुवि ॥ ४७ ॥ बीच सभनि के हरि भगत
च हू ओर ते गभात ॥ सो ते सेना चतुरंगिनी आगे नायक सात
४८ ॥ एक ओर रथ है कि चले वहि ॥ रेक ओर गज जूल तर
आवहि ॥ बीच कौ पौ पायक दल भारा ॥ तिः पाछे आवहि असवारा
सभ के बीच धन्वा छरवत ॥ सेना कमल करन का कीगत ॥ आ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पनलिन चवुलातिः वेरा ॥ सैना भई पत्र चौफेरा ॥ चल्यो कमल हेय
हो हृदै धरि ॥ कवल चढत तन वक्र सम चंद परि ॥ तातें आपति अति
सुख मानत ॥ ताकौ निज शेवक पहिचानत ॥ ४८ ॥ आवच
डावन कै निमित चल्यौ कवल कै भीर ॥ जलद चढावै हतु धरि स
ख मानत यदुराइ ॥ ५ ॥ जे भनु कहे सन
ऊ जन मजा ॥ चल्यो भगवत कोटि रवि तेजा ॥ कंचन रथ मन गगन
म कारा ॥ गवन करत घंटन झुनकारा ॥ यो जन तीन बीच रन ठा
ना ॥ सधन होरंगा बी मैदाना ॥ भगवत आप सैना चतुरंगानि ॥ अ
हो कल्ती या धो अति अनगनि ॥ वाकी नृपति हंसधुज आयो ॥ सैना
अति सम हंस संग ल्यायो ॥ ५१ ॥ आवत हि यानक पर साँ पीक
असन मह अहार ॥ रतन विभूषण ऐ धरनि परिमानो विविध प्रकार ॥
५२ ॥ कस्तूरी चंदन दीपा भाला ॥ ता परि गुंजत भवर विशा
ला ॥ शस्त्र बांध कटि सजि संजोग नि ॥ गात्र हि लाट प्रस्वेद मद तत
मन ॥ लागत मग महि सीतल पवन जव ॥ सुख पावत अति ही ये स
रतव ॥ बढत अगंध उठत ही तिः अवसर ॥ गुंजत तआवत भवर वा
सुवर ॥ लागि पवन सांउठी सुवासा ॥ पढ्‍ जब सुवर्ग लोक सब

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५७

अश्वमे
ध

रासा ॥ महा सुगंध अमरत्रिय ताऐ ॥ चडि विवान कौतक हि समाऐ ॥
५३ ॥ दो० ॥ चमतकार चज अडुग कौ लागत सरस मान ॥ पूलै काल
की समै जिम सूरभ ऐ सवधान ॥ ५४ ॥ चौ० ॥ सरन के उर फूलन मा
ला ॥ चडे मुदित मन प्रभुमट विपाला ॥ पुनि फूलै लवर विवध प्रकारा
मर्दन की नौ गज न अपारा ॥ औरस मनु गमहा मद माते ॥ सम
रत करत मद श्रम चुचाते ॥ गवन तम मि नीच जइक जाई ॥ हय
रज सा पुनि है सम ताई ॥ रथ महा कत है सरर रथा जव ॥ उठत च
क्र धुनि अदभुत गति तव ॥ रन महि गारे जे योध अपारा ॥ शदुमे
घ जिम अति मैकारा ॥ ५५ ॥ दो० ॥ मकत हार टूटहि गारहि धरनी व
रहि अपार ॥ ऐसी शोभा पावही उडउ डगन मंझार ॥ ५६ ॥ चौ० ॥
बाजन है वचत रअपारा ॥ अनिके व तंत्र अतुन हो पारा ॥ सभ सु
रन के लसत शस्त्र कर ॥ तन संजौ ह शोभित अति दिड वर ॥ जैसि
न के हे सुन जभ पाला ॥ सैन ह्य सधु जम हा विशाला ॥ भगत सु
धन्य के चरित्र पढ ॥ जे नर सुनै सुनाइ अरथ कौ है ॥ नहि व्यावै
दावानल भय तिह ॥ सुनै अवन रुचि सांच तांत पढ है ॥ निःकांसत
धन प्रापति होई ॥ वेग स्वरगगति पावै सोई ॥ ५७ ॥ दो० ॥ सुभ सुब

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

द्वापति हो इतिः अरु सुष के फल पाइ ॥ भगत सुधन्वे की कथा प
है सुनै चित लाइ ॥ ५८ ॥ जैमिन कहे सुन जन्मेजय नरेसवर ॥ पढ़ै
सुधन्वा वहौ भगत हरि ॥ अगनि जरत राष्या त्रीभवन पति ॥ मन क्रम
क्रम जो पद जान नित जो भगत ॥ तीन लोक महि हसु जस बडो या ॥ अव
न भगत के सुष उपजाया ॥ तीन हरि पाव के माहि दीनो ॥ करो
णा करी राष हरि लीनो ॥ जैमिन कहे सुन जन्मेजय पृथवी पति ॥ बडो
सुधन्वे को प्रताप पुनि अति ॥ सन्मुष वि जैम चौधरी भीउ ॥ परन अप
वीसस सोधपाउ ॥ ५८ ॥

६ २ १६२१ जै जैन मजाप है

जैमिन पति ॥ परन कथा सुनाउ सुधावति ॥ भले सुधन्वा पार सी
कैसे ॥ पुनि संग्राम करत भए जैसे ॥ जैमिन कहे सुन जन्मेजय पति
वरु ॥ कहो कथा सुन लेउ श्रवन धरि ॥ जब हि सुधन्वा रन महि
गया ॥ पार्थ पुनि रथ विसमन हूआ भयो ॥ सैन भगत की देष बडो अत
रन ॥ भयो कुलाहल तन के प्रमान न मन ॥ देषी वि जैमगत सैना सम
पते के काल की सम से हो इतम ॥ १ ॥ चमस भगत की देष के अरज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नअतिभैभीत ॥ रनकेससमसरहै नहीबलकारसुकोउ जीत ॥२॥
वज्र रोम अरजुन अपुनी सेना ॥ सकलसैन्य अवलोकी नैना ॥ तिमस्र
टाम हिलानसमाई ॥ तिमस्र अपुनी सेना ठहराई ॥ धनुषबहाथ तेगिर
ह्यो धरनव ८ ॥ चिंतसा नकोपतिजी मधपुरहरि ॥ वज्र ९ प्रश्न पूछा
जैमिन प्रति ॥ हरषत है जैमिनुष यावीवति ॥ हमरे है देसंदेह मि
टावज ॥ करुणाकरि यह विधसमझावज ॥ कंत कोपारथ भयवि
स्मसमन ॥ दवसुधन्वे की सेनारन ॥३॥ पारथ सेना अधिकय
अगुठरप्यो मनमाहि ॥ जैमिनकरुणाकरि कहो संसै राषोनाहि ॥४॥
जैमिन कहै सुनज्ञराजाना ॥ पारथके तीयप्याअभिमाना ॥ अ
सुशिला तेमको की यातव ॥ गरवतमभयो हृदे अरजुनतव ॥ मव
प्रहारशिला तवकीनो ॥ हपमुकतारवे गहमलीनो ॥ मुरसार
कावलीनहीकोई ॥ तीनलोकमेनाहिनुहोई ॥ रतनेभसपकरेरकहि
कोजा ॥ हमएकलोककरावोवाजा ॥ धर्मराजतेतमव्रतकरावा ॥ दहि
द राजीतअश्वगहिल्यावो ॥५॥ पोरेकारजकेनभैतेवतिसं
गरतनेराज ॥ हमतिकलोकराइहा यज्ञपुधिष्ठिरराज ॥६॥
तसौगरवतेअरजुनकेरन ॥ दिएअमाईलई अमभजवन ॥ पारे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पहदेत्रासुउपजापो ॥ धनुषबाणतेधुरनगाराचो ॥ पारषप्रत
रवभगतकैपैना ॥ हैसोदृष्टिपुरानिजतनैना ॥ क्षेघुमसानपटमा
वतजैसे ॥ उरपतिपारषकेमनतैसे ॥ जोमरजनीउजदेवै ॥ ताम
हितयोधकोआनन्दितदेवै ॥ जोऊभगतकेसनवनषआवे ॥ कृपिसंग्रा
मनितसहितलपतावे ॥ २ ॥ [illegible] तेमनकहेसेनउ
नपतिपारषपठरुहोयमाहि ॥ ततछिनआयोहांकिरथभगतसु
धन्वातांहि ॥ ३ ॥ कीयोसुधन्वेसोसकमलतिमन ॥ पारषकी
ज्ञानैवाहीयेहुरतिमन ॥ कमलचडतेजगरधरऊपरजाव ॥ महापु
रुषहोइश्रीपतितव ॥ रथतेउतरभगतमभूमिपरि ॥ राष्यासरी
सविजेपगऊपर ॥ पुनिकररूडरषभपामदंतमन ॥ सावधानेसे
हैनोठहेरनन ॥ पाढवनिरषसुधन्वेकीदृष्टि ॥ मनमेकरतिभयाव
ऊउसृष्टि ॥ वितेभगतप्रतिवचनउचारा ॥ प्रद्युम्नकीजोपेकवनप्र
कारा ॥ ४ ॥ तुमतुमरीरक्षाभगतसेकीजेसंग्राम ॥ वचनकरि
होप्रगटाइसमुझसेसकीजेकाम ॥ ५ ॥ [illegible] कहे
सुधन्वावचनहरषमन ॥ रहहुप्रकारकीतेपारषमन ॥ प्रथम
हितुमजाहुसमुझसाषा ॥ सैनाजाकैसेनासंगापा ॥ नायकसोना

सेना॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नअतिभैभीत ॥ रनकेसमसर हैनहीबलकरसुकोउ जीत ॥२॥
वडरोअरजनअपुनीसेना ॥ सकलसुरअवलोकीनेना ॥ तमअ
टामहिलीनसमई ॥ तिमअपुनीसेनाठहराई ॥ धनुषहाथ तेगि
रोधरनचपै ॥ चिंतसातनकोपतजीमपपरहरि ॥ वडीप्रसपक्षा
जैमिनप्रति ॥ हरषत है जैमिनुप पावीपति ॥ हमरे हृदसंदेहमि
टावउ ॥ करुणाकरियह विधसमझावउ ॥ कतिकोपारथमयबि
समन ॥ दषसुधन्वेकीसेनारन ॥३॥ पारथसेनाअधिकप
सुडरप्यो मनमाहि ॥ जैमिनकरुणाकरिकह्योसंसेराषोनाहि ॥४॥
जैमिनकहे सुनजनमेजानाना ॥ पारथकेजीयप्योअभिमाना ॥ अ
[illegible]शाला तेमलोकपोतव ॥ गरवतभयोहृदे अरजनतव ॥ म[illegible]
प्रहारशिलातवकीनो ॥ हपमककतारवे गहमलीनो ॥ मुरसार
काबलीनहीकोई ॥ तीनलोकमेनाहिनहोई ॥ रतनेमध्यकरेकहि
काजा ॥ हमसैकलोकरावोवाजा ॥ धर्मराजतमजकरावो ॥ द
[illegible] राजीतअश्वगहित्यावो ॥५॥ योरेकारजकेनभितेवतिसं
गरतनेराज ॥ हमतोकलोकराइह्योयज्ञ पुधिष्ठरराज ॥६॥
तसोगरवतअरजनकारन ॥ दपअमाईलईश्रीभगवन ॥ पारे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पाहदेत्रासुउपजापो॥ धनुषहाथतेधुरनलागराचो॥ पारथप्रन
रबभगतकीपैना॥ हैसीदष्टिपरीनिजनैना॥ अघुमप्रगानपदअ
वतजैसे॥ उरपतिपारथकेमनतैसे॥ जोअरजनविजदेखै॥ ताम
हिपाधकोआनहिपेषै॥ जोऊभगतकेसनमुषआवै॥ कृपिसंग्रा
मतिसहितपतावै॥२॥ [illegible] तेमिनकहतसुनड
नपतिपारथपठरूहोपेमाह॥ ततछिनअस्रापाँदहाकिरघुभगतस
धन्वातामहि॥८॥ [illegible] कीयोसुधनेसौंसकमलतिम॥ पारथको
ज्ञानेमहीपेहरितम॥ कमलचड़तेजगरधरऊपरजव॥ महाप
संन्नहोइम्प्रीपतितव॥ रथपतेउतरिभगतमपाप्रमपरि॥ राघोसौ
सविजेपगऊपर॥ पुनिअसकाइरथपमपामदतमन॥ सावधाने
होनेनाठाढेनरनू॥ पाठवनिरथसुधन्वेकीहुति॥ मनमेंकरतिभयाव
ऊउस्तुति॥ वजेभगतपतिवचनउचारा॥ पहुकीजोपेकवनप्र
कारा॥८॥ [illegible] तुमराइकभगतसुकीजेसंग्राम॥ वचनकर
होप्रगटाइप्रभुऊसैंसैकीजेकाम॥१०॥ [illegible] कहै
सुधन्वावचनहरषमन॥ इहप्रकारकौजेपारथमन॥ प्रथम
हितुमजन्मप्रभुऊसाथा॥ सैनाजलैसैनासंगाथा॥ नायकसाना

सैनाउ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

यक जु पैलर ई ॥ हस्ती सों हस्ती रन करई ॥ असवार असवार सों रथ पर रथ सों पु
न ॥ प्यादा पायक सों पायक पार्थ पर सुन ॥ प्रद्युम्न निकट रे नायक पार्थ ॥ म
हा बलिष्ट सहस्र सवार रथ ॥ इक प्रद्युम्न अति बलवाना ॥ पुनि दुजो
अश्वमेध अनिरुद्ध सुजाना ॥ ११ ॥ तीजो पुनि वृषकेतु सुचौथो सात्यकी जा
न ॥ पुनि अनुसाल सु पांच मो महा सहस्र बलवान ॥ १२ ॥ कृतवर्मा
छठो मो विख्याता ॥ जोवनास नायक इह साता ॥ पहुना यक अरजन
नैका ठ चुभि ॥ नायक सात भगत के बहु पुन ॥ मेल सहिरु सिरउ सब धाना ॥
चहुँ दिसि नायक अति बलवाना ॥ कंचन देह वरत बाए जतिन ॥ महासुर
अति क्रोध हिये ते तिन ॥ एक एक सों तुरिग पार्थ से ॥ कह्यो सुधन्वे पार्थ
जैसे ॥ पार्थ निरषि भगत की सेना ॥ विसमै भये गये मन चेना ॥ १३ ॥
पार्थ मन ज्यों पुनि कह्यो व हरि जी ते नहिं जाहि ॥ अगनित जहा बजंत्र है
चतुरंग निद लमाहि ॥ ७ ॥ दुंदभ भेर गगन लषि बाजहि ॥ करना
ई घोर धुनि राजहि ॥ बजत बजंत्र धुनि विविध प्रकारा ॥ बाजत है पंच तूर
अपारा ॥ राग छतिउ बाजत नाना ॥ गति संख सब दद घुमसान भयो तिस म ॥ म
तत मन शब्द दारुण अति भयो ॥ धरनि अकाश एक है गयो ॥ पार्थ
निरषि भयो विसमै मन ॥ भाष्यो सकल बता तन प्रद्युमनि ॥ नही पद्धका

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सामेहमारा ॥ सापभगतकेचमत्अपारा १५ ॥ तमदेवोनहि
आजुजौ तौकहसंग्रामइन ॥ नरजसुचितवयदुराज तौतुमआ
पनहीकहवल ॥१६॥ हमइनसौं तौ तदिनहि युद्धकरहिनहीं
आजु ॥ गजपुरमेंरखवजाहिकुपोंहसधुजराज ॥१७॥
वाच: ॥ कहितप्रद्युम्नसुनजवचपारथ ॥ तमसेयोधतज
हिपरस्वारथ ॥ कहोहृदेदलुदेवअपारा ॥ क्रोधतजुपारनहिउ
विसारा ॥ रणपुहाकृतवषकेतसिधापो ॥ पारथजहाँतहाचलि
आयो ॥ सुनवृषकेतपुनवचनउचारे ॥ अरजनइहनहीउचा
तेतुमारे ॥ भाजतरहाहठकेवाजा ॥ यज्ञकरायोधमेजराजा ॥ ता
तेअबपुनौहौररावुमन ॥ युद्धकरहिगेहमउनसौंरन ॥१९॥ ता
साधसुधन्वचम. जोसकलौंधिरननराउ ॥ तौसुपतहमकरन
कोपेनतसिंधवहाउ ॥१८॥ [illegible] ठाइलेजततकाला
यज्ञकराऊंधर्मभूपाला ॥ पारथकोदैधीरकरनसुत ॥ चल्योहि
यजहितधनुबक्रोधयुत ॥ गरजनभगतसौं वचनउचारे ॥ युद्धक
रहुतुमसापहमारे ॥ वालयावकरिभगतकरनसुतप्रति ॥ बोला
करतहिवालनबुद्धकत ॥ हमसंग्रामकरेंअरजनसों ॥ प्रथमेव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Initiative

आश्रमे ५

वचनकहेहमउनसों ॥ भयेपनसन्मुखविजेउअयोचित ॥ तुमकोंय
ह्यामरावनकेहित २० ॥ दोहा ॥ देखोयहतहोअतिसुंदरतुमरूपअ
नमहमिवशाल ॥ कहोपराक्रमआपनामोरुआपनाकुलवाल ॥
२१ ॥ चौपाई ॥ कहोपिताकोनामवरुफेरनामअपुनकहौ वालका
अतिअभिरामकहोबतातसोनाउमसुज ॥ दोहा ॥
करनपहततपुनवचनउच्चारे ॥ पुन्यमयपहुंतुमसाथहमारे ॥ तौ
होभगतकरनकेनंदन ॥ तुमरीसेनाकहोसोतैकुंदन ॥ वानरकी
वर्षाकरषावौ ॥ प्रलैकालकीसमैदिषावौ ॥ तैसबचककहधनुषब
लीयाकर ॥ करनेतातवलवानसुंदरवर ॥ छूटेउदीएसरअतिवि
कराला ॥ अंधकारहुभयामहाविसाला ॥ अतिभयभीतसभदुष्यभ
याञासं ॥ मिटगयोसभआरपमाप्रकासं ॥ २२ ॥ दोहा ॥ वानरसों
छादितकोयोभगतसुधन्वासुंदर ॥ महावलीवालककुसुभटकरन
पहतप्रनपहुर २३ ॥ चौपाई ॥ निरषभगतअतिक्रोधमयोमन ॥ पवन
वानमारेउ[illegible]ततछिन ॥ अंधकारदहदिसाकरिडारा ॥ तमअमि
टा[illegible]योभयोउजियारा ॥ पुनषषकेततीनसरमारे ॥ अतिविक
रालमहाभयकारे ॥ एकवानसारथीप्रहारे ॥ सरदुसरेअस्व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कटि डारे ॥ वशिवती सर रे सेन हती आए ॥ वजर सुधन्वे धनु वल्ल
यो कर ॥ तीन वान तीछन मारे तव ॥ कंपवान त्रैलोक भयो सव ॥
२५ ॥ दो० ॥ रथ समेत तव ष केत को दानो गगन उडाइ ॥ ऊपर ते
भ्रम भ्रम गिरो सो पर सो धरनि मरहराइ ॥ २६ ॥ चौ० ॥ महा पराक्रम
देष भगत तन ॥ पारथ चक्र तम पाधव सम मन ॥ करन जग रत
प्रद्युम्न निहारयो ॥ चल्यो रिसाइ क्रोध जो पधारयो ॥ भयो सुधन्वे के
सवधाना ॥ मारे द्वै कसी सवर वाना ॥ उठो सव दुतिः आ तम पक
री ॥ लेग ए स्वारथ को पमघारी ॥ आवद नेपु नधु जो गिराई ॥ १
को यो महावल्ल समत जड राई ॥ कोप्यो सुधन्वे वान चलायो ॥ रथ
सों हरि सत गगन उठायो ॥ २७ ॥ दो० ॥ नभ भ्रम आइ ठार सों धरनि वज्र
दुष पायो पाध ॥ वजर उठो कर धनु वले [illegible] तात कप क्रोध ॥ २८
॥ सो० ॥ सात वाण वरतु [illegible] कारे ॥ भगत सुधन्वे को कसि मारे ॥ का
ल सु रूपी सर विकराला ॥ सिनारथ कोरे त तत्काल ॥ चमः मारस
रसन भ वधाए ॥ रथ समेत हरि भगत उडाए ॥ तीन धन वरषा
पा [illegible] ॥ भगत उलट सो वधरनि परयो ॥ [illegible] हरि भगत जीव
क्रोध वडो अति ॥ चार वान मारे प्रद्युम्न प्रति ॥ [illegible] गयो रथ [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

६१

अश्वमेध
५

पाला ॥ नौ जोजन प्रमान हरि वाला ॥ २८ ॥ दो० ॥ करन पठतक कीम्ह
र कहा हुदी मध्यो सवधान ॥ सत्रुम्रघ म्या यो भगत के महा सुरबल
वान ॥ ३० ॥ चौ० ॥ महा कोप वन व के तम यो मन ॥ सो बान पठ ऐसु
न मुभरन ॥ रथ्य को स्वरूप सारथ्यी विठास्यो ॥ मुकटा तद्द कट्ठ कस
र जास्यो ॥ अगिन त सेना नाना सकरी तव ॥ निरख भगत तौ प क्रोध
वद्योतव ॥ तीन वाने की छवि कुराला ॥ बांध तौ पौ करन जतत
काला ॥ बांध ते बरी जे मन व बके ता ॥ दीपक छबि बज्र की मो सुच
ता ॥ पुन मारे गजन अश्व पदंता ॥ सैन सबहु कर तम यो घा
ता ॥ ३१ ॥ दो० ॥ रथ सारथ्यी विठार वज्र सैन करी अति घात ॥ म
कता पो जे बरी ते अश्व पकरन की तात ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ लेकर धनुष
मयो सनमुष दल ॥ सुर सुधनवे ठार गगयो चलि ॥ करन पठतक
दि क्रोध हीय धरि ॥ चारवान को हति अश्व सुरे ॥ सेना वज्रत
प्रहार करी सर ॥ धुजा पताको गगन धरन पर ॥ कोरेर पसका
र थ्यो बिठारे ॥ गज तुरंग पाय के कटि डारे ॥ सुर वरन धरपर
उलटि मुषव ॥ चतुरंगिनी चमू दीनादुब ॥ भटगयो सुरजनी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कोप प्रताप तव ॥ करन प्रतमारी सैनासव ॥ ३३ ॥ करन तात
अति कोप के वज्र सुधन्व और ॥ एक वान कोसि ते जसी प्रमिर
पुडा स्यो तोर ॥ ३४ ॥ पुनरप अवर संग्राइ भगत हरि ॥
तो पर भयो अरूड सरवरे ॥ तीन वान छाडे तत काल ॥ मा
हा क्रोति तो छन विकराला ॥ एक वान वपके त ठठायो ॥ लोस
र गगन वीच ठहरायो ॥ दूतो पवान स्यार प्यो विठारे ॥ तू ती
पवान पाप कवज मारे ॥ पुनै काल कै समै हो ततम ॥ सेना
नासु करी रन मै तिम ॥ भ्रम भ्रम पस्त्र करन सूते रन मै ॥ अति
कुलक छु सुधि नहीतन मै ॥ ३५ ॥ आज्ञा ले अनुशाल पुन
चडि आयो ततकाल ॥ पुन प्रापति भयो कछु सुतप ठयो जुजतो व
पाल ॥ ३६ ॥ तो छन सरवज हनि अनुशाला ॥ नासु करी
सैना ततकाला ॥ रथ पस मस्यन भउ और उडाए ॥ सम तो गगन न
म मै ठहराए ॥ भ्रम भ्रम आकास हरि भगत तप स्याध पर ॥ के होधन्व
अनुशाल सरवर ॥ जै मिन कहे सुन जन पपूष वीपत ॥ को गौर नू
के वीच हरभगत ॥ सरवीर प्याधे मुर छावे ॥ ऊद्वति तहिं यस रचे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नचलावै ॥ ३७ ॥ ॥ गजपचासपाककगयोरथस्वारपियमनु
सालन ॥ रथ्थितजुपयादाअयोरथनिसनमुषसुतनंदलाल ॥ ३८
॥ भगतसुधन्वेकेसनमुषचलि ॥ अयोसवधानप्रद्युम्न
महाबल ॥ मष्टप्रहारपरस्परकरही ॥ गुरजषडुपमधर
सोलरही ॥ तुमलयुद्धकीनोतिःकाली ॥ ततनविछलेभयोताल
गुपाली ॥ जैभनककहैसुनऊजतनमैंता ॥ भगतप्रतापकोटि
रविते जे ॥ पुनिप्रद्युम्नसुभमयोसुचेतमन ॥ सनमुषभगतभये
ढाढारन ॥ भगतसुधन्वेसंधवौएकसर ॥ तेजेमआपनोचीव
धारकरि ॥ ३९ ॥ ॥ दैकसीसमाहोपशिखभगतहीयेध
रक्रोध ॥ रथ्थसुपुन्नपतालयुनय[illegible]यापद्युम्नहिपाध ॥ ४०
॥ तोदवषहिरनमहिमनुशाला ॥ रनहुएसुतकोपवध्या
पताला ॥ रथ्थुहोकतिसनमुषचलिआयो ॥ महाक्रोधकरि
धनुषउठायो ॥ पसोकटकमहिचलयोकोरदल ॥ रच्योतु
मलसंग्राममहाबल ॥ किनमहिपलेकरीसमसेना ॥ सो
गतिकहीपरततनहिवेना ॥ मैकारीतवशवदभयोमत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

म पो ऐके सम सम अंबका शतव ॥ दुहू दिश अग्नि उठी अति ज्वाला
है गये अंधकार तिं काला ॥ ५१ ॥ दो० ॥ चरन रेनधर मर्कट अंग
नि सम हैं भय पानक हैं तेहि ॥ रन माहि दिश न आवई ऐके दूसरी
देहि ॥ ५२ ॥ चौ० ॥ पुनि अनुशाल गरज लीना करि ॥ पर्वत काटि
कमल ले ही ये क्रोध करि ॥ भगत सुधन्व की सेना सव ॥ तन ता गा
दी नी जार सकल तव ॥ युद्ध करन को अति पल कौतन ॥ निर
ब सुधन्वे को पवन चामन ॥ तीन वान मारे अनुशाल हि ॥ मूर
छित करि उरस्यो तत काल हि ॥ जे भिन के हैं सुन रूपवि पवि पर्व
त धु धिपार पर सैन वली अति ॥ सकल भगत दुहु दिश करि गा
री ॥ पुनि आई पार पकी वारी ॥ ५३ ॥ दो० ॥ पारथ पहि ऐ अति क्रो
ध तके ए ॥ हो तम पास वधान ॥ भगति न हो स्याधि जे को रथ बैठे
न ल वान ॥ ५४ ॥ चौ० ॥ ठाठा ऊत वि जे रनजहा ॥ हा कम भगत रथु
पड़ा तहा ॥ भगत कहे हरि सव च अरजन को ॥ करी धम कं
ताइ स पन को ॥ ठाढे हर रन मैं त जि क्रोधा ॥ आप वक हौ वत पवड
पाधा ॥ सुन को पार पर न माहि ॥ रथा युद्ध अति ठौरत हा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ९२ ॥

अश्वमे
ध
॥ जुजिर॰ ॥

ही ॥ पांचवानपांडवकप्समारे ॥ महातेजस्वीअतिमपक्रारे ॥
भगतहदेलागेजवकाना ॥ द्रगेएविशिवक्रसेषपक्रान ॥ ४५
॥ जैसे तनकूटाचुभेकाडेजारीचेकोर ॥ तिमसमरलागेवि
जैकेभगत हीपति: वेर ॥ ४६ ॥ ॥ वडतिसधन्वे ही ए अथ
धपि ॥ वानअरंभपालीपाधनुषकर ॥ क्रोधाविशिखचावले
जवहु ॥ गरजपरतो सेनामैतवहत ॥ गजेरचअश्वपदातर
चमारे ॥ रथकाटेव फकुभविडारे ॥ रथसंपुतअरजननतरफा
लाहि ॥ धस्विगगाकाइक सेघनुषपताल हि ॥ कुतव मासातकप
निधाए ॥ दूनोमाधएकठमाए ॥ इतउत ते सेनाजुरगाई ॥ डुहि
दशापद्मभपाकैमई ॥ ४७ ॥ ॥ पावनासनपमृत सहितवजत
मिलेवलवान ॥ परथपरसगदामुशपटलरहि ठइसवधान
४८ ॥ ॥ छुटकहकुहककानहपनालो ॥ परसधमरतभि
योउजाला ॥ इतउतछुटकतवानअपारा ॥ गदात्रिशूललेअनेक
प्रकारा ॥ अश्वशस्त्रभईसेनासंघारा ॥ चतुरंगअनदलेअंतुनपा
रा ॥ दारुनयुद्धभभयेकराला ॥ सपितारुधरभईतिकाली ॥ व
हतजातहिकवधसुरअति ॥ हपपदातरअतिविचत्रगति ॥ च

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तुनिम्र्गाकी सरिता जैसे ॥ त्रिगुण सम भुव संग बहुत हैं तैसे ॥ ४८ ॥
सुक वंध ससिर अंबर ष्पव हहे श्री गीत माह ॥ चतुरं मास की
नदी जिम समानो ऐसे नाहि ॥ ५० ॥ छोरै रहे जगत जुग अकार
शा ॥ भक्ति न करत सूर के मासा ॥ वजे ऐसे धन निरखी सेना ॥ म
तक भई अवलोकी नैना ॥ पुनि मारे ती छिन दोऊ वाना ॥ महा तेज
सो प्रलै समाना ॥ सात कक्रत वर्मी देऊ जोधा ॥ पठे अकाश अग
त सर क्रोधा ॥ पोवन नास सतसादि त जोरी या ॥ अमर रन के पन
मारकृपा ॥ अवर वीमी सौ रिसाइ की र ॥ पार पावन सम भंग र न८
का ऐधार ॥ ५१ ॥ गाशा भुव नावइ भदति हसधु जनाइ
अभेध के पराकी अभयार की सम धाइ ॥ ५२ ॥

५४ २१ १२२२

कहितजै मनम्भ पाल ॥ सुन ऊकृपा सवधान है
सैो
पार पाऊ तो विपाल ॥ श्री पोनि जमकुनाइ रन ॥ १ ॥
नोदवी वजै सी सधुन ॥ पाहुर स्पानि कौ ऊ योध पनि ॥ सा ति
वंता उपजी पार पमन ॥ कहीं मलेइ छातु मम भगवन ॥ सुरव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥६४॥

अस्व मे ५

तिवेगजीतमहितलौनौ ॥ सुद्धजीतमुहिकी औअधीनौ ॥ भारथ
जीतेवइराजानौ ॥ करुनसागरवेअतिवलवानौ ॥ भीषमद्रोणा
चारजसहनि ॥ कृपाद्रोणसुतमजजुजैनन ॥ नासकरीद्रोह
नीअठारहि ॥ छदेनपवलवेअपारहि ॥ २ ॥ दो० ॥ नहींजानौ
वहवलकहाजातमपोइहकाल ॥ यद्यपिमुकहिसहाइमित
करुणासिंधगोपाल ॥ ३ ॥ चौ० ॥ भगतसुधकेकौइतनौवल
जानौनीहींदीपोकः अविवल ॥ जैसेमनकहेसुनत ... पाला
कप्यासुधारसपरमपरसाला ॥ जौजौ जौ पवि जैव चारकी
यातवु ॥ हसिवचकहेभगतआरजनप्रति ॥ जाकेहृदमहंक
तहोइ ॥ कवहुहरनजीतेनहीसोइ ॥ वहइद्वापीआनंदलाला
करनकुरावनहारगोपाला ॥ ४ ॥ दो० ॥ भपोकुसुतवस्वारथी
तवमारेवइयोध ॥ जीतसकोअवकुपविनरेनठाठेतजिको
ध ॥ ५ ॥ चौ० ॥ तुमकोउचिततनपुछहमारा ॥ जनवइडरकेय
हवपुधारा ॥ पुनिप्रद्युम्नसाववलीपेमापा ॥ जिः रसाम्बकेरा
हजनरापो ॥ सोकैसेकरेहूसेगामा ॥ पुछवीचउनकोनहींका
मा ॥ कुलीपञ्चमानेपालमहावल ॥ जौवनासमसहितरना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चल ॥ सो वचन कहत है पारथ पति ऐसे ॥ हम को जीत सको न हो ।
कैसे ॥ जो तुम मेरे सहाय करने दल लाला ॥ श्री बुद्धि जे जीतत हो तत तका
ला ॥ ६ ॥ दो० ॥ सत्य कहत हो कृष्ण बिन तुम नहीं जीत जग जे मोहि ॥ वे
ग बुलाव उन हथियार हो जीत हो ॥ तब तो हि ॥ ७ ॥ चौ० ॥ जो तुम रे त
रकस माहि बाना ॥ पूछ कर अर न है सवधाना ॥ अरु तो सर
ने बुद्धि बल तुम्हारा ॥ वेग बुलाव उन कुसुम सरारा ॥ ऐसे वचन क
हत तिं कौतला ॥ श्री धौ हरि स्तुत उतो त्व पाला ॥ वचन कहे इसभ
गत वजै प्रदि ॥ अरु अनुशाल हि पवन उला वत ॥ वज्र हि भग
त सब वचन उचारई ॥ धन अनुशाल श्रवन मद हिय धरई ॥ सैन
मा कुसल रवि व्यापा ता ॥ महा बली मनुज को ताता ॥ ८ ॥ दो० ॥ ता को हु
म म छीत कौ पान हीं जानो कैः ठौर ॥ द सर थ हम अनु ल जिः हरि
जीत्यो दल जोर ॥ ८ ॥ चौ० ॥ पुनि अनुशाल असुर को अधपति ॥ व
चन कहे जिः सुनेर मोति ॥ सो वल तुम रा कहा गयो अब ॥ पद व
च हर परसत समन श्रवन सब ॥ सुनि प्रद्युम्न सुन भगत गुपाल ति
कहि प्रद्युम्न निकट चल आयो ॥ भाखि भगत प्रति वचन सुनायो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चौ॥ कहि प्रद्युम्न सुन भगत गुपाल लाल॥ कति पहुंचबन के हैं अ
नुशाल लाल॥ पुहुंकर रऊ अब है मरे सारथ्या॥ कैसे नु जाहि ते गा
वाहा च्या॥ कह सीत तत वधनु बली धौ कर॥ सांध्या सर जौ परम
हकोध कर॥ ५॥ दोहा॥ सर अतहु हवी ध्यान नहीं भगत और हेपिता
त॥ सो धनु सुधन्वे पठदी पा तादि नेसर सव ध्यात॥ ५॥ सोरठा॥ हरि
सुत कधन कौ गुन जात सौ॥ महा ते जसर सौ कटि गा सेया॥ बड़
पि सुधन्वे वचवपाना॥ सुन प्रद्युम्न तात भगवाना॥ महा दै
जाम्या तुम सरा तन॥ कीनो पुन सुर जीत स्याम घन॥ हम सुम
भरत न उचन हीं तुऊ॥ पठ्यो वेग है बार प्यात सुऊ॥ ऐक बार
भीगे रन माहीं॥ पुन संग्राम थां गतुऊ नाहीं॥ तुम हरि सुत
सुजह दैवै वारा॥ तो ते तु ऊे न करों संघारा॥ ५२॥ दोहा॥ पार ष्प
को ही रन नो वधेतिसे कहो तुम जाइ॥ देखत है बलधन बम दि
पुह कर पुन आइ॥ ५३॥ चौपाई॥ ग्रर जो अरजन न बल हा स्यार न
भ्रमर बुलावै इहां स्याम घन॥ हय मुकतार दौहह हपे पाणि
हमको जीत सिद्ध करस्यार ष्य॥ जैमिन कहे सुन द्रुम वर्शि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

व ॥ बचहु रिसुत सों भगत कहे जब ॥ सुनि प्रद्युम्न हु कि रघुग
यो ॥ अरजुन के द्विग ठाठा भयो ॥ पांडव को हुप सुत दखो चलि ॥
ठाठा द्रुमको धाहि हारि वल ॥ कही प्रद्युम्न वि जे प्रतिवाता ॥ वि नमा
न ठाढे कतितातात ॥ ७४ ॥ दो० ॥ वि जै कहि प्रद्युम्न सुन मे न भई सब घा
त ॥ निघुटे वानिनि षंग ते कैसे जुरु जुंतात ॥ ७५ ॥ चौ० ॥ वक्षौन हा
को ऊ सुर हमारा ॥ सकल सुधन्वे की यो प्रहारा ॥ जहं ठाढे अरजु
न हरि ताता ॥ कर तव ना … र स्पर वाता ॥ भगत तहां कि रघुत हा सुधा
यो ॥ पारथ को कहि वचन सुनायो ॥ उठ जव जे हम सो जूझ जुद
ल ॥ कुंत तुम ठाठा भयो हार वल ॥ अस्त्र सम हाइ जाइ फिर कै जव ॥ क
हा कहा ऐ धर्म जसों तब ॥ पन्न करत ते ऊरा ताना ॥ जौन प हो तम हु
वलवाना ॥ ७६ ॥ दो० ॥ प्रन करत है जौन पति देत नु रंग मझार ॥ पुनि
सेनापति हित तजे न हा … पति क्रम जोर ॥ ७७ ॥ चौ० ॥ वचन सुधन्वे वजु
रि कहे पुन ॥ अब तुम ठाढे हो रफा लगन ॥ पन्न अरंभ की यो तु सजु:
वल ॥ सो हरि केशुन … लावति रुद्द दल ॥ हा हे हारि तुम रोरथ स्वारर
थ ॥ तौ तुम रन हार जुन हो पारथ ॥ हारि मान ठाढे तुम ऐसे ॥ हुप
सुकता वजु गेक जु कैसे ॥ रन मैं धन प उठा वत तव हो ॥ अपुनावल
अति जानो जव हो ॥ पाही वल ते स्वारथ पि भयो ॥ भार पथ को वल कीति

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ १६ ॥

अस्वमेध

डरगयो ॥ १८ ॥ ॥ भलेकरापेपत्तन पठाउ तुरंत किनाइ ॥ कविजीत्योतु
मकृष्ण विनुवचनकहोप्रगटाइ ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ हैमेखंडावाधेकटिपारथ
सो संयमभीरसंपुरुषपारथ ॥ कहतसोपावलतेपुरठसतन ॥ यज्ञ
करायोनवस्तिपुधिष्टर ॥ तेभिनकहैमनज्यव्यवीपत्ति ॥ यहव
चभगतकहेंअरजनप्रति ॥ पारथकृष्णनकह्योतिःअवसर ॥ पुनि
पांडवप्रतिकह्योतातहारि ॥ कहिप्रद्युम्नसुनज्बचअरजन ॥ कृति
ठाडोरनस्यागफालगुन ॥ साईपरबडरहैरनमाही ॥ जिनकेत
नहिपराक्रमनाही ॥ २० ॥ ॥ सो॰ ॥ ठरे संग्रामते जोनहोस्वल
वान ॥ कहोतेहिठरुकवनकोउतःसहाइभगवान ॥ २१ ॥ ॥ चौ॰ ॥ पु
नितुमरेसंगसैनअपारा ॥ महावलीछियोधदलभारा ॥ तातेतुज
ज्ञरनकृष्णराता ॥ चिंतादूरकरउजीपताता ॥ तुमसहाइश्रीपति
भगवाना ॥ भीमसेनअतिवलवाना ॥ तेकत्तित्यागहिक्रोधध
नधरन ॥ जिनकेसदासहाइस्यामघन ॥ जिनकेसखाहोइहिघन
स्यामा ॥ कवहूनतेहारहिसंग्रामा ॥ लीपेदडाप्रद्युम्नप्रबोधज
व ॥ पारथहृदैनधीरधराइतव ॥ २२ ॥ ॥ दो॰ ॥ अरजनकहैप्रद्युम्नसु
नरनभीतहिजोनाहि ॥ नृपतिहसधजसेजहाठाढेशांबवजाहि
२२ ॥ ॥ बकुपसधन्वअतिवलवाना ॥ अवरबलीनहीताहिसम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

माना॥ हमरे नाप कप्यो स्त्रेवर॥ सभमगुर फाशणराइदी पैधरि
कौंजु जैगुअनकेसवधाना॥ हमराकौनस्त्ररठहराना॥ जैमिनकहे
ते सुनजुराजनतब॥ रोसेवचनकहेपारथजव॥ वजुरिपुद
गुमवचनभाषेसुन॥ पुडूदिडावत्तिनिजुप्रतिअरजन॥ जोउअ
पुरुषहैधनुषलैहिकर॥ तेनकरहिरछातनरनपर॥ २४
दो॥ यह पोवन गतिमे घकीसावनकेजलमान॥ देहराचि
रनजुउहीपावहिनरकप्रवान॥ २५॥ जैमिनोवाच॥ सो
सुनिराजाहरितातवचनकहेजोविजेप्रति॥ भगतसुनोस
भवातरच्याहाकतआयानिकट॥ २६॥ कृष्णोवाच॥ सो
कहेसुधन्वासुनजुफालगुन॥ श्रीपतिवनतुममहादानयु
न॥ द्रुपदसुताकौसभमेचीरकरू॥ तुमपौवोजुधीनतिःअवस
र॥ हरिविनुकहुवलुनहीतुमारा॥ हारीतवहिद्रौपदीनारा
तुम अरुकौरहर हलिचंतमधि॥ रछाकीनीतहपाममहपनि॥ राखीक
ष्ण तुमारीलाजौ॥ जिःतिःकीपासंपरनकाजो॥ हमसोतुमजो
तजुनहीपोरख्य॥ हरिवुलाइपरबजुसमस्वारथ्य॥ २७॥
जिःविनतुमरातुहुवलुस्वारथ्यलेजुवुलाइ॥ सारुजोहेक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कुंअवर वलु पुहुकर रजरन आइ ॥ २८ ॥ दो० ॥ पहुवच वसुन कौ
प्यापारथ्य तर ॥ कह्यो भगत पृति पुहुकर जुअव ॥ रन मधि
कौं पौधु नु बटं कारा ॥ ध्यान धर्‍यो हो पकुस मुराश ॥ आवसि
दष्ट भई तिः अव सर ॥ पारथ्य निरखी सैन भाउ धरि ॥ पांडव
के पौधा सम जागे ॥ चुनि चुनि वान चलावन लागे ॥ विछुट
गये तरकस तेतीरा ॥ अति विह्वल तन भए अधीरा ॥ २९ ॥
दो० ॥ पारथ्य सैनादे षकै मन महि व्रजत रिसाइ ॥ अगनि वा
न कसि मारयो भैकारी प्रगटाइ ॥ ३० ॥ चौ० ॥ ज्वाला [illegible] गनि सै
ना सभ मारी ॥ मग्नि वान हनि सकल प्रजारी ॥ हैगैरथ्य प्रज
र गए पदाता ॥ सैना करी दृग धसम गाता ॥ कर रपद नैन
जरे सभ अंगा ॥ वजर सुपरसैन मह्तिव जुवंगा ॥ वज्र रभगत
कौ रथ्य जरगयो ॥ तवहिं सुधन्वा क्रौध तमयो ॥ लीयो धनु
ष सर पवन चलायो ॥ पावक कौ सर पवन उडायो ॥ तेजुआरी
वरुण अग्नि वापु सर ॥ ततछिन पारथ्य की सैना परि ॥ ३१ ॥
दो० ॥ सैन धि जेकी जरि परी जे ऊवचे व्यथाध ॥ परवत सैर
पुन सैध पौ भगत ही पकप क्रौध ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ परवत वान भा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गति मारयो जब ॥ चरम्न विजै की हतन न करी तब ॥ किन हूं के म
न मस्तक भंगा ॥ करपग टूक गए कोऊ पंगा ॥ किन हूं को टू
टी भुज जंघा ॥ सकल चरम्न एं चूरन अंगा ॥ के को मछीत है
गेरे धरनू पर ॥ रपस भग रे को टूक करि ॥ गजनतु रंग तन
भग परे धर ॥ मर्दि प्रद्य म्नप रे पि: अर्व समर ॥ मेघ बान बुन भग
त चलायो ॥ जरती धरती कौं सी तलायो ॥ ३३ ॥ दो ॥ भगत सुधार
न सों चरम्न पुनि तुरि भई अपार ॥ विंतध वतापार पभई मन म्रति
करत विचार ॥ ३४ ॥ चौ ॥ अरजन मन मोहितजा नविचारा ॥ वन
हरि अववुरन को ऊ हमारा ॥ कृष्ण कृष्ण कहि अमरन की नो ॥ म
नुले हरिचरनन मोह दीनो ॥ गरवंरधर गोविंद गोपाला ॥
भगत वछल हरि दीन दयाला ॥ नाथ अनाथ जगत गुरु स्वा
मी ॥ सकल घटान के अंतरजामी ॥ दीनबंधु ईस्वर अवनासी
सर्भट तनुमरी जोतप्रकासा ॥ नारायण तरहर नंद नंदन ॥ आर
करऊ मेहि क एन कंदन ॥ ३५ ॥ दो ॥ मैना हमरी हत नु करी भगा
त सुधन्व आइ ॥ दरसन दीजे नाथ जौ फिर जैवे गस हाइ ॥ ३६ ॥
दो ॥ अपुन वचन करउ प्रतिपाला ॥ सकटदूर कर उनंदर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ग्रम्रमेथ

लाला ॥ पोधर ह्योन हीऐक हमारा ॥ के ऊ महङ्कित के ऊ म रे
संघारा ॥ कछु वेलर ह्योन हमरे तन मे ॥ जा सों पुद्धव करा घुमि
रनमे ॥ ता तेरा बु हमारी लाता ॥ दरसन देऊ वेग पठुरा जा
जेः तेः र द्धाकरी हमारी ॥ विर्दला जेतु मको वनवारी ॥ तेऊवि
नमावरनको ऊमूमासा ॥ मावऊ शी घ्रमिटा बऊ त्रासा ॥ ५२ ॥
दुषदी जेदी जेदर सु मुष निध मानंदकंद ॥ ध्यानेषो
रूजव देष हो रूपस्वारूपि नंदनंद ॥ ५३ ॥ वारष हरिको
की पोपणमा ॥ चितवनि मे मा ऐघन सामा ॥ मरजनहू दे मि
नदितभया ॥ सुषसमहु उपजे दुषगया ॥ मानोरूपको ढक्यो
गिरधर ॥ करणमात्र वेठस्यंदनवरि ॥ मानोमतकमंत्र तज
लपा या ॥ तेसे विजुही ये हरषाया ॥ चारिरूप गिरधर मा ऐस
जि ॥ एक सरूप पुंधरष वहितव ॥ द्वुतीयसरूप कुंती के मा
गे ॥ तेतीयसरूप रूकमनि मनुरागे ॥ ५४ ॥ चोथ्यो मार
तनस्वार थीरूपवर वेठा माऊ ॥ चारो ऐसे जान हो हम संग
हे पदुराइ ॥ ५५ ॥ विदुधस्यो हरिपगपट माप्या ॥ हसेम
द्वतभ्रम वनके नाप्या ॥ कहू उठा माभ्रलिंगन कीनो ॥ पारथ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कोधारजुवदीनो ॥ ऊचशवदकरिकह्यौविजैतव ॥ आइसुधन्वा
पुहुकरजसव ॥ अरजनशब्दभगतेपहिचान्यो ॥ हर्षिआए
धनुजीपजान्यो ॥ आगेह्वैशबदआनिदीनो ॥ आधिउर्पजोधुनि
महाप्रबीनो ॥ हांकौभगतेशीघ्ररथ्युतहा ॥ सन्मुखगांपाइवजे
हरिजहा ॥ ४१ ॥ दो ॥ सरतिवतवलोकियोवारथपरथमभगवान
शंखचक्रआयुधसकलगदापदमलीयेपान ॥ ४२ ॥ चौ ॥ जोरभ
गतकेहृतोरिएमनसोईनिहास्योप्रगटस्यामघन ॥ भगतनुआ
पनेहृदैविचारे ॥ आजुदेवसवडभागहमारे ॥ हमराजनमसुफ
लआवभयो ॥ करुणाकरिहरिदर्शनदयो ॥ देदररसनतनमन
त्रपतायो ॥ जोऊदर्शनदुर्लभजगमाहि ॥ शिवसनकादिककोपा
वतिनाहि ॥ ध्यानतजै नारदइंद्रादिक ॥ लखनसकतमननजनब्र
ह्मादिक ॥ ४३ ॥ दो ॥ शिवसनकादिकब्रह्मकेजोनहिपावतध्या
न ॥ भागवडेहमरेभएसोईदेख्योसरचान ॥ ४४ ॥ चौ ॥ हरिद
रसनप्रापतिमुझभयो ॥ जन्ममरनसंसामिटगयो ॥ इछापू
रनभइहमारी ॥ भपाकृतारथनिरखमुरारी ॥ रथतेउतरिदे
उवतकीनो ॥ मनलेकप्रचरनमेदीनो ॥ वङृरिअरुडभयो
स्पंदनवधि ॥ हरखतमपोदहपावनकरि ॥ भगतउचारकह्यो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

अरजनसुन ॥ आवउ पदु करउ हम सों पुन ॥ ५५ ॥
अरजुनके ग्रीसु नउ भगो पु छु करउ अश्वआउ
तुम तो हम रे सुर सवरन उरे मुर छाइ ॥ ५६ ॥ बा
सुन पारथ पगर त्यो अव पाते ॥ हरि जाने आव ततु मताते
प्रथ मे हमरी सपत मुनी जे ॥ पाछ धनुष बहा पसर लीजे ॥ ती
नआन सो तु उहि पिपाला ॥ पठवो जान सहत नदला ला ॥ तो अ
घती नला गहे मोको ॥ पगट सुनाव तहा कहितोको ॥ तीपर
जसवला हाहे जवहीं ॥ गवन करतिः सोवत तवहीं ॥ इलभोज
नलवतिः हाथा ॥ हासवला सकुरतिः साथा ॥ ५७ ॥ दूस
र अधिसहि आसकु शे जाऊ आ वेकिः पास ॥ आदरु करेनहे
हककु फिरतिः पठेनिरास ॥ ५८ ॥ अघती सुरास न उरे
विछ्या ता ॥ जानरदु वदेवे पितु माता ॥ साधन कोदेवे सताया
सुनि लीजे पहती नापावा ॥ जो हम तुम निधिया लय ठावो ॥ पह
तीना अघ काफल पावो ॥ वद्यमान पारथ अरु गिरधारे ॥ ती
नसवति पहकरी भगत हरि ॥ तीन सपति पुन अरजन की
नी ॥ तेऊ भगत आवन न सुनि लीनी ॥ कहि पारथ सुन भग

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तमुरारे ॥ जौन तोहि पठवो पम महारे ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ रष्य समेत प
महार तुज जौन पठाइ हवार ॥ तौ नवपन सौं तुज नाहत नोल गे तीन
सघुभार ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ कं न्याव चदरव तोलेवहि ॥ दूसर ॥ गुरुस
तातोऊ सवहि ॥ मरुती सरोज नभ कौ घर गहू ॥ मेरुला गहिती
नोपातक पहि ॥ तौ नवान सौं तुज पम लोगा ॥ जौ नप ठाला गहिम
घसोगा ॥ स प्रकरी यह हदहु हनपर स्पर ॥ दोऊ भये सवधानप
हुपति ॥ कहै स्यधवे वचन विजे पति ॥ तुमराव ढकौ योत्रिभवन
पति ॥ ठाढे कतिकी जे संग्रामा ॥ तुमरी उर भए घनस्यामा ॥ ५१
दोहा ॥ शंख चक्र असि गदा पद्म निपद मली ए कर धीर ॥ ते पार रष्यसा
रष्य भयो असि चतुर्भुज तिकरूप मराए ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ तव करे पार रष्य वान नली
ऐदस ॥ ढाठदो पेसन्मुख कुवठकसि ॥ स प्रकरी षपी तौ वान की ॥
काढे दस सर नहि पुमा [illegible] कौ ॥ आवत सर हर एभगति निहारे ॥ चक्र
काढे दस ही कटि डारे ॥ तेकै समसर जनके वाना ॥ जिनका कहे प्र
ताप पवाना ॥ प्रथम तुर्त तेदसै नकारे ॥ होत भए सौ जव गगन धा
रे ॥ जव ढाढे सहस दसै भए ॥ होदस लाख निकट जव गए ॥ ५३
दोहा ॥ लगनि आवद सकोट सर होत भए जव वान ॥ ततकिनेम

न६

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २० ॥

अश्वमेध

र गहि चक्र सों काटे भगत तम भगवान ॥ ५४ ॥ चौ० ॥ पर पक बेती है
है जैसे ॥ बार न लागी काटत सर तैसे ॥ गरजि सुधन्वा बचन उ
चारे ॥ आव तपार ष्ववान हमारे ॥ आव संभार सुहि तम गवा
ना ॥ पठवौ तीनो सर खल बाना ॥ दैकसी सपरि स सौं के समा रे
ती न विसिष व ज्ञा ऊ म सब कु उचारे ॥ धाये हृदे कुसम के धाना ॥
वि ज्ञै कहो सर पुले स माना ॥ स्पंदन सहित ते विते नंद लाला ॥ ले
उरे तिः सरन पियाला ॥ ५५ ॥ दो० ॥ व ऊ तधि कारे कीयौ तहा सर ज्ञ
न को यदुराइ ॥ ज्ञिन के बचन असत्य है धर्म गुवहै पोध कहाइ ॥
५६ ॥ चौ० ॥ तुम म सब सपू तीन सर कीने ॥ बचन भंग करिहै सब ठ
दीने ॥ तुम सरी सपत तपरी तुम हीपर ॥ देबसुधन्वा सर महावर ॥
जे तेसा पुन्य सबक हे सर ॥ ते ऊ तीन छोरे द ड प्र ण कर ॥ सप पता
पुतृ तित ताका ला ॥ ले ठा स्यामति संध धिपा ला ॥ तब पार पदोन ता
करी सपति ॥ कीज्ञे कहू उपाइ रमापति ॥ अब कीबेर ईता सकता व
ज ॥ बेग हाहि तहरि र नैपकु चाव कु ॥ ५७ ॥ नै
भिन्न कहे स ने कु राजाना ॥ पुनर इनि वितै भयो सबधाना ॥ धनु ब
अ सोवा अर्धचंद्र सर ॥ बचन कहै तब पार्थ सौं हरि ॥ अर्धचंद्र सा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धेो तुमवाना ॥ शंकर जी तन सं कज प्रमाना ॥ पुनपारथप्रभु वचन विषाना ॥ हमरी लाज तुम हि भगवाना ॥ द्वैतधस्यो हरि षग गवरि माषा ॥ राषी लाज अनाथन नाथा ॥ धर्मसुत काप्रण पूरण कीनै ॥ अश्वमेध सुफल कर दीजै ॥ ५८ ॥
जैमिन ऊ कहै सुन जन्मेजय पति श्री पश्चिम ऐंद्र पाल पार पद बोल्यो तब सिर हरि जी भये कृपाल ॥ ६ ॥ गोवर्द्धन धार्‍यो जिः बल कर ॥ दीयो सो बल मरजन को हरि ॥ पारथ कृष्ण वचन सिर धारे ॥ उठि रन को धनुष टंकारे ॥ तीन लोक को कंपर रहा रसुन ॥ शब्द महा भय कारि धनुष गुनि ॥ की यो धि वीर सुधन्वे तहाँ ॥ हरि वचन दीया जैको सब वहा ॥ तब लिम सुधन्वे वान चलायो वेग धनुष गुन काटि गिरायो ॥ पश्चिम गोवर्द्धन बल धार्‍यो ॥ भगत सुधन्वे तोरण जो सो ॥ ६१ ॥

२२

जैमिन ऊ कहै सुन जन्मेजय पति तब गोवर्द्धन बल ता रभ गत जब ॥ पुन हरि वचन कहे पारथ पति ॥ मै तुम दीयो गोवर्द्धन बल शक्ति ॥ तिः बल को सुज भगत विडार्‍यो ॥ तोर धनुष गुन [illegible]न

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्वमेध

॥ जुद्धि २१ ॥

प्रजा सो ॥ पुन पारथ लागो हरि चरनन ॥ लाज हमारी तो हि स्याम
घन ॥ नृपति युधिष्ठिर ओर निहारऊ ॥ श्रीपति आपना विरद विचारऊ
अरजन करी बहुत मनुहारा ॥ भए प्रसंन कृपाल मुरारा ॥ १ ॥
कृष्ण कह्यो अरजुन सुनहु बल हम तुम के दीय ॥ जि: बल तो स्याम हय
धनुष आप सब पैवर सीय ॥ २ ॥ पारथ को ऐसा बल दीनो ॥ हा
कृपाल प्रभ सब दुख छीनो ॥ अंब्रत पूरण करी सेना पति ॥ लीये उठाइ
योधा सरब धाए ॥ आदि प्रद्युम्न सूर सेना सब ॥ भए सुचेत कुटी मख का
तब ॥ तै योजन सेना विस्तारा ॥ तिन मे मुख्य प्रद्युम्न विचारा ॥ हरि सुत ।
नाथक करी सभ सेना ॥ संख्या प्रगट कहत हो बैना ॥ दस सहस्र गज जम
तमद माते ॥ मेघ बर्न मेघ अंभ चुचाते ॥ ३ ॥ अश्व अयुत दस महा
बलसात अयुत रथ जान ॥ अरु पदात षट अयुत ले च लैया तात भग
वान ॥ ४ ॥ भयो प्रद्युम्न सुधन्वे सन्मुख ॥ घट सर मारे ही पे
धीर जुध ॥ हनन किते पाघे बलवांता ॥ मारे बहु हस्ती मय मंता ॥
बहुर अश्व रथ अरु सब रण गिरधर ॥ फिन महि ऊपरे सकल प्रलैकर
बहुर सुधन्वे बचन उचारे ॥ अति पराक्रम कीया तात मुरारी
नहि जीतो रस पहुँचे तुम मर पास्ता रासि जीर ॥ मन वच क्रम कपट सब विचारे ॥ ५ ॥
य ह जानत सभ कौर ॥ ६ ॥ जि: ति: राखी लाज तुम
इनधन जीत सको तुम नाही ॥ हम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सारथि यो धेरन मा हो || हम तो पहि चिंतै जान्यो मन || तुम को
दीयो सहाय बल भगवन || जुः बल सो जीतो सीय माता || रक्षक धन
षतो सो जगत ताता || अब तुम रघु लंक यो प्रकाश || हम हो पि
सो पुरुष के दासा || मूरति वंत कृत तुम रघुपुर || तुम रावण त
सहाइ गिरवरधर ७ || भगवन तव बल तुम रघुबीर जुः नंदन दू
सहाइ || अरु हम हरि को एक बल ठाठो होय रन मांझ || ८ ||
साध्व तहे हरि बानरे हमारा || पार रघु अपनो कर उसं भारा || पहु क
हि छाहि दीयो ततकाला || तीन बान अति ही विकराला || रघु सो म
त पार रघु भगवान को || ठहरा यो रघु वीच गगजन को || होय गयो र
थ पाप कसम भसेना || भ्रमत अकाश दुर्बोध न चेना || चक्र पवन
च डिम्भ मत अकाश || जैसे टूटी ततु कयो सा || धन्य धन्य कहि क
भ भगत को || अति प्रसंन्न हरि हो यह छवि बतसो || कृष्ण
कहे अरजन सुन उज वतुम बान बलाइ || तातें सिद्धि न हो वइ
हृदे अहं कृत भाइ || || भगत सु धन्वा रूप हमारा || को
हि राख्या उर प्रान अधारा || तातें मझ हि भ्रमाइ अकाशा || मुझ
बिन उनके अवरनि आसा || तुम जानत हो यो अपुने मन || हम
रे रघुपर स्वारथ भगवन || तव पार ब्रह्म हारे के प गलागा || करी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २२ ॥

अश्वमेध

दीन ताही पे अनुरागा ॥ भगत सुधन्वा अति बलवाना ॥ तुम नहीं जो
तस्कै भगवाना ॥ जुवकबर रक्षा करी हमारी ॥ पांडव है हरि शरणा
तिहारी ॥ ११ ॥ दो० ॥ तैसे रक्षा करउ प्रभ तुम त्रिभुवन के नाथ ॥ पां
डव प्रीक्षित पद्धानि कै कीजे मोहि सनाथ ॥ १२ ॥ चौ० ॥ प्रभ जी धर्म जु उ
रनिहारऊ ॥ करुणा करि कारज अनुसारऊ ॥ साचु कहो तुम सी
रवरधारी ॥ जौ नहीं रक्षा करउ हमारी ॥ तौ हम धनम बदेउ तजि
हाष्या ॥ आज्ञा करऊ करो साई नाथा ॥ पारथ हृदै भेटा यो अभि
माना ॥ वरूपे चल्यो रन को सवधाना ॥ पद्म करन को पुनि मन
नभपा ॥ निकट सुधन्व के चलि गयो ॥ भगत विजै प्रति वचन
वखाना ॥ सुनिहे श्रवन सभा भगवाना ॥ १३ ॥ दो० ॥ तौ लग तुम
जीता नहीं सुन अरजुन दै कान ॥ जौ लग शस्त्र गहै न हीं निज
कर श्री भगवान ॥ १४ ॥ चौ० ॥ तुम अरजुन निज भगत गुपाला
तैसे हम भी वक नन्दलाला ॥ भेद नहीं कछु भगतन के होये ॥ म
न वच क्रम मन निश्चै जानो जी प ॥ सुन्यो व तौ तप्रभाव तेनारी ॥ च
उत्साई रन सुहित तु धारी ॥ देख्यो नरपति को संग्रामा ॥ धो
सुधन्व पति को कहो भी मा ॥ छत्रधरम तु मोपि तचा ल्यो रन ॥ पु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

उकी यो सन्मुख हरि षतमन ॥ अवन चाला वऊ सरर सन्मुष हरि
मुकति मांगली नै इह अवसर ॥ १५ ॥ वऊ तप राक्रम तुम की
यो अवतनु अरविगु पाल ॥ कुल निस्तारयो सकल तुम मुकति
मागत तकाल ॥ १६ ॥ कहै सुधन्वा प्र
भावती सुन ॥ तो अवरन मानित जौ धनु वगुन ॥ त्र धरम म स
हि हानि होत तत बु ॥ का परम भयो लोग भाषहि सव ॥ मउ के मुक
ति दीन्हि अपुनी गति ॥ सभ विध जान प्रवीन रमापति ॥ यह तव च का
ति कृष्ण आज्ञा दई ॥ प्रभावती पुनि नउ तह को गई ॥ जन्म जो प्रकटी
जै भिनन पूति ॥ स चरु हृदै मिटाव ऊ मुन पति ॥ वल गोवर्द्धन
दीयो वि जे हरि ॥ कति वहु षंड नकी यो भगत सरि ॥ १७ ॥ सा
मी को सन्मुख लरै शेवक को नहीं योग ॥ यह हन सुधन्वै सम भवै
जू ज्यो है निहसै ग ॥ १८ ॥ ता ते यह हवि थिक है समझाव
ऊ ॥ हमरे हृदै सदेहि मिटाव ऊ ॥ जै मिनर षक रु णास्ति की जै
यह वतात मउ को कहि दीजे ॥ जै मुनि कहै सुन जनमे पाला ॥ त
व अरुण रन मी नंद लाला ॥ हास्या रुष्य मरु जन के रप्यवारि ॥ वैठे
भा इ कृष्णतिः अवसर ॥ तव हि सुधन्वा है सव धीना ॥ सरपो हर
रि को तन मन प्राना ॥ तव हि सुधन्वा के कहो हृदै धरि ॥ भ एम राहो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ७३ ॥

अश्वमेध

अरि के रषवारि प गिरधर ॥ १९ ॥ भगत कह्यो अपुने हृदे पा
रष पवन गोपाल ॥ आवत ही स्वारिथ भयो रषवैवे बात तत काल
र ॥ दोनो शत्रु हि परस्पर ॥ सन मुख ठाढे हो हो सस्त्र
कर ॥ मित्र भी वमन जा सो होइ ॥ शत्रु सो चाहि तु करै न कोई ॥
ताको पुनि शत्रु पहिचानउ ॥ मन वच क्रम मनि ऐसी जी पहिचानउ ॥
मित्र होइ के शत्रु करै हितु ॥ सोई मित्र जानो शत्रु चित ॥ मिलै श
त्रु सो मित्र जो जाइ जब ॥ ताको मित्र शत्रु जानउ तव ॥ वैठो जाइ शत्रु
कु संदन ॥ तातें भगत शत्रु नंदन नंदन ॥ २१ ॥ वैठो चढि रथ
वि जै के सन मुष सारथि होइ ॥ तातें भगत विचारयो मन उ शत्रु सम
सो इ ॥ २२ ॥ तौ हम मैं वेन ही करो पुहरन ॥ तो लागत है द
अधम रमपण ॥ जो रन मैं न हि कछु जनावे ॥ सो नर नरक जे न
गति पावे ॥ यह विचार जो प सनमुष भयो ॥ इन के अग्र भी आये च
लि गयो ॥ यह कह पावन पांडव के गिरधर ॥ जान्यो भगत ही ये निश्च
करि ॥ तातें अर्जुन कर चाहि हम री जाति ॥ प्रीति पांडव सो ही य च चतुर पाति
तातें कछु क्रोध मुष दिषावो ॥ हरि सन्मुष हे वान चलावो ॥ २३ ॥ यह वि
चार जो प करि चल्यो भगत कह्यो सवधान ॥ शत्रु रषवार जो चढ्यो ॥
अरि ते न वढवर जान ॥ २४ ॥ यह विचार करि सन्मुष गयो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

विद्यमान श्रीपति के भयो ॥ हरि सन मख वपुहि पाऊ जब बाना ॥ तब श्रीपति
मख वच्छन विधाना ॥ रषपते उतपति धरनि पर जाय बऊ ॥ है पदांत मख सं
ख वजाऊ ॥ हम पुन शंख वजाउं विजै सुन ॥ पांचजन्य की महा शंख धु
न ॥ पुनि भाषि वचन कहि भगत प्रति ॥ तुम हि शंख वजाइ मुद तिन अति
ऐसे दुंदुभ शब्द वजाव ऊ ॥ तीन लोक को घोष सुनाव ऊ ॥ २५ ॥
प्रथम हि सधु जदु रद वपै स्रुति धुनि शंख वजाइ ॥ पांचजन्य पुन अ
धर धर शंख वद दकी यो यदुराइ ॥ २६ ॥ दैव दत्र अमर रजै नव अ
वधल्यो ॥ शंख महा धुनि भगत उचार्यो ॥ सुनाके असुर जाहि हरि रही
नी ॥ सुर नर सन मुनि शंख धुनि कीनी ॥ तीन लोक धुनि सुनि त्रिवते
ऐ ॥ सव संग तीन वशंख वजाऐ ॥ दुंदुभ वजे अपार निशान
सुन धुनि लोग महाडर पाना ॥ शंख ककी प्रभ करत सनापा
प हरि श्री की नी पुदुनाप्य ॥ छत्र धरम सशीश जन सुपावै ॥ तीन लो
क की सृष्टि उपन्ना वै ॥ २७ ॥ दैउ परम गंभीर भजत को वीचार्यो
भगवान ॥ पारथु को धुजा पर वैठायो हनुमान ॥ २८ ॥ तब
असुर धर असुर रजन के रथपर ॥ तीन लोक के भार धर्यो हरि ॥ पांच
जन्य मुख कहि धरयो पुन ॥ तीन लोक जैकार भयो सुन ॥ इंद्र अरू
ले सुर सम भया ऐ ॥ चढि विवान सम नभ ठहराऐ ॥ श्रीपति पहि [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ १२५ ॥

अश्वमेध

श्रीधारी मन ॥ अब ह्वै गति पकूं चाउं भगत तन ॥ तब हुए मन महि
कह्यौ सुरनि प्रति ॥ जब होइ उं भगत अपुनी गति ॥ पुहुप वर्षि स
भ कर हु विविध सबु ॥ शेष कै कौ कर होइ सनाथ जवि ॥ २८ ॥ भो
गत उधारन के सम्भ मन महि करउ अनंद ॥ इंद भ शाब द ब जाव ज
ब होइ स्वर्ग कह्यौ नंदनंद ॥ २ ॥ न पति हैं संधु ज शब्द ब जाव त
गान परि चढ़ि कोतक उपजाव त ॥ डु हंदि शाव जहि व जंत्र महाधु
न ॥ कहीं बात न हीं कोऊ श्रवन सुन ॥ तब हुए वानी तौ पान जहा॥
प्या ॥ श्री भ सं ज्यो अति करपदुना प्या ॥ भाग चतुर्थवी चवान के
ब्रह्म तेज हरि धरयौ आन के ॥ काल तेज अति मंत्र मध्य सर ॥ राख्यौ
श्री गिरधर नि मंत्र करि ॥ बहुरि तेज ले दस अवतारा ॥ संपूरन स
र महि हरि धारा ॥ ३१ ॥ अग्र भाग फल के धरयौ अपुना तेज
गोपाल ॥ टहक न पांडु ब प्रीति हित ज तन करत नंद लाल ॥ ३
२ ॥ बहुरि तेज ले सम संसारा ॥ संपूरन सर महि हरि धा
रा ॥ बहुरि पुन्य द्वारा वति तेऊ ॥ ठौहराया सर महि हरि तेऊ ॥
आदि जान की सकृत तेऊ सब ॥ बहुरि राम अवतार पुन्य सब ॥
पुन पराक्रम बाल वेस कें ॥ विद्या वम भयाम य का शिभेस कें ॥ धज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दान इस्नान करम को ॥ वान मसो हरि अति सुधर्म को ॥ जैमिन
कहै सुन जनमेजे पति वर ॥ पांडव कीते तप ह अस्वमेध कीनौ हरि ॥ ३३
॥ दोहा ॥ सुज सुभ गत के केहे न कीते करम पांडव को काज ॥ भगत प्रता
प बडा वही जैन रखा प्रदु राज ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ [illegible] पिल गे वान अपारा
अति सुख मान नहदे जु मरारा ॥ जैमिन कहै सुन जनमेजे पति वर ॥ सरको
कीनौ बझत जतन हरि ॥ सुरगलोक मे लोक पिपोल हि ॥ रथ पर भा
र जुतो नंदलाल हि ॥ साइ प्यारे प्यासर मधु पूकुस तब ॥ सपहदीपन
बंध इभार सब ॥ बजरिब सब को बल सम ली नो ॥ ते सम तेजु बान मार
हि दीनो ॥ असथावर जंगम को भारा ॥ ते सम तेजु बिसाख मो ठारा
३५ ॥ दोहा ॥ इंद्र अमर मुनि सिद्ध रिष तिन को बल ठहराइ ॥ अब जु स
ते अनेक बल ते ऊ बान मदिती पोइ ॥ ३६ ॥ अपनी करु तो धारि आवा
ली ॥ अभिमंत्रि तको नौ ततकाली ॥ बान धनुष हरि दीनो पारथ
छा उझरन पुर बझ सम सवारथ ॥ हनऊ बान अनाज मझदीनी
अपने शब कको गति कीनी ॥ ले सा ध्यासर धनुष बाध जेजब ॥ सुब
पहूँ बबन कहे पारथ तब ॥ सुन अज सुधन्वे सीं सु तु मारा ॥ जौ न
कहो सर सो इक बारा ॥ सो तन न सपूपर है तब ऐसी ॥ बरसुना बतहै
कही तैसी ॥ ३७ ॥ प पवी ते जो ऊ का पहते ऊ ला गाहि सम मोहि ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

कहिपारथपइहवानसौं जौनकरटोअसरतोह ॥ ३८ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ वऊपसुधन्ववचनवषाना ॥ सुनलीजैपारथ्यदैकाना

पहतोतुमसांधोकरवाना ॥ जैनकरोंदेहूकपरमाना ॥ तोह

मसोंदेहोरससुसव ॥ जौनकरोसरदोइहूकअव ॥ तेहमको

अरजैनजीयसाथाहि ॥ तुमवलुदीयाजोवईननाथाहि ॥ जान

तहोअवभागभयेमऊ ॥ आपतिदीनीहेअजोतुऊ ॥ अवप्रसंन

भतेहेभुवनपति ॥ जानतहोमऊदेतअपनीजगति ॥ ३९ ॥ देउप

दोपितुमरवानमहिवलुरामअवतार ॥ वऊरकृष्णअवतारवल

तेपुनसरमहिधार ॥ ४० ॥ [illegible] ॥ वसुसकलकावलुदीनोपुन ॥

सोहेसरतोहिअरवाधनगुन ॥ एकवारपहवान ॥ तुमारा ॥

करिहोदोइहूकइकवारा ॥ अरुजोपहतुमरारथ्यस्वारथ्य ॥ तिः

आज्ञादीनीतुमप्रकारपा ॥ देवकहतसमझाहेनमपरि ॥ दीयोमहा

वलअरजनकोहरि ॥ नहीहाडेइहवेरभगतको ॥ पऊचावफिहरि

अपुनीजगतिके ॥ क्रोधतिपारथ्यवचनउचारा ॥ आवतहेसरभगत

तुमारा ॥ ४१ ॥ दो ॥ आवतहेपहविशाषमऊभगतहोहिसवधान

देषोकेसककरोतुमदेउदूकपहवान ॥ ४२ ॥ [illegible] ॥ जैमिनकहेसुन

जराजाना ॥ कसिअरजनहाओवहवाना ॥ प्रथमहिसरनभमा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रगगयो ॥ प्रलै शब्द भैकार भयो ॥ सुनत कंपत भयो धरन अ-
काश ॥ सुमेर कुबेर तुल्यो कैलाश ॥ लीन लोक मांहि परहर
भयो ॥ मघवा इंद्रासन तजि गयो ॥ सेसनाग ले सहित सबैयान भोरा
सागर स प्रसोष लीयो सारा ॥ कांपे षंड मंडल ब्रह्मंड ॥ सात दीप
पषप बीन नव षंड ॥ ४३ ॥ दो ॥ लोक चतुर्दश लोक धु सब सकापे
दिगपाल ॥ जब भर जनक सिमायो तीछन सर धर के राल ॥ ४४ ॥
चौ ॥ सुनियो गर्जित शब्द भगत जब ॥ बानक सकाजी प जान्यो
तब ॥ हृदे सुधन्वा हरषत भयो ॥ सब भक्त हरि आपनो कर लयो
भक्त को हरि कीनो [illegible] जन दासा ॥ दीनी भक्त संपत रनवासा ॥ भक्ता-
कुलन को कीनो काल त्यागना ॥ भक्ति देहि हरि स सुप्रमाना ॥ रघुराज कुम
सा भक्त मन मे ॥ अरजन यो धव चै जे अरन मे ॥ ते सब कौन न पठो।
जम धामा ॥ कृत तिन की पपमे पहकामा ॥ ४५ ॥ दो ॥ बीच गगन
के बानन को उपज्यो दिव्य प्रकाश ॥ ऊपर ते धर पर गिरयो उलटि कर
न को नास ॥ ४६ ॥ चौ ॥ चमतकार सर का अति भयो ॥ दिव्य आकार
धारति न लयो ॥ रत ते भगतवान पठदीनो ॥ नभ मग जा बी च टकुंडे।
कीनो ॥ भयो शब्द भैकार महा तब ॥ रवि शशि मंडल कांपे उ ज्या।
सब ॥ अमर भगत की उस्तुति करही ॥ पहदंड भगत मको उज्ज

८५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ७६ ॥

अश्वमेध

रही ॥ बानकुसुमकोमंडतकीनो ॥ ततछिनदोइटूककरिदीनो ॥ हरि
पारथ्यपहिवचनउचारा ॥ देषोविजेयहभगतहमारा ॥ ४७ ॥
सपततुमारीसत्यनहिकोऊ ॥ मनलागेबान ॥ श्रीपतिकेयहवचन
सुनपारथ्यचिंतामान ॥ ४८ ॥ अरजनहृदैव्याधिंतसमाना ॥ भ
एकुपालतवहिभगवाना ॥ अगभागपालहोतिजुसरको ॥ तेजु
ऊतेजहागिरवरधरको ॥ सौऊअर्द्धसरलगेभगतको ॥ सी
सकाटिपरेयाहरिगतिको ॥ शाबशाबदभएजेजैकारा ॥ पुहु
पवृष्टिसुरकरीअपारा ॥ बजेबजेत्रअनेतअपारा ॥ फरहरीधु
भगगनप्रकारा ॥ स्याअगमतापातालनिशाना ॥ बजतहरिआ
ताविधनाना ॥ ४९ ॥ चक्रसुदर्शनकोतवहिआज्ञाकरीगुपा
ल ॥ सीसउतारऊभगतकोमुकतहोइततिकाल ॥ ५० ॥ का
टोचक्रभगतकोसीसा ॥ जोतिसमानीमुषजगदीसा ॥ नाहिन
सीसपरयोधरनीपरि ॥ आइपरयोहरिचरनकवलतरि ॥ आइप
रयोमचरनहरिकीनो ॥ कुसुमउठाइहाथकरलीनो ॥ अपुनेश्री
चक्कोसिरकमलकर ॥ धन्यधन्यबऊकहतभएहरि ॥ महाप्रसन्न
भएगिरधरजब ॥ गदाबीचकहुरइसीसतब ॥ जोरदीयोपितवृ
गवरसनाहित ॥ ठाठाऊतोहमधुजेनपठित ॥ ५१ ॥ जोइप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

३५

श्रीअसि रुवे गही गोद हं सधु जराइ ॥ सौ सुकी यौ न प… य महि
व वचन कहे पुगटाइ ॥ ५२ ॥ जैमिन कहे
सुनहु भूवतीवर ॥ सुत सिरुलौ यौ हं सधु ज कर पर ॥ लौ गौ
रुदन करन विलपाता ॥ कत सुत करौ नि हम सौं वाता ॥ पतुस
नमुष बालौ भूकें नाही ॥ अस पायौ ही पार न माहीं ॥ सुष तेजो
ई प्रतं क्ताकौ भी ॥ तनु मस कल स्वकुरैलीनी ॥ छत्रधर मप्रीति
पालेयौ सव ही ॥ …न मर्दि पीहि न दीनी भवही ॥ काहे करउनाउ
तुम मोसौं ॥ बाल भूमात बुलावति तोसौं ॥ ५३ ॥ तो सुकौ पा
प्र पमै जुवति यही हृदै ठहरार ॥ हम पावहिं गे परम गति रन
दरसन पदु राइ ॥ ५४ ॥ मत तुम नृति बालक हे कारन
मऊ तु ऊदीनौ अग्नि प्रजारन ॥ हम तुम कौं वझ की योधकारा
मौ नौ प्यान ही वचन हमारा ॥ तुम ही ये हरि दरस … सने हा
तव लहु जस्यान ही तौ तुम देहा ॥ पिता पुत्र कौ तजि नाता म… वी
नौ तै लक डाह वीच तनु ऊ ॥ तातें हम सौं बालक नाही ॥ रू ठ रहे यौं
अपने मन माही ॥ ५५ ॥ रुदन करै वझ हे सधु ज सुत सिरु
कर परिधार ॥ हम सौं बाल रु तात अब वझ तलगाई बार ॥ ५६ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २२ ॥

अ अश्वमेध

५७ २२

पुनि जन्मेजय पराइ कहि जैमिनि सु
न हो अब वन कहहुं मधु जराइ तुम मृ[illegible]सनि र्षत ताते तस्वि र
१ ॥ सीस पुत्र कौ लै निज हाथा ॥ पुनि पुनि धार तब अपुने मा
था ॥ वज्र ललाट ते लाट कुहावत ॥ बज्र सीस लै अंग लगा
वत ॥ नृपति महा दुख करत विलापा ॥ मन मंह तिव [illegible] महा संता
पा ॥ बज्र कहे सुत तुम मेरो सीसा ॥ तेः अवसर का[illegible] जगदी
सा ॥ धन्य बुद्धि तुम री अभिरामा ॥ प्रथम सीस हरि की पोषु णा
मा ॥ सुनु राजा हव वनक हन्व ॥ अति गदगद चित भयो नरा
धिप ॥ २ ॥ सो सुधा दिन व गोद मांह हृदय महा दुखमान ॥ तेः अ
वसर प्राप्ति भय पासु रथम महा बलवान ॥ ३ ॥
कहें सुरर्ष सुन होव चतात ता ॥ तुम को उचित न हीं यह बाता ॥ म
त को सीस गोद मंह लेकर ॥ रुदन करत हो तुम इह अवसर ॥ क
न हरि सिर ले सीस लगावत ॥ कवहु लै सिर अंग कुहावत ॥ अव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सरु को हरि पद्दिप छदीजै ॥ यह कारज को विलम न कीजै ॥ श्रीःहरि
क्रौशव कमुं अभ्राता ॥ दीजै सिरु तिसके परिठनाता ॥ तुम ठाउरन
शाष शावद करि ॥ हम जु अहि गे सषा विजे तरि ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ भ्रातवे
रलेवा अवहि तिछत्री तकहि कहतउ ॥ चमसहतत पारष अवे यमपु
रका पक्रुचाउ ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ कहै हंसधु जसनज
सरष अव ॥ सीसमधनेकाउतस्या जव ॥ परन पंन्य भगतके
माषा ॥ चरनन तजे नहीं त्रिभुवन नाषा ॥ पुनि यह सीस चरनन त
जिके हरि ॥ आइव सो हमरे पाइन परि ॥ तो ते यह तप वंदित की
नो ॥ पाते सीस कृमत जदीनो ॥ नाम सुधन्य भगत धार या
अंत समे हरि पग तजि आयो ॥ तो ते माम नमा हचिंत भ्रात ॥ सत्य
कहत हो सुरष तो हि पृति ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ कृष्ण कहे
सुन अजुन पति जन मे तेसवधान ॥ सुरष कहे वचपि तासों ते
अव कहो विधान ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ सुरष कहत सुनहो व
चनाता ॥ तवहीं सिरु उतारु मुक्त भ्राता ॥ कीयाप्र ॥ मव सोहरि
पग पवरि ॥ कृष्णप ध्या सिरु तु मये हितु करि ॥ पठ्यो भगत के पवता
पगपरि सन ॥ की यो कता रष्पतु मरे दरसन ॥ अव पितमुकुंके
मा ज्ञादीजे [illegible] जसी तर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

७२

अश्वमेध

श्र

ली यों कर ॥ बढदी नो जहां रन ठाडे हरि ॥ जाइ पर्यो सिरु गोद म
रारी ॥ पुनि कर रूप र धार्यो गिरधारी ॥ ८ ॥ दू ॥ राख्यो सी सु ज ग
नक्रि बे स्या ज्ञा दे घनस्याम ॥ वज्जर मंगा बो गा तु ऊ ह्रि प्र र न क
रि संग्राम ॥ ॐ ॥ [illegible] ॥ कंह्नै जै भिन सुनन न पति वि
ध्याता ॥ सुरथ चले आज्ञा लेता ता ॥ रथ पुनि चढ़ि सनमुष र
नगा यो ॥ जदुपति भात तहां चलि भयो ॥ लीनी गदा कोप के हाथ पा
ड्डु कर रन हित तम रज्ञ न साथ्या ॥ जिन मास्यो रन मोहित म ऊभा ता
ता कों करे रोम वाहित तन ध्याता ॥ वज्र एक छुट पाति वचन व बाना
तु म ज्ञाति पर रपा चीभ गवाना ॥ एक भगत को पछु कीयो मन
एक भगत को घातु कीया रन ॥ ९ ॥ बुरान मानो कष्ट तु
म वि क्यो पांडवन न हाथ्य ॥ टहल करत हों दास [illegible] म प हथ पा
भुवन नाथ ॥ १९ ॥ चिंता मणि को डार दीयो हरि ॥ ताको व
द ले का चु ली यो कर ॥ धर्मराज हित यज्ञ प्रकारा ॥ हत्यो हरि
भगत तु भीत हमारा ॥ तुम तो अंत सु हीर गुपाला ॥ वत चर ग
ते तुम सी नंद लाला ॥ का च सा चु की या का चु पुन ॥ व लकी यो
हरि तुम हि पाल ग्यो ॥ तुम च पमु पाल न हद्व विचारयो ॥ न र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अव ५

दूषन शेवक नि जमारो || दे षऊ शेवक कौं हरि ज्ञाना || तुम
मोरा तुम बीच समाना || १२ || || सुन राजा व
चन सुरथ के सुनत हसे भगवान || पुनि पारथ प्रति बचन कहे
श्रीपति है सवधान || १३ || || करपदेव
सुरथ आयो || आन दुषी जीय महा रिसायो || महा पराक्रम
अति बलवाना || युद्ध करैं गा प्रले समाना || इन सौं अब तू नेक
रहि संग्रामा || रन तें जी चल ऊकर ऊंच आमा || इन कौं है बल
तीन अवर पुनि || वर नें सुनावत हा पारथ सुन || प्रण मैं ताय
हमा दिसु धर्मी || पुनि ब्रह्म न्या सकूत बटुक मी || इती पाव लम
ऊस त्य वचन मुष || रन सू रव लवंत नहीं दुष || १४ || || पुनि
तीसरो छत्री परम पवतीनों बलधार || चहुं आयो रन भ्रात दुख
सैना करै संघार || १५ || || व ऊरी तीन दुष हैं रन के तन || प्र
थम मैं भ्रात संघार भयो रन || दुष दूसरा ... ता पित माता || ती र
जो दुष विध नातीय भ्राता || युद्ध करैंगा अति त्रैकारा || दिष राजा ते
गा कैं भुपारा || आज हो दिन नहीं सन्मुष पाके || हम तुम दोनों
पाहू वाकें || दस सम्बतार विस्व बलमऊ कौ || आगें हीं दोनों सम तुम

२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २८ ॥

जुजिस्स

स्म

को ॥ सेनाको आज्ञादीजे सब ॥ सुरथ सोप संग्राम करे सब ॥ ४
मुनसुर तन मुख बचक हदीनानी बुद्धि पोल है ॥ १६ ॥ दो
होइ दुख भं जननंद लाल ॥ १७ ॥ सः रसिक वतहम रे रथ पर ॥ मे ब बचक ति भाष
गो रथ धरन कृपा कर ॥ हम को तह आपदा परी ॥ तह हम पाक ... ॥ ठहे
हरी ॥ तब मदिष्ट सब हे सब धाता ॥ म्हिका के उर ग्रीम गवाना ॥ तु
मकर सुरथ महत्व बल बाना ॥ हे गौतु छ तातहि विद्यमाना ॥ तै मनको कहि
सनकू चित्त बीपति ॥ वचनक हे पुनि कृपा विजै प्रति ॥ इन सम मजोध
नी त्रैलोगा ॥ सुन ऊक हो इह जन्म परपागा ॥ १८ ॥ छ्रीतिस
रथ कैसा जिके मन माहि की यो विचार ॥ इह सम बली नसबर मु
ऊर चापाको ऊ संसार ॥ १९ ॥ जै: स जे वध को चेत मई मन
साई सुरथ ठाडे दब ऊरन ॥ राम स राप रणाप एताको ॥ नपुवे
मा जुन जी तहि याको ॥ हम तुम ... च तन छाडि रन जाव हि ॥ क
हि वहि के समावि तावि ह ॥ करने प्रत प्रहु ब सेन सब ॥ पुडु क
रहि ग सुरथ सो प सब ॥ आ पु पोग हम तुम के ऐसे ॥ मोन
ले ऊकी जे कहि ते से ॥ प सहि जा स्फट कु के प्रा छे ॥ मन बचक म
जानऊ सब सांच ॥ २० ॥ जान ही भी जऊ आ जरन जान मरा
बऊ आव ॥ छाडि गान हो आजु तु म आति जी प मांत संताप ॥ २१

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दो॥ बडो योधा पऊ सुरथ महाबल॥ आजुन छांडे गात तऊ रहद्दल
तौं ते भाग चलऊ रहवारा॥ मानें लौं जौ तेव चन हमारा॥ प्रथम मेच
म्ले लरै रन संगा॥ तीन हीं रव लु पाके अंगा॥ याके मार लेहु म र
काई॥ ऐसे वचन कहे यदुराई॥ जे भिनक हे सुने हरा तीना॥ तव
हरि करी सेन सवधाना॥ पारथ के रथ पुहुंचो कजपाला॥ ले भाजे पा
छे तत काला॥ २२॥ दो॥ यों जन पाछे फेरे अरजुन अरु भगवान॥
रथ आरूढ है सुरथ एन आइ भयो सवधान॥ २३॥ चौ॥ सुरथ आ
इद बीआरन माहीं॥ हरि अरजुन दीनो रहना हीं॥ गर जसु रथ ते
व वचन उचारे॥ भाग गए कहा शत्रु हमारे॥ फिर रन हन नन कीं
यो भऊ भाता॥ तिसहि तन तो जाकरो रन घाता॥ कपि आव वराध भीज
रन गए॥ नहीं ढाढे शत्रु भऊ जमए॥ यहि न हि छत्र धर्म संग्रामा
रन तजि जाइ कर तन छल कामा॥ छत्री है के रन तें जो भागे॥ ता के क
लक ति लक भऊ पलागे॥ २४॥ दो॥ सुरथ सुने वै सेन के निठुर व
चन कथ क्रोध॥ रहते सेना दीन को देप र तन हि योध॥ २५॥
चौ॥ सैना तुम को करों न घाता॥ तिसहि हते मारस्याजि भ्राता॥ शत्रु
भ्रात भाग कह छगए॥ चम्म ऐक ल कौं तजि गए॥ सैना दुखी है अ
तदीना॥ पोजन हन न तस शक्ति अधीना॥ सुन वाली अरजुन ता

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ८० ॥

अश्वमेध

की सैना ॥ कतिरे सुरथक हो कर वैना ॥ जो कछु बल है देह तुमारे ॥
युद्ध करउ रन सो पहमारे ॥ जो हम सके तेम जी तेले पो सब ॥ या कि ब
हु संग्राम करत तव ॥ २६ ॥ दोहा ॥ मरु जो हम जी त्यो तु उहि रन माहि क
रि संग्राम ॥ कहि हके सहु कत करो महन सत्र कौ काम ॥ २७ ॥ चौपाई ॥
जैमिनि कहे सुन जनमेजय कौ ना ॥ तव सेनापति वचन
वषाना ॥ लीयो धनुष बकर सम नम ब स्रायो ॥ ईपत्र सपुत्र मे पहठहु
रायो ॥ व ढ़ शत्रु सावत कर जो लो ॥ मार लेउ सेना सुर तो लो ॥ पाछे
रहे शत्रु दानो जव ॥ फो नर है नमार लेउ तव ॥ पचि पुनि जो इद्र बलि
नम शाला ॥ सुरपुर मे [illegible] वा म सुपि पाला ॥ सात दीप व बध वीनव
बंठा ॥ तीन लोक चौदह ब्रह्मंडा ॥ २८ ॥ दोहा ॥ दू उनै कार कहा कपे
राघव से नही कोइ ॥ हनन की यो म उठ भीत को शत्रु हमारे होइ ॥
२९ ॥ चौपाई ॥ नही को ऊ ऐसो वलवाना ॥ तीन लोक मति सु र मे धी
ना ॥ तन्मो नही गरम ते को ऊ ॥ राघव भीत शत्रु म उठो ऊ ॥ प्रथ
म करो समर मे नसे घारा ॥ पाछे कर हो शत्रु प्रहारा ॥ पहि विचार
कर मन सरल पो ॥ क्रोधत हे रन समन म पम पो ॥ ले कर गदा
परयो सेना मधि ॥ कै व्याम हा भ्रात दु बगद गद ॥ सैन पकार दह
दस करि डारी ॥ सन्मुख मन पो तात गोरधारी ॥ ३० ॥ दोहा ॥ भज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गहि धीर धरत तात को मार गव यो अकाश ॥ नभ मृग मृग मधुरि
नी गौर स्यो मृ रह भयो भिरास ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ पुनि नव यौवना सह
त साप्या ॥ सुन्यो बभ घोध नृप लै ता प्या ॥ सुत सम मे तम उर छतित
त काला ॥ पुनि आयो दानव आनै शाला ॥ त त छिन तस हित पपा
ल पठा यो ॥ पुनि नैकरन जसन मख चलि आयो ॥ कर नप तेको ध
र नप द्वारयो अति विकुल मृर्छित करि डारयो ॥ पुनि पद्युमन भयो अस
वधाना ॥ बलि आयो रन को चन्दि माना ॥ पकरयो वज्र रसुर सपम
धु मन को ॥ देख्यो वता इपिता भगवान को ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ अवत उधारन
के निभित हपसुत हन्यो असुर एक ॥ छूटत ही असुर एक ते है गए बि
शिव अनेक ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ तब हित सुर पकरण सुस भोरयो ॥ सभस
र को बड नकथ डारयो ॥ वज्र रसुर यसर एकनि कारयो ॥ कर नप मा
न तान कस भारयो ॥ महा शबद मे कारी कीनो ॥ वड रोश लोवा नप
ढ दीनो ॥ तेऊ तस रसुर गदा कर धारी ॥ पयो वीच सभ सै नूम जारी
त लीको अ गनि जरा वति जे से ॥ कीनी चमृ विदारन तेसे ॥ कन हू
क कृटिक रवगतो रे ॥ किन हूके मस्तक मुखकोरे ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ वज्र
तिरप रे तन तु घात ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ जाको लागे गदा कीर
नते सेना को ॥ ततु भयो ॥ पाजनतीनप हार तग पो ॥ आग
॥ रथ मसरु डपा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥१८१॥

अश्वमेध

रथ अरु भगवन ॥ पारथ देखत भयो सुरथ को ॥ आवत मारत है र
गे रथ को ॥ तब गिरवरधर बचन उचारे ॥ सुन ले पारथ बात कहु
मारे ॥ हम तुम आइ छुपत डर जाके ॥ देख अप्राक्रम है अति ताके ॥
कीजे युद्ध होइ रन तत पर ॥ अब र उपाइ न को इह अवसर ॥ २६
॥ कृस्न कहे आयो सुरथ देख बिजे रन माहि ॥ अब सनमुख बहे
जल पहि भाग फकूट जनाहि ॥ २७ ॥ क्रोध पति है व वसुरथ पु
कहत तब ॥ भाग कहा जाव ऊ कृस्न पारथ अब ॥ तुम हा हनन को
पा म्रग भीता ॥ अब हम तु[illegible] करो रन घाता ॥ भाग पार न तजि छ
चल जाया ॥ अब हम तुम [illegible] भेले कर पापा ॥ यह कहि सुरथ ध
नुष कर लया ॥ क्रोध त सर बरषावत भया ॥ चतरमास के जलध
र जैसे ॥ वर्षा करी सरन को तेसे ॥ बेधपति कीया कृस्न अरजन तन
क्रोध तबहि जे सनमुख बरन ॥ २८ ॥ सहस बान धारयो धनुष बमारत
न हदद पसाइ ॥ छाडे सनमुख सुरथ के हीए क्षिमर पदुराइ ॥ २९
॥ धनु जाप ताकन अपु बिडारे ॥ छिन महि टूक टूक कर डारे ॥ ब
ऊ रा सुरथ पाँच सर लीने ॥ अरजनन के सनमुख बपछ दीने ॥ पारथ
कोगुन धनुष बक नरायो ॥ पुन पाडव के रथ [illegible] माया ॥ चक्र कुला ह
ल फिर ती [illegible] धनुष ते के रथ ते से ॥ उत र पर रथ चक्र क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सकर ॥ भ्रमत तिनेरहे जतनन कीने हरि ॥ पकरि रघु के रघु को बलवान
हि कै नं नैक भ्रमै विधनाना ॥ ४० ॥ दोहा ॥ रघु पद पर वैठ धीर हरि तीन र
लोक कौ भोर ॥ तौ मर रघु धार रघु भ्रमण ते लागे भ्रमण अपार ॥ ४१ ॥
रहे न भ्रमण ते रघुपति: अवसर ॥ कीने व ऊर उपाइ गरव धर
अति अचर जे मन न भ ऐ गुपाला ॥ ऊधति हे पार रघुपति: कौला ॥ व लक
र च कौ गा ठ भ्रे अ माही ॥ तौ नर हि धार घु भ्रमण त ताही ॥ क ये अनेक
जतन बलवाना ॥ तौ न भ्रमण ते रघु ठहराना ॥ उपमा सुर रघु अपा
र भई तव ॥ धन्य धन्य रन न सुहि भाव हि सव ॥ जे भिन के हे सन कुभे
पाला ॥ सुर जन प्रति वाले नंदलाला ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ कहा करा हम व तै
सनर घु ठा ज न ही हो इ ॥ जे मह म वैठे धारि व ल भ्रमै अधि कतिम स
इ ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ देव अपार रघु सुर पमहा वल ॥ रघु न हटि के भ्रमण
ते रुकु पल ॥ सो हम कीने जतन अपारा ॥ राख्यौ भवन चतुरदश भी
रा ॥ तीनौ लोक राखे ति: ऊपर ॥ भ्रमै अधिक रघु हि के नभ पर
भी ताडु व सुर सुर घु चलाया ॥ तौ तै से रघु हि भ माया ॥ कृ द्वि ति
ति मा स्यौ कसि वाना ॥ अज हूं न ही र घु भे अठ हराना ॥ व हु ठा र
ठा हे सुर पक हितु ज ॥ पका व ऊत उपचार की प्रेम सुज ॥ ४४ ॥ दोहा
रघु समेत सुर सुर पको लेग एज गान उठाइ ॥ पद्र स्यौ पवन सु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥१८१॥

अस्वमेध

रघुपति वन मध्य मंदिर पुठ हत राइ॥ ४५॥ चै॥ कृष्ण सवे जे ठाढे धरनीप
ए॥ नमत ते करे स्तुति रघुवर आसर॥ वे ए तल ता हूत द्रुम जैसे॥ सरनि
कोंप हरि वार रघु ते से॥ वेध ते कृष्ण अर जन पुनि॥ दुषित मये श्रति
ही यकाल गन॥ मेघ रीति वरषा वत बाना॥ तव ति की ये पाइ रघुप
गवाना॥ सुर निगम सति कीने हरि वार रघु॥ रह्यो ननि ते पद पति मं
म गारघु॥ सुर रघु गगन ते वान चलावे॥ जल थर जिम वाहन वर
खावे॥ ४६॥ दो॥ एक मन मेर पुधर न पर मवर दे हड बवान॥ ब
जै गिरा वज धरन रजन कहत मम भगवान॥ ४७॥ सो॥ सौ सरन म
ए शवि जप ठाया॥ सुर रघुपति हत र पृथर न गिरा या॥ पुहुकर नव
नल गावर स्पर॥ कृष्ण विचारु की या तिः अवसर॥ मत हम सरा रघु
गगन उठावे॥ वऊर उतान मवी च मन सा वे॥ हमको कठन वन ते त
ववाता॥ पहु विचारु की या जगताता॥ कृष्ण तह हनवंत बुलाया
वा रघु की धुज पर वैठाया॥ रघु को बांध पहुँ के सा प्या॥ भौ रु त्रि
लोक धारस्या पदुनाथ्या॥ ४८॥ दो॥ रघु हनवंत की पुछ मां बांध ली
यो ततकाल॥ तीन लोक को भार रघु नर पधर धस्यो गुपाल॥ ४९॥
॥ चौ॥ रघु के च क्रधरनि महि दीने॥ हरि मरु वे जे जतन व जकीने
पहु उपाइ कों गोगिर धर जब॥ मिट गया मन मान ते रघुपत व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जैमिन कहै सुन जन्मेजय नृपति तब ॥ आर जनम ऐसो समर नम पर सब ॥ धन्य
धन्य मुख बकै हैं सूरथ वल ॥ दुजधर मराद्वास न मुख दल ॥ मम मो
तेज वरषु रहे हिंग गयौ ॥ नीर बसूरथ क्रोधत तीय भयौ ॥ रथ कौ क
रसों पकर उठायौ ॥ मुष ते क्रोध वचन प्रगटायौ ॥ ५ ॥ जहां
कहां गारोत हां हरि हेन वतसमत ॥ मन वचकरम यापर पनु जैवहोक
तातनिकेत ॥ ६ ॥ गेंद करसौ कौ अब लत ते जैसे ॥ रथ को लीयौ
सुरथ कर तैसे ॥ पारथ सौं पुन वचन कहै तब ॥ जहां मा बात हार
भुजा रेखव ॥ जारों कहां उदधम समव है ॥ नेक सजन है तहां तेक व
ही ॥ कहूं तौ पठवौं हहस्तनपुर ॥ दर्श नुपर सजनपति युधिष्ठिर
तहां कहै गांधमि जतु नृपति ॥ मम सुध न आर भ्रात मोपा कैत ॥ कह स्नायो
तुम व ऊं सुकाजा ॥ मम सुधि हिराइस हति यदुराजा ॥ ७ ॥ ऊरोक
लोक सुमर पर कै सत सम भ्राता त ॥ कहां तौ पठवों पम पीर पतु मस
हित गुपाल ॥ ८ ॥ कहां तौ पठवों मधम काशा ॥ ईस्य तर वन
करो मनिपासा ॥ जैमिन कहै सुन जन्मेजय नृपति तब ॥ ऐसे सुरथ वच
न भाषजव ॥ सुन पारथ मति क्रोध भयौ मन ॥ लीयौ धनष बान सों
सों भगवन ॥ पांच बान तसन मुष कसि मारे ॥ शब्द इसुरथ केहदे प
तारे ॥ तन व्याकुल करधर न सारा पौ ॥ मतक भयौ सुरथ मसरह्या

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५८२

अश्वमेध

यो॥ मृतकमपोत्रजनजान्यौजीय॥ काटौमए कासिरु मनसा
कीय॥५४॥ एकमहरजितुलहिमषधरनीपरयो म्रुवत उ
ठाधनषमरुवानलेरन महिसुर परसुचेत॥५५॥ बचु
नकहितत पसुरथवि जैपति॥ माजुकरोतु मराय श्रीहत तुमरन
कीपहतनमुजभीती॥ अवरुमकरैताहितनघाता॥ विद्यमानहु
एकेतुमरातनु॥ अवहीनासुकरौदेवअरन॥ तुमरेरथपपरपुर
षपुरीतनु॥ वैहोहसारथीमुद्दितमन॥ पद्यपिकरतसहाइ तु
मारी॥ पांडवपनुलीपगिरधारी॥ पारथपुद्धकरउरनआइ
परनकीघाचौवीसमोध्याइ॥५६॥ [illegible]

५७ २४

जेमिनुकहेसुनजराजाना॥ सुरथविजैप्रतिवचनवषाना॥ प्रथ
महिसपकररहेहमतुमअव॥ विद्यमानहुएपुद्धकरहितव
प्रथमेसपुसुरथकीनीसुन॥ जौनहिजीतौजाहिफाल्गुन॥ तौ
हतनपातकलागहिमुउ॥ वरनसुनावतहोपारथतुअ॥ जोहित
वतीरथीकेकर॥ तनभोजननलेवेअघाइनर॥ पनजबतौजोहत
नरहुइ॥ वहहोकनककचरावतिसाई॥१॥ दानकरतजोबज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ईम तगर हम भोजन जु खाइ ॥ ब्राह्मण गो रस वेच कै धन लेवै उपजा
इ ॥ २ ॥ चौ० ॥ शास्त्र वेद निंदत मानै जोई ॥ मित्र द्रोह कर है पुनि सोई
लघु गुरु रीष कै सम जोई नर ॥ निरखै सविता चंद्र प्रभ अरु ॥ जो अ
वह मन नाहिं तन जीतें तुरु ॥ इन पापन के दो बल लगे मरु ॥ व ऊ राक
ही स पत पार ष्पत वें ॥ जो हम सु रष्पन ना सु करे सब ॥ तो मरु
कु पातक यह लागै ॥ जो मरु तें सब पह हप्र ज्ञाने ॥ जो इ द्रुम
लता छेदन करई ॥ जो को ऊ ब्रत सब वर कै हरई ॥ २ ॥ दो० ॥ जाइ
त्रिवार षस लल तट जो को ऊ वर जुरि रहाइ ॥ व ऊ र जोई यह कंत
करै प्रग सो धेनु उठाइ ॥ ४ ॥ चौ० ॥ जो पति जानन कन्या का कौ वर ॥ दै
का एही मैरु तन मसाधु नर ॥ छत्री है कै दि जय पठावे ॥ तीर्थ पात्र वरे
जि रहावे ॥ जो उन कै लवष कौ संतापा ॥ तुरु हिन जीतो लागे पापा ॥ स
र्ष्प विजे यह सपति परस्पर ॥ कीनी विद्यमान वे हठ हप ॥ रन मह हिमए
दी ऊ सव धाना ॥ प्रष्प मेरु र्ष्प चला यो वाना ॥ लीनी छाइ पवि जे की सेर
ना ॥ सो गति कहा परति नहीं वना ॥ ५ ॥ दो० ॥ पार प मारे वान पुन चम
सेरु र्ष्प की वीच ॥ हे गौ र्ष्प पाय कस मर रम ई सभन की मीच ॥ ६ ॥ चौ० ॥ क
वध सुध न्यौ काति अवसर ॥ उठत भयो रन मांह क्रोध कर ॥ उत उत दु
हु दिशा भुजा चलावत ॥ चम्म चिजे की धर न उठावत ॥ इंद्र वज्र का तातै

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

न

ही३

रवतजिम ॥ कबंधमु जालाग तस्सूरनतिम ॥ गारहे है केद सरे आप
र ॥ सेनासमलपटाईम पर ॥ चतुरंगनिसेनाबजमारी ॥ कबंधमगति
केसकलसंघारी ॥ ७ ॥ दो० ॥ बजरसरथसेनमरुबमयो क्रोधसेअतिधा
र ॥ आवतहमरेवानअवपारथआपुसभार ॥ चौ० ॥ सरथनिकास्रो
संघवातव ॥ अभिमंत्रितकरिपठेदीनोजब ॥ सेनामद्धपगएअतिब
लकरि ॥ महाभयानकसंघरूपधरि ॥ गजतुरगनहयपायकबजमारे
फारकरररथतारथविडारे ॥ पारथसेनमईमरउजेसे ॥ बचेसेसरते
कऊकेसे ॥ पारथरथपाछेचलिगयो ॥ बजेडरपजीयबहूलमयो ॥ म
धतकछुनकहेगोपाला ॥ मानधारबेठेतिःकाला ॥ ८ ॥ दो० ॥ भगतसुध
न्यकेकबंधसेनाहनीअपार ॥ बजरसरथकेसंघसरअस्त्रगतकी
यसंघार ॥ ९ ॥ चौ० ॥ ठाडेविजेहरारअपुनोबल ॥ सूरथशावदगंभी
रकरतदल ॥ पारथलागोपगणीरधारी ॥ रक्षाकीजेकुसहमारी ॥
ककुवनुरहोनहमरेतनमे ॥ केसमुद्धकरोअवरनमे ॥ हमतोबे
लोहाराइहअवसर ॥ रक्षाहमरीकीजेरनहरि ॥ कमलापतितबबचन
उचारे ॥ अरजनअतिअभिमानतुमारे ॥ तुमतोनिजकेआपहराबऊ
सप्रकरतअहंकारबडाबऊ ॥ ११ ॥ दो० ॥ मेनहीजीतोयाकहोतातेम
यानकाजु ॥ जिः मेहेतहो हमनहीजहहमनहहमलाज ॥ १२ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सपतकर ततव मैभा थ्पामुष ॥ भईनजम्तिसहयो तनस्रतिदुष ॥ हमक
हते जगहेत ततहतव ॥ मैकहते ऐ कोन हेत ततव ॥ हम तो सम घट मे वसि
यासम ॥ हर्षसोगनाहिन व्यापत हम ॥ प्रथम मै तुम सु हैकार वडा व
त ॥ पाछे आपने जीय पहु ता वत्ति ॥ तुमरी सपत परी तुम ही पर ॥ ठाअे
रन के वीच हारि कर ॥ हम तुम रे रथ वर सवधाना ॥ उन के हद वीच ठहरा
ना ॥ १३ ॥ सकल ठोर मे जु वास है तुम जानो एक माहि ॥ चार रूप अवधा
र के रथ वै ठा हो ताहि ॥ १४ ॥ धर्मराज व हसु धन हो जावत ॥ तुम को स
पना है गवा है चाहत ॥ नहि जानत हम को तुं पाहो ॥ धर्म जु को पहसु धक हु
नाही ॥ तीन सु रूप उ हम पाेध ॥ एक सरूप तुम अरे रथ वैठ ॥ सकै
ल जगत माहि वास हमारा ॥ घट घट वैठे अनेक प्रकारा ॥ हद से रथ के
हमरा वासा ॥ तुमरी टहल करो जु मदासा ॥ पांडव को डुव सहिन सको
मन ॥ ऐसे वचन कहत वभगवान ॥ १५ ॥ [illegible] कृष्ण
कहे ऐसे वचन सुन जनमेजे राज ॥ पारथ हरि चरनन पर सौ प्रावृषि
रद की लाज ॥ १६ ॥ कव धसु धन्वे के सेना जव ॥ है गे रथ पायक
मारे सव ॥ वजे रिसु रथ परन सेना मारी ॥ रक्षा कर हरि गिरधर धारी
सुरथ महा वलन सर तिविकराला ॥ तु जवन हमरा को न ग पाला ॥ पार
थ पहव च भाषे हरि ए प्रति ॥ पुनि मा यो रन सुरथ के जु धयु ति ॥ पांचवा

८८

अश्वमेध

नमारे अर्जुन प्रति ॥ भैकरी विकराल पैनग्रंति ॥ पांडव कौ गुन ध
नुष जराया ॥ वि जे चाप गुन अव र चढाया ॥ १७ ॥ कौ पर एक सौ सा
ठ सर पार्थ दीनचलाइ ॥ सर लागे उर सम्र प कै धरन पस्यौ र
ल पटाइ ॥ १८ ॥ अर्जुन कौ प्रिय बहु गत वधारस्यौ ॥ भुजा सर
प की कौ कट ठा रस्यौ ॥ काटी भुजा व जे के सन्मुख ॥ चली दौ पा अर्ज
न कै अति दुष ॥ जै भनु कहै सुन जन्मेजय नृपति ॥ द्वौधर्म सु
र पस्सरा अति ॥ श्रीपति कह्यौ सुन जन्म वपारषप ॥ रन चली पै
सै सपु रुषार्थ ॥ उनकी भुजा दाहिन भीराई ॥ वैरी के सन मुषा
चलि आई ॥ जाइन परी भुजा रथ कौ ॥ सन्मुष चली पुट्ठ मनंबौ
॥ १९ ॥ वजपैसु र पस्सरा स वल सन मुख भया दरसाइ ॥
भुज काटी जे नैन हि अधिक पुद्धवितचाइ ॥ २ ॥ सुर पगाह
त व गदा काम कर ॥ कह्यौ व जै कैति छ कौधकर ॥ भागा कहा ज
न अव मजत ॥ भाता वैरले उअव तजते ॥ उत री भुजा नैकु न ही
डस्यौ ॥ अव हीर न तु मराहत कस्यौ ॥ सैन्या वी च पस्यौ कै धु ति स
ति ॥ गदा प्रहार कर तसर न प्रति ॥ एक गदा की चोट प्रहारे ॥ स
हस्र मद दुरद [illegible] रजव ॥ सौर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

८न

हि सहं सदोर पखार पतव ॥ २१ ॥ दो ॥ गदा तीसरी जब हत
नी अस सहित असवार ॥ आपुत ते कचूरन कौ योकटतन
लागी बार ॥ २२ ॥ दो ॥ गदा चतुरथी सों पदांत तव ॥ चूरनक
रठारे रन मो सव ॥ गदा पांचमी चोट प्रहारी ॥ तिन सौं सेना
सकल संघारी ॥ छठमी गदा हनी भगवन कौ ॥ मारत त्रास भ
पौन हा मनन कौ ॥ जे भनु कहे सनजु व पवी पति ॥ अरजन के
जो य क्रोध मपा अति ॥ गदा प्रहार देव हरि तन पर ॥ पारथ
उ थो महा रिसाइ कए ॥ वानन की वर्षा वजु कीनी ॥ उत तेस
रथ गदा कर लीनी ॥ २३ ॥ दो ॥ वानन की वर्षा करी पारथ हद दरि
सा इ ॥ सव सर काटे गदा सों तात हि सधु तराइ ॥ २४ ॥ दो ॥
गदा मारि न श करन ॥ अभि उठा त जारत सेना गन ॥ सुरथ
रा नति है त ए तैसे ॥ सुरथ पजारत सैना तैसे ॥ वहि तिज
हा वि दूलित तन ॥ कौनो वजुध प्रण म स्याम घन ॥ पारथ प्रिया म
स के संग्रामा ॥ हमरी लाज राख घन स्यामा ॥ अव हम करन
सा जोना ॥ विन स्याम अरजन को अभिमाना ॥ जे भनु कहे सत जु
पाला ॥ दी पावि ते कवलु ने दलों ला ॥ तव गैर वर धरम एक
जे को अपनी करु तो धार ॥ २५ ॥ दो ॥ कमदी पावलु वि
अर तन के रथ [illegible] भवन चतु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ईं प्रकार ॥ २६ ॥ पारथ कों आज्ञा दीनी हरि ॥ करउ जग्य उछ्छव तत
दिन तीत उजआर ॥ दै के सीस अरजन मारे सर ॥ बेधे सो सर रथ सो
स्याधरनी वरे ॥ काटी सुरथ की बाम भुजा पुन ॥ चली भुजा सनमु
परन अरजन ॥ बउरि सुरथ तब बचन बखाना ॥ ते छत्रि ए पार
पसविधाना ॥ तुम काटी दो भुजा हमारी ॥ हम तुम देउ अस हाडु
हमारी ॥ बउरि सुरथ बच कहे कुछत्रि प्रति ॥ अरजन के स्यार चितुम
श्रीपति ॥ २७ ॥ आजु निछा उवि जे कोसन न अवत्रे भवन तात ॥
मारो गारण युद्ध करि वेर लेउ गा भ्रात ॥ २८ ॥ अरजन को अ
वनासु करो तन ॥ देखो कैसे राखउ भगवन ॥ ऐसे बच कहि तिसर ।
परि सा धा ॥ पारथ के सनमुख चलि आधा ॥ रथ को लोधा उठाइ
सीस परि ॥ अति दुख पावि तै साहित हरि ॥ पुनि अरजन साधे
नी वाना ॥ आज्ञा दीनी श्री भगवाना ॥ कृष्ण आपना बलु दीनो सब ॥
है के सीस सर हनें विजे तव ॥ लागे सुरथ के हृदे सा तसर ॥ बिहुल
हे गिर परयो धरनि पर ॥ २९ ॥ एक सर सो काटे चरन दे हृदे
सरे बान ॥ यह गति कीनी सुरथ की आज्ञा सो भगवान ॥ ३० ॥
पुन सनमुख भयो सर रस्ट रथ परन ॥ आगे चल्यो घसीट अपतन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कहे कृपासों वचन तिः अवसर ॥ कौन मारसों कौन जुरि न हरि ॥ प
हव धव सुनि हरषि भए कृपाला ॥ चक्र सुदर्शन सों नंद लाला ॥ आज्ञा
करत भए जगदीसा ॥ काटि जु वेग असुर पग कोसी सा ॥ कटी सी स
हरि पग लपटाया ॥ तत्व कुसुम सब बीच समायो ॥ सो सुरुप धरि नभ
को जगतात्ता ॥ जहाँ हेत आगे सिर नाता ॥ २१ ॥ दो० ॥ कबंध सुर प
के बहु रिसेना हनी अपार ॥ हनै विराना आपु नाहि गावन नेहे
संभार ॥ २२ ॥ चौ० ॥ जैसे वाढे वन तृण जोरे ॥ तैसे सेना को कबंधो
पुहारे ॥ सो सुर हत तन नृभ जाय वलावे ॥ मलेकाल के समेट पा
वे ॥ करी चमू चतुरंग निघाता सो सुर हत अचरज की वाता ॥ अ
रजन कहो सुन जु नंदनंदन ॥ कबंध करी समचमू निकंदन ॥
सिर बिनु कबंध सुन्यो न कदाचितु रण महि करै प्रतापु रमापति
पहब्र तात हम कों कहि दीजे ॥ श्रीपति भाउ परकरूणा कीजे
२३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दो० ॥ श्रीपति कहि निरवधु जु कबं
ध मजीत की ओर ॥ सिर बिनु छत्र दिखाव ईधन्य सुर सिरमोर
२४ ॥ चौ० ॥ इक तात तुम छत्री सुरावर ॥ प्रथम हार वैठो तर वर तर
देष अपार चमू जानु हमारा ॥ सिर बिनु करत फिरत संघारा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥१८८॥

भागवतमेध

पुनिरस॥

मुक्ति समै भी सरूप सोच्चरन न पर ॥ धन्य भगतई कै इह अवसर ॥ ७
नि पारष्य हृदै के पग लागा ॥ विनती करी हीये अनुरागा ॥ सूर सु
न्या भगत जु पाला ॥ ताका कूबंध महा विकराला ॥ दिषरावत अति त्रा
सु विशाला ॥ देषी यत प्रगट प्रलै के कीला ॥ ३५ ॥ ॥ प्रलै समै त्रिम
उमापति शंभु गदेसि समार ॥ तिम कवंध इह भगत के सेना करी
संघार ॥ ३६ ॥ ॥ पारष्य के मन ते दीन देष हृदै ॥ भये कृपाल कृष्न
तिः अवसर ॥ चक्र सुदर्शन को नंद लाला ॥ आज्ञा करत भए तिः काला
वग कबंध की भुज जाउ तारउ ॥ सैना का संकट भर वारउ ॥ चक्र कबं
ध की भुज जाउ तारी ॥ तत छिन काटि धरनि पर डारी ॥ जै जै कार शब्द उ
पजारन ॥ वरषत कुसुम देव हरषित मन ॥ जै जै वाणी होत भई
नभ ॥ पारष्य जी पतेवंत गाई सभ ॥ ३७ ॥ ॥ सूर तन हृदै पग लागा
ताके कीने वडे तप्रणाम ॥ इन भगतन के सिरदो ऊ मस कडे जे घन
स्याम ॥ ३८ ॥ ॥ सूर तन कहे सुनउ जग ताता ॥ मसूक कोडे उस सी
दउ अनीता ॥ रुष्य कोधु जे को सिबर वना वा ॥ शत्रु सी सलो गन
दूवरावा ॥ इन दोनो मसऊ वडे डुबदीनो ॥ महाबाधि महा क्षति तरनो ।
कीनो ॥ कलि पवन पद्य [illegible] सव ॥ महा क्षति तक रैहनी सैन पम ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

इनमारे हमरे वज्रयोधा ॥ अंतपर्पंत तज्यो न ही क्रोधा ॥ इनके सिर
नदि बाचन योगा ॥ हमकौं इन दीनौ वज्र सोगा ॥ ३५ ॥ दो० ॥ इन
के मस्तक धुजा धरि सम लोग न छ्व बराउं ॥ ऐसे योध हतकौ ऐंज
ग समद्धि सुजस वढाउं ॥ श्री भगवानोवाच ॥ चौ० ॥ अरजुन प्रति
हरि वचन उचारे ॥ यह द्रोनादि जभगत हमारे ॥ दैउन तुम को
इनके सीसा ॥ यह द्रोना सेवक जगदीसा ॥ महा सूरपोध बल
वाना ॥ छत्र धरम त्रैलोग निधाना ॥ इनके बल समान न हा कौ
ई ॥ ३९ तम भविष्य माहि न हि होई ॥ तिन तो महा परम दुख पायो ॥
तव हमारे वीच समायो ॥ इनके सीस सुनरु री माहि ॥ जरो गंगा
जल वीच तहां ही ॥ ४१ ॥ अरजुनोवाच ॥ चौ० ॥ ऐसे तुम रे ने
जभगत अति प्रीतम घनस्याम ॥ तिनके सीस मंगाइ हरि छम
न: करै प्रनाम ॥ ४२ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ दो० ॥ जै भन्न कहे सुन अ
भूपति वर ॥ नम ते सीस मंगाइ लीए हरि ॥ छिन्न जाति रवि ससि
की जैसे ॥ अति जगमगाति कांति सिर तैसे ॥ सैना सकल दंड व
त कीनी ॥ दानौ सीस वजे कर दीनौ ॥ अरजन उसतुति करी अ
पारा ॥ धन्य जगत्पति तुमा तनु मारा ॥ छत्र धरम तुम प्रतिपा २

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१८१ अस्व मैध

त्योरन ॥ अंत पपेतन क्रोधत जेप्रमन ॥ सुष ते करी प्रतंज्ञा जेऊ
संपूरणकीने प्रणतेऊ ॥४३॥ ॥ दोनो भीत महावली इनस
मस्म बरनि को इ ॥ निजु शेवक सुग्रीव सुक क्रीप्रति कीरत जग साइ ॥
४४ ॥ ॥ जैमिनु कहै सुनु जनमेः पाला ॥ सुरज
न प्रति बोलते नंदलाला ॥ दष पार पभगत हमारे ॥ जिन मः है सभ
पाधतु मारे ॥ करन पूत सम सुत मन ने शाला ॥ बजत वरनभप
ठपिफाला ॥ हमतु मको रष सहित अमाचा ॥ कितनी वरप ताल्व
ठापो ॥ नहकामी पाध वलवाना ॥ हमरे अपि सम सरपे प्रानना ॥
र रूको निज मन ऊगति पड़ चावा ॥ तल स्मापने वीचसमाबो ॥ ४
५ ॥ ॥ भगत स्याप कुने जानि केलीने मोहि उवार ॥ जन्मुकता
रष की पोइ नहि न्रुधर मउरधार ॥४६॥ ॥ इनके सिर सूर
सूरी वहावो ॥ सब दैव ठोगद रूमन हि लावो ॥ मति जग के हम
गत हरिदेऊ ॥ गंगा प्रापति मएन सौऊ ॥ गरुड बुलाइ लीयो
त तिः सव सर ॥ दोनो सीसदो पे ताको हरि ॥ जब सरस री को प्रव
स्मरति ॥ डारत हादेऊ संगविधवति ॥ वग पति हरि प्रतिवचनु
विषाना ॥ कहि विन तो सुन स्वामी भगवाना ॥ तब तुम्मारे बीच समाना
की नोका टगंगा इ सनाना ॥४७॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सत्य कहत हौं गरुड तुम रहै न लोग आचार ॥ प्रापति मैं तेन सुरस
रास भजत गुन कहै धिकार ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ मलीव सुजो अन्न पपहि होई
राषत वी चष ज्ञाने सोई ॥ तैसे हम राग गण जाना ॥ मम भगतन
के वर इस्थाना ॥ यह ते दोऊ भगतन के सिर ताजा ॥ षगपति वेग
करऊ इह काजा ॥ संग्राम हतु त्रिवेणी जहां ॥ दोऊ सासुले गएरऊ
तहां ॥ पहुंचे गोमि प्रेम हम ले लोगा ॥ बिनसै जन्म मरन इत्सोगा
दोऊ सीस ले डारउ जब [illegible] गणपति ॥ उठा तत्त ते पवन वेगवत
४९ ॥ दो० ॥ गरुड उड्यो अति वेग सों गणपति शिवर कैलाश ॥ तहं गव
र शंकर सदा प्रमुदित करत विलास ॥ ५० ॥ चौ० ॥
गणपति को ॥ वचन उचार करहु पद वृत्ति को ॥ गवरी दृष्टि परसेव
हो ॥ कोटि समान रवि शशि छवि नाहीं ॥ उज्जल वसु गरुड मव मा
ति ॥ लीये जात धारे मष षग गणपति ॥ शिवजी मो पर करुणा कीजे
पहत तात मो को कहि दीजे ॥ हरि वाहन के मष मति होई ॥ मो को क
हो कृपा कर सोई ॥ तुम तो त्रिकाल ज्ञ सम जानत ॥ गणपति प्रगट स
मविध पहिचानत ॥ ५१ ॥ श्लोक ॥ रा च ॥ दो० ॥ ई स कहै गव रसु
न कृपा गणपति मुख मति सीस ॥ कारे अरजन नंदन मोले अरीता जगदी
शा ॥ ५२ ॥ दो० ॥ एक समै रहवा न समनी मठ ॥ सोई अव मो वस सुनो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥१८८॥ वतहोनु॰ ॥ सूर प्रभु नंदके ढोटा ऊ सी सा ॥ काटहु गेनि जकर
जगदीसा ॥ भार प्रहु के सीनु होइ जव ॥ नृपति होइ गाधि मैं

अस्वमेध

लातव ॥ यज्ञ करेगा अस्वमेध भव ॥ सेनापती होइ अरजन तव
हाँहि सहायक अपि पर्दु राजा ॥ छाँडुहि गेय प्रवीं परवाजा ॥ जै
ते गाघोडा चल तहा ॥ नृपति हंसध्वज पुर है जहा ॥ ५३ ॥ बां
धे गे है कैं तहा सूर प्रभु सुधन्वा आइ ॥ रथ हि गेह छत्रीधर्म महा
पुधपगटाइ ॥ ५४ ॥ व कं सुदर्शन सां हरि सा ऊ ॥ काटहि
सेउ नके सर दो ऊ ॥ मुकुंद धारी मन स्यातिः काला ॥ जवहुन सिर का
टै नंदलाला ॥ उ चतसी सकुंठ नकी माला ॥ सूर प्रभु सुधन्वा भगत गु
पाला ॥ मेरक करें गासुंठ माल पर ॥ आर व न्वा गौरी सांई अवसर
बगपति सो मंगाइ अबले ऊ ॥ मंगी नंदी गणपव ठद ऊ ॥ दे हि गौन
गुडु सिर ऐसे ॥ ल्याव ऊ व लक पि जैसै तैसे ॥ ५५ ॥ गौरी भई आ
नंद व ऊर कहु व च ईश प्रति ॥ सुन शंभु सुधकै दमेरु सुंठ माला उ
चत ॥ ५६ ॥ मंगी नंदी वृषभ शिव दो ऊ ली ऐ बुलाइ ॥ बगपती
कै सुधसी सद्वैतिः पहि ल्यावो धाइ ॥ ५७ ॥ सूर प्रभु सुधन्वा केसि
र दो ऊ ॥ ते पे जात बगपति सुधसा ऊ ॥ लेआवे ते ऊ वेग जा डग आ
व ॥ आ जात गणा दो ऊ चले तव ॥ जाइ गरुड प्रति व चन सुनायो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हमको तुम पवहिं ईश पठायो ॥ ह्वां जै सिर कों जे शिव का जा ॥ हो है सं
ग माल सिर ताजा ॥ जै भिन के हैं सु ने रूप पार्वतीपति ॥ पहत वच
शिवगण कहि गरुड प्रति ॥ भुज बगपति बोल्यो तिस अवसर ॥ सु
नत महेश शिवगण सु बन नंधषि ॥ ५८ ॥ गरुडउवाच ॥ दोहा ॥ सुन
भृंगी नंदी वृषभ हू पदी नेदो आप हु सीस ॥ जारें जहां गंगा नदी
भ्राजा सु जगदीस ॥ ५८ ॥ दो० ॥ पहदे ऊ सीस हत सधु जताता ॥ नि
न शिव के त्रैभवन ताजा ॥ तिनके छेदे सीस प्रद्यु कर ॥ चक्र सुदर्श
न सोंगिरवरधर ॥ भ्राजा मोहित करी जगदीसा ॥ लेउ रे गंगा महिसी
सा ॥ दे उनहीं सिर तुमहि गरुड कहि ॥ जा रूप कपर फणप ने शिवप
हि ॥ शिवगणक है तजि हम नाही ॥ आवहि सीस लौं हतु मपाही
बगपति सुपुना श्रुति बलकीनो ॥ उठ्यो गरुड नभ को मग लीनो ॥
हं ॥ दो० ॥ शिव वाहन मुख गरजि के शबद कीयो रिसमान ॥ सुनका
वे त्रैलोक तव मालो प्रलेसमा ॥ ६१ ॥ दो० ॥ पग से व मद सरे त उठा
व त ॥ संगमार के धर नभ बुद्दावत ॥ जस्यो स सभर जाद तजीत व
पहसवधर नि उठ्यो हलेत सव ॥ शबद करत मुख महा क्रोध कै क
र ॥ तीनों लोक का पतव पार ६२ ॥ संगमार करै रे सेल उठावे ॥ हत
वाहन को और चलावे ॥ मुखगर जे धपरे संग चलावे ॥ अंधकार दह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

देस प्रगटावै ॥ तिः अवसर भए लोग दुखी सभ ॥ सानकु धरनाउ
लटावहि नभ ॥ ६२ ॥ धरिन उठावह नभ विषे अंधकार तव की
अस्त्र मेघ य ॥ पवनपति अस्त्र तिअ ति विद्युल लभ पाव अदृष्ट पायो जीय ॥ ६३ ॥ तौ
॥ तीन लोक महि शोर परयो तब ॥ नम्प्यो प्रलैकाल समायो अब ॥ स
नकांपे ब्रह्मंड हाँ ए डर ॥ जानत्ति अब भौर चरहि धरनि पर ॥ बु
रसी जन सो भई षोद्दत नव ॥ डरपत उदधनीर सोषत सब ॥ श्रि
वके गण भीर तुंग उठावत ॥ नमद्दि शवनपति ओर चलावत ॥ ज
हि ओर उडि परवत परै ॥ वडत नगर चूरन तिः करै ॥ ६४ ॥
र जधरनी अस्त्र रूरे तउडुहि तम पाँ अंधकार ॥ कितुन नगर सफलै भ
ए भय पाय महा मेकार ॥ ६५ ॥ तै भिनुक हे सन
ड्रम पनि वर ॥ शिव गण अतिक्रोध ततः अवसर ॥ अंग गडु
के ट्ट के ट्ट के मए ॥ [illegible] नरन है गए ॥ लपट्टै तरज
पगपत्ति अंगा ॥ अति विद्युल्लगाति ततनभयो पवंगा ॥ हपिवाह
न सप्रवनावलु हारा ॥ उठन सकत न नक छुअपारा ॥ गरु
डविचारकी पाप्रन माही ॥ ओ स्रि रगंगा प्रवाहे नाही ॥ तौ ह
मरे वल है तो धिकारा ॥ हो सकरहि मज पाध अपारा ॥ ६६ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दो॥ पलषि वार षगपति ही पेषा आगे चल्यो हिसार
रंगो गन्म्रहि मउ प्राज्ञा पईराइ ॥६७॥ चौ॥ जसैगा प्रि
यरस्पर ॥ बजत पुहुप की नेति: अवसर ॥ जूजत लागे व जप
ही षगपति ॥ नेति कोई शिव शरण क्रोधति अति ॥ हित सौं सिर देवैन
परेतहाहीं ॥ पावन गंगाजल के माही ॥ जूजत जूजत
जहां ॥ षगपति सौं सुप्रवाहेत तहां ॥ संगम भेलत त्रिवेणी
न ॥ आज्ञा प्रनेम ई स्याम घन ॥ गरुड अनंद हि भयो मन हुल्स
हि ॥ लै आए तत काल ई सपदि ॥६८॥ दो॥ शिव शिव कहत हुलसि रकांठेत
के शंकर भयो अनंद ॥ पुहुप वृतांत कहो सकल ॥ भगतन के सिर नि
गीनंद ॥६९॥ चौ॥ मैं सुनिन को आज्ञा कीनी हर ॥ शिव पति हि मं
न ठौर पावन वर ॥ प्रथम माहि तो ल्याव उ हरद्वारा ॥ ल्याव जती
सरो प्रियाग के वारा ॥ संगम जल गंगा के जहां ॥ पुनद
तीनो जल तहां ॥ शिव कहे लै आए जल तीनो ॥ लै आव ज
ल कीनो ॥ ति: जल सा प्रव षारै सो सा ॥ वहां मान शिव के
ए ई सा ॥ चंदन मृगमद चरचत कीने ॥ वध वतै सव कर तम
हि दीने ॥ दो॥ रुंडमाल को मेरु इकु की ॥ शिव लै रुंडमाल मर
कीपा मद ति मन र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २०० ॥

अश्वमेध

स॥ दृ जो राखै शिर देत चरनू सभ भगत तके सीस ॥ ७५ ॥ चौ ॥ त
व शिवर कग लव ठौ कू प प्रीति ॥ दो नेस कल सं देसा वि
ध वति ॥ गए स्राया हरि वृद्धि त तकाल दि ॥ शिव के वचन
कहि नंद लाल लहि ॥ तुम हरव ठव त ह्य सर दो ओ डारे ग
न उगंग महि सोऊ ॥ मऊ बीचा कीया तव मनते ॥ यह दोनो
सर हरि भगतन के ॥ लागे रन हि विजै के वाना ॥ काटे र देसे
न सा भगवाना ॥ तब तुमारे वीच समाई ॥ ते ओ सीस मऊ लीये
मंगाई ॥ ७२ ॥ दो ॥ स मै पाइ कै सरसरो गपति होइ जग माहि ॥
हम भगतन के सिर उचत उहा रावने नाहि ॥ ७३ ॥ चौ ॥ एकसा

माल

मेरं मऊ र कीनो ॥ दती यह देओ परधरि लीनो ॥ जुग जुग ह
सरे कंठ वराजहि ॥ तुमरे भगत ह दे महि राजहि ॥ शिव के सुनें सं
देस कुशल जब ॥ भए ... नछत ही यगोरधरत व ॥ कहि जैमिन सुन
नपति प्रहाभुज ॥ पुत्रन को प सस न्या हंसध्वज ॥ की रति करत
तन की राजा ॥ दो ओ सिर धन्य ... ए शिव काजा ॥ सु फ भ ...
जन्म हि मारा ॥ की पोदर सुपद पद सम सतारा ॥ ७४ ॥ दो ॥ हमरे
जो प्रभाव त स्व हिला ... रन गपाल ॥ सकुचो जैन हंससी करहि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मो सों सम भट पाल ॥ ७५ ॥ सो० ॥ भाषत है जो मूरख को भट पाल ॥ सेन सम
राइ मिल्यो तत काला ॥ वज्र सो घात तमें ते दूत ऊ तातात ॥ भयो हंसध्वज
विकल गाता ॥ तौ बल हार कछू पग लागा ॥ कृत्रु धरम सूत्र गुनो न्यप
त्यागा ॥ कहि है गमो कौ बद्ध भयो अब ॥ हो न मन पौव जोइ भि त्यो तब ॥ प
हुवि चार करि चल्यो जो रदल ॥ सैन सुबपार ताकै साथ चल ॥ साथ
मिल्यो चतुरंग नि सेना ॥ वानिक कहि परत न है बेना ॥ ७६ ॥ दो० ॥ न
पति हंसध्वज के चतुर तब जे वं जित्र अपार ॥ चमत्कार जन कह्यो
देखी भीम प्रकार ॥ ७७ ॥ चौ० ॥ न्यपति हंसध्वज तिकट गयो जब ॥ द
रसु को पागी रवरधर को तब ॥ देखत ही तन मे हुलगयो ॥ हरि न्य
प को मन प्रेर तिमयो ॥ पहुन भि न्यप केस्यो न्यप को मन ॥ को ऊ न जा
त सके समुझ स को रन ॥ तातें पांव गाढ बपार प्र ॥ है महजान का थाय
ह स्वारथ ॥ पांडव का दुष सहि न सकत हरि ॥ न्यप को पकै सौम न
तः अबसर ॥ गद्गद हात तमभयो भट पाला ॥ अब तप इक रनै न दुला
ला ॥ ७८ ॥ दो० ॥ हू उमी कौ नाद उवत विप सोध रसन पधिराइ ॥ न्यप को
ली पाउ ठाइ हरि ली नोकं छलन गाइ ॥ ७९ ॥ सो० ॥ करुना जल सों सी
वत पतिकी पोहरि हंसध्वज ॥ भयो जन मसुरु मा भव को पाकृता
रथ सकल कुल ॥ ८० ॥ [illegible] ॥ ते मिन कहैं सा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २०१ ॥

अस्वमेध

नजमपाला ॥ परयोहंसधुजचरनगुपाला ॥ हाथपजोरस्थिव
तीबऊकरी ॥ श्रीपतिहमरीअपदाहरी ॥ भोगवडेहहेदरसन
भये ॥ जन्ममरनहमरोमिटगये ॥ जोईदरस्सुसरमपिषदुर
लभ ॥ जोजतनकरतइंदृविधशिवसम ॥ धन्यपाठवसतमकामस्त
री ॥ पत्रकीपापहस्रीतप्रभुमकारी ॥ हमकोपरमकृतारथकीनो
सबअभसपाइदरसहरिदीनो ॥ ९१ ॥ जोईदशिनशिवब्रह्मके
नेकुनस्मावतध्यान ॥ सोईमुकुंदक्षौप्रगटकृपाकरीभगवान
९२ ॥ ताकोबोजतशिवब्रह्मादा ॥ सोमुकुंदरस्योधरमप्रसा
दा ॥ कोटिजेमिनत्रसनन्नपतिमहामुज ॥ वऊतदोनताकरीहंसधुज
महाप्रसन्नमएगिरधारी ॥ अरजनअरनपकैतःअवसर ॥ कं
ठमिलाएकृपापरस्पर ॥ वजेहंसधुजउरजवलागा ॥ करपकरनता
हीपैअनुरागा ॥ वारवारनृपहपयगयबढ़ई ॥ हाथजोरबिनतीवजा
करई ॥ ९३ ॥ भेटदईनपकृष्णकौतुछहदेमहिजान ॥ पांचअग
तरपदसवितिमरररकददसअप्रतप्रमान ॥ ९४ ॥ अपवदापेसनंत
अपारा ॥ वसनस्प्रमभूषनअनेतनपारा ॥ अरपनतनमनधनशरीर
सव ॥ महाप्रसन्नमएगिरधरतव ॥ हरषतवचनकहेश्रीपतिप्रभु
मुकुंदीनीतुऊमुकतनपतिसुन ॥ मकतकीयेसभनगारतुमारा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चमु पेखी जेतक नर नारा ॥ रार धवका ककु चील चंडाला ॥ तुम पुर
साद्द भए सु कति भए वाला ॥ सेना पुड़ कलनै सभे ता ॥ प्रापति हो हेम
उहि न रैसा ॥ २५ ॥ दोहा ॥ नृपति हि सधु जहु रै वचन वउ पपरसे ल नव
हार ॥ कै पाक तार रण पुर सकल क पाक री पदुराइ ॥ २६ ॥ चौपई ॥ प
भै न पकसु चरन लागा तव ॥ चंपावती प्रवेस कर उ सव ॥ समपु
रतु मद रसन की प्यासा ॥ तिनकी पुर नकी जै आसा ॥ जैमिन कहै सु
न उप सविवी पति ॥ पहुव वकहि हंस धुज हुपै प्रति ॥ भए प्रसंन कु
सभे पति वशि ॥ पुरी प्रवेस की यौ तिः सवै सर ॥ सम पुर लौ ग कतार
पकी नी ॥ करु णाकरि हरि दसि नंदी नौ ॥ पांच दिवस चंपावति म
ही ॥ वसे कृपाकरि कृस्न तहा ही ॥ २७ ॥ दोहा ॥ तिः पाकै भा ज्ञा करी पा
रण कौन दलाल ॥ सो गके पगु धारी पै है हा धौत तकाल ॥ २८ ॥
चौपई ॥ नृपति हसधु है कै सापका ॥ चलत्यो द ई आज्ञा पुडु नाथा ॥ चजे
चल्यो पा छतु रंग के ॥ सैना च तुरंगनी संग ले ॥ कृस्न गए गजपु
रकौ तहा ॥ मघ शाल्ला धर्म जन पुज तहा ॥ चचै रत म सुत तहा च लि
गत ॥ त्रै पाराज म स्तिप्रा पति भ यौ ॥ प्रमलाव ती ती या सुनि पा
यौ ॥ आद भ त हय हम रेपुर आयौ ॥ जैमिन कहै सुन उराजाना
प्रमलाव ताक पाधि धना ना ॥ २८ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२०२

अश्वमेध

[illegible]

५८ । २५ इक ती पुरबन मै गई सुंद

तिआती विचरति देख्यो हय पवित्र गति सो पायो तुरंग मन चमत्कार अपा

रा ॥ है गोर स्याम पाय कुंदल भारा ॥ तिः सो गहि छत्री स्तः रमा नेको ॥ नव

ब जु की खान जाइ बंध को ॥ सखी कहयो प्रेमलावति आगे सो भत

भई ही ये आति आनंद रागे ॥ प्रेमलावती आगया कीनी तव ॥ ले आ

व जपुर महि तुरंग अब ॥ तिहको गहि ल्याई ततकाला ॥ बांध्यो

हय प्रेमलावति बाला ॥ १ ॥ अश्व गहयो तिः जाइ ती पए एकार

लीयदलजोर ॥ तीनलाष चढि कामिनी आई दूसरी ओर

२ ॥ कामकंदला सी छबि छाजित ॥ कुसुम गेंद [illegible] पिवा

री जित ॥ शशिवदनी कुंतल अति कारे ॥ जनु अभे जव ए अ

लमति वारे ॥ मोह धनु धसर पन चलावति ॥ देषत है नर

कामत्कावति ॥ विद्यमान चलि के आई जब ॥ निरषित मूर्छित भ

ए चमत्कार सब ॥ चमतकार चुपली जे से तन ॥ हाव भाव करि वसी

करि है मन ॥ देषत मूर्छि गिर बलवाना ॥ तिहु भावति आप के बानु

ध बाना ॥ ३ ॥ कामातुर जे ऊ नर ऊते ततः कि ततकाल ॥ धी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रजकऊं नधारसकै निरखत मएविले ॥ ४ ॥ दो ॥ पारथ सरूप प्रद्युम्न
सादि तव ॥ नाथ चक्र चोधसर सम है जव ॥ कम वान हनि सम वासकौ
ने ॥ पद्यचिव हरि भगात पवीने ॥ विसरि गयो जो थ पजातु रंगा ॥ भ
यकौम वसिम नतन अंगा ॥ प्रम लावु तीवि जै घरसोरन ॥ हाव भाव
कए मोहलौ एमन ॥ तनमन मोहिवि उर सभी नो ॥ गजऊं परचव
रतीपलीनो ॥ सुभगजअंवारी महि वठा चो ॥ पारथ प्रद्युम्न तोहि सनकुव
धाचो ॥ प ॥ तबवावतिप रसयरिचान दो ऊ इक ठोर ॥ चार
लीवजोत्रवजारकै पुरी सावनी ऊर ॥ ६ ॥ चडि व वान सभच
लीसदितमन ॥ हपकोजीति सहति सैना गाजि ॥ पाहि हुतोकर
नकोवालक ॥ प्रायतजाइभयो ततकाल कु ॥ टेको प्रद्युम्नीचम
साइकै ॥ लीये जाततीयहयदिकनाइकै ॥ सैनाकेम वि तः स्रव
सर ॥ इकमहि तहै परघरनिपए ॥ इकनरह सो पस्ता सवा
रा ॥ वसिकरिलीयेपुरुषसमदारा ॥ पारथकोक ऊ जद ष्या जव
कोधवंतव षकेतम योतवा ॥ ७ ॥ रष्पुत को वबकेतवदेखो
सरजनसाइ ॥ गजऊं पर वसिकाम केम योचे तसुभाइ ॥ २
॥ प्रमलावतीविजैतिः सवसर ॥ पानसातव का तपरस्व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Initiative

॥२०२॥

अश्वमेध

र ॥ अति हरषत वजकार तबिलासा ॥ पार पद्म मलावति के पासा ॥ का
मवान तुम्ह निम्हि ... एसब ॥ अश्व यज्ञ को दिसरग पोतव ॥ कहत जैमिन
सुनन नृपति प्रवीना ॥ ताय की नो सम भ पाध अदीना ॥ कर्णज वचनक
हि अर जनन पति ॥ पारथ पातु मरी भई अब रग दि ॥ तप के हसन नृपरवड्
चा मा ॥ भले युधिष्ठर यज्ञ करा ये ॥ ८ ॥ दो० ॥ सुनेन नृपति बोले न मु
षचि तेन कर्णज तउर ॥ तनुमन नृप्रमलावती को देवते दिपाति ते र ॥ १
दो० ॥ देख्यो प्रमलावतिव षके ता ॥ य हत बालक कुन हीं भयो अवेता का
मवान सां सभ मन्हि तनर ॥ इह वालक न हीं ले ग मदन सरू ॥ प्रमा
लावती वचन भाषेतव ॥ सुन वालक तुमरी अद भुत छव ॥ कन्या हम
री अति सुदरवर ॥ हाहि अरूढ सं गातः गजपर ॥ प्रमलावती कहो
सखी पन प्रति ॥ महि वजन सी पहु वालक कत ॥ मिल आइ सब सखी
जो रदल ॥ कर्णजके सन्मुष आइ चल ॥ ११ ॥ दो० ॥ हावभाव दिष
राव ही कर्णज के सवधान ॥ दगकटा न के सिमार ही मदन मोह
नी वान ॥ १२ ॥ दो० ॥ काम कटक दह दिश कर ठा रो ॥ हृदे विचार
ग्यान उर धारो ॥ ब्रह्म ग्यान सर कर्णज मारा ॥ काम कटक दह दिश
करि हारा ॥ अति कोपत तव षके तमपो मन ॥ सा तवा न छाडे सन्मुषर
न ॥ पार का मदन रत उत की नो ॥ पार पक्ष उ तार ग जे ली नो ॥ पुनि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तीयओरकामदलस्याई ॥ तनचमकतिचपलाकौन्याई ॥ मारत
कामवानतीयसोऊ ॥ पुरुषधारधीरसकुतनिकैऊ ॥ १३ ॥ दो०
धनुषउठाइसकैनतिसभरनभरेस्रधीन ॥ आपनलागेकाम
सरकरनतातपरवीन ॥ १४ ॥ चौ० ॥ करनपहुंततबहृदेविचारा ॥
उचतनस्तरपुष्टसंजयारा ॥ प्रथमसेअवकरहोइरसैनाना ॥ लेऊ
पचारधनुषअरुवाना ॥ केतिजचिंतमपोतिः अवसर ॥ पारपस
हितकटकदष्टिदिसकरि ॥ वेगकुयोमनुनतलोउपर ॥ दीनहोइ
कौनोसिमरनहरि ॥ पारपधारस्योवक्रमकेधाना ॥ मनवचक्रम
शिमस्योभगवाना ॥ वानीहोतभईनमतेतव ॥ सुनअरजनसवधा
नहोइअव ॥ १५ ॥ दो० ॥ प्रमलावतजीतनुकठनबिजैसत्यजोपना
न ॥ जौपारपरसवरकरहिजीतजतवतिप्रमान ॥ १६ ॥ दो० ॥ वर्षा
आपुतइकपुष्टकरऊजव ॥ प्रमलावतानजीतसकऊतव ॥ ऐस
वचनकरऊतेपससगा ॥ गजपुरपरसकरेंतुऊस्रंगा ॥ आतिस
दरप्रमलावतिनारा ॥ कारजुकौजेइसोप्रकारा ॥ नभकीवानीसुना
कालगुन ॥ मनमादृतउपज्यो अतिसभमपुनि ॥ ... विचारकया
मनलाई ॥ मऊसोढासकरीमदराई ॥ ... वानी ... जापजानो
मनवचक्रमकप्रसमा ... ॥ १७ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२०४ ॥

अश्वमेध

ति २४ ॥

कव हूं मन सू त्यन न तोइ ॥ ब्रह्मचर्य नम हि उचित नहितासु की याहारि मो
हि ॥ ४८ ॥ दो ॥ ब्रह्मचर्य धर्म कहि हम इह काला ॥ उहां यज्ञ व्रत धर्म प्रतिपा
ला ॥ सब विधि ज्ञान प्रवीन गुपाला ॥ कहि प हव च आवाहि नेद लपाला ॥
हम को ने व तिम धीन जान हरि ॥ तो हांसी कीनी इह अवसर ॥ नही
सोपन रासमि अगवाना ॥ पहव च उचत न कहन प्रमाना ॥ दीन तोइ के
बरो नाहि न व ॥ गजपुर इस्मी जीत कहे सब ॥ तासु करा हि हरि अति ह
म सो पुन ॥ कहहि गेती प वंसि की या काल गनि ॥ ४८ ॥ ॥ अब मो
को पहु उचित है जाइ करो संग्राम ॥ अस्व छुडावो पुछ कहे नमर
का नो वाम ॥ २९ ॥ ॥ चः तु या वि जे कनि जन लीयेसा पा ॥ दो ना धनु ब
ली ऐ भिज हाप ॥ उत तकी भिन न जुरी अपारा ॥ सन म षम ईसा जिद
ल भारा ॥ ऐक लाष ती पग जन्म सव प्रा ॥ पुनि इक लाष चढ़ी हरि ना
रा ॥ ऐक लाष ती परस्पर रा जति ॥ त्याइ जार कट कहवि छाजति
जे भिन क हे सन धर्म पाला ॥ कैसा संदर हि व तवला ॥ देष्य कौंतेन
न नैन विष्याला ॥ सुबस ति को ति कोट सा साजाला ॥ २९ ॥ ॥ तिस
कूदेष तने न न भर व तो व भाव कवि वाल ॥ जैः नर को अद्भुत की तकरा हि
व सो हो तत तक ल ॥ २२ ॥ ॥ जे भिन के हे सन ड

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स्य पतिवर ॥ तौ पाप ॥ जमति जोई जो है नर ॥ तिः को मार मदन
के बाना ॥ करहि मधीन दीन तः प्राना ॥ सो न फिरन जाइ म
पुने घर ॥ वसी होइ है मन वच क्रम कर ॥ पची होत है पुरव त
ताही ॥ कामवान लागत उर माही ॥ मन्मथ प्रकाश के हेत ताके तन
लीन हेत फिर वसित ताके मन ॥ ऐके मास सराबत नर तहां ॥ पुनि त
तदेत जाइ मन तहां ॥ २३ ॥ ॥ जीन तिराबहि पुरुष तः जव ले व
ति शतदान ॥ पुनि तः नर ऐसे कै हि जा वज्र तिन जुइ स्थान ॥ २४ ॥ [illegible]
दे [illegible] सो जु नर ॥ वल न सकत सो नर [illegible] पुनि वल्ल ॥ तिस
ते होइ दुषित मर जाई ॥ पति सो करत मन [illegible] न छुटाई ॥ जात न गर्भ म
यो हित जवही ॥ पति [illegible] पुना देत तत जीत वही ॥ पति को देत हलाहल नि
जकर ॥ पलकन परै जाइ मधि तबही ॥ होत प्रसूत जव हत वहर
दारा ॥ नन मति पुत्री रूप अपारा ॥ जिनके गर्भ न उपजति ताता
सुनि नन पव जन्मे जैव व्याता ॥ २५ ॥ ॥ ऐसी कामंतक जहां जु रस्त्रा
ई एक ठौर ॥ मदन अंध हस्तनी जुति मस्तीई दल जोर ॥ २६ ॥ [illegible] ॥ अ
स्तनन अरु वव के तट ऊरन ॥ धनवली ऐकर [illegible] तिकौ धत्ति मन ।
प्रमलाव ता [illegible] कटच लि मा ई ॥ मुख मद वचन के [illegible] प्रगटाई ॥ क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२०५॥ हिप्रमलावतिसुनवचपारथ ॥ जीयतेद्दूरकरहुमवस्वारथ
जोइन्नपचतिमाएहमदेसा ॥ धनजहजीयतनगरोतरेसा
तातेमाइअतिगनकीजे ॥ हमराअधरअमृतरसपीजे ॥ जी
यतेद्दूरकरहुमलीबा ॥ अश्वपरैनहीतुमरेहाथा ॥ २७ ॥
॥ नहीजीतजगपुहुकपमनवचक्रम जीयजीनु ॥ आगेर
पीछहोतिगनासतुमारेप्रान ॥ २८ ॥ हमसौंकाजैभोजतन
कादोजैपरमसुष ॥ विनसजातितसमैसोगजीवननुनमसफल
करहु ॥ २९ ॥ तुमसौवचनकहततहमसांचे ॥ सकलमरो
गेआगेपाछे ॥ दोनौवाततिमरनतुमारा ॥ पुहुकरजतवहोइ
सैघारा ॥ आगेपाछहोइमरननेजव ॥ कौननकरहुअधरपान
अव ॥ कतकौतुमहेमरहुमकारथ ॥ लेहुअधररसपुरवहु
स्वारथ ॥ कतिकौमरहुनिरारथतुमरन ॥ कछुविचारदेषहुअ
सगुनेमन ॥ तैंमिनुकहेसनहुप्पवीपति ॥ जवयहवचनक
हिप्रमलावति ॥ नमवानीजीयधारकैमरजनकहोउ
चार ॥ सतवचनमषकहिति तासुनप्रमलावतितापि ॥ ३० ॥
॥ तुमसौंपुरुषमिलेकहुकैसे ॥ तुमतावचनकहेमषएसे

अश्वमेध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जो नर हम सों करै कामरस। सो निश्चै कहि है नरकाल वशि ॥ सो
नर जात तन पुनि अपुने घर ॥ है इडु बीच जात तें उमर ॥ उच
तन करन मलि गन न तुहै सों ॥ सतकर किया चाहत तेहि मुझसों ॥ जो
नर परै तुम रै हाथ ॥ अरे जु करै भोग तुम सों पाप ॥ तो तुम हे कठ
नयह वाता ॥ जानवृज तनु करान घाता ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ जि:स्नि नर्श्रो एद सहम कहि प्रमलावति वाल ॥ अरजन जान अ
सत्य कहि तक हिम एव वसि काल ॥ २३ ॥ [illegible] ॥ जो पै तुम अनेर नवार अवा
ता ॥ निश्चै हार तुम हित तनु घाता ॥ जो तुम करन अमलि गन सु तन
जो पुनि सत पाव अजानन मन ॥ अरु जो करन अनम लि गन सब
पाहि छिन तुम मनसा सह दुस्तव ॥ जीवत जो अन नीति हम पाही ॥ सभमा
रहि दिहति को अनाही ॥ तुम हि जानत हो अपुने जीय ॥ न श्रेनाल
करै हम को तीय ॥ नैन बान वृध्यो हम जाई ॥ सो नर जीवत जा घान के
ई ॥ २४ ॥ जैमिनी वाच ॥ [illegible] ॥ जैमिनु कहै सुन जन्मपति वितै धाइ हरि [illegible]
न ॥ जीत वानन बट पढ़ी ये प्रमलावति सनधान ॥ २५ ॥ [illegible] ॥ पुनि बट ब
न हन ने प्रमलावति ॥ भै कारी वकराल पैन अति ॥ पार पके सर बंड
न कीने ॥ छिन महि टूक टूक करि लीने ॥ वर्षा करी सरन की वाला
मदन बान मारे [illegible] चकराला ॥ अरजुन अति कोप्यो तिः आव सर ॥ क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

श्री लक्ष्मणमेघनाद

समासोतीपकरिद्दशादलसर ॥ धुरसनकीयोमोहनीकेतन ॥ धुनी
प्रमलावत अति क्रोधित मन ॥ अतिरसहियेमोहनीकेतन ॥ धुनिप्र
मलावति अति क्रोधित मन ॥ अतिरस हित ऐ मदनसर मारे ॥ उछ्म
गतनसे नासंजारे ॥ ३६ ॥ दो ॥ तक्ष्यापिवचन ताधन घकेअर जनकोत
तकील ॥ पानरूपसोहसिवचकहतवप्रमलावतिवाला ॥ ३७ ॥ ॥ वा
रूपमनमर्दिकरानसोगा ॥ वधिमैतिनसरतुमोतिनपोगा ॥ वजस
रमारनकोमैहमार ॥ हनिमोहनसरकामतुमारा ॥ तुमसेयोधव
जतहममारे ॥ हनिसरमदनमर्दितकरिडारे ॥ करतधनुषतज्ञा
अरजतव ॥ प्रमलावतिपहवचकहतव ॥ पुनपारूपमनमास्तिवचा
रा ॥ हमपहतुभिसकोनहीदारा ॥ वचनकहतिरससामकोशो ॥ स
जतान्याकीनाहतिहसा ॥ ३८ ॥ ॥ ससनवचनदपरमअबकहेवानी
भईस्मकासा ॥ तिःअवसरवचकहस्केमजसमजेकपहास ॥ ३९ ॥
रनसापीतमवचनकहेअब ॥ पहकारजनिरवाढहिइतव ॥ क्याहव
वनइनसोंप्रगटावो ॥ तौफिरपार्हेअसहडावो ॥ वेजेकामकावचना
विचारा ॥ ...कियापधनिरवारा ॥ सीतलवचनकहितःअवसर
सुनहुप्रमलावतीनारिवर ॥ तुमरेवचनकरोप्रतिपाला ॥ आऊकरो
गातुमसोंबाला ॥ ऐकसपततुमसोकपहेमज ॥ जोहमरोभिनाज्ञामा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नीतुऊ ॥ ४० ॥ ब्रह्मचर्य के वि वेहुम वऊरि स्वारथ पीवाज ॥ १
हसनि पुर सब सिद्ध के पितुम सो करौ समाज ॥ ४१ ॥ पत
र पुधी सैया सम ऊभी ता ॥ ब्रह्मचर्य मांहि आव मांहि गाता ॥ सत्यमान
ली जे सऊवाता ॥ गजपुर चलऊ हे इकुसराता ॥ भली विधु सुसम
धर्म पसूपथ ॥ तीन लोक मांहि जो ऊ नारि नर ॥ सोऊ करी तुम से
हुमतहं ॥ गजपुर कुरु पुधि पुर जहा ॥ इतनी सब सो पतुम
रे आव ॥ चलहि गजपुर विरुपा वहि सव ॥ सुमती पमन वांछित
पति पावहि ॥ हरि दरसन करि सब उपजावहि ॥ ४२ ॥ दरसन
पर सऊ कुसके ता हाजु रे ते लाग ॥ मन वांछित पति पाऊ सो भव
न सजाहि सम सोग ॥ ४३ ॥ जे मिनुक ले
नऊ वधि वीपत्ति ॥ आर जन पहुव चक हेनुवत पति ॥ सेन पु
वतिन को मनुऊ भमगायो ॥ वि जे वचन सुन हीय हर्षि भयो ॥
भई आधीन सकल तिः आवसर ॥ दीनो तीपन अरु आर जन
कर ॥ करन तात आयो तिः कोला ॥ रथ पआरु राई कीनो सम बार
ला ॥ सुमतीप बांधचडी इर थपनवयि ॥ हाक दीऐ रथ शीघ्र ज
तन करि ॥ पाछे तीपन सम ऊ छलवीता ॥ कर तिवियोग मह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२१॥

अश्वमेध

विलपाता ॥ ४४ ॥ दो० ॥ राजकुवरि प्रमलावती ऐकलक्षमषी सा
षा ॥ हंसनपुर के पहिदई कली जसपुनेदाष ॥ ४५ ॥ चौ० ॥ पहु
वतौ तुमंत्र एाहि सुन्यो जेव ॥ चलिआई पारषपहि तब ॥ जुवतीअ
वर जोर है लाषा ॥ लेकपिआई अपुने साषा ॥ करीदीनता पारथ
कौ तब ॥ जुवतिन पठहते हंसनिपुर जब ॥ तुमा की जीयाहि दोषहि
मारा ॥ तुमतो अरजन सषा मुरारे ॥ हे प्रसंच करुणा अब कीजे
ती पमुके ताहि भेटवऊ लीजे ॥ भलौ तुमारा करहि गुपाला ॥ हंसउ
ऊ कुवर साहित सबवाला ॥ ४६ ॥ दो० ॥ अब हरि उग्या आपना अब
तुम सौं कहि काज ॥ छंडद फजुवती सकलन जैसें रषिय रताज ॥ ४७ ॥
चौ० ॥ तुम तो इनकौ पठवहु गजपुर ॥ पहुकामंत कती पमाहि तसु
र ॥ तुरग जपुरीव ऊनरनारा ॥ इनकौ तौ नहिसा पमतारा ॥ भले
तहु सरमुननरराजा ॥ पहु सबहीके करहि मकाजा ॥ ब्रह्मचर्य धर्म
हि लीगत है सब ॥ इनके रूप महि सुंदर हव ॥ कामवान इनकेदी
ऊनैना ॥ मारति तन उपजावति मैना ॥ ब्रह्मचर जब्रत बंउनकरहो
युरूपदेषहु नधीरनधरही ॥ ४८ ॥ दो० ॥ नलका मंत ककामिनी मि
लितौ तनचार ॥ दबनधीरजुधरे कौ पहि पत्रमहि सार ॥ ४९ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करुनाकरि ऐसमतीयत तुदीजै ॥ कौधअटाइसुजससुजगली
जै ॥ सुनचोल्यो वचबकेतसुनकृतीय ॥ तुमकौअवनितजाहिजानकृ
जीय ॥ पयअमपजूकीटहलकरत्तिअव ॥ पाछतेपनमकतिकरहि
सब ॥ वकृषिमंत्रएवचननवषाना ॥ सुनवद्धकेतमहाबलवाना
इकसहस्त्रअबपरलेजाबकृ ॥ अवरसभनकेमुक्तिकरावकृ ॥ ५
नपारपअमबचनउचारे ॥ सुनकृकरनसुतवाकहमारे ॥ पं
छाडदकृइनसनकौगजवरतीयनपठाइ ॥ ब्रह्मचरजमहिजिन
मुकृहिमोहितलीपाविरमाइ ॥ ५७ ॥ मवपरउचतनहीऐसातो
य ॥ तुमहिविचारदेवअपुनेजीय ॥ अरुजोइछाहैतुमरेमन ॥ इ
कसहस्रपठदेपरहसन ॥ करनपततवहदैविचारी ॥ भेटलेकौ
डीसमदोरा ॥ अप्रबतहाअगेचलिगयो ॥ ततछिनवनमहिप्रपत
भयो ॥ वनमहिएकसरोवरअतिवर ॥ विचरतिअप्सगायोवलि
तःपर ॥ अचवनअमकौपाहिजवही ॥ हिगपाअअसअश्विनीत
वही ॥ ५८ ॥ पारपअकौसेनासकलहीयअचरजतसमराज
अरजनअतिचिंतावडीमएअश्विनीवाज ॥ ५९ ॥
जैमिनकहसुनजन्मेपतिवर ॥ ऐसाअइरवन्योपरअवअर ॥ बि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अ
जे

तमान सैन्य सम लोगा ॥ आरण्य हृदे महाद्रु बसो गा ॥ अब ही इह अच
रज है गयो ॥ यज्ञ तुरंतु रंग नमूचो ॥ अम प्रवेश कीये तेय हूगा तो
हात मई हिय की अचुर जवत्ति ॥ वै जे प्रताप वडावन के हित ॥ पह विध
करी जान गिरधर चित ॥ ५४ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ५५ २६
जैमिन स्वामी किरया कीजे ॥ पह हव तो तह
मको कहि दीजे ॥ भयो तुरंग तुरंगनि जैसे ॥ हमको कहि दीजै विध तै
से ॥ केष्ट वन हो ता जल माही ॥ के कछु दोष भयो ता वन माही ॥ ता ते मो
हि महा अचरज मन ॥ कहि दीजै वह तंत मुनि जैमिन ॥ इः प्रकार पुन
भयो तुरंगा ॥ सुनकै कहत हो सो इ प्रसंगा ॥ १ ॥ दो ॥ जल महि की पाप
बसु जब भई अवचर गति वाज ॥ भयो तुरंग तुरंगनी अति विसमै सभरा
ज ॥ २ ॥ चौ ॥ अरजन के जीय माहि चिंतत तब ॥ अति शोसा गुन बहु आपसे
ना तब ॥ आरण्य मन माहि करत विचारा ॥ हरि धर्म जमुह्नि करे विचा
रा ॥ कहि है मनी वि[illegible] पजन करा यो ॥ आरण्य भयो तुरंग फिरायो
पुनि पांडव विचार कीयो मन ॥ प्रथम मे हम अविलोकन ले उव न ॥ त
व वन माहि विचारन सम लो गे ॥ चित मान जीय ते सुख भागे ॥ त

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पसी ऐ कुनि हास्यो तहा ॥ सिमरन करत तेज उस्यो मन्हा ॥ २ ॥ दो० ॥ ह
षजोर वंदन कीं पाऐ वप गलाने धाइ ॥ कह्यो वतांत तलाउ कों
तपसी कों प्रगटाइ ॥ ४ ॥ चौ० ॥ पूजा करत हैं धर्म जू राजा ॥ कहुँ दी
पो पथि वीचि ऐ वाजा ॥ चलि आयो हूप इस अस्थाना ॥ कीयो स्ना
इ सरवर जल पाना ॥ तत्छिन पुरुष विद्ध हन नि अटग पो ॥ अचर
ज आस्व आस्ष नीभ यो ॥ ऐव जो हम वपु ऐक रूपाधारउ ॥ कीजै कृ
पा कृपु निरवारउ ॥ यह वीचार हम कौं कृदिदी जे ॥ दूर करउ दु
ष संकट नहीं जै ॥ सुनि तरैषी स्वर वचन कुदैत तव ॥ सुनि ऊस्व
न भी वोव तांत सव ॥ ५ ॥ दो० ॥ कहत ऐषी स्वर सुन विजै ऊ तीप व
वित्र तलाइ ॥ श्राप लाग ऐ साभ पाक कोक पाप प्रगटाइ ॥ ६ ॥ चौ० ॥
त्रेता युग आ मद्धि श्री रघुनाथा ॥ चलत्या लंक पर सैन संगाथा ॥ उ
तरे आइ इसी तलाउ पर्व ॥ कुतव रमा तपसी तिः अवसर ॥ तपसा
धत प्यावि वध प्रकारा ॥ अंगि ताज मम व करत अचारा ॥ इसी सरो
वर वपु ऐ न त्याना ॥ करत भद्द तु षटकर्म विधाना ॥ रघुवर ऐषक
पजा कीनी ॥ चलत हा तम्ह आज्ञा लीनी ॥ वउ तकालवी तपऐषत हा
प्रगटी ऐकरा षसी मन्हा ॥ ७ ॥ दो० ॥ तपसी दवीराकसी आतसं रस

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२०८॥

अश्वमेध

भअंग ॥ वचनकहतभईएबीप्रतिहमकोवरेउमंग ॥८॥ चौ० ॥ त
वएिषअपुनेहृदैविचारा ॥ इऊराकसीभेषु तीयधारा ॥ धास्योदेव
अंगनीस्वरूपा ॥ मायारचिराकसीअनूपा ॥ उजुलतववहुतदि
वसमाना ॥ पहरतितनभूषनपटनाना ॥ रिषकोकीयाप्र
णामअदतृतव ॥ मुऊसीकरोसंगुरिषवरआव ॥ हमनिजु
देहसमर्प्यातुऊको ॥ करुनाकरऊवऊततुम्मुऊको ॥ यह
राकसीरिषीस्वरजानी ॥ मनवचक्रमनिमैवपहिचानी ॥९॥
दो० ॥ तुऊकोवरोंनरिषकह्योतुमराकसी वाल ॥ राकुसकी
मायाकीयौद्विवदेहहृत्वाल ॥१०॥ चौ० ॥ बऊरराकसीकीएत
ननतव ॥ तिनकोपसानहीरिषवरतव ॥ तवव्हिराकसीरदैवि
हीप चारे ॥ रिषआवतनहीपहमारे ॥ महाकएरिषकोउपजेहो
नितप्रतिकमभएकएजेहो ॥ दुषपावैगारिषवरजवही ॥ ह
मसीप्रीतिकरैगातवही ॥ जवलरिषवैठोअगिनहोतपर ॥ आवि
तवराकसीक्रोधकरि ॥ मूत्रपुरीषअस्थवरपावे ॥ रिषकोम
हाकएउपजावे ॥११॥ दो० ॥ रिषवैठेजवकर्मयपरजपेगात्री

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जाय ॥ पाहुन वधा करे तौ यह शिव तन होइ संताप ॥ ७२ ॥
निरखि शिव श्वेर क्रोध व ओतव ॥ भए की ऐइन यज्ञ कर्म स्व
शिव के जीयउप ज्यों व ड्डत्रासा ॥ इकदिन हम राकरै विनासा
इकदिन वज्र राकसी शिर साई ॥ करि स गाशिषौ वहिन्मा ई ॥ शि
व क्रोत तन जरामगात जिह ॥ मंचु रिग हौ भाइ शिव कौ ति
ह ॥ ज्ञा जु निकाडा गी शिव तु ऊ को ॥ रितु दान कृपा करि म
ऊ को ॥ हम तुम विषे सम र्यो भा पा ॥ जौ निव रै शिव दे हु भा
पा ॥ ७३ ॥ शिव रिसाइ केवचक हैव रौं न हौ मम ता हि ॥ प
रस करौ न ही तु ऊ है तन भ्रा पस हो गा माहि ॥ ७४ ॥
जे भनु कहे सु नज रा जाना ॥ तब राकसी कि याइ सना
ना ॥ सुब तेवचन क है ऐसे त वु ॥ शिव कौ जानदू या तनु मनस
व ॥ तौ शिव कौ मरु ऊ भ्रा पन लागे ॥ उलटि भ्रा प हसे रौं न दागे
भरु जो मरु ऊ शिव कृ भरप्यौ तनु ॥ पति की ना नि भ्र क्रोम वचम
न ॥ तौ शिव कौ लागे मरु ऊ भ्रा पा ॥ दुब पावै तनु मनु संतापा ॥ शि
वी सह स एी है सरमाहि ॥ हम तौ वा गी सह सत ही ही ॥ ७५

२४

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२३०॥

अश्वमेध

अंगीकार कीयो परमेश्वर सर्वेश्वर भूप ॥ जो हम मेरे वचन सत्य है तो
लोगे रिख आप ॥ १६ ॥ दो ॥ देव ही देवस सर्व समीरवर ॥ है वेणी
हमसे सपर्श सर ॥ तहाँ करे इह भोग विलासा ॥ द्दे भेद गाम
न मप ब्यासा ॥ अब ते आवदी पाती य ... स ॥ हो तम भ्रू तत क्षा
न वप तेसे ॥ रिख तत वचन सस्त सामीको तन ॥ भरस सामी सत
हि किन ॥ नर तभ यो नारि अवतारा ॥ ती परा कसी देह नर धारा ॥ २
ति सह सर महि को या निवासा ॥ पाया शिषी महा संतापा ॥ १७ ॥ दो ॥
हू दुधार ती पक्ष रिखी दुख पापा सर मांहि ॥ जुवति जन रिख को भ
ई बंधन छूटे नांहि ॥ १८ ॥ दो ॥ रुबदी ते ताकु गीवर हुए ऐसा ॥ मुक
ति कीनी येदु ख सरवर सा ॥ विनेकु रोदे ख हुए ऐसा तब ही ॥ बालक
रिख प्राप्त भयो तब ही ॥ विचरत तब आइ प्रभु भगवान ॥ नर ख
सरवर भयो मुदित मन ॥ मेतु नको मनसा जी पधारी ॥ कृष्ण इसा
नम नं गिरधारी ॥ बालक रिख बैठा जल मांही ॥ रिखप गे स सए
ग ... तहा हो ॥ ता तबर मे मे प्रभु महि वगे ली नो ॥ बालक रिख कोदु
ख नहीं दी नो ॥ १९ ॥ दो ॥ बालक रिखमन महि ... जल ते निकस्या धा
इ ॥ धर्स्या सस्तसा ... मत नृप रास साध के पाइ ॥ २० ॥ दो ॥ सिद्धा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सुसमाली के वपु धरि बजत ॥ कृतवर्म तेहिं नुद्ध समध्यो तब ॥ आगे अ
तो धरि बीतन जैसे ॥ होत भयो कृतवर्म तैसे ॥ बालक धरि बकी पूजा
कीनी ॥ जब माउ कृति भेटा धरि बंदी कीनी ॥ पुनि बालक धरि वचन कह
त ॥ कहा कृतवर्म पहट तौ तुस बै ॥ कृतवर्म तब भ
ष सुनायो ॥ सुनि बालक पदयारे देरि सायो ॥ आप सरोवर को हि
नो मन ॥ भाष सुनायो तुम आगे कहि ॥ २७ ॥ दो ॥ जो या सरवर के
विषे आइ करै इसनान ॥ नर तें नारी होइ सो निश्चै सत्य प्रमान
२२ ॥ चौ ॥ सुर नर खग मृग तो हि जोई ॥ जल परसे ती यकी होई सो
ई ॥ पुनि कृतवर्म वचन कहत ॥ इनकी मुकति होइ वपु राकव ॥ स
रवर जल तरा कसौ पह सोई ॥ इनकी मुकति कहौ पुनि जोई ॥ बालक
धरि बक करुना वश कीनी ॥ भयो दिव्याल मुकति कहि दीनी ॥ जो फिन के दै
सुन अग्र भयो पालौ ॥ बालक धरि ष अति भयो कृपालौ ॥ मुकति राकसौ
सर जल की पुनि ॥ कहि अगटाइ मध्य तबालक मुनि ॥ २३ ॥ दो ॥
पुर युग के अंत महि होइ कृष्ण अवतार ॥ महाभारथ कुरुषेत महि
कैरव हो हि संघार ॥ २४ ॥ दो ॥ पत्र कहै गाध भिराज सुतै ॥ आपु मे
ध मष सब विधि सपुत ॥ इह तलाइ पछि आइ तु रंगा ॥ पर सु करे
जल सपुने स्रंगा ॥ होइ जाइ गा सब तुरंग नि तव ॥ धन्न बषवा रे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२-२१

अस्वमेध

गाथा अर्जुन जब ॥ पुनि है। बेगाथा अस्व तसी किन ॥ कुंती सुत नें जु भग
त स्यामघन ॥ निर्मल है वे गाजल तव ही ॥ धनुष पषारैं यास्व
जब ही ॥ सोगी मुक्ति राकसी सा ष्या ॥ धनुष फालगुन पुनहि सें
गाथा ॥ २५ ॥ ॥ जैमिन कहे सुन जनपति अरजन सौ एवराइ
पूरब कें वर तातु सभ भाष्यौ प्रगट सुनाइ ॥ २६ ॥ चौ ॥ सुन पारथ
जौ यह हरष तभयौ ॥ आपा तह सो गामिट गयो ॥ अरजन जल म
हि धनु षषषारा ॥ भयौ है विहुन मिट गायो निपारा ॥ जल निर्मल प
तिपावन की नो ॥ मुकति कीं ऐ पारथ हि तीनो ॥ अभ जु राकसी अ
स्व प्रवीनो ॥ जब पारथ कौं दरशन दीनो ॥ भगतन की सहाइ ज
दुराजा ॥ यह विधि करम कतायेवाजा ॥ जैमिन कहे मः पति अवन
न सुन ॥ आगे चलत भयौ तुरंगपुन ॥ २७ ॥ ॥ आगे अति उद्यान
वन अस्व चल्यौ अति ठौर ॥ पाढु पारथ सैन पति चढ तभयौ दल और
२८ ॥ ॥ भयो राबसी प्रभ तन चौहौ ॥ चौ ॥ जैमिन कहे सुन इप्वा
पिवीपति ॥ उत्तर दक्ष कहत है तुम पति ॥ उतौ आग पुरिव कैं तला
उतिह ॥ जहुं की यो जलपान अस्व इह ॥ ततछिन तुरंग अंग गव पा
धारा ॥ निरखि विजै जो यह तिंत अपारा ॥ लागें चितें करन सभ राजा ॥ सं
सय पुन मन अस्व भयौ तीनो ॥ ४

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

घरूपधास्यो जब बाजा ॥ पारषकरन पठेत अनुस्माला ॥ ह्रदैसुत जौ
बनासभेपाला ॥ बजरहंशधु जप ह्रुबछोतब ॥ इउनलागगहु
रवनसब ॥ २५ ॥ ॥ गह्रुरवनदुउ्यौत ह्रातपसींदे ओ ऐक
नामएषअनमें गतिःगुननिधलीयेविवक ॥ ३६ ॥ ॥ एषवै
ठाधारेसमाधितव ॥ इनसमहीकीनोपुणामजव ॥ शावडुपस्यो
जवएषकेकाना ॥ छुटोसमाधभपोसवधाना ॥ एिषपठ्योतव
इनसवहीप्रति ॥ तुमभैकारीवनआऐकत ॥ नामआपनोक
हिप्रगटावज ॥ आऐकिंःनभि तुसमजावज ॥ कःकारजतुम
इहवनमाही ॥ स्वारथकोनआऐहमपाही ॥ सभवतांतम
ज भाषसुनावज ॥ अपने हृदेसंदेहमिटावज ॥ ३७ ॥ ॥
हमपोउवरिषवरसुनज पत्नरच्योपमतात ह
मअरजिनहैस्वारथ्योकीनोत्रिभनतात ॥ ३८ ॥ ॥ पहप्रघुम्न
छकोनंदन ॥ पुनिवबकेत शात्रदलकंदन ॥ पौवनासराजोआ
नुशाला ॥ बजरहसधुजपपुरवीपाला ॥ मषकोहपइहवनआ
पोअव ॥ सरजलपानकीयातुरगजव ॥ ततछिनभपासिंघकेद
रसन ॥ जवहीजलहैवरुकीयपरसन ॥ देषमगनपाछेधाव
त ॥ हमछिनिरषभछिनकेआवत ॥ एषवरहमपरिकरापाणाकीजे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २२२ ॥

अश्वमेध

जैमिनि २५ ॥

वज़िर तुरंग रूप करि दीजै ॥ ३८ ॥ दो० ॥ हम जी तप कित तप कर जैन
प बांधा होइ ॥ भ यो अ ध ते सिंघ व पु अचरज जी प्रसाइ ॥ ४० ॥ चौ० ॥
तू तत लाउ की नो हम पपा ना ॥ ति: सरवर को कहत विधाना ॥ जैमिन क
हे सुन जन्मेजय पति वर ॥ दीन वचन भाषे अरजन जब ॥ तव पुरुष इन के
की पाप्रनामा ॥ जाने नित शे वक घनस्यामा ॥ वचन उचार कहे ता
म वपु षव वर ॥ रिष को श्राप दूत होइ हस वर ॥ सोई श्राप अब पूर
न भयो ॥ तुम दरसन इन को दुख गयो ॥ जोई प्रश्न पूछत तुम मुझ
सों ॥ सुन जन्म अब वन भाषत सम तुझ सों ॥ ४१ ॥ दो० ॥ सवर जल को
श्राप जिन दीया रिषी अरज आइ ॥ सम वत तात तुम सों कहे सुन ज
अब न चित लाइ ॥ ४२ ॥ चौ० ॥ देवांगना एक ध्यम गस रूपा
न बस्सि ब छवि भगवती सुरूपा ॥ ऐक सम मे कैलाश गई जव
आगे शंकर वे ठे तव ॥ की चापु प्रणाम जाइ दिव हापा ॥ शिवा
चरनन पर धार्यो माथा ॥ पसुपति की उस्तुति की नी अति ॥ भ
ए प्रसन्न तब गिरि गवरी पति ॥ पुत्री मन सा रथ है जोई ॥ मांगो
लेहु हम पति वर सोई ॥ देवांगना कह्यो ति: अवसर ॥ शिव जी
मो को इह दीजे वर ॥ ४३ ॥ दो० ॥ वन के विषे तलाउ इक करो तव र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सखा जाइ ॥ यह सुदी जै सुक्ष्म कुपा करि शिव जी होइ सहाइ ॥ ४४ ॥
जो मुष कहै हो होइ तत काला ॥ भय्या शिव दन कर ऊ कृपाला
चौ॥ नील कंठ करुणा की जे वरि ॥ यह सब रुदी जे मोहि कृपा करि ॥ जे
सिव मन मे ठकहूं तस्प्र र जन प्रति
भि नु कहूं सन ऊप ष्यावी पति ॥ जो तुम कहै हो इ रिपुः सब सर ॥ सो ज्ञात
शंकर देवांगना दीया वर ॥ मन वाछा समरन करि ली जै ॥ वे ठी आइ तहां तत्ता
जै जाइ तप की जे मन माहि ध्यान करि ॥ ४५ ॥ दो॥ एक दिन आया ऐक
उपशि ॥ भैकारी वन नारि ॥ वचन कहत भय पाय ए मंत्ति देवांगना उच्चा
वलि निरष सुंदरी ना ॥ सुन ह दे वांगना अनूपा तुमरी तन ह वि ध्या सरु
र ॥ ४६ ॥ चौ॥ करत कठन तप तप सी भेसा
पा ॥ कति को देह गवावति ऐसा ॥ तप वित तुझ हि देउ सब साज्ञा
तप कर हि ज्ञः सब के का जा ॥ तुझ के देउ सकल सब सार ॥ प्राप
जो तुम मझ के करो भतारा ॥ भोग सम सब वन स जाहि दुष
ति हो है तुझ हि वर म सब ॥ हम तुम के प्राप्ति करि है सो स
ज्ञः नमित्त तप कठन र च्यो आव ॥ देवांगना प्रति लोभ के वनेक देषु गटाई ॥ कव
व ॥ ४७ ॥ दो॥ देवांगना के भय उपजावै ॥ देवांगना
ह संघ रूप धर वरावै ॥ ४८ ॥
माया र चै और रूप
दे व प

न ६

२२२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २२२ ॥

करैं मंजन नव न्हाइ रूप धाइ दुष देवै तव ॥ पुन पुन सुषाव
चन कहे ऐसे ॥ तुऊ दिन छाडौ जैसे तैसे ॥ जपु तप सूंस बंड न
करिहे तुऊ ॥ कत तुम हित सोवत नहीं सुऊ ॥ देहे तुऊ कौ श्र
ति संताप तव ॥ जौ तुम हित संवरै नाहिं श्रव ॥ मत कौ नाकायौ ऐसो ॥
मन ॥ देवांगना करो भजन तन ॥ ४८ ॥ दो ॥ दीर्घ गार देवांगना छि:
तलाउ के माहिं ॥ दुष्ट धरी पुन्याह कै षैच लीयौ व पुताहिं ॥ ५० ॥ दो ॥
जब पापी छोडै पग नाहीं ॥ कोपी देवांगन मन माहीं ॥ प्रथम मैं आपु
दी या जल कौ तव ॥ पहद्द षन जी य जानक हैं अब ॥ सरवर माहिं
दे छया सुभ वारा ॥ तव ही इहां दुष्ट पग धारा ॥ जु तो न मंजु सरोव
र जौ जल ॥ आवत तौ न दुष्ट इ ठोर चलि ॥ तव मुऊ पापा पति होत तुं पा
ह दुष ॥ ता ते दूर करौ जल कौ सुष ॥ या ते प्रथम आप जल दीनौ
पावन सुंभ सु पावन कीनौ ॥ ५१ ॥ दो ॥ इह सर कौ जो ऊ जल पीये
प सु पंछी नर नारि ॥ श्रपन वरन भिटाइ के होत हैं सिंघ आकार ॥ ५
१ ॥ दो ॥ पुनि इह षल कौ आप हमारा ॥ ग्राह होत इह सर हिमं
झारा ॥ आपदी या देवांगना जब ही ॥ छांडि चली वह ठोर कौ तब
ही ॥ वीतन एवं पुनि कितने काला ॥ इक दिन ऐसी आइ [illegible] कृपाला

न मं न२

श्र
तु
श्रश्रु मेध
१ ब

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

त्रै ते पुगका अवसर भयो ॥ विचरत तहं सूडं उपरि बाग से ॥ तीर
पररटनकर तति: आयो ॥ सरवर भीर बसत तहां मनभायो ॥ जैमि
नकहै सुनउ पृथिवीपति ॥ रिषअनन मंडुक कहत तपांडवपति ॥ ५३
॥ रिषअनन नंडइ जदेबकेहृदे लीयो सुबमान ॥ सुभग होररमा
नापजलकर लेवोइसनाना न ॥ ५४ ॥ चौ ॥ गावै त्रो बटुक मन विधाना
प्रद्ध होइ सिमरो भगवाना ॥ बसु उतार परसकी नोजल ॥ गयो अ
डड सोरोबर मांहि चल ॥ नित्सकरमकी नेतिः अवसर ॥ सगले अरवे
हरि मांहि रिषबवर ॥ पुनि सूभि बेककीयो जलको जब ॥ तो बबरुनकु
वर द्धवसब ॥ सिमरनकरता बेहरिदेवा ॥ कोनी मनकरिष धवतसे
वा ॥ निगमंत्र पढतो बटेवतनि ॥ अघिदेदीयो रविके हर्ष तमन ॥ ५
५ ॥ योझ्रोवीचतलाउन वपकर बेधयोग्राह ॥ डारिरिषी
प्रवरिदेसहितग्रासकीयो नहित्रास ॥ ५६ ॥ दुऐ परसिजब
रिषकोभयो ॥ रिषपगपरसिप्रापभिटगयो ॥ ततछिनदेवदेहि
तनधारा ॥ रिषकेकीयोप्रणाम अपारा ॥ लागोवदनरिषप्रनतिः
प्रति ॥ किः अपराधमई तुम्हि रहगति ॥ रिषकोसकलवतांत कहनया
जे: दुबनतेरहु वपुपायो ॥ पुनिरिषकोविनतीवडकीनी ॥ तुमक
रुणकै सुरुगतिदीनी ॥ साधसंगतेभयो असकतितसम ॥ भयोपावर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२३६ ॥ त्र दे ह मन व च क्रम ॥ ५७ ॥ अ ब र बे न तीसन कृरि बङ्हत सर्व्वर
कृष्णाप ॥ दीनों तिसाहि दे वों गनाजिः मकद्दी पोसंताव ॥ ५८ ॥
ऐसा श्राप दी पोतिः नारा ॥ जोर ती बश्च वै प हवारा ॥ नरश्रव
नावं छूमूग कोई ॥ पह जलु पी पैसिंघुव प होई ॥ हमरा दोष
मिटा पा जैसे ॥ जल का श्राप मिटाव उतैसे ॥ रिषवर श्रपुनीं करू
णा कीं जै ॥ इह जल कों निर्मल करिदी जै ॥ वचन उचार कहे रिष
वर तव ॥ द्वापुर युग का अंत होर जव ॥ होहे तवै कृष्ण अवतारा
दूर क रहि धरनी को भीरा ॥ ५९ ॥ महाभारथ तव होइगा के
वे हों हि विनास ॥ राजु करैगा धर्म्म सुत जिन कों हरि की आस ॥ ६ ॥
कुलद्दू बन तीं पधारिधारत तव ॥ पद्म करैगा अश्व मेध जव
सर जन हो वेगा हे स्वारथ ॥ होइस हाइ वर म पुरु षारथ ॥ है।
मावैगा चतिर इह प्यानां ॥ करिहै रससर वर जलु पानां ॥ संघ होइ
गा दूपतिः अवसर ॥ उपजैगा पारथ के हीं य उर ॥ सर जन हो वै
गा चेता पुति ॥ उरैगा गह्वर वन रत उत ॥ तिः पावैगा ऐक रिवा ख
र ॥ नाम सुदर्षी श्रमन मंडन पा श्वर ॥ ६१ ॥ विजै निरख कृष्ण नमंड
को उपजैगा चिन्त चार ॥ ६२ ॥ गा विरतां त दय परिखतै वचपू गटाइ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

९२ ॥ चौ ॥ सिंघ भयो हे अस्व हत मारो ॥ कृपाधार वडु केन प्रका
रो ॥ तिः उपाइ हरो हे पुनवा जा ॥ सोइ सिंध मेरति कज ईस बराजा
सभ सेना जीप भयो वियोगा ॥ करुणा कर जम टोव सो गा
धर्म जकों सब परणा कीजे ॥ सिंघ रूप तेह यक रदीजे ॥ हय र
कोनि रषहे तो तह हरष तमन ॥ भय उपजावत तब हो तुरंगम ॥ तिः न
प्रकार हत पश्चि मेलत होई ॥ कहो उपाइ रिषीश्वर सोई ॥ ९३ ॥ दो ॥
पक्षि के गोसन संडु पांति धार ध्य जो पधपरे भाइ ॥ ऐसे वप्रसंन तव ह
इगो कहे वतो तससु नाइ ॥ ९४ ॥ चौ ॥ अजा दे है अरजन को तव
कर रइस नाना विजेइ हत सर अव ॥ वजरंगो यत्रो कर मध्य पाना
धार जहह दे कृष्ण को ध्याना ॥ सुज हो इस रवरजल तव ही ॥ प
रसु कर रैगा अरजन जव ही ॥ पक्षि सिंघ पवि फेरै गाकर ॥ अश्व
होइ रंगा पुनइ हत अवसर ॥ तांते जाइ कर जरइत का जा ॥ सिंघ चि
हन मिट हो है वाजा ॥ जैमिन कहे सुनजमे पतिवर ॥ ऐसे वच
जब कहे पर्षी स्वर ॥ ९५ ॥ दो ॥ पार्थ अति प्रसंदति भयो ऐसे सुस
नरि षवैन ॥ रिषकों प्र जा वड करी हृदे धारअसि चैन ॥ ९६ ॥ चौ ॥
अरजन सोक णि जअन शाला ॥ नृपतेहं सध जस तनंदलाला

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २३५ ॥ कहो यो बनास राजत व ॥ लेरिषकी आज्ञा आये सब ॥ आवत वि तेकी
पाइ आज्ञा ॥ धास्यो हृदे कृष्ण को ध्याना ॥ ततक्षिन जल निर्मल है गय
अश्वमेध यो ॥ भयो आप आपति पावन भयो ॥ जे सिमरै त्रिभुवन नाथा
के त्यो संघ पीठ पवित्र हाथा ॥ अरजन हरि को सिमरन कीनो ॥ म
नु ले कृष्ण चरन महि दीनो ॥ ६७ ॥ दो० ॥ जैसे हरि इछा करी दुरवासा
की वार ॥ पुनि ला बाजहु मे जरत तनु मही लीये उबार ॥ ६८ ॥ चौ० ॥
राषी द्रुपद सुता की लाजा ॥ तैसे लाय राषी ये बाजा ॥ यह कहि
व चढ्युन ध्यान धर्यो हरि ॥ के त्यो न जकर सिंघ पीठ पूरि ॥
ध्यान उघरिवे जे पुनि देष्यो ॥ जैसा पायो तैसा हय पेष्यो ॥ संघवि
हुन ततक्षिन मिट गयो ॥ बडरि तुरंगम तैसा भयो ॥ जे भनु क
हे सुन ऊरराजाना ॥ भगतन की सहाइ भगवाना ॥ आप अपने भक्त को
आप मिटायो ॥ अरजन का जग सुजस बढायो ॥ ६९ ॥ दो० ॥ अश्व
चल्यो सवधान है व जे व जंत्र आपार ॥ सैना सभ प्रमुदित भई की
यो कृष्ण जैकार ॥ ७० ॥ चौ० ॥ बन ते निकस चल्यो तुरंग तब ॥ पाछ
चले ताहि भूपति सब ॥ आपपतिम यो अश्व चले तहा ॥ भीषण राज
ता सकापुर जहा ॥ जे भिन कहे सुन ऊभूपति वर ॥ रछा करत
भगत की गिरधर ॥ करत पांडवन की प्रतिपाला ॥ भगतन को आ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धीननंदलाला ॥ नवनिकु पासुन होधरि भाउ ॥ फेरनसपत
वीसमोध्याउ ॥ १२ २१

जैमिन कहै सुन जुराजा जाना ॥ फेर नः
होहितु मारेकाजा ॥ गवनत अस्वगा पाचलितहा ज्ञिः पुरभीए
राकसमहा ॥ पचराबसनकेतिः संगा ॥ भिः पुरप्रापतिभयातुरे
गा ॥ भीखणकेभ्राहुएविकराला ॥ गए असेडवृक्षितिः वनकोला
विचरतदेख्याहुयकोवनमै ॥ मद्दतमएराकसध्द जमनमो
पाहुनिरखीचमत्कपारा ॥ हैगेरुपपायकुदलभारा ॥ व ब्रह्म
राकसपहुंच्योहुयकेसकलवृतांत ॥ पहतुरंगगन पकवनकोमति
विषित्रवलवंत ॥ २ ॥ उनभाष्यापहमसबकोवाजा ॥ पजरच्यो हैं
धसिजुराजा ॥ ग्ररजनस्वारपहुयकेसंगा ॥ सगनतिचमत्कतुरे
गनिसंगा ॥ जोपहवाधेहयमत्पाला ॥ रनकपजीतिः तस्ततका
ला ॥ ब्रह्मरकुसनसुनवृतांतसव ॥ कहेधीनपतिभीषणतत्छिन
तव ॥ जज्ञतुरंगएकहमदेख्या ॥ म्रातिविचित्रहतपवनमाहुवेख्या
पत्तास्नरंभकीयोधमेजन्य ॥ पारपहैस्वारपीनराधिव ॥ ३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

रूपगैरष्यपापकनिकरसैनाऽअपरअपार॥ संष्याकोऊनकरिसकैर
अंतुनपारावार॥४॥दो॥ भीषमएकहेसुनहुप्राहितसब॥ त्याव
ऊअश्वपकारपुरमाहितिअव॥ वैरहमाराभीमसंगाया॥ अरजुन
हेतिसहीकोभ्राता॥ पुत्रीहमरेभ्रातकीवर॥ लईछिनाइभीमइकअ
वसर॥ पारथउनकोभ्रातपछानै॥ मनवचक्रमशत्रुमउमानै॥
जौतुमदेषाहैवनमाही॥ गहित्यावहुतुरंगमउपाही॥ यहआ
साकीनीभूपतिजब॥ चलेब्रह्मराकससभिलकैसब॥५॥दो॥ मिलेब्र
ह्मराकसतहांदोइलाषपरमान॥ त्याएपकरतुरंगकोभूपतिके
विद्यमान॥६॥दो॥ देषानपविचित्रगतिराजा॥ भयोअनंदितभी
षणराजा॥ ब्रह्मराकसनकोभाषोतब॥ आज्ञाकरउकरोतैसअ
ब॥ ब्रह्मराकसनकहोनृपतिप्रति॥ हमपरिकरा एककीजैभूपति
चारमासकेहमअनिरहारा॥ लीयानकछुऐसाव्रतुधारा॥ व्रतउपा
रनेकीजबबारा॥ पूरनहोतनउदरहमारा॥ अबपूरबऊनपहम
रासबारण॥ चारमासकेहमब्रतधारण॥७॥दो॥ पज्ञआरंभकरऊ
नपतितनपतिहमारीहोइ॥ घेरहौचलिआईसकलेपज्ञसमग्रीर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सोरठा ॥ ८ ॥ चौ० ॥ पहुकर बजु नर मेध मख साला ॥ चलि आई अति
सेन विशाला ॥ है गै निकर पदंत अपारा ॥ तिन पति होइ इन नकर
हि अहारा ॥ अरजुन निज शोबक भगवाना ॥ तिः संग पजु सम मा
ग्री नाना ॥ तब भीम एन नृप वचन विधाना ॥ सुन हे सम भक्त दितदे
कान्हा ॥ तुम तो ब्रत छोडन के अवसर ॥ बाहुर सोई कितिक रूपि कर
सुनरा जा जब हम छोडिह ब्रत ॥ रतनो लेहि अहार मष्ट तम अति
८ ॥ दो० ॥ इक कर इक ब्राह्मण सुनजु नृप इतना लेह महार ॥ इक
सहं सम्र गजु सालेना भोजन विविध प्रकार ॥ ९ ॥ चौ० ॥ गज तसौ है
सहसु नर होई ॥ रुधर पान करहे नर सोई ॥ बहुरा हम कर हो
उपवासा ॥ पुन हम ब्रत धरिहै चौमासा ॥ जो उपार न आहार महि क
रहीं ॥ भष राहि उदर न हिम रहीं ॥ नर को यजु करे नृप होई ॥ तो
हम परन लोहि र साई ॥ जो ई बांछत सोई गजु हम आयो चलि ॥ पहु छो
होइ मषन नृपति महावल ॥ पार प सेना अवर अपारा ॥ परन हि
हे पजु तुमारा ॥ ११ ॥ दो० ॥ के कुन बोधु जहा पम महि पजु अरंभ जुरी
ज ॥ मन वच क्रम जो पजानी पहोइ संपरन काज ॥ १२ ॥ चौ० ॥ भी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बाण नृप सुन वचन हमारे ॥ करहु पत्र नर मेध सवारे ॥ तुमरा
भी तलक का राजा ॥ तिन हूं कीया जस तो मबसाजा ॥ नहीं करसको
पजत्तिः अवसर ॥ भया न पहु रन गया आपमारि ॥ मबन रमेध
करउ तुम अबही ॥ तुमरा सुजस बढे जगत वही ॥ भीषवाण
पआ ज्ञा कीनी तव ॥ हेश्कुत्र राबस स आ ऐसव ॥ भीषवाण एक ह्या सुन
ऊसमसेना ॥ हृदैधार लीऊ ऊसम सवैना ॥ ७३ ॥ पारथ पको से
नासहित बांध लऊ ततकाल ॥ राबसहु हरषत भए सुन के व
चन भूपाल ॥ ७४ ॥ बऊत्ति सद्धे बके हत मतु धपारथ ॥ कर
हुसहार चमू सम पारथ ॥ तपति कीया न वउदै रत्ति हारा ॥ पांड
व सैना करहि संघारा ॥ जैमिन कहे सुन ऊन्नप अवनन ॥ बृहत्तरा
कसन्न के दीरघ तन ॥ कै ऊंद दीरघ तन गगन समाना ॥ सति मसस्थ
ल उदर बलवाना ॥ हे या जन प्रमान मुष जाके ॥ दाड्ह पिश्क सी ज
न पुनि वाके ॥ अंधकूप सम हग है जिनके ॥ नासक दूरा सम हैं तिन
के ॥ ७५ ॥ करनाहि हू तिनके चउडुरद चलेमधजाहि ॥ नाकवाच
हेवर चलाहि तव उनके सुधना हि ॥ ७६ ॥ भ जापा इम साकहि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स्यारा ॥ अति दीर्घ अस्थूल अपारा ॥ जन्म जे पृछति जे भिन
प्रति ॥ हम रोपू एक कहोइ हम अनुवति ॥ राक्षस देह धरइ नली
नौ ॥ पूर्व जन्म कैन अघ कीनो ॥ जे भिन के हम सन जन्म पति व
र ॥ राक्षस तन होहि इह हम अघ कर ॥ ब्रह्मण कोध नु हरिली नो
जेन ॥ मन मै कछु न त्रासु की पोतिन ॥ अपछ धातु नै नरन चु
राई ॥ ब्रह्म राक्षसन की वपु पाई ॥ ५७ ॥ ब्रह्म राक्षसी जन्म तः
जन्मी भयो विकराल ॥ ब्रह्म संस्कृत उ नरह हरो हितन य दुगति
भुपाल ॥ ५८ ॥ पुनि मौ ब्रह्मण म सुब वचन उचारे ॥ सुन हो
प्रोहित सकल हमारे ॥ पञ्च करो हम मन वच क्रम करि ॥ तुम
सम भोजन देहु उदर भर ॥ विजै सैन सम करहु हमारा ॥ प
रन होहि उदर तिहारा ॥ जौ तुम व हुरर हेतु ध्यारथ ॥ पूरन क
रो तुमारो स्वारथ ॥ तौ पुन त्याव हु मारस वरनन र ॥ तुम को भो
जन देउ तृपति करन ॥ संतोषहु तुमरा तन विधवत ॥ इछा भोज
न करहु मुधि तोचित ॥ ५८ ॥ इछा भोजन देउ तुम मन वच
क्रम जीय जान ॥ बुधा तुमारी सम मिटै वहु सोब बहाव पान

न

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२० ॥ [illegible] ॥ कहै ब्रह्मराक्षस भीषण एक प्रति ॥ न
गर तुम्हारे इतने प्रोहित ॥ संख्या दोइ लाख परवाना ॥ ब्राह्मण
सभ तुं धपार पप्राना ॥ पत्रंजरं भवेग तन पकी जै ॥ इक्कां भाज
न द्विजन को दीजै ॥ घर बैठे प्यारा पावहि तिजव ॥ वजत माने ले
वहि तिभ्र्पति तव ॥ करऊ पज्ञ प्रोहित तत्पता वजु ॥ यह हु कार
जको विलमन लाव ऊ ॥ इक इक ब्राह्मण को अहार इह ॥ व
रन सुनाव न हैन्त पत्नु म पाहित ॥ २१ ॥ दोहा ॥ इक सहंस गजर
साल न दोइ सहस तुरंग ॥ पुनि पाछै न पवा सम्मुख चार
सहस्र नर संग ॥ २२ ॥ [illegible] ॥ इक सहस्र घट रूधर प्रमाना ॥
इक इक द्विज अच बाहनि त्याना ॥ इक इक द्विज को पहस्र अहार
निता ॥ मन वच क्रम जान ऊ भ पत चित ॥ व्रत छाडनि अव सम
हमारा ॥ करऊ यज्ञ परतत पत हमरा ॥ वऊ द्विव सन के हम उ
पवासा ॥ यज्ञ कर ऊ पर वऊ हम स्वासा ॥ तत्व ति न होइ च भूपा
रप जव ॥ तो न पमव रवि चार करो तव ॥ यह हु का हु राक्षस वचो ।
अपारा ॥ सेना मा जि क्रोध जी पधारा ॥ २३ ॥ [illegible] ॥ अर जन के सन म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बभ्रु ऐसा मैं राकस दल जोर ॥ पार परा कस देख कै धीरज उर होन
हो अर ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ कुंती सुत मन माहि विचारा ॥ इत सों युद्ध न ह्वै काम
हमारा ॥ दीर्घ राकस गगन समाना ॥ नर खग जे मन माहि डराना
अरजन हृदय को ध्यान धर्‍यो तब ॥ यह भय ते राखो गिरधर अब
राकस महा रूप विकराला ॥ इन तेरा बल लेउ जनंदलाला ॥ राखो क
री सदा तुम जैसे ॥ राखलेउ धर्म जको ऐसे ॥ राखलेउ धर्म जकी ला
जा ॥ तुम बिनु हम राखो को यदुराजा ॥ २५ ॥ दोहा ॥ विरद हु संभार उधारि
ना भगत बछल भगवान ॥ पः ननकी जे पञ्च व तिध मैं तात राज्ञान
२६ ॥ चौपाई ॥ राखत लाज सदा तुम जैसे ॥ विरद संभार राखु अब तैसे
अरजुन धर्‍यो कृष्ण को ध्याना ॥ अंतरजामी श्री भगवाना ॥ ततछि
न हरि जानी यह बाता ॥ कीयो विचार जगत के ताता ॥ साधु ॰ वि
चार कीयो अरजुन तन मन ॥ कठिन युद्ध नर सों परा बसन ॥ बैठा व
वन सुत को प्रति अवसर ॥ अपुने भगत तन पर करुणा कर ॥ धु
जय परि बैठ्यो आइ पवनसुत ॥ हृदय अग्यो जाले महा क्रोध युत ॥ २७
ध्यान धर्‍यो हरि जब देवई अरजुन नभ या आनंद ॥ धुज पर बैठा पवन
सुत अग्यो सों नंदनंद ॥ २८ ॥ जैमिनोवाच: ॥ जैमिन कहे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सुनऊभूपाला ॥ भगतनकेरक्षकनंदलाला ॥ सहितनसकतदुष
पांडवसुतको ॥ अगिरधनसखाआरजनको ॥ सुनतनपतनमें जे
सबधाना ॥ धिजैधुजावैठेहनूमाना ॥ दुष्टनकोकरिवडोअकारा
हषराघोवृपुअतिभयकारा ॥ अरतनअरुहनूमानपरस्पर ॥ न
मसकारकीनाअतिहितुधरि ॥ देषपवनसुतराकससेना ॥ लागो
कहनपरस्परवैना ॥ २८ ॥ दो० ॥ जेअबबड्डेराकसमहातेभाअतिप्र
गटाइ ॥ हमपाहिचानाकपवहीलंकजराईजाइ ॥ २९ ॥ चौ० ॥ वीसभु
जाजिःवषुषअकासा ॥ सोरावनइनकपकोपोनासा ॥ बांध्योउद्ध
धिमहारनसोजिन ॥ दहसिरवागनासकीनोरन ॥ यहकपरामचं
द्रकोदासा ॥ हनूमानइहनामप्रकासा ॥ जिःदसकंधहन्योमन
व च्चुक्रम ॥ वसितानकेपुनिआइपरेहम ॥ कंकनवांध्योनृपति
हमारे ॥ हनूमानअवउलटिसिधारे ॥ भीषणसेनाकहेपरस्पर
परतंत्रालीजेयाकीकर ॥ ३० ॥ दो० ॥ हमकोपुद्धप्रशस्तहेलरदेव
हिइकवार ॥ जोयहकपहनवेतनाहिनमहिकसंघार ॥ ३१ ॥
॥ यहविचारकरिसन्मुषभए ॥ विद्यमानपारषचलिगए ॥ पा
रषमारेवानअपारा ॥ इनकेतननहीलगेप्रहारा ॥ मायारची

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

राकसीनाना ॥ सभनकीऐतनगगनुसमाना ॥ ठाढेभएआइस
वधाना ॥ सभकरकरचलाएवाना ॥ कूदीहनूमानतिंआवसर ॥
बंडषंडकीनेआवतसर ॥ पसुपावीचराकसीसेना ॥ भुजगहिसक
लपठाएगैना ॥ २३ ॥ दो॰ ॥ केऊराकसलेपवनसुतपटकारतभू
माहि ॥ वहुतनपएपएकतकेऊकिसहछडजतनाहि ॥ २४ ॥ चौ॰ ॥
केऊभागगएनगरमंझारा ॥ भीवएआगेकरीपुकारा ॥ सेनामा
रीसकलतुमारी ॥ इकवंतरछिनमहिसंघारी ॥ यहसुनवंतदासदघ
राई ॥ ध्रिःरावनकीलंकजराई ॥ भागकछुपछहमडरजाके ॥ आवपुन
हापपरेपुनवाके ॥ सुनराजाभीवएकोप्यातव ॥ राकसवहुवुला
इलीयेसव ॥ जवतीवलकसकलवुलाए ॥ सभराकसएकठेकरा
ऐ ॥ २५ ॥ दो॰ ॥ जेभिनुकहेसुनजनवतिराकसभलेअपार ॥ दीघदेहत
आकाशसमतनकारंभपकार ॥ २६ ॥ चौ॰ ॥ केऊराकसकेरकपगअ
गा ॥ कीनउकेवगतीपपसंगा ॥ इकराकसऐसेविनआवनन ॥ ऐक
निशाचरतीनआवनतन ॥ जिनकेकानवऊततनजानऊ ॥ तेराकस
आतिवडेपमानऊ ॥ वहुतनिशाचरतेऊकहावे ॥ जेनरआहारएआंस
दीघनाशिकाआवनजिःहिंगविकरालअंधकूपसिः ॥ पुरस
वुरावहि ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२२८॥ अश्वमेध

षषोपुरीके उठि विराजत ॥ हाथ्यपात्र तैसे सोही राजत ॥ ३७ ॥ दो॰ ॥ मद्रा शोभित कामहि गजषोपरी विशाल ॥ हाथ्यकमंडलतिनसदादीर्घ हद देविकराल ॥ ३८ ॥ चौ॰ ॥ काटषाहिको धेगजमासाव्रण रुधरपीवहि अतिप्यासा ॥ मगहो त्रवाह्मण बटुकजी तिनको भछन करहि अधरमी ॥ हरिजनसाधवांधवगौ हत्पावहि ॥ भछन करहि न हीत्रिपतावहि ॥ तेऊ ब्रह्मराकसविकराला ॥ गजमुद्राकी शोभितमाला ॥ हविहोत्रीष्ठ जकरहि सहारा तातेमानहिपुन्यअपारा ॥ उदरबडीदीर्घ मुषजाकुं दरसनकालसारषताके ॥ ३९ ॥ दो॰ ॥ वहरि ब्रह्मराकसजे आरका कोकरहिसहार ॥ सुनीतपोधिकसदुदुजहि भछहिपुन्यजुविचार ॥ ४० ॥ चौ॰ ॥ महापुनीत जेऊ नरजानहि ॥ तिनको मारअधकस बमानहि ॥ कन्याचारवरषकी त्यावहि ॥ भछनकरहि हदरसंपावहि ॥ ऐसे ब्रह्मभिषाचर जेसव ॥ भतमा ऐभी बहुताम्रपवहि तव ॥ राकसकहे सुनहु नपवाता ॥ तुमरापितविजेकी याघाता ॥ ताकोमहाबलीतुमताता ॥ वकिनामोसमजगविष्याता ॥ पारपतुममोरऊ ॥ दोहिमहतीमोरेपुनारऊ ॥ ४१ ॥ दो॰ ॥ पतदताबजे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सा पापै सेना निकरते हम करहि प्रहार ॥ धजऊपर हनवंत कपजो
तु मकर ऊसै घोर ॥ ४२ ॥ नपतुम रानर मेध पज्ञ तव ॥ पूरन
होइ हन ऊकपको जब ॥ उरहि जन ऊ ब्रह्म राकसन ॥ सुकी
स्रो द्ग गजन की सनगन ॥ दाडै निज पा जन पर माना ॥ तिनको
है षडरत अति घ्राना ॥ ब्रह्म राकसन को भीव ए तव ॥ वचन कहे
है भ्रवन सुनो सभ ॥ जो कवि यहि हनवंत रहन्न माना ॥ हम रावलरा
न होति नहि सुमाना ॥ जि: रावन को नासु कीया तन ॥ तिन सो हम
जो ति के सैरन ॥ ४२ ॥ ब्रह्म राकसन सों कहे यह वचउन प्रग
टाइ ॥ जो यह कपि हनवंत है हम को मारे धाइ ॥ ४४ ॥ मंद ताम
राकस बलवाना ॥ ताको आज्ञा करे रा जो ना ॥ तीन लाष सेना सग
लेवऊ ॥ पत हम राकीर जो कहे देवऊ ॥ जि: सग जो इहम री सेना स
व ॥ जो ऊति साहि पहिचानले ऊ अव ॥ जो वह हनवंत रुहे हन्न माना ॥ तो
हम सभ न होति साहि समाना ॥ अरु जो पवन पूत तन हो होइ ॥ फिन न
साहि मार लेहि हम साई ॥ तो हम मंत्री से पूरन काजा ॥ आज्ञा करी सवे
व को राजा ॥ ४५ ॥ मंद नाम मंत्री ऊ ता आज्ञा ले भट पाले ॥ तो नले
षराके संसाहिति चलत तभयो ततकाल ॥ ४६ ॥ राकस महाबल है
वेजो आ ॥ लंका पुरवै सभ मे पैठे तऊ ॥ जिन देषा पाया वचने तातको ॥ सो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२२५८

अस्वमेध

हास्यः रत्रिभुवन विख्यात को ॥ तेऊ पुरातन सौं पलीए तब ॥ चलि त्रासा ए
रन भूमि विषे सव ॥ त्याए संग राकसी बाला ॥ तिः कुंच इकपो तन वि
कराला ॥ आनी बड़ी राकसी सां प्या ॥ तिन के कालत सा रखे मांझ ॥ प
वन पुत को जो पति चानत ॥ लंकपुजारी की विधि जानत ॥ ४७ ॥ सो ॥
जो ऊपा कै राकस झ तै त्याय पा संग रा जान ॥ ता उन्ह पुनी सेन माहि
मर जन के सवधान ॥ ४८ ॥ चौ ॥ तीन लोक वरी कसन पमा प्या ॥ दी
र्घ वदन भयान क माप्या ॥ वृद्ध राकसी व झत सा पकरि ॥ जे ऊ कुंटी
रपव सपर ॥ वृद्ध राकस लेत तव हि पहिचानो ॥ पहत रघुवर श्रावक
हनु माना ॥ ऐक कहै हनु वंत न होई ॥ युग युग पै तंपिर रह्यो न सो
ई ॥ पवन पुत त्रेता युग महि तव ॥ द्वापुर युग को अंत भयो अब ॥
४८ ॥ दो ॥ मः प्रोहित इगा पवनसुत तम प्रहवं तर को ऊ स्रोर ॥ वै ठौ अ
र जनध्वजा पर इस मारुति गैठार ॥ ५० ॥ चौ ॥ ऐक राकसी व द्व पु
रातन ॥ तिः सुपव तपुन कहे इह वचन ॥ पहुक पव हो माहि पहि चौना
रघुवर को श्रावक हनु माना ॥ तिः रावन को कीयो बिना सा ॥ लंकपुजा
रनि शाचर नासा ॥ तीन लोक जुर आवहि जोई ॥ पा को जीत सके ना
ही कोई ॥ महता अगाध उदधि वाधि ता तिन ॥ को ऊ न जीत सके इस वल
तिन ॥ कपि पर जत पुछ कैर हो तव ॥ को ऊ न तीन ... के इन को तव ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५१ ॥ दो॰ ॥ औरु राकसी वचक है वि[illegible]भागे गति नाहि ॥ राकस एक
न छाडे हो सभ मारे छिन माहि ॥ ५२ ॥ चौ॰ ॥ कुंभाना मरा राकसी एक
तव ॥ ऊचे वचन सु नहि तिन के सव ॥ कहा भयो जाय हहनु माना
सव हीना सकरो रहु प्राना ॥ माहि कुचन को वडो अकारा ॥ दीर्घव
दन कोस विस्तारा ॥ विवसान सो करो पुहारा ॥ सैन सहित कपके
रो संघारा ॥ ऐसे कुच अति कठन हमारे ॥ हस्त न दुक दृक कपि ठा
रे ॥ यह सुत तर अरु जनन को धुज पर ॥ एक चोट डारहि तिः हतकर ॥ ५
३ ॥ दो॰ ॥ अवर राकसी इक कह्यो हमरे कुच भय कार ॥ वंत को अरु रजन
सहित तछिन माहि करहि संघार ॥ ५४ ॥ चौ॰ ॥ जो यह हमरा चक कह्यो हनु
माना ॥ अस पवा हाइ को ऊवल वाना ॥ अस्तन तीछिन कठन हमारे
अति अस स्थूल महा भैकारे ॥ यह सुव चु काहि संग्राम मचायो ॥ भीषव
ण भट पति रहा माहि आयो ॥ राकस अरु राकसी आए सभ ॥ घेरयो अ
र्जुन के रथ को तव ॥ सन्मुख वान चलावन लागे ॥ हाँ यह अति क्रोध
सर सभ त्यागे ॥ पारथ्य निरख क्रोध जो यक कीना ॥ धनुष गांडीव हा
थ पकरि लीनो ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ अरु रज मारे वृन कसि जे सम मेघ वछार ॥ ए
क शर तन राकस तन तजि गए दहि दिस शब्द पाविजार ॥ ५६ ॥ चौ॰ ॥ अरु तन केर
राकस तन तजि तिग ऐ दहि दिस शब्द चाविजार ॥ धाय परी राकसी आइ तव ॥ देखा रदो तनु च
ऊ राकस मारे जव ॥ कुच हनि चमः अस सभ गिरावहि ॥ चार को सदा चकु
रथ फिरावहि ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२२०॥

अश्वमेध

वजिनके ॥ अस्तन पिरहित तहाल गीतिन के ॥ गज रथ निकरत तुरंग
वदोला ॥ किन महि कुरु कुचन सौ घाता ॥ परवत बढ़ पर सुप्ति:कर
ही ॥ हेचु रन सु:प्रकु चपरही ॥ चरण फेरके के जेवस्रव सेर ॥ वे
ठनाहि भस्म तेऊ वचहि तिनर ॥५७॥ जो नाहि वे ठहि तिः समे हा
इपर रैसि:घात ॥ वजत चमभई काल वंश गज रथ अश्व पदांत ॥ म
र
जैमिनु कहे सुनजनमे पाला ॥ वजराक
सी महि वुकराला ॥ पार पथ अपुनी सेन नहारी ॥ इन राकसी सक
ल से घोरी ॥ वे जेक देव वच पवन पत प्रति ॥ तुम धनु हमरी हो इनन
ही गति ॥ भीषण तुम दव तन निगपा ॥ इन ने शाचरी अति दुखदा
पा ॥ हनुमान तव कि लक मारक पि ॥ कूद परयो राकस सेनापति
मनो गगन तव स्यो गिरधरनी ॥ प्रले काल गति ता इनवरनी ॥५८॥
केर तच रथ नु राक सा छाड दी प्रति:कर्ल ॥ पदु पसारी पवा
नसु त दीर्घ महा विशाल ॥६०॥ बांध पदु सो सभत त काला
राकस अग्र सु राकसी कीवाला ॥ गइ चौफेर पदु भई तैस ॥ घेर ली
एरा कस सभ ऐस ॥ केऊ राकस पठ हो एक अकाशा ॥ केऊ पट
के भस्म की एविनाशा ॥ केऊ कर गहि गिरपर पर पटकारे ॥ केऊ
दीये पठ यमके द्वारे ॥ राकश शव रवव नसु त हाप्पा ॥ तोर दीया
राकस का माप्पा ॥ बांध पद से साउ उपोगगन तव ॥ उरदी एलेउ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पृथिवी चसव ॥ ६१ ॥ दो० ॥ कूदि परयो हनुवंत तब भीषण के पुर मा
हि ॥ ढूंढ़त लागो पुर पवन सुत भीषण पावै नाहि ॥ ६२ ॥ सो० ॥ बहु सत रा
षसन को पकरयो तव ॥ भीषण दे षवतार सुजी हम अब ॥ तो हम न
सुकरी नहीं तु को ॥ न पकर बेगवे तावड़ सुजी को ॥ बहु राषसन के घा
तारकर ॥ नही भीषण सुध अब इह अवसर ॥ हमा को जी पैदो बहु हम
रे ॥ हम दुर्बल है विपतु मारे ॥ ती जै राषि नाम की नोजा ॥ तुम भीज शोवैक
हार घुरा जा ॥ हम को दइजी प के दाना ॥ नास ने कर इह मारे प्राना
६३ ॥ दो० ॥ [illegible] दीए ते जु पवन सुत लंक मैं नगरु अपार ॥ नास
कीए पुर माहि सकल राकस मार बिडार ॥ ६४ ॥ चौ० ॥ राकस स
कल नास तव भए ॥ जा जु उबरे वन मांहि दुर गए ॥ भीषण छकर
ब्या कंदरा माही ॥ राकस मोर व च्यो कोउ नाही ॥ नगर मार
की नो उद्याना ॥ यह चरित्र कीनो हनुमाना ॥ भीषण अपुने
हृदे विचारे ॥ वजै परै कछु हाथ हमारे ॥ नषन विद्या [illegible] करो
तिः नासा ॥ जन सभ राकस की ए विनासा ॥ लंक टली यातुन नन
गरु हमारा ॥ जातिः पावो करो संघारा ॥ ६५ ॥ सो० ॥ पार प पुन
मन माहि कहे राषस सभ तोसंघार ॥ भीषण को [illegible] होन हा पर
छले उतिः मार ॥ ६६ ॥ सो० ॥ पारप भीषण पर छनके हित

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गयो एकलो वन कों धरि चित ॥ आगें भी बताए वन माहि विचरति
अरजन कों मारें जो पावत तब तं ॥ पांडव कों भी बताए देख्यो जब
मा पारचि वन महि बैठो तब ॥ तपसी भेस धार कें ध्याना आ
सन साध पागां विधनाना ॥ जोगिन लोक हितें सन द्रुम पुनि वर ॥ धस्या
तप अंबर भेस कीन श्रीचर ॥ ६७ ॥ भेख पेख अंबर कें कीयो बैठो ध्याना
लगाइ ॥ कुटीसा जेवन में रचे वालीतन रूप ठाडु ॥ ६८ ॥ तिंःह
हितम भयो काल लगन ॥ कहूं पायो भी बताए भीवो मुनि ॥ इतउ ते दत्तदिर
शाम अस्यो वि जैजव ॥ पाथा मा आइ कूटलि वन माहि तव ॥ अरजन आवत
दुष्ट निहारा ॥ मा पारचि वेजकी पोप मारा ॥ रच्यो सरावर अगम
ध्यावन ॥ तामधि प्रफुलित कल मधुप गन ॥ कुसुम वन तें विवध प्र
कारा ॥ मा पारचि कीने विस्तारी ॥ सरवर पर पुनि रचे मरोला ॥ रच
मार कोकिल वन माली ॥ ६९ ॥ कुसुमन दप गुंजत भवर रव न कों
लत तथि क मोर ॥ नभ घन घटा छटा चमकें जेलद गरज क घोर ॥ ७० ॥
रचत हाम्य गांधि वध प्रकारा ॥ ऐसी माया पारचि विस्तारा ॥ लागो दु
ष्प ठावल वाला ॥ पांधाभ पारची चटसाला ॥ शावक वञ प्रकार सा
जेतिः ॥ करे साई कृति जोई भाषेजुः ॥ प्रफुलित की या महा वन कें तव
वञ प्रकार कें सजे पुहुप तव ॥ रचि या गंगा कों प्रवाह वन ॥ सौरभ
प्रद रही भावत मन ॥ पारथ जोन्यो कों ऊपरि बांध अंबर ॥ वे गंगा को

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लतपीखर ॥ ७१ ॥ दो० ॥ नामसकारपारषकीयाराकसकोरषि
जान ॥ अरजननरिखेंव चारयोपिषमरतिभगवान ॥ ७२ ॥ चौ० ॥ वि
द्याद तवालकनिसंचकर ॥ महापुनीतदेषअतिरषवर ॥ षि
अरजनकोस्वागतकीनी ॥ निकटआपनेबैठकदोनी ॥ लागे
कहनविजैप्रतिवाता ॥ धन्यधन्यतुमरोपितुमाता ॥ महाबली
राकसतुमसमारे ॥ हमरेदुषदायकभयकारे ॥ लेपरसादकजे
विसाना ॥ परनहोहितुमारेकामा ॥ कछुकसिषाउइहारजुधैदे
न ॥ भीषणमारजुगेजुजेवन ॥ ७३ ॥ दो० ॥ ऐसामंत्रसिषाउंतुज
वनसिभीषणराइ ॥ वनजुजेजुतहाइतनशत्रुदेउवताइ ॥ ७४ ॥
चौ० ॥ वजेपरयोसंसानिजमनते ॥ इहलछनाहीरषीयनके
निसेहेइनिपाचरकोई ॥ मायारचिबैठवनसोई ॥ तवहीविजे
धानुधारयोमन ॥ सिमरनकीनोरिदेस्यामघन ॥ तवआकाश
कीवानीभई ॥ अरजननितश्रवननसुनिलई ॥ भीषणपहीजा
नजीयलीजे ॥ तातेदुष्टशीघ्रछयकीजे ॥ पारथकृडकीनोस
नमाही ॥ यहभीषणराकसरिषनाही ॥ ७५ ॥ दो० ॥ अरजन
लीनोधनुषकरकीनोभीषणविस्तार ॥ वदनपसारयोदुष्टत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

वमहाघोरभयकार ॥१६॥ चौ॥ ततछिनअरजनबडगुणिकास
डुष्पसीसकोकाटिउतारा ॥ भीषणाराकुसनासभयोजव ॥ ती
नलोकजेकारभपातव · पाछेपरलीयोपुनताको ॥ रुपभरर
लीयेकनकवजतीको ॥ प्रमुदितचलेवजेत्रवजावति ॥ रुपमु
कताइअनदवजावत ॥ आगेचलतेभयोपुनवाजा ॥ पाछेवि
जेसहततवजराजा ॥ रुपचलिजयोतहावतकाला ॥ जहहै
कारीवनविकराला ॥११॥ दो॥ जैमिनऋकहेसुनजनतपतिहै
संगसेनअपार ॥ तहाअथपोपतिभयोजहावनअतिभ
पकार ॥१८॥ चौ॥ षोडशयोजनवननभेकारा ॥ फलसमृ
ततहाविविधप्रकारा ॥ तिःवनकोफलजुपरसकरेनरा ॥ हो
इपअनिप्रीतिःअवसर ॥ वजरोचारप्रकारसोईवन ॥ यो
जनचारअवतिःलछन ॥ चारचारयोजनपरमोना ॥ अव
रअवस्थाकहतप्रमाना ॥ सोलहयोजनवनविस्तारा ॥ चार
अवस्थाहोततमेजारा ॥ योजनचारवीचवनजोई ॥ ताकोफ
लुपावेनहिकोई ॥१९॥ दो॥ वालअवस्थाहोइतिःवद्धपण

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भट जाइ ॥ यो जतन चार विषे कौऊ जो वन कौ फल पाइ ॥ ८०

॥ दोहा ॥ वकुण्ठ चारि यो जतन गवने जव ॥ जु वनवान होवै पावैत

व ॥ वकुण्ठ चार यो जन मागे वन ॥ वद्धम स्याहो इजात तन

वकुण्ठ चार जो यन मागे पुन ॥ होइ जात नर पशु प्रवन छन ॥

ऐसे वन को पवि जे नि हारयो ॥ महा चिंत तव सिद्द विचारयो ॥ जे भन

कहे सतकुन पशु वनन ॥ पारथ भई मह चिंता मन ॥ सुन्यो

न देख्यो ऐसो वन काव ॥ ता मधि मान प्राय धिम भए सव ॥ ८१ ॥ दो

पारथ जी पछर पति भयो निरख्यो वन भय कोप ॥ जुः पर सते

होत हे मानव पशु आकार ॥ ८२ ॥ चौ ॥ पति वन उलंघि जाउं मन

शोको जव ॥ सुख पावैगी सभ सैना तव ॥ इन कै च लैयान जाइ पंथ

वन ॥ दुख पावैगी सभ सैना मन ॥ तव पारथ पासि मरन निहि कीनो

मनु हरि चरन कमल मधि दीनो ॥ श्री गुपाल गिरधर नम रारी

अव यह सभ पद हर कह मारी ॥ भै कारी वन मा अतुरंगा ॥ वस्यो

आइ सैना सभ संगा ॥ वन ते हम रीर द ताकी जै ॥ पार उतार सभे प

द दीजै ॥ ८३ ॥ दो ॥ पारथ वकुण्ठ वीनती करी भए प्रसंन गुपाल ॥ ग

गन तर वानी विषे वचन कहे नंदलाल ॥ ८४ ॥ चौ ॥ करि हरि ध्या

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२४३

अश्वमेध

॥ जैमिनि २६ ॥

नर्मदकैनैना ॥ निशिकलंघिजाइवनसैना ॥ पहुवानीअरजन
सुनपाई ॥ सभसैनापतिभावसुनाई ॥ कारजकरतभएसभते
सै ॥ नभवानीभाष्याहुएजैसे ॥ नैनमंदधरध्यानगुपाला ॥ उत
रगएवनकोततकाला ॥ जैमिनकहैसुनजंमेजयपतिपृथ्वीवर ॥ पा
डुसुतनिपरअतिकरुणाहुए ॥ थोडशायातनवनमेकारा ॥
उलंघिगएलागीनहींवारा ॥ ८५ ॥ दो ॥ जैमिनकहैसुनन्र
नपतिआगेचलततुरंग ॥ मणिपुरमहिप्रापतिभयोसंग
सेनाचतुरंग ॥ ८६ ॥ सो ॥ सुनजंमेजयपाधएभाउजैमिनरा
जन्मेजैकहति ॥ अष्टवीसमोध्याउअश्वमेधकेपर्वको
८७ ॥ दो ॥ इतिश्रीभारथपरवणीअश्वमेधविधाना ॥
अष्टवीसमोध्याउपहुरतिकेनपूरनजाना ॥ ८८ ॥
२८ ॥ समस्त ॥ जैमिनीवाचः ॥ चौपई ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Initiative

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ॐ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ जैमिनि उवाच ॥ जैमिनि कहै सुनउ भूपति तव ॥ मणिपुर को
देषि पार्थपति तव ॥ गयउ निरषत भयो अति अचरज मन ॥ कंचन भवन जरत हीरा मन ॥ म
रकत नग पटुली नृपति हंसधुज ॥ इह पुर को वर्तांत भाषु जनमेज ॥ नगर नाम सु हि भाषि सुना
वउ ॥ पुनि भूपति को नाम बतावउ ॥ वो त्यो तवै हंसधुज राजा ॥ यह गड सभै स्वामि को
साजा ॥ पुनि इहि पुर को मणिपुर नामा ॥ मन गन षचित तमहा अभिरामा ॥ १ ॥ विप्र कर
मं को कहति है इहि जनम उस्थान ॥ ता तें इह पुर को कहि मणिपुर सकल विषान ॥ २ ॥ चौ ॥
नृप को नाम बभ्रुवाहन पुन ॥ प्रगट कहावत पतित काल गुन ॥ कैसी न देषियो नृप को
ताला ॥ सुष अपने वकति यहि वाता ॥ पुन्य संपूरण यह भूपाला ॥ मन वच क्रम सपे
वृ किने दलाला ॥ ब्रह्मा तम सभ पुर नर नारी ॥ गृह गृह मै धुनि वेद उचारी ॥ हरि की सेवा
मै सभ लोगा ॥ सेवत इष्ट देव निह सोगा ॥ कंचन भवन षचित मन नाना ॥ राउ रंक सभ
ऐक समाना ॥ ३ ॥ दो ॥ हेम कलस सभ गृहन पर जगमगाति अति जोति ॥ ऐसी छवि लागति
कै धौं दिन मणि कोर उदैत ॥ ४ ॥ चौ ॥ पुर के विषै दीन चंडाला ॥ करति भूप सभ की प्रतिपा
ला ॥ होइ पुरातन दुषी दीन तिः ॥ भोतन साजन पदेवत है तिः ॥ देत कनक अपने भंडारा
गृह रचि देत नला वत वारा ॥ रतन षचित वज्र षंभ विराजत ॥ दरवाजा गज दंत नछाजत ॥ मु
कता झालर द्वार द्वार प्रति ॥ बावन चंदन लेप गृहन अति ॥ अग्नि होत्र ब्रत पन्य विधाना
पर्जा हे सभ पुर मक्ति नित्याना ॥ ५ ॥ दो ॥ वेद वचन प्रतिपाल पुर ॥ सकल पतिव्रत नार ॥ ऐक
पुरुष व्रत पुर सभ हरि सिमरन हि तुधार ॥ ६ ॥ चौ ॥ नृपति बभ्रुवाहन की नगरा ॥ सतयुग री

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ९ ॥ २४ अश्वमे ५

तिसु पावन सगरी ॥ पुनय हृतन्रप प्रेम हाबलवाना ॥ महा सूर त्रैलोकनिधाना ॥ सम दृष्टी
ईर्ष्या जित सूरा ॥ सत्य वचन भाषत प्रणपूरा ॥ यज्ञ करत ब्राह्मण प्रभ करमी ॥ अतिथि उदा
र गुनवान सुधरमी ॥ इह नृप की विभूति सम पद सभ ॥ इक मुख बरनन सकै न के उ कब ॥
हस्ती अश्व युत पंचास प्रमाना ॥ चढत सु तो साथ्य रा जाना ॥ ७ ॥ दो ॥ बहु देस सम ग्रीतिन की ग
शंष घंटा अंकुश घंट ॥ कंचन हीरा मणी जटित दिढ घंटका कंठ ॥ ८ ॥ चौ ॥ सुभ गज ते तल फु
ले लसु धारे ॥ अति ही मद मोकल मतिवारे ॥ नृपत जुरहित बहुराज दुआरे ॥ चवर कर ह्रै
सिर राज दुआरे ॥ सैना अश्व बहुरथ्य अमित पदंता ॥ चत्रांग ता नृपति की माता ॥ पतिब्रत
पुति गुनवान अपारा ॥ सत्य शील युति वेद अचारा ॥ सुमति सचेत मंत्री नृप दोउ ॥
सैना को पति अरु तिनि को उ ॥ मित्र भाउ वरते सभ सैना ॥ कोउ न कहि मान घृतिक कटु बैना ॥
९ ॥ [illegible] ॥ दो ॥ जैमिनि कहि सुनि जनमेजय नृपति वचन सुधु जराज ॥ सकल बैताल त्तस हं
नाइ उ अरत न कोपुजग टाइ ॥ १० ॥ चौ ॥ बहु देश नगर बाग फुलवारी ॥ निर्मित पवन
करत प्रभ कारी ॥ बीना स्यतीत हाभाप्र अठारा ॥ बरन बरन के कुसम अपारा ॥
अति सुंदर वनवी वे सरोवर ॥ प्रफुलत कमल महा सुगंध वर ॥ गुंजत करत मधु
कर अतित तहा ॥ वचरतिप्र अगोउ चलित तहा ॥ बन के रक्षक ते उ अतेतु व ॥ तिन देख्या
है पअति विचित्र दुध ॥ जाइ कह्यौ तिन नृपति तत काला ॥ देख्यो हम तुर भपाला ॥
११ ॥ दो ॥ हम देषा इक अश्व नृप अति विचित्र प्रभ [illegible] ॥ सीसमकट रतननि षचित
गात [illegible]

॥ १ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अनगन सैना संग ॥ दूर ॥ चौ ॥ अंग अंग भूषन साजे तन ॥ चंदन चरचत गात स
कल छिन ॥ तीन लोक मैं है इन ऐसो ॥ देष्यो हम कहितु रंग मै जैसो ॥ देषायत नृप
ति यज्ञ को बाजा ॥ रच्यो अस्व मष कौ न ही राजा ॥ वनमाली के वचन सुन अवन
नि ॥ भयो वभ्रुवाहन आनंद मन ॥ सुमित सचिव को नृपति बुलायो ॥ ताको सकल र
व तांत सुनायो ॥ आज्ञा करत भयो भूपाला ॥ मंत्री हय पठ्यौ व जत तत काला ॥ आगे
बीच परी अति शोभं दर ऊं तो भूपाल ॥ १४ ॥ चौ ॥ भई प्रभात उठो भूपति तब ॥ संध्या
स्नान करन कीये सभ ॥ पुप्य मन नृपति कौ नोई सनाना ॥ नित्य कर्म कीने विधना
न ॥ सेवा कुं फिर पुन भोगल गाऊं ॥ से तो बे हरि जी पसु षपायो ॥ वस्त्र पहिरि चरच्यो सु
गंध तन ॥ आऊं सभा बीच हरषत मन ॥ लागे सभा नृपति की जहा ॥ रत्न षचित मं
दर वर जहा ॥ कंचन षंभ जरित हीरामन ॥ ठाढे तिः संदर मैं अनगन ॥ १५ ॥ दो ॥
मंदर कनक रतन षचित चित्र शाल पिक मोर ॥ पशु पंछी षग मृग सकल चित्र ली
षे तिः ठौर ॥ १६ ॥ चौ ॥ अति शोभत पर यंक भूपाला ॥ कनक रतन मै जडित विशा
ला ॥ जगमग ह्वै वितिः रवि न समाना ॥ तिः ऊपर बैठो राजाना ॥ सैना सकल बु
लाई तहा ॥ जे ऊ कते चो धेरन महा ॥ चंद्रांगद तिन नरपति की माता ॥ लीनी बोल क
ही सुभ वाता ॥ पुनि नृप कहै सचिव सौं वैना ॥ वाच रूप पत्र सु नै सभ सैना ॥ देष क
कवन नृपति को बाजा ॥ यज्ञ आरंभ कीयो कि राजा ॥ १७ ॥ दो ॥ वेग पठ ऊ हय पत्र को

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२४६

सुनै हमारी मात ॥ करौ जै सोई विचार पुनि सोई सुत सवि ख्यात ॥ १८ ॥ जैमिनोवाच ॥
सो ॥ त्याऐ तहां तुरंग जैमिन कहे सुन जनपति ॥ निरख सुभ्र सुभ्र भ रंग मुष्ट तब बभ्रवा
हन भऊ ॥ १९ ॥ चौ ॥ पठि दे ष्यो पत्र तति काला ॥ यह तुरंग धर्म जग पाला ॥ यह जग
रंभ कीउ हस्तनपुर ॥ हरि सा जा लेन्नपति युधिष्ठर ॥ [illegible] दीयो पष्य वीपर वा
जा ॥ स्वारथि वि जै संग वजराजा ॥ जो बलु देषै सु पुने अंगा ॥ सो न्नप बांधे यह तुरंगा
तिः हम जीतहि करि संग्रामा ॥ साखु पत्र को सुत्ति सुभ रामा ॥ सकै न बांध तुरंग सुताई
हम सौं आइ मिलै न्नप सोई ॥ २० ॥ दो ॥ हमि को भेटा देषि लै कहु न करै तिः राज ॥ सै नाम
पुनी साथ लै होइ सहाय कवाज ॥ २१ ॥ चौ ॥ पत्र वतांत न सुन्यो सैना जब ॥ थं तागति मुद
हसकी यो तब ॥ इक तो सुधर्म राजा ना ॥ वज्र सहा इक श्री भगवाना ॥ पुनि अरजुन रा
स्वारथी महावल ॥ आऊ तिनका सब हा चलि ॥ तवुधि त्रांगति वचन उचारे ॥ सुनड
प्रवन देव चन हमारे ॥ यह करि जको गह हरु नकी जै ॥ २२ ॥ जैमिनोवाच ॥ दो ॥ जैमिन
कहे सुन जन्नपति चित्रांगति के वैन ॥ सुने बभ्रवाहन जैवे जीय उपजा अति चैन ॥ २३ ॥ चौ
कहे बभ्रवाहन सुन माता ॥ हम सो कहो सकल यह वाता ॥ पिता भयो पारथि मुहि जैसे ॥
भी पत्र वतांत सुनाव जतैसे ॥ थं त्रांगता वचन भाषे पुन ॥ कहे पूरन कथा तात सुन ॥ सेष
नागन्नपकी पुत्री हम ॥ इक धुन नेक सौ वात लै सुभ म ॥ मिली जाइ गंधर्व वन सौ तव ॥ स
मा पहुचो आइ ये हो तव ॥ चढि गंधर्व गए सब पुने घर ॥ लै गंधर्व गए तिः सब सर ॥ २४ ॥
दो ॥ गंधर्वन की नार सब मुझ सौं करै पिआर ॥ पांच वरष की देह मुझ बाल सब ष्यासार
हमरा वचन मानि लीजो ते

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२५॥ चौ॥ जेतक गंधर्वन की नारा॥ सभ कौ टहल करें तिः वारा॥ सभ मुहि आदर देहि अपा
रा॥ बाल अवस्था वपु बह मारा॥ कहु जान वहि गान करन सव॥ मुझ छाडहि ऐकांत।
ठौर तव॥ हम कव हूं संग जाउं न उनके॥ जहा वह गान करै हित कल धुनि के॥ वर्ष इका
दश आयु रजव ही॥ भयो ई ज्ञान उपज्यो तन तव ही॥ आपना कुल मन माहि विचारा॥ ता
जव ठौ मन विविध प्रकारा॥ २६॥ दो॥ इक दिन मन चिंता भई एन मो भलो न वासि॥ त
व पार स्थ प्रापति भओ की नो तहा निवासु॥ २७॥ गंधर्वन की नेवऊ गाना॥ निरखि नट
गति कीना विधनाना॥ वैठ रहति हम सति लज्जित मन॥ तव अरजन पहि ओ गंधर्वना।
जलकं न्या तुम सुता न होई॥ नचसि घला जभरे तन जोई॥ हम राकुल पहि आतिः
पाही॥ छत्री यत यहि कंन्या तुम नाही॥ भा वसु नाया सभ वृतांत उन॥ ते सि नागकी
सुता पाल तग्युन॥ भनी आइ हम साथ पिआला॥ हम जौ कैा न्या ऐतिः काला॥ २८॥ दे
॥ सुन अरजन पुनि युद्धित भओ मन पहि की विचार॥ पहि कंन्या हे से ष की व्याह करो नि
ते नाहि॥ २९॥ चौ॥ वडे गोत्र की कंन्या होई॥ ता कौ वरे सु पसु जग होई॥ अरजन पहि
विचार कीनो मन॥ कंन्या वर ले वोप हत तद्दिन॥ मुझ परथा रथ कृपा करि॥ विप्र
वुलाइ लीये तिः अवसर॥ पाणिग्रहण कीयो वेद विधाना॥ ता सब ता सकीयो विधना
ना॥ दिन दस पांच रह्यो मुझ पाही॥ दीओ मोहि रितदान तताहा ही॥ पुनि चलवे को मंसा न
धारी॥ ३० दसम की नमस्कार धारी॥ ३१॥ दो॥ तब मुझ विव कर जोर कै विनती करी अपा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ॐ॥
२४३
अस्वमेध

२॥ तुम तो उदम करत हो चलत वे को भरतार ॥३१॥ चौ॥ गुरभ भउओ मुझ उदर तुमा
रा॥ तुम मुझ को तजि चले भरतारा ॥ हम को आज्ञा दीये ऐसे ॥ मन क्रम करि हो
कृति तैसे ॥ जैमिनि कहै सुन जनमेजय भूपती ॥ जब यह वचन कहे बैत्रांगति ॥ तब पारथ
मुष वचन उचारा ॥ सुन हो जुवती वृतांत हमारा ॥ बडा भ्रात मुहि नृपति युधिष्ठि
र ॥ राजधरम करत हस्तनपुर ॥ तिः मुझ को आज्ञा कीनी तब ॥ ऐक वरष बनवा
सु कै रौ अब ॥३२॥ दो॥ सत्य कृपे नारद वचन धर्म तात भूपाल ॥ ऐक वरष बनवा
सु मुझ दयो सुन जत तब बाल ॥३३॥ चौ॥ ऐक वरष अब पूरन भयो ॥ मन तन का कते
स बिह गयो ॥ अब हम गवन करो हस्तनपुर ॥ बरनत पै रोग्या नृपति युधिष्ठिर ॥ तु
म पति आपुनी मात पठावो ॥ दै आदर गजपुरी बुलावो ॥ गर्भ तुमारे उपजै जो ईस
त ॥ राजन को राजा प्रताप युति ॥ यह हमा ज्ञा करि तुम रोता ता ॥ निज पुर चलत तभया
कुसराता ॥ लै बैठी पतिव्रत हम तव ही ॥ पूरन भयो मास दस तव ही ॥३४॥ दो॥ स
त्यभए पारथ वचन जनम लीयो तुम तात ॥ राजन को राजा भउ तीन लोक विष्यो
त ॥३५॥ चौ॥ अब पूरन भयो हम तुम सुखारथ ॥ चलि आउ सह हजे गह पारथ ॥ न
पति युधिष्ठर भ्रात पिता तुझ ॥ धर्मराज लागत सस रो मुझ ॥ हम रापति तुम राय
ह ताता ॥ लाग जवर न हो इकु सराता ॥ जैमिनि कहै सुन जनमेजय भूपती ॥ तब यह
वचन कहे बैत्रांगति ॥ सुनत वभ्रुवाहन हरषित मनि ॥ सुष सम्प हत हुं जेम न सुनग प

१

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ने॥ पुन पुन अस्तुति ने हृदे बीचारे ॥ आजु दिवस बड भाग हमारे ॥३६॥ दो॥ सपाल
पतिव्रत मात सुनत भयो संपूरण आजु ॥ गृह बैठे प्रापति भयो तै सषा यदुराज
॥३७॥ चौ॥ पिता चरन परि धारो सीसा ॥ सुनपति कृपा करी जुगदीसा ॥ महा बलाउ
नतात हमारा ॥ तुम्ह तीह छत्र धर्म जै कारा ॥ सुष्ष सहर त्रै लोक निधाना ॥ पार
थ मिन सेवक भगवाना ॥ सुन सों लोग कहत यह बाता ॥ नहीं बभ्रवाहन को
ताता ॥ दूए मात को दोष लगावहि ॥ ताते हम तीय अति दुष पावहि ॥ कृपा क
री हरि समसुन्दर जब ॥ मिट गए माता के दूषन सब ॥३८॥ दो॥ आजु दिवस ब
ड भाग मम सुपिता प्रगट भयो आइ ॥ सुफल पतिव्रत मात को पर सौं ता के पाइ
॥३९॥ चौ॥ पुण्य भओ अस्तुति उदै हमारे ॥ पूरन भए मनोरथ सारे ॥ जैमिनु कहै सु
नु नृप पति तब ॥ यह वचन कहे बभ्रवाहन जब ॥ पठ कुलगम विप्र पुंजो आ ॥ नृपति
बुलाइ लीए तब सोऊ ॥ तिन तें नृप पूछत यह बाता ॥ जे मैं मिलौं पिता को ताता ॥ सो र
विध सुज को कहि समझावहु ॥ वेद उकति कहि गह रुन लावहु ॥ नृपति बभ्रवाहन जो
रे कहें ॥ विप्रन को पूछ्यो अति आदिसर ॥४०॥ ब्राह्मण वाच ॥ दो॥ ब्राह्मण कहत सुनो
नृपति उचित तोहि यह बात ॥ सर्व सुले आगे चलहु पाइन लागहु तात ॥४१॥ चौ॥ रा
जु पाठ सम अरपण कीजै ॥ लागहु चरण मान वहु दीजै ॥ इक सौ धन षरचै सौ तरजु
व ॥ पजी पालें हुउ तार हत पतव ॥ करत दंडवत जाहु तत हालग ॥ हर्षित लागहु धाइ

न

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पितापग॥ सदासरन तुमआग्याकारी॥ तांते कीरति है तुमारी॥ पितुआग्याआनरु
तुमऐसे॥ मानीसुत पडुराजा जैसे॥ नौतन आपु लीपौ करराजा॥ कामिनतरुन
वद्धतनराजा॥४२॥ दो॥ तीय द्विघमंहि चिंता करै निरषवद्धनरतार॥ तातसो
सोगमंहि देषकै कीनो पुत्रविचार॥४३॥ चौ॥ जैवनवस्था आपनी पितुकौ॥ दैतम
योग्यति हरषति चितसौं॥ हैगयो बौडस वरष पितातन॥ दियदेहधारे ताताहींकिन
ला६ जुवती कौंन पम्रति सुषदीनो॥ मनई द्वादिश कीलीनौ॥ वी त्याग ऐकितने पुनकोला
पौवन फेर दी पौम पाला॥ वद्धतप्र सेनम यौन पमुतपरि॥ धन्यधन्य भीबाति आव
सर॥ कहिवभ वाहन कै ऐसे॥ पितुआग्या मानरुत मतैसै॥४४॥ दो॥ तवहिवभ वाहन
कौ पौउतम लोग वुलाइ॥ लीनौ भेट अपार संग चल्यो हृदै सुषपाइ॥४५॥ चौ॥ कौटर
कहार लीऐ काव रिभरि॥ हीरा मनगन रतन जवाहिरि॥ दैइस अपुत हस्ती मदमाते॥
महावली मद अंभ चुचाता॥ अंकुस घंट कनक केरा जत॥ चार सहस्र आयुत हयवर हूवै छाडु
त॥ चारस आयुत रथ भरे पर्ट वरु॥ तिन मंहि वज्रप्रकार के अंबर॥ अगनगन भेटइट्ठा
ई साथ्या॥ अश्वपत्र कौ लीपौ कैगाथ्या॥ सातिचल्यो सैना चतुरंगा॥ सहरवी पौध
वज्ररंगा॥४६॥ दो॥ अश्वधर नहारे चले द्वादश आयुत संआया॥ भेटकरनकौ
तातकौ सरवस लीनौ साथ॥४७॥ चौ॥ आगेएष वंधिन तकीने तव॥ कनैवेदधुनिकौ
उचारासव॥ चारवरन पुरके सभ लोगा॥ चले आनंदित जीय नहि सोगा॥ वजन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वर्तंत्रअनेकप्रकारा॥ सुरघनतंतवितंतअपारा॥ मगुनतीर्द्दूएपरैवैकः नैना॥ फा
इरहीअवनीपरसैना॥ घुमटरहीरजधरनिअकासा॥ र्द्दूएनपरतर्द्दूनेशप्रका
शा॥४८॥ दो॥ कहीवाततसुनीपैनकडुवाजतअतिपंचतूर॥ फाइरहीभूअगगन
रज्द्दूएपरतनहीसूर॥४९॥ चौ॥ फाइरहीसैनाअवनीसव॥ र्द्दूएनपरतधरनि
कोमगुतव॥ हैगैरथवहुकरभपदाता॥ अनगनकहतवनैनहींवाता॥ चपुवीअंधकारहै
गयो॥ भूअरजनसूरअंधाईतमभयो॥ कहेजैमिनमुनसुनजनमेराध्धिप॥ ऐसेवरुठोवभ्रवा
हतव॥ पांडवकीसैनाजोपजानो॥ युधकरनआवतसवधानो॥ तवदूतजमुषवचनउचारा॥
यर्द्दूनहिपारथयुधप्रकारा॥५०॥ दो॥ वर्द्दूगजतनपरअकंम्पकागावहिमंगलचार॥ चारवरन
असुनारनरसवआऐहितुधार॥५१॥ चौ॥ इकसोधनषप्रमानरहेयव॥ लीनीपागजुतार
नपतितव॥ कीएदंडवतपुलकतहीयेमग॥ लागोजाइधनंजैकेपग॥ सीसचरनपरदे
पुरेकेशा॥ भयोवभ्रुवाहनयत्तमेसा॥ पुनपुनअरजनकेपगलागो॥ पिताभाउर्द्द
पेअतिअनुरागे॥ कहिजैमिनसुनजनमेजयबाता॥ लागोजाइपितापगताता॥ कव
नकठोरकहेतवपारथ॥ रेकपरतजिकैपुरुषारथ॥५२॥ सुसकहेरतुमकवन॥ कहते
रातिपहनाहिं॥ अरजिनतिःअवसरमहाअतिक्रोधधयोमनमाहि॥५३॥ [illegible]॥
बा॥ कहिसवदीनवभ्रुवाहनतवा॥ कहोवृतांतसुनाइधिजैसव॥ पुरवकपासुनीपहमात॥ मोस
सक्तिभावसुनाइताता॥ जननीकहोपितातुमअरजन॥ तौलागोपगजाइअवनसुन॥ वचन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ॥ कहे पुनषि जे क्रोध युत ॥ रेकाए र तुम हो ताके सुत ॥ तुमरा तात होइ जो आवही ॥ बिनु संग्राम मिते
न ह्ली कवही ॥ तुम तिलजा इह न की नामा ॥ भित्यो आइ बिन हू संग्रामा ॥ ५४ ॥ दो ॥ तुम ऐसे जो पधा
रे उद्ध त्री भाषे नाम ॥ अरजुन नसुत कहाइ उँ स्रवि कीने संग्राम ॥ ५५ ॥ चौ ॥ [illegible] नाम मनि जदूषनके
तित ॥ तुम ऐसे सो उपाइ कीनो चित ॥ जो गंधर्व के कुल को होई ॥ कौ कुल हत्ते हो है सोई ॥ [illegible]
पक हावै राजा ॥ [illegible] ते [illegible] इन रन को काजा ॥ तुमरा काम मर्दंग बजावत ॥ गान करत तन टन [illegible]
चावत ॥ छत्रधरम को जो न हि जानत ॥ लागत चरन हार जय मानत ॥ प्रथमै तम मसाता [illegible] जाना
तुमता के लछन पहिचानो ॥ ५६ ॥ दो ॥ गंधरबुन सौं जो ऊ तीय तिन सुत सौं कहा कुज ॥ तुम गंध
र्बनि नकरम करत तुमको उचति निराजु ॥ ५७ ॥ चौ ॥ जो नप छत्री धर्म कहावत ॥ तौ ते कुलन कौ रक्षि
उपजावत ॥ गंधर्व नाम लाजत [illegible] आवत ॥ तौ ते छत्री वंस कहावत ॥ कुलसुभाव नर मिटत तनकै र
सै ॥ कोट जतन जगु जानि तते सै ॥ तुम अपुनै ऐसे जो पधारा ॥ गंधर्व का कुल मिटै हमारा ॥ तौ ते
दर्व भेट [illegible] ल्यायो ॥ [illegible] मारसु गतात कहत उ ॥ ५८ ॥ दो ॥ न [illegible] देख्यो आप [illegible]
री यह हवात ॥ गंधर्व कुल मेटन निमित [illegible] पारथ तात ॥ ५९ ॥ चौ ॥ न ह्ली देख्या रन मर्द [illegible] जैका
रा ॥ तौ ते ल्यायो भेट अपारा ॥ [illegible] पारथ सुत कहावी ॥ गंधर्व कुल को नाम मिटावी ॥ तु
म से सुत हम कै रो प्रकासा ॥ जो गंधर्व गृह करो निवासा ॥ तुम होइ छत्री गति के ताता ॥ हम
जानत है तुमरी माता ॥ उनका हे विभ [illegible] ॥ न चित विचएत द्धार द्धारपति ॥ हम
जानत हो तुम सुत ताके ॥ गंधर्व कुल के लछन जाके ॥ ६० ॥ दो ॥ प्रथमै मात संभार कै तो भी

अरजुन
२१

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पऊसुमतातत॥ हमतुमनाताकैनहागंधपतुमरीमातत॥६१॥ चौ॥ जैमिनकहैसुनऊपध्वि
वीपती॥ वैजैकहैवचकठनतातप्रती॥ सतकृतिनरादरसुतकोकीनो॥ सुतठाठाभयोहोइस्म
धीनो॥ पितावचनसुनभडोअधीरा॥ शोकवंततमरतदृगनीरा॥ कृसपुत्रप्रद्युम्नमाहतहविव
सुनिश्राउतति कालउहातव॥ वचनकहैप्रद्युम्नवैजैसुन॥ तुमतोभगतगुपालवलीपुन॥
कतिनहीसुतकोकंठलगावत॥ गजरथश्रप्रवकचनधनुपावत॥६२॥ दो॥ पुनपुनततमरा
प्रतकहावत॥ दीनभयोमनतुतनठरपावत॥ इकसभिमंन्यतुमारेताता॥ सूरातानलो
कवैष्याता॥ इकपहिदीनवैजैतुमरोसुत॥ अडभीत्योलेमेटखीजुतलेश्रम्राम्रासेंगभेटश्रपा
रा॥ पितापुत्रकोकीयोविचारा॥ दे॥ वैइकसहसभबजवती॥ सुतकरिकैठलगावतिश्र
वही॥ हमजैसेकोकरतनताता॥ अवहीव्याहिलेतपहमाता॥६४॥ दो॥ तुमकोकीनोवाप
इनमनवचक्रमभयोतात॥ सर्वसुतुमकोलेअल्यासहितआपनीमात॥६५॥ चौ॥ इ
सकाहेइप्रतापजगततव॥ वैजैसारथापितासेइजव॥ नामगंधवनकेभटजावे॥ अ
रजनेसुतइसजगतवुलावे॥ तातेलोकभिकरतधिकारा॥ पारथसुतमुषकहततउचा
रा॥ पहवचकहिपुनपुत्रगुपाला॥ हसयोहतरषहीयसुतनंदलाला॥ जैमिनकहैसुनऊ
भूपतिश्रति॥ नीचेदृगकरिरह्योवैजैसुत॥ अरजनसुतकोपश्रतधारा॥ सुतसोश्रतिकटु
वचनउचारा॥६६॥ दो॥ अरजनहृदेकहतहोकापरमातसंभार॥ संगगांधवनकेफिरे
तननैकरतपरहार॥६७॥ चौ॥ तुमकोउचिततमदंगवजावऊ॥ मातातोनटनितेकरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

म॰ स्प्रम॰ ५५

बहुरि तुम जैसो मुझ गृह सुत होई ॥ हमरा अर्जुन सु बैठे निह लोई ॥ हमरा सुत अभिमंन्य सुरव
र ॥ त्रिः कौ देख विचार कीयो हरि ॥ यह तो योधा महा बलवाना ॥ इन के बल कौ अन्त नहीं स
माना ॥ नहीं छांडे गान्धपके अजगपर ॥ नहीं कउ योधा बली इहि सम सर ॥ इह सम आन ब
ल नहीं कासो को ॥ का पाचवा हम ये ना सुई सके ॥ ६८ ॥ दो ॥ प्रहदा नाचक वृद्धि मन इंक्का सो र
ने दलाल ॥ वा चपरे नि सा न हि हो तम पावस काल ॥ ६९ ॥ चौ ॥ ऐसे सुत का हो हम ताता
सुरा तीन लोक विख्याता ॥ तुम का यरइ हि उचित न बाता ॥ मउ कहत बउ का यरता ता ॥ भाषा
जाम सुभद्रा को पुनि ॥ हम हैं तुम मसु तअर क लगुन ॥ जौ तुम हे तो पन हमारा ॥ तौ न करत
ता यमिलन विचारा ॥ जौ तुम पुत्र कौ पोह मसौं अथि ॥ जानलेहु गुरु कुल तुमरा सब ॥ १५ ॥
दो ॥ छत्रधर्म कहि ज्ञान नहीं गंधर्व जीतन की माइ ॥ यद्यपि तुम तो भये पापि है न गोत्र सु
माइ ॥ १६ ॥ चौ ॥ रूप का प्पा सुभ उमन जैसे ॥ सच्च वमदे तम ली पो तुम ते से ॥ वज रद्दा
न सभ नगर तुमारा ॥ गंधर्व लोग व सहि नर नारा ॥ क्रौध तपा रूप वचन कहे तब ॥ इन
का राजु छिना इले तु सब ॥ गंधर्व ते कैस प्रकहावे ॥ इन कौ उचित मृदंग वजावे ॥ ऐका
पर तुम राजु दीजो फिः ॥ तत छिन लेवज लूट राज इह ॥ वज रोज हम हमातन बावे ॥
गर मधि डार पखा उझ जावै ॥ १२ ॥ सो ॥ कौ डानि मत अधीन यह भ्रम तुष्कि र तस भयार ॥
यह कहि वि जै ए सा इअत चाप कमारे चार ॥ १३ ॥ जैमिनी ॥ ॥ चौ ॥ जैमिन कहत सुनज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भपतितव॥ वचकठोरकहे अरजनजव॥ वऊरवभ्रवाहनविनतीकरी॥ लेघाकोम
स्तकपितपगापर॥ कहैवभ्रवाहनसनताता॥ मुजधारी मनमेयकवाता॥ पितास्यं
युद्धनउचतहमारा॥ मानतीजउदेदविचारा॥ तुमममाताममुजदोषलगायो॥ गंधव
कोकुलभाषसुनाउ॥ अवमाताकोदोषुउतारो॥ जवहारनमहितोहिसंघारो॥ १४॥
दो॥ गोत्रहमारीमातकालजमतंज्ञादेष॥ कैदुहितगंधरपभईकैपुत्रीभइसेष॥ १५॥
चौ॥ गंधपहमरीमतहोततव॥ रनमहितुमसोहारिजाउजव॥ आवपषाउचततवमो
को॥ सुनमहतकहोजपापहैपतोकी॥ अरूजासेषसुतामुजमाता॥ हमहोमनववक्रम
तः ताता॥ तोतुमराअवसोसुउतारो॥ सेनतुमारीसकलसंघारो॥ तोहमचैत्रांगहीसत
नाही॥ जेमनतुजैमारोरनमाही॥ मातअजसुसुनभयोसंतापा॥ अवतमथजैसंभारउ
आपा॥ १६॥ दो॥ ऐसेवचकहितउठचलेमहाक्रोधजीयधार॥ सैनाअपुनीमहिहगयोकी
नोहदेविचार॥ १७॥ चौ॥ व्राह्मनएअरुकन्याकपजासव॥ पठदीनीअपनेपुरकोतव॥ स
वसैनाप्रतिवचनवषाना॥ वेगकरहुसवयुधसमाना॥ सुनेऊभवनदेसभवलवाना॥
शसूवाधहेवऊसवधाना॥ नगरमाहिसैनापुनिजेऊ॥ लईवुलाइसकलरनसोऊ॥ नृप
जनमेजैपरछुकोयोपुनि॥ संवरूमऊतिमटावऊजैमुनि॥ अरजनजानतभलेप्रकारा॥ वभ्र
वाहननृपतातहमारा॥ १८॥ दो॥ पारथअपुनेसमेकोसमासमऊनाहि॥ अपनासुत
नीयहजानकैकतीकाराउपाधि॥ १९॥ चौ॥ जैमिनकहैसुनहुभपाला॥ गहनगरडगतिभा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२५१॥ नंदलाला ॥ वचन सुर सुरी सब करन कहित ॥ तांते विधना बुद्धि हरी चित ॥ होन हार हो है
पुन जैसें ॥ कोट उपाइ किये तिन हीं कैसे ॥ पिता पृति जू आवन काजहि ॥ ऐसे ठाकुर ज्योज
दुराज कहि ॥ लषी परत नहीं भगवन की गति ॥ वैजै हू दैत वभयो कठन अति ॥ सुन नृपक
पाही येध धरि भाऊ ॥ पूरन भयो उनतीसो ध्याउ ॥ ९ ॥ ६ इति श्री भारथे रघुपर ऐ श्री अश्वमेधे
व्याने ॥ उन तीसमो भाउ इति कनपरन जाना ॥ २९ ॥ समस्त ॥ जैमिनि नोवाचः ॥ चौ ॥
जैमिनि कहत सुन जनमेजपाला ॥ सुन कुश अवन दै कपा विसाला ॥ चमत्कार भवान को अनुगन
भई इक चमत्कार सरन कहित जव ॥ नृपति आपने पुर महि गऊ ॥ माता को वतलि तु कहि दयो ॥
पितका दूषन भाष सुनाऊ ॥ वात कहित जाय माहि रिसाऊ ॥ पुन वोला चिंता गति माता
सुन कुश अवन दै हमरी वाता ॥ दूषन तुमरी मात लगायो ॥ दुहन सभा महि कहि समझा
यो ॥ १ ॥ दो ॥ अव सुत तुम कोय कहि उचत दूषन मात निवार ॥ नर दूषन मुज को कहे ऐसे
वचन भरतार ॥ २ ॥ चौ ॥ युद्ध करज सन मुष है ताता ॥ वल कर देषउ तारे माता ॥ को जै
पुध पुत्र वलवाना ॥ है तुम सरिस सत्य इ भगवाना ॥ हमरा कुल पति व्रत हरि जानत ॥ पाय पुत्र
सम विध प हिचानति ॥ जो पति व्रत दंड अचल हमारा ॥ तो तुम्हि युध है इ जै कारा ॥ पिता ते
वली तै वानन सों ॥ दुषद जै उनके प्रानन को ॥ कहि आपनाइ से लहि दिषावउ ॥ पै न समरन
सो रन तपतावउ ॥ ३ ॥ जैमिनि नोवाचः ॥ दो ॥ पहत वच चिंत्रों गति कहे सुन जनमेजराइ ॥ व
ऊ रिव भवा हन वचन जननी को प्रगटाई ॥ ४ ॥ चौ ॥ कहै व भवाहन सुन माता ॥ मु ज मा

॥ श्री अश्वमेध ॥

॥२॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तौनिगमनकीवाता॥ हाथजोरठाढ़ोपितआगे॥ दीनीभेटहीयेअनुरागे॥
रैसोमनसाकीनीप्यामुझ॥ सुनमातावचसत्यकहेतुम॥ हमएकलोकि
रावोवाता॥ जीतदेउपितकोसभराजा॥ अरजनकोगजपुरीपठावो॥ हमर
तुरंगिकेपाछेजावों॥ पहुंचावोहयकोहस्तनपुर॥ पजाकेरैगान्पपतियुधष्टर
५॥ दो॥ हमरीमनसायहहुतीपितावुद्धिविपरीति॥ दुषनराषातुमविषमअवभ
ईउलटीरीति॥ ६॥ चौ॥ अवजिनिरदोषकरौतुममाता॥ करौचमूजीतिपितरनघाता
जोवनतेवरमरनहमारा॥ सम(?)वाचमुझभयेधिकारा॥ तौतजहुमरोरनमाही॥ जो
यतवचुतैकेदुषहोनाही॥ मातातेआज्ञालीनीतव॥ आपोआपुनीसेनामाहिजव॥ आ
ज्ञाकीनीसभसेनापति॥ उद्यमयुधकरोमनहरषी॥ शंषशवदकीनेसवयोधा
काहरदुरेसूरमनक्रोधा॥ ७॥ दो॥ चढ्योवभ्रुवाहनवलीमहासवलदलयोर॥ अतिव
चतुरशवदभयोआचोपितकीओर॥ ८॥ कवित्त॥ चल्योसवलदलसाजवभ्रुवाहनरि
साइमन॥ हैगैरथपायकअशेष॥ दुंदभधुनिआनगगन॥ सेषचक्रपरहस्योइंद्रद्रग
सनकंप्यो॥ उछल्योद्यौसमेरकुमेरसपतसागरजलठंप्यो॥ दिनमनिप्रतापसमअसिट
गयोअंधकारदसदिशभयो॥ दिगपालईशमनभयकंजुपितापुत्रसनमुषभयो॥
९॥ कवित्तछपैई॥ सुतकीसेनानिरषभयोपारषअचरजमन॥ कालप्रकारनिहारता
तकोभयोविपलमन॥ प्रलैकालकासमैहोतक्रुधतशंकरजिम॥ महावभ्रुवाहनरिसा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्व मेध

इमि घोसन मुषतिम॥ नहीं छाडै गामु ऊझाऊ यह चंत॥ चिंता अरजन करत॥ अवरवि
परीति कठन वन्यो विधना गति ली बना परत॥ १०॥ जैमिनोवाचः॥ चौ॥ जैमिनु कहै सु
नऊनत्व वेना॥ विजै निरष कै सुतका सेना॥ महा सोग चिंता वसि भयो॥ दुषउपज्यो जी
पसु षदुरगउो॥ करन पूत अरी हरि के ताता॥ दोनो कही विजै प्रति वाता॥ प्रथमे इनसों
युध हमारा॥ ऊज्यो गेरनन भते प्रकारा॥ सुन पारथ चिंता जिन कीजै॥ युध करै हम आज्ञा
दोजै॥ यह वच कहि [illegible] सरकसि मारे अति क्रोध॥ दोऊ सनमुष भए॥ वृद्धमान रुनर
के चलि गए॥ ११॥ दो॥ प्रथमहि हरि सुत सात सर कसि मारे अति क्रोध॥ अवत वानन निहार कै हसो
विजै सुत योध॥ १२॥ चौ॥ फुलहापन सों टूक टूक काने॥ अपुने निकट न आवन दीने कौ
ल्यो आधक वभ्रवाहन नमन॥ वचन कहै सुन प्रद्युम्न मन॥ आप संभारहु अ
वत है सर॥ यही वचन कहि ली योध नुष कर॥ तीन वान छाडे सनमुष तव॥ छाडे ति
कीनो सरून गगन सव॥ मति कोऊ ऊपर करै निवासा॥ तीनै लीनो छेद इमका सा॥ वान
पिंजरा रचि दिड कीनो॥ पोढ वकटक घेरि कै लीनो॥ १३॥ दो॥ सर पिंजर को देष कै हरि सुत
कीयो विचार॥ तोरैं पिंजर प्रथम हम पाछै युध प्रकार॥ १४॥ चौ॥ यह विचार गह धनुर सु
त कीनो॥ क्रोधवंत भयो धनुष कर लीनो॥ दैक सीस छाडे दस वाना॥ ईक सर सों पिंजरा
गराना॥ पुन षट सर षट सहस भए तव॥ हैं गै रथ पाइक मारे सव॥ तीन वानन सों
नमुष चलि गए॥ रथ असवार थको वेधत भए॥ कर गहि वरम वै जै सुत तालीनो॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दसवानननकोषंडतकीनो॥ पारथसुतरथअवरमंगायो॥ नपोअरूडक्रोधउपजायो॥
१५॥ दो॥ रथअरूडह्वैवजैसुतहांडीदीयोइकवान॥ रनमहिपापतिभयोसरससहसप्र
मान॥१६॥ चौ॥ रोकवाननलागोहरिसुततन॥ लेगयोगगनउडरतिसोकिन॥ अवरसर
नपारथकीसैना॥ हनीनिकरकतीपरतनिवैना॥ सैगैरथवहुहतेनृपदाता॥ अनगन
वम्हकरीवजघता॥ करनपतितवदेषतभयो॥ हरिसुतकोसरनभलेगयो॥ नासुनभर
योदेहम्हरछायो॥ भ्रमअकाशपुनधरनिगिरायो॥१७॥ दो॥ क्रोधतिसोरुनीवनकैस
हदेधाइहरिध्यान॥ पारथसुतकौब्रम्हसवम्ह छोड्यतप्रमान॥१८॥ चौ॥ पारथसु
तआज्ञाकीनीतव॥ होइपरसपरयुधकरअव॥ हस्तीस्युहस्तीजुरिगए॥ अस
निसोहयसन्मुषभए॥ रथस्युरथपायकस्युपायक॥ सच्योयुद्धसैनाभईघायक
क॥ जहांतहांयुधहोतभयोभारी॥ लरतिनिशंकअरभैकोरी॥ चारवानवृषके
तअवरपुन॥ कसिमारेदसतातकालगुन॥ नपतिवभ्रवाहनकोस्वारथ॥ पठ्यो
अकाशकीयोपरुषारथ॥१९॥ दो॥ कुव्योवभ्रवाहनहीयेदीएविशिषदशछोर॥
दशासपितेदससहससहैचलेकरनसुतओर॥२०॥ चौ॥ सरनिउठाइलीयोवृषकेता
ठाढेयोधएकएम्हहिमचेता॥ वजरिपरेसरसेनामाही॥ हनेयोधराबेयाकोऊनाही॥
मारतवानभएविलततहा॥ ठाढाथापारथनिजजहा॥ अरजनभिरषोअपनीसेना॥
नासभईअवलोकीनैना॥ म्हछितहरिसुतकहांजजहा॥ पारथगयोहाकरस्युता

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२ ॥
५२ अश्वमेध

ता ॥ दो० ॥ नैन देखि अति कुसलाता ता । मूर्छित भए भई न तहि घाता ॥ २१ ॥ दो० ॥ पारथ पवन तु
लाइ कै मुष अचवा पानी र ॥ मूर्छा उतरी दुहन को भए सुचेत शरीर ॥ २२ ॥ तौमि नौ
ता च: ॥ चै ॥ तौमि नुक हैं सुन प्रजाना ॥ दो नो स्व रभ पे सवैधाना ॥ धन त्रुवान लीना
पुनतापा ॥ चतुरंग नीच मूक रिघाता ॥ अति क्रोध तिसन मुष आ ऐरन ॥ को उ ववाह
न विचार मन ॥ मूर्छित गिरत उठत यहततिछिन ॥ अजु हस्नेनासभ उ इन के तन ॥ गये
निकट चलि अजुन ताता ॥ क्रोध ति कही दुहनि सौं वाता ॥ तुम तौ छत्री धर्म नहीं जानत ॥
युध बीच अपुना मत ठानित ॥ २३ ॥ दो० ॥ एकवार बलि हरि केसुर गिरे धरमाहि ॥ र
तिः योधा को रन विषे युध उचित फिर नाहि ॥ २४ ॥ चौ० ॥ तुम तौ वज्रत भए मूर्छित रत
म त कस माननभ ये तुम रे तन ॥ एकवार जो उरन मूर्छित हारै ॥ वज्र इन है इति स [illegible] जे
कारै ॥ यह वच सुने कृष्ण के सुत जव ॥ चार वान ती इन को ठ तव ॥ चार वान व बके त
नि कारे ॥ अति विकराल मतु मै कारे ॥ भ [illegible] ताइ ब अवाहन को ॥ कंटक सम लागा अम
तन को ॥ वज्र रिवैजे मतपछा पैन सर ॥ [illegible] र दो [illegible] पारथ सैना पर ॥ २५ ॥ दो० ॥ नासक
री सैना वज्र तव ज्र रिपवन के वान ॥ दुकसी सछाडो [illegible] त वहि अरजुन सुत बलवान ॥ २६ ॥
चौ० ॥ करन पुत अरु सुतनंदलाला ॥ दो ऊ पठे सातमे प्याला ॥ तव पारथ देषा निज सै
ना ॥ मूर्छित विकल रविलोकी नैना ॥ नासु भई जव सैन अपारा ॥ तवपारथ जो पक रो धव
चारा ॥ त हा पर मूर्छित हरि ताता ॥ अरु वषके तसुर विष्याता ॥ तहीं है रअरजुनच

१५ रो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लगि उठौ ॥ उन कौ निरषि षंत पुति भउ ॥ संभ्रम तद्वि करी प्रद्युम्न पर ॥ भउ सुचे
त उठ्यो सुत गिरधर ॥ २७ ॥ दो ॥ वज्र उठ्यो उठि करन सत दै नाम पै सुचेत ॥ पुह
रयो सुत वज्र सो हरि सुत अरु वृषकेत ॥ २८ ॥ चौ ॥ करन पूत अरु सुत गिरधारी ॥ रच्यो
युध सैना अति भारी ॥ चार वान वृषकेत निकारे ॥ चारो सर हरि सुत कर धारे ॥ कर रक
त्र फाडे सन मुष रत्न ॥ वेध तिकौ उौ वभ्रुवाहन तन ॥ फूल सैत मारत कौ उ जैसे ॥ अरत
त्र फाडे सन मुष रत्न ॥ पर वसि वानधि जै सुत मारा ॥ सैन वज्र कौ करी सँघारा ॥ तौ इयो
न सत लागे सर तैसे ॥ धरन गिरे मूर्छित है तहा ॥ २९ ॥ दो ॥ वज्र इव भ्रुवाहन कौ वान
धाहाडे रन जहा ॥ धरन गिरे मुर्छित वृषकेत पर तार ॥ ३० ॥ चौ ॥ वेधत की ए सरन से
अरे मे चार ॥ चौसर हरि सुत कै हने वृषकेत पर तार ॥ अरजन षीत भई तिः काला ॥ उठ्यो तव वै दानव अ
दो ऊ ॥ वज्र गए वज्र उठन तै सो ऊ ॥ उठ्यो तव ॥ उठ्यो हं सधुज पुत्र सहित सव ॥ कृत वर मात
नु शाला ॥ पै वना सस संहित तउठ्यो तव ॥ प्रथ्य सहित्यो आन सालन एक सर ॥ छूर
द व वल वाना ॥ भए सकल याधे सवधाना ॥ रथ्य षहीन की पापा रथ्य ताता ॥ वज्र रो सैन करी वज्र घाता
तम पाास हंस सतिः अवसर ॥ वैदी पेसति सरइक कौर ॥ रथ्य समेत अनि सांकि लेच
३१ ॥ दो ॥ कौ प्यावभ्रुवाहन तव दी पे सति सरइक कौर ॥ नासन भयो देहम कीउौ ॥ कौ
लि उौ न भउौ र ॥ ३१ ॥ चौ ॥ नभ भ्रमाई कै धरनि गिरा या ॥ नासा ॥ कादी धुजा तुरंग सम सा
धतिउ ठ्यो नृपति पै वनासा ॥ सैरहति पोर रथ्य स्वारथ्य की ए नासा ॥ पै वना सम्र्हित कर जा
रे ॥ इन वलकौ उौ रकम सरभ पकारे ॥ वज्र इव भ्रुवा हन सरमा रस्या ॥

रै
त
ल
रक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५४
जिर २२
प्रसम
५

सो॥ बऊरि हंस धुज के सुत क्रोधे॥ सनमुष भए मन्हा वल्ल पोधे॥ सैना पारथ के सुत
कीतव॥ वक्र तकरी संघार तहातव॥ ३३॥ दो॥ अति क्रोध तिम पोवि जैसु तव बुसुर
मसो धइ॥ वचे जते तो सुरमा सकल दीये म्हर छाइ॥ ३४॥ चौ॥ है सचेत मध्य मूर्छा
तव॥ देष्या चिंता सहित तपाल ग्यन जव॥ पाछे रह्यो न ही को ऊपोधा॥ महा वभ्रवाहन
जीप क्रोधा॥ कहै ति विजै सुनसुत नंदलाला॥ देषी पतस्रा जस्रापनो काला॥ अपना
स्राप ज्ञान मुझ घाऊं॥ ऐस कह स्रापुनाका लमंगाऊ॥ तुम पन हम सकीयो तिः अवसर॥
व क्रोध वढ्यो हम स्रा तितिः अंसर॥ फेर पठे स्रुति पाठक ब्राह्मन॥ कंन्या [illegible] करी कीयो मतो
नमन॥ ३५॥ दो॥ नगर माह तजन पुत्रा को कीयो निरादर मोष्ह॥ ता ते हम मरा नासु अ
वसा चु कहित ते तोहि॥ ३६॥ चौ॥ जानै तत्तो पहि सगरी वाता॥ लागत है पहि हम रोता
ता॥ तिः निरदूषन की यो धिकारा॥ जानो नही यह कौन प्रकारा॥ कैसे की जै सुत नंदला
ला॥ हृदे देषि चोर करो ततकाला॥ कहि हरि सुत सन भगत मुरारा॥ यह अधिना नही
मा वरु विचारा॥ यह कहि हरि सुतसन मुष वगयो॥ चाप सग निस रसंधत भयो॥ क्रो
धत है षाडेया अरि सेना॥ जर गई सभ कहीं पतिन वैना॥ ३७॥ दो०॥ कोप्यो वभ्रवाहन नृपति
छाडि दीयो जल वान॥ अग्नि मेघ हि र छ्या करी पुन कोप्यो वलवान॥ ३८॥ चौ०॥ द्हू नेति विजै
सुत वान अपारा॥ पारथ प्रेना क दीये संघारा॥ तुमल युद्ध दुहादिश भयो भारी॥ अरजन की
सेना मह मारी॥ सुरीव टारी जम थर लरई॥ सनमुख घाउ लेहि न हिडरही॥ है गैरथ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हेंगे रथ वजुणी रेपदंता ता ॥ अनग रोग भए रन घाता ॥ वजु दिउ उठे पारथ के योधे ॥ युध
करन हित समिति दीप क्रोधे ॥ प्रथम से उठ्यो दैत अनसाल्ला ॥ वजुरो योवना सम पाला ॥ ३८
॥ दो ॥ मर्छा छुटी उठे स विनायक सैना जोरि ॥ भर षब वभ्रुवाहन वली तीय क्रोध अति भयो र
सो रि ॥ ४० ॥ चौ ॥ सांध्यो वजुरि हल किल वाना ॥ नसहे इतिन की लीये घाना ॥ सो सर
कसि मा हे अनसाल हि ॥ मूर्छित धरन पर्यो तत काल हि ॥ वजुरो योवना सम पाला
सन मुष हो तम यो तिह काला ॥ तत छिन तिसहि वजुर म्हर छायो ॥ ऐक वान हनि ध
रनि गिरायो ॥ वजु देव जे सुत हदै ऐसा यो ॥ सभ सेना प्रति वान चलायो ॥ यौ न लीज
जिम उठत क पासा ॥ तिम सब सैना भ्रमति आकाशा ॥ ४१ ॥ दो ॥ नभ ते भ्रमसु धर परि गि
री सकल म्हर छाई ॥ पुन भ्रवगु म्रस चेत है सन मुष भयो ऐसाइ ॥ ४२ ॥ चौ ॥ हय सुत
सर आरंभ करि जो लै ॥ हन्यो वभ्रुवाहन सर तोलै ॥ कुसत ता तके धधरनि गिरा ऊ ॥ अति
हाथि ह्लल करि म्हर ठाउ ॥ सो तिक कुत वर मा पुन आठो ॥ योवना स सुत सहित पसाउ
नृपति हंस धुज सुत निसहिति तब ॥ पुन आठो दल जोर ऐ ऊ सभ ॥ जतेज ऊ योधा वर
लवाना ॥ ठाठे भए आइ स बधाना ॥ वालक नाग फास सएि साध्यो ॥ मास्यो बान सभ
न को वाध्यो ॥ ४३ ॥ दो ॥ नग फास सर छाडि कै वांध लीए सभ योध ॥ नृपति वभ्रुवा
हन नहीं ऐ नेक मिटति न हीं क्रोध ॥ ४४ ॥ चौ ॥ उठे नील धुज पावक दोऊ ॥ ससुर जमा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२ न्पति केऊ व्याव अवाहन तव ॥ पवनबान तिः और रचला यो ॥

त्रैलागति सोऊ ॥ पावक मुष ते अग्नि निकारी ॥ पारथ सुत की सैन संघारी ॥ गतु रथ अश्वप
दांत जरे सर्व ॥ ससुर ज माञा गगन उठाऊ ॥ लागा भ्रमण नभ पवनचक्र पए ॥ हैगय आंधिआ
कार तिः अवसर ॥ पवनचक्र बाला उलटाई ॥ पारथ की सैना मति आई ॥ ४५ ॥ दो ॥ हैगैरथ
पयक निकर सैन करी बहु घात ॥ पावक को बहु दुष दी ऊ बली बिते के तात ॥ ४६ ॥ चौ ॥ पारथ
अपुना कटक निहारा ॥ निरषत चिंता बढी अपारा ॥ मूर्छित भए सकल बलवाना ॥ देषी पा
त कोई नर न सवधाना ॥ महाबली सिससुर तु माञा ॥ ते ऊ भये मूर्छित रन घाता ॥ अर
जन सुत देषी सभ सैना ॥ मूर्तक भई देषी निज नैना ॥ बहुरि बिन्नै की चमू निहारी ॥ केऊ भ्र
तक के ऊपर दुषारी ॥ रह्यो न कैसा बीच पुरषा रथ ॥ पादु रहे ऐकलो पारथ ॥ ४७ ॥ दो ॥
दूषन मातपिता उभ्रव मु गई सही सो काम ॥ अरजन के सैन सुब चल्यो धार ही ये संग्रा
म ॥ ४८ ॥ चौ ॥ नदी रुधर की बही बीच रन ॥ परे तिह धर पर धर अग नगन ॥ मारग तहा
कौऊ नही पावे ॥ तिः मारग है पित पढि ताजे ॥ कौऊ उवभ्रवाहन विचारत तव ॥ रन ते दूर क
रो कबंधसव ॥ मदन मार राकस बलवाना ॥ तिस ही बुलाइ ली यो धर ध्याना ॥ प्रगटे ब्र
ह्म निसाचर तहा ॥ बहु दिन के तु धारय्य महा ॥ धार रूप दारुन बिकराला ॥ आऐ सब र
नमहि तत काला ॥ ४९ ॥ दो ॥ दोई लाष राकस बली बलि आऐ रन माहि ॥ तब हि बभ्रुवा
हन नृपति आज्ञा दीनी ताहि ॥ ५० ॥ चौ ॥ यह हर न मृतक सभ भागे तु मारा ॥ इकासो की जै
आहारा ॥ हैगैरथ स्वार रथी पदं ता ॥ बहु तम येते हर र न मृतक घाता ॥ इन सभ के भछ
न करि लीजै ॥ यह कारज को बिलम न कीजै ॥ राकस हृदे आनंदित भये ॥ बहु दिवस

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नके दुषदुषिगए ऐ ॥ वऊ तकाल लरनु धधारयु अतिमन ॥ नेगललताहि गजनम षवनकेत
न ॥ चौ ॥ वतको ऊ वरनको जैसे ॥ चरवनकर तचनन के तैसे ॥ ५१ ॥ दो ॥ युद्धमहि
बालीकरी हस्ती अस अपदांत ॥ बाइ गएइक निमषमहि ते ऊ जुते रन घात ॥ ५२ ॥ चौ
॥ पाव हि रुधर तेहि हरषत मन ॥ तु चाग जन की लेहि पर तन ॥ स्ना तद पदकौ उर
मनहि मेलहि ॥ करहि कलोल परस्पर षेलहि ॥ अस पुंछ लेधार हि सो सा ॥ वर्मप
हर तनकर हि अस सीसा ॥ महा प्रसंन भऐ वऊ ना चहि ॥ भोग हि भोगजे ऊ मन वा
दहि ॥ धंन्य धंन्य कहि पार्थ ताता ॥ प्रि: हमरा कानो कुश्नराता ॥ जन्म अरजनस्ह त
यत्र रचायो ॥ हमको देअहार सुचिप तायो ॥ ५३ ॥ दो ॥ बालीकी नीम मिरन राऊ कीर
यो हितु धार ॥ वेदा हेइ राकस चले आनंद हिये करधार ॥ ५४ ॥ चौ ॥ बालीकी नीव
ऊत भए भिरन ॥ पहकार जनको योवृह राकसन ॥ ईक ईक राकस इति नेताारा ॥ भहन को
यो सुर्छत ध्रि: वारा ॥ ईक सहस्र गज ईक इकषा ऊ ॥ ईक ईक अयुत तुरंगम पाऊ ॥ ईक ई
कलाष पुरुष मुष वासा ॥ पीगऐ रुधर मिटी जी यप्यासा ॥ कोहा वृम्र बा हन बलवाना ॥
ताऊनिशा चर निजु इस्थाना ॥ जब देष्यो बाली मगु भया ॥ सुत पित के सन मुष चलि ग
या ॥ ५५ ॥ दो ॥ नकर जाई कैपिता सो वचन कहत भयो तात ॥ अरजुन सो ही युधकर हुवे व
वनहि नहि वात ॥ ५६ ॥ [illegible] ॥ चौ ॥ जैमिनु कहे सुन ऊ भूपति वर ॥ पहु विधि आन
रचीगरवर धर ॥ आपस्ह रस्ह री सत्य करन हित ॥ ता ते रची रमापति यह मति ॥ तबी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नपरतनिरापनकीगति॥ करनकरावनहार जगतपत॥ होनहाररहेहेपुनजैसे॥ को
टउपाइमिटतनहीतेसे॥ पितापुत्रसौंयुधसमाजा॥ आनवनाओश्रीयदुराजा॥स
नऊकथ्यानलपहीचरिभाउ॥ प्रनभयोतीसमोध्याउ॥५१॥ इतीश्रीभारथपुर
नेभावेः॥ अस्वमेधपर्वभाषा॥ तीसमोध्याउ॥ कृतनपूरनजान॥ समस्त॥ चौ॥ जैम
जैमिनकहैसुनऊभूपाला॥ अतिअचरजलीलानंदलाला॥ सुत्तेना
सुकरावतिताता॥ लिषीनपरतिकृष्नकीवाता॥ पारथसुतकेसनमुषआओ॥ हत
नेपांचसरहृदेरिसाओ॥ रथ्थस्वारथ्थीवभ्रवाहनको॥ ततछिनतोरिआराओरनमेभा
षंठनकररलीनेवहवाना॥ अरजनसुतसरवलवाना॥ वऊएवेजेसुतवचनसिषाना
कुंतीसुतहजेसवधाना॥१॥ दो॥ कोप्योवभ्रवाहनवलीतीनवानदीयेछोर॥ रथ्थ
स्वारथ्थीअरजनसहितपठेगगनकीओर॥२॥ चौ॥ गगनभ्रमाइठारदीयेभूपर॥ म
हाकष्टतनभयोफालगुन॥ रथ्थविहीनताहीछिनकीनो॥ अरजनेमहाशोकमनकीनो॥ पारथ्थदेषीअपुनीसेना॥ कोऊनिपोधवीलोक्योनेना॥ चंतापुतमनमाहिविचा
रे॥ ऐसेयोधेऊतेहमारे॥ कोऊनिछाठ्योइनइहअवसर॥ केऊमृतककेऊमुर
छावरेधर॥ हमदेषततिनिजवलहारा॥ रथ्थविहीनजोयचिंतविचारा॥२॥ दो॥ सु
तकुंतीतकारूपमुछितछिएपरतइहभाई॥ नासुहमाराकरैगाआयोमहाएसाइ॥
४॥ चौ॥ वऊरोवेजेक्रोधजोपधारा॥ सहस्रवानसुतकोकसिमारा॥ मूरछितभयोव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भ्रवाहन नतन ॥ ऐक घरी पर रउठो वज्र र रन ॥ खंडित कीने ऋर जीन के सर ॥ क्रोध्यो धनं
जै सुत तिः ऋवसर ॥ कंटक छी न चुभत तत जैसे ॥ ऋमु पायो पारथ्य सुत तैसे ॥ लीनो
धनुष वभ्रवाहन पुन ॥ कहयो संधार ऊ ऋाप फालगुन ॥ सुत वान पुन कीये प्रहाश
भ ऐसा तते सात हह जारा ॥ ५ ॥ दो ॥ वेधत कीने विजै क्रोध न परस्यो उलटाइ ॥ वभ्रु डुष पाजे
ष्ट्र सुत सिरु तल ऊपर ऋाइ ॥ ६ ॥ चौ ॥ रथ पृष्टटा ऋति विकल भयो तन ॥ वभ्रु रि ऊठो ऋाति
वठी चिंत मन ॥ निषुर गऐ तरकस ते वाना ॥ भाषत वचन ऋ ले भगवाना ॥ क्रोधति धि जेह
ने पुन दससर ॥ छूटत भऐ लाब दस तत तपर ॥ वभ्रु दिहैं त भऐ ऋभित ऋपारा ॥ तव पारस्य
सुत चक्र संभारा ॥ खंडत कीने वान ऋनेका ॥ ऋने गगन की यो न जाइ ववेका ॥ भयो वभ्र
वाहन क्रोध ति ऋति ॥ ऋग्नि रूप सरहत न्यो विजै प्रति ॥ ७ ॥ दो ॥ तिः सर रऋ रत नथ नष कै
लीऊ प्रत चजराइ ॥ ऐसे जान्यो विजै मन काल पहूच्यो ऋाइ ॥ ८ ॥ चौ ॥ ऐक वान न ही
लगै हमारा ॥ होइ न हीरन मघ्ति जैकारा ॥ गुन कुवेठ का तोर जरा यो ॥ जातो का ता निकट
मृष्ति ऋाऊ ॥ देषत ते ऋपस गन विधाना ॥ निश्चै नास सताइ मुरुप्राना ॥ जो कर रवि ने भ्रि
लो ऋवताता ॥ निंद हि तस रउ चित नही वाता ॥ यह उठा हो रन काल प्रकारा ॥ माता को दुष
न जीप धारा ॥ ऋाजु न छाडे गा मु ऊको यह ह ॥ सन मुषाम यो वभ्रु ऐसे से कहि ॥ ८ ॥ दो
धनुषवान दो न ऊत जै षडुग चरम ली ये हाथ्य युधर च्यो क्रुधित ही ये पिता पुत्र के साथ्य
१० ॥ चौ ॥ प्रथ्यमे ऋरजन षडु प्रहारा ॥ दैक र ऊर ताततन ऊ रुयो ॥ षंडित की यो षडुग के

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ॥
२५०
अश्वमेध
रामाइ
ए

बालक॥ अपना षड्ग काढि तति कालक॥ काटि लीयो अरजन को सीसा॥ ऐसे पाइक्का
जगदीसा॥ ततक्षिन उतर परयो धरनी तव॥ पारथसुत प्रहार कीनो जव॥ जैमिनु
कहै सुनऊ भूपाला॥ यह गति रची नंदके लाला॥ ११॥ दो॥ सत्य करन लग गावचनहू
रन विजै अभिमान॥ तांते इह कारन कीयो इछा सों भगवान॥ १२॥ चौ॥ कौतक देषत भ
ऐ देव सव॥ चढे विवान ऊपर ठाठे नभ॥ पिता पुत्र के युध परस्पर॥ सुरल सवत इ
कासों हरे॥ प्रभु कीयो जतन मे जे हित पति॥ तितु धएषु छो जैमिनु मुनि प्रति॥ आगे के
वहुन भई यह वाता॥ कीनो जुध पिता सों ताता॥ आगे को ऊलस्यो विधि ऐसे॥ पारथ
अरू पारथसुत जैसे॥ जैमिन कहै सुनऊ भूपतिवर॥ युक्रम पोत्रे ता के अवसर॥ १
३॥ दो॥ त्रेतायुग महि कुसलव युध कीयो पित साथ॥ उत ते सीता सुत भयाई इते श्रीर
घुनाथ॥ १४॥ चौ॥ त्रेतायुग महि श्रीरघुनाथहि॥ कीनो युध कुसलव साथहि॥ क
हि जनमेजा जैमिन मुनि प्रति॥ मुझ यह कथा सुनावऊ हरषत॥ लव रे राम सों सी
पसुत जैसे॥ मुझ कहि कथा सुनावऊ तैसे॥ जैमिन कहै सुनऊ भूपतिवर॥ कहो
कथा सुनले ऊश्रवन धर॥ जैसे लव रे राम स्यों ताता॥ तुम को सकल सुनावो वाता॥
रघुवर नासु कीयो रावन जव॥ राकस हने लंक लूटी सव॥ १५॥ दो॥ सुन राजा सेहु
पसुह कथा सुनावो तोहि॥ सुनी महा विस्तार सों वालमीक सों माहि॥ १६॥ चौ॥ सीये
को ते आए नि:अवसर॥ कीयो प्रणाम मजा मुकीर रघवर॥ आज्ञा कर तभ ऐ रघवतव॥ १३॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अग्निप्रवेस करहु सीता अब ॥ पावककुंड रच्यो बिधि नाना ॥ दीरघ पोतन डेढ प्रमाना
तामधि सीता कीयो प्रवेसा ॥ हरषत हीं ये नहीं कछु कलेसा ॥ कीनो राम प्रतज्ञा सीयकी
॥ उतरगई मलीनता जीयकी ॥ जनकसुता तब आनंद रूपा उ ॥ केटक एकरि समै बितार
यो ॥ १७ ॥ दो ॥ जैमिनक है सुनहु अब एक प्यारा सा यए राज ॥ रावन कीनो तप कठन त्रिः
लंका के काज ॥ १८ ॥ चौ ॥ रावन महा कठन तप कीनो ॥ तनु मन शिव चरनन मधि दीनो
दश हीं वेर च्यारि दस सीसा ॥ तौ पुनि भयो सु प्रसन न हीईसा ॥ कटि देहत ते रगा न्हिकारी ॥ बिधि
सों तिन कीतं तु सवारी ॥ अतिहरषत ही ये पंत्र बनायो ॥ ताही मधि शिव को गुन गाउ ॥ बि
धवतिकरी शंभु की सेवा ॥ तव ही प्रसन भए महादेवा ॥ कीयो जतनु ऐसे दहसिर जब ॥ र
पायो लंकाराजु दुए तव ॥ १९ ॥ दो ॥ सोई लंका को राजु प्रभ दीउ भवी छन योग ॥ बिनु सेवा
जपतप संति ग हैं ते धिन हूसो गु ॥ २० ॥ चौ ॥ तातें रघुवर समहा उदारा ॥ मुक्ति देत लावत नहीं वा
रा ॥ ऐसे प्रभ को छाडि जे और नर ॥ जाचत अवर देव मनसा धरि ॥ सदा कल्पना रोति पियासा ॥ ति
नकी पूरन होत न आसा ॥ लंकाराजु भवी छन दीनो ॥ कृपाधार अपुना करि लीनो ॥ ताया
छे रघुवर बलिआए ॥ पागपिता के पिंड भराए ॥ बिधवत तप्पित के क्रम कीए सब ॥ आए राम अ
युध्या मैं तव ॥ २१ ॥ दो ॥ आई मिले भ्राता प्रथम भरथ शत्रुघन सोई ॥ कौउ आनंद तमन दंडव
त लागे राम पग सोइ ॥ २२ ॥ चौ ॥ भरथ राम के आज्ञाकारी ॥ मन वच क्रम शेवक हितकारी
धरनि षोद पो ढैं नितः अवसर ॥ नहा साबत रघुवर के सम सर ॥ गृह मैं कीयो प्रवेश राम
जव ॥ प्रथम मै केके पग लागे तव ॥ कौशल्या के पग लागे पुन ॥ बिनेक री रघुनाथ महागुन ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बहुरि सुमित्रा के पग लागा ॥ सभ को तोष हीये अनुरागा ॥ पुनि सिंघासन राम विराजै ॥ म
ता प्रकाश कोटि रवि लाजै ॥ २३ ॥ दो ॥ दरस परस कै राम को हीये हरष तन सभ लोग ॥ आ
नंद उर न समाइ किः विसरि गे तो सभ सोग ॥ २४ ॥ चौ ॥ तहा मिले ते सभ लोक अपारा ॥ दरस
विलख करत तैकारा ॥ तौ ऊ ऐसी मन सा करि आऊ ॥ तिः तैसो दरस सुनेहि घराऊ ॥ लै
करि भेटा प्रजा मिली सभ ॥ तिन पहि पहुचे राम चंद्र तव ॥ कीनो राज भरथ मरु पाछे ॥
तुम कहहु सुष पायो पंथ आछे ॥ तव निज प्रजा मुष वचन उचारे ॥ सुषी जन ते प्रभ राजै तुम्हा
रे ॥ भरथ राज महति वहु दुष पाऊ ॥ कोटक एक रस मै वितायो ॥ २५ ॥ दो ॥ वचन प्रजा के
अव वन सुन रघुवर पहुचौ आत ॥ साचु कहत कि धौ गुरु य हतक है जु पारथ वात ॥ २६ ॥
चौ ॥ [illegible] ॥ भरथ कहै तुम सुष वचन प्रकाशा ॥ जेव प्रभ गए है तुम हि तव वन वासा ॥ मा
मन उपजी महा चिंता तव ॥ मुष वचक हे वुलइ प्रजा सव ॥ वोवे वा जुध सन मैं जाई ॥ ते
इ उठाइ सकल पुनि सोई ॥ वहुरि प्रजा मुष वचन उचारे ॥ ऐसी वात न उचित हमारे ॥ दस
सो भाग लेत रघुनाथा ॥ तैसे वरत जन मन तम साथा ॥ हम सो वचन क है इन जैसे ॥ मानत
यै हि तसो हम तैसे ॥ २७ ॥ दो ॥ अंत उठावन कै समेस्या ऐ वीच प्रमान ॥ इन को सुध भरत दी
ऊ हम उलटा ली ऊ जान ॥ २८ ॥ चौ ॥ माहि प्रजा रुदन करदि नो ॥ जो तुम सब श्रवनन सु
न लीनो ॥ दीयो प्रजा को आपु राम तव ॥ जो है माइ पुकारे हे सव ॥ तो है यहा सुभाउ तुम्हा
रा ॥ सदा भूप परिकर रघु कारा ॥ तुम सर्व हम सब रोग जन जाई ॥ अंत कर जन पकौ तष जाई
अवधपुरी महि दसरथ नंदन ॥ राज करत भय दुष्ट निकंदन ॥ राज सता मसद्दर की ये प्रभ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करी शुद्ध सातक नगरी सम ॥ २९ ॥ दो ॥ धरिनी देत अनाज बहु अपुने सहज सुभाइ ॥ तरवर दे
त सम सुहफल गो बहु दूध बढ़ाइ ॥ ३० ॥ चौ ॥ परवति रतन देन बहु लागे ॥ सुषसम सहु उपजे दुष भा
गे ॥ त्रेता महि सतयुग की रीता ॥ मानत सकल नगर की नीता ॥ अहनिस महि संपति अति भई
आधि व्याधि अपदा दुरि गई ॥ बहुरि स्वान का कछु भेटा यो ॥ पुर महि अति आनंद उपजा यो ॥ बहुत
काल बीते कुसलाता ॥ श्री रघुतन उछाह को आता ॥ इक दिन सीया जोर दोऊ हाथा ॥ बिनती क
रति भई रघुनाथा ॥ ३१ ॥ दो ॥ प्रभ तीरथ मग जहु सुष को संत तृति बिन कछु नाहि ॥ ली तै मोहि सनाथ
करि यह इछा मन माहि ॥ ३२ ॥ जैमिनिवाचः ॥ चौ ॥ जैमिन कहे सुनु जनमे पतिव्रति ॥ बचन
कहे सीता प्रति रघुवर ॥ मन धीरज धारहु दोऊ मासा ॥ पूरन करे तु मार आसा ॥ पुनि दै
मास बिती तम ये जब ॥ सीय प्रति दान दीयो रघुवर तब ॥ तिहि दिन गर्भ जानकी भयो ॥ सभ मन
का संसा मिट गइयो ॥ पांच मास को गरभ भयो सीय ॥ सुपना पायो रामचंद्र जीय ॥ सीता को ल
छमन बन माही ॥ तजि आयो उद्यान तहा ही ॥ ३३ ॥ दो ॥ तहा महा व्याकुल भइ रुदन करत भै भी
त ॥ हृदे बिचारयो राम तब होइ बिघन कछु सीत ॥ ३४ ॥ चौ ॥ बिघन होइ मति कैसहि देवा ॥ ता
ते करो अध जनक की सेवा ॥ तब रघुनाथ धिरी शिए बुलाओ ॥ हित तसां आदर दै बैठाओ ॥ भलो महू
रत शुभ लगन धरि ॥ तिथ पंचमी भलो रविवासर ॥ लछमन को संदेस रघुवर कहि ॥ पठदी
नो तब नपति जनक पहि ॥ ले आव जनु मला गुचार सब ॥ लछमन तब त्यो करी आज्ञा प्रभ ॥
प्रा पक्षि भयो बेग चलि तहा ॥ मिथलापुरी जनक नृप जहा ॥ ३५ ॥ दो ॥ लछमन मिथलापुर
गयो कहो संदेसा जाइ ॥ बहु आदर कीनो जनक हरष हीये सुष पाइ ॥ ३६ ॥ चौ ॥ सकल स

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मगुलैलैनृपसाथा ॥ लीनोविश्वामित्रसंगगाथा ॥ ततदिनश्रीअवधपुरीगयोआए ॥ रामदरस
करिसभसुषपाए ॥ पुष्पमेदरससतहयअश्वव्रजननको ॥ भौतेनदीपौअनंदितमनसों ॥ गोसहस्र
इककंचनभारा ॥ इकइकद्विजदीनोतिःवारा ॥ वेदीरचीनिगमधुनिजहा ॥ चारअरचारद्विजवैठेत
हा ॥ वस्त्रकुसुंभसीयपहिरेतन ॥ तेऊआनेथेजनककसुदतिमन ॥ ३७ दो ॥ शुभदुकूलप्र
मुदितहोयेतनपहिरेरघुनाथ ॥ वांधोवेदविधानसोंश्रीचतुरुसीयकेसाथ ॥ ३८ ॥ चौ ॥
श्रीरघुवरछविवनीअनूपा ॥ सीयसोभालछमीसरूपा ॥ ज्ञानवानकीयेकरमविधाना
विधवतवेदउकतपरमाना ॥ कुलप्रोहितकोदछनादीनी ॥ स्वस्तिवोलद्विजवरसभलीनी
इकइकद्विजकोदाननदीयो ॥ यह ॥ वरनसुनावतहोविधसौकह्यो ॥ इकहसोंपुनऐकतुरंगा
इकरथपुभरकंचनदीयोसंगा ॥ गोइकसहस्रमहाप्रभवरनी ॥ रतननतेपूरपुरछमघह
रनी ॥ ३९ ॥ दो ॥ द्रव्यवज्रतदीयोद्विजनकोपूरनकर्मकराए ॥ यहसभदीनोजनकेन्नपर
लागचोरसुषपाइ ॥ ४० ॥ चौ ॥ विश्वामित्रजनकमहिपतिवर ॥ अपुनेपुरकेचलेविदाकरि
सीतासूतरुरघनाथपरैनंदिन ॥ अतिअनकुलनृविछुरतिइकछिन ॥ सीतामातसीयगर
भभउजव ॥ वीनेकरासीपरघुवरकोतव ॥ गंगाऊपरकुंठरेषनतीय ॥ तिनकीसेवा
करोउपजीजीय ॥ भौनवस्त्रकंचनधनदाना ॥ देहोतिनकोविविधप्रमाना ॥ वज्रपरस
तसमेकेअवसर ॥ आवोजातिहकालवज्ररघवर ॥ ४१ ॥ दो ॥ उत्तरदीयोनरामकछु
कीनोहृदेविचार ॥ ४२ ॥ चौ ॥ कैतनेदिनपीछेपुनरघुपति ॥ सुपनवेलोकीयोअति
श्रीचरजवति ॥ जनकसुतागंगाउपरवन ॥ ठाडीमहाविकलशोचितमन ॥ तजि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आउ लछमन दुष पावत ॥ रुदन करत संताप बढावत ॥ कितने दिन पाछे रघुबर
तब ॥ इक्ष्वाकरी बिठलो कौशलपुर सब ॥ निशको लीपे पाहरु संगा ॥ फिरयो नगर दृढ देउ
मंगा ॥ आये फिरत रजक के द्वारे ॥ तब बउ शोर सुन्यो तिन के घर ॥ ४३ ॥ दो ॥ नारि
रजक की क्रोध कर गई जती पितु गेह ॥ आनी जती मनाइ कए सासु ननंद सुर तेह ॥ ४४
चौ ॥ रजक करत घा क्रोध अपारा ॥ ऊंची शबद कर करत पुकारा ॥ हम राषो नहीं यह
इस्त्री पकी ॥ मन वच क्रम सुपा गा मुहि जीय सौं ॥ पति की आज्ञा ले पति नारा ॥ ता सौं उचित
न अंगीकारा ॥ बर रजपक्षौ तिः सब परवारा ॥ रजक कुकहे त्यागी मुहि दारा ॥ हम तो नहीं
रघुउत्तम जैसो ॥ नंद कर मकीनो द्वितं जैसौ ॥ जो सीय ले राषी राकुस घरई ॥ ताको स्व
यो फेर पृधकरी ॥ ४५ ॥ दो ॥ तो तीय की इच्छा पहा बहुत जती मन माहि ॥ सीय को त्या
एन फेर रजक हसीय उचित घी नाहि ॥ ४६ ॥ चौ ॥ सीय पति की आज्ञा नहीं मानी ॥ सो तिय राम
बहु रघर आनी ॥ बसी राकस न घर बहु काला ॥ दीयो आदर रघु बरि तिः वाला ॥ ऐसी तीय
को आदर दीनो ॥ राम काम यह हम लोन कीनो ॥ कहै रजक हम करै न तैसे ॥ करी पुगति रा
म बध जैसे ॥ वारंवार नाम श्री रघुवर ॥ रजक उचारे कहयो तिः अवसर ॥ ४७ ॥ दो ॥ यह
तांत सुन उठ चल्यो राम क्रोध जी घधार ॥ जिः कर निंदा जग करै सो रखि हम लोनि नारि
४८ ॥ चौ ॥ जे भिन कहे सुन कृपाला ॥ क्रोध तिम यो राम तिः काला
तिव क्षिव चारु की यो मन माही ॥ ऐसी [illegible] तीय रहराषों नाही ॥ जिः कर अपजस सुव ठैस

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पारा॥ ताकों दीजै देसनिकारा॥ सुत कों उचित नहीं यह बाता॥ सी पवन पठो होइ कुसलाता
हमरी निंदा करत संसारा॥ तातें सीय गृह ते देसनिकारा॥ सुनत जकथा नृप हीय धरि भा
उ॥ पूरन भयो तीसमो ध्याउ॥ इति श्री भरद्वाज [illegible] अश्वमेध [illegible] तीसमो
[illegible]॥ ५० ३०॥ [illegible]॥ तै नो [illegible] चः॥ चौ॥ सुनत ज लखे ता
रात सावन धरि॥ वचन कहे भ्रातन सों रघुवर॥ सीता गृह ते वेग निकारो॥ सुनत वचन मन
न सके जी य धारो॥ निंदा हमरी करत लोग सम॥ सावन सुनी तजी य केौं धव वधाव स्रवव प
द) दुर्पना चरनिं हम करहीं॥ उत्तम इन ते सुधि कउ चरहीं॥ पत चरचा निस कों सुन पाई
चितवही जी य सुधि विसराई॥ आप जु सहो तत मारी॥ दोः॥ ते शीघ्र का ढीये सीय कों त्र
हते॥ १॥ दो॥ लछमन नभर सुन वत सुन वेग निकार उसीय॥ करत भ्रकी तनग
रसभ ऐसी गृह मे तीय॥ २॥ चौ॥ चतातुरु बोले दे उभ्राता॥ सीय वन दूषन कें जग
ताता॥ कति वनवास जानकी दीजे॥ रजक वचन जी य धारिन लीजे॥ नीच जाति के कहे तनि
लागऊ॥ जान वृझि कति कसीय त्यागऊ॥ नीच जाति न हीं भला वषाने॥ ते॥ ताका वचन
ॐ न कों प्रमानित॥ नहि सम प्रीं उहत दोषनि वारन॥ पुन हत चर्तुं केरि समाज सुनिकारन॥ तुम तें तो हे
सम प्रभ समझातन॥ कैन मह कर रजक को द्वारा घातन॥ ३॥ दो॥ अगनि प्रवेस कराइ सीय ले
आए तुम साथ॥ निरदूषन पतजानकी तजऊ नहीं रघुनाथ॥ ४॥ चौ॥ जौ कछु दोष होता तसी
य के मन॥ अगनि जातें तः भसम करतु ततन॥ सको न अगनि जराय बपुष सीय॥ दोष रहत
नि श्री जानी जीय॥ अगनि प्रवेस की पापसी य जैसे॥ ठाठानि कसब जर पुनि ते से॥ जो न ही

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दोषनिवारनयोगा॥ ऐसेवादवकहितेऊलोगा॥ दोषमिटाइसक्योनहीं रघुपति॥ ज
नकसुतावनवासुदीऊोकति॥ ४॥ रमुष्मेरिकोऊम्हठतर॥ मनमुषलेहारेपर्यंकप
रि॥ ५॥ दो॥ फिरिताहकेम्हषपरिससपरिहारेतोइ॥ हेमलीनमुषतिसकेससिको
परसुनहोइ॥ ६॥ चौ॥ रजकनीचजातबुधिहीनो॥ ताकोवचनमानतुमलीनो॥ नर
दूषनसीतामजमाता॥ तेः वनवासुनयेजैताता॥ जाःसीयहमरासुजसुविठायो॥ महा
प्रतापजगतप्रगटायो॥ ताकोनिमितजहत्यातारी॥ रिषीस्रापकरिगहत्सउवारी॥ जाः
प्रसादलंकागढलीनो॥ पदमअहारहक्रियसंगकीनो॥ महाअतुलवलरावनमास्यो॥
जाःनत्रैलोकवंदमहिठास्यो॥ ७॥ दो॥ जाः हरावनकेनिमित्तशिवब्रह्मावेदउचार॥ इंद्र
कुशमचुनलावई॥ कहैहेपवनबुहारि॥ ८॥ चौ॥ वेदपरैसुनतीनिलोकठर॥ धर
निमक्कासनामुसुनिप्परहर॥ सीयप्रसादसभकरिनिवास्यो॥ रावनहतिकरपावन
तास्यो॥ ब्रह्माशंकरइंद्रदेवपहत॥ तोयहदेतिसीयदूषनकहत॥ तोसीतावनवासुपठ
वऊ॥ रजकवचनसुनदोषलगावऊ॥ यहतुमकोनहीदोषरामसुनि॥ सीयकोत
जऊनकीयविनुदूषन॥ नीचवचनसुनकरऊप्रमाना॥ तजऊनप्रीपतिचारऊ
हीना॥ ९॥ दो॥ पुनरघुवरमुषवचनकहेसुनदोऊमहभाति॥ जाः वंधजगजसुउप
तेसोऊकीतीयेवात॥ १०॥ चौ॥ जिनकासुजसुजगमाझी॥ धृगजाः वेजमलीयाभवमा
हो॥ जसुविनुसगरोजगधृगकहई॥ राउरंकशोभानहिलहई॥ सुषदुषसमपाइ

ते

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करिआवै ॥ कालपाइ वजूरो सो बा ॥ पुत्र कलित्र सुदेह तीगुन ॥ समैपाइ आवत जावत
पुन ॥ कीरति कोउ जग नासु नैहोई ॥ अवर नर है जग तस्थिर कोई ॥ जग महि वजू पश्च
वीथित भरो ॥ समै भोग वजू रो वलि गयो ॥ ११ ॥ दो ॥ हरीचंदन लघो बपुन वेणु
माधता राजु ॥ वजू रिदु धी च महत्व बलीअवरमहपुसिरताज ॥ १२ ॥ थिरू न हीर हेयो
कोऊ जग माही ॥ कीरति वानु सदाथिर आही ॥ भेद सुनी मुहि अपुने कीना ॥ त
जौ जानु कीसत यम माना ॥ ले जा वजू सीय को अवही वन ॥ सुषदी जैमी ता हम रे
मन ॥ सुन लछमन के प्या मन मै आति ॥ वचन कहे प्रगटाइ राम प्रति ॥ नीच वचन
सुन तुम हि न योगा ॥ सीता सीतिन दुती सोगा ॥ वजू रो विनदूषन सुनताता ॥ कतिव
नवास दैहु महि माता ॥ १३ ॥ दो ॥ वजू पे गर्भ नीना घजौ तुम रोना मा चारि ॥ इह अव
सर महि वन पठ जुनिंद करै संसार ॥ १४ ॥ चौ ॥ जिः प्रसाद तुम रावन मारयो ॥ सकल
राकसन को कुल तारयो ॥ जिः नभि त्र लंका तुम लीनी ॥ भगत विभीषन को गहि दीनी ॥ को
कपिमुख को हित तवं दशा ला ॥ सुरनर रस्क लछ है तिः काला ॥ वजू दिवसन के कष्ट तप
रे ॥ करुणाकर तुम सम दुष हरे ॥ ने तीस कोटि अमर मुकताए ॥ सोप प्रसाद फिन जाम
वन सोधाये ॥ दहसिर सुहर लेजा तन सीता ॥ तो कैसे हेती पहरीता ॥ १५ ॥ दो ॥ सो पते
सुकृत वजू भरो हम कुल भयो प्रकास ॥ नीच जाति के कहे ते दैहौ ति हि वनवास ॥ चौ ॥ १६
नीच जाति तौ दोष लगावै ॥ ताके कहे न जगपति आवहि ॥ तीन लोक प्रगट तुम देषजू

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सीयकादीघुनहीअवरेषऊ॥ जोकोऊनिंदैजनकसुताको॥ तवहिनिकारऊभवन
सीयाको॥ वोलेरामचंद्रसुनभ्राता॥ हमजानतसीयजीयकीवाता॥ जनकसुता
महिदेसुनकोऊ॥ अपजससुजगतनिराषीसोऊ॥ तौपुनिलोकलाजतेडरऊं॥ ति
यत्यागजानकीकरऊं॥ १७॥ दो॥ मलीनहीवहनारिअ हतुतिहतिअपजसतेहाइ
ताकोजहतेकाहीरौमलोकहैसमकोइ॥ १८॥ चौ॥ तुंःहितेनिंदाहैपरवारा॥
मनवचक्रमतजीएवहदारा॥ सगासमीपीहितहूसभाई॥ तिनतेनाहिसुजसउ
पजाई॥ ततजदीजहृदवलमुचुकाई॥ अतिशासूनपनवातवताई॥ तातेमान
ऊतौवचनहमारा॥ सीयकोदीजैनगरनकारा॥ जोतुमहमरावचनममानऊ॥
तौपुनिघातहमाराजानऊ॥ लेऊशास्त्रकरहौनिजघाता॥ जोनहीतुममानऊयह
हवाता॥ १९॥ दो॥ कहिलछमनसुननाथजी चेरजीवऊरघुराइ॥ हमकहीमर
हीजेमातकोदूषनसह्योनजाइ॥ २०॥ चौ॥ सुनलछमनतुमतजऊनप्राना॥ आज्ञा
हमरीसवपरमाना॥ क्षत्रीधरममहेऐजसुपावै॥ गोव्रह्मनहितदेहगवावै॥ अ
षवापरकारजनकामा॥ जूझमरहिसनमुषसंगरामा॥ नहीमलीआतमहत्यारा॥
मानतीजोयेवचनहमारा॥ अपजसलोगकरैतवनाही॥ जोनकरैसीतामहमाही॥
नीतशाषनीकैसंसारा॥ सीयकोदीजैवेगनिकारा॥ २१॥ दो॥ वऊरिवऊकरीवनतोभ्रा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ताको रघुराई ॥ तब बिहबल भौ लछमन गरुयो घर न मुरछाइ ॥ २२ ॥ चौ ॥ जैसो तरुम
हा पुरातन होई ॥ लागत पवन गिरत धर सोई ॥ यौ लछमन गिर परयो धरनि पर
रुदन करत लोचन अंसुवन भरि ॥ भरथ शत्रुघन तब दुर गयो ॥ लछमन आगे
ठाढो भयो ॥ रघुपति गाइ दीनो लछमन को ॥ ले जाव जहां यग हय वरवन को ॥ तहां ठो
रहो तुम आवहु ॥ हमरी आज्ञा गहरु न लावहु ॥ रघु ले लछमन तहां सिधायो ॥
जनकसुता के मंदर आयो ॥ २३ ॥ दो ॥ मंदर रत्न कनक षचित जहां जनक की नारि ॥ त
हां लछमन प्राप्त भयो रघुपति हौ द्वार ॥ २४ ॥ चौ ॥ उठत भए बेग चहु ओर रघु माता ॥
आज्ञा करी मुनि तिय जगत ताता ॥ तुम को गंगा तट ले जावौं ॥ आज्ञा राम तहां पहुचावौं ॥
प्रथम सेसुन आनंद भित भई ॥ मथ्या करी आज्ञा प्रभ दई ॥ लगी सम ग्री संग उठावन ॥
दान निमित सुकृत उपजावन ॥ कीनी पाविनती मुनि रघुवर ॥ तौ ते आज्ञा करी कृ
पा करि ॥ पुन लछमन मुष बचन उचारे ॥ सुन माता हम दास तुमारे ॥ २५ ॥ दो ॥ सं
ग उठावहु कछु नहि आज्ञा श्री रघुनाथ ॥ ऐसे ही चली ये तहां रथ चढि हमरे सा
थ ॥ २६ ॥ चौ ॥ पुष्प मति उठ जउ तो ले जावौ ॥ जो चहौ ये पाछे पहुचावौ ॥ ऐसे ब
चन कहे लछमन जब ॥ सुनत मन चिंता बढी सीय के तब ॥ हृदै बिचारु ज्ञान की की
नो ॥ कति कछु संग उठावन दीनो ॥ तौ ते हम कल्यान न माना ॥ देषी यत लछमन मु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

117/90

पकुमलानो ॥ प्रफुल्लित बदन सदा अंभुज भिन ॥ भउ मलीन कमल बिनु तिम ॥ नहि तिन लै
न देत कछु साप्या ॥ करत उतो फिरत माप्या ॥ २७ ॥ दो ॥ सीय लछमन प्रति बचक है
नैन नीर भरि आई ॥ मुष मलीन तुम राम यो कति कै मुहि समझाइ ॥ २८ ॥ चौ ॥ ऐसा
बदन मलीन है तात तब ॥ अवगुन चौरा करत को जु तब ॥ जैसे रूठी सावि दीये ते ॥ ब्राह्मन
न सै आप्त क्रोध कीये ते ॥ जैसे परती पसो हि तलागतु ॥ छत्री होइ समर ते भागत ॥ गोत्र
हत्या हितो नहि मरही ॥ गोत्र आपने सै छलक रही ॥ नर दूषन को दोषु लगावै ॥ ताका मुष
ऐसा दृष्टि परावै ॥ इन मे दूष को ऊ तुम रे जीय ॥ ताते बदन महा मलीन कीय ॥ २९ ॥ दो ॥ ऐ
ते दूषन मे को ऊ है तुमरे जीय माहि ॥ ताते मुष ऐसा भउ मानो ससे नाहि ॥ ३० ॥ चौ ॥ लछ
मन कहत सुन जु बच माता ॥ आ जो कुरी जगत के ताता ॥ चल जु बेग गंगा ॥ के तीरा ॥ सुनत
बचन उठ चली अधीरा ॥ पग सम हि की शाल्य पहि गई ॥ रुदन करत चेतावि सम भई ॥ लागा
बरन बंदा की नोत तब ॥ महा विधोग भयो ही पैर तब ॥ रथ च चढि चली रुदन करति अति ॥ मुरु
झ हदी यो गिनकारर राघव तबि ॥ सुक गये मुष जुता कमल पुत ॥ जब ही रथ हु को लछमन
न उति ॥ ३१ ॥ दो ॥ भयो वियोग अवधि पुरी सकल दुषी नर नारि ॥ अति भय भी सिव बचन क
है कीये न राम विचार ॥ ३२ ॥ चौ ॥ जुः मारग लछमन सीय डगरे ॥ चहुं मंदर देषत जु
न सगरे ॥ हाहाकार करत पुर लोगा ॥ नर नारिन सभ के मन सोगा ॥ रथ जानकी को अ
दृष्टि भयो जब ॥ चकृत भयो लोक विस्मै सब ॥ पवन बेग हाक्यो रथ लछमन ॥ उलंघि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गए गंग गंग गह बेरवन ॥ महा अरण्य सून्य उद्याना ॥ निरखत सीय भय धृ योग प्रमाना ॥ मह
सघन वन द्रुम बहु जाता ॥ ठाढो कीयो लछमन रथ तहा ॥ ३३ ॥ दो ॥ रथ ते उतरु ज्ञ मात ती
दिन मध्याह्न न जाइ ॥ कछु प्रसाद करि पुनि चलौ हि वचन कहे प्रगटाई ॥ ३४ ॥ चौ ॥ उतरी
परी रथ ते सीता तब ॥ सन्मुख अधर मलीन वदन छबि ॥ लागी कहन बैन लछमन प्रति ॥ इ
हा नील जल स्याम सुजल पदुर पति ॥ तहां आइ हम कों वे ठाढो ॥ रुदन करत सीय ती पद षपा
या ॥ लछमन कहे सुन ज्ञ मुज माता ॥ स्यावत हैं जल भर कुसलाता ॥ लेत कुमंडुल चल्यो ज
लभरन ॥ पुनि जानकी कहयो सुन लछमन ॥ लें दुर यो वन साहि स्याके ली ॥ भे का रीव प्रवृ
मस्या रुवे ली ॥ ३५ ॥ दो ॥ तुम बिनु भें का री गहवन पुत्र न धीर जु पाउ ॥ चेतन कोउ ज्ञ मात तो
पहि मैं शीघ्र फिर आउ ॥ ३६ ॥ चौ ॥ लेत कुमंडल लछमन गए जो ॥ सीता मन विचार तीय भ
यो ॥ सोच करत मन चिंत अपारा ॥ बहुरि करत तीय शकुन विचारा ॥ पुनि निकस तीत अपश
गन भयो तब ॥ सन मुख बांधव धव नाप मली तब ॥ तापा द्वे जुवती मट कीसर ॥ पुं: से उल
ट पट धरे नी पर ॥ भे गगन नभई गागर जल डरयो ॥ पहिम शगुन तब जो यध स्यो ॥ ग
रध पशव ददा हने की नो ॥ वा मे स्यग गवन दुषदानो ॥ ३७ ॥ दो ॥ अ बोले कस्य रध ग पु
न करे दाहनी ओर ॥ यह अप शगुन ... स्पार करत भये सोर ॥ ३८ ॥ चौ ॥ तो मु
ज त्याग चले स्वामी प्रतिभी ता ॥ इन शकुनन के मैं कुपरी ता ॥ अब बांछे इन को कल्याना ॥ ग
रभ स्या बर रघुबर बलवाना ॥ चेतात्त रवि हृ वल त तब भई ॥ मूर्छित तब पुष सो इत बगई ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सुनप

पातवरनतनद्युतिकुमलानी॥ विहवलपरीधर्नैमुरछानी॥ विसमैभइनसुरतशरीरा॥ तनब्याकुलमनधरतनधीरा॥ प्रभुआज्ञामानीसीयसीसा॥ अश्वमेधकौध्याइकतीसा॥ ३१॥ इति श्री आरण्य परवणी अश्वमेधपर्वविख्याने ... परणाम... इकतीसप्रमाणे॥ समस्त॥ जैमिनोकहैसुनहु पृथ्वीपति॥ कृपारामायण सुमनमोहरषत॥ सीयवनवासवरतांतसुनावों॥ करषिसारसकलसमझावों॥ लछमनजललोचनततकाला॥ देषीसीयधरपरीविहाला॥ नहीसंभारसकलसुधिभूली॥ फुरतनअंकदेहगतितूली॥ लछमनसीयकोनहीजगायो॥ नीरकमंडलहुमलटकायो॥ गदगदहैलछमनवक्रजोवत॥ रघुचतुरसोछाडिसीयसोवत॥ १॥ दो॥ शोकाकुमेलनवे तेछीटपरीजवहीय॥ तववृतीपातेसुधिभई नैनउघारेसीय॥ २॥ चौ॥ निरषेप्यारश्यलछमन दोऊनाही॥ पुनमूर्छत हैगिरीतहाही॥ अतिकुमारअमलसीयकोतन॥ कोटेचुभेदुषितब्याकुलमन॥ पुनिकछुधारजज्ञानकीपोवति॥ रामनामकीनोसिमरनहित॥ गंगामिससुफितवनहिपठायो॥ ऐसहीजीयपएठहिराजो॥ हमकोदीनोनगरनिकारा॥ शोचगदवरवनहिमंझारा॥ रुदनकरतदीरघभरिस्वासा॥ तनविहवलइसमनमैभईतासा॥ ३॥ दो॥ कौपुकीजीयधरनिपरिकीनोबहुतधिकार॥ मर्छतहैतनपरिगिरीतैनसकीरीसंघार॥ ४॥ चौ॥ धरनीकहैपुत्रीसुनिलीजै॥ होइमहासुषचिंतनकीजै॥ वज्रप्रकारकरिवचसमजायो॥ कछुहीरज

तद्वा

तउ भा

प्रसुमेध

सीयके जौ पगु आये ॥ नैननि हारसी पावन देष्यो ॥ अठदस भार वनास्पति पेष्यो ॥ फल
सम्हत द्रुम विविध प्रकारा ॥ दाडिम जंबु रसाल अपारा ॥ इलायची दाष जंभीर रंभ फल ॥ वट
कदंब पीपल सुंदर दल ॥ अषरोट किसमिस फल छवि छाजै ॥ रसप्रद नव फल निकर विरा
जै ॥५॥ दो॥ बहु प्रकार षग बोलही हंस कोकिला मोर ॥ शुक सारिका चात्रक मधुप गुंजत
करत अति सोई ॥६॥ चौ॥ तः वन महि पशु वसहि अपारा ॥ वरनत होत ग्रंथ विस्तारा ॥ सेव
सीयकी करहि मुदित चित ॥ दरस विलोकहि तिरषति चिंत ॥ पंछी पंष सींच जल ल्यावहि ॥
सभ मिल सीय ऊपर वरषावहि ॥ पंष पसार करहि छाया सब ॥ कहुं कुधीर पावत सीय
जौ पतव ॥ तः अवसर वालक इक आउ ॥ कंदमूल हित ऐषन पठायो ॥ दुषित वचन सीयके
वालक सुनि ॥ सत्त मुष चल आयो शवक मुनि ॥७॥ दो॥ कंदमूल के हेत के वालक चल्यो तिः
भोर ॥ हृदय विचारत जात है को ऊ दुषत इह ठौर ॥८॥ चौ॥ वालमीकि को शिष्य दिवारयो ॥
गहि वर वन उद्यान निहारयो ॥ शवद जुवति को जान्यो मन मै ॥ अति भै भीती पुकारै व
न मै ॥ शीघ्र निकट वाल चलि गयो ॥ सीय को निरष विकल मन भयो ॥ परी उलट मुष
धरनि पुकारति ॥ हा लछमन हा राम पुकारत ॥ रुदन करै षग मृग ठगि ठाढे ॥ सीय
को निरष सोच चित वाढे ॥ पंषि भगाइ नीर वरषावे ॥ सीय निमित वन फल लै आवहि
॥९॥ दो॥ वाल कु देषे दृग भए पंछी सभ आहि ॥ इक लै फल ठाढे भये एक नीर वर
षाहि ॥१०॥ चौ॥ आज्ञाकारी रहै रैन दिन ॥ दूर न होहि चरन ते इक छिन ॥ सीय समुष रामरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सभा बत कहीय ॥ रिष बालक कनि मै जान्यो जात्रीय ॥ रिष बालक सुष वचन उचारे ॥ सुन माता ह
म दास तुम्हारे ॥ नैन उघार निहार कृपा करि ॥ रे रज दूषन नाम कुल रघुवर ॥ कोन तोहि ग
हि गहत वरत्यो जाउ ॥ किः दूषन तुज इहा पगाउ ॥ ११ ॥ दो ॥ धरी धीर माता तही एक हो सत्य
वच मोहि ॥ नाम गोत्र अरु पुनि कहै राम सपत है तोहि ॥ १२ ॥ चौ ॥ तव सीय जीय धीरज कु
छु आन्यो ॥ रिष बालक प्रति वचन बखान्यो ॥ रामचंद्र हमरो भरतारा ॥ सीता जानउ नाम
हमारा ॥ पुत्र कहो तुम शिष्य कवन मुनि ॥ प्रापति भयो इहां कैसे पुन ॥ रिष सुत करी परिक्रमा
सीय पके ॥ पाइन लागो हरष बत ही पसो ॥ वालमीक शेवक हम माता ॥ आयो जतो लेन पाल पा
ता ॥ दुष्ट वचन तुम रे सुन मन वनन ॥ प्रापति भये इहा गहि वर वन ॥ १३ ॥ दो ॥ वेग चलहु उठ
संग मुज रिष आश्रम के मात ॥ सीता बालक प्रति कह्यो सुन जु पुत्र मुज बात ॥ १४ ॥ चौ ॥ सु
नहु पुत्र प्रपंच मोहि तुम जावहु ॥ वालमीक को वचन सुनावहु ॥ सभ वृतांत हमरा कहि
दीजे ॥ वेग जाउ मत तगहु न कीजै ॥ ताही छिन उठ बालक धायो ॥ रिष को सकल वृतांत सु
नाउ ॥ वालमीक सुन हरष भयो चित ॥ नारसिंह तउठ चल्यो ही ये हित ॥ तत छिन आ
आ चरन सीप लागो ॥ दरसन परसि सकल दुष भाजो ॥ धूप दीप आरती उतारी ॥
हम है तुम रे आज्ञाकारी ॥ १५ ॥ दो ॥ विधवति करी प्रदछिणा पुनि पूछी तब बात ॥ किः
प्रकार आवन वन्यो कहु वृतांत मुज मात ॥ १६ ॥ चौ ॥ मुज वनवास दीयो रघुनाथः ॥
पठ्यो इहा देल छमन साथः ॥ सो हम को वन मे तज गाउ ॥ ताते मोहि महा दुष भयो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पतिअरुगर्भ होइ कल्पाना ॥ हमअति दुषत तजित हैप्राना ॥ मत कमलीं हे इहतवोयोग
ते ॥ छूटपरे दुषविरह सोगते ॥ कहि वतोतुतवगदगदभई ॥ अतिभभीतमर्छित है
ई ॥ ऐष सोचयनिरबढित उपजी मन ॥ नाशि सहत तपसमे व्याकुल तन ॥१७॥ दो॥ ऐष
जुवती बालक सकल रुदन करत दुषपीत ॥ जनकसुता आतुर अधिक वचन कहे भैभी
त ॥१८॥ चौ॥ बोले बालमीकि सुन माता ॥ धीर धरहु हे हे कुसराता ॥ हो वहिगे तुअरामकृपार
ला ॥ नाथ अनाथ न दीन दयाला ॥ उनके नहि विरोध भाउ मन ॥ भगत वछल प्रतिः नाम अक
पाघन ॥ ईछा सो तु अवन पठाउ ॥ ऐसे ही प्रभ के मन भाउ ॥ तुम वनवास दीयो इह का
रन ॥ हम से पतित निके निस्तारन ॥१८॥ दो॥ महाभाग हम रे भए तुम दरसन ते मात ॥
कोटि पज्ञ जप तप करम सुफल भई सभ वात ॥२०॥ हम रे आसन चल अकुपा करि ॥ ऐ
ष वचसुन परीन्व लीधीर धरि ॥ ऐ षके आश्रम की उपवेशा ॥ पीत वरन मुष रुषे केषा
बैठी ऐ षा कुटी के द्वारे ॥ राम नाम मुष सदा उचारे ॥ ऐ षमुनि तपी वडत सुहे आए ॥
दरस वि लोक परम सुष पाए ॥ सुतवन तास संग ऐष हरषत मन ॥ आए सकल जानकी द
रसन ॥ जोऐ षवसत गंगा तट माही ॥ ते चलि आए सकल तहा ही ॥२१॥ दो॥ जाएँ गाते
टऊ ते आरु वनमहि तपे जो आर ॥ जनकसुता के नाम सुनि सभ आए ते तःहो र ॥२२॥ चौ॥ सभ
सीता के चरनी लागे ॥ दरस परस हित तत्व मनु रागे ॥ वर कर मी ऐषमहातपी स्वर ॥ म
हापवित्र महत तऐषी स्वर ॥ वडऐ आगनि होत्री सुन अवन न ॥ नाऐ आइ सकल सीपवर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तन ॥ त्रिकालज्ञ पुन तत्वविचारी ॥ मषकर ताअरुपवनअहारी ॥ सभनोआइ जानकी

परसी ॥ मूरति प्रगट रामकी दरसी ॥ वालमीक रिषकों लीये साथा ॥ सीय पग लागस भन

लगाउ माथा ॥ २३ ॥ दो ॥ सकल रिषन विनती करी दीन वचन सुन मात ॥ संग कृत हू

मरे करऊ कंद मूल फल पात ॥ २४ ॥ चौ ॥ सीता कहे रिषन सों वाता ॥ ईछा राम सोई कस

लाता ॥ सीय वचन सुनत रिषि आश्रम गए ॥ नेजन जआ आश्रम प्रापति भये ॥ कछुक शांतिसी पल

जाय धीरधरे ॥ वेठी जाइ कुटी घरेपरे ॥ वालमीक केसुत कलि भुसव ॥ सेवा करहि सकी साय ल

कीतव ॥ सीय रिष कु ही वीचन हि जावे ॥ वेठी धार रामगुन गावे ॥ तत नक रै सीता न हीं

माने ॥ चरन परै ... हठ ठाने ॥ २५ ॥ दो ॥ वालमीक विनती करै चिंतन करु ती यमा

त ॥ धीरज धरऊ विचार चित रामकु रहि कुसलात ॥ २६ ॥ चौ ॥ सुनजपि ताक हि चितन

करऊ ॥ रामचंद्र भरतासिर धरऊ ॥ वचन कहे सीय आस ह द्रग भये ॥ गातम लन

दीनकों पै वर ॥ जनक सार ष्यापि ताकु हावत ॥ कर्म रेषन ही को अ मिटावत ॥ पर्हत न

मिटाइ सकै को ऊ सोगा ॥ अवर समष्ष को अति लोगा ॥ जव को राम व्या हृग्र हत्या ओ ॥

एक दिवस मुष्टि रुषन हीया ज्ञो ॥ हमसा रषी भयावन वासा ॥ सभ ... गग्र सेवाकर्म

केपासा ॥ २७ ॥ दो ॥ गर्भिता हम रे भ्या हकारि षविसे ए परिवान ॥ रघुवर सो भरता

भयो तव हकार मअधीन ॥ २८ ॥ चौ ॥ होनहार सो इपुन होई ॥ कोटउपाइ करै ष्कि

नको इ ॥ लीषी लिलाट सो इपुन पावे ॥ कर्मरेषन हीको ऊ मिटावे ॥ वालमीक पुन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

वचन उचारे ॥ सुन पुत्री सति वचन हमारे ॥ हृदै आपने ज्ञान विचारहु ॥ कश्यप वे कथी
रज अपितु धारहु ॥ दुष सुष काल पाइ कै आवै ॥ काल पाइ कुशल होइ जावै ॥ मान लीजिये
वचनु हमारा ॥ रघुपति करहैं कुशल तिहारा ॥ २९ ॥ दो० ॥ कृपा करहु भीतर चलहु
तजहु ही ये संतापु ॥ सुत उपजैगा गर्भ तुअ तृतः त्रैलोक प्रतापु ॥ ३० ॥ चौ० ॥ जनक कथित
तुम जानी जैसे ॥ हम को तुम पतिव्रता नी तैसे ॥ जैसी जनक सुता तैसी मुझ ॥ भीतर चल
हु सपत रघुवर तुझ ॥ सीता कहै सुनहु वच ताता ॥ भीतर वाहर मुझ कुसलाता ॥ कुटी द्वा
र परिष्ठा आकरहु ॥ वैठी रहौ नै कुन ही डरहु ॥ जनक भवन पुन रामचंद्र गृह ॥ सुष
निवास मुनि है भय नाहीं कीं ह ॥ तो ते हम भीतर न ही जावो ॥ रहि हौ द्वार पर काल वितावो ॥ ३१ ॥
दो० ॥ वालमीक पुन वचन कहै सुनहु जानकी मात ॥ यह वेठन की ठौर नहि मान लेहु मम
बात ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ ठौर रहन की नाहि सुनहु साच ॥ भीतर कुटी चलहु समझहु ता
प ॥ वन उद्यान महा भैकारी ॥ सिंघ व्याघ्र मृग विवध प्रकारी ॥ भैकारी पशु रात्रा सु
देष वधि ॥ देहु महा दुष जो पहरवा वधि ॥ हम री कुटी जनक को मंदर ॥ भैदन शंका हो
रे अंदर ॥ उठ ठाढे वेगा भीतर पग धीरहु ॥ है कमाल तो शोक न वारहु ॥ रिष कुटी वलि
गा चरे नन सव ॥ भई घाल गई भीतर तव ॥ ३३ ॥ दो० ॥ हृदै विचारहु ताको गरभ होइ भंत
होन ॥ तुं डर ते भीतर चलहु वोल्मीक वच मान ॥ ३४ ॥ चौ० ॥ कीया पातु वस कुटी भीतर सी
य ॥ राम वियोग दुषत व्याकुल हीय ॥ जनक सुता मन को सव करहि सव ॥ कुंद मल्लवन

तो जो३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ते ल्यावति जव ॥ प्रथम सहित आनंद रहित सीय आगे ॥ टहल करत हित चित अनुरा
गे ॥ ता पाछे निज असर रपण कर ही ॥ नित प्रति ऐसी गति अनुसरही ॥ सीता जीय धी
र जुक कछु लीना ॥ यह ही ईश्वन सो जीय कीना ॥ प्रथम मैं जुठ सजन करि आवै ॥ ध्या
न करै रघुपति गुन गावै ॥ ३५ ॥ दो ॥ तः पाछे लेपन करै वैठै पाक र साइ ॥ मध्याह
न भोजन करै साथ हरष चित चित सोई ॥ ३६ ॥ चौ ॥ ऐक काल भोजन ले वैनित ॥ कुरैस
मर्पण रघुबर मैं हित ॥ आगे पाछे कछु न ही लेवै ॥ निस वासर रघुवर जीय सेवै ॥ इ
ह प्रकार वीते नौ मासा ॥ भई प्रसूति सो यगारभ प्रकासा ॥ रैन समै मधु नीनद त्रवर ॥
वालक जन्म लीओ तः अवसर ॥ वालमीक आनंद तम यो ॥ सुभ भस ताय जानक उच्यो ॥
सीय जीय उपज्यो मंगल भारी ॥ राम कृपा कपि वियत हि टारी ॥ रिष सीता पहि दानुक
राउो ॥ ही राम नकुं चन मन भाउो ॥ ३७ ॥ दो ॥ जनक सुता को रिष कहयो इह अवसर ऐक
रिदान ॥ अव को तै संकलप जीय पदाते गऊ हइ स्थान ॥ ३८ ॥ चौ ॥ जनक सुता पहि दान
करायो ॥ जो दस सहस्र ते मन भाउो ॥ वस्त्र ल कदी ने व उदाना ॥ यह संकलप ती
ह कराना ॥ गऊ हुते ति तवद्दे उध जनद र ॥ वध वतदानदीपो सीय मन करन ॥ वालमीक
मोर भरिष आउो ॥ लगन सोधि लव नाम धराउो ॥ सभ रिषी पनमहित सुष प्रधाना ॥ जो उ
स हित मा हाग जुन वाना ॥ सुनमति सकल रिषी सुर आऐ ॥ देत वधाई सीय मन भाऐ ॥ ३
९ ॥ दो ॥ सीता मई आनंद मैं विनसे विरह वियोग ॥ लव जनम त सुष उपजे दूर भऐ सभ सो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ग॥ ४०॥ चौ॥ मत्तक्रांति वालक सुंदर स्वाति॥ दिन को रवि निशि को रजनीपति॥ नरषरि
षीश्वर उस्तुति करहीं॥ वारवार सिसु के पग परहीं॥ नरष वाल एष देत अस्नासा॥
ध्वरं जीव एष बसुत पुग वासा॥ रिषम्न न तपो अनंदित भये॥ चरन लाग रिषअस्रम
गए॥ सीता सुत लै गोद षिलावै॥ चूम कपोल अंक उर लावै॥ सीयदुष विन सउपत
त चित चाई॥ पूरन भए बतीस अध्याई॥ ४१॥ इति श्री भविष्य परवाणे अश्वमेध षिषा
न॥ कविदर्शित कलन पूरन भए ध्याय बतीसमो जान॥ ४२॥ समस्त॥ जैमिनो वाच॥ सो
कथा रामायण सार जैमिन कहै सुन जनपत्ति॥ कुस को जन्म जैकार वरनन तहां जै सोभ
उ॥ १॥ चौ॥ एक दिवस सीय जाय उपजी तब॥ वस्त्र मलीन को ए वालक सब॥ लपाऊप
वार जल पाहीं दिन॥ राष्यो वाल हिंडोलत ताहीं दिन॥ चली वसन ले जल इस्थानां॥ वाल
मीक परतिव वनवषाना॥ वालक रक्षा करउ संभारी॥ यह कहि चली गई तटवारी॥ तहां
एक वेतरी निहारी॥ सुत को लीए फिरत उरधारी॥ नरषविचार को उसी तामन॥ फिर
तमर कहीं सुत थारे तन॥ २॥ दो॥ इकछिन तजै न कंठ ते कपी आपुने तात॥ सुत की वार
साय जीय को हाय मां जुपक तात॥ ३॥ चौ॥ जनकसुता मन माहिं विचारा॥ मति अपुना
को अतिथ धिकारा॥ पद्हव नव रूप सुजन्म कहावति॥ तजि तिन सुत को कंठ लगावति॥
हम सुत तत जुस्नाई रिषसुत को हिंग॥ भयकारी वन फिरत सिंघ मृग॥ जो कवहू रिषध्या
न लगावै॥ वालक तिनको अले जावै॥ तव मेरो वलक दुन वसाई॥ उले रिषि अस्नाश्रम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मह्हि आइ॥ बैठा घ्याई रिष ध्यान लगाई॥ झूलत वाल हिंडोल सुहाई॥४॥ दो॥ सीता सुत रा
को ले चली देषत भऊ नि कोइ॥ वस्त्र पषारे आइ कै अत हरिषत चित सोई॥५॥ चौ॥ उत
रगयो रिष को तुव ध्याना॥ देष्यो न पस्यो वाल दुषमाना॥ महा कलेस भयो रिषमन को॥ सो
क वढ्यो दुष लागो तन को॥ इकषि पोगद्स्यो अस्त संतापा॥ देहै मुझै जानकी आपा॥ रिष
शेवक प्रति वचन उचारे॥ वेग जाऊ वन सीष तमारे॥ लेआव कुश याहन रुनकी जे॥
पहुकार जग्य वहा करीली जे॥ आइ जात है जनक सुता अव॥ सुत न हा देषै आपु देहत व॥
६॥ दो॥ आनी कुशा भिले तहा सकल रिषीश्वर आइ॥ पुतला कर्यो आभिमंत्रि आर घुवर ध्यान
लगाइ॥७॥ चौ॥ प्रगट भऊ वालक सुंदर अति॥ अंग विचित्र क्रांति अद भुत अति॥ वालमीक मु
न हरषत भऊ॥ सुसु को निरष सकल भ्रम गऊ॥ धर्यो हिंडोले वीच झुलावति॥ निरषि निरषि ए
ष जीय सुख पावति॥ तिः अवसर सीय प्रापति भई॥ कुसुमनि हारि आचरज है गई॥ कहे रिषी
स्वर यह का को सुत॥ झूलत वीच हिंडोल महाद्युत॥ कहे जु धारस्य सुऊ को वाता॥ यह वालक
किः को सुत ताता॥८॥ दो॥ वोल्यो रिष सुन जानकी कहो जुधारस्य वात॥ वस्त्र पषारन तुम गई इहां
छाडि कै तात॥८॥ चौ॥ छाडि गई थी तुम इह मम पाहि सुत॥ हम ताहि तो छिन भऊ ध्यान पुत॥ तो हम
वहु रिष भऊ सवुधाना॥ देष्यो न पस्यो वाल दुषमाना॥ मझ जान्यो को ऊ पसु ले गयो॥ महा शोक
जीय कछु तव भऊ॥ तव हो में इहि कुशा तसाली नो॥ मानस को पुतला रचि कीनो॥ रघुपति को जु
य ध्यान लगायो॥ निगम रिषन ते पाठ कराऊ॥ वेद मंत्र पठि आहित लाये कर॥ कीयो अ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२००॥
२६८
अश्वमेध

शीरवादसभरिषवर ॥१०॥ दो॥ तैनमहदिके सभरिषनधरयो रघुतवध्यान ॥ वेदमंत्र
उतिपतिभयोवालकरामसमान ॥११॥ चौ॥ सुनपुत्रीइहतातुमरोसुत ॥ महासुरवल
वंडतेजयुत ॥ लवतेहोइपराक्रमवाना ॥ महाप्रतापत्रैलोकनिधाना ॥ वेदमंत्रकएसका
प्रगटाउ ॥ राघवकोजीयध्यानलगाउ ॥ इनकोजगतहोइजैकारा ॥ मनवचकरयहतव
ततुमारा ॥ श्रुतिकांडीपठिरिषनिसीसा ॥ चिरजीवैबालकयुगवीसा ॥ प्रगटायारघुवरध
रध्याना ॥ होइमहावलरामसमाना ॥१२॥ दो॥ सुनसीयमनआनंदभईप्रतिपालेदोऊबाल ॥
तारकरमसभकरलीउवालमीकएषधाल ॥१३॥ चौ॥ सातातेपुनदानकराया ॥ गौकंचनव
सतरमनभीउ ॥ साथजायमहाआनंदतभई ॥ उपजायोसुषचिंतादुरिगई ॥ उठोप्रातमजनक
रआवे ॥ पूजाभैकथासुनैसुषपावे ॥ रामायणकीकथासुनैहित ॥ सवधानहोकेहरषत्वित
तापाछेभोजनतनलेवै ॥ निसवासररघुवरजीयमैवै ॥ वरषसातकेवालकभए ॥ अतिविचित्र
नषसिषछविछए ॥१४॥ दो॥ करीएइनयज्ञोपवीतयोगभएहैंवल ॥ वलमीकसीयसोकहेवा
कतकीजैतनतकाल ॥१५॥ चौ॥ वालमीकरिषगर्गवुलाउ ॥ विश्वामित्रतहाचलिआयो ॥ औरभ
रिषपुनअवकररिषीश्वर ॥ लागनकोठिनवग्रहहप्रजाकरि ॥ दानहोमपुनयज्ञप्रकारा ॥
रिषनवेदधुनकीयोउचारा ॥ वेदीपधिफेरेरघुवरसुत ॥ जेऊतेजस्वीअतिसुंदरयुत ॥
कटिसुदेसवधेवनाकछोटी ॥ लकुटीहाथकनककीसरचोटी ॥ कीउदानसीयपुनतिहअवसर ॥
ससलागेरिषचरननदितुधरए ॥१६॥ दो॥ निरषसुतनआनंदहोयेहरषभयोजीयसीत ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ऐसे सही करते मऐकि तनेहि वसवतीत ॥ ५७ ॥ चौ ॥ इक दिन सीय पत्री पढ उपजोसोगा ॥ राम
वंद्र को विरह वियोगा ॥ छूटे केस मलीन भये सब ॥ तन विहाव लस्सार तमा कुल दुष ॥ तिः
स्रव सरस्रा ऐदो उोभ्री तो ॥ सहे दुष तन रषी सीय माता ॥ हाय तो रपट छ्यो सीय को तव
चिंता वस्सि कति मात तमई स्रव ॥ वे नो सिय पछ मलीन वदन दुत ॥ कैकाइ तोयम ईकएर
पुत ॥ कहे तू तपा रस्य मन की वाता ॥ ताहम रे जोय है कुसरोता ॥ ५८ ॥ दो ॥ कहे जानु की स
नऊ सुत राम चंद्र तुम तात ॥ सुऊदी नो वन वास तिः कहे जषा रस्य वात ॥ ५९ ॥ चौ ॥ रघु वंसी
दसरथ वड राजा ॥ तिः गृह चार पुत्र सिरताजा ॥ राम चंद्र अरु भरत शत्रुघन ॥ चौथे महा
सूरवर लछमन ॥ तिन मह पुष्य राम त्रिभुवन पति ॥ अवतार लीना आप परियाग स्रव गति ॥ तिः
दीनो मुऊ को वन वास्सा ॥ ता ते निशदिन रहेत उदासा ॥ ताके विरह वदन कुमलानो ॥ यह
नि श्रेस्र पुने जाय जानो ॥ कैसी वेनी गहे स्रकाजा ॥ वा ते करत स्रावति सुहिलाजा ॥ ६०
दो ॥ सुन वोले वालिक वऊर चितन की जैमत ॥ परमेस्व ईस्सिमरन कर ऊहौ है सभ कुसला
त ॥ ६१ ॥ चौ ॥ ऐक दिवस ऐष अपुने द्वारे ॥ षेलत दोनो वाल निहारे ॥ वालमीक पिचार की ये
तव ॥ विद्या सकल पढावो इन स्रव ॥ सुभ वासर सुभ घरी सुहूरत ॥ गुन गोपाल सिवा उर
न धरत ॥ हर्षे ऊत सु पछ मव ठावन लागो ॥ अति हरषत रिष मन अनुरागो ॥ ता पाछे ऐष वे
द पढाऐ ॥ शास्त्र सूत [illegible] ति सकल पढाऐ ॥ गायत्री षट्कर्म पुराना ॥ संध्यादिक सिमर
न भगवाना ॥ ६२ ॥ दो ॥ स्रावाहन अरु विसरजन पत कर्म सुभ भाउ ॥ संध्याद्रिक वित वि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ [illegible] ॥
२९८
अश्वमेध

धान न सम भसा सामार खन उपाउ ॥२३॥ चौ॥ जो तक वेद औरु भेष तुविध ॥ विद्या सकल पढी को नीसि
ध ॥ जेतक है विद्या पृथवी परि ॥ वेद पठे वालक ता घरु चकरि ॥ तिः पाई विद्या संग्रामा ॥ लागे पठ
न वालक अभिरामा ॥ भृष तेक हत घिल मुरिष लागे ॥ दिन मधि पठत वाल अनुरागे ॥ ता ते रिषप्र
सन मन भऊ ॥ विद्या मे पठावै सोई ॥ शस्त्र अस्त्र विद्या सर माना ॥ चंद्र वान अरु गुरु तप्र
हारन ॥२४॥ दो॥ आवत सर षंडन करन ॥ धसन वान मति वान ॥ इक सर ते हि सहस्र सर
चल हि पठहि सुरज्ञान ॥२५॥ चौ॥ जिरह क वच अरु षोल प्रकारा ॥ भेदन षडुन करहि प्रका
रा ॥ फरस पाट सौ युद्ध मुए फुन ॥ ल नि मारत लरत सकल गुन ॥ तव रजे गज हय नाल च
लावन ॥ मेघ वान पाहन वरषावन ॥ अगनि वान तिः षंडन होई ॥ शैल वान सो बेधन सोई
नाग फास विद्या त्रिसूल कर ॥ षड्ग गदा तरवार चक्रवर ॥ गज पे रन पुन अस्व सवारी ॥ सो
षे सकल वालक सुषकारी ॥२६॥ दो॥ जो कछु तीन हु लोक मधि विद्या हेति ती सार ॥ ते सभ सब वाल
क पठे कहे ते गर्ष विस्तार ॥२७॥ चौ॥ नरो ऐते जुरसी महा सूरवर ॥ कोऊ न तीन लोक इन सम
सर ॥ संपूरन विद्या सीष जव ॥ गुरु पग दो नो भीतप रेत व ॥ इक दस वरष वीति जव गए ए
महा प्रताप वान सिस भये ॥ द्वो हो धनुष वान पर ली ऐ सर ॥ वन मधि षेल पर सपर भए ए ॥
ऊ हा राम नि तुही ये धिचा सो ॥ ब्रह्मन सुर रावन मुज मासो ॥ सु त पो लसत प्रहर को ऊ
है ॥ महादेव वरतिय मानत ऊ है ॥२८॥ दो॥ यह दूषन के मिटै रघुवर की जो विचार ॥
अश्वमेध कति सौ मिटै को अघन को भार ॥२९॥ चौ॥ यह सुविचार कीनो रिषि परसन ॥ भीतन

रामा [illegible] मन [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कोअभिमान भिहावन॥ लवकुस के प्रताप देषन कित॥ सीता संकट हरों धरो चिंत॥ ताही
समै तुरंग मंगाओ॥ करि विचार जीय ऐसो ठहराओ॥ अस्वपति एसमै भओ जव॥ चरि चाव
लीजानकी कीतव॥ कहै वशिष्ट सुनऊ श्रीरघुवर॥ जनकसुता चहीऐ इह अवसर॥ नृ
मकर कंकन वंध ऊके से॥ अरधंगी विनु उचति न ऐसे॥ ३०॥ दो॥ कहै वशिष्ट सुनऊ प्रभु
यज्ञसमै हे आजु सीता आनी चाहीये तौ पुरवै मनकाज॥ ३१॥ चौ॥ अतुरु वांधी धीकंकं के
साथा॥ सीया को ग्रह आनऊ रघुनाथा॥ जनकसुता सीनारि महावर॥ यज्ञसमै त्याव
ऊकरु एताकर॥ सुन वोले गुरु पित रघुनंदन॥ प्रथमै कीओ जोर कर वंदन॥ मन वच क्र
म अह त्याउन हो सीय॥ नाहि व्याहो इह समै अवर तीय॥ नैन वशिष्ट नीर भरिआऐ॥ राम
वे दृढ इह वचन सुनाऐ॥ कहत वशिष्ट यह इह भगवन॥ सीय समा रची तीय दीनी वन॥ ३२॥ दो
॥ यज्ञसमै कोचाहीय तसीय सतवती नारि॥ रुदन करन लागो सकल सीता नाम सुतार॥ ३३
॥ चौ॥ कंचन की जानका सवारी॥ वाम अंग रघुवर ले धारी॥ वैठाइ रघुनंदन साथा॥ यज्ञ
कंकना वांध्यो हाथा॥ यज्ञपति एक रीमत तावरि॥ हा ... राम अस्व तिआवसव॥ है गैर
थपायक सैना सव॥ सेनोपति कीओ लछमन नतव॥ महापराक्रम मधुर शत्रुघन॥ सा
गो ले चले चाव म चतुरंगीन॥ कुंकम चर चतगात तुरंगा॥ कनक मकुट सिर छवि अंग
अंगा॥ ३४॥ दो॥ अस्व पत्र यो चारो दिशा जो तहि वलवान॥ तव लछमन नमन मै भउ अम
मता अते अ... रोम॥ ३५॥ चौ॥ लछमन नमन उपजो अभिमाना॥ हम सम अवर न हि वलवाना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ रा० ॥

अश्वमेध

सुनु जाते सभ नृप पछि दिसचारे ॥ सुजतेवली आवरन ही भारे ॥ मन महि आतहि आनंद ब
ढाओ ॥ हय पकर निकट आपु धाआ आओ ॥ गहि वर वन महि चल्यो तुरंगा ॥ लछमन दीयो श
त्रुघन संगा ॥ लागे जाजन अश्व के पाछे ॥ रक्षा की ते वन महि आछे ॥ पावन सा महि नहीं कऊ राजा ॥
जो अटकावै हमरो वाजा ॥ ३६ ॥ दो ॥ लछमन अरु शत्रुघन को कहो पाछे लागो ताइ ॥ दूर कर अन्न
ही दिष्ट ते पहत तुरंग रघुराइ ॥ ३७ ॥ चौ ॥ चलत तुरंग पहुंग हत वर वन गओ ॥ एक आश्रम महि गपा
पति भओ ॥ वालमीक रिषत व जतो नाहि गृह ॥ गया पताल वुलाओ वलसि ह ॥ कुस पतिः सभ गओ
किः काजा ॥ तिः आव सरषाव पति भया वाजा ॥ लव षेलत तरि ष वालक संगा ॥ पचरसि देष्यो अश्व अभग
तुरंगा ॥ ३८ ॥ दो ॥ निरषत लव अचरज भयो वेग पकरि ओ धाइ ॥ सो सपत्र महि जो लिष्यो घर
ठआस कल प्रगटाइ ॥ ३९ ॥ चौ ॥ रघुवंसी भूपति रघुनाथा ॥ छाड्यो हय लछमन दाओ साथ
मगास त्रुघन सुरसम पारा ॥ जागत तेति चमू अतु नहि पारा ॥ महा वली हो है नृपु त्रोऊ ॥ प
हतु रंग को वांधे सो ऊ ॥ तिः के जाते करि संग्रामा ॥ लैहि छुडाइ तुरंग म रामा ॥ जो को ऊ ते
र. वल लन्नप होई ॥ ल्यावै भेट मिलै हम सोई ॥ कछु न कहेगे हम तिः राजा ॥ अस ज्ञा मान न पारे
संग वाजा ॥ ४० ॥ दो ॥ लव कु के ध्या पठि पत्रिका हृदे विचारी वात ॥ अस्वग हो हम मति नहि को
जो शत्रु मुरु समात ॥ ४१ ॥ चौ ॥ रघुवंसी रघुवर विष्याता ॥ सो ऊ भरतर हमारी माता ॥ प
रदोबी को दोषु लगाओ ॥ भैकारी वन माहि पठाओ ॥ देयो मत दुष मात हमसो ॥ सदा ध्वि
तव सिर रहत दुषारी ॥ पीत वरमु बाग हनत तनि के सा ॥ निशदिन रहत तपष्यन भेसा ॥ उ

पुजिर ५८

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जलतचीरनअंगवनावति ॥ चिंतातुरमनलइदुखपावत ॥ नहिविधवततनमज्जनकरई ॥ वि
रहितवियोगरामतनुजरई ॥ ४२ ॥ दो ॥ तिंनिरदोषीसायकोदुषदीनोवनवासु ॥ अप्रसुगये
तिनकामुमैसैनाकरावनाम ॥ ४३ ॥ चौ ॥ तिनमातासौपकोदुषदीनो ॥ अपुनेहदेवचा
र:नकानो ॥ तिनकेअप्रसुपस्योमुजहाथा ॥ पुत्रकरोहमइनकेसाथा ॥ इनतेवैरमाताकाले
ऊँ ॥ सैनासकलनासुकरदेऊँ ॥ जौफिरवैनीमातगृहआवौं ॥ तौहमसौपकोपदृत्वकहावौं ॥
साताकेदूषनसभहरऊँ ॥ नैमबमाहिसैनाहतुकरऊँ ॥ निरदूषनरहतीसौपमोता ॥
कीचोधिवेकनहमरैताता ॥ ४४ ॥ दो ॥ मातवैरलेवुजआवैमुद्रककरैंइनसाथ ॥ सकलच
म्ररनहतुकरौभलेधिबावीहाथ ॥ ४५ ॥ चौ ॥ यहविचारलवमनमहिकीनो ॥ क्रोधप्रभ
योधनुषकरलीनो ॥ टंकारवानगहिलऊ ॥ तीनलोकमधिपरहुएभऊ ॥ मनहुशवद
उप जौभैकारा ॥ तीनलोकव्याकुलकरिठारा ॥ पाछेतेरघुवरकीसैना ॥ प्रापतिभईवलो
कीनेना ॥ अप्रसुपकएवांध्योतरवरसौं ॥ भयोयुद्धसेनारघुवरसौं ॥ धनषवाननरतेसनम
बगऊ ॥ युधकपिहतमनविगसऊ ॥ ४६ ॥ दो ॥ यहइछारघुनाथकीसनजनमेतेराज ॥
सुतप्रतापुकेनिमितकेतिः प्रगतिकोघोवाजु ॥ ४७ ॥ दो ॥ रघुवरकोऊउपाउगरवुपिवार
निसमनको ॥ चौतीसमाप्रप्रमीउअप्रसमेधकेयज्ञको ॥ ४८ ॥ चौ ॥ इतिश्रीभरथपरवणेअ
श्वमेधविधानो ॥ चौतीसमोध्यायपरहिकनपरनजान ॥ ४८ ॥ समस्ता ॥ जैमिनेवाक ॥
जैमिनुकहेसुनजकुरुराजा ॥ लवप्रतापवलीसहरथिरताजा ॥ दूतनजाइकहीवोलदमसो ॥ न

नं ५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

वालक है वांध्यौ पुवन मो॥ आज्ञा [illegible] कीनी शत्रघन कौ तव॥ संग असिना ले ता ऊवे गए अव॥
चमू आयुत दस पठी सुरवर॥ सकता वडु हय प्रवल पुअकर॥ यह वीचार की जो मन माहि
यावन मछि राजा कोऊ नाही॥ ले आज्ञा न वाल एष कोऊ॥ राषनि सकै तुरंगम सोऊ॥१॥
दो॥ वेगत हा आपति भऐ लव कौ घेर्यो आइ॥ सकल चमू के मध्य सिसु ज्यु वेली द्रुम छाई
॥२॥ चौ॥ घेर लीयो सीय सुत कौ सेना॥ निरषी सकल चमू लव नैना॥ वांध्यौ लै कदंव
द्रुम सौं हय॥ सरधनु लै रन माहि ठयो है॥ वचन कहै तव भूप शत्रुघन॥ रे वालक न
हीं उरत मूठ मन॥ कहि तु मे वांध्यौ अस्व [illegible] मारा॥ आइ पहुच्यो कालतु मारा॥ वलदै
षरावत है सन मुष मुऊ॥ हस्यो शत्रुघन अव मारौ तुऊ॥ लोग हसि है गे वालक मो
र्यो॥ सिसु न हन्यो मन ही यह विचार्यो॥३॥ दो॥ वडुरे है सि है गे तो हि कौ आप वड नसो
नाई॥ कौऊ पुत्र अज्ञान ता ली नो आप मराई॥४॥ चौ॥ वालक तो हि चंडी सर काला॥
छाडद है तै को तत काला॥ कहि के ना सु कर रुषि तप्राना॥ वाल वृद्ध सम अज्ञा ना ना
इहाय युद्ध रन शत्रु प्रहरन॥ आतम घो कर ऊ के कारन॥ नहि न वधत सुत तु मछ जता
ता॥ कहि को करऊ आपन घाता॥ जो पद्य न हम तुम को दानो॥ ब्रह्मण ज्ञान नास नहि
कीनो॥ त्याग ऊ है भाग अरन महा॥ वाल षेल क्रीडा य हनाही॥५॥ दो॥ हसि कै वोल्यो
सीय सुत मो छक करत है वाल॥ पुद्ध समै दृष राउ गाढे जमसुत के भट पाल॥६॥ चौ॥ मुझ्यो
धरे है [illegible] तु मारा॥ जान ऊ [illegible] सु हमारा॥ आपु ने वल वांध्यो मुष हि वाता॥ न [illegible] स

पत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हा इह मरे को ऊ राजा ॥ ऐसे वचन कहे तव क्रोधे ॥ कोपो धनुष टंकार करि रथ चढि तनय
नुषशव दसु न अतिम पकारी ॥ सभ से ना व्याकुल कपि दुारी ॥ आसनु इहि लंका सुर पति
को तब ॥ ठ स्या से सध एनी का पास व ॥ कंपे सन सन दस दिगपाला ॥ रवे सुत सागर
सपत पताला ॥ १ ॥ दो ॥ तीन लोक मैं भीत तें लागे करन विचार ॥ हमन हि देष्यो सुन्यो
कब ऐसो धनुष टंकार ॥ ८ ॥ चौ ॥ महा क्रोध जीय मैं पा शत्रुघ्न ॥ महा पराक्रम मान रथ
बाल तन ॥ तीन बान षर दूषन कारे ॥ करइक त्रबाल कपि प्रति मारे ॥ इह दृति हि अगनपति
सरभए ॥ हीता सुत को छेदत लैगो ॥ घेर लीयो बानन गड न्याई ॥ नर भै असि सुठा ठौ तिः
प्याई ॥ तब कोप्यो लबधनु ब सभारे ॥ चार बान ताडन कसि मारे ॥ इक सर रथ सुत बवान नि
वारे ॥ षंठन ढूक दूक कर डारे ॥ ७ ॥ सो ॥ सायक सत एद अनंद मं जनक नो बान गड ॥ अ
एद लका पे मेघनाद टंकिन गार जुतति मेघ वति ॥ ५ ॥ चौ ॥ द्वितीय शत्रुघ्न सन न मुष मंडो ॥ अ
स्व प्यार रथ पति न वज्र घाउ ॥ तृतिय बान वज्र सेन संघारी ॥ चतुर रथ पसर गजकुंभ विठा
री ॥ स्ह रवार वज्र हने अपारा ॥ आग निति चम भई संघारा ॥ लछमन भ्रात ति हारी सेना ॥
महा दुष ति अधि लोकीने ना ॥ धरनी पर रन सूर हि हारे ॥ हैगै रथ पायक बज्र मारे ॥ पु
रष शत्रुघन क्रोध की ओमन ॥ ताडन बान काठ द स तति छिन ॥ ११ ॥ दो ॥ सायक सुत को
ताडन कोप्यो घेर बान षंडकराल ॥ काटे न्याई चुभगा रे अमन न हि पाओ बाल ॥ १२ ॥ चौ ॥
पुन सायक सुत इक बान जिकारयो ॥ लछमन भ्रात जोर कर ष मारयो ॥ उडगयो गगन ओर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रा अश्वमेध

दहद्दि शमण॥ पखो ताइय मद्वार शत्रुघन॥ रघुस्वारथ्यासमेत उडाओ॥ द्वासरपठेपुन
धरतगिराओ॥ त्या ऐगिरि यमपुर तेवाना॥ विकल शत्रुघनधरि नमुरछाना॥ पराग
हेोहै घरीधरनिपरि॥ चढरि उठो जीयमहत क्रोधकरि॥ वचन उचारकहे बालकपृति॥
तुजे नजातो तोमुग यहतगति॥ ७३॥ दो॥ जोतु मश्विस जीतो नहीं ऐसोगति मुग होई॥ इ
हमोहत्यादेषमाघहतमकोलागहसोई॥ ७४॥ चौ॥ सहतप्राणकरिदसवानचलाऐ॥ ल
गेजाइ नहीने कुंभजाऐ॥ कमलकरनिकोलागत जैसे॥ दुषनहीदेतभऐसरतैसे॥ पुन
दैवानहनेसीतासुत॥ उठो शत्रुघनभरथसंपुत॥ पखोजाइकेस्वर्गद्वारपरि॥ पु
निसुचेतहै उठ्यो शत्रुघन॥ कह्योबचक्रोधतसा यसुतप्रति॥ रेबालकहतिप्रानकरो
कति॥ ७५॥ दो॥ नहींप्रानसोपि तुम बांधितमपुनोकाल॥ बारबार तुजकहत होसम
झतिनाहिन बाल॥ ७६॥ चौ॥ पुनिकाठेहैबानशत्रुघन॥ रे सस्पुकीसमोरे बालकतन॥
रकसरमोदितामि वतेजा॥ बंध्योलवक्रोही ऐकलेजा॥ कहूत है तितनभ्रातसखासा॥ रा
प्रापतिभयोनसमाधिचासु॥ पांडतिभडोलगेखरवाण॥ मरद्दितहै धरणी लपटा
ना॥ रुधरचल्यातनभीगकेसा॥ लपटानीरजदसनसदेसा॥ भीलप्रस्वेदरुधरप
रतिसंती॥ महासुसरनपरयो विकलमति॥ ७७॥ दो॥ तीहनसरतनहननकैधरनपरा
ओवाल॥ चलेसमरमकताइकैकहियाकोजभयाल॥ चौ॥ लछमनचल्योसमरपुधाको
तव॥ रहतेशत्रुघनसंगचमूसव॥ रथविचारशत्रुघनकीनो॥ हमइनवालके

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

को हतु कीनो ॥ मति कोऊ अस वरवालक कें आवै ॥ छाड़ि गए रन शत्रु लजावै ॥ ताते भऊ अश
त्रघन इस्थित ॥ धर्म न भ्रत सूननि हि चल चित इहि दिस इहि कर जस वभ ऊ ॥ उत सोय लव
वता तु सुमिलयो ॥ सीता सुनिष सो है गई ॥ रुदन कला पुकरत म्रछई ॥ १९ ॥ दो ॥ तव ही
कुस प्रापति भयो सुन लव को घरतोत ॥ मूर्छित मन्हि निहारि कै कुप्यो स्त्र वलवंत ॥ २० ॥ चौ
॥ भ्रात म्रमा सुनि कै कुस अग्र वनन ॥ महा चित वसि भयो क्रोध मन ॥ व्याकुल भयो शोक र
जाय भ्राता ॥ वृऊ रोयु षत निहारि माता ॥ कुस के ताय ऐसो ठहराई ॥ मृति वियोग माता मर
नाई ॥ पूप मै ताव करो माता को ॥ पाछै वैर लेऊ भ्राता को ॥ भागे कह जाहि अरि सो यै ॥ तौन
लोक जुर आवै ह जोवै ॥ को टजतत करि मात उठाई ॥ मृष जलु दै म्रछो छुटकाई ॥ २१ ॥ दो
रुदन करुत सीय कुस दोऊ महा शोक तो पमाहि ॥ जौ चे शावद करि टेरहि नैन तनी रठहित्ता
हि ॥ २२ ॥ चौ ॥ क्वचले कहि कैसम सुनत सीय माता ॥ पप मै हम देषा लव भ्राता ॥ जिन मे शो भ्राता
मारयो रन ॥ तिन को नाम कहो पाछै किन ॥ देह तजै हम रोदुष तेन के ॥ वेग संघारहु करो
अरि तिन के ॥ यद्यपि होहि पराक्रमवाना ॥ छिन मे हि नास करो तिन प्राना ॥ शोक निवार
ज्ञान मन की जै ॥ होनहार सो पाय धरि लीजै ॥ कोट जपाइ करै प्रति न कोई ॥ इछा भगवन ते र
सै होई ॥ २३ ॥ दो ॥ हृदे शोक तजि धीरधर ॥ ज्ञान विचार ऊ मात ॥ हम ते ते सारन मति तह
जहा पर्यो लव भ्राता ॥ २४ ॥ चौ ॥ जाइ निहत रो अपुनो भ्राता ॥ मूर्छित कैधो भयो रन घाता ॥
ता पाहे तिः शत्रु संघारो ॥ वतुरगन मै नासम मारो ॥ निगम वचन [illegible] सि मात तद्धि ठावति ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२९॥ २४२

अस्वमेध

धीरज दै बहु विध समझावति ॥ जौ सुत कूं करै गमन परदेसा ॥ अघ वारन संग्राम सुचेता ॥ त
ननी अस पावाती पग हरहाई ॥ हृदै आनंद बडा वै सोई ॥ जौ सुत कौ रन जीतन होवै ॥ ताइ
बदे सस सुजस सुभवैवे ॥२५॥ दो ॥ तौ जननी चिंता करै सुनै अस की रति तात ॥ तुः रन की
रति हो वई बल ततमुदित पित मात ॥२६॥ चौ ॥ वचन कहै सुत सुनु महतारी ॥ सुत विथो
ग दुख तुम कौ भारी ॥ सो मन माहिं संताप कहै तुअ ॥ उतर पदरी है मातु जसु मुज ॥ तुम
संताप करो जी यमाता ॥ अब कहि लेउ वैरनि उभाता ॥ जौ बच्चन कहि जे का रस सुत न को ॥ शोक र
ति बार धीरज दै मन को ॥ बहु बकवाद न हैं सुखभावो ॥ हनौ शत्रु बलवत कुन रावो ॥ सु
मुसे नाप मुख पुरीप ठावो ॥ ता सुत कूं रोस्र रे बल मुन लावो ॥२७॥ दो ॥ पुन्य कर मुख ते बकै ते
पुन फल ले नदाल ॥ रन महिं जीते जो बकै ते हरि सहि बलवान ॥२८॥ चौ ॥ भई केदुख दे हिं जरा वे
अब ॥ ता ते बकौ न सांच करो सब ॥ अब तो है रन जाहि भ्रात लव ॥ शोक तजे उसै ला जरो
अब ॥ मुख ते कूके न हि कछु होई ॥ हो है जो हरि भावै सोई ॥ मो हि सहाय दुख सुन हति भ्राता ॥
बहु रो चिंत तनु मारी माता ॥ दे बहु कै सक रो स काजा ॥ पुल कै करो सभ से न समाजा ॥ तो
साय सुत कूं सनाम सकहावो ॥ रुधरनदी रन वीच बहावो ॥२९॥ दो ॥ भ्रात जीवावो चम्हु ह
त गति त्यावो पुन बाज ॥ तो साय सुत कूं सनाम सुज ऐसे करो सकाज ॥३०॥ चौ ॥ जौ तनम रीमा
ज्ञा वर पावौ ॥ दिन महि सकल धरनि उलटावो ॥ का गन सुदिन महि न भ पे रो ॥ दिशादि
ग पाल धरनि सब महिं तोरो ॥ दिन महि महीधर गगन उडावो ॥ सागर सप्त प्रजारस कार

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वैं ॥ इंद्र मेघ के सुमंदव है वैं ॥ जलनिधनीर स्वरगपउचा वैं ॥ सुरपुर को गलिय
ठेपिआला ॥ प ठेपिआल इंद्र की शाला ॥ कंपा वैं दशष्द शब्द न माही ॥ भ्रात शत्रुघ्नि
का ठोनाही ॥ ३१ ॥ दो ॥ तधर कुंडकोर रन विषधन भुप बारो ताहि ॥ आज्ञा दी जे मातसु
उजाइ युद्ध करो ताहि ॥ ३२ ॥ चौ ॥ बल मो कहि बग्र हन नही सोई ॥ देत असीस सुधरनहे
ई ॥ अवध जैसे आज्ञा सुउ माता ॥ पद्म करो जाते सरिभ्राता ॥ सुनसी ला ठप ज्यो तो पज्ञाना ॥
होइ यथा ईश्वर भगवाना ॥ तेन नहा रहो दशो सुते से ॥ कोट जतन कपिट रहि के से ॥ तैसे
को ऊ वसु गवावै कोट जतन कपिट व के न पावै ॥ जो व हता की प्राप्ति हे जावै ॥ गृहवैठे
पावै तां को तव ॥ ३३ ॥ दो ॥ ताते दुख सुख सम भला जोई द्वार रघुनाथ ॥ यह तजो पजान
आनंद सोधसुभाल कुसहाथ ॥ ३४ ॥ चौ ॥ सो यह सुत के कहि शत्रु वन्हा ऐ ॥ कवच बांधा
लकु सतनपहिराये ॥ धनुष बनदीने सुत हाथा ॥ सभक्ति करी सो यनि उत्तमाथा ॥
को ऊ सन युद्ध कुंध कुसको तव ॥ हुई अब सीस जो तमावो अरे ॥ जेत कउती रिवन की
नारी ॥ सभन असीस करी हित धारी ॥ ये जे तो इगा वाल तुम हिरन ॥ भ्रात शत्रु संघा
रकर रउगन ॥ माथे तिलक कीउ कपिभाउ ॥ परनम ड्डो चौ तीसमोध्याउ ॥ ३५ ॥ दो
[illegible]
ना ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ [illegible] ॥ चौ ॥ जैमि न कहै सुनु उअन्य प अवनन ॥ मातेत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ श्री ॥
२२४
अ॰से॰म॰
५

बकुसचलपोक्रोधमन ॥ उहताशत्रुघनरिदेविचास्यो ॥ आवतकोऊनदीएनिताको ॥ जो
कोऊहोतवेगरनआवत ॥ बालकवधसुनगहतरूनलावत ॥ ऐकोप्यासिसूसअवरनको
ई ॥ चल्योशत्रुघनपतिकहिसोई ॥ हरषतहीऐवतुरंगवताजवत ॥ विजैकरितचल्योसंग
लगावत ॥ १ ॥ दो ॥ तिएतिएकुशभीषउोकहाजातहोभाग ॥ छत्रीधरमुलजाईकैसिसु
मारचलेरनत्याग ॥ चौ ॥ भीजोकहाजाउअवमुते ॥ भ्रातवैरलेवोअवतुजते ॥ रनकोतु
तित्यागपुनजावे ॥ कोईअकीरतिशत्रुलजावै ॥ बालकहहिनभीगेतुमतैसे ॥ सूरनकीकु
लकरीनऐसे ॥ सुनकुसवचनशत्रुघनठाढे ॥ सैनाजोरक्रोधतीयवाढे ॥ निरषकुसहि
करधनुषसंभारेयो ॥ प्रथमैसीतवानकुसमारयो ॥ सकलसूरकोपनतनलागे ॥ उपजो
क्रोधसमनसुषभागे ॥ २ ॥ दो ॥ हाथपांउकांपतितनऐसे ॥ मतपवनद्रुमडोलततैसे ॥
समसेनांप्रतिकह्योशत्रुघन ॥ सुनसुषहैतुमपक्षकरोरन ॥ सैनाकहैसुनजमसवा
ता ॥ महाकाप्योमसहिसिजागाता ॥ नहीयुधकीसकतिरहितन ॥ सत्रुकहैतीयजानश
त्रुघन ॥ कैसेधनुषगहेकरवाना ॥ परहरकापतिहैहमप्राना ॥ कालरूपवालकयहै
लागे ॥ कहैयपथारथतुमरेभ्रागे ॥ ५ ॥ दो ॥ कालरूपसमबालयहदेषठरतेप्रान ॥ मार
नापुलेसभमईकोपहैभगवान ॥ ६ ॥ चौ ॥ कुप्याशत्रुघनधनुषसंभारे ॥ दससरक
सकेसकेतनमारे ॥ तौदिनवानमहाभयकारे ॥ कुसतनलागनकोउपहारे ॥ कवलक्ष
तगाढमारतजैसे ॥ लागवानकुसकेतनतैसे ॥ चारवाणकुसहृएनिकारे ॥ तोदिनतेऊ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बान अति भारे ॥ घेर लीओ सर एक शत्रुघन ॥ भयो अचगठ चमू अरतन ॥ दुतीय सु
र हैं गैर रथ मारे ॥ तताच सुचर घो सु रथ बिडारे ॥ ७ ॥ दो० ॥ धुजा पताका पद दंत व कहने चतु
र्थ बान ॥ करी लख्ये रथ पर्थ्यर ब कुसैना कुसब लबान ॥ ८ ॥ चौ० ॥ तब कुस पृतम नवात विचा
री ॥ भाखाप्यामुक्ति कवच महि ताही ॥ जिन मारयो हतम्भर नभी ता ॥ तीनके वे सकल जतन
घाता ॥ रुधर कुंड रन बीच सवारो ॥ ममरि मन एतत सोध नुबपषारो ॥ चील नकी पवमा
सबवावो ॥ तो सारपसु तकुसनाम कहावो ॥ सो पूरण पूरण करो समै मव ॥ ऐकवान
काढ्यो निषजतव ॥ दै कसी सक्रोधत हि मारयो ॥ हैगे पाप कसभ संघारयो ॥ ९ ॥ दो० ॥
ठाठाहाके वान कुस मार मार कर क्रोध ॥ ऐका ऐक पर मारई वजत से घारे युध ॥ १०
॥ चौ० ॥ ठौर भजन केकी कहु नाही ॥ सम दल बान पंजरे माही ॥ वेधत करी सकल से
ना सर ॥ अभित सर मस्का इगारे धर ॥ सैना सकल भिहार शत्रुघन ॥ ऐक ऐक प
र परे भत कतन ॥ रुधर प्रवाह तवहयो नहि पारा ॥ चाउन भैरविमे तमपारा ॥ सलि
वान शत्रुघन मरे ॥ क्रोधत हि कुस जोर प्रहारे ॥ मेघ वरषत पर वत वरसावे ॥ लागर
हि कुश अमु नैकु न पावे ॥ ११ ॥ दो० ॥ अति क्रुद्ध हि शत्रुघन मारे पर वत वान ॥ नैकु न हि
अमु कुस करे हलाग त फूल समान ॥ १२ ॥ चौ० ॥ महता अरु नदुगल दमन भाता ॥ ता
त तैं पत भया रिस क्रोधाता ॥ अरकुम ज ठपठेन तकर हि ॥ नृपति दैषसुद धरिषर हि ॥
कुसनिर भैठाठेस रारन ॥ आवति गिरकाटे ताहि छिन ॥ कुस सप्रहार करैति तनजै से ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२४१॥
२२५
रामाश्वमेध

कुसमप्रहारकररहित तनजैसे ॥ परवतलागे कुसअंगतैसे ॥ अधिक अधिक हीयह
हरषततोई ॥ वलकवाननलागे कोई ॥ अतिअचरजमनभयो शत्रुघन ॥ शस्त्रअ
स्त्रकोऊलागे न कुशतान ॥ ४३ ॥ दो० ॥ क्रोधवंतहि पुनशत्रुघन कोदंड लीये ते वान ॥ कु
स तीनषंडतकीऐ महासूरवलवान ॥ ४४ ॥ चौ० ॥ तीनवानपुनकाढेसीयसुत ॥ पठे श
त्रुघन ऊरक्रोधायुत ॥ तिनकोलीयावचाइ शत्रुघन ॥ वजरसै क्रोधकीयो अपुने मन ॥ तर
कसते षटू वान निकारे ॥ अतप्रतापवान भैकारे ॥ छूटतही षटसहस्त्र भये तव ॥ तिनु ला
गे अपपरभये तव ॥ तववालक चिंतवक्रसंभारा ॥ अपुने हृदे विवेक विचारा ॥ ४५ ॥ दो० ॥ का
र वान दृष्टि पाकीऐ पाछे रह्यो न एक ॥ चतअचोद्दवभ्रातको मनमस्तकी योधविवेक ॥ ४६
चौ० ॥ यहतो है वैरी मुझ भ्राता ॥ युद्धकरतमुझ सोमद भ्राता ॥ यह विचारकरतपतभउत्तम ॥
वट सर तहन हने शत्रुघन ॥ वेधतही लेचले अरकापा ॥ कीयो भमाड़ शत्रुघनना
सा ॥ प्रान रहत तउवहि तनु भयो ॥ ततही ठापधरनपरे दवो ॥ कीयो संघार शत्रु
भ्राताको ॥ शोकनिवार ज़ेसाय माताको ॥ कुसतीपअतेआनंद दतिभारी ॥ सहत त
शत्रुघन चमू संघारी ॥ ४७ ॥ दो० ॥ सनमुष सेनु हो इकै कुस मारे दाऊ वान ॥ चमू
संघारी सकल तिनरह्यो न को वलवान ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ पकरोताइअसू कुसलातो ॥
पुनवन मांहि ठूठत लव भ्राता ॥ फिरत षोजत ताइ परचो रन माही ॥ मूरछित तषि वाल देह
सुधि नाही ॥ राजग्रसेदिन मणिकौजैसे ॥ वेठतवान कीयो लव तैसे ॥ कुसमघवा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पक्तिवानपठायो॥ वेगसुरगितेप्रभुधामगायो॥ अंव्रतसीच्योलवमुषमाही॥ उ
छ्योभ्रातदुषमिट्यौतहाही॥ कीरतिसुनतिउछ्योलवसूरा॥ महाशोभपावतिप्रण
पूरा॥ १४॥ दो॥ राहुग्रसेरविमलिनहेछुटेनिरमलहोइ॥ तैसैहीसीयप्रभुतउ
छ्योसंसैरह्योनकोइ॥ २०॥ चौ॥ ताहीछिनलववचनउचारे॥ कहुवतीतुकुश
भ्रातहमारे॥ लेनहीगऐहुडाइतुरंगा॥ मैंदेषतभडोमोहितवसंगा॥ बोल्योकु
ससुनहोलवभ्राता॥ मुऊसुवकौयेशत्रुतुमघाता॥ आन्योमोहिजीतकैवाजा॥
हनेनेकरेयोधवहुराजा॥ सुनकुसवचनभउोलवहरषत॥ वाध्योआसुकदेव
मूलयुत॥ दोनोभ्रातमुदतिमनमाही॥ धनसरगहिठाढेरणमाही॥ २१॥ दो॥ जे
कौइररनतेववेभाजिआयुधधाउोर॥ आपतिहाऐरामपतिजहांयज्ञकीठेर॥ चौ॥
मबशालावैठारघुनाथा॥ यज्ञाकैकनासोभितहाथा॥ कंचनकीसीयवामेअंगा॥
मैचुरुगाठजोरतिःसंगा॥ सहसअठारसुरिषवतातहांजिनतप्रति॥ लेतरसोइमहाम
पदतआत॥ इंद्रआदिसभदेवमुनीश्वर॥ वैठेतहांआनेकऋषीश्वर॥ कंचनयदु
तआनेकसुनारा॥ हेमपात्रवजचितठठआरा॥ ताम्रपरेदुररूपवनावति॥ कं
वनमालामनगनलावत॥ २३॥ दो॥ जितपतिगोकंचनवजतैदेतदिजनकोदान॥
गरुविषिश्ऐवैठेतहांहोमकरतरुचिमान॥ २४॥ परनालदिसोभतहांठारति॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२१॥
२२८
अश्वमेध
श्र

जै जै मंगल सब्द उचरती ॥ तहा जानकै दूत पुकारे ॥ रनकेवा च शत्रुघन मारे ॥ बङ्गसे
घोर भई सुभ सैना ॥ सो गति कही परति न ही वैना ॥ सुनि रघुनाथ चिंत मन भई ॥ सक
ल सभा विस्मै है गई ॥ रुदन करन लागे सभ लोगा ॥ सकल पुरी उपजो असन सोगा ॥
२५ ॥ दो ॥ दूत तब तानि सकल कहि पुनि पूछो रघुनाथ ॥ बनमहि को उ राजा नाहि युध
कीयो कि साथ ॥ २६ ॥ चौ ॥ कहि दूत सुन हो प्रभु रघुपति ॥ दै बालक है बली सरूप अति ॥ दे
खी पति ते सभ कांत तनु मारी ॥ तु मेल युध करि सेन संघारी ॥ नष सिष सकल लीअति सुर
छवि ॥ बरन सकै न ति को उ कवि ॥ ते जवान सभ रूप तुमारा ॥ सत्य मान प्रभु भ
वन हमारा ॥ उन पहि सस्त्र तुमारे नाहि ॥ अवर सकल तनु मरी पर छाही ॥ प्रगट है
धीर दूसरे रघुबर ॥ ठाढे रन म्रापु धनु दिनकर ॥ २७ ॥ दो ॥ प्रथम कहि तुम शत्रुघन स
कल सैन षपी ज्यो ॥ धनुष उठाइ न को सके पार हर को पहि देत ॥ २८ ॥ चौ ॥ सुरक हैत्य ह
तो रघुनाथा ॥ कै से युध करे इन साथा ॥ मुनि सन मुख है ताप्य उठायो ॥ ता हि दिन हन ध
रनि गिरायो ॥ पून ति विवह तरूप तुमारा ॥ ते तव न बलक न ही पारा ॥ सिंघ रूप ठाडे गरजत
तरन ॥ स्यार भई सभ चमू शत्रुघन ॥ सन मुख सुर जाइ को तव ॥ धनुष हाथ शिर पर
धरनि तव ॥ को उ न धीर सकै तिन आगे ॥ शस्त्र अस्त्र तन छूदने लागे ॥ २९ ॥ दो ॥ स
रे इन बालक न सम दै ष सुने न कान ॥ तन आभा तुम वरनन है तेज सवी बलवान ॥
३० ॥ चौ ॥ दूत न के ए से बचन सुने ॥ मो जति ताप सी सकर धुने ॥ तब बोले बचन श्री रघु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नाप्या ॥ यज्ञकुंके नाहमरेहाप्या ॥ समेऊछवेको नहीं है मोकों ॥ अवलाघमनआज्ञाहै
तोको ॥ पथमैजाऊंलेऊंसुधभीता ॥ मद्धितिपस्योकरऊंकुसलाता ॥ दूषजवऊरि
वालकवहकैसै ॥ जिनहतकीयोशत्रुघनतैसे ॥ गहितुरगवांध्योत [illegible] भावातसुन
तमनहीतअवभा ॥ ३१ ॥ दो ॥ कोमलकेलेद्रुमगरभअ महावलवान ॥ कैसेकैवांध
तहाचंचलहैगुनवान ॥ ३२ ॥ चौ ॥ महासकोमलव्रतकेलाको ॥ दृष्टितलागैपवनको
लाको ॥ प्रवलतुरंगमहावलऐसे ॥ राष्यावांधवालकवहकैसे ॥ पुनिअवरजतापहि
तहमारो ॥ साष्यशत्रुघनसैनअपारो ॥ तिनकोजाइनहारेनैना ॥ जिनसंघारकुलीस
मसैना ॥ प्रवलेऊंतिनतेसमकाता ॥ कवनवाततमकोपितमाता ॥ माजाकरीमोहितुम
जैसे ॥ वेगजाऊंकीजैकृतितैसे ॥ ३३ ॥ दो ॥ मोतोलेलंकमनचल्योमेरेमनभ्रानवीजाइ ॥
सहितसेनाचतुरंगनीसरक्षाकहीनजाइ ॥ ३४ ॥ चौ ॥ हैगैरथपायकनहीपारी ॥
सूरवीरवऊसैनअपारा ॥ अंगकवचसवसस्त्रनिपहरे ॥ महाप्रवलयोधाप्रगा
हरे ॥ चमरधुजापताकाराजित ॥ शस्त्रअस्त्रवहुविधछविछाजित ॥ युधकरनसमु
नसाजोपधारी ॥ चलेसाजिसैनादलभारी ॥ राजकुमारगननहिमनसंगा ॥ चले
रिसाइक्रोधअंगअंगा ॥ लोककहैसुनहोश्रीरघुपती ॥ इतिनासैनाचठवतहो
कती ॥ ३५ ॥ दो ॥ वनमहिव्रह्मणरहतिहैतहानृपतिनहीकोइ ॥ इतनासैनाकीतीव
टऊआतिअवरजजीयहोइ ॥ ३६ ॥ चौ ॥ तेहिकदाचितवालमीकसुत ॥ वनमहिव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥३३॥
२२१
अश्वमेध

लीसकलविद्यायुत॥ वेदमंत्रकरिसैनसैधारी॥ वनमहिसभमध्यहितकरत्ना
री॥ तिनपरिहरितीचमूपठावहु॥ अपुनेरघुदेविचारलगावहु॥ आगेकौआदिपति
होहिजव॥ इतनीसेनापठवहुतमतव॥ पुनरघुनाथकह्योपहुंचावत॥ तैवहहुतेरवी
कैताता॥ नौकतिहमरेपजनिआवत॥ अश्वमेधकृतसुनिउठधावत॥३७॥ दो॥ हमपठ
ऐप्यदूतवरवालमीकितिःकाल॥ तवनआहिएबगहुतहुतीवलिपठित्रैगओपचौल॥३८॥
चौ॥ [illegible]पाला॥ पजकरावतवलिन्हपशाला॥ वालकवुधहैताकेसुत त
आगेनीहीइतिरिषीधमयुति॥ पृथ्यसभाउएषकोहमराष्यो॥ बुराभलामुषतेनहूंभाष्यो॥ क
तिकोहृदयेकीयोउननक्रोधा॥ मध्यहितकरीचमूसभयोधा॥ पहुनेतेतितिवालकरिषतीता॥
कीनोउन्है शत्रघनघाता॥ छत्रीअस्त्रसुतेहिगेवाला॥ पठहेतातेसैनविशाला॥३९॥
दो॥ मैंतरजामीरामहैकरनकरावनहार॥ कवदकोकनलीलानभितहिकेतरच्यावि
चार॥४०॥ चौ॥ बोडशवरषवदितिजौमत्रजाके॥ छत्रीचलेसहितदलतिनके॥ सुन्दरजुक्को
तनमहावलवाना॥ धनुषवाणपूतरकसभरेवाना॥ अस्त्रशस्त्रतेविवधप्रकारा॥ सै
नाचलीअनेतसपारा॥ चेदनदिअसरगजानभरेतन॥ उजलपाक्तिसतिचलेमध्यतमन॥
मकतसवासप्रकासतिअंजो॥ सलिंगजुतारकरहितिःसंगा॥ गरवितेवलहिमातेग
जैतसै॥ सिघरूपगरजतरनतैसे॥४१॥ दो॥ महासुन्दरमकांततनप्रगटकेऋअनं
ग॥ गजदैनागतचलतिहिमदमातेअंगअंग॥४२॥ चौ॥ मुकतिमालहिःकंठविराज
ति॥ पक्तिरेषासुसमसुछविछाजति॥ पावतिमकिमाइगजपोधे॥ मानोपालेकालशिव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कौ धे ॥ मगन मुहि चरननि मै पहारा ॥ चरन चलत तब नर स्रुति करि हारा ॥ पगर जेसो
नमसूर लै कानो ॥ कहि वात सुनीय नहि कीनो ॥ रनम मै देषि सस ठाढे ॥ निरषत तस
मनक्रोध्य वितवा है ॥ ८३ ॥ छं ॥ मतिमचर तुम मनलव कुसमै नाघ विमापार ॥ कौ जीत
हि गेइ नहि तेमन म हि करत विचार ॥ ८४ ॥ चौ ॥ सै नादेवीयत म ति षि शाला ॥ निरषम
ऐ वि सम मै दोऊ वाला ॥ करत विचार महा रन दोऊ ॥ धंजे हि इकीतै कुति सोऊ ॥ इष्टदेव
तासु रम राधहि ॥ कर प्रसंसन कारन सब साधहि ॥ महा तेज प्रगट पवीपाला ॥ सिमरसु
हि मता के तत काला ॥ इष्टदेव तिन सिद्धन तेई ॥ कौ हउ पाइ करहि हम जोई ॥ मनव
चक्रमउ नमै यहत कीनो ॥ प्रथम मै सरम उमकर लीनो ॥ ८५ ॥ दो ॥ मनतनक रतन
प्रथि कीयो संध्या सिमरन कीन ॥ रवि सनमुष कर जोर कै ठाढे हैं मन दीन ॥ ८६ ॥ दो
॥ तापमंत्र सुरतको कीनो ॥ प्रथम मै नमसकार करि लीनो ॥ उसतति करि अनेक प्रका ता/
रा ॥ तुम हौ रवि जग को करतारा ॥ महा प्रताप वान क शापसुत ॥ सुरिए करन ते जाहि
मह द्युति ॥ हम रा है प्राणम तुमको सव ॥ सिधकरो हमरे कारज सव ॥ तुम प्रतिपा
लक सकल जगत के ॥ मन वांछित फल देत भगत के ॥ पच्छी वा या तन को रूप वा
सा ॥ तहा तहा तुम ही परकासा ॥ ८७ ॥ दो ॥ सहंसकिरण तुम रवि षे सर्व अनंद तमा
रे ॥ जौ तुम क्रोध करौ हीये सव मै आबद जरि जाइ ॥ ८८ ॥ चौ ॥ तुम ही सम भषष्य वीके
पाला ॥ कृपा रूप वर तेज विशाला ॥ तुमको जान समर्प सकल विधि ॥ को पाप्रणा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ सू० ॥
२२८

मकरध्वज मरी सिंध ॥ जैसो मनु साक्ष्ये कोई ध्यावति ॥ तैसे तुम पद्म वांछित तौ पा
वत ॥ ब्रह्मा विष्णु महेस आराधहि ॥ ईद्रादिक जप तप करि साधहि ॥ किंनर गणजं
धर्व देव नर ॥ सब सेवत तुम हीये भाव धरि ॥ जो तुम करो न जगत प्रकासा ॥ स
कल औ बाधा हो ते विनासा ॥ ४८ ॥ दो० ॥ अंधकार होत जगत महि कछू न सूझै नैन ॥
पर्ष वी को आधार तुम कृपा रूप सुष दैन ॥ ५० ॥ चौ० ॥ सहसु किरण तुम रेसु षमा
ली ॥ तुम सा रषा अंबर को उ नाहीं ॥ तुमरे नाम अनंत अपारा ॥ सिमरे सो तरहिं ध
जै कारा ॥ प्रथम मेरु तन प्रतसारा ॥ ताको सदा प्रणाम हमारा ॥ पुनि आदित्य नाम
तुम जाना ॥ देत भगत मन वांछित दाना ॥ जो नर सदा एह वाकु परसे वहि ॥ पत्र दान
ताहि दिन ते वहि ॥ भयहत तकूरना भासकर ध्यावहि ॥ शत्रु मित्र हे तितसु पावहि
॥ दो० ॥ सषि ताके सिमरन कोई घटे दरव की होइ ॥ रवि को हीये आराधीये तसु सुष
पावहि नर सोइ ॥ चौ० ॥ ५२ ॥ अवर नाम प्रकाश पकुल तेरो ॥ रनमहि दिवि तेकर जुन्न सुमे
रो ॥ भानु नाम तुम राजसु वंता ॥ जो नर ध्याइ होइ बुधिवंता ॥ पुनि सप्त सम सुष नाम
तुमारा ॥ सेवत मंगल विविध प्रकारा ॥ दिनमणि पुरख यहि जो को असे वहि ॥ सुष पा
वहि कीरति जग लेवहि ॥ पृथ्वी पालन नाम तुम ध्यावहि ॥ जीत होइ रन दुष सभ जा
वहि ॥ तुमरे नाम अनंत अपारा ॥ दुष दसक होइ गाइ सेसा ॥ ५३ ॥ दो० ॥ ते मद दस
नाम पढ़ पढ़ सुनें नर कोइ ॥ मन वांछित फल पावइ सिध मनोरथ होइ ॥ ५४ ॥ चौ०
॥ पत्र अग्र धी सिमरे तुम कोई ॥ ताके गृह संपति वहु होई ॥ धन प्रार्थी तन तिन धनपावे ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भजै भोग हित सुरपुर जावै ॥ पद्म सरूप जो तुम सिधि पावै ॥ विजै हेत इंद्रन
सु ज सुबलउ नै ॥ फ्रिः जै सो मन साकरि ध्यायो ॥ मन बांछित तुम ते फल पाऊं ॥ जा
न समर्थ अराध्यो तुमको ॥ दीजै दान विजै नृप मोको ॥ नमसकार तुम को हम
कीनो ॥ तुम अंतरजामी सभ चीनो ॥ ५५ ॥ दो ॥ उस्तुति कीनी लव कुस सुनि रवि भ
यो कृपाल ॥ दिन मणि मूरति वंत है चलि आयो ततकाल ॥ ५६ ॥ चौ ॥ भयो प्रसंन बच
न भाखे रवि ॥ मांगहु सो वर देउं कुस लव ॥ हाथ जोर बोले दोउ भ्राता ॥ सुनहु कृपा कृ
करहु कुसलाता ॥ सपनमुखी रथ सो हम दीजै ॥ आपुध देहु कृपा वर कीजै ॥ प्रथम मोहि
देहु वर होइ विजै रन ॥ करहु असीस हरहि मद दल रन ॥ सपत मुखी रथ सुरमंगा
यो ॥ कुस लव को दिनकर तै आयो ॥ बहुरि दीनो सारंग कृपा करि ॥ सात बान पुन दीयै
महाबल ॥ ५७ ॥ पथ्य कनाम सुर केक हो दीयै कृपा करि सुर ॥ प्रथम दीयो रथ सपन भव
न ॥ ५८ ॥ वे ॥ सुगनि वान जल बान दीयो पुन ॥ तीजो षडग दीयो
लव कुस को प्रगट्यो सुर ॥ ५८ ॥ वे ॥ सुगनि बान जल बान दीयो पुन ॥ तीजो षडग दीयो
तीक्षन गुन ॥ महा शैल बान पुन दीनो ॥ शीला बान दै सभ दुष छीनो ॥ मत्सल बान दीयो
अरु रवि ॥ अतिप्रताप करि सकै न कवि ॥ पवन बान दीनो दिनमणि जब ॥ भए प्रसंन
सो पल लव कुस तब ॥ सात बान दै सीप सुतन को ॥ करी विजै असीस सहोरन मे ॥ सा जम
सु पुन लोग पाताला ॥ तुम सम सरन को प्रभु पाला ॥ ५९ ॥ सुर राज अंतर ध्यान तब भयो

ओनिजधाम रथचढीलावकुशसत्रुगफिचेलेकरनसंग्राम ६०

२५ चौ जैमिनि कहै नृपतिसुनलीजै ६१

एत्रैब्रतपरीजै रथिरथचढिठाढेदो अभ्रूता शत्रुघ्नपितरवालिकप्रभमजाता कथारामाय
नमध्येलछमनदेषतभयो पूछतवचननिकटचलिगयो र
समसुनाता आपननानामकहेसबबाता देषीघतिहदनोतुमभाई तबलछमनकहेसुनलङ्
नातुमभाई महासूरयोधाबलवाना नामकायेतिनकेरनप्राना १ दो० हमरीसमसै
हीतोरनधीरमैंनशत्रुघनमोहि पुछिसेनाचतुरंगनीसकलसंघारीतोहि २ चौ मर्छित
मूसकनालकरनवचनउचारे लवकुसतीनकनामहमारे तुमकौनतुमभ्रातशत्रुघ
न तुमकरिदेषकुसाबंदियुद्धकरै यवांधिथाहमरेलनवभीता भउआपुहिसेनाभईहा
ता हमकउनरतत्यापनजवहीं ताकोहननकीयोहमतवहीं उनतोबाकोबांध्योना
पायो कृतकूतंबांधाअश्वदुराया तासमउररनसमनसेनापते तेसवचनकहेलुस
सायसत ३ दो० सुनकैलछमनकोपमननवचनकहेप्रगटाई रेवालकनिश्चैतुमहि
कालपाइन्योसार ४ चौ तुमतासेआवतसिसुजगाउ ताते कालनिकटतुम्हआर
उनतेसिजेनख्याघुजगावत आपुनेनासन्तिमितडुषपावत तौवनकीघाउलछमन
मासा मावहोकरेप्रानतुमनासा तोत्याक्रोधतलवकुसबलवाना छूटतकहक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिरल मसाजानो ॥ हमको सिंघ रूप जीय जानहु ॥ स्यार रूप निज कों पहिचानहु ॥ सिंघ
एक हैं सभ मृग जानत ॥ जेवक का पर रव कहु पर मानत ॥ ५ ॥ दो० ॥ ऐसे तुम वकहु रे होउं
वुक न्याई सोइ ॥ एकु सिंघ की गरज सौं रन मैं दृ कै नि को इ ॥ ६ ॥ चौ० ॥ तव लग गयं वुक धाध
कतावति ॥ जव लग दृष्ट सिंघु नहीं आवति ॥ यायम देषु भात की सैना ॥ मर्दित मत तक निहा
रहु नैना ॥ सैंगुति भनि तुम कों वकहु चाली ॥ मर्दित कपरे रन भभि दषावो ॥ जेवक भिन सरदु
लनजायो ॥ नि भैका लनिकट तुम आउ ॥ कुस के वचन आवन सुन लछमन ॥ कहो र्व
मप्रति मति क्रोधित मन ॥ वहुरि वालकन सौं सुआमा ॥ वेग पठउ इन कों यमधामा ॥ ७ ॥
दो० ॥ लव कौ कुस आज्ञा करी युद्ध करहु इन साथ ॥ सभ सैना मरदन करहु भले लगा व कहाथ ॥ ८
॥ चौ० ॥ रथ विरथ चढ़ि लव सनमुष धाउ ॥ सकल चमू भिल वान चलाउ ॥ मधि कारदन हड ण हे गजो
लव के सर निकद्धि त भयो ॥ चार वान लव तूण निकारे ॥ लछमन की सैना प्रति मारे ॥ एक वान
रथ आर पठायो ॥ द्वितीय वान गज तन सनमुष धाउ ॥ तीजो य वान सभ योधा संघारे ॥ चतुर थआ
श्व पदाति विडारे ॥ हतकी नीच तरंगनि सेना ॥ सो गति कही परत नहीं वैना ॥ ९ ॥ दो० ॥ ऐसे कु
ठार कनन कटो तन पसु गनि मगन जराइ ॥ तु वालक के सर निस्य चमू परी मुर्छाइ ॥ १० ॥
चौ० ॥ तव लछमन सभ सैन निहारी ॥ वुध्यानन कै कुसकल लव मारी ॥ दि पवैद हदिश
ठाडो लव ॥ लव वानन सौ काटति सैना सव ॥ तौ लछमन गज जोर निहारे ॥ लव ठाठा
गज कै भविडारे ॥ तौ पुन देषे उर तुरंग गन ॥ लव ठाठा कारे तिः संगन ॥ तौ पुन देषे स्व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२८ अश्वमेध

रपहेता ठाढाकीरैतिनहिलवघाता ॥ जहांतहांलवदिष्यसुभासे ॥ ठाठासकलनचमस्कोना
सै ॥ ११ ॥ दो ॥ आपरहासबठौरलवसेनाकरीसंघार ॥ हैगेरथपपाधकहनेकटतिनलागे
वार ॥ १२ ॥ चौ ॥ महाक्रोधउपजोआतीपलक्षमन ॥ सैनानिरषुभयोअचरजमन ॥ हृदैविचा
रतइकबालकलव ॥ छिनमहिकरीसंघारचमूसव ॥ हमरीसेनामहाविशाला ॥ भैकासैथो
थेबलवाला ॥ तेसमधरनिगेरमस्रछाई ॥ बालकहतेकिकालकीन्याई ॥ रुधरप्रवाहभई
सरितारन ॥ बहेजातहैगेपाधकगन ॥ नेसंसारमहिकबलषराजत ॥ सोसिरसरुरुध
रमहिराजित ॥ १३ ॥ दो ॥ लक्षमनमनतकुद्धतमभोकीजोजुधनषटंकार ॥ नरपतिदशर
थकेसचिवसुमतदेवलधार ॥ १४ ॥ चौ ॥ चंद्रभानमंत्रीकेनासा ॥ ताकेसुतदसमतिसोभ
रामा ॥ तिनकेनामप्रथकसुनहीजे ॥ रामकथाअंमृततरसुपीजे ॥ चंद्रसेनअरुचंद्रकेतप्र
न ॥ चंद्राकृतअरुचंद्रचारुगुन ॥ वजरसवेगसुजानमहावर ॥ सुरथअवररखताते
दलनअरि ॥ पुनिगणदलपिअवरदलभीमा ॥ लरततहारणहोतअचभीमा ॥ समनकहेभ्रा
लनचलक्षमनप्रति ॥ आज्ञादेहमकुरैवालहति ॥ १५ ॥ दो ॥ आज्ञादीजेकुपाकरिहतमकर
हिसगरामा ॥ दोनोबालकहननकरिवेगपहोचमधाम ॥ १६ ॥ चौ ॥ प्रथमसहितदेषकुधह
मारा ॥ करिरामनेराथसिकनुमारा ॥ तौहमरुहरेगेइनसोरन ॥ तौतुमप्रथकरोताहिछिन ॥
विद्यमानहमतुमरेदासा ॥ करहिबालकनेकोरनघोता ॥ कहेकोअसमदेहुआपके ॥ दूरकर
हुमनकेसंतापके ॥ तबदीनीआज्ञातिनलक्षमन ॥ प्रथकरोनकोचलेमुदितमन ॥ जैव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Initiative

नवलीव ह्लैष्टस्रवर ॥ क्रोधत हैरनलीचेधनुषकर ॥ १७ ॥ दो ॥ पठेदससिद्धिसवानबरल
वतनलागेजाइ ॥ सीयसुतकें वेधतकी घोलेगये गगनउठाइ ॥ १८ ॥ चौ ॥ भ्रमत भ्रमत लव
धरनिगिरी सोउठोजव ॥ कुसुकेस्रम गेस्राइ पसौतव ॥ लवतन स्रामसु लोगेपाक छुनाही ॥ वंड तकी
घेवानछिनमाही ॥ पुनिकोप्योलवसुसरमहावर ॥ छाडिदीऐसुतिपेनतानसर ॥ चंद्रभाल
सुतगगनउठाउ ॥ दससरेदसदसभ्रमाउ ॥ नभचक्रमाइधपैनीपठकारे ॥ तनबिह
लमूर्छितकरिडारे ॥ लछमननिर्वक्रोधमनकीनो ॥ तीक्ष्नधारचक्रकरलीनो ॥ १९ ॥
दो ॥ लछमनरिससोचक्रलैलवहिशदीउचलाइ ॥ छालमापिकपैचक्रपर सीयसुतवे
ठोस्राइ ॥ २० ॥ चौ ॥ वालककुवेठोजाइचक्रपर ॥ भ्रम्यौलकुशचढ्योदहदिशवर ॥ स्व
र्गद्वारकेदेवसभदेषे ॥ स्रमठसुठतीरथपछिगमावरेषे ॥ वऊएवक्रकोषंडनकीनो ॥
पुनिरनस्राइदरसकुशदीनो ॥ हसिवोल्योलवसुनकुशभ्राता ॥ हमतनलनभमेयोधम
कुसलाता ॥ हमवहुनाशकरीपीसैना ॥ सभतीरथमव लोकेनेना ॥ देख्योजाईस्वर्गको
द्वारी ॥ सातदीपनवषंडनिहारा ॥ २१ ॥ दो ॥ युद्धकीयोयाहमवऊतसेनाहीनीस्रपार ॥ प
ृथ्वीकेतीरथपरस्मिस्राये घोवउतार ॥ २२ ॥ चौ ॥ वोल्योकुससुनलवभ्राता ॥ धन्यतुम्हारी
धनतुमरीयरीमाता ॥ तुमदुमतलेकरोविस्रामा ॥ हमकरिहोइनसौसंग्रामा ॥ तुमकरीयु
धकदैकुसभमारा ॥ मवदेषुसंग्रामुहमारा ॥ नवरथचढ़िसन्मुषरनस्रायो ॥ लछमनभिर
षक्रोधधनुलायो ॥ सातवानकुसुकोकसमारे ॥ रोकुलीयोकुससरभयकारे ॥ वानूना
कोपिचमररथकीनो ॥ ताकेवीचघेरकुशलीनो ॥ २३ ॥ दो ॥ मनमुकतावनसेतकुसछाडदी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२१॥
२८८
अश्वमेध

पै देवन ॥ इक कर सै सो सर चापं तरा तो कीया भेदान ॥२४॥ चौ॥ द्वितीय बान लछमन दि शथिके
तै सा रघी रघ धरनी गिरायो ॥ रघुवीर हीन लछमन को कीनो ॥ कोप्यो लछमन धनुष क
र लीनो ॥ पंच बान कुस ओर प्रहारे ॥ सब बन कवच षोल कटि डारे ॥ पुन कुस एक बान झकार
सि मारयो ॥ रथ धुज सहित उलटि धर डारयो ॥ भयो अचेत परयो भू पर लछमन ॥ बहुर ऐसे
भार उठ्यो क्रोधित मन ॥ पुन बालक प्रति बचन उचारे ॥ तिं बल सो रावन हम मारे ॥ २
५ ॥ दो ॥ तिं रुच समर समुझ बलवंत जो भ्रमी रघुनाथ अपार ॥ तिं बल क्रोध ध गुर्हा इमि बकार
अनन्तु जहि सघार ॥ २६ ॥ चौ ॥ यह वच सुन कह तिक र धनुष उठायो ॥ एक बान कुस ओर च
लायो ॥ घेर लाउ कुस के इक बारा ॥ एक विशिष तेम ऐन अपारा ॥ बानन की य धारा अधी
न सी भासत ॥ न कर सगरो सर तनदु सारउत ॥ धरनी गिरयो उठ्यो समीर वृती ॥ क्रोध
ति कहेयो बचन लछमन सु न ॥ जो मि हि चल सुत हि सी पा माता ॥ तो तुम एक रौं अब हीर
न घाता ॥ सो यह सुमर न करि बान चलाउ ॥ लछमन को हनि धरनी गिरायो ॥ २७ ॥ दो ॥ ल
छमन मूर्छित भयो रन कुस मारयो चलि ताहि ॥ रोमा स रामसुत बली अर्ह समर खानाहि ॥
२८ ॥ चौ ॥ मंद मंद कुस पवन झुलायो ॥ मीतल जल मुष मध छिरकायो ॥ बीजन करत र
बाल हि गहाहा ॥ धर घस्त्र नहि नु चितु ह बाहा ॥ पस्यो रहि धरि कम हु रत ॥ भयो सचेत उ
ठायो सपवत ॥ मुष्टि प्रहार की यो कुस के तन ॥ युद्ध कर न हित पुन ठाडे रन ॥ समुझत दो
ऊ समर रन माही ॥ तौ पत क्रोध धन विरत नाही ॥ बहुर धनुष कर लीयो उठाई ॥ पहुन

॥२१॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भऐ उछ्ती समो ध्याइ ॥ २९ ॥ इति श्री [illegible]

[illegible] ॥ ३० ॥ समुस्त ॥ हैमिनु कहै सुन नृप पतिव

र ॥ कथ्या रमायण सार ॥ वन धरि ॥ पुनि सन मुष दे उ म सु रभ चेरन ॥ तौऐ धनुषकर कु

स ॥ रुल छमन ॥ तव लछमन न मन न ज्ञान वी चा रो ॥ सो पा ना म मु ष वालनि का ह्यै ॥ ता हीव

रहमको म स रछा उ ॥ तनुद्या कुल करि धरति गिरा यो ॥ हमसीयको वन का इ गया ज व

गर्भ सहित था जनक सुता तव ॥ प्रगट है हि वाल यह सीय ते ॥ नि श्री यह ठहरानी जा

यते ॥ १ ॥ दो ॥ पुनि विचार लछमनकी ओ यह बालक हहि दोइ ॥ जुगल जनम ति गर्भ

सीय पुन सं भ्रम मन हो ॥ २ ॥ चौ ॥ अथवा हो हित हि ली ऐ सीयके ॥ महा सु र बाल कहि

डुनीयके ॥ [illegible] को मारे ॥ सीय करुणा ते उ सहि प्रहतेयो ॥ हमपर हो तो

सीय कृपाला ॥ दानवको टप रहे तम शाला ॥ कृपा जानकी उ रह मारे ॥ लंक लई रा

क स सभ मारे ॥ सीय करुणा ते श्री रघुनंदन ॥ बांध्यो सेतु कीऐ रिपु कंदन ॥ मया र

जनक तनया की मोपर ॥ ताते हम सभ नास की ऐ अरि ॥ ३ ॥ दो ॥ यो भाषा तहि श्रुति

वचन पुरुष युध को जाइ ॥ ज हपु वती स त्या वती शत्र जीति घरि आइ ॥ ४ ॥ चौ ॥ जो

ई स्त्री विभचार न होई ॥ तिः पति पुद्ध न जीते सोई ॥ सीय सार षी नार वन व पा ॥ दीओ

रामकी नो उपहासा ॥ निरदूषन रघुनाथ पठी वन ॥ ताते हम री जीत न हो रन ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

यहु बालक अनुचर सीय माता ॥ ऐक वहि तिक्रम है दो ऊभ्राता ॥ दो० जानि हि लव ऐ जनक सुता के ॥ ताते महा पराक्रम याके ॥ सीय नाम लेवान चलाऊ ॥ तिः सरसो मुरुकोमुरछाऊ ॥ ५ दो० ॥ यहु हनन है हि सत सीय के गर्भ न उपजे हि देइ ॥ सेवा कर सी प्रसंन सीपइ न को बलु हैसो इ ॥ ६ ॥ चौ० ॥ पुनसर असगनि चमू महि गऊ ॥ सेना सकल प्रताप रत भऊ ॥ तान रउवरे पालव सर ते ॥ है सव मर्दित भए हवि सर ते ॥ जरित अस्व रथ हस्ति पदांता ॥ योध सकल भए रन घाता ॥ तर गई धुजा पताका अवारी ॥ सूर जसर थाप अति भयकारी ॥ मेघ वानल छमन छाड्यो तव ॥ पवन वा कुसप हो दी ता तव ॥ मेघ वि तिभव का घेउत की नो ॥ अग्नि वान सेना दुव दीनो ॥ ७ दो० ॥ भस्म करी सेना सकल सु रथ रे मुरछाइ ॥ दग्ध भयो के ऊन सगऐ पुरी अयुध्या धाइ ॥ ८ ॥ चौ० ॥ दानी मल्छ जरे सभ के सा ॥ सुमन ऐ मुख प्रवल न रे सा ॥ सुमित्र उठी न मध्य सव ठ्या अति ॥ ले कमनधिर रत्र भयो या कुल चेत ॥ कर खर रथ न वडु ताजरि गऊ ॥ सैना निरख शोक मन भयो ॥ लछमन क है विव कहि ऐ धव ॥ दे खी यत अस्व तु काल को अवसर ॥ धनख धार बा ते ज लयो अन का जा ॥ है ऐ सा इछा मन हि राजा ॥ तीन वान पुन का ढि सामुसा सुत ॥ कीउ धनुष टंकार क्रोध पत ॥ ८ दो० ॥ वाल मीक को ते ज कुस ठ हरा उ सर माहि ॥ क सि मारु अलक्षमन हृदै की ऊ मूरछा ता हि ॥ ९ ॥ चौ० ॥ लछमन मति मर्दित कीनो रन ॥ लव कुस अति आनंद भऊ मन ॥ तेऊ पर रथ रन का करम भयो ॥ भाजे अवध पुरी महि गऐ ॥ ३८

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रघुवर आगे होकी ओ पुकारा ॥ सुनउ अवन प्रभ वचन हमारा ॥ मर्दित वालक कीयो ल
छमन को ॥ सेना हनन करी सभ हतिको ॥ रघुवर भर्थ शिशिप्र समासम ॥ सुन यह व
चन भयो क्षिस तब ॥ गदगद हैं अंसु नयन बहि गठरत ॥ सभ पुर हाहाकार पुकारत ॥ ११
दो ॥ महा राम वतौत प्रभ दूतन सो प्रगटा ॥ कैसे लछमन सेन सो लर्यो वाल मर रघु
र ॥ १२ ॥ चौ ॥ दूतन सकल वतांत सुनाओ ॥ जैसे रन लछमन मर्छ गयो ॥ दूत कहै
सुश्री रघुपति वर ॥ यह वालक राकस तेरे अपर ॥ तुम रावन कुल सकल संघारो
इन सम माहा कों धजा यधा सो ॥ वै रूली कों दसकंध मातको ॥ रघुवर हृदै वीचार रवाए
तको ॥ यह वालिकन ही माधि सकों तन ॥ तिन महि कीए लछमन शत्रुघन ॥ महा सुर या
धवल वाना ॥ तेव पुरे त्यागे रण प्राना ॥ १३ ॥ दो ॥ रामचंद्र वोले तव वै पत्र माइ कहिं का म
कहि महि संग्राम ॥ १४ ॥ चौ ॥ हमरी भजा जोरी वरस्त्र वदाऊ ॥ भ्र
प्रतिः नमित्र भ्राता दाऊ ॥ प्रतिः लछमन रावन हतु कीनो ॥ महा सुर संग राम प्रवीनो
तमिर हत राजधुग सोऊ ॥ पुनि पुनि सुनउ अचरज तौ यह आवत ॥ महा वली हमरे
सोऊ कैसे वालक मर रहावत ॥ वालक रन घाता ॥ रघुवर कहै भरथ सुन लीजै ॥ वानरी
दोऊ भ्राता ॥ कहि न सकै वालक करन हमरे हाथ्या ॥ कैसे युद्ध करे उन साथ्या ॥ १५ ॥ दो ॥ र
छ चमू संग लीजै ॥ यतन कैं कना हमरे ... ॥ सकल समग्री लंक की लै संग चल
माहा हमरी समवाहित तुम वेग चढउ दल साज ॥ वानर री छ चमू संग कीजै ॥ भिन तु
उस मात ॥ १६ ॥ चौ ॥ वै रना इभ्रात न कुली तै ॥ जीत उताइ वेग अव हम वोल क्षि ॥ से
सुरवी र हम धपनी रा ऐ ॥
मरे भ्राता मर रहा ऐ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २५ ॥
२८२
अश्वमेध

नासा त्रि चल रुंन तका निक ॥ आज्ञा मानन नी शान वजायो ॥ चल्यो भरथ परन भट्ट लछ
ण ॥ चले भरथ से उमत वल वाना [illegible] तं अंगद हनुमाना ॥ पुन सुग्रीव नील नल सं
त क ॥ चले मान आज्ञा जगपालक ॥ १२ ॥ दो ॥ भरथ चल्यो संग सैन ते वानर रीछ अपा
र ॥ सूर वीर योधा वली कटक महा भे कार ॥ १६ ॥ चौ ॥ तेसे सत्रुघ्न कै रण धीर सारा ॥
पर तरु रोषन वीच अपारा ॥ उडत वीच ति: ध्वन कांजे से ॥ गनी जात न हसे ना तेसे ॥ रघु
नर के भरथ्य कुसल ताता ॥ की तैन हीवलकन घाता ॥ जीवत पकर ईहा गहि ल्यावउ ॥ प
हतकारज के वेलम न लावउ ॥ ऊः कीने मर्द्दित तनु सभीता ॥ तिन सापद लेफ सव वाता ॥
वनमर्दिव सत वान्तव पितनाके ॥ महा पराक्रम सुनीयति ताके ॥ १९ ॥ दो ॥ भरथ चल्यो के
धनहीचे मन आज्ञा रघुनाथ ॥ रंग भर म प्राप तिम चौअगनित सैना साथ ॥ २० ॥ चौ ॥ म
र्दित वरे योधा रन देखे ॥ लछमन वऊ रे शत्रुघन पेखे ॥ रण मति ठाडे लवकुस राजत
महा सूर सरद्दल वीमा जेति ॥ मंदर अ चवक ल सदृष भानुजेति ॥ शोभी पावत सोय सुता
तेसे ॥ नर वृभ भरथ मष वचन कहि तव ॥ रेवनचर रऊ हनी सेना सव ॥ तुम कति अजु
योधा पकिका मा ॥ मर्दित कीये योधा संग्रामा ॥ अव वलो रन ठाडे सवधानो ॥ तुम केति
पन हीय यह प्रानो ॥ २१ ॥ दो ॥ सेना के आज्ञा करी मन मन्हि मधुर मुसकाइ ॥ वरषन लागे
वान तव मेघ वूंद के भाइ ॥ २२ ॥ चौ ॥ कुस आज्ञा कीनी लव भीता ॥ कर रऊ युद्ध कीजे
अरघाता ॥ का पोल वकर गदा संभारी ॥ पर्यो वीच सैना वऊ मारी ॥ महा मत ॥ २४ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जोप

नं ४

गजकुंभविडारे ॥ हे रघुपति पापक वृन्द संघारे ॥ अघ दै धर्म निहारे तुक हावी ॥ लव लता अग
नि मन्ना वरषा वत ॥ सैन भुरुपकी समत एन्याई ॥ कीन मन्हवा लि कस कल जा सई ॥ चुर
नकी ये हने वनु योधा ॥ पतेरुप ऐसे सीयसुत क्रोधा ॥ २२ ॥ दो ॥ सैना हनी निहार के भर्व
क्रोध जी य धार ॥ सो वान गहि तनु एन तेल व कोकु चेपु प्रहार ॥ २४ ॥ चौ ॥ हृदत सात लाव स
रम ऐ ॥ घेर लीकुस सन्मुष गरो ॥ वानपिंजरे मैकुस कीनो ॥ क्रोधत मैकुस धनुष करली
नो ॥ मग नेवान षडद्दी योवि शाला ॥ सर पिंजर जारयो तति काला ॥ पुनवहहवान चमन्म
हि गयो ॥ सैन सकल पर जार तम जो ॥ लागे तुरन सम्रकेमाथा ॥ कर हनै ता अंगुरी का
हृता था ॥ काह के पग देहन जरत है ॥ रनम दि हाहा कार करत है ॥ २५ ॥ दो ॥ है गेरथ
पापक जतले सैना कारी संघार ॥ शस्त्र संवारी मरुधतात जारक रीसम कार ॥ २६ ॥ चौ ॥
मगवि वान जारी सभ सेना ॥ जरत भई मव लोकी नैना ॥ भागे के ऊमे वध धुरयऐ
मगनि वान जारी सभ सेना ॥ वैठथे रघुवर यज्ञ शाला ॥ गुरु वशिष्ठ कुछ आसभी एला ॥ व
क हत व तोत रामप्रति भऐ ॥ वैठ थे रघुवर यज्ञ शाला ॥ योध क हुकम रघुके से
रन वि मुष ऊ मुष भाषसुनायो ॥ सकल कुटक को वाल जरायो ॥ वाल पराक्रम सुनत नव
गा ॥ युद्ध कर ध्यके विधि वल अंगा ॥ अव लौ शीरे ह्ने गधस्नो ॥ वाल वल वान ॥ टहू कनक वडे निहार
रनो ॥ २७ ॥ दो ॥ रन मदि वृत से नाहनी वालक अति वलवान ॥ सो पत्र प्रतापन हेत रघुवर रच्यो विचार यः ॥ सुव
लो इति हृस हतामुभ गवान ॥ २८ ॥ सो ॥ राव शिष्ट वन भ्रात को ॥ २९ ॥ [illegible]
समस्त नन को दैत ॥ ३० ॥ [illegible]

[illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चौ॥ जैमिन कहै सुनजनमेजय पति वर॥ कथा रमायए अब वन हहै देषाए॥ राम सुतन कौ जस
उपजावन॥ श्री तनके अद्भुत करम सिरावन॥ रघुवर की इक समन लौ सै॥ कारन रूप कर्त
विधते सैं॥ पुंनमुष वचन कहे रघुनाथ कै॥ सौ सधुनत मी ज तत मि ज तहा यथ कहै॥ लछम
न स रशत्रुघन भ्राता॥ ते कौ मां हि तरन जगविष्याता॥ सूरवीर योध हतकीने॥ जैतो
रण्य गिरा यम नसादी ने॥१॥ दो॥ दोनो वातलक अति वली कैरी चमरन घात॥ मांहित
कीनो शत्रुघन लछमन से तिः भ्रात॥२॥ चौ॥ सकृत तिन भिनु यज्ञ हम कीनो॥ अपवृत
सुभ यापुन सम हनीनो॥ सम भस तापज जनक सुता को॥ पानि रही दोष दीयो वन ताको॥
कुन हैइ पुन्य कौ नासा॥ सौ यसार षी ती यवन वासा॥ सु रूप हम का मभले न हिं कीने
नैर दूषन सीय को वनु दीनो॥ तिन अवगुन मकहि भवन निकारी॥ कैसे हौ है जु तित ह
मारी॥ अति दुष तिन भई इ विरहि वियोगा॥ हो है कुन यज्ञ हम से जोगा॥३॥ दो॥ नाम अग्र
प्रतिमा करी सौ यपसू ती सवधान॥ ता सौं भव रुगतो हम कुन होइ सम बहान॥४॥ चौ॥ यो
ज्ञौ नयषी हम कौ य हवी ता॥ सतु सीता सभ जग विष्याता॥ तां ते मो हि कि सल्ला नहीं कीया॥
गर्भ सहित सीय को वनु दीया॥ जनक सुता को दीयो निकारा॥ कैसे होति सु जस हमारा
हान हार हौहै पुन तैसे॥ को टउ वाइ अहि टरन हिं कैसे॥ सचिव नाम मैत्री रघुबर के
लीयो वुलाइ तिहि अवसर को॥ ताको वचन कह्यो रघुनाथा॥ लेजा व ऊ से भ्रात स
भसाथा॥५॥ दो॥ रघुवर मंत्री को कहे यो कहती यो हनुमाना॥ अंगद सुसरुन
लनी ल कौ पुनि सुग्री व वलवाना॥६॥ चौ॥ तुम कहि परा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

क्रम कीने भारी ॥ ताकस रन हमि लंक पजारी ॥ तिः बल कै अब नाहि लजावउ ॥
करउ युद्ध कै रति गति पावउ ॥ वकतउ तेतुम सम्र्थ मैं माना ॥ अब वर वली हम
नाहि समाना ॥ कहा पवरा कउ गयो तुमारा ॥ इह बालक रन कटकु सम मारा ॥ ता पाछे
तुम राव निकिः काजा ॥ युद्ध करउ अमुक ता वजवाजा ॥ ७ ॥ दो ॥ ले संदेस संत्री चलेयो
सबल सैन संग धार ॥ रन भूमै मै प्रापति भयो जहा युध की ठौर ॥ ८ ॥ चौ ॥ मंत्र
नि भीमित भर रथ चलि गयो ॥ गंगा के तट ठाढ़ भयो ॥ सन उतार कीओ इसना
ना ॥ संध्या सिमरन की या विधाना ॥ ता पाछे उत ल धनुष पवा इयो ॥ पुष्प वृता
पवान मंत्र ठठयो ॥ जग मंत्र सुकृत जेऊ कीने ॥ ते सम धर वशिष्ठ मंत्र दीने
ततछिन पुन रन भूम मंत्र आओ ॥ क्रोध तिहे के धनुष उठाओ ॥ कुस को बान प्रती
र कीयो तन ॥ पाछे ताइ पठयो दस घोतन ॥ ८ ॥ दो ॥ रथ समेत वाकउ कीओ दस
घो जनन पर मान ॥ बल संभार कैसी यसुत पुन आयो सवधान ॥ ९ ॥ चौ ॥ क्रोध
तेहे कुस सनमुख आयो ॥ मन्त्री उ रस रथै न चलायो ॥ भै कारी सर भ्रुगधि क रा ला
काढ दीयो सो य सुत तत काला ॥ यो जन वी सम रथ रथ पाछे ॥ पर यो म सुत लगे
सरआ छे ॥ पुन घसीट तत छिन ल्यायो रन कु सब तन निरखसः रवि सैं मन
मन भायो सिसउ प्रति बचन उचारा ॥ कवन गोत्र हे बाल तुमारा ॥ कवन नाम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तुम केपितमाता ॥ कवनगुरु विद्याको दाता ॥ ११ ॥ दो ॥ सुनवालउतहरु दीयोलव
कुसहमकेजान ॥ जनकसुता केपुत हम कुलरघुवंसप्रमान ॥ चौ ॥ वालमी
कऋषगुरु हमारा ॥ तिनतें विद्या पढी अपारा ॥ जपतवतां तुसकुलकहि दीनो ॥ मनम
हिकछुसंभ्रमनहिंकीनो ॥ सुनकै भरथयुधिवारतमनमैं ॥ सीयकेगर्भजुगलनहीं जन्मे
॥ देषतयह वालकवीरगुन ॥ पढे शास्त्रविद्यागुरुतेगुन ॥ महासूरसंग्राम विधाना
तां तेकुलरघुवंसवषाना ॥ कहेहांनिकुवंसवढावति ॥ युद्धवितेहित ऊंचकहावत ॥ प
र ॥ दो ॥ भरथतजऋषिमनक्रोधहिवचनकहेपगराई ॥ रेवनचरऊसहि रतमजूठेवण
वढाइ ॥ १४ ॥ चौ ॥ यहववसूरहोइरनकोई ॥ नीचऊंचकेसमनहींहोई ॥ होहिकदां
चरहिलीयेसीयके ॥ पतकहनतिहठहैतायके ॥ हाइनद्धत्रीधर्मवनचरते ॥ यहविधि
हैसमहैसमतिसूरसिमरते ॥ तुमवनचरहमद्धत्रधर्ममन ॥ सबहीतसहितविनासुकरेरन
हिसहीरसनमुषममुजमाथो ॥ छत्रधरमकेमर्मनपायो ॥ मारहुजोसिरकालतुमारे
निश्चैजाननऊवचनहमारे ॥ १५ ॥ दो ॥ क्रुधतिकुसवचकहिभरथ संभारकरूमाप ॥ देवले
ऊवलचलनचरनरनमहितयुद्धप्रताप ॥ वंद ॥ चौ ॥ ताहिनसरकुसपांचनिकारे ॥ क्रोधहिये
भरथकेमारे ॥ रनमहिअंधकारहैगयो ॥ दशदिशशावदभयानकभयो ॥ रथ्यातुरंग
स्वारविडारे ॥ कवचध्वजाछिनमहिकटिडारे ॥ वहुरभरथकेसरनिउडाओ ॥ लेकरसाग
नवीचठहराओ ॥ वहुभूमारयुनधरनीगिरायो ॥ मृतकनभयोभरथमरद्धाउ ॥ हिकुम
हिरनपधारहिधर ॥ वहुरउठ्योलीनोकुवंठकर ॥ १७ ॥ दो ॥ भरथवानजोप्रनिकहेउठ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करहे संग्राम ॥ इह कहि बसरजु गे नहि अवज गोकिः काम ॥ १८ ॥ हनूमान सु
ग्रीव उठे तब अंगद जामवंत सातक सभ ॥ उठे नील नल सभ बनि बाना
और द्रुम गहि करे रन सवधाना ॥ लीये उपरि सैल द्रुम महा पचा ॥ युद्ध करत तब
कुसकै साथ्या ॥ गहि ल्यावहि द्रुम बडे पहारा ॥ सीता सुत तन करत प्रहारा ॥ हनत
निशंक कै धजी यछानत ॥ मन मधि नैक न संसै आनति ॥ तुमल युद्ध हो तभ यक
रा ॥ किलकत बानर शब्द अपारा ॥ १९ ॥ दो ॥ तब पवनत सैल आकास सम कुस तब
करि तन प्रहार ॥ तापन बदा जग [illegible] धकरि सब मारत इक बार ॥ २० ॥ चौ ॥ पुहप सु
मानल गहि लवकुस तन ॥ मद्दत मान ठाडे बांकुरन ॥ पुहप बहि तु ले मारत ते
से ॥ लागहि बालकन को और ते से ॥ सीय सुतन तन श्रम नहि लागे ॥ सिंघ संत
गरजत रिस पागे ॥ पुन कुस क्रोध धरि धनष लीयो कर ॥ हा जो आतवि कराल
पवन सर ॥ उडि गए बानर सकल गगन तब ॥ लागे भ्रमन ब्योम मधि तर सब
भ्रमत भ्रमत रन सभ बल हारे ॥ तब सर आन धरनि पटकारे ॥ २१ ॥ दो ॥ हाइ
स्वासु धरनि और बानर सकल हहराइ ॥ कोऊ भए बसि काल के कोऊ परे मुर
छाइ ॥ २२ ॥ चौ ॥ निरखत भरथ भए ब्याकुल रन मन ॥ हनूमान सभ ए मधि तर
न ॥ महा बली पाए तुपवन को ॥ [illegible] सम सुरन हि त्रिभुवन को ॥ [illegible] दु गुण अर
[illegible] ॥ लिन मठे [illegible] बधी कर गहि ल्यायो ॥ सो हनवंत सिस उमर हा यो
कैद उठायो ॥

ल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२८६
अश्वमेध
॥ तृति २१ ॥

वानली सौं हनि धरनि गिरायो ॥ पहत वानर उभा बत मुष ऐसे ॥ सुरन तीन लोग
तुम जैसें ॥ प्रलेक सैं छिन अवन अकासा ॥ सात दीप नव षंड पिनासा ॥ २३ ॥
दो ॥ ते वानर वलु तार कैं धरन परे मुरछाइ ॥ छिकन गति भग जंत की लषी
न ही जाइ ॥ २४ ॥ चौ ॥ चिंता करत भरथ अपने मन ॥ सभ वानर वलु हम पर
रे रन ॥ सचिव नाम मंत्री तव आऊ ॥ भो षम भरथ को बचन सुनाऊ ॥ जीतिन स
कउ वाल संग्रामा ॥ ता ते वेग करहु यह कामा ॥ स्वर्ग लोक ते अस सरा मंगावहु
काम वान सांमि सुमरहु बहु ॥ वल करि जीत सकहु न हो वालक ॥ पहकुन ने
की जै तत काल कक ॥ इंद्र सरा अति वलवाना ॥ सो है वल मदन के वाना ॥ २५
दो ॥ अवर जतन सौं पुरुष इन जीत सकै नहीं कोइ ॥ इंद्र सोना अति प्रवल सो
है वालक के होइ ॥ २६ ॥ चौ ॥ भरथ क्रोध करि वान चलायो ॥ दै संदेस सुर लोक प
ठाऊ ॥ पहुचो जाइ वन तत काला ॥ लागी जरन इंद्र की शाला ॥ सकल देव म
न अचरज भये ॥ तत छिन सकल शक्र पहि गये ॥ दुषित भये वहु कर तपु कार
रा ॥ अग्नि वान सुरपुर सभ जारा ॥ इंद्र कह्यो यह भरथ पठायो ॥ मांगत पठी
हैं हम तेऊ सारा ॥ पठवत है अस सरा महावल ॥ तुम निसचित वसो अपुने घ
र ॥ २७ ॥ दो ॥ आउ इशान रथ प्रमान रन पठो सो हनी इंद्र ॥ रंगभू सप्राप्त भइ कि

५२३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सवानकेवृंद ॥ २८ ॥ चौ ॥ भरथ्यकहैसुनहेतीअसवनन ॥ मोहिलेउबालकन्हठा
ढेरन ॥ रथ्यआरूढभईअसरतव ॥ नवसतसाजिसिंगारचलीसव ॥ कुचककठोरऋ
जनदिगदीनो ॥ वदनक्रांतिशशिसरदनदीनो ॥ संकीरनभषनसातेतन ॥ सनमुषच
लीभईहरषतमन ॥ मोहतकमानवानसमपलकै ॥ वरछीछूटिरहीमुषअलकै ॥ ल
वकुसघेरलीयोदलहिदुगासो ॥ हतवभावदिघरावतिहिसमसो ॥ २७ ॥ दो ॥ दिगवदैतासरम
दनकेमारतितलवकुसठौर ॥ सजिसिंगारसवमोहनीठाढीरनदलजोर ॥ ३० ॥ चौ ॥ तवल
वकुसमनमाहिविचारत ॥ कमवानयहमहाकठनअति ॥ कहिसंग्राममनजीतसकहिरन ॥
देसआरइंद्रपठियोजन ॥ लवकुसयहविचारकीयोतव ॥ ब्रह्मज्ञानसोंजीतहिंगेसव ॥ ब्रह्म
ज्ञानकोतेजप्रसंगापे ॥ विधसोवानअसगउठहराये ॥ देवांगनाउरकसिमारयो ॥ उडीअ
काशसमनवलहारयो ॥ भ्रमतफिरीनभकीषसकलतीय ॥ वालसमनकेअंगअंगकी
य ॥ ३१ ॥ दो ॥ अंगभंगसकलतीभईवचीनरोकेतीय ॥ ब्रह्मज्ञानसरवालकनकसिमारयो
तीयहीय ॥ ३२ ॥ चौ ॥ केउपमभईहीनचषअंगा ॥ एकमभईतीपपगविनअंगा ॥ केनह
नासकाननहीसंगा ॥ केनहतजंघस्थलभंगा ॥ केनहकेदोऊकाटेकाना ॥ केनहकेअत
करअस्थाना ॥ प्रानअसंनवलहीनभईजव ॥ परीआईवनमहिव्याकुलतव ॥ देवांगना
महादुषपाऊ ॥ भागगईसववीलमुनलायो ॥ कहमवनकहसुठोरेधर ॥ दोरिगईद
हषिसवलकउर ॥ ३३ ॥ दो ॥ केपमरषपरारधनुषतजिषडगलीयोकरधार ॥ लवकुस
केसनमुषभकेभाताकेरथवार ॥ ३४ ॥ चौ ॥ कुसलवदोनोषडुलीयेकर ॥ सनमुषभयेमार

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२८७

पभोए सूर वर ॥ सिंघ परै गज गन महि जैसे ॥ युद्ध करत बालकन तैसे ॥ सैना बहुत
भरथ की मारी ॥ पैन परे सिर सकल संघारी ॥ सो यस्त तेको प्रताप अति भारी ॥ सम सै
ना मूर्छित कर डारी ॥ मन्त्र कभी केउ तजि भीजोर रन ॥ महा कए दल दीयो बालकन ॥ सै
ना निरषि भरथ क्रोधहीय ॥ पाइ प्रहार षड्ग सौ तन कीय ॥ रूप ॥ दो ॥ तन कुवा मकुस देह
को कच्चो षड्ग की धार ॥ दुषलालो न ही बालक दुको प्याबेर चितारि ॥ ३६ ॥ चौ ॥ पुन कुस के
पषबुग कर लीनो ॥ कहयो भरथ को बचन प्रवीनो ॥ भाग कहां जात बंधु स्वरूप पायो ॥ सो चित
तार पुन षड्ग चलायो ॥ लागो षडुग भरथ मूर्छा यो ॥ वेहवल हैं धर नील पटाउ ॥ प्रान
न की यम भरथ के नासा ॥ कुसल व मात सीय के त्रासा ॥ लेकर शस्त्र परे दोउ भीता ॥ कीनो
सकल सैन को घाता ॥ अगनि सकल वन दाहत जैसे ॥ सैना नास करी कुसु तैसे ॥ ३७ ॥ दो ॥ मा
रे पुष्ट मंत्री सचिव पर सौ वंत रन माहि ॥ काल स्वरूप देवी ऐनि मानो संसे नाहि ॥ ३८ ॥ चौ ॥ वे
तर सकल शस्त्र छतकीने ॥ भ्रमण माहि मूर्छित कर लीने ॥ हनुमान वहि मूर्छी यो ॥ सुग्री
व जेवरी ठार चिलाउ ॥ ताको गहि बांध्यो दड तरवर ॥ अवर सकल है परे मूर्छित धर
प्रभु की पात ज्यों जे छित पति ॥ संसै दूर कर रउ ते भिनु पति ॥ यह वानर ये अत बलवाना
अंगद नाम वान हनुमाना ॥ नपसु सुग्रीव नील नल जैसे ॥ मूर्छित कीये बालकन के
से ॥ ३९ ॥ दो ॥ सूर वलो इन कपन सम तीन लोक मै नाहि ॥ अत अचरज मन होत है वह
कैसे मूर छाहि ॥ ४० ॥ चौ ॥ ति: हनुमंत लंक गड जारयो ॥ रावन को मूर्छित कर डारयो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ल २

अंगद अव नील नल योधा॥ कै सै इन त्याग पौरन क्रोधा॥ पुनि सुग्रीव सभन को रा
जा॥ महा वृद्ध सु रसिर ताजा॥ वज्र रोजा मवान अति सूरा॥ संत कमा हित वल पूरा
पूरा॥ वान रस अवर महा वलवाना॥ भो सकल रन म रखित प्राना॥ जनमेजा पृछि
धरि भाउ॥ पूरन भयो अठतीसमोधयाय॥ ५१॥ इति श्री भारथ्यापर्व सो अस्वमेध विष
ना॥ अठतीसमोधयाय यह तरछि किन पूरन ताना॥ ५२॥ ३८॥ समसरा जैमिनी वाचा
चौ॥ जैमिनि कहै सुनहु कुरुराई॥ प्रश्न पूछि ओ तुम सुषदाई॥ वालरन तज्या वानर रन
जै सै॥ वरन सुनावत होतु अते सै॥ लव कुस अति ताति रघुनाथ्या॥ तौ ते इन न उठा ओ हा
थ्या॥ अव तद रूप रघुवर को॥ क्रोध निवार भयो वनचर को॥ ऐक वार रिसि शस्त्र चला ओ
सो कपि आपने मन पछुता ओ॥ जो हनवंत धरत जीय ध्याना॥ सो ऊ रूप वाल कुस विधा
ना॥ गुरु सुन मुष से वक कत हिनी ही उठा वत हाथ॥ ऐसे जतन्या वंत रन ठाडे है रघुना
थ॥ २॥ दो॥ तौ ते हनवंत आप वंधायो॥ यह विचार मन महि ठहिरा ओ॥ सभ का हू का वलभ
ग वाना॥ अतौ कपन के मन अभिमाना॥ वल दिना ईली नो अपुनो प्रभ॥ अरथ्या गर
न मर्द भऐ सत्र॥ पहि कारन सभ मर्द त भऐ॥ मन अभिमान सभन के गऐ॥ वज्र रोम
संभार उठौ तन॥ रुधर प्रवा ऊ देष विसमै मन॥ योधा परे भ्रत कर न देष॥ के ऊ सुर
मर्द तन अवरेष॥ ३॥ चौ॥ जीवन आ सुभर थ त जा॥ अरु धुनि भी जत हाथ्य॥ जे ऊ वचे र
न दीन जन ते ऊ चमतकपि साथ॥ ४॥ चौ॥ चल्यो भरथ्य जोर सैना पुनि॥ तव वाल्यो कु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

सभरथ वचन सुन ॥ प्रहस्त सेना नहीं जीत सकै सुरु ॥ ऐ क प्रतापी ग्या आवर कहा होत तुम
हनूमान आरत हा शत्रुघ्न संगा ॥ मरु बांध्यो द्रोऊ तरे वरि संगा ॥ जो मुक्तता व कहु आई
कदंम सों ॥ युद्ध विना जीत ऊ तुम हम सों ॥ तौ तुम बल करि उनकुं छुडाव ऊ ॥ तौ
तुम जीत्यो हम माहि हरायो ॥ तुम महि परि बल दीन आवे ॥ तिं: बल हनूमान मुक्तना
वै ॥ ५ ॥ दो ॥ सुनतहि भरथ क्रोध धरि तिम पाली योधन वस रहाय ॥ सी य सुत के सन मुख
मयो कछु कचमत्ते सायु ॥ ६ ॥ भरथ क्रोध सों बान चलायो ॥ बालक अंग कुं हन न ह
पायो ॥ अवत सर कुस नैनन चीनो ॥ फल तहां पन सो टूक टूक कीनो ॥ कुस छोड्यो स
रसा पांच पाऊ ॥ धनुष भरथ का काट गिराऊ ॥ दस सर सों सत धनुष अवर मगाऊ ॥
तीन बान कुस उर पर ठाय्यो ॥ द्दिद्द सवर ननी लेह गयो ॥ लव कुस बीच घेर के लऊ
क्रोध धरि कुस धनुष संभार्यो ॥ बान अस भरथ को मार्यो ॥ ७ ॥ दो ॥ काढ्यो तब ऐसो सब
सर ॥ लीयो अनेक शक्ति छोड ॥ ती बानन ने घेर कै तन सह दी उडाइ ॥ ८ ॥ चौ ॥ वेधी सब
लुभरथ की सैना ॥ सो गति कहीं पर तन ही वैना ॥ हैगौ रथ पयादा सकल समाई ॥ सर वीर स
रथि तक ठारे ॥ जीन रथ पे कंदरा माहीं ॥ ते सब वेधति की यता ता हीं ॥ रोम रोम महि पस
रे वाना ॥ धरनि गिरे हैं सम बलवाना ॥ ऐको भरथ रह्यौ तिन अवसर ॥ पुनि कुस कीयो अग
नि अस्त्र संभर ॥ ता मधस सीय के सत ऊ हराऊ ॥ तिं: सर भरथ अंक कास उडाओ ॥ ५ ॥ दो
॥ ता गिरारायो भरथ के सिर तल ऊपर वाई ॥ ना सुन कीनो विकलत तन धरन पसो
मरछाइ ॥ ५० ॥ चौ ॥ भरथ मूरछा हि धरनि गिरयो जब ॥ मनंद ही पे वढ्यो लव कुस तब

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बालक होत हैं अस ब्रह्म सवारा॥ वन महि श्री ठाकुर रहि विहारा॥ लव कुश ले हनवंत प्रभु प्रति
रहि॥ तास कहै मंगल जी पधारहि॥ वन महि सीता व्याकुल भई॥ लव कुश की र
सुधि केन हन दई॥ रुदन करत दीरघ भर स्वासा॥ प्रथम मै सुन्यो ऊ तो लव नासा
पुन लव के पाछे कुश धायो॥ दो मै कोऊ नही फिर आयो॥ ११॥ दो॥ नारद रिष प्रा
पति भयो गऊ जान की पाहि॥ नमसकार कीनो सीया धीरध रोमन माहि॥ १२॥
चै॥ नारद कों पूछ्यो सीय माता॥ स्वामी कहो कृपा कर पूंछा ता॥ प्रथम हि लव रिका वनम
हि गयो॥ तिः पाछे मम कुश पठ दयो॥ पुन मै तिनकी सुधि न ही पाई॥ मगन देष दी र
होत दुषदाई॥ आज दिवस लागत मुहि भारी॥ नही जानो कछु रची मुरारी॥ नारद न
मसकार सीय कीनो॥ मन से तो बधार व ऊ दीनो॥ कुसल सहित है तुम रे ताता॥ क
रहि थिर है रन महि दोऊ भ्राता॥ १३॥ दो॥ बहु प्रसंन तुम होहिंगे श्री रघुवर जीय जा
न॥ जल लुस जीव का सिंच कै राषऊ स सम प्रमान॥ १४॥ चौ॥ चिंता दूर करऊ जीय माता
होहि है वेग तोहि कुसलाता॥ यह वच कहि तिन नारद रिष गयो॥ मुद तिग गगन मधि ग व
नित भयो॥ वाल्मीक रिष ऊ तो पियाला॥ प्रापति आइ भयो तिः काला॥ दुषित जानु का
करत विलापा॥ रुदन करत मन बड्यो संतापा॥ नारद रिष से भ्रम ठप जाऊ॥ जल स
जीविका ग्रह एव ताऊ॥ मृतक कों ऊ लेत जीय जाही॥ जल से जीविका चहीयेत ही
वथ॥ दो॥ लव सु जीविका जल चहै तेज व सत है कोऊ घात॥ कोऊ उपद्रव होइ है देष

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिहूं उतपात ॥ १६ ॥ चौ ॥ वै जै बालक नकरी ऊं तीरन ॥ तौ आवत मो पै ताहीं छिन ॥
प्रथम मैं मरं हाल वसु निपाऊं ॥ नहीं जानो अव कुस रन घाऊं ॥ आरौ वऊं तरि बोति:
अवसर ॥ कैमाक राई सीय के पग पर ॥ जनक सुता कौं कहो रिषन सब ॥ जल ले
सु जीविका सींच राषु अव ॥ नारद वचन सत्य करि मान ऊं ॥ शोक तजऊं जीय प्र
न प्रमान ऊं ॥ बालमीक रिष वेल में गाई ॥ जल सु जीविका गहे आई ॥ १७ ॥ दो ॥
जल सु जीविका सींच कै रिष रा ब्यो उन्ह मांहि ॥ धीरजु दीनो सीय कों चिंत कर ऊं जि
य नाहिं ॥ १८ ॥ चौ ॥ उहां हत रघुवर व हि गएं ॥ करी पुकार भरथ हत भए ॥ बाल
क महा वली धिकराल ॥ बाध्यो हनुमान तनें कौं काला ॥ तुमरी सैना ना सभ भई सभ ॥
देषी यत वल रूप तौ हित प्रभ ॥ प्रथम सैना सु करी सभ सैना ॥ देषी भर्थ सकल नित
लैना ॥ क्रोधित भरथ कीयो संग्रामा ॥ ना हित नमन वर सर के कामा ॥ तुमल युध क
रि भरथ गिरा ऊं ॥ राम राम कहि धरम न रह्या ऊं ॥ १९ ॥ दो ॥ बालक तुमरा रूप है
कीधों दुतीय रघुनाथ ॥ गर तंत रन महि सिघ जिम है धनु बी हाथ ॥ २० ॥ चौ ॥
निकट ऊं तो मंत्री तिः अवसर ॥ वचन कहे सुनु तिः प्यार रघुवर ॥ सुन ऊं प्रभु वन प्र
मरहु मरी बना ॥ तव तुं वन पर ठई सीय माता ॥ गर्भ सहत सीत तिः काल कछु मतु यह
हो कैं जानकी बालक ॥ ताही तै सु रे बल वाना ॥ सीय के सुत यहु सस प्रमाना ॥ य
हि बालक संतति तुम हि ई ॥ ता तै जीत सकै नहि कोई ॥ वनवासी बलधर तन ऐसे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Initiative

सुरे बली बालकन जैसे ॥२१॥ सो॰॥ यह हत बालक अति सुर रतन महि ठाढे ऐसं
घ्रितिम ॥ कर सकल प्रतिज्ञा पूर सैना सभ तुमरी हनी ॥२२॥ चौ॰॥ सुर शत्रु घ
न के मूरछा आते ॥ लछमन जैसे धरन गिराए ॥ भरथ सारथि सुर महा बल ॥
मरछित कर रहे दल मल मार ॥ हनूमान सुग्रीव नील नल ॥ जामवान सु
गद हारे साद दल ॥ चतुरंग सैना मारी सभ ॥ बालक दोऊ सु तुम मारी हे प्रभ ॥ सुन
प्रभ कछु न उत्तर दीनो ॥ यह विचार मन मुहि त्रिद कीनो ॥ तो सो आकर मष कुकनार
... अति ॥२३॥ दो॰॥ सैना सकल लै कर ... रघुपति जैसे तिल कुस घृत तन तेबि मल मति
चले संग रघुराइ ॥२४॥ चौ॰॥ बना सपती की
बद बजाइ ॥ है गै रथ पाइक निकरि चले संग रघुराइ ॥ बेग आइ रन प्रापति भयो ॥ मूर्छित भ्रात ततह
पहिचाने ॥ सैना गनी जात न हते तैसे ॥ मृतक तुल्य मूर्छित सब देखे ॥ रघुवर नी
चलि गए ॥ लछमन भरथ शत्रुघन देखे ॥ पुन देखे दोनो बालक रन ॥ ...
देखे भ्रात दुखित मुरछाए ॥ निरखि नेन भरि आए ॥ बिन बन ॥ कदली द्रुम बांधे ज्यु पवन सुत ॥ मूर्छित कपि नरेस
रूद कुपि तिमको गवन ॥ कहि लीरुस लछमन पख्यो ... शत्रुघन भ्रात ॥ कहूं समर
चम पुस ॥२५॥ दो॰॥ कहूं सुग्रीव पख्यो ... कहूं अंगद नल नील कहूं कपि
पप मूर्छित पख्यो सकल बिदीर न जात ॥२६॥ चौ॰॥ कहूं जामवान मूर्छित रन ॥ महा पराक्रम कीया
कहूं पख्यो सुग्रीव निराधिय ॥ कहूं तांब चान मूर्छित रन ॥ महा पराक्रम कीया
बालकन ॥ तब रघुपति मुख बचन उचारे ॥ कवन नाम है बालक तुम्हारे ॥ कौन पिता

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गुरुकेंप्रचित माता ॥ कोहै बंस कहो सति बाता ॥ बोल्यो कुसरे सुनऊ सरवर ॥
पद्वै जोगन ही रन अवसर ॥ २७ ॥ दो ॥ पढऊ अपनी चमक़ो हम राकुल अ
रु नाम ॥ सम वतो तुतुय कहे तेगे ते ने ध्यो संग्राम ॥ २८ ॥ चौ ॥ तिनसों पुत्र कह
ऊ तेकाय रररन ॥ भाजो जाहि [illegible] रन को घर ॥ हम ठाठे रन ले धन बसर ॥ से
ना तुम री सकल नास कर ॥ हम छोली या जनको बाता ॥ रन गहि हनेस रसिर ता
ता ॥ अब अए तुम आप सेभार ऊ ॥ छत्री धरम पढ जी प धार ऊ ॥ अंतरजामी राम
कृपा युति ॥ जो पता ने चि [illegible] अ पुनेसुत ॥ की या [illegible] वा दिदे महि रघुवर ॥ छत्री या
ग पुध इह अवसर ॥ २९ ॥ दो ॥ देब लेउ अब बालकन विद्या कहि संग्राम ॥ छत्री ध
र्म प्रति पाल ती ये हृदे विचारयो राम ॥ ३० ॥ चौ ॥ मन महि राम विचारति बाता ॥ क [illegible]
यो तो पर मरे ताता ॥ छत्री धरम पढ मंड न रन ॥ धनुष ली पार रघुवर क्रो धत म
कसि मा रयो सर रअति [illegible] क राला ॥ बंठत करठार [illegible] ति तिः का ला ॥ ऐसे बान चला
वत रघुवर ॥ पुत्रन के सन मुष रन अवसर ॥ द मन्यो ई विस्तार कर हि स
र ॥ षोडस या जन दे [illegible] धर [illegible] सर ॥ वहु पुकहे ता पाल को [illegible] स्तारा ॥ या जन
चार अम वऊ न्यारा ॥ ३१ ॥ दो ॥ औ प्रभ मारे बान [illegible] हन न सुधा सर [illegible]
न ॥ राम वठे सरअग्नि के मेघ रचे तत काल ॥ ३२ ॥ चौ ॥ कोप मेघ सरहने
राम जब ॥ पवन बान [illegible] उत बालक तब ॥ औ रघुवर सर सैल चला वे ॥ घं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

उनाँतितंकुशचक्रचलावै ॥ विवधप्रकारपठैरघुवरसर ॥ सभषंडन
कीनेलवकुशवर ॥ मत्तपराक्रमदेषसुतनरन ॥ अचरजभयेराम ॥ २
अपुनेमन ॥ रतयोगवालकुपहुमऐ ॥ सभकलेससीपकेमिटगये ॥ २२
विचारकीयापुनरघुपति ॥ दैनहीहोतिगरभसीपउतपति ॥ २३ ॥ दो ॥ वालमी
कुसुतशक्तितेसिसुपगटायाहोइ ॥ इकउपजोसीपगर्भतेतातेवालककदोइ ॥ २४
चौ ॥ श्रीरघुवरवालकरूपदेषपुन ॥ कै: गुरुपतिसीवेविद्यागुन ॥ कवननामतु
मरोपितुमाता ॥ कवनवंससभावजसतिवाता ॥ तवहिवालकनवचनउचारे ॥ वा
लमीकऋषगुरुहमारे ॥ तिनहमकोविद्यापहदीनी ॥ हरषतहीयेकृपावअल्मी
नी ॥ कुलरघुवंसजानलीनहुमन ॥ सातसीपकेअरुतुमरेहम ॥ सुनपहव
चनरामसोचतमन ॥ कतहमकीयोयुद्धइनसोरन ॥ ३५ ॥ दो ॥ जववालकमुष
तेकहोजनिकसुताकोनाम ॥ श्रवनसुनतगदगदभओप्रेममगनमनराम ॥ ३
६ ॥ चौ ॥ निजकेरघुवरकीयेधिकारा ॥ विनुसीताधृगयज्ञहमारा ॥ सीपवियो
गप्रभयेव्याकुलतन ॥ सतुसीताप्रभावव्यापीअंतरमन ॥ नषसिषरोमरोमरभिर
ह्यो ॥ सीताविरहरामतनदह्यो ॥ सीपसुततनतवहृदेविचारयो ॥ सभभगातन
कोनामुचिताको ॥ सेवरीवपुनितलादसधसव ॥ कीयोअवाहनसीपसुतनत
व ॥ तिऊलोगनकोभगतमगाई ॥ सभलेवानअप्रछतराई ॥ ३७ ॥ दो ॥ सोऊसस
रघाडाकुसलतवभेदलीयोरघुराइ ॥ भगतिभाउकेवानसोंरामपरेमरघा ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ४७ ॥
२४५
अस्वमेध

३८ ॥ चै ॥ एक प्रेम श्री रघुवर सीय को ॥ इतीय लक्ष्याउ रम गत भाउ सर ॥ ता
ते श्री रघुवर मुरझायो ॥ रथ ते जी रघर नील पठायो ॥ राम निकट वाल कठा
ऐत व ॥ कुंडल मुकट उतार लीये सव ॥ [illegible] मन भर्ष शत्रघन केतन ॥ लीये
उतार मुकट कुंडल मन ॥ चवर छत्र भूषन सव कीने ॥ उत्तम आयुध तेस भलीने
श्रेष्ठ वसन तेई मन भाऐ ॥ लीऐ उतार वीलमुन हीला ऐ ॥ ३९ ॥ दो ॥ वस्त्र सम
स्त्र कन्क करि हतधाऊ परठहराइ ॥ डारि जेत रीपवनसुत संग ले चले उठाइ ॥ ४० ॥
चौ ॥ हैति सरूड हति चले भवन को ॥ वांध लीऊ संग पवनपवन को ॥ लष्य जोर ठाढे हन
माना ॥ तव कुस आगे वचन विषाना ॥ सीय पहिले जाव इन हीमुखको ॥ लीजे सान
करत हैति तुम को ॥ सीय को देषत ही मर जावों ॥ हि सीय को निज दास कहावों ॥ कैस
र जाइ तुम्हारी माता ॥ स सम मान ली जे यह वाता ॥ पहवचन सुनत हस देऊ भाई ॥
देष ऊ या कपकी चतुराई ॥ ४१ ॥ दो ॥ अपुने छूटन के निमित डरपावत कपि आहि ॥
रे वनचर ले ताहि जो सीय के आ जो ताहि ॥ ४२ ॥ चौ ॥ लकुटी मार चलाइ पवनसुत ॥
हन्त आनन मन भयो सिंत पति ॥ ले गऐ सीय के धिंग आन जव ॥ सीता निरष आनंद
भई जुति ॥ पवनपूत आ यो इह अवसर ॥ पठया दे संदेस श्री रघवर ॥ जव हा
लं क ससमे पह आ ऊ ॥ राम मुद्रका आनंद षायो ॥ अव इहत वन महि की थो वेदे
सा ॥ दै पठि यो को ऊ राम संदेसा ॥ कुंडल मुकर भूषन जव देषे ॥ सम भर घुवर

॥ ४८ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

केसा पय्यत वरेखे ॥४३॥ दो॥ जनकसुता सुतनवंत को पूछ्यौ निकट बुलाइ ॥ रतनब
चित कुंडल मुकट यह तो है रघुराइ ॥४४॥ चौ॥ दैनि शान तुम राम पठाऔ ॥ तु
व कवक ण्स मे तुम आऔ ॥ लंक पराक्रम कतिदुरगयो ॥ उरते वरी वालकन ल
यो ॥ गदगद है वचन कहे पवनसुत ॥ अतिविनीत मन महति चिंतायुत ॥ लछमन भ
रथ शत्रुघन साथा ॥ महित भऐ रन महि रघुनाथा ॥ अरु सुग्रीव सहित सैना स
भ ॥ महित करडारे वालन सब ॥४५॥ दो॥ यह वालक तुम रे दोऊ महाबल वलवान
श्री रघुवर भ्रातन सहित महि किकरे रन प्रान ॥४६॥ चौ॥ कुंडल मुकट उतार लै ये सब
डारदाम मुझ बांधल लीयो तब ॥ ले आऐ तुम पहि ततकाल क ॥ यह चरित्र कीनो इन वाल
क ॥ यह वचन सन तिसीय महि रछ नी ॥ हा रघुवर कहि कर लपटानी ॥ सकुच गया मुख वी
त वरन तन ॥ मत कतुल्य है परी ति कल मन ॥ लव कुस सीय तन पवन जुलावत ॥ च
रन चाप मुखनीर चुवावत ॥ करी जतन सो चैतन माती ॥ वोली सीय तुम घ गुद्दो ऊभी
ता ॥४७॥ लवकुस को सीय क्रोध सो कीनो वहुत धिकार ॥ अपराधी तुम कारज कीया पित
रन को उसंघार ॥४८॥ चौ॥ आगो पची मुझ मन महि चिंत मन ॥ निरदूषन मो को पठियाव
न ॥ सुत जन मत कदु धीर जु भयो ॥ तिन सुत मोहि महादुख दयो ॥ सेवा करत पूत
पितु माता ॥ करि आऐ तुम पितरन घाता ॥ तुम हम सरीर ऊ इसकीनी ॥ पिता हते यो
चिंता मुझ दीनी ॥ मुख देखे अपराध तुमारे ॥ तुम तो भऐ महापाप सारे ॥ रच ऊ चेता

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अवमातत्तरावऊ॥ पहककरऊ कै गहतरुनतावऊ॥ ५८॥ दो॥ हतरामपुकारिकै
वऊरिमिरीधपसीत॥ माताकी गतिदेषकै वालकअतिभयभीत॥ ५०॥ चौ॥ रुदनकरत
सीयजीयदुषभारी॥ करतविलापमहादुषियारी॥ लवकुसमेवहमकोचिंताजीय॥ देषी
महादुषितमातासीय॥ वालमीकऋषि यौतिःअवसर॥ सैंगलीऐरिषमहातपीवर॥ जु
नकसुताकोदुषीनिहारयो॥ वालमीकरिषवचनउचारयो॥ सुनऊजानुकीचिंतनकी
जै॥ जलसुजीविकातत्तछिनलीजै॥ नारदरिषजलसीचरषाऊं॥ तिःजलकैततकालि
मगाऊं॥ ५१॥ दो॥ जलसुजीविकअनिकै वालमीककरधारि॥ सीतानषसें सुधासें
जलसें लीओपचार॥ ५२॥ चौ॥ जलसुजीविकलीनोसोई॥ लीनोसुधासंगसीयहोई
वालमीकलीनोनिजहाथा॥ सुतनसहितसीयकोलीऊंसाथा॥ जोएवगंगातटवसहै
वन॥ तेसमसीयसंगअऊरेन॥ जेतिकऋतिरिषनकीनारी॥ तेसमसीयकेसंगभईधारी
समचलिकैरनभमहिआऊ॥ जाहापरेरघुवरमहाऊं॥ जलसुजीवसीयनषजल
लीनो॥ वालमीकरघुवरमुषदीनो॥ ५२॥ दो॥ पुनसीच्योलछमननभरथवऊरिशत्रु
घनवीर॥ सीच्योमुषसैनासकलरिषसुजीविकानीर॥ ५४॥ चौ॥ भएसुचेतेंठिरघु
नाथा॥ लछमननभरथशत्रुघनसाथा॥ भरहीउदूरीउठेसमसेना॥ रघुपतिसभ
अवलोकीनैना॥ वालमीकरिषसमयतिःअवसर॥ लेडारीपगपंकजरघुवर॥ पुनरि
लवकुसकोचरनलगाऊं॥ वालमीकतनमेवतातसुनाऊं॥ जोलवकुसतेदान

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सो

कराये॥ सोरिषकहि रघुवर समझाये॥ राम सीया को आदर दीनो॥ कंठलगाइ स्तुति
न कीनो॥ ५५॥ दो॥ सीताल व कुस अस पुनि बालमीकरिषसाथ॥ अवधपुरी कोर
[illegible] हरषित रघुनाथ॥ ५६॥ ग्रह ग्रह भयो आनंद अवधपुरी प्राप्ति भए
ल्याछोद सरथ नंद॥ सीय सुत सहित तुरंके॥ ५७॥ चौ॥ जैमिन कहे सुनजन्मेजय पाला
कथ्या रामायण पुण्य विसाला॥ पढे सुनै मनसा धरि जैसे॥ परन होत मनोरथ तैसे॥
पुत्रवान हो वै सुने नारनर॥ शत्रु विनाश होहि कीरति वर॥ जो जैसी मनसा करि
ध्यावै॥ सो तत छिन वांछित फल पावै॥ मुक्ति होइ इति सुषविश्रामा॥ सुनै राम कुस
लव संग्रामा॥ पढ्यो प्रेम भय पति तुम मम जसो॥ उत्तर दीओ जथ्या रथ तुम सो॥ ५८॥
दो॥ इति श्री आश्वमेधिके पर्वणि [illegible] जैमिनि भारते [illegible] संवादे लवकुश संग्राम पर
नतमो॥ ३५॥ ५८॥ समस्त [illegible] भि॥ [illegible]॥ चौ॥ बोले जैमिनु जनमेजासुन कहि
हो कथ्या बभ्रुवाहन पुन॥ अरजुन हन्यो बभ्रुवाहन रन॥ मदी मूर्छित के नेसु रे रन
मर्छा छुटी उठे तब पाचे॥ पढ रच्यो मन मै अति क्रोध॥ प्रथम अडो हंसध्वज राज
व अरु नील धुज नृप सिरताजा॥ यों व रू उठो को धजो पधारा॥ नृपति हंसधुज वचन
न उचारे॥ विद्यमान जो कृष्ण हित सब॥ नहीं सुधन्या सुरथ सब॥ १॥ दो॥ जो वड़ा ते
ते सुरथ अब पारथ हत तन घात॥ जो ई क्षि नंद लाल की सों ई बिनाबत बात॥ २॥ चौ॥ वहुरि ह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ७८ ॥
२८३
अस्वमेध

सधुन क्रोध अति भयो ॥ धनुष लीऊ सनमुष रनगऊ ॥ चार बान रिस सो कसि मारे ॥ रथ अस्वर
थी कवच करि डारे ॥ क्रोप करी ऊपुन नपत नीलधुज ॥ सात बान पठदीय महा भेजु ॥ है
गै रथ पवकू हने प्रचंड ता ॥ अग्नि तच मत्कारी व ऊघा ता ॥ वऊरि उठी पावक क्रोध अति सब ॥
फूंकी अग्नि जरी सैना तब ॥ है गै रथ पायक वऊ तारी ॥ धुजा पताका तरितन मैं जारी ॥ ३ ॥ दो॥
वरु समग्री जरत रन वठो महा संताप ॥ सूर वीर योधा बली सहि न सके कोऊ ताप ॥ ४ ॥ चौ॥
॥ अपनी चमू च भ्रुवाहन रन ॥ निरखी सकल जरत व्याकुल तन ॥ आप तड़काऊ दश असूरथ ओरेध
र ॥ कोप्यो बभ्रुवाहन सूरा वर ॥ जलसर मारयो अग्नि निरवारी ॥ तेज भी टाढ़कार करडारी ॥
वऊरि क्रोध सर पवन चलाऊ ॥ दसदिस बंडवाड करउ स्यो ॥ अग्नि ते जभि ररूया हूभई ऊव
उलट परी अरजन सैना सब ॥ पावन बान वऊ ढकार उठाई ॥ पारथ की सैना मूरछाई ॥
५ ॥ दो॥ लीयो बभ्रुवाहन षडग परयो ककरटक के बीच ॥ हनि सूरे रन मैं करी मास रुद्र की की
च ॥ ६ ॥ चौ॥ मेर ऊनन चमू भई समघाता ॥ फिन मधिकरी परत न हीवाता ॥ बच्यो एक मंत्री तिः
अवसर ॥ अर्जुन सकल सैना मूरछी धर ॥ मंत्री लिबीध धर्म को पाती ॥ लिषत भयो दारुण्य दव
ह्वाती ॥ समाचार लिख दूत पठाऊ ॥ देस देस वऊ विध समझाऊ ॥ अवर कसी को सुधन है
की जै ॥ पत्री लिख्य पठै परदीजै ॥ अध रलिष पत्रिका ऐम ॥ धर्मज बिनु कोऊ पठैन कैसे ॥ ७ ॥ दो॥ म
रछानी सैना सकल अरजन सूर समेत ॥ बली बभ्रुवाहन महा सब दल कीयो अचेत ॥ ८ ॥ चौ॥ पा
ती देख करदूत पठायो ॥ वेग दूत हस्तिनापुर आऊ ॥ वैठे जहां धरम मष शाला ॥ रतन षचित तहां हम
राधि गाला ला ॥ दस सहस्र कंचन को बंभा ॥ निरष क्रांति जीपकाल तमे चंभा ॥ सहस्र सम ठा सीत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जा

हारि बोध्यार ॥ नेत प्रतिदेत अहार पृथिवीश्वर ॥ जो कंचन भूषन पट दाना ॥ नेसद्दिन पद्म कर रतवि
धाना ॥ अग्नि कुंड षटकोस रच्योकार ॥ होम तजत तिल घृत तिः अवसर ॥ ९ ॥ दो ॥ सज्जा तहा
आनंद महि बैठे गिरधर साथ ॥ दूत पत्रिका काढि कै दई पृथिवीश्वर हाथ ॥ १० ॥ चौ ॥ लागे पढन
पृथिवीश्वर पतिया ॥ बाचत भई विदीरन छतिया ॥ पहुवतांतु नहीं कि सकति सुनायो ॥ मन महि भह
विचार ठहराचो ॥ मत पह सुनत रिषी अववाता ॥ मत कुमयो मार जनर नघाता ॥ सत कमान
जाहि उठत वही ॥ आवन सुन नहि पार थ्यवधत वही ॥ पत्री गयपत पृथिवीश्वर कीनी ॥ का हहकै यह
सुधि नहीं दीनी ॥ धर्मपर [illegible] कत वेग बुलायो ॥ पत्र कर समपरीतिः ठहराओ ॥ ११ ॥ दो ॥ उठि अजो
धर्म जतह तह फुते पदु नाथ ॥ बचन कहत गदगद भयो पतीपादी नाहाथ ॥ १२ ॥ चौ ॥ होई कौत
धर्मजनंद लाला ॥ पती यो सकल पठीतत बोला ॥ दुषितवचन वद्धन पति उचारे ॥ विघ्र
पथ्यो प्रभ पत्तत मारे ॥ पत्र मारे भआ प्रभ दिन कीनो ॥ तांते पुन्य भयो अवितीनो ॥ का डो ह
मै तुरंगा रहदिन ॥ हे यप सिर मुकुट वंध्यो सम प्रभ दिन ॥ तांते हो तव घूम बमाती ॥ इनवा
तन संसै कछु नाही ॥ कैगोवद्धन इंदि तजदुना ॥ अदल वदल तेगो दई विधी ना ॥ १३ ॥ बैन
होदीनो दिजन कोई छाम्यो गरसोई ॥ अगमगदि जकी कबदति भोजन दीनो होई ॥ १४ ॥ चौ
॥ अंतरजामी कृष्ण कृपानिध ॥ जानत भूत भविष्य सकल विध ॥ सुनी पृथिवीश्वर कीस
भवाता ॥ कीयो मनोरथ भ्रमवन ताता ॥ हरि करुणा दृष केति जगाओ ॥ भयो सचे
तऊ तो मुरछा पा ॥ आवन सुनी अनहद धुनि वानी ॥ कही सकल विध सारंग पा

प

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ५ ॥
२८४
अश्वमेध
नृत्रि २२ ॥

कलक पातेउ थ्यो करनसुत ॥ निरखी अपनी चमू अमित तक दुति ॥ है तफिर तक
रनसुत रनमा ॥ देख्यो जाइ परयो अरजन को ॥ वध ॥ दो ॥ सीसु सकुलउत स्यो
नहीं कछु अटक्यो तन साथ ॥ निरख भयो करनज दुबीधर लीयो सिरपर हा
थ ॥ १६ ॥ चौ ॥ करनज कीयो अवाहन दिनकर ॥ लीयो मंगाइ सुधा तिः अवसर ॥
किरणासों अंमृत रविदीनो ॥ करनपुत विधवत करलीनो ॥ तव पारथ केवन उ
घास्यो ॥ लेकर सुधा वक्रम हितठास्यो ॥ ततक्षिन उठ्यो महावलवाना ॥ धनु वलीये
कर रन सवधाना ॥ क्रोधित ही येसन मृष चलिगउ ॥ निरख तात को वहु वल भये
निजु वलहीन निहारयो इंद्रसुत ॥ ठाढो है विसमै चिंता प्रत ॥ १७ ॥ दो ॥ हीन भयो
वल इंद्रसुत मन नहिं भयो अधीन ॥ पुन करनज सनमुष भयो वनलाो कर तीन
॥ १८ ॥ चौ ॥ ठाढो जतो जहां अरजन रन ॥ चलि आयो करनज ठिग ततछिन ॥ पार
थ को वच कहे करनसुत ॥ कत तुम भए अचेत चिंतजुत ॥ वडे कहा युध अव
की जै ॥ मरनकित चमू देष विजल लीजै ॥ पारथ वचन कहे करनज सुन ॥ करन हार
भगवान महा गुन ॥ देषो नीआ जु सिर उतन पर ॥ भयो हीन वल तन इह अवसर ॥
उद्यम पक्ष होई नहीं मुझसो ॥ युध करउ मा सो अव तुम को ॥ २० ॥ दो ॥ कहै तिकरनसुत
सुन पिता वडु वल लीजै धार ॥ जः वलसो भारथ रच्यो भीषम कीयो संघार ॥ २१ ॥

३ हीं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चौ॥ त्रि: बल सौं तुमकरन संघारो॥ द्रोणाचार्य पै दुष्य मारो॥ हनेव अतनव
सैन अपारा॥ अठदस छो हनि करी संघारा॥ बहुत बलै चेत युद्धकर पारथ॥ छ
त्रीधर्म न तजि पुरुषारथ॥ कै है पालगुन सुन ऊकरन सुत॥ आई बन्यो इ
हकाल शोक युत॥ जौ अभिमन्यु होइ इहि अवसर॥ नास करत तत छिन हमरे
अरि॥ जो कवि इहि होत नंदनंदन॥ छिन महि करत कोटि दुष कंदन॥ २२॥ दो॥ वो
ल्यो करण जसु न पिता तातु मऐ से बलवान॥ उद्यम की जै युध कों चिंत धार करि भगवा
न॥ २३॥ चौ॥ क्षत्री होइ क्रोध धरन लागे॥ होइ पलायन रन तजि भागे॥ ताहि सूर व
ऊकरहिं धिकारा॥ अपजस बढै सकल संसारा॥ ताते उठकर हो संग्रामा॥ लीजै सु
सुकीजै यह कामा॥ यह सुवचन सुनि पारथ क्रुद्धि कीनो॥ सनमुष भए धनुष कर लीनो॥
क्रोधवंत है वृषकेत पठ्यो सर॥ लगो जाइ वभ्रुवाहन वर॥ रथ साथी सम्मेत गिरयो
रन॥ पाछे जाइ परयो दश योजन॥ २४॥ दो॥ उठ्यो वभ्रुवाहन वढ़ रदीनो बान चला
इ॥ बाहन शोजन करन सुत पीछे जाइ गिराइ॥ २५॥ चौ॥ पुन वृषकेत उठ्यो रिस
भीनो॥ त्याज्या धनुष बडगा कर लीनौ॥ पुन लीनो परष्य को साध्या॥ षंडाली पोध
नं जै हाप्या॥ पर रेकटक महि सैन संघारी॥ चतुरंगनि वरु सैन प्रहारी॥ अगनि
तरा वितिव नत पो नै सैं॥ सैना हनन करी रन तैसै॥ पारथ सुत वृषकेत महा व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥भा॥
२९५
अश्वमेध

र

ल ॥ भगवन्ति चमत्कारी रनदलमल ॥ पकरकरनसों संभ्रमा ॥ वर्षि ॥ मृतक होतन तव
गगन पठावहि ॥ २६ ॥ दो० ॥ जो कछु आवहि हाथ महि उपर देइ पठाइ ॥ मृतबनहि
तपहो नुरे पररहैन भछाइ ॥ २७ ॥ चौ० ॥ चमत्व भवहनन निजदेखी ॥ नासु भई वड
रन आवरेखी ॥ तीन बाण बरत एनिकारे ॥ परके नेम अग्र सरधारे ॥ पुनिहि
जतेज बीच ठहराया ॥ करन पृतको बान चलाया ॥ लागत ही यचवैठ गगनं
तर ॥ मूर्छित करडारे पुनमहपर ॥ वऊरि वभ्रुवाहन सरलीनो ॥ तामधि सभ
पुरको बल दीनो ॥ वऊरि आपना बल मधि पाऊं ॥ पारथ की दिस बान चला
ऊं ॥ २८ ॥ दो० ॥ सरला गो अर्जन हीय मूर्छित भए न प्रान ॥ पुन पारथ क्रोधित
भऊ वऊरि अरंभ्यो बान ॥ २९ ॥ चौ० ॥ जबलग बान चला वत पारथ ॥ कीयो व
भ्रुवाहन पुरषारथ ॥ भगवान पित ओर चिलाऊं ॥ अर्जन कर को धनुष
जराऊं ॥ पारथ को चिंता बसि कीनो ॥ काल सरूप षडग कर लीनो ॥ माता
को मन मधि ठहराया ॥ क्रोधवंत पित ओर सिधाऊं ॥ सीस कटन ग सो अर
जन को ॥ पूरन कीया मनोरथ मन को ॥ कोमल गर्भ केला को जैसे ॥ उत्तरूप
सी तन ते सिर उतरे ॥ ३० ॥ दो० ॥ अर्जन छाकबंध तव महा क्रोध तीयधार ॥ दे
मै रथ पाइ कनिकर सेनाको संघार ॥ ३१ ॥ चौ० ॥ कवंध मंजा दहन मोर चला

उर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वै ॥ हैगैरषपरनगगगनपठा वै ॥ षेतीपर पाक हो हैजामजैसै ॥ काटतवार
नलागैतैसै ॥ सुकवंधमारीवऊसेना ॥ सोगतिकहीपरतनहीवैना ॥ निरषव
भ्रवाहनक्रोधधोमन ॥ काडेतूणतीनसरतीछन ॥ कुसिकवधकेहूदेषहारे ॥
धरनिगीरोसरलगेमपकारे ॥ दुंदभसवदवजावनलागे ॥ मंदतिवभवाह
नदुषभागे ॥ २२ ॥ दो ॥ चलेजीतरणहरषमनपुरपावेशकीजाइ ॥ ग्रहआ
ऐमातामिलीकहेवतांतसंडुइ ॥ २३ ॥ चौ ॥ पारथकेवधश्रवनसुन्याजव ॥ मूर
छतचितागतामईतव ॥ सीचीजलमुषमाहिउठाई ॥ कऊमातातुमकति
मुरछाई ॥ रेशवराधापतातहन्योतुज ॥ दीजोवऊतदुषराहमईमुज ॥
कतिमुहितगर्भप्रकासमपातुज ॥ मपजसमओसिपमेजेहलग ॥ कहाउतार
ऊगेयहपापा ॥ पितुहनिदीनोमातसंतापा ॥ हमरेहूदेमवरहीवाता ॥ ध्यागर
भटावेगासुतमाता ॥ २४ ॥ दो ॥ श्रोगभटायातुमनहीदीयोविधाडुषमोहि ॥ हन्यो
पिताकेजानजीपसस्रधिकाहितोहि ॥ २५ ॥ चौ ॥ कितनोकालविगर्वतिताऊ ॥ जीवति
मिलहिहूदेठहराऊ ॥ तुममिलवेकोश्रासचुकाई ॥ पितुरनहन्योमातदुषदाई ॥
स्रवमोकोकरुणापकीजे ॥ चितावेगमोकोकरिदीजे ॥ रहनुनहीपाछेपतियागा ॥ वि
धवाकठनधरमदुषसागा ॥ जानवूजतुममुजदुषदीना ॥ श्रपनेहूदेषविवेकन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कीनो ॥ तीन अवस्था वेद विषानत ॥ बालक यौवन वृद्ध प्रमानत ॥ ३६ ॥ दो ॥ होत महा दु
बनारको तीन अवस्था माहि ॥ बालपन सुष मात पित यौवन सुष पति पाहि ॥ ३७ ॥ चौ
॥ वृद्ध समै कोउ देत पुत्र सुष ॥ मूरुष तीनो मधि भयो महा दुष ॥ बाल समै पितु गृह दुष
मै पायो ॥ संग गंध्रवन को मूरुष भयो ॥ तहा भयो दुष माहि निरारष्प ॥ यौवन समै मैं स्यो
मूरुष पाइ रिप्प ॥ भयो कृपाल दरस मूरुष दीनो ॥ पाणिग्रहण ए ताको पति कीनो ॥ छंद न
दस पांच रह्यो तिः अवसर ॥ पुनि उठ चल्यो विदा ले निज घर ॥ तिः पाछे तुम सुगोद
भयो सुत ॥ मूरुष विचार कीनो मूरुष संयुत ॥ ३८ ॥ दो ॥ सुष देवेगा पुत्र मूरुष मै जान्यो
मन माहि ॥ जब कब मोहि मिलाइ पति मानो संसे नाहि ॥ ३९ ॥ चौ ॥ वहुत काल वीते प
ति पायो ॥ नाम सुभ तत न मन सुष पाउ ॥ सहज सुभाइ परावति भयो ॥ तौ तुम मा
त यही सुष दह्यो ॥ कपि संग्राम मधि तारन मारयो ॥ मन महि नाहि विवेक विचारयो ॥ क्व
न व्याकुल कहि तग द्गद भई ॥ रुदन करत मूर्छित है गई ॥ नरष वभे वाहत न माता ग
ति ॥ चै तातुर मन भयो विकल मति ॥ उपु ऊ दष त है दुष माता ॥ लै सुत हा त विदीरन गा
ता ॥ ४० ॥ दो ॥ यह हठा भयो वंतातु यह तत स्तन पुरक कुमार ॥ कृष्णचंद मन साकरी च
लवेको रन उर ॥ ४१ ॥ चौ ॥ चलेत हा तेष्मी यदुनाथा ॥ नृपति युधिष्ठिर को लीयो साथा ॥
भीमसेन कुंती संग लीनी ॥ रुदन करत माता दुष भीनी ॥ पग पग गिर गिर पर त
विकल मति ॥ टेरत करत विलाप दुषित अति ॥ चले सकल रनकी मनसाधरि ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वचन कहत तब भीम क्रोध करि ॥ भीम कहै पापी थ जान मास्यो ॥ अरब षके प्रद्युम्न सि
घारयो ॥ जौ तिः कौ नहीं जीतौ समरन ॥ तौ यः न्है फाल है है हम रा प्रन ॥ ४३ ॥ दो
भीषम कापि कब्रत धरम नि: फल पुण्य सम कहोइ ॥ प्रि: हत की नोई दुस्सुत जोरन जीतौ सो
ई ॥ ४३ ॥ चौ ॥ पह वच कहत तब भीमसेन ध्यो ॥ आज ताले मा गेउ छत्यायो ॥ पजन्यो जाइ वेगरन
माही ॥ मग मंहि तिग हहरु तगयो कछु नाही ॥ प्रथम मंहि आइ देषो अरजन कौ ॥ हृदे भ
योदुषप्रत पवन कौ ॥ भीमसेनि जौ पम हा एसा ॐ ॥ ले करि गदा कटक मंहि आउ
हनि सै नाद हत्हि सकए ढारी ॥ रन मंहि तिन्ह कौ रुधर रंथि सारी ॥ हैयो सर गदा सिर मारती
भजा उ को रस्म कोश पठावत ॥ ४४ ॥ दो ॥ कौ प्यौ वभ्रवाहन निरष सैना अपनी नास
तीन बान छांडे तबै लेग ये भीम सक्रास ॥ ४५ ॥ चौ ॥ भमभभ मभी मको सोरे माही ॥ मूर्छित
भऔ प्रान हत नाहीं ॥ हरष तभे रन शान बजाऔ ॥ जीत वभ्रवाहन घर आऔ ॥ ता हसि
मंहि मात पंहि गऔ ॥ हाथ जोर कै ठा गभऔ ॥ सम तौ तुम रादे षब उ तासो ॥ तुम आज्ञा
सौ पार थ मारयो ॥ पहवच सुत वउरि मरछानी ॥ हैबि हवल तन धर लपटानी
सभ सिंगार तोर भंगसउ ऐसो ॥ बान पान सुष भोग बिसार्यो ॥ ४६ ॥ दो ॥ रुदन क
रत ब्याकुल ही पे सन्यो कंत को घात ॥ आई सुनत सम लुषता चित्रांगते की मात
४७ ॥ चौ ॥ तति छिन पुत्री जाई निहारी ॥ मूर्छित धरनि परी दुषभारी ॥ चीत
न करि करत वभ्रवाहन तन ॥ मुष जल सींच करी सुचेत मन ॥ बोली चित्रां
गता शोक जीय ॥ अरे पुत्र तुम कुल विनाश कीय ॥ सुनु पति हनन तत्रा

५४८

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ॥
२८७
अश्वमेध

सुनहीं कीनो ॥ पितको मारन्म जस जग लीनो ॥ कंति तुम गर्भ्यो न गर्भ हमारे ॥ री
छकी यो मुरको हत्यारे ॥ हमरे दुष न मित्र जन्मो जग ॥ पितो की यो संघार महा ठ
ग ॥४८॥ दो ॥ कहत्र सन्यो हि दुष्ट मुनि सुत पित की यो संघार ॥ महा पतित तुम तो
महा सम जग कर तधिकार ॥४९॥ चौ ॥ तुम तो एक पाप नहीं कीनो ॥ हत्या वड़ी तक
री दुष दीनों ॥ प्रथम मे दो बधु तारन घायो ॥ दुतीय मात के कोष [illegible] राजो ॥ ततीय
प्र यत की नातु घाता ॥ सुनि न मुह भी कौंती माता ॥ पूरजन मम [illegible] सु न हि गे ब्राह्मण ॥ स
तकमान तो हि तिगे उठ किन ॥ म [illegible] सगन मांहि तेम न है होई ॥ यज्ञ आरंभ सुनो मुनि
फ़लोई ॥ की ये नि मंत्र तीन लोक सब ॥ यज्ञ विघ्न सा निरास जा हि सब ॥५०॥ दो ॥ परै तु
रंग म वै समुष जो घट तिल न हि सेव ॥ नव ग्रह ता हि निरास सब मिथ्या सार बेद
व ॥५१॥ चौ ॥ भवन चतुर दश को ये निरासा ॥ दीनन की ये नित पुण्य प्रकाशा ॥ नित
प्रत दत द्विजन को दाना ॥ स्वर्ग सिंगि हर रूप विधाना ॥ करी पुन्य की हानि दुष्ट म
ति ॥ धर्म जन की जो वियोग तुम पवतति ॥ कृष्णचंद पर तुम अभि ततमाते ॥ सा ज्ञा कर त्रैलो
क बुलाए ॥ आप दे हगे तुम को ताता ॥ को जो ते हि पार्थ परन घाता ॥ जे री तहा वड़प
ति व्रत नारी ॥ सुनियत वात ते हि दुष भारी ॥५२॥ दो ॥ तहा देवकी रुकमनी सतभामा
वर नारि ॥ पुनि कुंती मरु दे पत गा गावति मंगल चार ॥५३॥ चौ ॥ जा हा सुभद्रा सो वपि नारी
वड़प सु भ त्रा सो व्रत धारी ॥ जु री अनेक नारि गुन गावति ॥ हरष [illegible] यम गन उप

॥५२॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जावति ॥ तहाजु रे अगनति पथि वीपति ॥ जुवतनि सहततस कलमन हुएखत ॥ जु
ववहतसनहि हन्यो रनपाएघ ॥ चिंतमानफिर जाहिनिरारष्य ॥ जुवेसनै गोकुं
तीमाता ॥ तस्तिहि न होई वैदीरएगाता ॥ वजतद्रोपदीवि सुभगतवर ॥ विधवे
करीदुष्ट इहअवसर ॥ ५४ ॥ दो ॥ अपराधी तुम उठ अवसर अश्व जरावज मोहि ॥ मह
पतत्तिहम रेगरभ जनमली पोका तो हि ॥ ५५ ॥ चौ ॥ हत्यारे मुज गरभलजायो ॥ कुलके
नासु करनृप जन्मायो ॥ तुम तेकाएहोत पतलावध ॥ तुम ते भलाहोत जननीत अघ
काएतेकारज वज होई ॥ तुम तेसुकृत भयो नहि कोई ॥ मयुरध्वज ले चल ध्वज जत पाएपर
न ॥ तहा जरावज मोहि अगनतन ॥ सहितनसके संताप महादुख ॥ वदि जरावज हो
ई परम सुख ॥ पितु हति माता अग्र जराई ॥ इहत जगतो हि सुकीरति पाई ॥ ५६ ॥ दो ॥
पितुरन हनि माता अगनि जरावज अपुने हाथ ॥ सुतसुकृत ए सेकरहि मात पिताके
साथ ॥ ५७ ॥ चौ ॥ रनकी ओर चले चिंतामन ॥ लेउल्व ताते सोग शोकतन ॥ रुदनक
रतजात पक एतभारी ॥ पगपग गिरत औरपर तदुषारी ॥ पुनपुन करत गहि मात उठा
वति ॥ होतसु चेतवजरमह छीवति ॥ हस्तिनपुरते कछपंथ एर ॥ प्रापति भये आइ इति
अवसर ॥ अति दुखित तली एकुंती माता ॥ महाचिंतवस धर्मजगाता ॥ ५८ ॥ दो ॥ कृष्ण
चंदके पगपरसो ध्यामेज हो धरमात ॥ प्रन भयो अश्वमेध को चालीस मोध्याउ
॥ ५९ ॥

६ ४०

जैमिनुकहै सुनजन्मेजय पतिवर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रन मद्धि आए कुंअर युधिष्ठर ॥ कुंती सहत तम हा दुष भारी ॥ आए रंग भूम गीर
धारी ॥ उततें रन षेत्र गति आई ॥ इत तें कुंती अति दुष दाई ॥ पार्थ को देख्यो तत
काल ॥ रुदन करत ही मुर्छत पाला ॥ कुंती निरष महि गिरी गई ॥ करत पुकार विक
ल मन भई ॥ षष मा रुप हरि रस्तो गोपाला ॥ सभ से ना जीय चिंत विशाला ॥ १ ॥ दो ॥ सि
र चिंत्रो गत गोद महि वैठी करत विलाप ॥ रुदन कर तेंरे रत मधि कवच्यो हृदे संताप
॥ २ ॥ चौ ॥ छुटी महि जव कुंती माता ॥ दुष सौं भयो विदीरन गाता ॥ निरष्यो वस्त्र उ
तारत तन मुष ॥ रोवत वार वार महा दुष ॥ अरजन कों ले कंठ लगाओ ॥ कत सुत रे
तुम नहीं मात वुलावति ॥ वालीन दीन रहो मए करि ॥ कहा पठ्यो तुम मनु इहां
वसर ॥ माता सौं वोल इक वारा ॥ कहा कहों सह दुष तुमारा ॥ प्रन्य करन कों क
ह पठाओ ॥ तीरथ मज्जन करन सिधाओ ॥ ३ ॥ दो ॥ देत रसोई ब्राह्मण गउ देत दुजदा
न ॥ कै तुम गंगर की सेव मद्धि ता तें वोलत उनाहि ॥ ४ ॥ कै तुम वैठक पास जननपर ॥ कै
परि पकार सोई उपरि ॥ कै तुम सोई रहे निहत जासभ ॥ तातें तुम वोलत नाहि मुष ॥ कै
तुम करत दंडक प्रभु सेव ॥ कै मतु नवहिरि कर्रतकर मसव ॥ कै गाधहि तहत रन महि आउ
ताके नमित शरीर गवाओ ॥ कै सभ वस्तु समर्पि तुम आवति ॥ ता तें उतर देत न मुष प्रति
एक वार मुझ सौं करि वाता ॥ कंति दगम ह दर हे तुम ताता ॥ ५ ॥ दो ॥ तुम जउ ये शिव इंद्र
सौं हीन कोऊ नाजीत ॥ अैसे तुम सव कम एहि तम भइ एह रीति ॥ ६ ॥ चौ ॥ सुनपारथ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भारथ बलकीनो ॥ भीषमाद्रोण करण हति लीनो ॥ तासु भई क्षोहनी अठारा ॥ तहँ ऐसम
हान रेसम्र पारा ॥ सर एक मामा मे ... ऐरन ॥ तिनके सर लागे तुमरे तन ॥ तहाँ न तुम
री पहगति भई ॥ जैसी अब विधना ज ताठई ॥ अब तुम पुत्र बडगम रक्षा पो ॥ ता ते कवन
समै इहत्र्या ऊ ॥ विधवा करु जनद्रुपद सुताको ॥ जैरै सभ द्रौपदी ताको ॥ ७ ॥ दो ॥ मु
ज का हर दै हिगा हो ई गाय तवि नास ॥ जरे अब ठासी सह सस्त्र वेते सभ जाहि निरास ॥ ८ ॥ चौ
लोग कहै ऐसम चोनि: फल कृत ॥ बंठत भऊ पृथ्वि रकोबत ॥ पांडव पुन्य नम ऊप
गासा ॥ जाहि अगनि सो देवनि रासा ॥ जेरै यत पर अगनि तिराजा ॥ सरन रभि ले पूरे
एप प्रभु साजा ॥ हम कोय हदुब दे हानि ताता ॥ वहि विचकहि पुनम रक्षी मत्ता ॥
कृष्ण चंद सभ सैन निहारी ॥ दुर्देसं तासु सकल दुख भारी ॥ रोवति चित्रांगता महादु
खित अति ॥ क्रोधत वचन वषानेत सुत पति ॥ ९ ॥ दो ॥ पति तव भवाहान सुनकुहलपा
रे सुजतात ॥ कति प्रगट जम ते की चोपितार नघात ॥ १० ॥ चौ ॥ अब राधीको नो कु
लघाता ॥ होइ गरभधु गतुम हिय कासा ॥ इह न भिन्न तुम इहत जगम्रा ऊ ॥ अब
राधी अपनाधितु घाऊ ॥ पिता मार पुन मात जरा बहु ॥ तो न लपकाहि अब पतसु
पाबहु ॥ तुम सो वैर भाव रुमकीनो ॥ पर बजनम सो ई अब लीनो ॥ कुंती तुमरा
कहा गवाऊ ॥ ताका सुत तुम रन महि घाठा ॥ स हाडुषित अर जनकी माता ॥ कव
हुन होइ ते हि कुसलाता ॥ ११ ॥ दो ॥ कुंती कहा ... गाए यो तुमरा रे बलवान ... ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५५४
५९४
अस्वमेध

सुतनि रदोबी तुम्हहि हननकी ठोति कीता ॥ १२ ॥ चौ ॥ यादी कों तुम यह सुब दीनो ॥ ताको
सुतरन महि हतु कीनो ॥ सुत के विरह सब रमर जाई ॥ करत बिलापु रुदन दुष दा
ई ॥ सुत पित मात पुन्य करावै ॥ गया जाइ कै पिंड भरावै ॥ बहुर पवन तीरथ इसना
ना ॥ कीर्तन कथा सुनाइ विधाना ॥ तीन दंड पितमात उतारे ॥ पितरुन के सम दोर
षनि वारे ॥ पुत्रन कहीयत है तुम तैसे ॥ पित को करत हनन रन ऐसे ॥ १३ ॥ दो ॥
ज्यौं दसरथ रघुबर बिरह तिकीओ आप तन घात ॥ त्यौं कुंती अरु हम सकल अग्नि जरा
वहि गात ॥ १४ ॥ चौ ॥ देवी सुनी कव हू पहवाता ॥ पत करै पितुरन महि घाता ॥ क
हत वेद वच सत्य प्रमाना ॥ मात पिता सेवत वरसाना ॥ मात पिता सुत आज्ञाकारी
ताकी कीरति जग उजियारी ॥ परशराम मातहि हतु कीनो ॥ ताहो छिन जीवाइ कुन
लीनो ॥ जो मम सुक करै वध रजीबावै ॥ ताके दोष न कर नहीं आवै ॥ शकत विना तो
करै संघारा ॥ निश्चै होई महा हत्यारा ॥ १५ ॥ दो ॥ तुज माखो आपु ना पिता तौ हू
सकत जीबाइ ॥ नातर वेग चिता रचउ हम को अग्नि जराइ ॥ १६ ॥ चौ ॥ महा दुषि
तितीय विनु भरतारा ॥ नहि उतरै पित हत को भारा ॥ निरष बभ्रुवाहन दुष माता
रुदन करत विहि कुल भयो माता ॥ कुंती को मुष देष दुषित अति ॥ वचन कहे तब वन
पति मात प्रति ॥ कहि बभ्रुवाहन माता सुन ॥ हम मैं रवी च नाहि तिकछु अवगुन ॥
मुज कीनी पित सुत की रीता ॥ वचन प्रमान वेद की नीता ॥ प्रथम महि हम पारिष

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पग लागा ॥ पिता मान छत्री प्रण त्यागा ॥१७॥ दो॥ तुम पर दूषन राख वज्र हम को कीं
या धिकार ॥ तौ पुन हम लागे चरन की नो लाज प्रहार ॥१८॥ चौ॥ बार बार दूषन ति
न लाओ ॥ पुन पुन हमरा छत्र लजाओ ॥ हम को को ओ वज्र तु उपहासा ॥ सभा मध्य
सभ माहि विनासा ॥ बार बार वज्र तुम हि धिकारयो ॥ निंद्रा करी न मान विचारयो ॥ पुनि
मो को कहि तो हि पठाओ ॥ युद्ध करन कहि मातल जाओ ॥ धरम पुनीत पुत्र है सोई
मात दोष उतारै जोई ॥ तौ मैं जुद्ध ति नो छत्र दिखाओ ॥ तुम आज्ञा सो धनु रन धाओ ॥१
९॥ दो॥ मुख की नो संग्राम तव ता कहि भेज्या तो हि ॥ रच्यो युद्ध छत्री धरम रन म
हि इस्थित होइ ॥२०॥ चौ॥ जो छत्री रन इस्थित होई ॥ रन तजि पीठ दिखावै सोई ॥ सो
नर होइ नरक अधिकारी ॥ महा घोर दुख सहि विकारी ॥ युध समै कै से पितु माता ॥
वेद वचन तुम कै कुसलाता ॥ जान्यो नहीं वनै इह बाता ॥ युद्ध की यो आज्ञा तुम माता ॥ मा
त कहै सुन त्रिय अपमति ॥ यह न कहो म अपितु करहे हति ॥ मुझ कहि ओप हपिता तुमा
रा ॥ मि श्रेय पी भर तार हमारा ॥२१॥ दो॥ मात कहै रे दुष्ट मति मैं न कहो पितमार ॥ आपुना
वलु देव राइ कै मिलज चरन सिर धार ॥ चौ॥ जौ री सेव सिकर तं ता को ॥ तौ तुम करत प्रसं
न मात को ॥ तुम रे वचन को पिता पद जानि त ॥ सुर ज्ञान सुत जाय सुख मानित ॥ जो तुम
पास तप त्र हमारा ॥ इह प्रकार जन कहे तुम्हारा ॥ तब विंत्रांगद त पठाए ॥ चंद
न का ए वक्र तले आए ॥ तत छिन संदर चिता वनाई ॥ निरख वभ्रुवाहन दुख दाई ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ५१६ ॥
२०
अश्वमेध

चं तातु रसु सुबचन उचारा ॥ पिता हत्यो सम तो हत्यारा ॥ २३ ॥ दो ॥ पुनि हत्या पाप हत होइ गी
अग्नि जरै रागी सात ॥ तौ ते पीपल मस्तल मन जुरो होइ कुसलात ॥ २४ ॥ चौ ॥ पित जीवन वि
धि को ऊबताबै ॥ सो हम रा यह कष्ट मिटावै ॥ पद्मा पि करुन ठौर कहू होई ॥ त्याबो बे
ग जी इह हम सोई ॥ पुनि उलूष ता हू दे विचारा ॥ पारष लगे जमात हमारा ॥ सो तामि श्रे
भउ काल वसि ॥ चिं ता गता तर दुष सो ग्रसि ॥ मरत बम्हहन इहु अवसर ॥ नास होत कु
ल सकल महा बरि ॥ ता तेकरौ उपाइ सो ऊ अब ॥ पारष पजीवै होइ सुष मन सब ॥ २५ ॥
दो ॥ मान वचन उलूष ता रेवा ही कअरगान ॥ पुध कीयो कुल नास को पितु हत कीने
प्रान ॥ २६ ॥ चौ ॥ पिता मारपुन मातजरावहु ॥ तीन लोक महि आप जस पावहु ॥ वहुरि
करहु आपनो तन घाता ॥ कृतिपरीति करी यह बाता ॥ कहै नम्र बाह्मन सुन माता ॥ सो
वध कहे होइ कुसराता ॥ सुहे बेसु जीवपारष परन ॥ सो सुष कहो विचारस समन ॥ ज
कहु वसु कहो त्याबो सब ॥ नहि तो पीपलमस्त न जरो अब ॥ सहि न सको दुष मात पिता को
जारो तन अब रचो चिता को ॥ २७ ॥ दो ॥ बोली बहुरि उलूष ता सुन बालक सब धान ॥ तिः
विधनी वैधिताता तुम सोई षितावहु रान ॥ २८ ॥ चौ ॥ मणि सु जीवनी मस्तक जीवावै ॥ तिः के
कु हे प्रान धरि आबै ॥ तत छिन होइ जीव सविधाना ॥ प्रापति होत मस्तक तन प्राना ॥
सो मणि है सप्त मे पिआला ॥ से सनाग पहि महा बिसाला ॥ सेस नाग तमरा ना ना वर
नि ॥ द्वै बे मणि तुम जा ऊ न हो चलि ॥ तहा नाग बिबधा रबिकराला ॥ भे कारी सुरूप पुनबा
ला ॥ जाब हु मणि माल्याबै तुम हाथा ॥ पारष जीवै ता के साथा ॥ २९ ॥ दो ॥ महा कष्ट न ब

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लनागपति: अतिभैकारी रूप ॥ नाना तुम रासहस्र फन वली सभन को भूप ॥ ३०
॥ चौ ॥ सो मणि सदा शेष कै भाला ॥ धारी करुणाकरन दयाला ॥ सुमरन करत
से सारंगधर को ॥ सहस्र नाम नौ तन नित हरि को ॥ भाव सहित सुमरत कश्यपी
ता ॥ ऐसी सेष नाग की रीता ॥ इक नौ नागो के शिर सौ फन ॥ इक नौ द्वैशत शोभि
त फन तन ॥ ऐकन के फन बने तीन से ॥ ऐकन के सै चार गलन मै ॥ ऐकन के श
त पांच महाद्युति ॥ ऐकन बटु से विषसंयुत ॥ ३१ ॥ दो ॥ ऐकन के फन सप्त सै धरे अ
ठ सै ऐक ॥ ऐकन के नौ शत बन्यो की ऊंन ताइ विवेक ॥ ३२ ॥ चौ ॥ फणि सहस्र शे
ष भू पाला ॥ दीरघ तन सब मा हत विशाला ॥ बडे उदर दीसत अति भैकारी ॥ अति अ
स्थूल महा विस्तारी ॥ गज सम तुचा महा भैकारी ॥ नख सिख विष सो भरे विका
री ॥ जो मुख ते विष को वरसावै ॥ और व मद्रु म छिन माहि जरावै ॥ अति कुरम हाव
ली हैं विषधर ॥ देव अपने मन विचार कर ॥ अपुना वलतु महद्दे विचार करु ॥ पा
छे मणि मन सा जीय धार करु ॥ ३३ ॥ दो ॥ सुन तव भ्राता हत नहत रिषत की आधन बुटका
र ॥ माता धन्य पस्त लूखता [illegible] एक ह्यो वीचार ॥ ३४ ॥ चौ ॥ मै वंचित पाप हत अपुने म
न ॥ ऋषि: उपाइ जो कपित अरु तन ॥ यह उपाय तुम भला वता ओ ॥ सुन तक कहु कधी
र तुम मन आओ ॥ प्रवल युध की ठौर होइ जव ॥ छिन मधि जो तले उमणि को तव ॥
नागन पक्ष के तक वलु होइ ॥ सुन वलु आग्नेट केन कोई ॥ कहो सभ नाग को

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

इक सर रसैं॥ सेसनाग कहै त्रिः मणी धर को॥ कागद जिम फरे आकाश को॥ धर
निकरैं उलटाई नासकें॥ २५॥ दो॥ भाषे सपत पताल के ऊपर त्यावा बांधाई॥ सेस
नाग के मणी सक्ति तस रसैं ले आ बुलाइ॥ २६॥ चौ॥ कहै आए वसु सक्ति बलवाना॥
धरनी भार ह्रिः सौं रुहरानां॥ ऐक बान सैं सकल जीरावीं॥ गइ तिसपत में पाताल पठा
वीं॥ नागन तें मुज को ठर पावऊ॥ हमरे बल की मति न हो पावऊ॥ प्रलै करौं नागनर
छिन माही॥ मणि त्यावो छाडौ त्रिः नाही॥ तो मुज शोव कठिन न ही पीकरु॥ तौ नलि
पावो नाग मयंकर॥ सो को बभ्रुवाहन मुष भीसे॥ देषऊ मणी लावत हो कैसे॥ २
७॥ दो॥ मणि गहि त्यावो सेष ते आरजन भी मजो बाउं॥ कृश्न पत्र वबकेत कें सैना
सहत तजवाउं॥ २८॥ चौ॥ यह सम हसत न पुर रक्षि पठावो॥ धरमराज पक्षि पन्नक
रावो॥ समन पजी तौ फिरै अश्व युत्ति॥ तौ मज भाषऊ पिं त्रो गतिसुत॥ जीत चतु
रक्षक शपुर वौं स्वारथ॥ हैं ते रुद्र भगत स्वतपारथ॥ कीयो बभ्रुवाहन तब यह प्र
लू॥ पुन उलूषता कहयौ यह वचन॥ तुम को योग न हीय हवाता॥ प्रथम मैं की
पोआपन कुल घाता॥ पुन नाने कुल कर हैं नासा॥ भलेपुत्र कुल की यों प्र
कासा॥ २९॥ दो॥ पिता मार हत्या च वठी पाप पुष्ट पुनकीय॥ नाने गोत्र सो घा
र को मन सा धारी जीय॥ ३०॥ चौ॥ इक पद्धत कर न पत्र बलवाना॥ अश्व निश्चि
तसमर पितप्राना॥ निमित भिटावन दोब पिताको॥ जऊतम हयपराज्ञा मजाको

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ऐसे स्रन स्रन योगा ॥ पितहि नदीठे महादुष सोगा ॥ अपराधी मा आपित
माता ॥ पुन चाहि हि तुमरे पति घाता ॥ इक तुम देष करन कों नंदन ॥ पित दू
षन की नाद दुष कंदन ॥ इक तुम से सुत भए प्रकासा ॥ चाहत होइ हि कुल कों
नासा ॥ ५१ ॥ दो ॥ वसु जु लीनी चाही पैली तै तहाँ मंगाइ ॥ कुबली तें अपराध सों
जौ सहि जे चलि आइ ॥ ५२ ॥ चौ ॥ ईहि कहि भयो सु जसुतु मारा ॥ कपि संग्राम पिता
रन मारा ॥ इहि तें ऊहाँ अधिक जु सुहि ताई ॥ ना ने गोत्र विनास जु जाइ ॥ दै हैस
समागत तुम आपा ॥ तातें वडै महा संतापा ॥ सुन पुन वचन कहै पार्थ पसु ते
सुन आलू षता मात कूपा पुत ॥ ले ऊ ऐक मती जैसे तैसे ॥ आनी चाहीयै अ
वसर तैसे ॥ पुद्ध वरत मिलि वरजर हा वृऊ ॥ करधि चार कहु आवर वता वड
५३ ॥ दो ॥ वाली वृरि उलूषता वालक सों हि तुमान ॥ मगपति के मंत्री इहि पुंडरी
क पछि चान ॥ ५४ ॥ चौ ॥ पुंडरीक कों पठै जुपिया ला ॥ सेषनाग पछि आवत तकाला
॥ पुंडरीक कों वेग बुलाउ ॥ सभ वृतांत तिःभाष सुनाउ ॥ जाइ कहि आपुने नैरसा
जो हम तुम सों कहि संदेसा ॥ हाथ जोर कैविन तौ कीजै ॥ कहि सेष मांगि मिलि दी
जै ॥ दी जै मिलि कीजै उपकारा ॥ दै ऊन मिलि तव पुत्र हि मारा ॥ करज कहि देहि पुनि
तुम कों ॥ आई वनो पादु षदा रूण मुनके ॥ ५५ ॥ दो ॥ मंत्री चल्यो संदेस ले कहि सेष
को जाइ ॥ तुम कं न्या सुत पठ्ठ कपि पितु रन दी यो भाइ ॥ ५६ ॥ चौ ॥ अरजन भीम से

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २९२ ॥
अश्वमेध
जुद्ध ३३

नदषकेता ॥ कोऊभ्रमतककोऊ मह दिग्भ्रचेता ॥ चतुरंगनिसैनासभमारी ॥ महा
दुषति भा कुलकरढारी ॥ भवनधरमसुवछोपिऊगा ॥ पजनिधंसमचोअपि
सोगा ॥ कहूं धरमसुतरनमहिठाढे ॥ रुदनकरतजीपअपि दुषवाढे ॥ तुमपुत्री
तनअभिजतरावति ॥ मणितनभितुमपासपठावति ॥ पारथ चहिये वेगजीवाजो ॥
४७ ॥ दो ॥ सत्यवचननपालपयहकीयोधर्मभुमऐवषिकाल ॥ तेजीइआकै मणितु
रहितिफिरपठवहितविकाल ॥ ४८ ॥ चौ ॥ पहितसंदेसहमकोउनदीनो ॥ तेसमतु
मअवननसुनलीनो ॥ नृपतिवभ्रवाहनवलवाना ॥ आपुनेहृदैविचारऊसाना ॥
सुनसंदेसिसेससेकाना ॥ नवकुलमहिजेनागप्रधाना ॥ मुष्यनागजेऊसेब
लाए ॥ महावलीततछिनजुरिआए ॥ नमसकारवासककोकीनो ॥ सेवसम
नकोआदरुकीनो ॥ वऊरोसेषवचनउचारे ॥ सुनऊवोतुमससबाहमारे ॥ ४
९ ॥ सो ॥ हरिअरुधर्मनरेस ॥ अवरवभ्रवाहनवली ॥ तिनकहिपठेसंदेस ॥ सु
नऊसवैतुमअवनदै ॥ ५० ॥ चौ ॥ अरजनमाऐ सुरवलवाना ॥ मृतकभऐरनस
सपमाना ॥ पुंडरीकहमऊरपठाउ ॥ मणिताकेनिमितईहांचलिआउ ॥ उनहि
मसोंमणितमांगपठाई ॥ देषहुतुमहिविचारमनलाई ॥ वऊरोवचनकीयाहेइ
रुपुराण ॥ सुरजीवाइदैहिफिरपठमणि ॥ मणपाठऐतेहोइसुकाजा ॥ पारथ
जीवैसुरसिरताजा ॥ वडेपुरवमुषजूठनभावहि ॥ सेतपर्वहितजीपकटनरा ॥ ५८ ॥

प

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बहि॥५१॥ दो०॥ कारज कहि फिर रहि है गे मणी रा बहि है गे नाहि॥ पर उपकारु भि होइ
गो भय चतु करो मन माहि॥५२॥ चौ॥ जो हम मणी उन को नही देवै॥ करइ संग्राम जी
त कै लेवै॥ सभ नाग मिलि मंत्र विचारयो॥ आइ सेष पहि वचन उचारयो॥ यह हम रे
मणी जीवन मूल हमारी॥ सो कैसे करि देहि उधारी॥ जो यह हम मणी हम कर ते गइ
निश्चय मृत्यु हमारी भई॥ शिः के दीये होहि हम दीना॥ ते कछु दीजै बुद्धि प्रवीना॥ सेष
कहै सुनहु सभा हमारी॥ वह न ही ऐसे लो कथि कारी॥५३॥ दो०॥ उनका हो इन सू ठप्र
न सत्य कहै सभ बाति॥ हम को पठवै फेर मणी कहि सरु जीन कुसलाति॥५४॥ चौ॥
सावधान कछु जिन माही॥ हमरी मणी रा बहि है गे नाही॥ ऐसे सिन सो नही करइ
विरोधा॥ दीजै मणी वडि न ही क्रोधा॥ मनुज पुत्री को सुत बलवाना॥ सहा सुरत्रै लो
क निधाना॥ वली वभ्रुवाहन विख्याता॥ शिः की नोपि तु पारथ घाता॥ सैना लै तुम प
हि चडि आवै॥ नाग सकल जम पुरी पठावै॥ जाका पिता मारनो आ॥ जननी आनि
तर नव्र तुल ठा॥५५॥ दो०॥ दुखित वभ्रुवाहन भयो मणी बिनु सै रैन काजु॥ उंपु उंपु
लेवै पुत्रिक करि मात पि ताकी लाज॥५६॥ चौ॥ सुख सौ देऊ कर उपकारा॥ मान
लेऊ यह वचन हमारा॥ की जै वचन वभ्रुवाहन सों॥ पिताजी ता इ फेर पाछै मन
सौं॥ सकल सभा पुन वचन उचारे॥ सुनऊ सेष हम दास तुमारे॥ फेर नदेव
हि मणी वहराजन॥ आवैगो उन के बडकाजन॥ करि परपंच लीओ वहु चाहे॥ त

हत६

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ५८ ॥
७०२
अश्वमेध

हा तुक्म मणि कृष्ण जहा है ॥ तहां न मणि आवत किंः कामा ॥ है जहां विद्यमान घनस्या
मा ॥ ५७ ॥ जाके कृपा कटाक्ष ते कोटि मृतिक सवधान ॥ तहां मणि किंः काम है जिह
ठाढे भगवान ॥ ५८ ॥ चौ ॥ कोटि मृतक छिन मांहि जीवावै ॥ पारथ को हरि सषा कहा
वै ॥ अरजन को सरजीत करै रन ॥ रोम रोम जाके कोटिक मन ॥ पांडवन ही जी
पाइ पहुनि भीत ॥ सभ प्रपंच लैन मन के हित ॥ अरजन को दुष सहत न इक पल
ले छकपट कर मणि हित है छल ॥ ताते यह मणि को नहीं दीजै ॥ हमरा वचन मा
न जी पली जै ॥ सषा भाउ बहु प्रीति धरत मन ॥ मृत्र आन कहाठत है हरि अरजन
॥ ५९ ॥ दो ॥ ई क छिन दुष न ही सहि सकै अरजन को भगवान ॥ मृतक न कहा छैरन
विषै पांडव सषा वषान ॥ ६० ॥ चौ ॥ जहां पांडवन विपता परी ॥ तत छिन आइ कृष्ण
सभ हरी ॥ बहुत बेर इन को दुष टारयौ ॥ दुरवासा को श्राप निवारयौ ॥ पुनः आवस
र हरि को इन धाओ ॥ ताही समै तही चलि आओ ॥ इन के सदा गुपाल सहाय
क ॥ संकट समै करत दुष घाइक ॥ मणि को लेहु है दे यह स्वारथ ॥ तां ते हरि
जीवाइ हित न पारथ ॥ उन तो यह बर पंच जनाओ ॥ पुंडरीक हम पास पठाओ
॥ ६१ ॥ दो ॥ हृदे विचार हु सेब जी मणि दिने हम किंः काम ॥ हम मणि को देव हितन
ही आइ करहि संग्राम ॥ ६२ ॥ चौ ॥ मणि दीये ते मरण हमारा ॥ ताते जहु कुमर
हि इक वारा ॥ कृष्ण जीवा वहि लगे न बारा ॥ उन यह रच्यो प्रपंच प्रकारा ॥ लो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गनको करभि एद्द आवति ॥ मणि केहि तन ही सवा जीवावति ॥ छिनक माहि
पारथ जीवावै ॥ जो मणि हत हीयेव सरावै ॥ यह वीचार मन महि ठहि
राव ज ॥ पुंडरीक को फेर पठाव ज ॥ मंत्री को पुन वचन सेष कहि ॥ फे
र जाऊ मणि देतन ही यह ॥ ६३ ॥ दो ॥ इति श्री भारथ पर्व अश्वमेध भाषा
न्या ॥ पुंडरीक सेष नाग संवादे ॥ मणि वभ्रुवाहन ... हस्तिनापुर न जान
ईकतालीस मो अध्याय प्रमान ॥ समाप्ता ॥ ६५ चौ ॥ पुंडरीक मंत्री धीर समझाऊ
सकल वर्तांत भाव समझाऊ ॥ सुनहु वभ्रुवाहन वल भारी ॥ देत नहीं मणि नाग
विकारी ॥ उनको सेष कही वहु वातें ॥ मानित नाहि महा विष माते ॥ सेस नाग मति दे
षन कोई ॥ दुष्ट बुद्धि मंत्री तिः सोई ॥ देत नहीं मणि विन संग्रामा ॥ भला होइ कीजै सो
ऊ कामा ॥ सुनत वभ्रुवाहन नै क्रोध धरि मन ॥ मात उलूपी सुनह यह वचन ॥ १ ॥
सो ॥ अव हम दोस न देहि ॥ सुन हे मात उलूपी ता ॥ नाम सु कहै कुत्रेता का कहा तुष्ट
वल नाग पति ॥ २ ॥ चौ ॥ पुनि प्रचंड मैदान ताह मारी ॥ जो मणि देहि ही ये हित भारी
तो नही उनसौं हम कछु कामा ॥ जो न हीं देहि करो संग्रामा ॥ नव कुल के अति
नास करो अब ॥ ऐक वान सौं प्रलै करो सव ॥ आज्ञा करी आ लूपी तमाता ॥ च
ल्यो वभ्रुवाहन मद माता ॥ पुंडरीक को साथ चलाऊ ॥ रक क्षिन महि पैताल च
लि आऊ ॥ निरष वभ्रुवाहन पियाल दुति ॥ मंदर कनक फिन गन मणि संपत ॥ ३ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥दो॥ कुसल सम सुखी कनक की जगमग जोति अपार ॥ जहां तहां पूरन भरे हीरा
रतन भंडार ॥४॥ चौ॥ रतन षचित कनक प्रयंक छवि ॥ फूलहि कनक कुंज डोलवी
थि सब ॥ हेम रतन मनि चंति सरोवर ॥ निरमल सो जल भरे महावर ॥ सभ्य अ
स्थूल नागादि इंतन ॥ निरखत हीये में हरखित मन ॥ इक दीर्घ सहस्र योजन जा
न ॥ द्वै सहस्र जोजन ईक नागन ॥ ईक लांबे योजन सहस्र त्रै ॥ ईक सहस्र चा
रत न विष मैं ॥ पांच सहस्र योजन ॥ ईक विषधर ॥ ईक सहस्र योजन बट थि अ
सार ॥५॥ दो॥ ईक सहस्र योजन सपत ईक सहस्र वसमान ॥ ईक नव के इक स
हस्र दस योजन तन अति जान ॥६॥ चौ॥ इक इक स्थूल महा भुज भारी ॥ चलन स
कति वैठे सुखकारी ॥ एक नाग क्रीडा वन करही ॥ प्रफुलित वेल आलिंगन करही
फल दल करि पूरन निज कानन ॥ परसति हैं तम हा सुष पानन ॥ मद भरत मध्य
सरोवर राजित ॥ निर्मल सीतल जल विछाजित ॥ करत कलोल नाग पतनी संग
अति सुंदर विचित्र अंग अंग ॥ भूषन मन गन युभ दुकूल तन ॥ नेत्र कटाछ करत मा
हित मन ॥७॥ दो॥ काम केलि हरषत करत युवतिन संग भरतार ॥ फूलत वीच हि डो
लत तन नव सति साज सृंगार ॥८॥ चौ॥ तहां तला उ हेम को सोहै ॥ भरे अगर गजा सो
मन मोहै ॥ तहां करत क्रीडा जुवतिन सों ॥ करत कलोल अनंदित मन सों ॥ जार रहै त
न सों तन निशि दिन ॥ इह प्रकार क्रीडति हैं निशि दिन ॥ अपकारी सरूप विकराला ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वदर

महाबली तन बडे बिशाला ॥ निरख बभ्रुवाहन अचरज मन ॥ जीवन मृतल देहै सकै
मन ॥ मणि है इनके प्रान अधारा ॥ देन सकै मुझको इक वारा ॥ ८ ॥ दो० ॥ प्रथम मैं इन सों र
दीनता मणि सों हमरा काम ॥ जो न देहि तितसों मुझै पाछे है संग्राम ॥ ९ ॥ चौ० ॥ पुंडरी
क को कहि बिचार तब ॥ सेष नाग सों जाइ कहो अब ॥ प्रथम मैं हमरा देहु रुपमणि मा ॥ पा
छे सौं गहु मणि अभिरामा ॥ चले दोऊ पहत की उधि चारा ॥ आए तहां सेष को द्वार
ऊंचे भवन समान अकासा ॥ बचित्र रतन मणि महा प्रकाशा ॥ अति बिचित्र चित्र की
शाला ॥ जगमगात छबि महा बिशाला ॥ नव कुल को ऊ नाग मुख्य वर ॥ रहक बै
ठे राज द्वार पर ॥ ११ ॥ दो० ॥ भीतर देत न जा को ऊ बुरा भला पहिचान ॥ तब नृप प
हिले जावही आज्ञा करै राजान ॥ १२ ॥ चौ० ॥ ठाडो पुंडरीक नृप द्वारो ॥ दुइ ठाडो बार
ल कहै न्यारो ॥ पुंडरीक सेष पहि गयो ॥ हाथ जोरि कै ठाडो भयो ॥ बिनती हमरी सुन
रु नरेसा ॥ दीयो बभ्रुवाहन संदेसा ॥ नमसकार तुम को उन दीनी ॥ बहु मनुहार दंड
वत कीनी ॥ मणि न भिन्न तुम पहि चलि आयो ॥ तुम पुत्री पति रन महि घायो ॥ पित्रां गपि
तन अस्त्री जरा वति रोदन करति ब्याकुल बिललात बहि ॥ १३ ॥ दो० ॥ मणि दीजै कीजै कृपा पारथ
ले हु जिवाई ॥ फेर देहिंगे मणि तुम्हहि वचन सत्य पतीयाइ ॥ १४ ॥ चौ० ॥ बोले वचन सेष रा
जाना ॥ पुत्री सुत वच सत्य प्रमाना ॥ हम ते मणि मांगत धितस्वारथ ॥ बहुतो भगत कृष्ण
को पारथ ॥ भारथ माहि सहाइ करी रन ॥ म्रतक न छाडहि रुचि अब मम रजन ॥ सदा म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२०५

अश्वमेध

धीनरहगिरधारी ॥ पांडवकुलकेआज्ञाकारी ॥ सष्तिनसुकतरकहिनइनिको
दुष ॥ कोटकलसमिटाइदीयासुष ॥ तत्तिनमणिआवतकिः काजा ॥ छंः ठाहेबि
जआवेजराजा ॥१५॥ दो ॥ ईहासैासमुजगुरऔ तीनभवनसुषसार ॥ हरिहे
तेमणिमांगईयहुपरपंचविचार ॥१६॥ चौ ॥ उतपतिसरतवजरिसधारा
समविधकरनकरावनहारा ॥ पारथसषागुपालकहावति ॥ सहनसक
तदुषवेगतेबावति ॥ जिनकीआपदासहितनगुपला ॥ आज्ञाकारीसादाकृपा
ला ॥ सोहरिमतकितजतिरनकैसै ॥ महाभगतवरअरजनजैसै ॥ पारथपदु
षहरिसहोनजाई ॥ वहमानठाडेपदुराई ॥ मतकनदेषसकहितहरिपार
थ ॥ मणिमांगतिजीयकपटनिरारथ ॥१७॥ दो ॥ तमरेजीयमैरषइहैमणि
बसोहलैजीउ ॥ यहसंदेसलेफिरचल्योपुंडरीकहिःनाउ ॥१८॥ चौ ॥ पुंडरी
कउतरूलेगउ ॥ सकलवभववहुनकहिदोउ ॥ भाषैसेषनागववजैसे ॥ सक
लवतांतुसुनाउतेस ॥ सुनतसंदेसवालउठधाउ ॥ नानकेहारेचलिआउ
सभासेवकीअतिभेकारी ॥ विषुमदमातेनागविकारी ॥ नामससकारकरिवेठा
जाई ॥ पारथकीकहितकृष्णासुनाई ॥ प्रापतिभउमहादुषमुको ॥ सुनजुवतो
तुकहहोतुजको ॥१८॥ दो ॥ युद्धसमैछत्रीधरमममुजघाउरनवाहु ॥ चतारचो
वनमातमुजआगिजराबतिगात ॥ अपुभिल्योहमकोअतिभारी ॥ निश्रीयहममजदे
२० चौ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रु विचारी ॥ लागो कारन आपन तन घाता ॥ अब एण सुनी तव मणि की बाता ॥ तिन
भित तुम पहि चलि आऊं ॥ चाहो मणि लै पिता जीवायो ॥ जाऊं न ही फिर मणि बिन ली
यै ॥ मह विचार कीनो मुझ हीये ॥ हित सों देउ कर उपकारा ॥ मान न लीजी यै कब
लु हमारा ॥ २१ ॥ दो० ॥ मात पिता कु आपसें मरो नरक को जाउं ॥ ताते तुम सो लरि
मरो छत्रधरम जस पाउं ॥ २२ ॥ चौ० ॥ कहा पठ्यो मुझ आपने ताता ॥ तहां पठ्यो तुम
हनि रन घाता ॥ सहि न सको मात पितु सोगा ॥ युध करो तुम सो हम योगा ॥ तुम पु
त्री लागे मुझ माता ॥ पारथ लागे तुम पहि जमाता ॥ हमरे जीय उपज्यो यह ज्ञाना
दु हम और हो सै कल्याना ॥ दीजै मणि जीवै रण पारथ ॥ कति को हत्या ले उनि रा
रथ ॥ फिर नहीं जाउं सुन उराताना ॥ जुगम रोइ हत ठोर प्रमाना ॥ २३ ॥ दो० ॥ सै
न बुलाव उसे बजी उठि कीजै संग्राम ॥ कै न मति नास करो सकुल तन वकुल रहे
न नाम ॥ २४ ॥ चौ० ॥ सुनत सेष न हृदै विचारयो ॥ महा कष्ट जीय माहि निहारयो ॥ पुत्री
का सुत मुझ उग हत आऊं ॥ हम पहि नै कुन आदु रुपायो ॥ जै सहित जीवाए पुन्य आपा
रा ॥ को टष्ट जन सम पर उपकारा ॥ मुझ सिर हत्या चढै जमाता ॥ पुत्री आगे मृत रा
वै गाता ॥ बालक महा पुष्ट प्रम सहोई ॥ मुझ जग भला न भाषै कोई ॥ इन की हत्या व
उ विस्तारा ॥ बरनत है स्मृति विधि विध प्रकारा ॥ २५ ॥ दो० ॥ जो भगनी को मारसी सो हत्या
तिस होइ ॥ वहताई जो हत करै इक सह हस्त्र अघ होई ॥ २६ ॥ चौ० ॥ दैहि त्रे अघ ऐक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध
३०६

लागभे ॥ देखि श्री हरि को कलु षभये ॥ वक्र रो भगत कृष्ण को पारथ्य ॥ मणि दै
है पुरवो तिः स्वारथ्य ॥ जग महि कीरति तोइ हमारी ॥ सेष ना गुयत हृदे वी
बारी ॥ नव कुल के वरनी गावुला ए ॥ सेषन पति पहि सम चलि आ ॥ ॥ व
चन कहे वासक नागन प्रिति ॥ सुनउ ध्यान पहवनी कठन गति ॥ नपति वि
भ्रनाहन वल वाना ॥ महतास हर त्रैलोक निधाना ॥ २१ ॥ दो ॥ आर जन म स्या सणि
विषे मणि मांगत हम पाहि ॥ कार उकृष्ण फिर देखि ते गकपट करिहि तेग नाहि ॥ र
ट ॥ चौ ॥ हम सों वचन कहत पहत कए द्रणि ॥ पिताजी वाअ पठो गाफिर मणि
ता ते भलो नही संग्रामा ॥ मणि को देकि करहि प्रभ कामा ॥ जहा आइ उाडे ऊर वर
धर ॥ मणि को देहि तिम लोइहम अवसर्प ॥ जहा कृष्ण त्रैभवनपति होई ॥ तहा कपट
कइ सकै न कोई ॥ मणि प्रसस्त इनको अवदीजै ॥ पर उपकार स जस जगलीजै
इन हमरा कछु दोष न कीनो ॥ कपट नहि याका हन दीनो ॥ २४ ॥ दो ॥ उन महि इह
बात कछु नही आस म मणि नहि देहि ॥ महा वभ्रवाहन वली पद्रजीत मणि लेहि
॥ २० ॥ चौ ॥ वक्र रो गरुड कृष्ण को वाहन ॥ आवेगा कए क्रोध महा मन ॥ कौन करे रतिः
सों संग्रामा ॥ सो कहि मारिहि वतावकुनामा ॥ सन्मुख वकवनले रहि तिः या धी ॥ जो व आ
वे हरि रथ्य कए क्रोधी ॥ कहे सभी सुन सेवन रेसा ॥ देखत नही मणि करहि कलेसा
गरुड समेत वभ्रुवाहन न ८ पसंग जैना लेस कलन राधिप ॥ तौ हम पह मणि कोन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हीदेही ॥ जीवनमूलकवनपतिलेही ॥ ३१ ॥ दो ॥ अरजनकोहरिदेवजीए
कनिमधमद्धिप्रान ॥ नहीजीववतिमणिनिमित्तकपटरच्योभगवान ॥ ३२ ॥ चौ
मणिलीनीचाहतिनंदलाला ॥ हमसोंकरिपरिपंचगुपाला ॥ कृष्णसकतिनहि
सबाजीवावै ॥ सुभभिसकरिजगकोदिखरावै ॥ देतनहीहममणिपतिवालक
मिथ्यावायुद्धकरैततकालिक ॥ अपुनीविषकरिहमनितमनहीं ॥ विषमदयधि
परसपरिकरहीं ॥ विषउन्मादकरहितननासा ॥ मुजसरजीतहोहिमणिआसा
जरवरहिनमहिनासहोहिसव ॥ प्रानआधारहोइनहीमणिजव ॥ ३३ ॥ दो
विषव्यापतितनआईजवमणिदेखहितकाल ॥ सीतलतातवहोतमनविष
कीआगनिविशाल ॥ ३४ ॥ चौ ॥ काजुनहीहमरअरजनसी ॥ जीवेकिद्योमरैयह
रनसी ॥ यज्ञहोइहमरेफिः काजा ॥ पुएपप्रकाशितहीतवराजा ॥ कालहोइवैकुं
ठजाइपुन ॥ कृष्णचंदकासबापकालगुन ॥ हरिकोभगतमहावलपारथ ॥ तिन
सोंहमराकछुनस्वारथ ॥ भागआपुनेजीवैमरै ॥ कर्मआपुनेदुवैतरै ॥ ३५ ॥ दो
जीवनप्रानअधीरमणिदेहआपुनेहाथ ॥ कोटजतनपुनकतिकरिहलेहुदीन
नासाथ ॥ ३६ ॥ चौ ॥ हीयेअधीनहोहिकतिदीजे ॥ यतनअनेकयुधकरिलीजे ॥ को
टवारमरिजीवहिविबधर ॥ जोयहमणिप्रापतिहमरेघर ॥ जोऐसीमणिहमतेजा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

८३
३०

अस्वमेध

वै ॥ मरै ऐसौ काल पुन कवन जीवावै ॥ ई स्त्री सुत कलत्र सों क्रीडत ॥ मृतक होत सम
रीत वल करि जीवति ॥ जो यह मणि हम तें इन लैई ॥ निश्चै नागन की मृत भई
देत न मणि जौ लग घुटि प्राना ॥ सुनहु सेष वचन सस प्रमाना ॥ ३७ ॥ दो ॥ सुत
दारा धन चाहो ही पै दीजै सकल उठाइ ॥ पै हम मणी को देव ति नही सुनहु ताता वासुक
राइ ॥ ३८ ॥ चौ ॥ सभ अहि के मणि प्रान अधारा ॥ देहु न ही दृढ हृदे विचारा ॥ जो तु
म चाहो मणि प्रति दीनी ॥ जानव उह मरी मति कीनी ॥ प्रथ मै तुम सों युद्ध हम मारा
मणि देवन को हृदा तु मारा ॥ पाछै युद्ध बभ्रुवाहन सों ॥ जब लग प्रान देहु न ही मनर
को ॥ अब पुनि इक्षा सों जगताता ॥ अरजन को कीनो रन घाता ॥ भारथ मै कौरव मा
रे सव ॥ हत्या मान न लई पांडव तव ॥ ३९ ॥ दो ॥ हत्या मानी पांडवों दोष सकल जगर
तान ॥ जौ उन सों गोविंद कृत हरि कहीय ज्ञ की वात ॥ ४० ॥ चौ ॥ पुन अरजन हरि यज्ञ वता
ओ ॥ महा पुन्य हरि भाष सुनाओ ॥ महा कठन दारुन मुष की गति ॥ मरण अस्थल सेसांई
कहो जगतपति ॥ पच्छ वी सकल फेर गाव जा ॥ वांधहि गेह यह को वड राजा ॥ ते हैत
हा पंड सुत नासा ॥ गर्व वडो जौ पै होइ विनासा ॥ इन के हत तें हित यज्ञ रचाओ ॥ यही
मंत्र हरि ही ऐठ हराओ ॥ दीपा ऊजता हरि वल अरजन को ॥ सो वल छीन लीयो पच
हरन मो ॥ ४१ ॥ दो ॥ नास करै जो पारथ दिज ति को ऐसो बलवान ॥ नास वभ्रुवाहन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कीयासभईहाभगवान ॥ ४२ ॥ चौ ॥ अमृतमणिकुरताभगवाना ॥ सोरनमहि
ठाडेसवधाना ॥ जौदिनउद्यमकरिगुपाला ॥ जीवउठैअरजुनततकाला ॥ तौंते
यहपरपंचरच्योसब ॥ जानवृजमणिदेहुनहीअब ॥ जौहरिकृपादृष्टिअनु
सरई ॥ सावधानअरजुनकोकरई ॥ चमूसेषप्रतिवचनउचारे ॥ देहुनहीं
मणिप्राणहमारे ॥ नागऊवचनकहेसतभाइ ॥ पूरनभऔबेतालीसअध्या
इ ॥ ४३ ॥ दो ॥ इतिश्रीभारथे [illegible] ॥ बेतालीसमोध्याय [illegible]
[illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] ॥ जैमिनउवाच ॥ चौ ॥ जैमिनकहेसुनहु
भूपाला ॥ बहुरिकथाअद्भुतिसुनहुरिसाला ॥ सभानागऊकेवचनसेबसुनि
मुखतेबोल्यौसेषनागपुनि ॥ सभकोऊचाहतिअपुनोस्वारथ ॥ हेतसुनंगभेप स्व
रस्वारथ ॥ जौबांधेपरकोकल्याना ॥ तेईजगमहिपुरुषप्रधाना ॥ यहतोदेह
अनित्यकहीजे ॥ तातेपरकारजकरिलीजै ॥ यहप्रकारसबवेदबिषानेतु पर
कारजसमअवरनमानति ॥ १ ॥ दे ॥ कठनकरमजोहोवईजहाउठननहीयोग
परकारजतठसाधईवहेसुकीरतिलोग ॥ २ ॥ चौ ॥ संग्रामतकरतसकलगृहधा
मा ॥ सुफलहोतपावतपरकामा ॥ जौनहिसिद्धकरतपरकाजा ॥ धृगप्रतापु
तिःऊठसमाजा ॥ सोईवसुसुफलेजगकरही ॥ हितसौपरकारजअनुसरही ॥
॥ जिःतेहोतनपरउपकारा ॥ ताकीनिंदकरतसंसारा ॥ ऊतोदधीचमाहाव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

उ राजा॥ देऊं दीओ राखी कुसलाजा॥ देत न हो तुम मणि शरीर रहित॥ नृपत
नदेत सम जग मे कृत ३ दो॥ मांगत नृपति कृपो हित तकाटि दीओ तन मास
रहा की नाध मेहित जगत सुभयो प्रकास ४ चौ॥ प्रान समर्थ परउपका
रा॥ जे हैं महापुरुष संसारा॥ इक तुम रासु करे मणि के हित॥ मांगत नही
प्रान सम ऊं चिंत॥ माँगत मणि आर जन न भितार्थ॥ पोर देह तगे कर निज
स्वारथ॥ विभ्रम गत परस्पर भऔ घाता॥ पशु विध सम होत यम ताता॥ सावधा
न ठाढे रन श्रीपति॥ मणि मांगत तु मरीकर भंनति॥ करत परी दा कृष्ण हमा
री॥ पालपति तक्षिधौ वर उपकारी ५ दो॥ पारस्य कृष्ण जी बावते कछु न हला
गे वार॥ मणि मांगी दीनी न तुम निंद होत संसार ६ चौ॥ तुमरी निंद कर क्षत्रे
लोगा॥ कुतिभ लऊंदी जे मणि योगा॥ सब कहै तसु न होत अस्ति सेना॥ हृदे विचार
ऊं हमरे वैना॥ तुमरा भ्रात सक रे संसारा॥ तीन लोक मे है इधकारा॥ सम ते
करी लोग आपकीरति॥ सुन पठई सी तीवन रघुपति॥ नीचर जक मनि द्यासी
पकीनी॥ सुता राम वन को पठ दीनी॥ यद्यपि तीन लोक पति रघुवर॥ नाहि
न भवर को कांति समसर ७ दो॥ यद्यपि चौदह भवन के पति तपालक श्रीराम
सीय की निंदा श्रवन सुंदी पाभि का राधाम ८ चौ॥ वीन दूषन सीय को वनवास

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दीयाराम जगु अपजस त्रासा ॥ महापीउ जोग सहीं रघुनाथ पाहि ॥ उतपती प्रलै स
कल ऋि: हाथ पहि ॥ यद्यपि राम जगत करतारा ॥ नित अपजस उर दै विचारा ॥ ह
मतु मजीव मत्र मल भरे ॥ तीन लोक निंदा हम करे ॥ आगे भए पव ऊत चलि तिगण र
पर उपकार अमर जग भाए ॥ ताकु जसु इस्थित जग माही ॥ अमर भए जग धन
सत नाही ॥ ८ ॥ दो ॥ यह तो देह अनित्य है कछु लीजै उपकार ॥ मणि दै जगत जसु
लीजीये नही तो नरक दुआर ॥ ९ ॥ चौ ॥ कृष्ण सभा महि अपजसु होई ॥ हम
री कीरति करे न कोई ॥ जो वति आप की रति जगु करई ॥ म ए घोर नरक मे पई ॥
नरक स्वरग सुध को ऊन जाने ॥ जसु अपजसु सुनि सभ पहिचाने ॥ मणि दी
ये ते सजु स अपारा ॥ पढु ए होई जगत जैकारा ॥ पुत्री की हत्या न दी लागै ॥ क
लु खपि ऐ की रति जगु जागै ॥ होइ प्रसंन सभ [illegible] वाहन मन ॥ सुख उपजै चिंत्रा ग
ति के तन ॥ १० ॥ दो ॥ मणि दीये ते गुए सकल विन दीये दुख मूल ॥ पुत्री विधवा
होइगी सघो जाइ न ही सूल ॥ ११ ॥ चौ ॥ विधवा धरम कठन दुख सोगा ॥ भित प्र
तिवा ठतिविर ह[illegible] ॥ व्रत उपवास करै तनु साधै ॥ संध्या सिमरन कृष्ण
अराधै ॥ तीरथ मंजन [illegible] पास पहरन ॥ विधवा धरम कठन तन परन ॥ चिंता
ज रै तव रक दुख होई ॥ विधवा धरम सहसू दुख सोई ॥ जो तुम न तो देहु ग यह
मन ॥ दुख पावै पुत्री मु ग मन तन ॥ पुत्री दुख मु जस होन जाई ॥ मान भंग वा॰

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लकुटि कर जाई ॥१३॥ दो॰ ॥ जो के सषा समंत पर ख्यो दुष मानहि जगतात ॥ गरुड़ प
ठावहि क्रोध कर होहि नाग सम घात ॥१४॥ चौ॰ ॥ हम मम मीत दे हव भ्रवाहन के
मेघ एक सुजस हृवि चारो मन को ॥ आगे समझ लेहु तुम दोउ ॥ भला जानी पे
कीते सो उ ॥ सुने सेष के वचन चमत्कृत तव ॥ बोले चारो नाग प्रेम एक तव ॥ प्रथम प्रव
पकुवर नोकिः नामा ॥ इकुभि भ्रा एक गार तके धीमा ॥ दुतियो कर्कोट वचन उचा
रा ॥ ततीय पवि राट क्रोध तो पधारा ॥ चौथे तक्षक जगत विख्याता ॥ चारो कहत सेष
सो बाता ॥१५॥ दो॰ ॥ हम समझत है सेष तुम चाहो हमरा नास ॥ हमरी जुवति नि
द्रव्य सो बांछहु भोग विलस ॥१६॥ चौ॰ ॥ तौ न पवन पुनी चमत्कृत मरावै ॥ सो नृप राजन
अस्थिर पावै ॥ सेना विना भूपकिः कोतो ॥ रक्षा करै न ध्यु गुव हत राजा ॥ कहति तुम ऐ
सो तो पठ हरावहु ॥ मति दे के सभ चमत्कृत मरावहु ॥ देषे वहत केसे लेवै मति ॥ ति
न को नासु करहि तत छिन न रति ॥ कै नप रूप हमरी मति लेवै ॥ सो निश्चै तुम पर
को सवै ॥ देहि तिन मति जो लो घट प्राना ॥ तउ मरहि तेगस सपमाना ॥१७॥ दो॰
हम मति डरावहु कृष्ण ते क्योंके सहर जोइ ॥ गोकुल वक्षी राव ते यह तजा नैस
म कोइ ॥१८॥ चौ॰ ॥ मगरो कहति नवनीत चुरावत ॥ दूध दही चोरी मन भावति ॥२
गोकुल गहम मही रके वासा ॥ कल्कि करि को नोके सर्व नासा ॥ डरपत जरासंध ते
भागा ॥ सहिन जाइ सागर की लागा ॥ तिन्हि हीर ते हम मति डरावहु ॥ करिये किन नही

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मनसमझावहु ॥ मृत्युलोक महि महा संतापा ॥ तहां नमणि पठवहु वहुपा
पा ॥ उपजत विनसित है वहु लोगा ॥ शीघ्र मरत होत वहु सोगा ॥ १९ ॥ दो० ॥ पू
रन आयु न भोगही जे वच वेद प्रमान ॥ ऐक मरत बालक समे इक पुन यौ
वन वान ॥ २० ॥ चौ० ॥ पूरन आयु न भोगै कोई ॥ याघ वहु करहि आपुर घहि हो
ई ॥ शीघ्र होत लोग विसिकाला ॥ तहंनि मणि पठवहु भूपाला ॥ ऐसी वस्तु आ
ई उन हाथा ॥ मृत ऐजी वाइ लेहि तिःसाथा ॥ जिः मणि वीच होत हि गुणि ऐसे
हम कोउ फेर देहि वै कैसे ॥ मृत प्रति कहा कोट जन मरही ॥ मणि सों वहु तु
स जीवति करही ॥ ऐसी वस्तु फेर न हि देही ॥ हम ते प हम मणि छल कर ले
ही ॥ २१ ॥ दो० ॥ कैसे देहि फेर हम ऐसी वस्तु पछान ॥ मृतसु जीवनी जानम
णि फिर न देहि राजान ॥ २२ ॥ चौ० ॥ ऐसी मणि आवै उन हाथा ॥ मृतक मनुष
जीय जिःसाथा ॥ वस्तु अपूरव पहं दुर्लभ मन ॥ आवै हाथ मृतक को लो
गन ॥ फिर न देहि काहि निज प्राना ॥ मणि न देहा सुन सेब राजाना ॥ म
णि प्रति विनमर ते हम नाही ॥ जो मणि गई मरहि छिन माही ॥ मनस मरहि
आपने काला ॥ हम मरहि विषम दं जे जाला ॥ विष उनमाद परस्पर लह
ही ॥ विष जाला सो तत छिन मरही ॥ २३ ॥ सो० ॥ जौ तुम हम मरे राज तो यह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मणि देव कुं नहीं॥ जौ हम सौं नहीं काज तौ मणि दीजे सेष नृप॥२४॥ चौ॥ सुन
हुं से षतु म व उ हमारा॥ देऊं नहीं मणि भला तुमारा॥ मृत्यु लोक कैलत विवेक
धामा॥ तहां पर ऊ मणि प्रभु मन हीं कामा॥ नर इक इस्त्री रति न हीं जहां॥ पतिव्र
तनारी एक न नहीं तहां॥ जहां अश कलोग है तै से॥ तहां देत हों यह मणि कैसे
द्विज दो षी जू ए रति लोगा॥ मदपानी तहां मणि न हीं योगा॥ जहां रजस्वला जु
वती के कर॥ भोजन न अरु जल पान करत नर॥ २५॥ दो॥ एतवंती जहं कंन्य काध्धि
ता न पति निःदेह॥ यह मणि यो गन ही तहां सेष अस्व न सुन लेह॥२६॥ चौ॥ जहां
ले हकं न्या धन लोगा॥ प्रान देत वर जत व कुं सो गा॥ तीरथ यात्रा वर जत हां वक्ति॥
कंन्या देत विधि ल्लगा वक्ति॥ जहां न हीं जुवत निमहिला जा॥ विभचारनि ती पथ परनर
कों जा॥ फिर क्रि कोम न नि ति तपर धारा॥ सेवत पर नर तजि भरतारा॥ जहां न ज्ञा
न विवेक विचारा॥ चोरी रूठकु संग अपारा॥ जहां अनीत प्रभुन अज्ञाना॥ रज
तम गुन पर न परभि माना॥ २७॥ दो॥ इह अवगुन ते क्रीय र घटत करत व
हु पाप॥ तीतेऊ ही घृत्मि मरत हैं उपजत महा संताप॥ २८॥ चौ॥ यह मणि
देहुं न तौ उन जोगा॥ फिर न देखि भए वऊ लोगा॥ व उं रि से षमुष वचन
उचारे॥ सुनहु नाग तुम सबा हमारे॥ पुत्री दोष महा अघ भारे॥ पुन्य कं
न्या सत तौ तौ तदु षारी॥ हरि को भगत सबा निजु पारष॥ जौ वै प्रभु धारे है

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

परमारथ॥ महाप्रसंन होइ नंद लाला॥ तुम राजसु जग बडे विशाला॥ हर
षत होहै कुंती माता॥ परम सुद्ध तहैं धर्म को ताता॥ २८॥ दो॥ जहा समै हरि
षत ही चेत हादी जीये प्रान॥ तुम मणि को देते नहीं भ्रष्ट बुद्धि अज्ञान॥ ३०॥
चौ॥ यह वच कहि ब्याल नके नाथा॥ सेषदई मणि वालक हाथा॥ वसुवाबभ्र
वाहन ले मन नको॥ कृष्ण प्राण मनवा सकु राजन को॥ नव कुल नाग सुन्यो तत
काल का॥ मणि ले गयो सेष ते वाल के॥ क्रोधित सब विषधर उठि धाए॥ भसि
रपट कृत महा एसा ए॥ घेरयो जाइ वभ्रुवाहन को॥ ध्रुदु मलिताल पेट तत
नको॥ लपट गए अहि गद गरिचारे॥ दीरघ नभ समान भै कारे॥ ३१॥ दो
॥ निरषि वभ्रुवाहन पृथ्म विनती करी अपार॥ एक मुहूर्त्त मणि मुझै दी
जै हृदे विचार॥ ३२॥ चौ॥ सहिन सकै मात पित आपा॥ महा दुषित तन मन
संतापा॥ तुम सो कहौ दीन तातारे॥ नाने गोत्री लागत पाते॥ फेर देउ तुम
को तुमरी मन॥ पर उपकार विचार ऊनिज मन॥ एक मुहूर्त्त मणि को कामा
फेर पऊ चाबो मणि तुम धामा॥ तुमरी मणि ढकलकहि नहीं लेऊं॥ पिता जि
वाइ फेर तुम देऊं॥ सत्य वचन मानी ये हमारा॥ सभ ते भ्रष्ट सुपर उपका
रा॥ ३३॥ दो॥ व्याल कहै वालक सुनऊ भला कीया न हीं तोहि॥ जीवण प्रान
आधार मणि हे चलि उठे है मोहि॥ ३४॥ चौ॥ फिन महि भस्म कर हिंगे तुमको

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

व लदि षग वति है सि स मुझ को ॥ हम तुम सों देह त कोना ता ॥ ता ते तुम तन कर त घा
ता ॥ मरिाादी जै कहउ तितु म पकाना ॥ नही तो करहि ना समुझा ना ॥ कै प्यो वभ्रुवाहन के
त्यो तव ॥ नवकुल नागन नास करो अव ॥ हम तुम सा पथिअ न तिप हना ता ॥ सेष
नाग पत्री मुझ माता ॥ यह जी यानि युद्ध न ही की नो ॥ जीव दान तुम को हम दीनो ॥ ३
५ दो ॥ उलपि कहत है यह वचिन ॥ युद्ध कर ऊअ वभ्राइ ॥ कीयो धनुष टंकार तव
सनमुष भयो रिसाई ॥ ३६ ॥ चौ ॥ नागकन्या पितपुन वचन उचारे ॥ यह ईश्वरा बी हृदे
हमारे ॥ नाने गोत्र करो नही नासा ॥ मत मुझ करै लोक उपहासा ॥ तुम मन म
ता ते काल निकट तुम आउी ॥ तौ पितौं गति पूत कहता वी ॥ नवकुल नाग धरनि मस्त
वो ॥ ई हार चौदह सरोप जा अव ॥ अभि जराऊं नागन कुल सव ॥ ३७ ॥ दो ॥ ऊ हा कर
तम वधर्म सुत ॥ जव ति लअग्नि जराइ ॥ इहा जरा वे ब्याल सम युध करो अव भ्राइ
३८ ॥ चौ ॥ यह वच कहे वभ्रुवाहन जव ॥ मन क्रोधे नव कुल के अहि सव ॥ मुष सों
दे हि स्वास फुंकारा ॥ वर ष्या करहि महाविषु धारा ॥ दहदिशा गरल अग्नि उपजा
क्रोध पित जागे ॥ लागे जरन शैल गहि वन सम ॥ सर्व विचारनि लागे ॥ लरत तनि शंक
वक्र संभारे वभ्रुवाहन तव ॥ आपा विचार चौ फेर चक्र कवि ॥ ३९ ॥ दो ॥ पुरसकी

ना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

क॰४

पोनहीगरलकछुवालकुडरप्यानाहि॥ चक्रपिफिरयोचौफेरविषउल
टीपरीवनमाहि॥४०॥ चौ॥ लागाजरनसकलकाननजव॥ कीयोव
भ्रवाहनविचारतव॥ दीएऊतेदेवतनपंचसर॥ लीयेसंभारवालक
तिःअवसर॥ ऐवनशंकरजोदीनो॥ तेऊधितारवालकरलीनो॥ म
घवानईद्रजोदीनो॥ तेसंभीरवालिककलीनो॥ सुरदीयाप्याअग्निविशव
बर॥ सोऊधिचारलीउअपनेकर॥ दीयाऊतामरुततमवाना॥ कृष्ण ते
ऊसिरकरठहराना॥४१॥ दो॥ सुधावानजोशशिदीओ एहपांचसरलीं
न॥ विषुसनमुबइकुकसिहन्योवालकपुधपवीन॥४२॥ चौ॥ भिटगईसक
लगरलकीज्वाला॥ वालकसरप्याअतिविकराला॥ भयोवभ्रवाहनसवधाना
कोक्रोधपवनमेघकोवाना॥ विषुअररअग्निऐकठौकीनी॥ डाएवतालमाहिस
भदीनी॥ लागाजरनचमनागनकी॥ महाभयानकगरलअग्निकी॥ उलटिप
रीप्यालवनमाही॥ जरितवागद्रुमलतातहाही॥ मंदरकनकतलाउअवारा
जरतहलाहलअग्निमंझारा॥४३॥ दो॥ [illegible]हजाचौबंडीनगर॥ जरतस
मस्तपिआल॥ नागऊकीपतिनीजरीवाडीअग्निविशाल॥४४॥ चौ॥ कछोवऊ
रवालएककरशर॥ कसमारयोनागनिसेनावर॥ सेनासकलकरीसंघा
रा॥ वच्योनिकौऊनागनइकवारा॥ ऐकनकेभुजसीसउतारे॥ ऐकनकेक
रपगकटिडारे॥ मा[illegible]कमुकटसमेतजराए॥ [illegible]तहैमहिधरनगारा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रो॥ सैना सकल नासकीनी तिन॥ नव कुल ऐक सेष राजा विन॥ दूत उजार कहौ अहिधी मा॥ जाहा होत नाग उविप्रमा मा॥ ४५॥ दो॥ ज़ु रिसाऐ कुननाग वुऊ॥ जे उऊ ते तिंहि ठौर॥ फूलत उवत नि सापजो आऐ द्वा ढहिं ठौल ४६॥ चौ॥ लपटे उ ते ऐक चंदन तर॥ ऐक नाग पैमाठी होत्र पर॥ जे ऊ अहि वसत सो रोवर माही॥ है रकत्र सभ चले त हाही॥ देष्यो आइ वभूवाहन रन॥ महा प्रकाशद सरोष्दिन मनि॥ त प्रमान है धनुषलीये कर॥ नर मे ठाग महा सूरवर॥ नाग उअपनी चमन्दिन हारी॥ महाबली वालक सभमारी॥ क्रोध नाग वुऊ विष वरसा वहि॥ पहु कतिस्ला स अगनि उपजावहि ४७॥ दो॥ फुंकार हि तेमा हिगरल मलकीनी अग्नि प्रकास॥ महा कठनि दुहि प्राणसों होहि तिको टरन न नास॥ ४८॥ चौ॥ मारुत वान ली उवा लकिरन॥ का ठि अरोपन की उधन षगुन॥ छाडि दीऐ सन मुषविषु ज्वाली॥ मारुत सर का अति विकराला॥ वडवा वि षु उठि चढी अकाशा॥ अ तुलोक पन की ऐ विना सा॥ जहा संग्राम की पाघ्या अरजुन॥ लागी जाइ अगनि ताहीवन॥ जरत भऐ वऊस रक वंधी॥ ते गे इऊ रति उठी दुरगंधी॥ इंद्रवान वालक पुन मारुयो॥ गरल अगनि को तेजु निवारुयो॥ ४९॥ दो॥ ऐ मेघ वृन्द पर वान॥ नासु करी अहि सेन सव वा॥ लक अति वलवान॥ ५०

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चौ॥ रोमरोमनागनकेवाना॥ लागेभरेसभनतनप्राना॥ पुनिमिलिआए
नागअपारा॥ होतजुनवकुलकेसिरदारा॥ ईकईकसाथकोटइकसैना
वासिककहीपरतनहीवेना॥ चडिचडिआएअहिनौवारा॥ भागसेनसराइ
अपारा॥ नवमीवारवऊरजवआरे॥ नवकुलअहिसभमहाएसारे॥ ध
धवलीवाररनागअतिक्रोधे॥ विषुवरषावैअतिवलयोधे॥ विषुवरषाविति
विधिनागअनेकप्रकार॥ इकठेछाडेपाचसरवालककीविचार॥ पर यो
तौ॥ परेचक्रमारतन्पाईसर॥ विषुज्वालाअहिउठगगनपर॥ गरल
अगनअवनीसभजरे॥ मस्तुककएधरनीपरडारे॥ ठौरठौरदै
परेनाससव॥ छिंताउपजीभारनकेतव॥ ठाडेऊतेजेऊमनदरके
पस्योषडगलेवीचसभनके॥ मारेसकलकीओनहीत्रासा॥ ऐकन
कोगहिपटेआकासा॥ गगनसमसस्त्रछादितमऊआ॥ दृष्टिनपरेस्ट
रतमद्धऊआ॥ ५३॥ दो॥ ऊपरतेगिरपर्वतभूआदीरघनागमपार
गिरसमानहैदेहतिनशवदकरतिभेकार॥ ५४॥ चौ॥ लागेगीरननना
गतिक्तिरनपशे॥ जाहाठाढेपेकपुष्पयुद्धपुर॥ देषपराक्रमवालक
कोअति॥ धंन्यधंन्यमुषकहैजगतपति॥ मारनागदहदिसकपगिगरे
गर्जीतस्सिघजिमषावदउचारे॥ इतसेषपक्षिजाग्यकारा॥ नागवभवा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हन सभ मारे ॥ उद्यम कीया सेषन परन को ॥ करते तोष बभ्रुवाहन
को ॥ सेना अवर होइ नहीं था तो ॥ राजु भि होइ चमत्क्रित नि भीता ॥ ५५ ॥ दो
सैना बिनु नृप काज कि होई पराक्रम हीन ॥ पहि विचार करि ऐउ हिच्च
ल्यो सेष नाग परवीन ॥ ५६ ॥ चौ ॥ पायो आपुना कीया नाग सब ॥ बचे स
राषाऊं तिनहि जाइ आव ॥ कुरवंधि नामा नाग तव आउ ॥ सेस नाग
प्रति वचन सुनाओ ॥ रन महि तुम ते हो किं दकरा जा ॥ तुम तो सकल ना
ग को राजा ॥ तुम राव च अहि तिनाति मान्यो ॥ वाल पराक्रम को नहीं जा
न्यो ॥ ऐसी सैना है दुष मोगो ॥ सुते भले ऐसे बल लोगो ॥ काल रूप
वाल कर्म कारी ॥ अहि तुमरी सभ सेन संघारी ॥ ५७ ॥ दो ॥ वालक सनमुष
जाउ नहि देषउ हहे दहल गाइ ॥ मझ को आज्ञा देउ तुम वालक तो षोजा
इ ॥ ५८ ॥ चौ ॥ चलत तसेष को वरजर हा ओ ॥ आज्ञा लेदु रवुद्ध सिधाओ ॥ ता
सैं सभ वेगर न आयो ॥ आतन निरषम हा दुष पाओ ॥ मरु त्यकप रे भयं
ग निहारे ॥ इक घायल घूमत मतवारे ॥ जे ऊ आहि ते उवरे वभ्रुवाहन ते
हार परे विह्वल है इन ते ॥ नागजीत लेग ओ वाल मन ॥ चिंतमान आहि
धुनत सकल फुन ॥ तो मह कप्पा स है गुन गावे ॥ मझ को हो इ निरभै पु
दु पावे ॥ ५८ ॥ दो ॥ इति श्री भारथ्थे परव ते ... अश्वमेध पर्व ... ध्याने ...

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

परनज ॥ ६ ॥ समस्त ॥ जैमिनोवाच ॥ जैमिन भाषत सुनमेजै नृपति ॥
वरुणिक थासुन हो नृप हरषत ॥ जो ऊ आहि दुवरे संग्रामा ॥ मंत्र दीऊ
तिन दुरबुधनामा ॥ धन्य तु मराजीवन जगमाही ॥ तुम तो बल कीना कछु
नाही ॥ सैना नौगनी भई आनुगन ॥ लेग चौ जीत वभवा हन मन ॥ वरुण वचन
प्रण गओ तुमारा ॥ पर पैची हैन पति तुमारा ॥ जीवन मंगल कुल पमणि दीनी
तुमरे हे की मनसा कीनी ॥ १ ॥ दो ॥ मंत्र कीओ दो हित्र सौ सैना कर रु संघा
र ॥ भलाक्षिवा छै चमू की सो नृपत रुविकार ॥ चौ ॥ पुः नृपति के पहि मन आ
वै ॥ अपुनी सैना आप मरावै ॥ तुमरी आज्ञा धिनु मणि दीनी ॥ रण मद्धि आप
सहाइ न कीनी ॥ जो रनधि बैरहा चलि आवति ॥ तो कछु रहत मान जसु पाव
ति ॥ सो सनृप की सेवन कीजै ॥ कति के जगमधि आप जसु लीजै ॥ वचन कौ है
दुर्बुध प्रति सैना ॥ तुम तो सत्य कहत सम भवेना ॥ इक मणि गई मह ऐव रु
धाता ॥ अब तुम कहो सु कीजे बाता ॥ ३ ॥ दो ॥ वचन कहे दुर्बुध तव सुन
रुमात मनलाइ ॥ अरजन तो जीवे नहीं कीजे सोई उपाइ ॥ ४ ॥ चौ ॥ सो वि
धकर रुजी पै नहीं पारष ॥ जग जसु होइ सिधसति स्वारथ ॥ नृप हम
कीन करै उपहासा ॥ अंध होइ प्राण पुर कै आसा ॥ नही तो तुम री रहै न
लाजा ॥ हासी करै रिति लोग पुनराजा ॥ पुनि सैना तपण वचन उचारे ॥ कहे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मेंत्र हम यदस तुम्हारे ॥ जो तुम एह कर हो उपकारा ॥ हम सेवक तुम भूपह
मेरा ॥ तो हम समर्थ हि राजु चिआला ॥ नव कुल तुम सेवहि तत काला ॥ ५ ॥ दो
वचन कहि दुर्वेध पुन क्ष ऊ चल ऊई राज ॥ जिहि विधि पारष्य ना जी ऐसे सोईक
रहो ईहि काज ॥ ६ ॥ चौ ॥ समुद्र वीच इक ठैरवि ताई ॥ हम तुम ऊहा मिला
गत्राई ॥ अर्जुन सीस त्यार्ऊं गहित तहि किन ॥ पारष्य जी वैन ही पुनस्सरथीन
पह वच कहि दुर्वेध चल्यो तब ॥ अब वन चले अहि समुद्र मो रसव ॥ दुर्वेधर
नमहि पावति मऊ ॥ प्रात हि काल तहा चलिग ऊ ॥ चिंत्रागता अरु कुंती माता
शवति तहा करति विलपाता ॥ कुंती गोद वैषे अरजन सिर ॥ दुर्वेधग यो तहा
रति उतपिकर ॥ ७ ॥ दो ॥ कुंती अरु चिंत्रागता गीरी भूर हो होई ॥ जैसे रक्षा कृष्ण
कीस भाव तावै सोइ ॥ ८ ॥ चौ ॥ एन पर्यो की सी को आल ॥ तैसी इक्षा वीन
दला ला ॥ यो ही आय व न्यो संयोगा ॥ दुःख्या नाहि तिनि कैनि रहि लोगा ॥ तौ यो बुरा
इसी सत्र अरजन को ॥ पहरन की या मनोरथ मन को ॥ समुद्र वीच वैराग्यो सा
मा ॥ तैसे हि भावै जगदीस ॥ वैठे जो रच मध्य अति तहा ॥ विषम हो रष्या दारु एज
हा ॥ वालक मणि ल्या ऊ हरषत मन ॥ पारष्य सी सुनहि एप पर्यो रन ॥ ८ ॥ दो
मऊ वभ्रुवाहन दुषत जी यऊ यऊ पावऊ सो ग ॥ तहु भगवत चिंता एऊ पुनव
हदी ऊ वि ऊ ग ॥ १० ॥ चौ ॥ यह कार रज सभम ऊ अनिरारष्य ॥ सरविनु म शाआ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वैठे किंह सखा रथ ॥ नव तन दुख उपज्यो मन माही ॥ सिर विनु अरजुन जी कत
ना ही ॥ अब जीवन कौर ही निस्वासा ॥ रोवति सभ सीतल भरि स्वासा ॥ कुं
ती मात तस्र रुचि त्रागपति ॥ मुर्छि तध रन परी आकुल अति ॥ दुषित वभ्रुवा
हन मन भउ ॥ मंत्री को वुलाइ तव लयो ॥ सुन कृ सचिव इंद्राय हम भगवन
ऊहा पुद्ध करि हम मस्मानी मसि ॥ ११ दो ॥ जो अनअर जुन सी सविन मणि आ
वति किंह काज ॥ आन वन्यो है काल मस म मात पिता की लाज ॥ १२ ॥ चौ ॥ नहि
जानो को सिर लेग उ ॥ कहा करौ दारघ दुष भउ ॥ सभ राजन के सचिव वप्र आपा
रा ॥ मिल वैठे सभ करत विचारा ॥ नृपति हं सधु जस चिव प्रधाना ॥ तीय विचा
रतिहत चनुव षाना ॥ पहतता है नागन को कामा ॥ मणि आनी ति रजिन के धा
मा ॥ ना सुभई जिन की सेना सव ॥ वैर मान नलेग गेहि सी सुआव ॥ पह विचार
भिष्यान हो हो ई ॥ अति षिन लसि रुहर सकेन कोई ॥ १३ ॥ दो ॥ भीमसेन को पु
त्र मैन भयकठ पो प्पावाल ॥ मह ह्यं उतरी पवन सुत धरि आउ तत काल ॥ १
४ ॥ चौ ॥ सभ व तां तु कह्हि भीम सुनाउ ॥ कि सही अरजन सी सुतुराउ ॥ पा
रयो होइ को ऊद्रिए तुमारी ॥ भीमसेन जी यवा तवि चारी ॥ हुए परा मुष ऐक समर
पमग ॥ उज्जल वसु लीये मुष जगमगा ॥ चल्यो जात सागर नभ माही ॥ तव समो
को यह सुध कहु नाही ॥ धरा होइ गासा गर माही ॥ सत पव चन ही पलस्यो निरंत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

र ॥ पितत स्वीर की विध सु नभ्र वन ॥ प्रमुदित भयो वभ्रवाहन नतन ॥ ७ ॥ दो ॥ धरा
होइगा उदधि मद्दि तत मद्दिन के वास ॥ कहत शकि तै सुमेद्र की द्दिन मद्दिक
रोख विनास ॥ १६ ॥ चौ ॥ राषन्नि सकै सो समुज ता ता ॥ द्दिन मद्दित करो समुद्र नघ
ता ॥ जलनिधि को मारौ इक वाना ॥ सत कुताइ जल सत्यप्रमाना ॥ समुद्र वीच
ऐवी ठहरावो ॥ तौ अर रजन कौ पत कहावो ॥ शंकर कौ जव ध्यान लगावो ॥ वि
तसर रसहित तसु मुंद्र गद्दि ल्यावो ॥ है शेवक हो महादेव को ॥ विजै भगत श्री
कुसमैसव को ॥ कुसम चरन लागो हमत वही ॥ सावधान होइ पारथ्य जवही ॥
१७ ॥ दो ॥ लागो गात न कुसम वग पिता होइ सवधन ॥ तात प्रसाद सु मुद्र को
मारौ तीक्षन वान ॥ १८ ॥ चौ ॥ ऐक वान सौं नीर सुकावो ॥ अरजन सौं सहु अम
हि ल्यावो ॥ कर गद्दि धनुष चढ़ायो रा ॥ चीरा ॥ पऊ छ्यो वेग जलधि के तीरा ॥ ध
नुष टंकार लीयो कर वाना ॥ सागर मान भयो सवधाना ॥ भेट दई वऊ की यो
प्रणाम ॥ म्हा सोहि इक रो सोई कामा ॥ मत मारो तुम वान मोहि तन ॥ जो चहि
येली जैत वमन धन ॥ सन मुष लरै तऊ उपतिं हि साध्या ॥ हैं तो हो वल हीन अना
या ॥ १९ ॥ दो ॥ जिहिन भित तुम क्रोध करि आउ हमरी आर ॥ ज हा सो सुलेअ
हि हपचलु हृदि षरा वों ठौर ॥ २० ॥ चौ ॥ वसत मुझ विषै जीव अपारा ॥ सभक्षिर
दोषन कर ऊसे घारा ॥ तव सागर आधो सुध भयो ॥ मग दीनो इती उत है गयो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आधा एक ओर भयो सागर ॥ आधा दुतीय ओर रतनागर ॥ मधि ठौर रघु
धकी दीनी ॥ विवकर जोर वेनती कीनी ॥ सैना जोर नागपति हसआऐ ॥ विष्णु
वरषति जी पमहा ऐसा ऐ ॥ कीयो विचार वधवा हनतव ॥ सीस लेउ मोरा
पाह्वे सव ॥ २१ दो ॥ धाप मे आहि तेलेउ सिरु सुति गरम हितुर जाई ॥ दो
रदी यामधुवान तव बालि कपि देरि साइ ॥ २२ चौ ॥ लागो वान श्रंध आहि भ
ऐ ॥ सकल अंग मधु सोलत पट ऐ ॥ पुनि वपीलका वान चलाऊ ॥ लागो
आलनव फदु बपाउ ॥ अंग अंग काट नति हलागी ॥ वहवल है सापनम
धि त्यागी ॥ लीयाउ गाइ सीसपार रथ को ॥ कीनो सिद्धता हो सव रथको ॥ वफ
रि कोधवाल कजीय धायो ॥ ती छनसर इकत ऐ निकायो ॥ मारयो वानग ना
सैनापति ॥ उठ अंग निदा रुए वालाकपि ॥ २३ दो ॥ जर व रहलो भ सास व
नागभ ऐव सकाल ॥ नर्क कुंउ गरे सकल दुवुंधि अरु सभ व्याल ॥ २४
चौ ॥ चल्यो वालक पिना सुनागा सव ॥ त्यायो सीश शीघ्र रन मपितव
ठागा कुष्ठ युधि पर रजा हा ॥ पारथ को सिरु त्यायो तहा ॥ धरम ज
जो देखयो सिरु अरजन को ॥ मनी पपार रजत वलीओ जतन सो ॥ उरयो ज
लपा रथ सभ माही ॥ जीव धनं जेउ थो तहा ही ॥ हे तभयो मंगल
जैकारा ॥ वरषावति सुर कुसमअपारा ॥ धर्म जम हाआनंद तभयो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कुंतीमुदतिसकलदुषगायो॥२५॥दो॥चित्रांगतिआनंदहिभैदूरभयोसभ
सोग॥भयोवभ्रुवाहनमुदतिहर्षितभोऐसभलोग॥२६॥चौ॥सैनासक
लभईसभधाना॥बाजहिदुंदभमेरनिशाना॥उठगाडेसभसेनअपा
रा॥जाहातहांधुनिहोतनैकारा॥उठिआरजननीरधरपगलागा॥हर
षितभयोसकलदुषभागा॥परयोवभ्रुवाहनपितुकेपग॥मुदितभउआव
नकहिचरनलग॥पुनिलागोचित्रांगतिचरनन॥प्रमुदितभउवभ्रुवाह
नमन॥चित्रांगतिकुंतीपगलागी॥विवकरजोरहोऐअनुरागी॥२७॥ध
र्मसुतनचरननपरीचित्रांगतिवरनार॥बहुरिवभ्रुवाहनपरयोधर्मसुतप
गसिरधार॥२८॥चौ॥बहुरिवभ्रुवाहनजोरेकर॥विनतीकरैसुनहुअ
गरधरि॥कारनकरनहरतुमहीप्रभ॥होहैजोइछातुमरीसभ॥तुमर
हीकरनकरावनहारा॥अवरयेदोषदेऊसंसारा॥जोइछासोईकराबहु
काजा॥तुमप्रभअषिलभवनकेरताजा॥होनहोहैजोपुनिहोई॥जोतुमर
चीसोईविधहोई॥आग्यारचिसभजगभरमाऊं॥केनहुंतुमरापारूनपा
ऊं॥२९॥दो॥करीवभ्रुवाहनविनौमऐप्रसंसनगोपाल॥वालिककेअपुना
यातुष्टिकनप्रभनंदलाल॥३०॥चौ॥धंन्यधंन्यकहैतेकूस्नवालको॥ससु
प्रसंन्यकीउंनंदलालको॥कुंतीकहैधंन्यचित्रांगति॥एकपुरुषरत्तिध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

न्यपति श्रोत ॥ धंन्य शाल ऐ शोभा सुरदेसा ॥ तुम पति साध्य धरम सुसनेहा
वज्र रिधं न्य [illegible] ह गर्भ तुमारा ॥ ऐसे सुर रली चोपन्त वतारा ॥ रणम हि धर्म पि
ता सु त राषौ ॥ जाको जसु तिहु लोग गन भाषौ ॥ ३१ ॥ दो ॥ कुंती पग ठारा वज्र
रि ले बालक को मात ॥ कुंती दई असीस वज्र न्विर जी वज्र कुसरात ॥ ३२ ॥ चौ ॥
लोग सभै शुभ मंगल गावत ॥ वरषत कुसम अमर सुष पावत ॥ धर्म
सुत आनंद अति भारी ॥ महा प्रसंन भए गिरधारी ॥ चले नगर को आनंद
वढावति ॥ हरषत सकल वजंत्र वजावत ॥ करति आरती पुर की दारा
कंन्या हसी पर आसवारा ॥ मन भावत गावत भिल गीता ॥ विहसत हीये
वढावति प्रीता ॥ चार वरन पुर के सभ लोगा ॥ हरि पग परे भिटे सभ सोगा
॥ ३३ ॥ दो ॥ नगर वीच पग धारति भए उतरे राज दुआर ॥ रतन षचति ऊचे भव
न ॥ तिन दई ठौर मुरारि ॥ ३४ ॥ चौ ॥ चित्र शाल मंदर छवि छाजै ॥ तहां ठौर
श्री कृष्ण विराजै ॥ धर्मसुतन को ठौर दई वृि ॥ भीमकरन सुत को सुंदर घर
जा को ठौर तौ राषी जैसी ॥ दीनी वाट ठौर रति ह तैसी ॥ हरषत आन जन सुचि
त्रां गति ॥ क्रीडा करत मुदित मन दंपति ॥ पुर के लोग कृतारथ भये ॥ कृष्ण द
रस कर अघ मिटि गए ॥ वज्र विभूवा हन जोरे कर ॥ आज्ञा दीजै मुक्ति भीव रघ
र ॥ ३५ ॥ सोरठा ॥ आज्ञा दै प्रभु मोहि दै आवौ मति सेष को ॥ वेचन न मिथ्या होइ क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रा एण की जै जगत गुरू ॥ ३६ ॥ चौ ॥ कृष्णचंद आज्ञा तिहि दीनी ॥ पुनि बृषकेत वे
नती कीनी ॥ जीती वस्तु फेरन हीदी जै ॥ जाको महायज्ञ करि लीजै ॥ जे उन दई
हो इस्मा रथा कृप ॥ तौ मणि फेर दीजीयै तिन घर ॥ ऐसे करते वत परस्पर
प्रापति भयो सेष तिहि अवसर ॥ ऐक आयुत भरि रथ परतिनन को ॥ दीनी भे
ट नंदनंदन को ॥ कृष्णचंद के चरनन लागा ॥ भेटा समर्प सकल दुषभार
गा ॥ ३७ ॥ दो ॥ सेषबक्रतउ स्तुति करी ॥ मएप्र सेन गुपाल ॥ वलकलागो से
षपग मणि दीनी ततकाल ॥ ३८ ॥ चौ ॥ वासकराषी मणि रतनन परि ॥ हा
थ जोर लागो चरनन हरि ॥ मन करत न मन अरप्यो हरि को ॥ महाप्र
संन की ओ गिधर को ॥ आज्ञा दीनी श्री नंदलाला ॥ सेसनाग फिर रागाफि
आश्ना ॥ वहुरि फेर वाहन कर जोरे ॥ विनती कहत स्यन प्रभ मोरे ॥ पि
तु सन मुष संग्राम कीयो मुज ॥ कीनो अति अपराधु कहै तुज ॥ मुजकी
नो गरिष्ट यह हपापा ॥ चिंतत भयो मन तन संतापा ॥ ३९ ॥ दो ॥ गलो तिमा
ले जाइ पुन हरि चरनन याको कहो ॥ जो पितु शास्त्र चलाइ यह प्राश्चित ततार
को उचरित ॥ ४० ॥ चौ ॥ देह हति मात वीचशीला वो ॥ पितद्रोह न इह भांति मदा
वो ॥ तीन पाप को किल विषभारी ॥ करै सु होइ नरक अधिकारी ॥ पापयमे
दोष कृष्ण नहीं सवे ॥ दुती पदी बगुरु को दुष देवे ॥ ताते यदोष जो पितादुषा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वै॥ सो नर घोर नरक दुष पावै॥ बुध कीयो सु अपित सन सबरन॥ सी
सु काति कै नासु कीओ तुन॥ तांते गलीन्हि माले जाई॥ पिता दोष अघ भ्रा
ति कठनाई॥४१॥ दो॥ भीमसेन ठाढो निकट बचन कहै सुन तात॥ नं
दलाल के दरस ते कोट कलष मिट जात॥४२॥ चौ॥ तुम को यह दूषन
कछु नाही॥ कृष्ण दरस अघ कोट मिटाई॥ हरि दरसन तुम को सुत भओ
कोट जनम के किलबिष गओ॥ तीन पाप ते उत्तम कुएदीनो॥ तुम नही की
ये सकल हम कीनो॥ यह तीनो पुन अबर अपारा॥ रचो महाभारथ भार
कुल मारा॥ दो एक चार जह सोपि तामा॥ अति बलवान धरम को धमा
तिन हम को मधि गो दषिलाओ॥ करि संग्राम मसोई हम घाओ॥४३॥ दो॥
नासकी यो हम गोत्र सम श्रीनंदनंद सहाइ॥ अरजन के रथ स्वारथी
जान्यो त्रैभुन राए॥४४॥ चौ॥ भरथ महि कीने अघ भारी॥ भट गए सक
ल दरस गिरधारी॥ तहा कछू किलबिष नही लागे॥ ठाढे जहा कृष्ण सहि
गआगे॥ जाके नाम लिऐ अघ नासहि॥ पातिक मिटहि सु धरम प्रका
सहि॥ सुरति वत सोई सुधधाना॥ विद्यमान ठाढे भगवाना॥ जिन सहि
न कृष्ण सामुष छिन होई॥ तिन को अघ लागन नहि कोई॥ तुम को पापन सक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२५॥
३१८

अश्वमे
ध
पत्र ३५

हिय परस करि ॥ ज्यौं चाहै तौ भट गए दरस हरि ॥४५॥ दो० ॥ तुम राख्यौ छत्री
धरम सुकृत कीनौ सो कीन ॥ पितु रन मारत जीवाइ पुनि सकल समर्पि
राज ॥४६॥ चौ० ॥ तुम तौ वेद वचन प्रतिपालिक ॥ हरि दैषत की जन हित वा
लिक ॥ उठ कुँवर रहत रिकै पग लागहु ॥ हरषत है संभ्रम जीय त्याग
हु ॥ भीम भनी जे कौं भजन गहि ते कहि ॥ लेउ सो पुनि कृष्ण चरन परि ॥ भीम वा
लकौ ज्ञान दिढाऊं ॥ जी पते सकल सदेह चुकाऊं ॥ पांच दिवस तिहि हरि
नगर मंझारा ॥ वसे सकल पुनि कृष्ण विचारा ॥ सब रजन प्रति हरि
वचन उचारे ॥ ऐसी बात न होइ तुमारे ॥४७॥ दो० ॥ पत्र अरंभ्यो धा
र्म सुत सो तुम दीनौ विसार ॥ कार ज करने वउत है आगे चलहु वि
चार ॥४८॥ चौ० ॥ हरि वच सुनि उद्यम यह कीनौ ॥ धरम सुत नग जपुर
पुर पठि दीनौ ॥ कुंती चित्रांगति औ उलूपि ॥ चली सुदत्ति सब परछित
हरषत ॥ चली वहुत राजन की नारी ॥ पुरवन ता सम संग सिधारी ॥ पुर
ब चले ले है संग सहाइक ॥ तरुनी चली पत्र वरदाइक ॥ बहु धन हेत तव म्रबाह
न के ॥ भर दीने सम भ्रम रथ परतनन के ॥ मणि मुकता हल कनक भार भरि ॥ हस्ति
न पुर संग पठे युधिष्ठिर ॥४९॥ दो० ॥ कृष्ण सहाय कसौ सब कौ सर जन रथा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आरूढ ॥ सजि सैना चतुरंगनी चले वजंति पंचतूर ॥ ५० ॥ चै ॥ चल्यो अश्व पछिम
द्दिशा गयो ॥ रंधुज पुर मद्धि प्रापति भयो ॥ पुर रत्नपुर नाम मोरधुज राजा ॥ वैष्णव
भगत सूर [illegible] रता जा ॥ हरि सेवा सिमरन चित लागा ॥ है निहकाम राज सुख
त्यागा ॥ ताम्रध्वज नृपसुत को नामा ॥ महा विचित्र धरम को धामा ॥ जीवत पितु तारा
ज्युतिं हृदै नो ॥ कृष्ण भगति अति सूर प्रवीनो ॥ वैष्णव सकल नगर नरि नारी
पुष्पदान व्रति विवध प्रकारी ॥ ५१ ॥ दो ॥ नृप मोरधुज रैन दिन सेवा करत गो
पाल ॥ भगत करै निहकाम मन नाम मन वच क्रम भूपाल ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ वसत नगर मद्धि
प्रजा सुधरमी ॥ छत्री सूरे धीज वट करमी ॥ सो पुर गोत्र ब्राह्मण हितकारी ॥ परम वि
वेकी तत विचारी ॥ सत्य वचन सब रूठ न भावहि ॥ पर दारा पुत्री सम लावहि ॥ तेहि
पुर निंदा करै न कोई ॥ सदा प्रकाश वेद धुनि होई ॥ जवहि मोरधुज हरि सेवा पर
वैठे ध्यान लगा भगतवर ॥ ताम्रधुज पर दोई टहल निंत ॥ श्रद्धा करै फल पिता
पर मद्धि हित ॥ ५३ ॥ दोहरा ॥ श्रद्धा करै चावल व कुपि जो लागहि हरि भोग ॥ दूर टाप दू
दूर कपट करै सु इच्छित योग ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ वाती सु भगा कपूर बनावति ॥ चौक वाच दी
पुलेल ज रावति ॥ जल कपूर मै सींच सुवासा ॥ पाक विचित्र वनै सुषरासा ॥ निंत
उछाह फुलेल इन्द पशाला ॥ मोगल गावै वैष्णव भूपाला ॥ चरनोदक माथे परधा
रति ॥ जै जै मंगल शब्द उचारति ॥ तापाछे कार जनित करही ॥ इह प्रकार नि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तप्त तमान सरही ॥ सुचपावन पुर महापुनीता ॥ मानित सभ मृत्तिसि सतीकी
री ता ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ अश्व तहा प्रापति भयो गहि ल्याउ यह राज ॥ ता म्रधु जह-
र खत भऊ ज्ञान रख तुरत सुमाज ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ भील पत्रिका पढि पढि चाल्यो ॥ आर
अश्व युधिष्टर को जीय जान्यो ॥ सेनापति अरजन हे साथा ॥ संग सहाए कहै यदु
नाथा ॥ ता म्रध्वज अानंदित भऊ ॥ पत्र पठत मन आतिविगसेऊ ॥ आइ पहुच्यो है
हा पहु हमारे ॥ वडे पिता के भाग हमारे ॥ पूरन भयो मनोरथ मन को ॥ भेउ मोर
नुग्रह श्री भगवन को ॥ सात पहर की नेम जगता ता ॥ सात लोक तिहु दीये विधाता
५७ ॥ दोहरा ॥ बजरि माठु मोलोक वह जहत विसन को धाम ॥ कुरैश एश माय ज्ञपि
ताताहा हाइ [illegible] ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ अश्वमेध पुर वैकुंठ कहावे ॥ करे अश्वमेध तत
खिन वहि पावे ॥ चित वत ध्यापावी कहत वाजा ॥ गृह हत वैठ पूरन भऊ काजा ॥ वडे भाग है
मोहि पिता के ॥ प्रापति भयो अश्व गृह ताके ॥ वेग पिता पहि दूत ठाऊ ॥ पत्न अरंभ
करकु है पायो ॥ तब लग तम की जे सब साजा ॥ जब लगि हम जी तो यह वाजा ॥ स
नत मोरध्वज नृप मन हरखत ॥ प्रापति भयो दरस त्रिभुवन पति ॥ ५९ ॥ दोहरा ॥
कहयोत म्रध्वज सचिव पति की जे पटु उपाइ ॥ अश्वमेध कृत पज्ञ को चैता लीस
माध्याइ ॥ ६० ॥ ६१ ४८ ॥ [illegible]
[illegible]

जैमिन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कहै सुनहु भूपति तबर ॥ अतिभित कथा सुनहु अब तन धरि ॥ ताम्रध्वज
बाध्यो यह राजा ॥ यज्ञ करत है धर्मज राजा ॥ सैनापति अरजुन है साथा
अश्व सहायक है पदुनाथा ॥ सुरवभ्र वाहन सह प्रद्युम्न करन पृतव षकेत
संगति ॥ महावली अनुशाल नीलध्वज ॥१॥ दोहरा ॥ जौ वना सन पसु तस कि
तअवर वज तम्भूपाल ॥ प्रवल चमू चतुरंगिनी संग सहाइ गुपाल ॥२॥ चौपई
यह सुनि कर रजु भेट लै जावज ॥ चरन लागि हरि सभ सुषपावज ॥ पुनि ताम्रध्वज वच
न उचारे ॥ सुन सज्ञान तुम सच बहु मारे ॥ प्रथम मै है जीतो संग्रामा ॥ पाछे चरन
परो घनस्यामा ॥ जौ यह अश्व न जीत सोजाई ॥ तौ लै भेट मिलो यदुराई ॥ हरप
गप रोस समेत सेना सब ॥ जौ यह अश्व न जीत सको तब ॥ क्षत्री धर्म होत नही ऐसे
है को बांध मिलै पुनि कैसे ॥३॥ दोहरा ॥ अश्व बांध कै जौ मिलत मोहि हसहि गे लोग ॥
वड़ एधिकार रहित गे न्रपति क्षत्र धरम नहि येग ॥४॥ चौपई ॥ पुनि ज्ञानी मुष वचन उचा
रे ॥ सुनहु श्रवन दै वचन हमारे ॥ प्रथम मैं अपुनीच मनि हारहु ॥ सभ वे सुबमन
माहि विचारहु ॥ टहल करत वात तम्राध्वज न ॥ गागर भरत तऔर रग हलेपत ॥
पृजाक रि हरि भोग लगावत ॥ इह प्रकार दै पहरवि तावत ॥ सैनाको भितिप्र
ति रहकामा ॥ ईहा कवन करै संग्रामा ॥ पुन ताम्रध्वज उचरै वैना ॥ हरिकी टहिल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२५
३२०
अश्वमे
ध

लकरनंदैसैना ॥५॥ दोहरा ॥ लेअ्रासीसउनकीईहा हम जु जोरनमाहि ॥ कहैसवि
वनपति सुनऊसेनाविनरननाहि ॥६॥ चौपई ॥ पांडवसैनाअतिवलवाना ॥ सं
गसहायकश्रीभगवाना ॥ तिनसौंउचतयुधतुमनाही ॥ समुजदेषअपुनेम
नमाही ॥ तुमआगेसंग्राममुनकीनो ॥ उतअरजुनरनमहाप्रवीनो ॥ सुबसुर
थापितातुमारा ॥ दीयेशस्त्रतजिज्ञानविचारा ॥ तिनशद्दनकरतिसेवनंदलाला
ततुविचारीबुद्धिविशाला ॥ वऊरनगरसभलोगभगतवर ॥ कीरततनकथासु
नतिसिमरतिहरि ॥७॥ दोहरा ॥ ऐसेकालविताव ही तिनशदनकरेंआनंद ॥ की
रतनकथासुनतसदागुनगावतिनंदनंद ॥८॥ चौपई ॥ तुमसैनाकोयह
संग्रामा ॥ हरिसिमरननमहिविधधांमा ॥ तुमऐकलोयुद्धनहींकीजै ॥ ह
रवगपरदुमआपफिरदीजै ॥ पुनिताम्रध्वजवचनकहैतव ॥ हमऐकलोयुध
करोअव ॥ जौहहयदेऊंकहैउरत्रासा ॥ छत्रीधरमलजतउपहासा ॥ होतजग
तमहिजन्मअकारथा ॥ निंदाहोईमोहिपुरुषारथा ॥ अवनपिपामहितगहोहि
ईमुऊ ॥ उचतमोहितवइहविचारतुज ॥९॥ दोहरा ॥ अवमुरुयुद्धप्रशंसाहिदेषा
हृदेविचार ॥ चरनलागपितकेचल्योताम्रध्वजरिसधार ॥१॥ चौपई ॥ सैनसहित
रनप्रापतभयो ॥ जिहिथाकृष्नतहांचलिगयो ॥ पारथप्रतिवचकहेमुरारी ॥ प

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

युद्ध करैगा महाप्रतापा ॥ द्विज रावैगा त्वम
हताम्रध्वज सुत है बलधारी ॥ युद्ध करैगा मन को भाऊ ॥ देइ महादु
संतापा ॥ चतुरंगनि सैना संग ल्यायो ॥ जीतैगा तुमरी सभ सैना ॥ सस्त्रा
षस्त्रन तन को ॥ सपिता रुधिर बहावैगा नैना ॥ जीतैगा बड़ जोधा बभ्रुवाहन वृषकेत सों
नली जहि मुज वैना ॥ ११ ॥ सोरठा ॥
निहकाम्या विन क्रोध विष्णु भगत या को पिता ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ बड़रि नगर के लोग
सुधरमी ॥ विष्णु भगत तपवान षटकरमी ॥ पुन्यवान ततपर पूजाव्रत ॥ पुरुष
स्त्रीया पुर सकल धरम रत्त ॥ अति बलवंड मोरध्वज राजा ॥ जीवत ही कीनो इ
हकाजा ॥ राज तात को अरपण कीनो ॥ हरि सेवा समरन चित दीनो ॥ गागर
जल नित पित भर ल्यावत ॥ पूजा हित नित सीस उठावत ॥ सेवा महनिश
दिन सवधाना ॥ जानत भगत प्रताप विधाना ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ पादे करत प्र
साद प्रथम मै भोग लगाइ हरि ॥ प्रेम मगन अति लाइ भजन विषै तन मनु
सदा ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ हरि तन गंध जु धोइ उतारै ॥ सो लै अपुने अंग सुधारै
प्रथम मै पर हरि को वहि रावै ॥ तपाछे निज गात वनावै ॥ कछून लेवै हरि
अरपे विन ॥ हरि पूजा विरहे न इक छिन ॥ चक्र चिहन सुंदर तन लावै ॥ सा
धसंगत तै हरि गुन गावै ॥ कीरतन कथा सुनत उजलमति ॥ ईंद्री जीत एक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जुवतीरति ॥ सदा प्रसंन रहै सवधाना ॥ सुष दुष जाके केऐ समाना ॥ १५ ॥ दोहरा
भगत करैं निहकामना सभ अरपै मुझ माहि ॥ सत्य वचन हरिचंद जिम झूठउ
चार रति नाहि ॥ १६ ॥ चौपई ॥ सो गीव डो दुधीचंन पति सों ॥ जिह निज देस मधी हुत
सों ॥ अंबरीष से भगत महावर ॥ ध्रुव प्रहलाद लसै मन शरधेन ततपर ॥ प्रेम मगन
नारद पर माना ॥ अहिनिश हृदे कृष्ण को ध्याना ॥ कीर्तन सुनै गीत मुझ गावै
नाचे विलज होइ मुझ भावे ॥ कबहु प्रेम उमग मन रोवे ॥ कबहु हु हसै हु
रष लीय होवै ॥ कबहु हु करैं दंडवत हरि सों ॥ कबहु हु ताल वजावै बिहसैं
१७ ॥ दोहरा ॥ तौ रष्या पर समन प्रीति जिह हिय प्राण पर रोपर काजु ॥ के ते गुन
अरजन कहौं भगति मोरध्वज राज ॥ १८ ॥ चौपई ॥ महा वली तिह हित पूत
ताम्रध्वज ॥ प्राण परा स्नेह राम जान न भज ॥ कर है युध धुषाइ पताप ॥ प
इव तुम हित संभार कृष्ण आपा ॥ पार्थ सों पहिवा तके रत हरि ॥ ताम्रध्वज पग
दीवत हि अवसर ॥ आवत अरजुन चक्र निहारी ॥ धनु वाण स्यो कर तन
न संभारी ॥ ताम्रध्वज तन चिह्न चक्र वर ॥ चरनोदक मुष तिलक भाल प
र ॥ कंठमाल तुलसी छवि छाजै ॥ वैष्णव वध मैं ताम्रध्वज राजै ॥ १९ ॥ दोहरा
मध्य मैहर वत ताम्रध्वज परस्या चरन नंद नंद ॥ वहु सम कहै व चक्र सम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिमन मह्ति व स्यो अनंद ॥ २० ॥ चौपाई ॥ तुम प्रम परम पुरुष परमा
रथ ॥ जहं कहं हो स्वारथी पारथ ॥ भारथ महि तिन तें ध्ये काना ॥ अ
व अविन दे वे सब धीना ॥ मन अपुने मनि माहि विचारा ॥ तुमरी मार
पा अपर अपारा ॥ तुम तो भगो दास पंडवन ॥ अर जनके वसरे है स्या
म घनि ॥ हम शेवक देवकी नंद को ॥ सदा उपासी श्री मुकंद को ॥ तौ हो
शिष्य देवकी ताता ॥ अरजन च मह करो सभ घाता ॥ २१ ॥ दोहरा ॥ तव हो
सुत मारध जै ताम्रध्वज महि नाम ॥ अरजनकी सेना सकल मह को वीर स
ग्राम ॥ २२ ॥ चौपई ॥ सुभ अस्वर सभ गगन उडावो ॥ दुवरा वोको तक मत भुतको ॥ तुम स
भारावो ॥ तौ हो शिष्य देवकी सुतको ॥ दुख अरजनको ॥ पारुष्य को तुम अ
सबा कहावत मनको ॥ सहि न सकत हो दुख अरजनको ॥ पारुष्य को तुम अ
रु कारे ॥ सदा टहल महि रउ मुरारी ॥ अरजनक है है करउ सो ई कामा ॥ र
वसारथी सदा संग्रामा ॥ २३ ॥ दोहरा ॥ तुम तत पती श्री कृष्ण जी अरजनके
आधीन ॥ हो ए हो रथ स्वारथी वे तुन हम तन दीन ॥ २४ ॥ चौपई ॥ देवकीनं
दह मारे रथ्य पर ॥ वैठ कर संख चक्र गदा लीए कर ॥ प्रथ्य मे बही करत सं
ग्रामा ॥ सिंध करत मन वांछत कामा ॥ देवकी सुत रनकरत संघारा ॥ जगमहि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जानजनाम हमारा ॥ वजरे कुंवन सुनउ महाराजा ॥ अरजनको आ
वत नहीं लाजा ॥ सुत रन मांहि कीनो सिरभंगा ॥ उचतन वज्ररिक्किरि
ति है संगा ॥ एक बार रन मांहि हरावै ॥ तिहि सो पद्मन वेद बतावै
२५ ॥ दोहरा ॥ एक बान सों भीम को पठ्यो गगन के मांहि ॥ जी तव भवा
हन लीयो तिंहि सो जू को नाहि ॥ २६ ॥ चौपई ॥ पुनि प्रद्युमन [illegible] राजरा
भागि रुकमनी उदर समायो ॥ तिन सों पूछन उचित हमारा ॥ द्वै योधा मन
मांहि विचारा ॥ ईकु वृषकेत करनको नंदन ॥ डुतीय बभ्रवाहन नृपपुन ॥
तिन सों पृथक करो गिरधर सुन ॥ मैं रन सों संग्राम नहीं मुज ॥ हारन काय
रसाचक होतु ज ॥ पहु बच क्रुहि रनधन षउठायो ॥ अर ईद चंद्रको बान चला
यो ॥ घेर लई पारथ सैना सब ॥ बान पिंजरा रच्यो दीनो तब ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ वा
न पिंजरा रच्यो बर डुतीय चंद्र के बान ॥ दिनु ध्धन कै लाव डतिर है प्रद्युमन पद्म प्र
प्रमान ॥ २८ ॥ चौपई ॥ पारथ प्रति हरि वचन उचारे ॥ कौतक देख उमा तह मौर
डुतीय चंद्र सरपिंजर कीनो ॥ तिन प्रति चडत कलान वीनो ॥ किने किन संयिक कला
विमारे ॥ पद्म सम प्रद्युमन डुति धारे ॥ डुतिय चंद्र न्याई अवदेखो ॥ सुरन पथ्थ सम
अवरेखो ॥ पुनि यह है सर भेकार चैलावै ॥ सैना को अति कर दिखावै ॥ ऐसे स

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

न तन कृष्ण के बैना ॥ चकृत भई धनंजै सैना ॥ २९ ॥ दोहरा ॥ पारथ पच मह देकै ऐ
देब कृष्ण कृपाल ॥ ताम्रध्वज को जस कहत बार बार नंदलाल ॥ ३० ॥ चौपई ॥ बच
न कहे पुन हरि पारथ प्रती ॥ ताम्रध्वज ऐकलो सूरमा अती ॥ तुमरी सैना अपरम्पारा
हा सो मानहु बचन हमारा ॥ कृष्ण कहै सुनहो बचपारथ ॥ हम सारथी भये तुम महा
रथ ॥ हम को अवर सारथी कीजे ॥ उह अपूरब उद्धम रन कीजे ॥ हमरे बचन सो तिन
मानहु ॥ छूटहि गे सर तव पहिचानहु ॥ बचन मान अरजन ततकाला ॥ अपुनी सैना
रची विशाला ॥ ३१ ॥ दोहरा ॥ द्वै द्वै पाधे एक के ठाढे कीऐ बनाई ॥ बभ्रुवाहन बृषकेत
पुन मुख्य पहरा इह राइ ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ ठाढे द्वै द्वै सूरथ विशाला ॥ मेघवरन दमन बभ्र
नु साला ॥ नृपति हंसध्वज अरु युवनासा ॥ जुद ठाढे रन को ठानि वासा ॥ सूरथ स
बेगदो उरक ठौरा ॥ नृपति नीनील चुज पाधिक जोरा ॥ सम भै सैन इह विधि रचदीनी
कृष्ण आगे कद्रु पा कैकीनी ॥ इति उतता रोच्छ शाब बनाई ॥ करि विचार पहुजी पठहरा
र ॥ सन मुख हो बकुघो रलेउ आव ॥ द्वै रूकत्र सर बरखा बजु सब ॥ ३३ ॥ दोहरा
बहु ऐकलो कहा करे मार ले हिद्धि न माहि ॥ अष्याह मृत्ति डाराइ हैते जु कछु डर
पञ्चनाहि ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ जन हरि बचन प्रतीति न आई ॥ पछु कारन को चले
साई ॥ लागे सन मुख सर बरखावन ॥ ताम्रध्वज को दुख उपजावन ॥ ताम्रध्वज ले
गरह सर ऐसे मारत कौऊ फूल हित जैसे ॥ तीन बान अरजन को समार ॥ ताम्रध्व
ज को उर प्रहारे ॥ ऐक अगनि सर दुतीय पवन को ॥ तीजो बान सिला बरखान

र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २४ ॥
३२३
अश्वमेध

को ॥ सभ से ना भिलवान चलाए ॥ जेमद्यनबंदता अध्धजदकाए ॥ ३५ ॥ दोहरा ॥ अ
मुनमभयो कहु ता अध्धजदृसधनुषलीयो टंकार ॥ शबदसहित बंडतकीयोध
रनभडो अध्धुयार ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ गजनचक्र सो बंठितसरकीनो ॥ अपुनैनिक
टन आवन दीने ॥ धरनीकंपवान सब भई ॥ गरडगसनततलोकु सधिगई ॥
तीनलोगभैभीतिभयेअक्ति ॥ सीसक्षपाइरहोभयपकुनपति ॥ पसीरोरदष्टिद्दश
वानलेसनमषधाउो ॥ ऐकवानलागोभानुजसुत ॥ लेगयोनभउडाइ सरसे
इमी ॥ ३७ ॥ दोहरा ॥ बानदृसरोमैन महिपरयो हमैसबपोध ॥ गजपदांतसरतीस
रे ॥ हनेमहलतीपक्रोध ॥ चौपई ॥ चतुरथ्यसरमैभीतसबदकरि ॥ परयो चमूसभ
हनिहारीधरी ॥ अरजनसैनभईसबघाता ॥ गजतुरंगरथ्यसुरपदाता ॥ उडाद
तावषकेतप्रथमसर ॥ भ्रमधरिपरयोमूर्छितति हमवसर ॥ देषीचमूबभ्रबाह
नमन ॥ इनहमरीसमसेनहनीरन ॥ चारबानबरतुएनिकारे ॥ तामृधुजनपा
को कसिमारे ॥ ३८ ॥ दोहरा ॥ रथ्यफोरयो स्वा रथ्थि हन्यो है हनिधरनिगिराइ ॥ ब
जुरमगाउो अवररथ्यु कापयो तामृधजराइ ॥ ४० ॥ चौपई ॥ तामृधुजमकुडरथ्य
भडो ॥ क्रोधतिवजुरधनुबकरलडो ॥ ऐकवानधरधनुषचलायो ॥ अरजन
सुतको गगनुउडाउो ॥ ऐकु तापुनमारकुरनसुत ॥ परयोपतालभयमत, रथ्य
सेजुत ॥ तीनयोधपुनिउठ क्रोधमन ॥ चौवनासमानुपाल मेघवरन ॥ काल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रूपती मोचलगऐ ॥ ताम्रध्वजके सनमुख भऐ ॥ बरषा ऐसर अग्निवके राला ॥ पा
वक उठति भयो अति काला ॥४१॥ दोहरा ॥ बानन सों दह दिसि करे अगनि उठि अति भ
य कारि ॥ पुनि ताम्रध्वज क्रोध कर लीऊ धनष कर धारि ॥४२॥ चौपई ॥ सैला बा
न बरषावति भयो ॥ पावक दाह संति कर लऊ ॥ बज्र रो सांति कर उठ्यो ऐसाई ॥ ता
म्रध्वज पावक बान चलाई ॥ मंत्री का रथ भंजन कीनो ॥ मंत्री क्रोध्यो धनुष कर लीनो ॥
सर छूल सांति कर नभ पट दीनो ॥ तीन बान सो घायल मन कीनो ॥ पछ्यो धुरंन पर भ
मृति अकासा ॥ सैना भिर षब बढ्यो जीय त्रासा ॥ अरजन बचन कहे सैना प्रति
दलै लेभ उ नील ध्वज प्राप्त ॥४३॥ दोहरा ॥ युद्ध करन लागे बज्र पै बरषत बा
न अनेक ॥ ताम्रध्वज जीप क्रोध की यो अति ॥ तीन बान मारे सैना प्रति काटी व
रु अरजन की सैना ॥ सो गति कही परति न हि बैना ॥ भागे जाहि योध तजि रन को ॥
अगन बिछ्रति लागे सभ तन को ॥ मुकट गिरे काटे भुज हाथा ॥ ऐको पग धिर बयग
न ही साथा ॥ कै न हू की अंगुरी गिरी तब ॥ लेगे घाउ हीये घूमत सब ॥ रनमहि
मस्तक गिरे अपारा ॥ हिगे पाप कअंतु न पारा ॥४५॥ दोहरा ॥ तीन कोट हनी
हतु भई महा सूर रनयोध ॥ ताम्रध्वज अरजन हू है है नेकट रतन हीं क्रोध
॥४६॥ चौपई ॥ भीन जनं दूपियाल पठ्यो बभ्रुवाहन नगन ॥ दक्षिन देश अनुशा
ल वीच भ मवत हैं प्रद्युमन नेम ॥४७॥ दोहरा ॥ अरजन की सैना मारी सब

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रुधिर नदी रन बीच बहति तब ॥ घूमर घेर बीच बसि राए से ॥ केस ससिवार
विराजति तैसे ॥ गज कबंध है सी सरस पारा ॥ बहे जात रथ अंग तुन पारा ॥
दुरद कुंभ पुन सी सपदांत ॥ बहे जात जुभाए रन घाता ॥ बहे जात रथ पत्र अरु तुप
रा ॥ बहि रुधिर महि लागत कैसे ॥ नौका चलत तनी दो मधि तैसे ॥ बहे जात तर
कस तलावाई ॥ सीस गजिन मछ छबि बराई ॥ ५८ ॥ दो ॥ तुम लघु पुरुष रूप रन आ
भयो भ छोरा कहु न जाई ॥ अरजन कों नप ताम्रध्वज बचन कहे प्रगटाई ॥
५९ ॥ चौपई ॥ कहे ताम्रध्वज सुन बच पारथ ॥ तुम तौ भयो अस्व रथ सार
थ ॥ नाश भई तुमरी सभ सैना ॥ बही जात अब तौ को नैना ॥ बिद्यमान दोउ सेन
मराबै ॥ जग महि छत्री धर्म लजावै ॥ छत्री होइ पुरुष तेटरई ॥ नि श्रेय घोर नरक
मै परई ॥ अरजन नृपति हए वचन बिखानत ॥ मुसक्याइ तब हासी करत जो नीति
तुमरा वचन प्रमान निमि थ्याषिन ॥ ताम्रध्वज देख्यो अब आषिन ॥ ६० ॥ दो
हरा ॥ तुमरी सेना हतु करी ताम्रध्वज संग्राम ॥ उठ अरजन अब पुरुष करु
उचित नहि विश्राम ॥ ६१ ॥ चौपई ॥ ताम्रध्वज को मंत्री पूछत ॥ पराक्रम तारण
भूप मम तक जब ॥ नष सौ संग्राम तसी च जी पपाडो ॥ सावधान करि बेग उठा
पौ ॥ उद्यम करत धनंजे जौ लौ ॥ प्राप्त तिप पौ ताम्रध्वज तौ लौ ॥ प्राबप्ति ही ह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सिवानुचलायो ॥ रथ्यसमेतपाररथ्यहिउठायो ॥ नुभमभ्रमाइपुनिपछ्योधरनिपए
रथ्यटूटातबउतरिपरेहरि ॥ नपदेख्योरथ्यउतरेगिरधर ॥ पुनमारेयोपाररथ्यकेदू
कूसर ॥ ५२ ॥ दोहरा ॥ अरुनउठ्योअकाशकोजाइपरयोजमलोग ॥ दछनदिशाव
लोकई ॥ शिवहेतबन्योसंयोग ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ अरजनफिरषअनंदितभउो ॥ धिच
करजोरनिकटशिवगयो ॥ पाररथ्ययुधबतातुसुनाऊ ॥ करीदीनताशंभुएकयो
अरजनमांगेशस्त्ररुद्रपति ॥ हेप्रसंनदीनेशिवहरषति ॥ आयुधदिशिवदीनेसमे
तरथ्य ॥ सिद्धफालगुनभयोमनोरथ्य ॥ अरजनाशिवपहिंयहवतातुरनि ॥ करत
नाकीनीबऊरिस्पामघनि ॥ ५४ ॥ दोहरा ॥ अरजनसुतअौरकर्नसुतबऊरिउठा
ऐनाथ्य ॥ इनदूहुअनजीपकोधकरिधनुषउठाऐहाथ्य ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ तामृधुज
केसनमुषआऊे ॥ दोऊजोधजीयमाहिरिसाऊे ॥ प्रथ्यमेअरजनसुतसरमेल्या
भगेननरपतिरथ्यहिधठारयो ॥ तामृधुजरथ्यअवरमेगायो ॥ हेअरुठसन
मुषफिरआयो ॥ बऊरिबभ्रवाहनमारयोसर ॥ रथ्यफोरयोहयहनिठारेधरी
हाटकुरथ्यमेंगाइतामृधुज ॥ पुनसनमुषचलिगयोमहाभुज ॥ बऊरिबभ्रवा
हनुहकसरसौभेजनकी ॥ एकनकरथ्यबरको ॥ ५६ ॥ दोहरा ॥ रथ्यटूटातबन
पतिकोग्रहतेअवरमगाइ ॥ चोटचोटमोकाटीयेरथ्यतामृधजराइ ॥ ५७ ॥ चौ
कोपकरनसुतबानचलावत ॥ सैनाकेअरिदुषदिषरावति ॥ पुनितामृधज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अति क्रोध्यो मन ॥ ऐक बान छाडयौ तीक्षन गगन ॥ कटन प्रत को गगन उठाओ ॥ मूर्छि
त होइ धरनी पर आयो ॥ वसु निवारली जीये जैसे ॥ भयो हीन बल करि ॥ जतै
से ॥ मूर्छित होइ गीरयौ धरनी पर ॥ भओ मृतक वत अति स्वर ॥ बऊरि ताम्रध
ज हृदै सायो ॥ और बभ्रुवाहन चलि आयो ॥ ५८ ॥ दोहरा ॥ अरजुन सुत को ताम्र
धज मारे बान अनेक ॥ सकै न हौ मूर्छा इतः बानन लागे ऐक ॥ ५९ ॥ चौपई ॥ ब
ऊरि बभ्रुवाहन क्रोधित मन ॥ मारयौ है कै सीस सर तीक्षन ॥ टूक टूक नृप को रथ
कीनो ॥ अश्व सारथी को दुख दीनो ॥ ताम्रध्वज रथ अस्व रच डौरौ तब ॥ है अरूढ ह्वै स
न्मुख आयो जब ॥ बऊरि बभ्रुवाहन सर मारो ॥ रथ तुरंग सारथी विडारो ॥ तोड
यौ रथ ताम्रध्वज त्यागै ॥ सो अरजुन सुत पै रिसि टावै ॥ ताम्रध्वज मन माहि विचा
रा ॥ इन हम रे रथ काटे अपारा ॥ ६० ॥ दोहरा ॥ हम रे रथ काटे बऊर तैसे नक री अरु
नास ॥ परयो करटक मद्धि गदा गहि करी अति सैन विनास ॥ ६१ ॥ चौपई ॥ लेकर गदा
ताम्रध्वज क्रोधे ॥ नहि चम अरजुन के पाछे ॥ हसी असु रथ अस्व पदाता ॥ सैना
सकल करी रन घाता ॥ बन महि घास सु काटी जहि जैसे ॥ पार रथ चमू भई गति तैसे
लागैन चोट बभ्रुवाहन को ॥ नृप पायो करि कोट जतन को ॥ अरजुन सुत के उ
वान चिलावै ॥ ताम्रध्वज तन छु हनन पावै ॥ रथ टूटै तन घाउ न लागै ॥ लरत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दोऊ रन क्रोध न त्यागै ॥ ६२ ॥ दोहरा ॥ कृष्ण विलोकै रन विषै सैना हनी अपार ॥ पा
वक छौ हनी हतु भई गनती करी विचार ॥ ६३ ॥ चौपई ॥ रन मह रुधिर समुद्र समा
ना ॥ हृदै विचार कीयो भगवाना ॥ आज्ञा करी काल का कों तब ॥ कृष्ण तै पान वेग ग्रा
सी तब ॥ आज्ञा मान काल का हरषत ॥ रुधिर पान कीनो समुद्र वत ॥ वगम वंध
लै चुह तस्र काप्ता ॥ छाइ रहे न भक रघिला सा ॥ निरषत अनुधज न पर्क्रो धाप
न ॥ वै सर काटि अरी धनु वग्गन ॥ अरजन सुत कौ मोर चलाठो ॥ रघ उल
टाइ धरनि मह र छाउो ॥ ६४ ॥ सूर ल रावति पर स पर ई छाकर गुपाल
ठा हाकै तक दे वरै टतिक न भ भ नंद लाल ॥ अरजन तौ शिव वान पुन रन
मह प्राप तिभ ओ ॥ अस्व मेध कों ध्याइ पंचाली समा य हत भै या ॥ ६६ ॥
जैमिन कहै सुन उभै पाला
६७ ॥ ७५ ॥ समस्त शिव माया ध हमा पा पार थरन गर दुयो तवै मेघ
भगतक पार सम हाथि शाला ॥ शिव सावचन विषा ना ॥ पु करे रूप पर दीप वलेवाना ॥ तै हम
जिम अरजन ॥ ता मधुज पर तिवचन विषा ना ॥ कर
पारथ ला मुक ह लेवो ॥ तुम री सै ना गग न उडावो ॥ तुम हि व भूवाहन मह र छाओ ॥ कर
न पत कोदु बदे घरा यो ॥ सकल भाम हतै तुम कीने ॥ सूर कहा वतिपध पर ख वीने
६

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

८१
३२६
अश्वमेध
पृ ३२६

न५

॥४॥ ॥दोहरा॥ उठ्यो ताम्रधुज राज अब पथ कर उत्तम साथ ॥ वैरु लेउंगा सेन का
मै लेलगा तो हाथ ॥२॥ ॥चौपई॥ ताम्रधुज पुन वचन उचारे ॥ शिव तुम दीये वान भैकारे
रे ॥ तो ताम्रधुज नृपति कहा वो ॥ शिव वर तुम रे भंग कराओ ॥ अब मै पारथ वान चला
ऊं ॥ रतन जडत रथ कुरु को रथ गिरा यो ॥ हन्यो सारथी वजर तुरंगा ॥ पुन सर लगो चमक के
अंगा ॥ ताम्रधुज के सर रुधि तन मह रुधि तकी नैन रन मैं तितने ॥ एक वांसों सकल संघारे
रे ॥ ॥दोहरा॥ अरजन सर खंडन नभ तह हन्यो ताम्रधुज वान ॥ क्रोधवंत है गर ज्यो सरन
सिंघ रीत बलवान ॥४॥ ॥चौपई॥ पारथ के सर खंडन कीने ॥ दिन मणि द्रक सो तक दीनी
ने ॥ तब अरजन सर अब चलाऊं ॥ रथ फेर डो स्वारथी गीराऊं ॥ पर सुन नभ ऊ ताम्र
ध केतन ॥ नृप रथ अब वर मैं गायो ता दिन ॥ ताम्रधुज रथ सकल मंगायो ॥ सभ र
नभ [illegible] ठहरायो ॥ प पक पक पारथ रथ तोरे ॥ रतन बधित सहस्र इक
फोरे ॥ पुन ताम्रध्वज नृप कोप्यो मन ॥ अरजन को सर मार्यो ताहि छिन ॥५॥ ॥दोहरा॥
सर लाग्यो पारथ हृदे तत छिन उठ्यो अकाश ॥ चक्र पवन लगि नभ उठ्यो जैसे
उडत कपास ॥६॥ ॥चौपई॥ ऊपर ते गिर्यो भूमा इधर ॥ मूर्छित भयो धनंजै रन धरि
कहै ताम्रधुज वचन भरामा ॥ ऐसे सहरे याग संग्रामा ॥ दुरी मूर्छा एक मुहूरत न
वक्र उठ्यो अरजन नरेस पवित ॥ वृष्टि वर सवर पधम भयौ जब एक बान मार्यो पा
रथ तब ॥ नृप को रथ खंडन तब कीनो ॥ पुनि अरजन शिव को सर लीनो ॥ ताम्रधुज
की ओर चलाओ ॥ रथ हय हने स्वारथी गिराऊ ॥७॥ ॥दोहरा॥ कनक कीरीट कुंडल

८२॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रो ५

कब चबो लासंधो हधिडारा ॥ भटौधिधाइन ताम्रधुज की धोधनुषटंकार ८ ॥
चौपई ॥ रक्तनेत्र ताम्रधुज भऊो ॥ आरजन के सनमुष चलि गऊो ॥ क्रोधत सर मारयौ
धिकराला ॥ पारथ पउछ्यो गगत तकाला ॥ नभ मे माइडा स्यो वन माही ॥ उतर परे स्य
कृष्ण तहा ही ॥ वजर वान ताम्रधज मारयो ॥ रथ ते उरयो कृष्ण निहारयो ॥ [illegible]
[illegible] परयो ताइ इक मास स पंथ पर ॥ मूर्छित होइ गिरयो धरनी पर ॥ हरि देषी
[illegible] ना ॥ सभ मूर्छित अव लोकी नैना ॥ ८ ॥ पांडव रहे ध्यान स्त्र के
[illegible] ॥ पदुप
युधकरैन पसाथ ॥ पांडव प्रीत पढान नके उठे आय पय दुनाथ १० ॥
डवन को पडुनाथा ॥ जै जै त आपु नेभ गतन साथा ॥ मदन नाम गिरधर रुकमिमा र
प्रगट भई मोहनी अपारे ॥ महा सरुप सुंदर क्रांति वर ॥ शिव सैनि रषन सके धीर ध
रि ॥ ताम्रधज के सनमुष गई ॥ हाव भाव दिष रावति भई ॥ निरषि ताम्रध्वज नप्रभु सका
ना ॥ श्री गिरधर प्रति वचन बषाना ॥ तुम तौ योगन मारन इह सर ॥ कामवान मोहनी
प्रगट करि ११ ॥ दोहरा ॥ देव करम नही होति यह छल ॥ जौ ता संग्राम ॥ इह विधजीते
लोग वह कपट तुमारे काम १२ ॥ चौपई ॥ यह सर तिन को [illegible] चलावन ॥ जोन रपर
तीइ प्रीति वढावन ॥ काम वान तिन उचति प्रहारन ॥ जा ही पै तेहरि ध्यान बिसारन ॥ जो
यह छल करि तुम लीनो छल ॥ ने वह लोग आवर जानो बलि ॥ वचन सुनि ताम्रधुज धन
षली यो करि ॥ त्रीया पद समा स्यो ब्रह्म ज्ञान सर ॥ त्रीय सगोग सेना सजि माई ॥ ब्रह्म ज्ञा
न सर सकल उडाई ॥ डारी जाइ स्वर्ग के द्वार पर ॥ जैत कऊ ती इन्द्र की आप सर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥१३॥ कामवान केतो रकपरतीय दहद्दि शपठदेइ फुनता म्रधजतोरक रह
रपदि हि छाडी जाइ १४ म्हरो दुरीधवतंतु पम्राठे रनमहि म्राइदरसहि
पाठे म्रर जनम्र रुता म्रधज कोधे सनम्र षमएदा ऊपुनयोधे प्रघमचने जैवा
नचलाप्या कृष्ण तेजुताके मधिपयो वाच म्रापमो सतु ठहराये तहसरसौम्हप
तम्हरखाऊ भगत म्रापनाम्ह छीतकीनो धर्मजहितकारजकरिलीनो ताम्रधज
म्रतिवलवाना कोजीते तिहि विनु भगवाना १५ रोमनासनहीकरसकै
कोट स्हर वलवान इछासामर्थितकी पाप्रेमवान भगवान १६ दूवन
जाइ मोरधजके द्वारे ताम्रधज रनम हिम्हर छाया सुनतमोरधज क्रोधमयेमन
जनम्ह हनवातिसर्द हिदेषारन दूतकहतसुनहो राजाना तुमसुत हन्या कृष्णके
वाना सुनिकेको प्यो मोरधज राजा ततछिन चढो वजतव फुबाजा हृदयपरस्यो ह
रकीनप म्रावत कृष्ण दिजैको कहि सम्रमजावत देषे फुमार जनन्टपति मोरधुजि
नि हकामी स्हराम्र जानभुज १७ ततविचारी भगतम्र ऊसे वामहि हि सव
धीन नेसेवासरमनमु ऊदिषे हृदे दडावति जान १८ न्टपति मोरधु
जकोइक अवसर वइतनभचौवपादारुनवर तिं ह्मावसर गागरभरिल्या
वति टहलकरत जीयहित उपजावति इकद्दत मं त्रीकहोन्टपतपति जतपुं र
तिविषाव ठतिदारु रन म्राति म्रीपति कोकहरोग भिरहिवकु सेवाकरत कछ
नहीपावकु हसिवाल्यौ तव न्टपति मोरधुज जाइ कहा म्रीकृष्ण चतुरभुज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

यह दुष सुष हरि पर अधिक प्रमाना ॥ ईश्वर सो दीनो भगवाना ॥ १९ ॥ दोहरा ॥
नहि मांगो यहि कृष्ण तें देह न भीत कल्यान ॥ सुष दुष प्रापति समै सो जोइ कृष्ण भग
वान ॥ २० ॥ चौपई ॥ दुष सुष समै पाइ कै आवै ॥ उपजै विनसै भोग भुगावै ॥ हो
नहार मेटतिन ही कोई ॥ जो हरि रची सोई विधि होई ॥ ताते दुष सुष सम करि जानै ॥
पूरव जन्म की ये फल मानै ॥ कोटि जतन करि ति मिटति न कैसे ॥ जो हरि रची होइ पु
नि तैसे ॥ यह वच मंत्री सो नृप भाषै ॥ नहि कामी जीय पदु धन राषै ॥ कृष्ण नृपति की
उस्तुति कीनी ॥ आर जनन सकल श्रवन सुन लीनी ॥ २१ ॥ दोहरा ॥ चहुं ओर नृप मो
रध्वज दहदिस सपर हरि कीन ॥ इह कृष्ण उद्यम की यो सेना रची प्रवीन ॥ २२ ॥
कृष्ण वीनू का ठेन रस हरे ॥ युद्धवीन वचन प्रन पूरे ॥ पष मै हरि प्रदुमन उठायो ॥ दुलै
पसर स्मान रुधज गाउ ॥ पुन हु उठायो नृपति हंसध्वज ॥ वरुण रव भ्रवाहन विशाल
भज ॥ करन नृप तदान वस्मानु शाला ॥ मेघवरन पौवु नासभ पाला ॥ नृपति नील
धज पावक क्रोधे ॥ ठाडे की घमुब्ब यह योधे ॥ प्रापति भयो मोरधुज तहां ॥ मोर
रधरि ठाडे हनि जहां ॥ २३ ॥ दोहरा ॥ आपुने मंत्री सों कहि नृपति मोरध्वज वाता ॥
कैसे वान चलाइ हो सन मष षत्र भवन ताता ॥ २४ ॥ चौपई ॥ मुज मन मद्दि तयहि
वात विचारी ॥ प्रथमहि लागो चरन मुरारी ॥ मंत्री कहि सुनहु महाराजा ॥ क
जीधरम रहत नहीं लाजा ॥ महिहित भई सकल तुम सैना ॥ ताम्रध्वज अबलीक
ऊनैना ॥ तजहु न आपुने कुल की रीता ॥ करहु न छत्री बुधि विपरीता ॥ यह जोठा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

८४
१२८
अश्वमेध

हे हरि रन पाधे ॥ करम हि धनुष पछारि तक्रोधे ॥ ते सभ तुम को कर है धिकारा ॥ क
हि बुध है नृप बलु हारा २५ ॥दोहरा॥ मंत्री के बचन सुन धनख बलो योकर
राइ ॥ प्रथम हि देषो पुत्र रन मूर्छित भयो तब घाइ २६ ॥चौपई॥ अपुना की
या ताको सुरत पायो ॥ अर्जुन अभि सनमुष शस्त्र चलायो ॥ उचत न हरि प्रति बानच
लावन ॥ सनमुष चलो भूप सुबचावन ॥ हरि को निरषि आनंदित भयो ॥ सागो
धनख हथ पंठ हरजो ॥ रन ठाठो नृप जोधनि हारे ॥ परे तक्रोध सर रवल भारे ॥ की
यो विचार मो रधु तन प मन ॥ अब हौ प्रापति भयो आइ रन ॥ नव योधा प्रति बानच
लाओ ॥ तौ नहि छत्री धर्म लजावो २७ ॥दोहरा॥ यह तजो ठाडे योधन तब ही एक युध की
आस ॥ युद्ध करै गा मो रधु जो जि है सु तभ यादि नास २८ ॥चौपई॥ तो मुष्टि कर ते ध
नुष निवारा ॥ तौ यह सभ मुख कर है धिकारा ॥ ता ते इनको बान चलावो ॥ छत्री ध
र्म सु जस जग पावो ॥ धनुष टंकार मो रधु ज क्रोधा ॥ सर मारो सनमुख नव योधा
धा ॥ नव सर रेन बबंड पठाए ॥ पुनि हय ये पायक सर घाए ॥ क्रोधित की उ चाप
टंकारा ॥ धरन भसुन्यो सब ब्रह्मंड कारा ॥ कांप्यो तीन लोक ईद्रासन ॥ कनबी ओ टं
कार सुरासन २९ ॥दोहरा॥ चढ्यो हाइ को अस्व रग पर ईद्र डरयो मन माहि
पाव बिरंच डर पति भए चढ्यो को अ हम पाहि ३० ॥चौपई॥ क्रुध्यो पुनि लेकाल दिन
भओ ॥ दहदिश अंधकार है गओ ॥ चारो दिश अंकुश भिन हाथ्यो ॥ कर बरच क्रास
दरशन धाथ्यो ॥ हो तभ यो दहदिश पाउ अंधारा ॥ धरन नभ का पाभ हो अंधआरा

पाछे र होन को ऊसरर रन ॥ फिर ष्योठाढे ऐक स्याम घन ॥ उचति नहीं हरि
सो संग्रामा ॥ लागो पग अब करो प्रणामा ॥ धनष त्याग जेव री डार गए ॥ पस्यो
मोरधुज कृष्ण चरन पर ॥ ३१ ॥ दोहरा ॥ हे प्रसन्न नंदलाल लनलीनो कंठलगा
इ ॥ नव पोधान वषड ते अजी पति लीये बुलाई ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ सुधा दृष्टि हरि रन पर
कीनी ॥ सभ सैना उठ आई पुनलीनी ॥ नृपति मोरधुज हरि पग लागा ॥ प्रेम पुल
क तन मन अनुरागा ॥ बाजित भए निशान अपारा ॥ वर्षत पुहुप अमर जैकारा
विनती करी मोरधुज हरि षति ॥ नगर प्रवेस करहु त्रिभुवन पति ॥ पुर को चले मध्
तय हुनाष्या ॥ कीये नगर के लोक सनाथ्या ॥ दरसपरस कर तार घम भये ॥ कोटा
जनम के अघ मिटि गए ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ तिह पुर की जुवती सकल पति व्रति मद सव ध
न ॥ आरता कारी दासव तिट हलुक रति रुचिमान ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ चरन धोइ चर नोदक
लेवै ॥ प्रभु प्रदत हृदै कंत निज सेवै ॥ ऐसी जुवती जुरी अपारा ॥ कृष्ण चरन लागी सभ द्
रा ॥ महा प्रसन्न भए नंदलाला ॥ देषी पतिव्रति सभ पुर वाला ॥ प्रीत सहित ताजाम रारा
ना ॥ फिर षम दति भए सारंगपानी ॥ नृपति मोरधज सहित कुटंब पुन ॥ लागे चरन जुग प
नी ॥ फिर षम दति भए सारगपानी ॥ नपति मोरधज सहित कुटंब पुन ॥ लागे चरन ... ३५ ॥
लक प्रति गुन ॥ फिर धरपति वचन उचारे ॥ सकल मनोरथ भए हमारे ॥ ३५ ॥
... र नह मरे पुन्य षोदर सुन भयो गुपाल ॥ भयो कृतारथ नगर सभ दरस पर
हरा ॥ परन हमरे पुन्य ... चरनन को शिव सनकादिक ॥ नेशाद्र नवांछत हैं ब्रह
सनंदलाल ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ जिह चरनन को शिव सनकादिक ॥ ...
दिक ॥ ईंद्रादिक सुर मन मन धिआवति ॥ तीन लोक जा जति न हीं पावति ॥ सापद हम को

अब

आपति भओ ॥ सुपउपजे किलविष मिट गाऐ ॥ यह हरिजन हमरे कामा ॥ जानऊ तिसे
हरु भगवाना ॥ हमको दीजै भगति चरन नहिति ॥ यह करुना कीजै त्रिभुवन पति ॥ कृष्णा
पति को कंठ लगाओ ॥ पुन मुष ते यह वचन सुनायो ॥ ३७ ॥ दोहरा ॥ कृष्ण कहे या सु
न मोरधुज राज तुम हिं भूपाल ॥ मुझ दीनो अब चनी भगति तुम पाऐ सदा कृपाल
३८ ॥ चौपई ॥ तुम हम सरो शेवक निह कामी ॥ बहु प्रसंन भऐ अंतरजामी ॥ नृप
ते मोरधुज भेटा दीनी ॥ विद्यमान हरि के सभ कीनी ॥ ऐक अश्व पतुरगज सबे तमाहाव
र ॥ मुकताजाल तरक कनक घर गार ॥ रथ दश अश्व युत कनक भार दीचे ॥ पंच अश्व यु
त रत तन नमर दीचे ॥ सात अश्व युत रथ दीऐ वसन भरी ॥ तन मन धन नृप धन्य पद
यो हरि ॥ प्रथिपा भुकति रानी पति साथ्या ॥ हरि बतिसा उपिआर तीहाथ्या ॥ ३९ ॥ दोहरा
॥ सरबसु ले पाइन परे नारी सहित भूआल ॥ उसतुति कीनी दीन है भऐ प्रसंन
गोपाल ॥ ४० ॥ चौपई ॥ हरि अरजन की प्रीत विसारी ॥ भऐ मोरधुज वसि गिरधारी ॥
पारथ जी पउपद उयो अभिमाना ॥ भेट लोभ हरि हमसे बिसराना ॥ कहा भयो नृप दी
नी बहुत धन ॥ ताते मान दे तन नृप मगवन ॥ प्रान दे ते तरक पर उपकारा ॥ इन तो
दीनो ल घन अपारा ॥ तुछ लघ प्रानन समसा ही ॥ अरजन के संसा मन माही ॥
पारथ के मन की विध जानी ॥ अंतरजामी सारंगपानी ॥ ४१ ॥ दोहरा ॥ संसे अ
रजन मै घरयो मिटनहि तन नंदलाल ॥ राज सभा मह प्रगटियो ब्राह्मन भेस गु
पाल ॥ ४२ ॥ सोरठा ॥ नृप उठि लीगो पाइ ॥ ब्राह्मन आवत देष कै ॥ छत्र चा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ली सम्भोध्यो पत्र अश्वमेध के यज्ञ को ४३

४६

जैमिनि उक्त है सुन जन्मेजय पतिवर ब्राह्मण भस्मधारि आयो हरि
राज सभा अरु पांडव सेना ॥ बैठे सकल उचारत बैना ॥ राज हंस सभा बीच नंदलाला
ब्राह्मण एक चलि आयो तिहिकाला ॥ दुर्बल देह जन्मेजय तब देख्यो जब ॥ नृप और स्वागत पद
धोतव ॥ सम्मान करि कृपा कर मुझको ॥ देउ दान मनवांछित तुझको ॥ अरु यज्ञ पना
कहे विप्र राजा सुन दुख ताप
पूरन कीजे ॥ जो चाहे सो हम ते लीजे ॥ १ ॥ पुन कंन्या के कु
दस्य ति मोहि ॥ पितवे तीस हकंन कादे बति हसा होहि ॥ २ ॥ तन को कुछ
ए देह पठि ॥ अंगीकार नि करै कोउ कनर कंन्या के कोदी वर आवहि ॥ पुत्री
दे बांकि रजावहि ॥ पुनि निगम नयह बात विताई ॥ विष्णु गरुड लियावे जाई ॥ दुख
कुछ जाइ तन तव ही ॥ विष्णु हरि बगआन ऊ जब ही ॥ विष्णु गरुड दूर है सोई ॥ यह
बिना न ही प्रापति होई ॥ पुनि मुझ ह्रदे यज्ञ की आसा ॥ कहे हो मख जीय में पहर
प्यासा ॥ ३ ॥ कंन्या वर के अर्थ पुन आवर यज्ञ जे कार ॥ दान दीजीये नृपति
मुझ कनक इकादश भार ॥ ४ ॥ इह विधि भिटै कंन्यका को दुख ॥ यज्ञ रस्यो
हो है पूरन सुख ॥ यह उपकार हि नाम तुमारा ॥ नृप यह हत्का रज करऊ हमारा ॥ सुनि
कै नृपति आनंदित भयो ॥ कर रह्स्यो न दान जदयो ॥ दीयो इकादश भार कनिक
भयो ॥ नृपते न्यायो द्विज हरख तघरि ॥ अर जन को संसै भ्रेट दीजै ॥ रचि प्रतंस्या हरि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कीनौ कृति ॥ शुभ वेला ब्राह्मण दे बोले जब ॥ यज्ञ कंकण कर बांध्यौ तब ॥ ५ ॥ दो॰
यज्ञ आरंभ्यौ विप्र तब सुत के कहे बुलाइ ॥ यज्ञ समग्री का जु हित इहु ध
न लै ले जाइ ॥ ६ ॥ चौपई ॥ विष्णगरुड वेग है त्याव जू ॥ जहा होइ तहा शीघ्र सिधा
वजू ॥ चल्यौ विप्र सुत पिता चरण लगि ॥ जहा गरुड चल गया तहा मग ॥ यज्ञ चौर
तहा समग्री लीनी ॥ कारज की पौ लइ बज दीनी ॥ विष्णगरुड आबर मष सा जा
त दान वसु चल्यौ कारकाजा ॥ चल्यौ नगर की ओर मुदित मन ॥ मग में तित आ
वत भयौ सिंघ वन ॥ ब्राह्मण सुत को सिंघ निहारयौ ॥ दुधातुर आनंद जु पि
धारयौ ॥ ७ ॥ सिंघ गह्यौ द्विज तात को मन में हितकी यौ न त्रास ॥ वजत
दिवस की भूष मृग हति तु उतन भुगतस माउ ॥ ८ ॥ बालक कहै सुन जंतु
मपष्यु पति आजु तुम्हारे भाग भये आवित ॥ बजत दिवस के तुम दुधा रथ हि
मरात न आवै तुम स्वारथ ॥ बजर वेनती एक कहतु तु ॥ बचन सुन जन
हौ आब मार जु मुझ ॥ अब हम दातन करजन घाती ॥ पुष मे सुन जु हम री
वाती ॥ दीहु स्या प्राति कतु जलागे ॥ सत्य कहत हौ तुम रे आगे ॥ पित कन्या
के कुटुम्ब ऊात वे ॥ व्याहत त नहीकौ आव ब्रह्म न तिन ॥ ९ ॥ ताकी ओब
ध के निमित्त पिता पठायो हे मोहि ॥ ओबध आन्या जत न सौं सा चु कहत
हौ तोहि ॥ १० ॥ पं ॥ जौ आब मार जु गे पुन मुझ को ॥ कन्या हत्या लागे तु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

उको ॥ वऊरो सुनऊ हमरी बाता ॥ धरमहीन न होहि हमरे ताता ॥ यज्ञके काज
बाधपो हाथा ॥ यज्ञ समग्री हमरे साथा ॥ जौ तुम करो माहि तन घाती ॥ ति
तफल यज्ञ ना होत कुसलाता ॥ यह पातक तुऊको सभला है ॥ कहो जथा
रथ तुमरे आगे ॥ जौ तुम आज्ञा करऊ कृपा कर ॥ फिर आवौ दे वस्तु दोऊ घ
र ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ सकल समग्री यज्ञकी विण गरुड समेत ॥ देआवो पुन तोहि
पै हिंचि नन हीव सो निनकेत ॥ १२ ॥ चौपई ॥ सत्य वचन जो यह तुम्हारा ॥ आ
वौ वेग न लावो वारा ॥ मन वच क्रम प्रतीति मुहि की जे ॥ हरषत होइ वदा मुहि दि
जे ॥ सिंघु कहै मऊ एह देवीचारा ॥ सत्य वचन है बालन तुमारा ॥ हम तो भया महा
कुधपार रथा ॥ कीया चाहि हो तुम अपुनो स्वारथा ॥ कैते हम तुमरी वाट निहारे
तु धाआपी तुम हि सिंघारे ॥ अह चलि आओ भवन त्यागो ॥ बालिक तुमरे कहै न
लागे ॥ १३ ॥ दोहरा ॥ जौ हम अब तुऊको तजो सिंघ करहि उपहास ॥ आओ भव
न छाडी यैकी तै वेग विनास ॥ १४ ॥ चौपई ॥ अब तुम तजो करो पुनि आसा ॥ तुम
नही आव ऊर होनि रासा ॥ ताते तुमको अब हि सिंघारों ॥ मन महि अब वरन मंत्र बी
चारो ॥ दीन होइ द्विज वचन उचारे ॥ जो यह काजु न ऊनो हमारे ॥ पिता कलपना
ते डर पावों ॥ यज्ञसमग्री लेप ऊचावों ॥ जो यह वस्तु न पहुचै ताको ॥ होतै यज्ञ
विनास पिताको ॥ जाइ आवाहन मंत्र निरासा ॥ का हूकी पुरवै नही आसा ॥ १५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पहाकके का ताप्रिता करबो ध्यो है मषश्रास ॥ तौ हम इतना कहत है पञ्चनहि
रुपिनास ७६ ॥ तुमको दो षुन लागे कोई ॥ पिता यश कन्या कहि तिहि
पाके कर हो तो षतुमारा ॥ साचु जानीयै वचनु हमारा ॥ तौ हम तुम पढि फि
र नहीं आवा ॥ सप्त करति ताप हम गति पावौ ॥ इतनी वस्तु क रहि तुते पापा ॥ नेला
गहि अघ मोहि संतापा ॥ भगतन निंदक गुरु निंदक पुन ॥ पर दारा रत सिंघ श्रव
न सुन ॥ कन्या वचद्रव्य तो लै नैवेदन मानै विष्यन सेवै ७७ ॥ ती यरजस्व
ला हाथ्य ते जो जल भोजन लेहि ॥ रत वंती कन्या भवन ताको पति नही देहि ७८ ॥
जो नर जु ऐ रत अज्ञानी ॥ वेदन पढत हि अरु मद पानी ॥ जो सुचि ताको मानन
रावहि ॥ जो ब्राह्मण दोबी कर भावहि ॥ भवन मत ऐक सम जाने हि ॥ वसहि कुवा
त्रा सुन हि मानहि ॥ त्यागहि सुकरहि श्री गोकुल ॥ बहुरि दुषावहि साध सेत चित ॥ प
ति अघ लागहि मोहि बालक कहि ॥ जो नहि आवो सिंघ तो फिर पहि ॥ पुनि घर हम गये सिजम
मह हम पावौ ॥ जो न सिंघ तुम पहि फिर आवौ ७९ ॥ व नौस्या रहि तगण हत
नसु संध्या सिमरन हीन ॥ सदा कमला मक्षि करहु जतु जमान कथा रहीन ८० ॥
बहुरि चोधरी को वपु धारों ॥ पाप पुन्य नहि हु यै विचारों ॥ धन लै पाप करे धर
न वाला ॥ निरधन दो बध रै अज्ञाना ॥ पुनि मट धरी को वपु पावौं ॥ तजि गह ह
स्य वैराग करावौं ॥ माया हित तजि जन्म गवावौ ॥ सो इगृह हस्थ वैराग न पावौ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जोओ ब्राह्मण दोष लगावै ॥ वैरभाव सभ सों उपजावै ॥ २१ ॥ जौ फिर
[illegible] जैनी सभ पाउं ॥ सत्य वचन मन उ सिंघ सुन दे उ विदाघ
श्राउ न तेहि पहि पहि [illegible] ब्राह्मण सुत की सप्त सुनी सत्य ॥ की याधि चा सिंघ मन नम
रि जाउ ॥ २२ ॥ [illegible]
हितव ॥ करै न वचन लोप मह बालक ॥ आज्ञा दई सिंघ ततकालक ॥ वडु पवित्र
हत्तसु तव वचन उचारे ॥ सुन उ सिंघ बलि जाउ तुमारे ॥ कहे जो अवर मास ले
आवों ॥ निज तन ते दग नाप छु चावों ॥ कहै सिंघ सुन ह्देज सुत बारे ॥ अवर मा
सु नहीं काम मारे ॥ तुमरे तन को करो अहारा ॥ वडु ईक हत तहो एक विचारा ॥
अरु जो राजा मोरध्वज नगर तुमारे जोई ॥ जौ बहः दे वै अर्धत
२३ ॥ [illegible]
न तम तजि मोग सोई ॥ २४ ॥ [illegible] सिंघ कहै द्विज सुत सुन काना ॥ तुम तन
भ छन करो प्रमाना ॥ केवल पुत्र अर्ध मोरध्वज त्यावौ ॥ दो मे एक मास [illegible] पता
वौ ॥ अवर मास हम रेन हीं कामा ॥ चलो सपत तक पिष्ट द्विज निज धामा ॥ जाइ पर
स्यो पग अवपने ताता ॥ सिंघ वताता कही सभ वाता ॥ आज्ञा दे हु जाउं पुन तहा
कीनी सपत सिंघ वन जहा ॥ सुन ब्रह्मण जी पक्रोध वडा उो ॥ सत लेव गनप
तिपति आउो ॥ २५ ॥ [illegible] चलो आउ ब्रह्मण तहा न पति मोरध्वज पास ॥ पं
डव सैनानृप सभा मधि वैठे घन स्याम ॥ २६ ॥ [illegible] तहा जाइ द्विज पार्थ भ
उो ॥ क्रोध वचन मुष ते प्रगटयो ॥ कहयो राजा धर्म गज जन्म तुमारा ॥ वैरी धुग

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तुम सम परवारा ॥ ते धनु जा तुम नगर बसहि नर ॥ सभा सकल धनुजा बिनु स्री
गिरधर ॥ सुनि राजा बोल्यो अचरज मन ॥ कति तम क्रोध की ओजी पवन ब्राह्मन
क्रोधि निवारे कृपा अब कीजै ॥ सकल ब्रत तो मोहि कहि दीजै ॥ ब्राह्मण कहै सुनहु
राजा ना ॥ तुम बडु दई दी यो अति दाना ॥ २१ ॥ ॥ कंन्या कारज पसु कहि दीस
हि भयो न कोइ ॥ माति अपराधी दुःख पायो मुझ को दीनो सोइ ॥ २२ ॥ ॥ उल
टि मारत हैं पति हमारा ॥ बिषु सरूप पायो दुख तुम्हारा ॥ कपि आयो यो है सप
सिंघ प्रति ॥ नासु होइ हम रे सुत मेपति ॥ चिंत भई सुनत तन पकाना ॥ मुझ रे
को भई पुन्य तेहाना ॥ हत्या कठिन ब्रह्म सुत घाता ॥ राजा ह्रदै बिचारत बाता
धर्म लागी यह कैसै ॥ नृप मन माहि दुःख पायो ऐसे ॥ ब्राह्मण सुत राखो ।
निज मर है ॥ मन बच क्रम सकार जु द्विज कर है ॥ ८ ॥ ॥ करी दीनता जोर
कर ब्राह्मन को भूपाल ॥ कहा बडु अरि प्रगटाइ बच तुम सुत होइ न काल ॥ ३० ॥
जो बच कहे सिंघ मुझ बालक ॥ ते सम कहि सुनें भूपालक ॥ महिन
करें द्विज अंग तुमारे ॥ अबर मास सुन हे काम हमारे ॥ सिंघ कहे सुन हो सुत
ब्राह्मन ॥ नहि तो नासु करो तुम रो तन ॥ अर्ध सरीर भूपति मुझ दीजै ॥ यह का
रज को घेल मुन कीजै ॥ तीना पुण्य तो को फल होई ॥ द्विज सुत रहा सब फल सो
ई ॥ ३१ ॥ ॥ पुनि कंन्या पति यो गज कहति न का मिटै कलेस ॥ संग्यदा [illegible]ना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चीरमुरुदीजैबेगनरेस ॥३२॥ सुनराजाअनंदितभयो हत्यामिटीवि
प्रवरदडो ॥ द्विजकेअर्पिअग्याइहमरेतनन रह्याबपुषहोईसुतब्राह्मण हम
बांछतयहअपुनेहीय ॥ विप्रपुनहोईब्राह्मणसुततजीय ॥ देहअभिनृककाजकेकीत
आवत ॥ ऐकद्विवसनिश्चैमतिपावत ॥ अवयहदेहसुफलमुरुकीनो ॥ जिः
करब्राह्मणकोदुषद्दीनो ॥ बेगलेहिस्वामीहरषतमन ॥ मुरुनिजदेहकी
योहविअरपन ॥३३॥ हविअर्पनमुरुकीयातनु लेउविप्रसुचमान
गोब्राह्मणकेअर्पिवपुआवैसोईप्रमान ॥३४॥ सकलदेहतेतीनप्रकार
रा ॥ कुमविषणहोतेपुनद्दारा ॥ हमरीदेहसुफलअवभई ॥ कुअर्पिब्राह्मण
कोदई ॥ यहविचारनृपजीयठहराना ॥ सोचसुगंधकीयोइसनाना ॥ प्रथ
मेनृपतिकुसुमपगलागा ॥ ब्रह्मचर्जमनतनअनुरागा ॥ लेपुनकरिअभूठे
रवनाई ॥ प्रमुदिततनृपतहिवैठेआई ॥ प्रियामुकतिरानीमनहरषत ॥ दे
तदानंदुजकोतनुमुरुपति ॥३५॥ केसरछोरमंजनकीयोनवसे
तसातिसिंगार ॥ चोआचंदनसुगंधसवअंगवनाऊंनार ॥३६॥
चलिआईभरतानिकटतव ॥ वैठेजहांकुसुमपारथ्यसव ॥ प्रियापासकतिमु
षद्दविशशलाजै ॥ कैतलमधुपकमलदृगराजै ॥ प्रथमेकीयोप्रणामुर
मापति ॥ प्रमुदितठाढीवाममंअंगपति ॥ दीनवचनबोलेसुनब्राह्मन ॥ तम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मांगति भ्रपति आधो तन ॥ अरधंगी नृप की हम दारा ॥ तीय बिन होत न पुरुष
अचारा ॥ हम हुतौ आधो तन नीनि रैं दकों ॥ द्विज लै मोहि सबै पं सिंघ कों ॥ ३७ ॥ दोहा
इस्त्री अर्द्ध शरीर पति बेद वचन परमान ॥ मोहि समरपो सिंघ द्विज हत
जो रा जा न ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ पति बिनु ई स्त्री गति नहिं पावै ॥ यद्यपि हरि सिमरन
मनु लावै ॥ बिधवा धर्म महा दुखदाइक ॥ लीजै मोहि तिकरउ सुखलाइक ॥ हमरा
पुवती नृप अरध शरीरा ॥ लीजै मुज ब्राह्मण मतिधीरा ॥ भूति वचती पवति
कों आधो तन ॥ लेमुज चलउ भतो पूरन प्रन ॥ बाम अंग पं नृप की वरे पावनुप
ति हो है पतिने रे ॥ तैः कछु करत पति जप तप दाना ॥ आधा फल त्रीय भुति ब
खाना ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ पुनि जो दान करंत जु वत्ति आधा फल पति होइ ॥ इस्त्री पु
रुष शरीर इक भेद न माने कोइ ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ करत न अंगीकार हमारा ॥ सु
जसु होइ पहत पर उपकारा ॥ बोल्यो द्विज सुनहु वचरानी ॥ सिंघ कहा तैंई सु
नऊ कहानी ॥ कै ब्राह्मन सुत कैं नैर सतनु ॥ अवर मास कर हान न भक्षन ॥ प्रथ
म कहि पुन वचन उचारे ॥ कहति द्विज जी यन धिवेक विचारे ॥ पति बिनु त्रीय शोभा न लह
पावति ॥ पति पाछे रंडि जन्म गवावति ॥ बिधवा करम कठन अति द्विज वर ॥ देष ह
म पुने ही यविचार करि ॥ ४१ ॥ दोहरा ॥ जिन जुवतनि के पति निकट तैसभ करति सिं
गार ॥ पति बिनु करत सिंगार तीय सभ जग कहत धिकार ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ तौ बिध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वाकाजु लक्ष्मिगपावै ॥ भिचारनि सोऊनामकहावै ॥ तनसुगंधलावैनासादि
त ॥ ताकी होइजगतमोहितापकृति ॥ विनुपतिजोभस्वादरसुभोगै ॥ तांकोभिदकर
हि सभलोगा ॥ अवनसुनैकहुगीतकहानी ॥ लोकक है परपुरषलुभानी ॥ जु
नतीयसेतीहासुविलासा ॥ निंदाकरततेऊउपहासा ॥ यद्यपिकरैदानिरसना
ना ॥ उलटिहोइअपजसुजगहाना ॥ ४३ ॥ यद्यपिचलेसुमर्णविषेभलाक
हैनहीकोइ ॥ तातेईस्त्रीपुरषविनमहाकष्टतनहोइ ॥ ४४ ॥ पतिविनती
कि:कामभिमावै ॥ त्योतुलविनवारिजकुमलावै ॥ जोतीयपतिचरननचितलावै ॥ हे
हकुमतिनिरभैपदुपावै ॥ सागरविनजुहुद्वितमराला ॥ संदुषहोतकेतविनवाला ॥
जैसेनपतिचमविनुहीना ॥ सोभरताविनुनारिअधीना ॥ जोअतिदुषविनुपतिवास ॥ न
लुभरताविनुवधूनिरासा ॥ जोब्राह्मणवेदविनहोई ॥ ताकोमूडकहेसभकोई ॥ ४
५ ॥ तैसेनारिभरताविनुजगउपहासीहोई ॥ नोशिविनरहहेदष सोभला
कहैनहीकोइ ॥ ४६ ॥ पुष्पविनाजिमसरविकारा ॥ संपतिविनतोयविफल
सिंगारा ॥ नरविनुदानशोभानहीपावै ॥ सुपतिविनतीयमजसुवडावै ॥ सुधनपति
धनविनुसेहोइदुष ॥ सुजुवतीपतिविनानाहिसुष ॥ अवरवहुतदुषवधवातीय
को ॥ लीजैतनुसुषदीजैजीयको ॥ प्रियासुकतिविनतीचकुकरी ॥ ब्राह्मनकेतीयदया
नपरी ॥ निठरवचनभाषेपुनब्राह्मन ॥ सुनरानीदुषअडविचारमन ॥ ४७ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२२५
अश्वमेध
जुजि३१

वनमहिं ठाढ़ो भै संग्रपति पहव चकदेहु कार ॥ नृपति मोरध्वज अंग विनु अवर निकेरो
अहार ४८ ॥ कै राजा के ब्राह्मन सुतत्तन ॥ इन विनु अवर करे न हीं भछ
न ॥ कौ धपति तै द्विज वचन उचरे ॥ सुनहु नृपति मन कहा तिहारे ॥ अर्द्ध शरीर
वेग मुहि दीजै ॥ जैन हीं देहु आप मुहि लीजै ॥ कतकौ इति नाविलम लगावहु ॥ दे
हु वचन नहीं रुचि उपजावहु ॥ मन में कलप की यो तुम दाना ॥ देहु वेग वचनि निग
म प्रमाना ॥ उचत नविलम सदान कै अवसर ॥ अवर वनै कहु जाइ विघन पर
४९ ॥ पहु नृनृपति तुम संभ्रम है वृथा महँ विलम न लोई ॥ जग महि की
रति होइ तुम दानु देहि हरि याइ ॥ ५० ॥ सकल सभा आचरज भइ
भी छोकहन जाइ ॥ अरु तन केभ्रम दूरहित सभ चपित्र पद दुराइ ॥ ५१
नृपति मोरध्वज गति निमित हरि चितकीयो उपाइ ॥ अश्वमेध कत यज्ञ
को सपदि चाली समोधवाइ ॥ ५२

५३ ४२

जैमिनु कहै सुनहु कुरुनंदन ॥ कृष्ण मोरध्वज के लविष कंदन ॥ अरु
जन के संभ्रम मेटन हित ॥ ताते रचीर मापति पहुकृति ॥ तो तैयाव हुँ मोरध्वज रा
जा ॥ लीजै तन की जै द्विज काजा ॥ सुफल देहु अब भाग हमारा ॥ होत मनोरथ
संधनु मारा ॥ पहुत नृप अरु पजो आवै ॥ सुफल होइ कीरति जग पावै ॥ लीजै
त्व
२३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तनुकी जैन गँरुअत्रु ॥ करवत तली योमंगाइ न्रपति तव ॥ १ ॥ दोहरा ॥ तनु काट
न कोद्दूत न्रपतलीन वग वुलाइ ॥ सत्रा देषत न्रपति की तीगज्जेरे वङ आइ ॥ २ ॥
चौपाई ॥ वजरि न्रपति कीनो इसनाना ॥ अंग सुगंध सींच विध नाना ॥ रानी निजकार
मर्दन कीनो ॥ अति आनंद मान जीय लीनो ॥ राजा जी पहर षत अनुरागा ॥ प्रथमै
श्री गिरधर पग लागा ॥ सुचि लेपन करि वैठे आई ॥ दान समग्री सकल मगाई
गऊ कर तआ पुत न वदाना ॥ ऐक आयुत रघ्य सुरभि प्रमाना ॥ नग और रतन दु
कूल अपारा ॥ दीऐ दान न्रप विवध प्रकारा ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ पुत्र न्रपति का महावली
ताम्रध्वजति: नाम ॥ करइ सनान पवित्र है कीनो आइ प्रणाम ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ प्रथ
मै आइ कृष्ण पग लागा ॥ प्रेम पुलक तन सअदृष भागा ॥ चलि ब्राह्मण के सनमु
षगऐ ॥ हाथ जोरि कै ठाढा भऐ ॥ कहे वचन सुनि विप्र कृपानिधि ॥ यह हमरा
कारज कीजे सिध ॥ अंग देत है तुम को राजा ॥ सुत वैठे पहर उच विनकाजा ॥ सुतदे
षत पित मात सकुचावै ॥ धरम वहुत अकीरति पावै ॥ अर्ध न आवै जो पित ताता
धरम वहुत अकारथ जाता ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ सुफल जनम तिनको जगत जे वकर
हि पित मात ॥ धन्य कलेवर होत है पित आग्या रघ्य तनु घात ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ न्रप के त
जा मो हित तनु लीजे ॥ लै द्विज संघ समरपन कीजे ॥ विप्र कुहे सुन हे न्रप ताता
मो ज्यो पसु घमीर धुजराजा ॥ ई सौ अरु सुत तन न न हाली लई ॥ मकुश रार न्रपत का

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लेई पुनि ताम्रध्वज वचन उचारे ॥ सुनहु मातु द्विजवर प्रभु हमारे ॥ जौ हम पत्नी को
काज मृगावहु ॥ निश्चै घोर नरक महँ जावौं ॥ पिता मात सम गोत्र पतन साहि ॥ इक सुत
विनसित अवर प्रकासा ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ सुत देह हम प्रदिन सहि पितु तें अवर प्रकास
ऐकपिता कतन गण गोत्र समस्त विनास ॥ ८ ॥ चौपई ॥ तातें करो वेनती द्विज मृ
ग ॥ औगी कार करहु शरीर मृग ॥ हमरो देह सुफल करि लीजै ॥ सत्य मान सं
पूरन कीजे ॥ सत्यवान वपु के सेनिकाजा ॥ सत्य मगन उपजी द्विजराजा ॥ तौ ते ह
म रीदे हत कृपा करि ॥ पहि उपकार हेत करि रति वर ॥ वपु कै हेत सुनन नृप सुत कानी
वन महि सिंघ पछी प्रगुटाना ॥ मांगत नृपति मोरध्वज कौ तन ॥ मन क्रम वचन क्रमक की
कीनो ऐसो प्रन ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ क्रोध तें वाह्मन एक हो सुन ऊ मोरध्वज राइ
सुत अरु ती पतु मरी विधान करत दान महिमाई ॥ ९ ॥ चौपई ॥ हम जानत है
महा कृठन अति ॥ काटन अपुना तन प्रीय वीपति ॥ तातें तव तें सुत हित सिषावत
पुनि पुनि आए मो हि भरमावत ॥ तन दीने तुम राजसु होई ॥ जद दधीच की रति तिऊ
लोई ॥ इन्द्र हेत अपुन तन दीनो ॥ अमर भए तुम गम हेत जस लीनो ॥ मांग धन नृप
ति मास सु करि दी पा ॥ हेत कपोत परि हकार जु कीपा ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ सभु जग है वस सका
ल के ॥ इक दिन देह विनास ॥ पर कारिज को ऊ देत तन की रति होत प्रकास ॥ १२ ॥ चौपई ॥
सुत ई सु तन पात्र समाना ॥ डारत विघ्र देत तनु मदाना ॥ कहै ता म्रध्वज सुनत पिता

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रा ॥ पिता पुत्र है एक शरीरा ॥ सो को करे कृतारथ आहूती ॥ नपव व पुछा ऊ लेऊ
हम रोतनु ॥ तीन दंड पुनसुत के पितु पर ॥ तीनो ताहि ऐ उतार न पवित्र वर ॥ वि
धा सरूप सो पवीत तन ॥ पुन षिवाह की नोहर बतेमन ॥ १३ ॥ दोहरा ॥ तीन
दंड जो पितप पहिली ने न पति उतार ॥ तीन दंड जो पुत्र पर नहो उतारे सरभार
॥ १४ ॥ चौपई ॥ तीन दंड सुत पर श्रुति कहही ॥ देव दंड ऋषि दंड उचारे पित
र दंड तीसरो व षानीत ॥ पषकुप पकुप हसभ जग जानती ॥ देव दंड से नर
वहि उतारत ॥ जब हो पितु ते दान करावत ॥ नित्य करम सब वुरत इसनाना
विधवत होम करावेदा ना ॥ पुन ऋषि दंड कहत सुत याको ॥ तीरथ परटन करा
इ पिता को ॥ नित प्रति कीरत नु कथा सुनावै ॥ इह प्रकार ऋषि दंड मिटावै ॥ १५
॥ दोहरा ॥ पितर दंड पुन तीसरो गया मिटावै जाइ ॥ तीन दंड को भार सु ऊनही उ
तारयो जाइ ॥ १६ ॥ चौपई ॥ ताते हे नृव र करु पाकी जै ॥ पिता प्रेत हम सरात नुर
ली जै ॥ तीनो दंड मिट हि पितु भारो ॥ शिघ्रु सम रच ढूदे ऊ हमारा ॥ पुनि कैयि
त ताही न राजा पई ॥ रंक पर तन दे ऊ न ही तु करो ॥ ई सुनि सरुसुत केरि षव
राऊ ॥ मग्य करी निजु धर्म लजायो ॥ वि ग्रदान ममहि करत सपाता ॥ ही तेही न
पत मके आपा ॥ उद्धि लागो राजा पगाद उ तबु पा करइ सनान न पस्या च रन हर
१७ ॥ दोहरा ॥ सर्व सुगंध लगाइ न पनेपुन वे षोउ ॥ वाम ओर वा मा करी सुत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दोहा हनै सुभाइ ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ अर्द्ध के श्राउत और की ऐचु भि ॥ अर्द्ध विरुरइ हउ और रहै पु
न ॥ करवत ले माथे पर धर्यौ ॥ दूतन सौं अनूप वचन उचार्यौ ॥ षैच फरै गकरि २
तनु है जै ॥ घहकार तकों पत्लम मुनकौं जै ॥ काटन लागे दूतन तब हि तनु ॥ के लो तन भपो
तब हि पन ब्राह्मनन ॥ को हा तनु दूतन के हाथ्या ॥ भैत ही लै वो गा अनूप मा पाया ॥ अनूप दू
तन कौं वर जरहा उ ॥ विवकार जार वचन प्रगटाउ ॥ १९ ॥ दोहा ॥ दूजे वर मा वर
आज्ञा कर रुतु मरे वचन प्रमान ॥ कृहो कृपा करि तेजु गति जिः वधर्दी जै दान २०
चौपाई ॥ ब्राह्मण लोक है न पति सु भैलो जै ॥ दान फल तैसौ विध की जै ॥ सत ई स्त्री षैचै
दो और करवत ॥ करि है हत मरा तनु विधवत ॥ सत्य सत्यमय मोरध्वज कीनौ ॥ सत
अरु तीय को आज्ञा कीनो ॥ ऐ कृ और तनु मम षैच फाता ता ॥ और दूसरी तुमरी माता आ
ज्ञा मानली पो करवत कर ॥ षैचन लागे सुत अरु तीय वर ॥ काठ्यो भूपति को ल
लाट जव ॥ वाम चक्षु तैनीर उस्यौ तव ॥ २१ ॥ दोहा ॥ नहि को टोट्र हनुक है न पु
तनु ले ऊं न दान ॥ रोवत है द्विग जल डरत का पर भजै राजान ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ब्रा
ह्मनु कहै ले ऊं न हि दाना ॥ नृपति मोरध्वज सु रन हाना ॥ लो ऊं न स्यान दे ऊं गा आ
पा ॥ पुण्य करत नृप की पो संताप्या ॥ सुनन अनूप सु तय पुन वचन उचारे ॥ दि जस्वा
मी हम मदा सश्रि हारे ॥ करि उपचार हर ड म जपीना ॥ हम रा ले वृद्धा अंचौ पै तीरा
षता मह ऐ माता दुष पावै ॥ सो दुष मो हम अध कजरावै ॥ मो पर कर करुना तुम उपका

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रा॥ सिंघ समर पकुंगे गह मारा॥ २३॥ दोहरा॥ कर रक्त तारष पदेत सुमदो षपि
ता को जाइ॥ सिंघ समर पकुंगे गह मारा॥ सिंघ समर पकु मोहि तनु द्विज वरक
रकु सहाइ॥ २४॥ चौपई॥ ताम्रधज मुष कहे यह वचनन॥ ब्राह्मन कहे मानै न
ही ब्राह्मन॥ पारष सभा नंद अवर जरात॥ मण्साहि वे हे ब्रम वनपति॥ पुन ब्रा
ह्मन मुष वचन उचारे॥ पहिलै नृप के सुत तुम वारे॥ नृप वीर रज ते तुम रीउ
तपति॥ नृपति सारषा देगी तुम गति॥ कंदूपन र के वसत कपाला॥ भषनक
रति शिर षत तत काला॥ वीर जु जीव संग लो षे आवत॥ कर तन वासु गरभ उप
जावति॥ २५॥ दोहरा॥ तनु चौवास इक ब्रह्ममलष धवति हा तशारीर॥ शुभ वेला
श तदान सो सुत उपजत रनधीर॥ २६॥ चौपई॥ नीच समे जो देत पतदाना॥ उ
पजत सुत नीच समाना॥ ता ते सुन ता मधु जवाता॥ तुम तो नृपति मोरधुज ताता॥ दा
न कर तन पका पर भयो॥ विद्यमान सुरके परगायो॥ तुम तो सुत इह भूपालकु
ल मनुम पिता लो तति मवालिक॥ तुम सम को पर दै हो माया॥ दान कुंश तन पकी आसं
ता या॥ हस्यो नृपति मुष वचन उचारे॥ सुन स्वामी हम दास तुमारे॥ २७॥ दोहरा॥
जिंहि नभि तद्धि गजल गि स्यो साधि जसुन दुविचार॥ वाम अंग को दुष भयो रावत प
हजो पधार॥ २८॥ चौपई॥ वाम अंग रोवति यह जो पधारे॥ भि इफल भयो दान के
सवसर॥ पसार हो गा कि सो जिन काजा॥ मज को दान करति न ही रोजा॥ रावत है वह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करतिधिकारा ॥ भयोनकारजुपरउपकारा ॥ अँगदाहनाविप्रुहोतहै ॥ अभमुचजा
नमुक्ति सागदेतहै ॥ जबलहदेहहोतसवधाना ॥ तबलिनभयोसुकृतकछुदाना
जबवकवदाअंगदाहनेअंगा ॥ दीयोनपतिनभयोव्रतभंगा ॥ २९ ॥ दोहरा ॥ कौआक
रमसमदाहनेवचनससउनसाथ ॥ छत्रधर्मरणपुरुमतिबडगदाहनेहाथ
३० ॥ चौपई ॥ सोवाचारूमिकरतवामकर ॥ भएकुचीलठौरमतिततपरे ॥ लघुप
रोषठौरसवधाना ॥ तिनतदुरगंधकीचइस्याना ॥ जीपुतेप्रशुद्धभयोनहीसरखु
मतकससैअवभजोनिरारख्यो ॥ रुदनकरतअवभयोनिरासा ॥ परनभईनजौ
पकीआसा ॥ देवडुअंगदाहनेरीता ॥ जीवतमृतकपहतपरसपुनीता ॥ परार
होगाभठौअकाजा ॥ अंगदाहनामननसैराजा ॥ ३१ ॥ दोहरा ॥ तौतेवामाअंगमलेक
रोवतहैद्विजदेव ॥ दीजोनृपसंकुचिमृगकरीनब्राह्मनसेव ३२ ॥ चौपई ॥
जोहमविवहगअसङ्गारित ॥ तौद्विजकायरमोहिउचारत ॥ वामअंगरोवत
अपुनेहित ॥ तमनिकरीजाकोअंगीकृति ॥ अंगदाहनादेषडुद्विजवर ॥ प्रफुलत
तीया भरोतिमतितुकरे ॥ कहतवचनतनमेंहेगऊ ॥ द्विजतेरूपचतुरभुजभऊ ॥ नृपकी
ससाभईप्रमाला ॥ दूरस्याकृष्णस्वयंभगवाना ॥ जोफुदेषेनृपतिहूणाभए ॥ विप्र
मेबहुरगयोभयोहपे ३३ ॥ दोहरा ॥ सावधानहुएदेषउचरननेनपरयोभूपा
ल ॥ अंगतलगाउनपतिकामपापसेनसुपाल ३४ ॥ चौपई ॥ धंन्यधंन्यहरेक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ह्वो मोरधुज ॥ धंन्य तुमारी प्रीत महाभुज ॥ धंन्य तुमारा कुल भूपाला ॥ प्रजा धंन्य
धंन्य नगर दिव साला ॥ देह सहित तव वैकुंठ सिधारहु ॥ जन्म मरन को शोक निवार
हु ॥ ताम्रधुज सैना सुभ संगा ॥ हम संग चलहि सहित तुरंगा ॥ पत्र पुधि फर रगजु
पुर ज्ञावहु ॥ कारज करि आपने घरि आवहु ॥ भयो मोरधुज अति आनंद मन ॥ हरि
के वचन सुनेनि जल स्रावनन ॥ ३५ ॥ दोहरा ॥ वारवार हरि चरनन परि वचन कहे प्र
गटाइ ॥ रच्यो हमारे कुल सहित पत्र पुधि फर राइ ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ पुनः नमि ता
श्री पति चलि आवो ॥ सावधान हम दरसन पावो ॥ जो सब करहित न नृपति पृथि फर
कहा हेत हम को दरसन हरि ॥ हम से पतित जन हरि पग परसत ॥ श्रीपति रधुरन
क हा हम दरसन ॥ पुनः चरनन को शिव ब्रह्मादिक ॥ ध्यावत नारद और सनकादिक
जोगी जंगम जती तपीश्वर ॥ ध्यावत सुरनर मुनि रिषीश्वर ॥ वंदित कोटि कलप
धरध्याना ॥ दूर सेसो विद्यमान भगवाना ॥ ३७ ॥ दोहरा ॥ धरम जु नृपति प्रसाद
हम पर से श्री भगवान ॥ आज उद्धव सब धंन्य हे पूरन ह्वै ऐ काम ॥ ३८ ॥ चौप
ई ॥ हम जैसे पतित निमित हरि ॥ आये चरन लिय गें धारक पा करि ॥ वडे भाग नपु
पुषप हमारे ॥ भए कृतारथ दरसत तुमारे ॥ ताम्रधुज रूप गुपुध की पोशा ॥ तो
मरे सनमुख वान पठायो ॥ तुम ताकी जैपैदा सहित हारा ॥ दीनवंधु तुम अपर औ
पारा ॥ करी वेनती नृपति जोर करि ॥ मगन होय नृप परयो चरनन पर ॥ महा कि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५४
३२८
अश्वमे
ध

पाल भए नंदलाला ॥ कंठ लगाइ लीयौ भूपाला ॥ ३९ ॥ दोहरा ॥ अरजुन अति अचरज
भयौ हृदै बिचारत ज्ञान ॥ बडे भाग हैं नृपति के बसि कीने भगवान ॥ ४० ॥ चौपई ॥ अ
रजुन प्रति बोले तब गिरिधर ॥ नृपति मोरधुज महा भगत वर ॥ तुम प्रन हेत भि ज
भगत महाभुज ॥ नृपकी प्रीति न बरन सकौ तुज ॥ नृपति देषत मन मैं भयौ षेद हा स
रव सु अरप्यौ कृष्न सनेहा ॥ राजपाट सुत जुवती संग गायौ ॥ सकल सु मर्प्यौ आपु
दुनाथा ॥ सो गोपा हृदै धरि ध्यान निज जन भगत ॥ पुनि हृदै चरन न परसौ विधि बीवति
भए प्रसंन कृष्न राजन पर ॥ नृपति सदेह तबै कुंठ पठयौ हरि ॥ ४१ ॥ दोहरा ॥ तेपुर
के ब्राह्मन सकल ते सभ नृपति प्रसाद ॥ सौंपि चलाए मोरधुज जुवतीन सौं अहलाद
द ॥ ४२ ॥ चौपई ॥ चढि बिवान मोरधुज गयौ ॥ ताम्रध्वज हय के संग भयौ ॥ अगन
ति चमू ताम्रध्वज साथा ॥ चल्यौ मानि आज्ञा यदुनाथा ॥ अरजुन संसै कृष्न
टायौ ॥ निरषत ज्ञान नृप जो पायौ ॥ नृपति जो धर्ई ए भगवाना ॥ पारथ पर सो
चुरन भगवाना ॥ छोर दीयौ पुनि चल्यौ तुरंगा ॥ अगनित सेना जुरी है संगा ॥
सैना सकल देष कै अरजुन ॥ प्रमुदित भयौ सराहत भगवन ॥ ४३ ॥ दोहरा ॥
कृपा भई गिरधरन की धर्म सुतन की ओर ॥ ताम्रध्वज से सूर मे चडे आपद लजो
र ॥ ४४ ॥ चौपई ॥ ताम्रध्वज की यौ प्रभु काजा ॥ नगर पठ्यौ सभ पठ समाजा ॥ चा
रौ बरन पुर पठ अरु बाला ॥ गजपुर को पठए ततकाला ॥ सकल सम ग्रीन्ह कर्म

५४

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पारा ॥ हंसपुर पठई मेघ पाला ॥ दोहा ॥ ओम अश्व उत्तर दिसि गयो ॥ वीर ब्रह्म पुरपा

पत्ति भयो ॥ पुरी नाम मतिःध्वन्यावती ॥ मुच पावन वर्ण सस लोक प्रीती ॥ तिः पुरस

कल पतिव्रत नारी ॥ पुरुष सकल एक तीय व्रत धारी ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ शिवकी प्र

जाके नमित्र मंत्री की धीउ पाइ ॥ अश्वमेध के पत्र को अठतालीसमो अध्याय ॥ ४६ ॥

॥ इति श्री भारथ [illegible] अश्वमेध [illegible] ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ [illegible] जैमिनी [illegible] ॥ जैमिनु कहे सुन

[illegible] ॥

ऊमेघपतिवर ॥ वीर ब्रह्म की कथ्या श्रवण धरी ॥ नृपको सचिव सुमति तिः नामा

शिवक रुद्र सुर संग्रामा ॥ वृषमध्वज पृ जाके काजो ॥ चल्यो मुदित आज्ञा ले राजा

सेना सकल समग्री कीनी ॥ सेवा आइ शंभ की दीनी ॥ बाहर ते वनचर चलि आ

यो ॥ सुभव तौ तुमतिः सुमति सुनायो ॥ अदभुत देख्यो एक तुरंगा ॥ विचरै तस्यो

सुमति पठायो ओर तइ कल्यो यो पकर तुरंग

आन्यो पकर न गा ॥ दोहा ॥ भयो अश्व विचित्र तिसो अंग ॥ २ ॥ चौपाई ॥ मंत्री मन मत्तिके

पर रष तच्चित प्रमुदित ॥ जौन पस्नु नहि मरुक रहि धीकारा ॥ जो ठम सुन कारग है नवा

रति विचारा ॥ जौन पस्नु ॥ सुमति युद्ध का उद्यम कीनो ॥ प्रथम रुद्र तो ष

जा ॥ तौ सुन मोहि एसा वैराजा ॥ आवत सुमति निहारी सैना ॥ सजि सैना स

करली नो ॥ पाछे ते पारथ की सैना ॥ उत ते पांडव की सैना सब ॥ आव

नमुख चलि गओ ॥ धनुष हाथ ले ठाढ़ो भओ ॥

त देखी नृप तसच्च वत व ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आइजुरे सूरे सब हीं तब ॥३॥ दोहरा ॥ निरष बभ्रुवाहन कों ष्यों धनुष लीपै
करुधार ॥ उर हृदि ससमति रिसाइ मनि युद्ध रचौ भयकार ॥४॥ चौपाई ॥ सै
नाजार ससमति वलवाना ॥ लागे सकल चलावन वाना ॥ मेघवृंद जुं सरवर
षावत ॥ अरजन सुत तत नदु हनपावति ॥ पत्र पत्र परजु लुति सम होई ॥ तिमसस
रपर ससकै नहीं कोई ॥ ठाठा सूर बभ्रुवाहन रन ॥ निरभै होइ कदु त्रास
नहीं मान ॥ हृदै एसाइ बभ्रुवाहन सुत ॥ तन वा मारे मंत्री प्रति ॥ वेधति करीस
रन सैना सव ॥ सुमत सहत तुहि गई चमू नभ ॥५॥ दोहरा ॥ दूत कुजा इक हते स
कालवीर ब्रह्म को वात ॥ सुमत सहति तुमरी चमू भई सकल रन घात ॥६॥ चौपई ॥
सैना सकल उठाई दई नभ ॥ भ्रमसका पापुन धरन लगे री सब ॥ नास भऐ तुमरे स
मघाधा ॥ वीर ब्रह्म तपसन जी पक्रोधा ॥ राजा चहयाव जाइन पाना ॥ सेजग हत्री
सूरे वलवाना ॥ धरनि अकाश एकहि गजा ॥ तुमलु शब्द सुनी ऐन ही कहा ॥ वीर
व्रल्ल रन सन्मुष भयो ॥ कोधपति धनब वान कर लपा ॥ अरजन रथ पर कै छनिता
स्यौ ॥ अरघरज है नृप हृदै दिवास्यो ॥७॥ दोहरा ॥ पृथुकर वान चलाइ ते सनमुष
हैनंदलाल ॥ छत्रीधर्म विचार चित चैं ताकरत भ्रपाल ॥८॥ चौपाई ॥ छत्री धर्म मैं यो केद
वतावे ॥ छत्री पासु बांधरन जावे ॥ सेना निरष वधन हीं करई ॥ धर्म घोर नरस्क
वतावे ॥ छत्री पासु बांधरन जावे ॥ सोंतर कहदढौर नहीं पावै ॥ वेद वचन य
मैं परई ॥ पुनि हरि सन्मुष वान चलावै

व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हमसैं न्यप्रमाना ॥ तातें चिंत वडी राजाना ॥ हरिभक्तपति की ओर निहास्यो ॥ चिं
तभरौ नृप क्रम विचारयौ ॥ कठिन वनी नृप कौं दोऊ बाता ॥ करन सकत ए
कै दुख गाता ॥ ८ ॥ निरबदीन तानृपति की आपतिभ ऐ कृपाल
मनु पके स्यौ हरि नृपति कौं चरन परयौ ततकाल ॥ ९ ॥ हरिभक्तपति
प्रति वचन उचारे ॥ निश्चै जान्यौ हृदे हमारे ॥ वनी न दोऊ वात नृपतमन
इऊ हम सनमुष जुजतन किरन ॥ पुनि दूसरी छत्र की लाजा ॥ रन तेव
मुषधिकार कितराजा ॥ दोनौ वात विसम बड भारी ॥ हम जान्यौ नृप भय पर
डुषारी ॥ दोनौ वात होती सिध ऐसा सु न होन पतिक हेविधतें से ॥ पुत्री
अपुनी दीजै पारष्य ॥ सिध होइ तुमरा जग स्वारथ ॥ ११ ॥ छत्रध
रमत तुम रारक है पै भी वह तिगेलीज ॥ पुत्री कै बति सान मुषजा द्वनि ष्यान नृप
जोग ॥ १२ ॥ पारष्य कहै सुन कृप्रभ मेरे ॥ पहत वचक हि न उचत न हु
तेरे ॥ उहां अरे भय पत्र यमताता ॥ हम कौं घाउ पन हौय हवाता ॥ तौन र आश्रम
धर्म्म तिकर रहौ ॥ तेन र ब्रह्मचर्ज मधि हरहौ ॥ पत्र क्रम मधि हानि होत तव ॥ रघु
सौं हम भोजा करो जब ॥ ब्रह्म कर मइ तनी वाततन पर ॥ कहै हौ निगम सुनियौ अ
वनन धर ॥ पत्र कारम वृकरो परदेसा ॥ अव र दोन तव तुरे नर सा ॥ १३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

८६॥
३३५
अ॰मेध

दरसन परसन साधके पुनतीरथ इसनान ॥ बिन सत्यान ही होत सिध ब्रह्मचर्य
परमान १४ ॥चौपाई॥ पाणिग्रहण हमको नही योगा ॥ जबलग होत यज्ञसंयो
गा ॥ जब पहत यज्ञ संपूरन होई ॥ जो प्रभ कहै कै करो तब सोई ॥ इस्त्री नृप की करी इह
अवसर ॥ निश्चै जानो मन वच क्रम कर ॥ कृष्ण कहे पारथ सुन लीजै ॥ मन अपु
ने विचार तुम कीजै ॥ कंकन बांध्यो नृपति युधिष्ठर ॥ यज्ञ करम को भार न तुमप
र ॥ इतवंती कंन्या हे नृप गृह ॥ मात पिता कुल सुति उत्तम ग्रिह १५ ॥दोहरा॥
अपने मुख ते कहति है पारथ को भरतार ॥ दै इस संकल्प तु अब धैकी जै अंगीका
र १६ ॥चौपाई॥ जौ तुम करो न अंगीकारा ॥ लागे तौ तिय अघ भारा ॥ जौ कं
न्याको पतु न हि दैवै ॥ जन्म अनेकन नरक को सेवै ॥ जौ पति तांहि न ना दुर करै ॥
निश्चै घोर नरक मै परै ॥ वेद वचन भाषत है ऐसे ॥ उचत मानि लीजै तुम तैसे
हरि मुख वचन सुने पारथ जब ॥ कह्यो न कछु गहि रह्यो मौन तब ॥ बीर ब्रह्म
पुन वचन उचारे ॥ सुन नृप कृपा करि प्रभु हमारे १७ ॥दोहरा॥ जौ इह अवस
र देत हौ पुत्री पारथ आग ॥ सकल धर्म कार दिगे नृपति छिद कइ दिगे लाग ॥ १८
॥चौपाई॥ लोग कहिंगे ऐसे बैना ॥ डरयो नृपति देख बड सैना ॥ तौ अवसर जन को
कंन्या दीनी ॥ कापुरुष भयो लाज मन ही कीनी ॥ वढ इक है गेढ त्रैलताउ ॥ ल
ऐसा नही वीडर पायो ॥ भय कर कंन्या दीनी पारथ ॥ धनु गु सभ कहै मन हित पु
रे पारथ ॥ बालेक प्रसुन नृप वच राजा ॥ हृदै विचार सरसिर ताजा ॥ कंन्या पित ८६

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वंती तुमरे गृह ॥ हत्या लागत पितु दर सन त्रिह ॥ १८ ॥ दोहरा ॥ रितवंती कंन्या
भवन पिति देषे पितु नाहि ॥ जनम जनम दुष पावई घोर नरक के माहि
॥ चौपई ॥ वांछति जोई पति कंन्या मन ॥ प्रापति भयो सुरपति सुरजन ॥ यो कंन्या को
देषन पहपति ॥ तो पावइ जे घोर नरक गति ॥ जो कंन्या अपने मुष कहई ॥ मन
वच क्रम मम अरजन पति कहई ॥ कहा कहै गाध मितु मारा ॥ सुता पछत वदे भरतारा
वीरब्रह्म पुन वचन उचारे ॥ सत्य वचन सभ नाथ तुमारे ॥ जो कंन्या मुष ते निज अभी
षं ॥ दृढउ सोई पति जो अभिलाषे ॥ २१ ॥ दोहरा ॥ कंन्या आइ कहै प्रगट सुनऊ जुग्म९
नेकान ॥ कहो जथारथ रमापति तो यह वात प्रमान ॥ २२ ॥ चौपई ॥ पुत्री वचन सुन
हतेहो गा ॥ तौ न धिकार करहित मुझ योग्या ॥ वीरब्रह्म चंडेल पठायो ॥ पुत्री को तत्का
ल वुलायो ॥ ताहि दिन कंन्या चढि आई ॥ नमसकार कीनो पद राई ॥ पिता कह्यो पु
त्री सुनलीजे ॥ जो मन वांछित सो पति कीजो ॥ कंन्या कहै सुनहु पितु काना ॥ अरु तन
कीजे भरतार ॥ पति मङऊ स्वय प्रमाना ॥ अव पिभि वांछति हो पति कोई ॥ पारब्रह्म नाम
कंति मुझ सोई ॥ २३ ॥ दोहरा ॥ ई स्त्री जनम महा कठन मन मह कीजो वीचार ॥ देह
उधारन के निमित अरजन कीजो भरतार ॥ २४ ॥ चौपई ॥ ई स्त्री जन्म कहे अवला
सभ ॥ संध्या सिमरन करत नहि कब ॥ करै न गायत्री अरु इसनाना ॥ पति सेवै ते
मुक्ति प्रमाना ॥ टहल करै भरतार रिझावै ॥ पति वसि करै परम पद पावै ॥ कोई

पति

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

उपाइ करै तीय जोई ॥ पति सेवा विनु मुक्ति न होई ॥ जो नहि पति सेवा मन लावै
सो तीय घोर नरक कि गति पावै ॥ यह तिन्या पति ध्रुव मन माही ॥ मुक्ति सेव हो
इ कधौ नाही ॥ २५ ॥ दोहरा ॥ जो समर्थ नहीं होइ पति तौ नहि उधरै तीय
विमुख रहे हरि भगत ते सदा पाप रत जीय ॥ २६ ॥ चौपई ॥ जो पति प्रथम समर्था
पन नहि तरै ॥ सो कैसे निज नारि उधारै ॥ इक तो तीय ते सेव न होई ॥ पुन पति वि
मुख भगति हरि सोई ॥ जो नहि प्रथमे आप उवारै ॥ सो कैसे जुवती निसतारै ॥ ता
ते मो मन ज्ञान विचारा ॥ कुंती सुति कौ कीओ भरतारा ॥ विनु सेवा हो है हम मर
री गत ॥ पारथ विश्नु भगति कीनो पति ॥ जिन वसि कीनो श्री नंदलाला ॥ क
मलापति त्रिभुवन प्रति पाला ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ शिव विरंच मघवा जिस तिषा
जित फिरत उदास ॥ सो हरि अरजन के सदा टहल करत तजि मदास ॥ २८ ॥
चौपई ॥ ताते मुक्ति कीनो पारथ पति ॥ देख्या हृदे विचार हरि भगत ॥ आप
ता रुगाजि: आस्याना ॥ पकुचा वेगा मुक्ति निज थाना ॥ विनु सेवा ते मुक्ति गति
होई ॥ यह तीय जान की पाप पति सोई ॥ देन हार गति सव गति श्री रघुपति
सो अरजन वसि मन वच क्रम करि ॥ सिद्ध होई स्वारथ परमारथ ॥ निश्चै
पति कीनो मुक्ति पारथ ॥ यह कहि कै न्यो गवन कीओ घरि ॥ मुदित चली क
पि के प्रनाम सुतरि ॥ २९ ॥ दोहरा ॥ उत्तर दीओ न वकुरि कहु अरजन ससुरारा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जान॥ तैसे ही कारज करै जोइ॥ श्रीभगवान॥ ३० ॥चौपई॥ वीरब्रह्म राजा अ
नुरागा॥ हरखत हीये कृष्ण पग लागा॥ श्रीजा ले उद्यम नृप कीनो॥ कार
ज को आरंभ कर लीनो॥ द्वै कंन्या पांचीन नृप के धाम॥ प्रगट कहे ताके वरना
मा॥ मालकुमार दुतीय मालेणी॥ रूप उजागर गुण विशालणी॥ मालकु
मार श्रीहीयमराजा॥ प्रथमै कीनी काज ताय हक काजो॥ कंन्या नाम मालिनी
जाको॥ कीयो व्याह पारथ सौं ताको॥ ३१ ॥दोहरा॥ यमराजा कारज से श्रे
न्प पति बुलायो नाहि॥ कंन्या पारथ को दई मुदित भयो मन माहि॥ ३२ ॥चौप
ई॥ गो कंचन अश्व गज बहु दीने॥ मनमत हो हलवस्त्र नवीने॥ विधवत कारु
ज की यो नृपति वर॥ महा प्रसन की ये धार वर धर॥ ईहाधन ले के कुरु नभ ठा
उ हा धर्मपुर नारद गऊ॥ धर्मराज श्री दुरपद कीनो॥ सिंघासन तहि आसन
दीनो॥ पुन नारद मुख वचन उचारे॥ यह कृत कीनो सम सुरत मारे॥ कंन्या श्या
म दई पारथ को॥ प्रमुदित कीजो सिद्ध स्वारथ को॥ ३३ ॥दोहरा॥ श्रीनारद दर्शन
हो नहि जिह तजु रे त्रैलोक॥ जहां कुसुम सवधान कै उचरित दर सतुम योग॥ ३४
॥चौपई॥ उचित तन पीन नृप को यह हुवाता॥ कीयो धिराद रवडे तमाता॥ श्रीदर हेत इन घ
र मर्हि जाको॥ करत निरादर समझ गता को॥ श्री पति श्रीदर तु रेवज राजा नृप की
नो पुत्री को काजा॥ कति को सम सुरन तो हित बुलाओ॥ श्रीवगुन कवन मानु नहीं पा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

यो ॥ कत्ति तुम सम भ्रात नहीं चलि गयो कुसल दर सुन नहीं प्रापत भयो ॥ नृप के उच्छवति
है नआदर तुच ॥ कत्ति तुम हल्लकारी ओक है मुज ३५ ॥ दोहरा ॥ सुन कै व्या
पम रा तत वप हरे शस्त्र धनाइ ॥ तिन की नो आदर न भुजता की मो शोधी
इ ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ रक्त ने त्रपम राज की घे तव ॥ ना सु सस रका ता इक रो भूव
तिन मोको नहीं वी लपटायो ॥ माम भंग कुपि जगद्दिष राउ ॥ कालरूप है
धर्म सिधा ओ ॥ नारद वीर ब्रह्म घर आओ ॥ ऐष को तोर वंदि ना कीनी ॥ स्वाग
त पूछि चिंत सभ छीनी ॥ पता कुरी दंड वति की आ ॥ अति प्रसेन नारद करि
ली आ ॥ वचन कहे नारद भूपति प्रति ॥ पुत्री आज की या तुम हर पति ॥ ३७
दोहरा ॥ कंन्या के कारज सभै पमन हीली ओ बुलाइ ॥ तब तुम पर क्रोध
करि आओ महता पसाई ॥ ३८ ॥ चौपई ॥ तुम को कछु चीत नहि राजाना ॥ वैठे ज
हो कष्ठ सबधाना ॥ यद्यपि है तुम अति बलवाना ॥ कहा करे तुम मुग हम गा
वाना ॥ वीर ब्रह्म नृपति तन की जै ॥ मन ले हरि चरनन मद दीजै ॥ यह सुव
च कहि नारद उठि गयो ॥ जमु रा जा दिन प्राप्ति भओ ॥ [illegible]
॥ हे कंन्या हरि तीन नृप के सह ॥ इक्की
ते वा हद ईश्वर तन प्रति ॥ ३८ ॥ दोहरा ॥ द्वितीय सुता जम राज को के से
दई विचार ॥ मांगत ली यो वर कंन्यका केन्च दीयो भरतार ॥ ४० ॥ सोरठा ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सुजयहकथासुनाइ ॥ जैमिननन्मुनिकरुनाकरऊ ॥ कंन्यासो जमराइ इति
इत प्रकार कहुए जकीजो ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ यो यह कथा पढे सुनै तिः प्रसेन चढ
राइ ॥ अश्वमेध के पज्ञ को उनंन्ज मो प्रभउ ॥ ४२ ॥
४३ ४४
जैमिनु कहै सुनजमेपाला ॥ कथा सुधारस महाप
साला ॥ जुन नपदईसु ताजमराजा ॥ वरन सुना वो सकल समाजा ॥ मालकु
मार कंन्या को नामा ॥ रूपभगति गुनविघ अभीरामा ॥ नौदसवर्ष भई पुत्री
जव ॥ नप के जीय चिंता उपजी तव ॥ हाथ जोर पुत्री पहि गउ ॥ वचन कहत तव
पल जतम यो ॥ कहो सुइक तिव मुख जोई ॥ लेउ मगाइ देउ पति सोई ॥ १ ॥
नीचे दृग करै लाज सौ कही कंन्या का वात ॥ ई सौ जनम अकार ष्या सुक्र
होत नही तात ॥ २ ॥ चौपई ॥ सुकृ होत है जुवती सोई ॥ जाको धरम पतिव्रत हो
ई ॥ मन वच क्रम करि सेव करै पति ॥ टहल करै नि शदिन पति सो रत ॥ पति की
भक्ति करै विधनाना ॥ भरता को जानै भगवाना ॥ यहा ने सुनि श्रवण जो चलै वै ॥ वि
नु हरि नाहि अवर नही सेवे ॥ सुनजप ता यह वात बुरी अति ॥ भरती वैरन रह
पति व्रत ॥ यमसु अति वोली गहति मति अवसर ॥ पतिव्रत भंग हु ति जव पसि पर
३ ॥ ताते सुजन मपति की पा आदर तो हो इ एक ॥ रहै प्रकार पतिव्रत रहै ॥ २

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

६६
२४२
अश्वमेध

मन मदिकि यो विवेक ॥ ४ ॥ चौपई ॥ पुनि बोले बैन नृप सुन पुत्री मुझ ॥ ऐसो पति नहि
उचित करन तुझ ॥ जिः ते सभ जगदु रहत पुरष तीय ॥ देषे है संतापु होत जीय ॥
दया न परत सकल जग घाता ॥ कैसी नतिजि तसु पहि वाता ॥ मात देषत तसु
तहि विडारत ॥ सुत देषत जननी को मारत ॥ सिर दे करि तसकल जग नासा ॥
जो ब्रह्मण तन कुकरत विनासा ॥ गरभ सहित ले जात तीयन को ॥ घात करत ज
ग सकल जीयन को ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ मदन भदन नकाढई करत सकल को नास
दया परत न हो नेकु जीय सपाम वदन तु पहास ॥ ६ ॥ चौपई ॥ जम पति कुर
तत्ता जन ही आवत ॥ कति जग त मरा अत सुबठावत ॥ जम जमुना ब्राहम कान
ही थागा ॥ पन तुझ हासु करति सभ लोगा ॥ मालकुमावपुन वर्च उचारे ॥ सु
न झ अवन देषि ता हमारे ॥ मुझ पति कीउ सत्य पमरा जो ॥ धरम लोक को
नृपति सरता जो ॥ नहि न अवर को उत्तिः सम सर ॥ जो झ सभ जी पनि अधिपति
वरि ॥ धरम नरेस महा बल वाना ॥ जा को जसु त्रैलोक निधाना ॥ ७ ॥ पुञपन तितु
म को धि ता देव झ अवर भरता र ॥ अंते तति सहि पति को व झ ऐले जम करे संघा
र ॥ ८ ॥ चौपई ॥ उस देषत मुझ को ले जावे ॥ पम ते को ऊन मोहि छुडावै ॥ मु
झ देषत पति को ले जई ॥ बल कर को ऊ सके न रहाई ॥ जो मरती नहि आव ब
चावे ॥ सो पति के सम मुझ मन का तावे ॥ ता ते सत्यार हत न काई ॥ तुम मन हि विचार झ

४

५८८

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मनचितलाई ॥ ईस्त्री जन्म असरूजानतीय ॥ सक्तिवान पति करै पञ्जु तीय
पुरुषपुवतिको ऊनवलहोत जव ॥ पतिव्रत समर्था हीन होत तव ॥८॥ दोहा
॥ यहप्रशस्त है पतिजी शक्तिवान पति होइ ॥ जः पूतापते अवर नर तीय
गहि सकै न कोई ॥ १० ॥ चौपाई ॥ सभ ते महत वली यम होई ॥ मन वच कृम भि
श्रेपति सोई ॥ यहि वातनि श्रे मनकीनो ॥ मनवचकृम समाधे धारिलीनो ॥ म
तन मन अर्पयो जमराजा ॥ ताही सो कौ जै सभ काजा ॥ यह कहि तिकं न्या धर्म
नुलगाये ॥ समवरती तत छिन तित आये ॥ विप्र भेष धरि प्राय पतिभाषो ॥ क
रिप्रणाम अमादर न पद मे ॥ ब्राह्मण जानकरी स्वागति असति ॥ पुनः पवच
नकहत पत्री प्रति ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ वीरव्रत न्पवचक है पुत्री सौ सम मगइ ॥ य
सुभर तानही जो गवतु अवरक ते प्रगटाइ ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ मांगी लेऊ पति प
मरा जाविनु ॥ सोई तुम देउ मंगाइ पति दिन ॥ पसु भरता नहि तुम जो गा ॥ को
हम तुम छेद करहि सब लोगा ॥ अवर सीष महि कहते कोऊ पति ॥ लेउ
मंगाइ अवे मन हरषत ॥ धरमराइ सब जुगडु षदा पक ॥ निकट पजी
पजंत सभ घाइक ॥ है रक ठौर दसा लन होई ॥ अधवेको पति करो न कोई ॥
सुनत भओ जमराज क्रोधमन ॥ वीरव्रत पातक होय एक वचन न ॥ १३ ॥ दोहरा
धरमराज न्प योंक है हम पहउ उचत न वात ॥ तुम रे सनमुष ववक कहत न ज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मससुराति मतात ॥ १४ ॥ चौपई ॥ आज्ञा धि तास सरकी सम सर ॥ तातेक हु र
न कहोइ हम अवसर ॥ हमको पति कीनो पुत्री तुज ॥ ध्यान लगाइ बुलाइ ली
जो मुज ॥ तनु मन सर्व समर्पेहु कों दीनो ॥ मनक एसो हित अवाहन कीनो ॥ ता
ते हम इहां चलि आऊं ॥ तुम कंन्या पति हेत बुलाऊं ॥ वीरब्रह्म नृप धर्म पहिचा
नो ॥ कीयो प्रणाम हीये सुकचानो ॥ पुन नृप मन पसौं वचन कहेत तब ॥ दुष
दाई कति मुजु हि कहे अब ॥ १५ ॥ दोहरा ॥ वीरब्रह्म राजा सुन जु हम प ए द्रोव
न लाई ॥ जैसे करम करै कोऊ तैसे भागति आइ ॥ १६ ॥ चौपई ॥ सुष दुष निज
करमन ते होई ॥ मुऊ पर दोष न लागै कोई ॥ जिन निज मर्याद नहीं औ नंदलाला
तेन र दुष पावहि भे पाला ॥ सुखदायक हरि को नहीं ध्यावत ॥ ते नर जनम मृतन
म दुष पावत ॥ जिन पुरुषन नि मरन हृए कीनो ॥ तिन के पुनु हम महा सुष दीनो ॥
मान सकर्म करत है जैसे ॥ ताके फल जो गति है तैसे ॥ हम कह कों दुष नहीं दी
या ॥ फल नवा पाजै सा तिन कीया ॥ १७ ॥ दोहरा ॥ हम आप नेइ स्थान पर रहे ठर है
दिन राति ॥ काजु करत है स ए के भ्यादस हम रे तात ॥ १८ ॥ चौपई ॥ एइ करत
हे ना सज्जगति को देत महा सुषविष्ठम गति को ॥ जिन कीने है पापविकारी ॥ तेन
को देत महा दुष भारी ॥ करम करत तैसे फल पावति ॥ सुष दुष देत व फुजन भ्र
मावति ॥ सभ सो करत धरम की नीता ॥ काहू सो न करत विपरीता ॥ दुषसुष

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

देतकाये करमनपदि ॥ करत आनीतनको ऊभित्र आए ॥ हमतो वै छरहै मित्र
आसन ॥ औदस शत नरक जग नष नासन ॥ १९ ॥ दोहरा ॥ वीर ब्रह्मह नपत्री
रकरजमको कीओप्राणम ॥ औदश सतनरकबनकहो समनकेनाम ॥ २० ॥
॥ चौपई ॥ धर्मराजमुषवचनकहेतव ॥ सुनऊन पत्ति सुतनामकहो तुम ॥ म
छपुत्र हैतो पहमारा ॥ महाबलीकिसो जगसारा ॥ दुतीयसीततनधरतकेपत
तन ॥ तृतीयोपितवऊतकरत तचत रक्षक पुजोई कैछविरोधन ॥ पंचमवाईसम
हादार्णगति ॥ षष्ठम सुतमम सलकपीडामति ॥ लघुवंधीनोजानषमल मुति
२१ ॥ दोहरा ॥ छर्द रोग दश मोवकुषवई इकादशजान ॥ द्वादशहि चक्री
दशवषिरकी स्वासप्रमान ॥ २२ ॥ चौपई ॥ अवरअनेकहमारे पाइक ॥ ते सभहे
जीपनकेघायक ॥ देहजगतको दुषसंतापा ॥ जैसा कोया होइश्रीः पापा ॥ द्विज
हत्यारा होयजो कोई ॥ स्वासकासजवसौं हति होई ॥ लघुवंधेति मरत संसा
रा ॥ सोजानउजीघगो हत्यारा ॥ उदरसूलजो नासहोइनर ॥ गुरुतल्पी सभ
तेहत्यावर ॥ उदरवाइसौं तजतपराना ॥ परधनहरनहारतनुजाना ॥ २३ ॥
दोहरा ॥ राजरोगसौं जो मरै कुलहत्यारासोइ ॥ धातुचुराइ हरैः किचकीसोहत
तहोई ॥ २४ ॥ चौपई ॥ जोनरतमरै महादुषभारा ॥ गमनेब्राह्मणीतेऊरारीरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प०५
३३५
अश्वमेध

जोनररूरतपित्तसोंमरहीं ॥ वस्त्रचुरावनहारउचरहीं ॥ रोगअजीरणहोइविना
सा ॥ करीहोइस्त्रीजिननासा ॥ त्रीणदूमलतानासुजोकरहीं ॥ अंगभंगपीडार
तेऊनरमरहीं ॥ अतिपुरपंचकजोनरहोई ॥ पक्षाघातमरेजनसोई ॥ जिनवुन
गहकोआगलगाई ॥ मरेअगनिजरहेदुखदाई ॥ २५ ॥ दोहरा ॥ सुतावचधनलेल
वलीकरतनछूटेविचार ॥ तेसेअग्नीरोगसौंमरतनलागतवार ॥ २६ ॥ चौपई ॥
जिनदुखदीपाहोइचितमाता ॥ पुनेगुरुदेवदुखाएभीता ॥ ताकोहोतगलतग्र
हभारी ॥ देपहमेहमरैदबारी ॥ जोअपुनागुरुलोपनकरई ॥ सोनरपी
डरोगदुखमरई ॥ निंदीसाधकरेनरकोई ॥ रोगसलेखमसोहतुहोई ॥ दूज
दोषामरेहेकफरोगा ॥ चित्ररोगपरनारसेंजोगा ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ जेनरकहे
कसाषवचकेपवाइतिःहोई ॥ महादुषीतेऊमरैंतिःउपचारनकोई ॥ २८ ॥ चौपई ॥
कंन्याहमवस्त्रगोदाना ॥ देहकुठौरविचारनजाना ॥ तेऊरोगतेमातृभि
पानकि ॥ छोडहिएकओरजुरजावसि ॥ आकुलताहितविचतकरमनकरहीं ॥ मस्तकत्व
दरपीरसोंमरहीं ॥ कंपाकरतिजिनकछुनिजाना ॥ रोगभगंदरसोहतुपाना
जेनविस्वासघातछलकीनो ॥ कछुपछरीमकतदुखतिःचीनो ॥ रोगएकसोंआठ
प्रकारा ॥ पीडादेतसकलसंसारा ॥ २९ ॥ दोहरा ॥ दुखपावेतहिंसमजगत आप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नेअपुनेकरम ॥ भारुमुनराबजअवर परिहरकजमनभरम ॥ ३० ॥
तिनपुरषनदृशभजननकीनो ॥ परेकरमफासीदुषदीनो ॥ लागेआइ
अनेकरोगतिः ॥ तजिदीनो हएकोसिमरनजिः ॥ हमकोनिरदेकहो भूपति
तुम ॥ करनकरावनहाररमापति ॥ धरमराइकेवचनसुनेनृप ॥ मनमांहि
सीतलभयोनराधिप ॥ पुनपूछीपुत्रीपतिवाता ॥ कहोसुइतुवरकुसलाता
पुनकेन्यामुषवचनउचारे ॥ मनवचकेमसुनतातहमारे ॥ ३१ ॥ म
जकीनो यमराजपति पहृजोब्राह्मणरूप भेषधारपापपतिभयोतिसेधरमस्व
रूप ॥ ३२ ॥ कारमनध्यानतुलाइलीयामुज ॥ कीयोधरमपतिसाचकहो
तुम ॥ कारदीनतामोहाबुलायो ॥ तातेहमरेगृहचलिआयो ॥ मालकुमारइ
हिवचनकहेजब ॥ नृपआरंभकारजकीनोतव ॥ महिरतलगानगनाउ
वीरब्रह्मजीपहिरषवठायो ॥ प्रथमैवचनधरमसोंलीनो ॥ तौकारजकोउ
द्यमकीनो ॥ मांगलईजमतेदोऊवाता ॥ तांकोप्रगटकहोविष्याता ॥ ३३ ॥
रोगनआपेमुजनगरचड़िआवेअएकोई ॥ शस्त्रबांधजनुजतहांजीत
देहमुजसोई ॥ ३४ ॥ सन्यमानलीनोजमराजन ॥ वीरब्रह्मनपलायो
पहवचनन ॥ तबवेदीरचिकारजकीनो ॥ आगनतदानद्विजनकोदीनो ॥ विवध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१०२
३४६
अश्वमेध

प्रकारसमझीसाजा॥ वीरब्रह्महदीनीजमराजा॥ अश्वगजरथबजदी
ये कुनकुमर॥ मणिमुकताहलरतनपटंबर॥ वीरब्रह्मतनपवचन
कहेपुन॥ करीदीनताधर्मराजसुन॥ हमतुमरीकछुसेवनकीनी॥ ट
तिलकरनकोदासीदीनी ३५॥ दोहरा॥ पात्र प्रभुतुम ऐकरैदासीदीन
तिलकरनकोदासीदीनी ॥ जहमारीतोहि ३६॥ चौपई॥ इहप्रका
मोहि॥ दीपाकछुलीयकुनतुमनाजहमारीतोहि ३६
रकीनोतनपकाजा॥ पुत्रीआहदईयमराजा॥ जन्मजेपहछीविधिगोई॥ जे
भिनुकहीसंपूर्णसई॥ परवकथासुनजुम्ब्रपाला॥ क्रोधयतियमआयो
तितकाला॥ नारदवचनराखिमनमाही॥ ओपतेक्रोधनिवारतनाही॥ वी
रब्रह्मतनपठठ्यो जोरकर॥ बडुतविनेकीनीपसःअवसर॥ सुनजुपुत्रकारज
जेवमय॥ पडुवीचअवसरवनगठो ३७॥ दोहरा॥ श्रीधरधरकोनामसुन
ले पायनुवमुजहाथ॥ कुसकीयोसेयायमुनिःकारनअरजनसाथ॥ ३८ चौपई॥
श्रीपतिवडुतउतावलकीनी॥ इतपठनकीविलमनचीन्ही॥ ऐसेहीहर
ठाकुरनायो॥ तातेतुमहिनइतपठायो॥ तुमतोअपपुत्रहमारा॥ नपवच
सुनतमक्रोधनिवारा॥ धर्मराजतीपसीतलभयो॥ हरषतकछुसभामहि
गयो॥ निरखविचारकीयोमनश्रीपति॥ वचनउचारकहेअरजनप्रति

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

उचतनजातेबिनुहथपलीजै ॥ बीरब्रह्मकोअजसुनहदीजै ३८ ॥ युद्ध
नभेतहथबांधिघावीरब्रह्मराजान ॥ कंन्यावरतेकोदाघालसेनापहजा
यजान ४० ॥ चौपई ॥ उचतनयुद्धकेन्याकेपतिसो ॥ यहविचारउपजेयाभ
पतिको ॥ पुनिआगेदेष्योयदुनाथा ॥ तातेधनुषततुमानपहाथा ॥ दोनोवा
तकठननपभई ॥ कैसेलरैसुताजानदई ॥ मुजसुनमुषजगेपुनकैसे ॥ त
जैसासुसमुझोनपोसे ॥ युधविनानपसुतसनहिहोई ॥ नहीतविंदकरैत्र
लोई ॥ युद्धनकीयोबांधकेबाजा ॥ छत्रीधर्मधिकारहिराजा ४१ ॥ स
भराजानपयैकहैमंत्रीसेनमराइ ॥ पत्रीलेकेउरभिहयोछत्रीधरमलजाइ
४२ ॥ चौपई ॥ वीरब्रह्मकेसुतकोऊनाही ॥ जोअबयुद्धकरैरनमाही ॥ यु
द्धकरननपकोनहीजोगा ॥ पुत्रीपतिसोनिंदतिलोगा ॥ ...धरहैनपतिकी
लाजा ॥ तातेकीजेवहीसुकाजा ॥ पुत्रजमाताएकसमाना ॥ धर्मशाइसुरावल
वाना ॥ यमसुसुरेकायछकरेगा ॥ नहिहसावैलोगलरैगा ॥ कायरनहीमहाब
लभारी ॥ युद्धकरैगाधर्मविचारी ४३ ॥ लोगहसावैगानहिपरैससु
रकीलाज ॥ वचनकीयाकारजसमे ... पतिसोंयमराज ४४ ॥ जोतुमप
रिशत्रुचढिआवै ॥ तुमकोआइत्रासदिषरावै ॥ तिनसोंहमकरिहैसंग्रामा ॥ संग्रा
करोतुमरेसमकामा ॥ वचनकीयायमराइपहीतब ॥ आइवनेपिऐसोंअबसर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अब ॥ नहि कहा वैरागा उपहासा ॥ अपना प्रण नहि करै निरासा ॥ ऐक समान सरस
रस रूता ता ॥ जु जै गा यम सुवल समद माता ॥ कृस्न वचन सुनके यम अवनन ॥ श
सुनी यकर क्रोध भयो मन ॥ ४५ ॥ दोहरा ॥ गर्व मिटा वन धर्म नृप यह गात र
वी तुपाल ॥ सुत सुव डावन भगा तकोट हृकन प्रभ नंदलाल ॥ ४६ ॥ सोरठा ॥ क
पा सुनै तमराइ रोगुन व्यापै तिः पुरख ॥ पंचास मो धपाइ अस्व मेध के यज्ञ को
॥ ४७ ॥ [illegible] ॥ पंचास [illegible]
॥ ४८ ॥ सम सा [illegible] ॥ चौपई ॥ तेभन कहे स
न कुभ पाला ॥ यम कर सा सुली पेत तकाला ॥ अरजुन के सनमख चलिगा
यो ॥ युद्ध करन को उद्यम भयो ॥ इति पारथ उद्दम रनि कीनो ॥ वानि यना कह
यकर लीनो ॥ अरजुन प्रति हप वचन उचारे ॥ यमस समान वलन हितु मारे
रहु अब सरचरती पै हनु मानो ॥ वेका है सुभ रइ स्यानो ॥ जाव कृत हा वगाग
कै लया वा ॥ श्री घुउ ठि चल कुबिल मुन हीला व कृ ॥ १ ॥ दोहरा ॥ अरजुन गया पास
मेर परहन वे तदेखा जाइ ॥ हाथ जोर जो अमृत की यो वचन कहे प्रगटाइ ॥ २ ॥
चौपई ॥ चले हनुवंत तुरंत कृस्न बुलायो ॥ मुझ को हरि तुम पास पठायो ॥ यज्ञ क
रावत नृपति युधिष्ठर ॥ अश्व सकल अमोक यो कर ॥ कहो पवन सुत कपि क
वन है ॥ देख्यो कवहन न सुन्यो अवन है ॥ पुनि तोको नहिं न पछि चानो ॥ कहुन का

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जतु मसो जी पगाने ॥ हो इन अत्र नहीं प्रगुण जह ॥ हम को उचत जाउ नहीं तहां
कति चलि जाउं कहम अमु पावों ॥ राम ध्यान तजि कतहि न जावों ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ पा
रथ पकिरि आओ तहां छांडे जह गोपाल ॥ हनुमाना आवित नहीं सुनऊ अवन
नंदलाल ॥ ४ ॥ चौपई ॥ बोले कृष्ण सुनऊ वच पारथ ॥ बढ्यो ताइ सिद्ध करसा
रथ ॥ पवन पूत को कहो ए वचन ॥ बोलत तो हि राम सीय लछमन ॥ सजि
आरति चलो आरजन तब ॥ पूजा न मित सम ग्री लेसव ॥ चंदन भी पाल अछि
तसा धा ॥ संदुर अपूगे धली ये हाथा ॥ धूपदीप ले सम सुगंध वूर ॥ चलि आ
यो पारथ संभेरव ए ॥ नमसकार की नो कर जोरे ॥ बिनै कहत हो सुन अभिमे
रे ॥ प ॥ दोहरा ॥ सजि आरती प्रणाम करि वचन कहे प्रगट ॥ ५ ॥ तुम्हें बुलावत
पवन सुत श्री लछमन रघुराइ ॥ चौपई ॥ रघुपति नाम सुन्यो जब काना ॥ ब
लै कै पाट चल्यो हनुमाना ॥ नमसकार कीनो अरजन को ॥ प्रमुदित भओ महा
सुख मन को ॥ नीके है रघुवर लछमन सीय ॥ कुशल पूछि आनंद भयो जीय ॥ प ॥ ब
न पूत मन माहि विचारयो ॥ पूछ समे मुख राम संभारयो ॥ पारथ सर्कव तांत सुना न
यो ॥ तत छिन हनूमान चलि आयो ॥ कृष्ण भेष रघुवर को धारयो ॥ लछमन
रूप प्रद्युम्न संभारयो ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ जनक सुता बपु लें मी भेष बनायो स्याम
हनूमान पावति भयो मन पूरन परयो पगराम ॥ ८ ॥ चौपई ॥ बैठे पवन सुत हरष

३४

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तपगलछमन ॥ पुनिलागोसीताकेचरनन ॥ वारवारसीसपगधारत
केसनसोंचरननकोझारत ॥ दीनवचनमुखहरखुभयोतीय ॥ चरनोद
कसोचवनकरलीय ॥ कुशलपुछस्यारतीउतारी ॥ पवनपूतसनेह
तीपधारी ॥ उततेयमुसेनासुतिस्याउ ॥ सतनिसहितजायमाहितिसो
ठ ॥ पुत्रनकोस्याज्ञायमदीनी ॥ सेनासावधानकरलीनी ॥ ६ ॥ दोहरा ॥ मुख
तापरागुज्ञसहितपसोचमकेमाहि ॥ समसेनाव्याकुलकरीकिशक्तिनहि
त्यानाह ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कारण्यसेनाधरणीरीतव ॥ कपिगारोव्याकुलरोग
झसव ॥ एकनकेतनवाइदुखारी ॥ एकनउदरसूलदुखभारी ॥ एकनको
तनतप्तप्रवेशाकीय ॥ एकनकेकफकेठरोकीलीय ॥ एकनगलगृहगेह
मुखितनर ॥ पंडरोगदुखएकगरोमर ॥ रोगएकसोंस्वासप्रकारा ॥ सेना
कोदुखदीयोअपारा ॥ ७७ ॥ दोहरा ॥ इकनरकोपतसोंतत्वरएकनकेतनता
सेनादीयोसताप ॥ ७८ ॥ चौपाई ॥ निरखताचकृतरोग
प ॥ रोगएकसोंस्वासम हेमूर्छापरेधपि ॥ मूर्छितभईधनंजेसेना ॥ कुरे
रेतिधरनपर ॥ कुरभमस्या हे
साचेदसवेलोकीनेना ॥ हनिस्याज्ञाकीनीहनुमाना ॥ उठ्योपवनपूतव
लवाना ॥ कोव्याहनुवतवचनउचारे ॥ स्याज्ञादीजेप्रभुहमारे ॥ जोतुमरी

ग

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आज्ञा वर पाऊं ॥ ऐ के सरप मम जन उद्धाऊं ॥ किन मति प्रलै करो पम मले
का ॥ लोप करौं दै हौं अति शाप ॥ १३ ॥ दोहरा ॥ रजनी औरै नृप संगाइ कै लोपक
रौ पम लोक ॥ बुमरौ आज्ञा नाथ्य जी दे ऊं मात घमसो ग ॥ १४ ॥ चौपई ॥ आ
ज्ञा ले हनवंत को ध्यावत ॥ पद्धपसार रोप बाधे सब ॥ पम को बांध्यो सत
न सम मेता ॥ सकल रोग तन भए अचेता ॥ पद्ध समेत एक ठेकी ने ॥ व ध्यान
कोऊ बांध सम लीने ॥ वऊ रो आंधी पवन बुलायो ॥ यम पुर मह धूम
प्रगटायो ॥ धूर उठी जो पानि रघु ठेर सुर ॥ लोप होन लागो पम को पुर
प्रलै होन लागो पम नगरी ॥ बुध्या कलेस परजा दुख सगरी ॥ १५ ॥ दोह
रा ॥ प्रलै होन लागो नगर की पाप वन सुत क्रोध ॥ आवत होइ रन मोहदु
बी दो बस हित दुख योग ॥ १६ ॥ चौपई ॥ उद्धम कीनो पवनपत तवा ॥ चमत्स
हित पम पठे रोग गन सव ॥ धर्मराइ मन माहि विचारयो ॥ पत्रनि सहित दुख
रन हारेयो ॥ दै ध्यो अ पुनाहात तविनासा ॥ मन मति करी कृष्ण की आसा ॥
हरि कौ कीयो ध्यान मुहूर्त नभ माना ॥ पम मम पते पहु वचन नव घाना ॥ राष ले हु हम
कौ करुणा करि ॥ लेठा रज हम को सरपानि हति ॥ पवलु हार वेनती करी ॥ तव हनवंत
इ घाउ रुधरी ॥ १७ ॥ दोहरा ॥ पम सुआ यो सर सुरे सहति ॥ लागो चर्न गोपाल ॥ पवनपत
नै राखि लेक पाकर रजनंद लाल ॥ १८ ॥ चौपई ॥ भगत वछल हरि दीन दयाला ॥ सुन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अ० ३२४
अश्वमेध

परम बचन भये सकृपाला ॥ करुणाकर हनवंत बुलाये ॥ धर्मराइ को कंठ लगाये ॥ महाप्रसंन भये गिरधारी ॥ धर्मराइ पर करुणाधारी ॥ वीर ब्रह्म राजा पुवतीसंग ॥ त्यों पांमेट प्रमुदित अंग अंग ॥ यम राजा तीनो संग आये ॥ रानी करी आरत्रि हाथ्यो ॥ तीनो आइ कृष्ण पग लागे ॥ दीनी भेट हरी ये अनुरागे १९ ॥ दोहरा ॥ सहित समाज सीरथ भये मणिन मुक्ता हल हीर ॥ हाटक आपत पचास लष भरि दीने यदुबीर २० ॥ चौपई ॥ ऐक लाष षोडश सहस्र पुन ॥ स्वेत दुपै दन्त पभेट दीपि चुनि ॥ कनक घंट उर मुक्ता जालर ॥ सहित तरु वारी षचत रतनन वर ॥ अंकोस समत आरु वासुष चित मनि ॥ दीये तुरंग अविषचत मनगन ॥ रथ भरि दीये दुकूर लष पारा ॥ तब सब थाने नहीं पारा ॥ तन मन धन न्यवछावर्य नकीनो ॥ सब सर वंस कृष्ण को दीनो ॥ हरि पग लागो सस्त्रर जमाता ॥ सुन अबन तीत्रिभुवनंता २१ ॥ दोहरा ॥ वीर ब्रह्म नृप बेनती करी बहुत मन लाइ ॥ हम से पतित तन्न को प्रभु दरस दीयो तुम आइ २२ ॥ चौपई ॥ सुफल जन्म हम राज्य भयो ॥ जन्म मरन का संभ्रम गयो ॥ जिः दरसन को शिव ब्रह्मादिक ॥ षोजत सुर नर मुनि सनकादिक ॥ जिः सेवत जग विविध प्रकारा ॥ सो प्रभु चलि आयो मम द्वारा ॥ जिः नि तप तप व्रत साधन ॥ यज्ञ दान रस नाना आराधन ॥ सुपने कहन दरस भयो कब ॥ सो प्रभु सावधान देखे सब ॥ हम रे चिन्मित सुधि करराजा ॥ की यो म्हरे मपग को साजा २३ ॥ दोहरा ॥ हम से पतित तन गति न मित तप उरे रस्याम भयाल ॥ जिः प्र

४५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सादर सुनभयो टहिक नप्रभ नेद लाल ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ तिनपुरुषन कोपरु
प्रमाना ॥ तिनके दृरव सहि भगवाना ॥ पंडवुके हरि सषाक हावसी ॥ सवधानने ज
सुषरूपजावसि ॥ हम सेप तितन मुक्तकरनहित ॥ नृपति पुधिष्ठिर रचो अस्वक्ति
पहि विचार हपि जीयतु मकीनो ॥ यज्ञ गृह स्यम हिपर तसचीनो ॥ पहृजानत जी
पच नकरयो ॥ हम से अधमन कौ मुकतापो ॥ तीवसनेक कृतार प्रभसे ॥ भग
गतनके दाकुन दुषगयो ॥ २५ ॥ दोहा ॥ नृपति पुधिष्ठिर यज्ञ हित तारे पतित अ
नेक ॥ भगतन को सुषदैन हित मनमहि की चोधिवेक ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ वीरब्रह्म नपह
रपजालागा ॥ कहतदीन वचन अनुरागा ॥ हमरा राजु देउ अरजन को ॥ मेउ मनुला
वरु तिनचरननको ॥ आपनी भगतदा तुम जदी जे ॥ श्रीपति मुझ अपुना कृपलो
जै ॥ वारवारवस्तुति नृपकरई ॥ प्रमुदित हीपै कृपालपगपरई ॥ नृपपपभये
प्रसंन्न गुपाला ॥ अपनाकर लीनो ततकाला ॥ २७ ॥ दोहा ॥ तुमरी मायासक
लजगतपति ॥ तिहि भ्रमाइली ली तुमरी मति ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ तुमही करनकरा
वनहारे ॥ कृपाकर रहु हमदासतुमारे ॥ हमको अतिप्रतापतुमदीनो ॥ सकर
लजीपन को अतिपतिकीनो ॥ सव विषै वलवानकी यो मुझ ॥ हकुराई हमको
दीनी तुझ ॥ ताते मो मन गर्व वढ़यो ॥ तुमरे सनमुष शस्त्र चलायो ॥ स्वामी
के सनमुष होदा सा ॥ पावै नरक जगत उपहासा ॥ २९ ॥ दोहा ॥ दीनो तुझ
मप्रभ नहि समझि ॥ तुमरा दास कहा उमुझ की नौद षन वडौ अवषसले हु वक्स जाउं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२०॥ पहुंच वचकरि हरि चरननि परे पुनि ॥ कृस्न आकर राज श्रीपति मुकुट मव गुन
पमपर भये प्रसंन तगुपाला ॥ कृपा करी हरषत नंदलाला ॥ वीर व्रजहन नृपवि वक्र
रजोरे ॥ विनती करि सुन जप्रभमोरे ॥ साधम नगर सुकृत तारथ कीजै ॥ करज
प्रवेस प्रजा सुषदीजै ॥ कृस्न करी आज्ञा सर जन कों ॥ पुर मति चले आनंदित म
न सों ॥ कीनो जाइ पुरी परवेसा ॥ हरि दरस्यो सभ नगर प्रवेसा ॥ २१ ॥ धं
न्यावती पुरी वसे बहुदिन श्रीनंदलाल ॥ मन करि तोष्यो कृस्न कों रानी सुरभूपा
ल ॥ २२ ॥ लोगन कों कल्यान करें हित ॥ आज्ञा करी कृस्न हरषत चित ॥ स
नी आदि सकल पुर नारी ॥ गजपुर जाइ कहै गिरधारी ॥ आज्ञा मान सकल पुर च
ली ॥ सनिध मैं जाकों घर सुभिर मली ॥ जेतक दर्व भेट नृपदीनो ॥ सभ हरि हस्तनपुर
पठिदीनो ॥ सैना साजि चले हरि पारथ ॥ कृस्न भयो अरजन को सारथ ॥ कौरदी को
तीः से मेतु रंगा ॥ गगन तिच मन भई हैं सेगा ॥ २३ ॥ चलि आए [illegible] द्वार वर पे
ताको मत करलयो ध ॥ मंत्री सहित परे सकल हरि जी पकीयो प्रबोध ॥ २४ ॥ स
थकृष्ण कीनी गिरधर तब ॥ भए सावधान योधे सव ॥ मंत्री आदि उठे सव सरे ॥ आर
तनि साथ चले प्रणपद रे ॥ उन्नरथ रथको चलायो तुरंगा ॥ चली जाइ सैना हय संगा ॥ सा
वाला पथी रहत तरह हो ॥ आवति भयो तहां ही ॥ [illegible] नृप रै तहां दूरि रह्यो ॥ दूत जा
आइ कहि सेको कह्यो ॥ देखी पवन [illegible] हम रीझि श्रम गो चर भयो ॥ २५ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशायनमः॥ दो॥ कह्यो सुन्यो जब ब्रह्म वचन अप्रवीर् ह्न नहीं आइ॥ र
घुहि कों पाछे चले सैन सहित यदुराइ॥ चौ॥ जो ऊ रथ चलत पवन वेगगत॥ ते ऊ सं
ग ले चल्यो रमापत॥ सभ परवत उलंघत पगचो॥ चंद्रहास पुर प्रापति भयो॥ तबही
आश्रिन अश्व निहासयो॥ सभ सैना आनंद जी पधारयो॥ नगर नाम मतिः कंतलपुर॥ गयो
तहां चलि अश्व युधिष्टर॥ विचरत तहां चंद्रहास सुत॥ विचरत तहां गयो तत पश्चत भूति॥ ते
पुर मद्धि बांध्यो निजधाम॥ अति उत्तम तुरंग अभिरामा॥ २७॥ दो॥ पाछें आरत तन चमू सों आ
ए श्रीभगवान॥ कंतलपुर देख्यो केआरतन चिंतामान॥ २८॥ चौ॥ कंतलपुर मद्धि विसा
ला॥ ऊंचा गड जगमगात रशाला॥ रतन खचित मनगन चमत्कारा॥ कहो परतन नहीं शोभ
अपारा॥ विस्मै भयो देख्यो पारख्य पुर॥ विसर गयो जी पश्च अश्व युधिष्टर॥ जगमगात गड कों
टकोतर व॥ नी शब्द न हो इक समान मांहां दुवि॥ चंद्रहास राजा तहां राजित॥ श्री प्रभु भगत नमद मे
तद्वि छाजत॥ वैष्णव प्रजा सकल पुर मांहीं॥ हरि सिमरन मद्धि सदा रहा हीं॥ २९॥ दो॥ ऐक स
रवे गल तहां राजा रंक समान॥ मणि मुक्ता रतनन खचित नद्दिश रवि कोट प्रमान॥ ३०॥ चौ॥ ते
रण द्वार अपार विराजत॥ ध्वजा चौ बंठी छवि छाजत॥ कंचन कलस गहन परि सोहैं॥
छवि जगमगाति कोट रवि कों है॥ रतन खचित मुकताहल जालर॥ हीरा लाल प्रवाल जड
इंतवर॥ मनगन अति जराइ छवि पावत॥ फटक कहत दृष्टि न हीं आवत॥ पौर खचित मणी
नील अपारा॥ मणि वैडूर्य पिकर टक जलकारा॥ हीरा लाल लजड इंत सभ द्वारा॥ कोट स्फटिक कों

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१॥

अश्वमेध

२५१

ति उठि धारा॥ महाप्रकास तम खोसमन के॥ राजा रंकपनी निरधन के॥ ५१॥ दो॥ चंद्रहास सी:
नगर मैं भगत महावलवान॥ और नि कोऊ त्रैलोक मैं इनके तेज समान॥ ५२॥ चौ॥ कुंतल
पुर अति अभिरामा॥ कोऊ कहत तिसर उपुर नामा॥ तग मग ज्योति रतन खचित सब॥ ऐ
कसार घी रैन दिवस छवि॥ चंद्रहासन्पभगत गुपाला॥ गौ ब्राह्मन हित वैष्णव चाला॥ विषि
या नाम तु वती जाके घर॥ इन सुमान महा सुंदरवर॥ गुन अपार सत्या शील व्रत॥ निसदिन
पतसेवत हरषित चित॥ भगत दोऊ रानी भू पाला॥ निस्चै वस कीनो नंदलाला॥ ५३॥ दो॥ गरु
निहार पार ध्यकै हस्तिनहो श्री भगवान॥ दिः भपत हय बांधियो तिः वलकै न समान॥ चौ॥ ऐ
सो गउ दे ध्याको ऊ नाही॥ इन हय गह बांधियो पुर माही॥ धारे दिवस पजनम हिरदे॥ कहा करत केसे
निरवहै॥ करठ न ठौर इन गह्यो तुरंगा॥ है है युद्ध भगत के संगा॥ तौलौ वीति जात मघ अवसर॥ भग
होइ व्रत नपति जो धिष्ठिर॥ तव कैसो काज नंदलालो॥ विन सहित पुन्याधर्म भूपाला॥ वेगकर हु कीति प्रभ अक
रुक्मापुत॥ व्रत पूरन करय जुधरम सुत॥ ५५॥ जैमनो वाचः॥ सुन राजा जव यह वच पारथ कहे
प्रकार॥ नभ मय अवतइक पुरुष देख्यो नैन पसार॥ दो॥ वैष्णव रूप वीन करली नो॥ हरिगुन गान
करत रसलीनो॥ आयो निकट देवरिष जान्यो॥ हरसै कृष्ण नारद पहिचान्यो॥ नमसकार कीतकीयो
परसपर॥ भयो अनंद मानपारथ हर॥ धाइ धनंजै रिषि पग लागा॥ कुसल पूछ तन मन अनुरा
गा॥ कह्यो विजै प्रति त्रिभुवन ताता॥ पूछ ले सुनाएदसो वाता॥ चंद्रहास की जन्म कथा अव॥ श्रव
न सुनो नारद रिष ते सव॥ ५७॥ अरजनो वाच॥ चंद्रहासके जन्म की कथा कहो रिषदेव॥ हाथ
जोर अरजन कहे हो कृपाकर हु सुरदेव॥ ५८॥ जैमनो वाचः॥ कः हि जैमिन कुरु राज नारद पहिप

॥२५१॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

फतविजै ॥ वाल्मीकऋषिसिरताज विद्यमान श्रीकृष्ण के ॥ ४९ ॥ नारदोवाचः ॥ कहि नारद सुनविजै
श्रवनधरि ॥ चंद्रहास की जन्म कथा वर ॥ नृप के गुन अति अमित अपारा ॥ प्रश्न होत तिन अति विस्तारा
गुन सुभाषि कहि सकत न कोई ॥ जानत इकु पद्मापति सोई ॥ दीनबंधु रहै पत प्रकारा ॥ जन्म कथा
नृप अति अनपारा ॥ कथा कहत लागे बहु बारा ॥ चंद्रहास गुन बिबिध प्रकारा ॥ तौन नृप कथा सुन
होइ जुगे काना ॥ तौन ही हो संग्राम विधाना ॥ ५० ॥ दो ॥ जो संग्राम कीया तु सैन प सों सन्मुख होई ॥
तीन लोक पद पद जु रैहि जीतन सकै न कोइ ॥ ५१ ॥ चौ ॥ विश्वभगत नृप अतबलवाना ॥ महा तेज
स्त्री रूप निधाना ॥ शस्त्र बांधि जब रण महि आवै ॥ अंतभिरब को ऊधीर न पावै ॥ तौन नृप की पायुध
देख भूगे ॥ नृप का बल पार ष पायेब हु भूगे ॥ अब रस इ रन होन न पति समाना ॥ नाहि जीत रूप सप भगवा
ना ॥ तीनि लोक मिलन आवत जोई ॥ नृप को जीति सकै न हि कोइ ॥ जो तुम युद्ध जु होई न साथी ॥ तुमरी
जो कोउ उबरै माता गुरु हत तु होइ ॥ नृप को जीति सकै न हि कोइ
नृप के रैखि नु मापा ॥ ५२ ॥ दो ॥ हरि बिनु पुरुषन बचै कोसम सैना हत तु होइ ॥ आनन तौ पग अभ्रू त तु रंग
मनौ तन जतन यो सोइ ॥ ५३ ॥ चौ ॥ अरु जो सुन तन नृप तुम हरि संगा ॥ आनन तौ पग अभ्रु त तु रंग
सिद्ध होइ तब पग पंथ धिएर ॥ मिटत हैं मन भाउ मित्र अरि ॥ तुम पद्ध तन नृप जन्म कथा अब ॥
वीत जाहि गे बहु तदिवस तव ॥ होइ न दो ऊ कउन इह कामा ॥ जन्म कथा सुनि पुन संग्रामा
भा मै प्रथम कथा सुनि लीजे ॥ जाते प्रथम युद्ध न कीजै ॥ जो विध कुहो ऑकी जै पार्थ ॥ कहो रेदे
को बात जपार्थ ॥ ५४ ॥ अर्जुनोवाचः ॥ सुन स्वामी पारथ कै है प्रथम मै कथा सुनाइ ॥ मो
मन व अवास नेहु अति पद्धक रमपद राइ ॥ ५५ ॥ चौ ॥ इत ने काज उचित तति काला ॥ कीर्तन
स ३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रू५५१
अश्वमेध

कथा दरसु नंदलाला ॥ दान पुन्य के विलमन कीजै ॥ कंन्या श्रतवंती पति दीजै ॥ ताते प्रथम मैं कथा सु
नावौ ॥ नारद स्वामी विलम न लावौ ॥ अस्तुति कीनी तुम जाकी ॥ सुज प्रभु जन्म कथा कहु ताकी
जग करत है श्री गिरवरधर ॥ नामु करत जगनपति जुधिष्टर ॥ यज्ञ करावतिं स्वांग (?) हरि ॥ स
हज लेहु किधौं युद्ध कर ॥ ५६ ॥ दो० ॥ यज्ञ बीच थोरे दिवस कुस विरद की लाज ॥ सुम को (?) तु ताकथु
नी सिद्ध करै हरकाज ॥ चौ० ॥ स्वामी मैं पर करुणा कीजै ॥ नृप की कथा सकल कहि दीजै ॥ जन्म
वृतांतु कहु नंदनंद को ॥ प्रभु भगत भए पद गोविंद को ॥ जिन पुरुषन की इह अद्भुत छबि ॥ कथा
सुनावो पि: (?) नृप की सब ॥ करुना करि मुष ते प्रगटावहु ॥ जन्म आदि मुष आप सुनावहु ॥ कैसे
पवित्र सकल नृप जैसे ॥ ऋषवर कहो कृपा करि तैसे ॥ जिनकी तुम अस्तुति कीनी ॥ ताकी कथा कहि
रस भीनी ॥ ५८ ॥ जैमनोवाच ॥ दो० ॥ सुन जनमेजै राजु जी नारद भए कृपाल ॥ प्रीत निरंतर पारथ होये
बोले रिषतन काल ॥ नारदोवाच ॥ चौ० ॥ सुन पारथ पन पकथा विसाला ॥ जन्म वृतांत कहौं भूपाला ॥
पावन पर्म सुधर्म निरसा ॥ राजु तिलक करालप्रति: देसा ॥ संपति नाहि कछु ती गहि ताके ॥ कें ८० (?)
पाइ जतन करि थाके ॥ बहुत होम यज्ञ तव कीने ॥ तुए वानदिजवरि कुई लीने ॥ नृप
कै वर दीनो सभ रिषवर ॥ एक पुत्र होहै तुम्हरे घर ॥ विष्णु भगत तन मैं प्राण पूरा ॥ रा
जन को राजा अति सूरा ॥ ६० ॥ दो० ॥ निजु कर्म निका अति वल्ली कीरति विमल प्रकास ॥ नि जुशं
वकु भगवान को करे मात पितनास ॥ ६१ ॥ चौ० ॥ पहकहि द्धजनि तमवन पिधारे ॥ नृप सुधर्म स्यंने
दजी पधारे ॥ प्रभु मर्ग भूपति ॥ जीप जानी ॥ जुवती कें दीनो श्रतदाना ॥ गर्भ मिस्यारानी को तव

हरत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दिन॥ जब दस मास भए पूर्न दिन॥ मूला को नक्षत्र जन्म भयो॥ निश के समे जनम्म सिंह लग्न पो॥ नृपसु
धर्म ज्योतकी बुलाये॥ आदर दे ब्रह्मण बैठाये॥ विचकर ज्योर वेनती कीनी॥ नृप कोइ जनम आसी साहीनी॥
राज्यो॥ वाचः॥ दो॥ सुन हो स्वामी सिसु जनम पूछत हो अब तोहि॥ जैसा है तैसी कहु देष कृपा कर मोहि॥ चौ॥
ज्योतक आगम द्विजन विचारयो॥ नृपसु धर्म सो वचन उचारयो॥ प्रथम मैं पाद मूला नक्षत्र जब॥ यहु फल
लुक तुम गहत जन्मो तब॥ प्रथम मै करै मात पित नासा॥ पुन कुल की रत्ति करै प्रकाशा॥ प्रले करैगा
राजु पिताको॥ चंद्रहास नाम शुभ याको॥ सुन महूर्त चिंता जीय भयइ॥ वचन द्विजन के सुन सुधि ग
न इ॥ पुंन नृप दिदे दान ठःहरायो॥ व्रध समे सुत को मुख पायो॥ दो॥ यद्यपि है रात्रु है कुल का वडे
प्रकासु॥ निगम कहित संतति रहति नरक माहि तिःवासु॥ ६५॥ चौ॥ धर्म ग्रहस्थ को फल तुम सुजभयो॥ वृद्ध
सभै हए सुत मुक्ति दयो॥ द्रढय हज्ञानन नृपति तीय कीनो॥ विधवत दान दुजन को दीनो॥ दै दक्षिना दै
जनि पग लागा॥ प्रमुदित नृप हीये अनुरागा॥ दै जब रस कल आनंदित भये॥ दै आसीस नित आश्र
मगाये॥ तीन मास को बाल कुमभयो जब॥ कौंतहल नृप चढि आयो तब॥ संग सेना लै माहा विशा
ला॥ घेर लीयो सभ देस कराला॥ ६६॥ दो॥ वैरी हतो सु धरम का कौंतहल भूपाल॥ चड आयो संग्रा
म हित घेर्यो देस कराल॥ ६७॥ चौ॥ इति तेन नृपसु धर्म चडु गयो॥ कौंतहल के सनमुख भयो॥ दुहु दि
पापु धमयो अतिभारी॥ नृपसु धर्म की चमू संघारी॥ चंद्रहास को पिता भयो हत॥ पैहीयी ईश्वर के भु
वनपति॥ चंद्रहास की मात सुन्यो जब॥ सुत सौंप्यो धाइ दासी को तब॥ सती भय रानी भरता सं
ग॥ आधीन जरायो अपुनो सभ अंग॥ तहि दिन कौंतहल भूपाला॥ आज्ञा फेरी देस कराला॥ ६८॥ दो
पन पुर अपुनो चलेया कौंतहल वलवाभि॥ दुष्ट बुद्ध को देच ल्यो दे शाक राल राज्ञान॥ ६९॥ चौ॥ दु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२ ॥
१५२

प्रभावे
५

ए बुद्ध कोदे शकराला ॥ दीनो कौतल हल भूपाला ॥ याको निजमंत्री कहि राखो ॥ नपस्य पुनेपुर प्रावत्तिम
यो ॥ बालवली दासी को नामा ॥ बालक ले राखो निजधामा ॥ दासीमन महि मंत्र विचारा ॥ मंतियप्रति
बालकु जाइ संघारा ॥ चंद्रहास को गुप्त कीयो तिन ॥ गोद उठाइ चली तजि पुरवन ॥ गई तहां जहां
हो तरि षीश्वर ॥ हर्ष भई मन निर्षि तपीश्वर ॥ दो ॥ दासी रिषीयन को कह्यो शरन तुमरी बल ॥ दुए
कुद्ध पापी भयो राजा देश भकराल ॥ ७ ॥ सो ॥ सती भयी सिसमात ॥ पिता बालको हतु कीयो ॥ कीजै रि

रा

प्रकु रात चंद्रहास तुमरी सरन ॥ ७२ ॥ चौ ॥ चंद्रहास मुष निर्षि रिषीश्वर ॥ भए मुदित मन सकल मुनी
श्वर ॥ भई प्रसंन रिषन की वामा ॥ निरषो सिसु सरूप अभिरामा ॥ बालक को बहु करी असीसा ॥ यह सि
सु को रक्षहु जगदीसा ॥ दासी टहल रिषन की करई ॥ पात्र सुद्ध लेपन मन सरई ॥ सेवा करै नरेंद्र
हि तै ॥ बालक दुरन करै दुहि तै ॥ तीन वर्ष को हुतो बालक तब ॥ सिसु ऊपरि रिष मया करत सब ॥ ७३ ॥ दो ॥
बालवली दासी विषा गल ग्रह उपजी आहि ॥ ता हित दुष सो मरि गई सिसु श्री कृष्ण सहाइ ॥ सो ॥
सुंदर कांति वील तनु सोहै ॥ तोतर बचन बोल मन मोहै ॥ बालक निरष सभ पर्चम सर्ब पादहि
रिषि अनुनती सिसु आइ चलावहि ॥ प्रीति पाल हि जीय पुत्र भाव धरि ॥ चंद्रहास तन मय प शेव कोहि
रि ॥ रिषि अनुकहे सिसु तउ भूपला ॥ बालकु परम भगत नंदलाला ॥ दिन को प्रतिप्रताप दिन मय पाछ
व ॥ ज्ञेश शशि क्रांति कलाप ऋणसव ॥ महा गौर सोभा अनगान तन ॥ प्यारे लागत सबका
हु मन ॥ दो ॥ नि जै करावत लोक ते के ऊ करावहि गान ॥ कैऊ भोजन भुचावहि कोऊ देहि पट

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स्नान॥१६॥चौ॥ कबहू अपसरा सिसु ले जावहिं॥ अति प्रमुदित है नित्य करावहिं॥ बालक पर
अति कृपा स्याम घन॥ ताते प्रिय लागत सभ के मन॥ सभ दिसि निरषत यावु ढूक रही॥ जो रिष
कहै सोई वक्षु कए ही॥ पुरुषन्त्री या कर है प्रीति पालकि॥ देव्य ऊंता तसु दर अति बालक॥
जब रिष जाहि करन ई सनाना॥ बालक रहत वृषि सवधाना॥१७॥ दो॥ गइ वा धोती लेब
ले सिसु रिषीयन के संग॥ रहत लकरत नित सभ की बालक हू दे अनंद॥१८॥चौ॥ को भिषं
त्रै आइ रिषन जब॥ बालक को ले जाहि साथ सब॥ बाल रिषन के पात्र उठावै॥ वचन सभन
के मन ठहरावै॥ जब रिष गोए करहि परसपर॥ तब यह बालक सुनै श्रवन धरि॥ रहै सभन को
आज्ञाकारी॥ हरि शेवक सिसु तत्व विचारी॥ मसु ए वी प्रसंन होत मन॥ बालक विनु न रहि रहै
ऐक दिन॥ आदर करहि चंद्रहास को॥ विस्मभगत आतम प्रकास को॥१९॥ जै॥नो॥ चः॥ दे
॥ जैमिन जनमे जै कहै नारद विनै संनाइ॥ ढुएबुध रिषीयन पग लागा॥ सरु ले चरन्याहि ये अनुरा
गा॥ चंद्रहास को रिषनि बुलायो॥ पात्र दीये कर संग चलायो॥ प्राप्त मध्य बेगन पढ़ारे॥ नेप गाहि
भोजन विविध प्रकारे॥ षट रस सिद्ध रसोई कीनी॥ भंडारीन प को सुध दीनी॥ नृप रिषीयन को
कह्यो उठु चलि॥ कृपा धारि भोजन का जै चलि॥ रिषी चले भंडार पर बीच वैठा रो चंद्रहास वरि
२१॥ दो॥ भोजन कर पाकु परोसइ ढुएबुध म पात्र॥ रिष भोजन तब ले वही प्रथम सु ती वा बहि वाल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ५ ॥

३५२ चौ॥ भैरव बरहे रिष चेड्र हासमुष॥ धिसर गये भोजन उपज्यो सुष॥ विसुभगत बालिक प्रताप पु
श्रमध प्ति॥ रिषी यचन मन भावत सुंदर रुत्ति॥ दुए बुध ने रिषी सम देषे॥ मुस कहि रिष पुन सिसु मुष पे
षहि॥ हो मुकरत रिषन पत्ति भिहारे॥ दुए बुध मन माहि विचारे॥ घातिन नहि भोजन रिष रूच
सो॥ दीन वचन नन पकहै सु बधि सो॥ कवनि श्रव जा मुज मत्ति परी॥ ले ऊन भोजन हासी करी॥ दर
दो॥ मात पिता या को कवन कवन गोत्र यह बाल॥ तिः पर तुम री श्रतम श्रा सो मुज कहो कृपा
ल॥ १४॥ रिषी स्व रो वा चः॥ बोले रिषी सुनन हु भूपला॥ यह बालक की सुघ मिधि माला॥ प्रिय पल
गत यहि रिषन सभन को॥ निर्धत मोह लेत है मन को॥ बालक विसुभगत श्रभीरामा॥ नहि जा
नित या को कुल नामा॥ मात पिता या के नहि जानहि॥ राजन को राजा पहिचानहि॥ भोगे जा यह
राजु तमारा॥ हस्ती सेना लछ श्रपारा॥ राजु करे गाधि वध प्रकारा॥ ले है गा सभ देस तु
मारा॥ १५॥ दो॥ भूपति तुमहि प्रशंसा है प्रति पाल हु यह बाल॥ होहि है तुमरे देस महि राज
न को भूपाल॥ १६॥ चौ॥ सस सुत्य मंत्री मुषमा षो॥ दुए सुभाव है दे महि राषो॥ दुए
बुध मन माहि विचारयो॥ मारन को उपाइ जी यधारयो॥ ढूंढ पहि मंत्र कीयो मन माही
व चन है षन कोमि पायो नाही॥ लोभ राज मत कीनो मन महि॥ पह बालक को मारो बन
मै॥ यहि बिचारनि श्चै जी मकीनो॥ भाउ विरोध मान चित लीनो॥ जनमे जा प्रकृति तेमिन प्र
ति॥ संचित रुदे दिन वरु ऊमुन पति॥ दो॥ दुए बुध जीय जान नही पै षब चभिपा नोहि॥ तो फुनका

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

है बालसौ बैर कीयो मन माहि ॥ ७८ ॥ चौ ॥ सुनरा जा जे पुरुष दुए भक्ति ॥ तिन जीय नहीं बिबेक भ्र
ए मत्ति ॥ पदपि इष बचन सप्रम भानहि ॥ बिसुध पावचभेदु न आनहि ॥ तदपि दुए बुध मंत्री
षल ॥ मनछहरायो सिसमारो ढूंलि ॥ बिषयाबि सुअं ब्रत करि जाना ॥ राजभोग सुष लोभ
लोभाना ॥ जो अबिबेकी नर अज्ञानी ॥ पाप बुद्धि नित जीय छहिरानी ॥ जिन पुरुष सुबिबेक
मन माही ॥ हरष सोगु तिन के कछु नाही ॥ ७९ ॥ दो ॥ कुसंग सुसरप त्यों जानही तिन के भग
तबिचार ॥ कारलेत है यातु तिमक रत भ्रीअगीकार ॥ ८० ॥ चौ ॥ जु बतिनि के राक सीप्रभा
नहि ॥ दरसन की ये लेत हर जानहि ॥ भोगकीये ते बीर तहर ही ॥ तन मन हानि परा क्र
म करहीं ॥ संतन देषि चरित नारि के ॥ महाराक सी जीय बिचार के ॥ भगतन के भय पाव बन
ही ॥ सम गत नाहि दुए मन माही ॥ यद्यपि जानत मय ए बबचन ॥ बैर भाव पुन करत दुए मन ॥
षल सुभाउ नही जात हीये ते ॥ बुरा करत है भला कीये ते ॥ दो ॥ ईक दिन नारद पद्दि यो कमला स
न पहि जाइ ॥ यह म्रनर्थ की नोधि ता मगमद मग उपजाइ ॥ ८१ ॥ चौ ॥ मग को करत दुए तन घा
ता ॥ उच तन षी तुम को यह बाता ॥ जौ तुम करत बिबेक बिचारा ॥ मगमद को षल जीभ अंगारा ॥
कारलेत षल जीभ जगत तब ॥ बचन हीन तब होत दुए सब ॥ तब षल को उनसंत दुषावत्ति ॥ भ
गत जगत मकि बजु सुषपावत ॥ त्रासु न करत साध मन माही ॥ कतिय हकाज की यो तुम नाही ॥ तबी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५॥
२५४ पितामहि विरंचि रुद्र दीनो ॥ सुनि नारद रिषि धर्महि प्रदीनो ॥ ८३ ॥ दो ॥ जैसा दादुर भुजग मद रजती दुष्ट नर रसना
सुजेध माहि ॥ साध दुष्ट न महि अंतर राति वक कछु होत नाहि ॥ चौ ॥ जो कस्तूरी होत तजी भ घल ॥ कर्पूर लेत ताके
जग अतिबल ॥ दुष्ट साध तब कौन पछानत ॥ बोले बिनु कैसे तग जानत ॥ साध दुष्ट तब होत दो
ऊ सम ॥ यह विचार नीप जानकी यो हम ॥ रसना हीन होत पल ताऊ ॥ बारंभ ताल षसकत
न काऊ ॥ सहन शील मन होत दोऊ जब ॥ अंतर लखन ही होत कहत तब ॥ दुष्ट जगत महि साध दुख
वति ॥ ता ते घोर नरक गति पावति ॥ ८५ ॥ दो ॥ रसना साध सुधा वसति देत पर मसुख लोग ॥ दु
ष्ट जीभ महि विष वसत ताहा सुमन ही योग ॥ ८६ ॥ चौ ॥ सुन तन मैं जैन पति श्रवन धरउ ॥ दु
ष्ट समाव न मिटति तन मम भरे ॥ दुष्ट बुद्धि रिष वच सति तान्यो ॥ तो पुनि वेर भाव नीच ठान्यो
पद्म पिभ चाद रस साधु संग ॥ भि द्योन दुष्ट भाव षल अंग अंग ॥ कुसम गत सां वैर करि यो
मन ॥ शांति न भइ सर्ध के दरसन ॥ जैसा भाजन रच्यो मुरारी ॥ तैसी वस्तु तांहि मध धारी ॥ दुष्ट
देहि मैं गरल निवासा ॥ साध वपुष महि सुधा प्रकाशा ॥ दो ॥ दुष्ट पुरुष अरु सांप को भिन्न एक
सुभाइ ॥ हित सों दूध पिलावई तो पुनि विष प्रगटाइ ॥ ८८ ॥ चौ ॥ जे मनो वाचः ॥ जैमनु कहै सुन
रुम पाला ॥ जो भर दुष्ट बुधि विकराला ॥ निंद्रा साध करत मत भावत ॥ ऐक मुष ते दश मुष करि गा
वति ॥ दिन दूकरत नरक काहू को जब ॥ श्रवन सहत सधार सुन है सब ॥ नीच कर्म काहू के देषहि ॥ नेत्र अ
नेक धारति पेषहि ॥ पुध वर्ष कर है लोगन संग ॥ देसहत सभ जवल धारि तज अंग ॥ दुष्टन के लच्छि ॥ ५ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नहैंऐसे॥जनमेजासुनलीजहुतैसे॥दो॥पुनऋषीपनकेवचनसुनदुएबुधिमतिमान॥वै
ररचौपुनिभगतसोंतानवृझअज्ञान॥१०॥चौ॥जैसेस्वातीवूंदमेघजल॥परतऐकभां
ईसमजलथल॥औरपरतरवनउपजावती॥सीपमांहिमुकताप्रगटावत॥कदलीम
हिकरपूरहोतितव॥स्वातीवूंदपरतऊपरजव॥सोइवूंदअहिमुखअंतरूनाही॥विषहु
ऐवसततसकलघरमाही॥दुएपात्रमहिहोतदुएमति॥साधअपथ्यमहिहोतकु
गतरीति॥११॥नारदोवाचः॥दो॥दुएवुद्धियदपिसुनेवचनऋषनसुभसार॥तदपि
मंतरकीयोमननवालककोसंघार॥१२॥चौ॥भूपतिजीसंसोअतिभयो॥मंत्रीकोवुलाइ
तवलयो॥नृपतीसचिवसोंवचनउचारे॥हमबतातसुननेमहमारे॥सत्यवचन
भीखतद्विजऐसे॥कहोविचारकरौंअवकैसे॥उः॥वेधयहवालकहतिहोई॥वेगउपा
इकीजीयेसोई॥कह्योकबुधिरायसुनिलीजे॥तौदिडराजुवालहतिकीजे॥वेगबुलाइ
लीयेचंडाला॥तिनकोआज्ञाकरीभूपाला॥१३॥दो॥चंडालनसोंनृपकह्योपकरउठि
चकोवाल॥ताकेवनमहिहनुकरउसुनतचलेततकाल॥१४॥चौ॥जैमुनोवाचः॥
जैमिनुकहैसुनहुभूपाला॥देखतफिरतवालचंडाला॥वालकहिरनसमैनहिपाव
हि॥कैविपुस्फरआश्रमसमहिंजावहि॥वहुहासशेवकयहदोनाथा॥शिशिक्षनसेरेवचन
केसाथा॥ऐसवहुभयेप्रशंनवालपरि॥तिनसोसिरकेधरेभालकरि॥सालग्रामवालके

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

३५५
अमेध

दीनो ॥ चंद्रहास समाचेध धरि लीनो ॥१०५॥ दो० ॥ कुसुम सरूप अनूप हरि तिन दीना ॥ जो सिर बंधे बालप्रवी
ना ॥ कैहो भगत प्रापति तुमैं हो है वडो भूपाल ॥१०६॥ चौ० ॥ मन प्रकाश भयो बालक मना ॥ नि
र खसाल ग्राम के दरसनि ॥ गुरू उपदेस हृदै ठहरायो ॥ भगत भाउ जीय प्रेम वढायो ॥ प्रीत
साहुमस लक्षमन पर नि शदिन ॥ हीये ते ध्यान छुटै नहीं इक छिन ॥ वैठी ते चलत सोवत अरु जा
ग्रत ॥ करउ न शालग्राम सिसु त्यागत ॥ प्रतिमा कों जानै भगवाना ॥ तामें वसहु बालक के प्रा
ना ॥ तिन बालन सें पाई वचरत नैंत ॥ आयो तहाँ खेल वे के हित ॥१०७॥ दो० ॥ बालक खेलक रत तह
गुटै रे पाथर साथ ॥ सुंदर पाथर निरखयो चंद्रहास कर माहि ॥ चौ० ॥ सकल बालकनि वचन
उचारे ॥ चंद्रहास सुन मीत हमरे ॥ यह पाथर अदभुत तुम रे कर ॥ चेदे हो हि इस के सुंदरव
र ॥ हम सों कहीं कहा तुम लीनो ॥ स्याम वरन तुम कोड्डि के नदीनो ॥ ताको फोर करउ गुटैलन की जै
॥ वारि वालकन को सम भदी जै ॥ चंद्रहास मुख वे वच कह्यो तवी ॥ यह गुटैला मुझ सिर बंदी नोअ
व ॥ नहीं फोरों हमरे यह प्राना ॥ तांते मुझ कुल सत्य प्रमाना ॥ दो० ॥ करी न क्रीडा उठि चल्यो
चंद्रहास तति काल ॥ पकरली यो तव बालकोठा ठेडु ते चंडाल ॥११०॥ चौ० ॥ जहाँ सिसु दुष्ट व
धप हु आने पू ॥ मंत्री भिर खम हासु खमान्यो ॥ चंडालन प्रति वचन उचारा ॥ वेग संघार करहु इ
ह तमारा ॥ वालक कों रथपर बैठावहु ॥ या ही छिन वन माहि ले जावहु ॥ तहाँ जाइ नासु सिसु की जै ॥
कारट अंगुरी कर पग लीजै ॥ ले आवहु अंग मुझ पासा ॥ होय प्रतीत भयो इपनासा ॥ तुम को देहों दर्वु अपारा
वेग करहु बालक संघारा ॥१११॥ दो० ॥ सुन भूपति सिसु ले चले भैंकारी वन माहि ॥ वालक हरि जस गावही
ले २

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सोक कछू जीय नाहि ॥११२॥ दो॰॥ चंद्रहास हरि के गुन गावै ॥ मनि मन हि कछु त्रास न हि आवै ॥ वचन क
है चंडाल वर रस पर ॥ यहि सिसु महापुरष शेव क हरि ॥ बलि क विष्णु रूप लष ली जै ॥ ता ते यह हत्या
न हि की जै ॥ अंगुरी काट देहि भूपालि क ॥ वन महि छाडि चल हि यहि बालि क ॥ सिंघ व्याघ्र अहि वन मै र
है ॥ सो यहि सिसु को भक्ष करहि ॥ इक चंडाल वचन यहि कहै ॥ सुन सभ और मै न गहि रहै ॥११३॥
चौ॰॥ अवर दुए मान कहि न हि कहै करहि सिसु नास ॥ जो जीवत बालक तज उन्न पहि मे
क रै विनास ॥११४॥ दो॰॥ जौ हम सिसु जीवत तजै जाही ॥ प्रगट हो इक वहु पुर माही ॥
तौ मारै परवार हमारा ॥ तति छिन करै स कुल संघारा ॥ यह विचार की नो मन माहि
सब ॥ रथ पति लियो उतार बालक तत ॥ चंद्रहास सिमरन हरि कीनो ॥ श्री नंदलाल
चरन चितु दीनो ॥ श्री गुपाल त्रिभुवन पति स्वामी ॥ सकल घटा के अंतरजामी ॥ परमात
म जगत गुरु देवा ॥ शिव ब्रह्मादिक करहि तिस सेवा ॥११५॥ चौ॥ सभ घट व्यापक आतमा ॥ अगति ग
ति अपर अपार ॥ चंडालन के हृदै तुम इछा करी संघार ॥ दो॰॥ यहि वचन कहि हरि ध्यान ल
गायो ॥ सालग्राम लै मुष महि पायो ॥ वासुदेव है सभ घट माही ॥ व्यापक सकल भेद कछु
नाही ॥ चंडालन मन ज्ञान भै योतव ॥ चंद्रहास के चरन परे सब ॥ अंगुरी काटन को मन दी
नो ॥ अवर भाव जाय तेतउ दीनो ॥ लागे कहन परस पर वाता ॥ जो हम सिसु कर तेन हि घाता ॥ तौ ह
म होत महा हत्यारे ॥ पाच पाप जग महि अघ भारी ॥११७॥ चौ॥ पांच पाप अति कहु तहि मन घोर विकरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२॥
३५६
उमेध
व

ल॥ तेनहीकी जुक्ति परस्पर वचन कहत चंडाल॥ चौ॥ बालक घात ब्रह्म हत्या बुर॥ गुरुतल्पी मद्यपान सु
रनहर॥ ऐसे पाप करै नर कोई॥ घोर नरक प्रापतितिः होई॥ कुमति ए हो है नर सोई॥ ताही समै जन
म पुन मरही॥ साठ सहस्र वरष भोगै दुष॥ ताके होइ न ही कछू सुष॥ चंडाल रूप हम तद्रूढ कीनो॥ दु
ष भाउ जीय तेत जैदीनो॥ अंगुरी काटन मन ठहरायो॥ पकर भगत कोध रनि ठहरायो॥ ११९॥ जैमनी
वाचः॥ दो॥ सुन नरिंद्र इह ऐसे पकह्यो यह तो वनेन वंत॥ राजु देउगा बाल यह अंग हीन होइ गो गा
ति॥ वर॥ चौ॥ अंग हीन को राजु योगा तै से करो जो हस हिन लोगा॥ श्रीपति सिसु परकरु ए
धारी॥ करपुग षट अंगुलि रचि धारी॥ हस्तपाद अंगुरी तिः बाला॥ नैतन काटि लई तिः काला
त जोग बाल भै कारी वन मै॥ चंद्रहास आनंदति मनि मै॥ लागे बालक पग चंडाला॥ आपुने
भवन गये तत काला॥ बालक उमग कृष्ण गुन गावै॥ महा उच्च स्वर ध्वि सुनावै॥ १२०॥ दो॥
जैमिनो वाचः॥ सुन जनमेजै नृपति वरसि सुहरि भगत सुभाउ॥ अस्व मेध के पंच कोइ कथे
सो ध्याउ॥ इती श्री भारथ पर्वे जैमिनि अस्वमेधे ध्याने इक वंज सो ध्याय हरि कन परण जाना॥ पण
स मस्त॥ जैमिनो वाचः॥ सुनु जनमेजा नृपति महा वर॥ चंद्रहास तन मै शोवक हरि॥ गहि वरव
न स्तुति मै कवि शामा॥ ध्वचरै तहा बाल सुर ज्ञाना॥ सुदति उच्च स्वर हरि गुन गावै॥ की तैन सों दि
न रैन गवावै॥ कृवहुं निरतकर तनटवर गति॥ प्रेम मगन गदगद मन हरि षति॥ सुन सिसु
नाद मैन मगमये॥ शुवद उचारन तेरहि गये॥ बाल बुध सुन मोहे षग मृग॥ चलि आए सु
म मर्दित बाल हि गा॥ दो॥ सुधा मधुर सफल ल्याव हि षग मृग सम मेलहि बाल॥ दूध देहि सुगवाल
के मृग मर्दित मन घाल॥ चौ॥ चुनि सुनिप सुपंछी चलि आवहि॥ पंषीभजाइ नीर वरषावहि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वन के जीव सकल सुनि मोहैं ॥ हरष सोग वालक नहीं पोहैं ॥ जैमिनि कहै सुनहु कुरुराजा ॥ हरि रा
खत भगतन की लाजा ॥ नृपति कुलिंद चढ़ो अखेट व्रत ॥ वन मध्य कीयो प्रवेस हरष विचित ॥ वास गढ़ का
सहस भूपत वर ॥ दुए वृद्ध मंत्री का अनुचर ॥ वर खवर समेत पहुचावंत ॥ दुए हुं दुहुं दिस कहावत
३ ॥ दो ॥ प्रापति भयो कुलिंद नृप मध्य जो पहुंचे वन मध्य ॥ कृस कृस वालक करै मन संभ्रम कछु ना
हि ॥ ४ ॥ चौ ॥ गावत भगत ऊंच स्वर करी ॥ धुनि कुलिंद के स्रवनन परी ॥ कृस कृस सुस्वर नाम उचारत
हरषत हीय सुर सिघ र पुकारत ॥ सुन कुलिंद कीनो विचार मन ॥ वालक शवद
पछ्यान्यो स्रवनन ॥ तहीं ओर नृपति चलि गयो ॥ निरख्यो सिसु अचरज मन भयो ॥ खग
मृग सकल वाल ढिग ठाढे ॥ फल जल लीये हीये हित वाढे ॥ उरग न फनन छत्र कीन विर ॥
वालक ऊपर रहे छाउ कर ॥ ५ ॥ दो ॥ महा तेजस्वी सिसु निरख वचन कहै भूपाल ॥ मात
पिता तुमरा कवन नाम तुमारा वाल ॥ ६ ॥ चौ ॥ वालक सौं पूछत वच राजा ॥ कहु सिसु वच अ
ऐकी: काजा ॥ सम भवि तातु मुझ भी पसुनावहु ॥ वंस आपना कहि समझावहु ॥ कवनि कि
तग हरि वर बन आयो ॥ कहि दुरघन तुम वन निवठायो ॥ ऐसे वच पूछै भूपालक ॥ उत्तरु दी
यो मुदित मन वालक ॥ मात पिता अपुना नहीं जानो ॥ वंस अपने को न पछानो ॥ जानो यह हि
प्रीति माम मुझ हाथा ॥ नि:प्रसाद हम भयो सनाथा ॥ ७ ॥ दो ॥ दुखदा सो विचरत रहै रछक हमरे
स्पाम ॥ हरि विन कछू चाहो नहीं चंद्रहास मुझ नाम ॥ चौ ॥ वालक कहै सुनहु भूपाला ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हम वन आइ परयो इह काला ॥ हरि बिन अवर नहीं मन आसा ॥ निशदिन मोहि भगत की प्यासा ॥ सि
सु बच सुनत भयो मन ॥ हरि षत्त ॥ हृदे विचार कीयो पृथिवीपति ॥ यह बालक वन महि इह आवस
र ॥ सुत नहि तमु अप्रापति कीनो हरि ॥ मै मागत थो सुत हरि पाही ॥ सो प्रभु मुझ दीनो वन माही ॥ बाल
कु कैसे आइ माहा वनि ॥ संतत हित दीनो मुझ स्याम घन ॥ ८ ॥ दो ॥ यहि वन महि आगे कहू हे व्यास
न्यो न कान ॥ तहा आइ प्रावेश भयो ईश्वरी श्री भगवान ॥ १० ॥ चौ ॥ प्रगट कीयो आपुन सुत ईश्वर ॥
मुझ को दीयो कृष्ण करुणाकर ॥ वन महि प्रगट कीयो इहि बालहि ॥ मुझ करि कृपा दीयो नं
दलालहि ॥ मन बच क्रम हम रोय हताता ॥ मन बांछित फलु दीयो विधाता ॥ अंक चड़ाइ लीयो
न्रप बालक ॥ निज पुर चलत भयो ततकालक ॥ चलत वीच मग भूप विचारे ॥ संतत कहू न
हुती हमारे ॥ महा तेस्वी विष्णु भगत वर ॥ तो सावक दीयो मुझ को हरि ॥ ११ ॥ दो ॥ बालक ले
निज गृह गयो प्रमुदित हीये कुलिंद ॥ बढ्यो सुख मे मुझ दीयो हरि सुत बरन गत गोविंद ॥ १२ ॥
चौ ॥ न्रप प्रवार आनंद त भयो ॥ सुख सम्पत उपज्यो दुख गयो ॥ गृह गृह गावत मंगलचारा ॥ सि
षर बजंत्र पंच तूर अपारा ॥ द्विजवर निगम पढ़हि न्रप द्वारहि ॥ देत असीस ते शबद उचारहि ॥ न
र नारी न्रप देत वधाई ॥ लेकर भेट सकल पुर आई ॥ बंदीजन प्रमुदित जस गावहि ॥ मन वांछित
न्रप ते फलु पावहि ॥ न्रत्य करे अपछरा मुदित मन ॥ दान दीयो कुलिंद न्रप अनगन ॥ १३ ॥ दो ॥ गो
कंचन पट रतन मणि मुक्ता लछ अपार ॥ न्रप कुलिंद सम द्विजन को दान दीयो हित धार ॥ १४ ॥ चौ ॥
लोग कहै न्रप ही भिस्तारयो हरि ॥ बृद्धि समे सुत दीयो कृपा करि ॥ बडे भाग भूपति के भये ॥ इह अव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सरमैसुतप्रगटएे ॥ बीसगाउ केजेपरधाना ॥ भेटाल्याये बौऊतविधाना ॥ दईअसीसनिर
षबालकछवि ॥ करप्रनाम मुनिजगामगएसव ॥ सुतप्रतापलषिविविधप्रकारा ॥ भोजनषटरसवसन
अपारा ॥ पंचवर्षकाबालभयोजब ॥ मनविचारकीनोनरेसतब ॥ १५ ॥ दो ॥ मौंजीबंधनकर्मअब करो
बालकेयोग ॥ करोयथाविधवेदकी भलाकहैसभलोग ॥ १६ ॥ चौ ॥ न्रपमनसायज्ञोपवीतकी ॥ करी
समग्रीवेदरीतकी ॥ बोललीयेब्राह्मणषटकरमी ॥ सुचपावनवरमहासुधरमी ॥ सुभनक्षत्रसु
भघरीलगनगिन ॥ सिसुयज्ञोपवीतठास्योतन ॥ विधवतदाननृपदीनो ॥ गोसहस्रविध
वतदसकीनो ॥ गावतनारिसुमंगलचारा ॥ बाजेबजनअनेकप्रकारा ॥ बंदीजनहरषतजसुगा
वहि ॥ नत्यकरहिनटनृपतिरीझावहि ॥ १७ ॥ दो ॥ ब्राह्मणबंदीजननटन न्रपदीनोबहुदान ॥ हरष
तहैजाचिकचलेमनबांछितफलमान ॥ १८ ॥ चौ ॥ बहुतकालबीततगयो ॥ सातवरषकाबालकभ
यो ॥ चंद्रहाससहरषतमननिसिदिन ॥ श्रीगुपालसिमरैतमनछिनछिन ॥ धनुहरिनामसुआननहीभाषे
रसनारामनामरससाषे ॥ नरनारीकोहरिसिमरावे ॥ स्रुतिवचकहिलोगनसमझावै ॥ व्रतुईकाद
शीदानविधाना ॥ संध्यादिकतीरथईशनाना ॥ जबकासिसुकीनोपरवेशा ॥ सभपुरमनस्रुतिकीऊप
देसा ॥ १९ ॥ दो ॥ विपउचारतनिमधुनिजहगहपरमहुलास ॥ जबकासिसुप्रापतिभयोपुरमहिधर्म
प्रकाश ॥ २० ॥ चौ ॥ व्रितइकादशीसभपुरधारे ॥ नरगुवतीवृद्धअरुबारे ॥ जितःअरुषिंतैअगनिउत्पारा ॥
तिनपुरषनकोकरैधिकारा ॥ पुनिताकोबडबेदंदडावे ॥ शास्त्रनसिक्रतिविधसमझावै ॥ सभपुरलोगन
कोप्रियलागै ॥ अमृतवचनकहैअनुरागै ॥ मंत्रीप्रजाकहैभूपालक ॥ नगरपुनीतकीयोइनबालक ॥ भए

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२५८
समेध

लोककीतेऊनीपैविमलमति ॥ सभपुरक्षिमरनुकरनरमापति ॥ २१ ॥ दो ॥ यज्ञहोमव्रतपुरससकलक
रतदेतवहुदान ॥ धूपदीपपूजाकरतवलकवचनप्रमान ॥ २२ ॥ चौ ॥ सुननृपकुलभगततमता
ता ॥ सदाकहततसुखहरिकीवाता ॥ जहांवैसेहरिकथाचलावै ॥ हरिसमरनविनुस्रवरनभावै
गोष्टसुवैठकरेजिनसंगा ॥ तिनकोसुखउपजतिसभअंगा ॥ उठनवदेहिसभनप्रियलागै ॥ पु
रतजिसभक्षिसकेअनुरागै ॥ मनमहिकहैहरहरवैठाठैग ॥ दूरनहोइकहीआगैछिग ॥ जहां
कहांसिसुमंत्रवितावै ॥ दैसवचनकहधर्मदिढावै ॥ २३ ॥ दो ॥ सुननृपहृदेविचारयासुजस
करतवहुलोग ॥ विद्यादेनप्रशस्तहैकृष्णभगतसिसुयोग ॥ २४ ॥ चौ ॥ यहलविचारकीनो
नृपतीमन ॥ विंदागुरुबुलायोब्राह्मण ॥ वालकुदीयोविप्पकेहाथा ॥ वेगपढावहुइनरुचिसा
था ॥ प्रभुविद्यादीजैइहवालक ॥ कृपाधारदिजवरततकालक ॥ सिसुकोदिजनिजगृहलैयो ॥ निज
रवसरूपअनंदितभयो ॥ जहांवैठवालककवटसाला ॥ तहांवैठापासुतभूपाला ॥ नृपसुतको
पाटीलिखदीनी ॥ हरखततहिकरुणादिजकीनी ॥ २५ ॥ दो ॥ वालकसुनैननगुरुवचनपढैनमनक
रप्रीति ॥ रामनामअरुहरहरदाऊरसिनारटैप्रतीति ॥ २६ ॥ चौ ॥ धिगधीगुरुदिजवचनउचारे ॥ चंद
हाससुनतातहमारे ॥ पढननहीराजसुतनकीरीता ॥ निशदिनदैस्रवहरमनप्रीता ॥ चा
हीयतहैनृपसुत ॥ तुमनहीसीखहुहीयेप्रीतपुत ॥ विषअरुहररतुमरेकिंःकामा ॥ विद्यासभ
विद्यासेग्रामा ॥ आइवनेजहांयुद्धसमाजा ॥ हैअरुहरतहांसरैनकाजा ॥ तुमसीखहु
योगा ॥ राजनीतसुखपावहिलोगा ॥ २७ ॥ दो ॥ विद्यासकलपठहुतुम
विद्यासभनृपसुततनकोपठननहीप्रीतिसार ॥ राज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नीतसंग्रामहितसी बहुविधप्रकार॥२८॥ चौ॥ चंद्रहास सो वासरः॥ चंद्रहास सत वहै कर जोरे॥ विनतीक
हुसुनो गुरु मोरे॥ सत्यवस्तु कृष्ण को नामा॥ विद्या सकल अवर केः कामा॥ राम नाम अक्षर सति दो
ऊ॥ ईन सम विद्या अवर नि कोऊ॥ जिन को तुम भाष्यो केः काजा॥ पठन योग नहिन सुनि राजा॥ राम
नाम ते मुख वर जात कति॥ ह देव विचार हुय हनन मली गति॥ यह दोऊ कृष्ण नाम के अक्षर॥ आवत का
म अंति के अवसर॥२९॥ दो॥ अंतिकाल के समे सम भिल वे उगति पर वार॥ राम नाम अक्षर तहा जपत
जपावत सार॥३०॥ चौ॥ राम नाम अक्षर दोऊ सारा॥ आवत काम अंत की वारा॥ हरिजस सम विद्या न
ही कोई॥३१॥ जाके पठे मुकत नर होई॥ विद्या अवर सकल यग बंधन॥ कृष्ण नाम अघ को निकं
दन॥ जीवत महा ऐ हेत कल्याना॥ मुक्ति मेल सिमरन भगवाना॥ द्वै अक्षर धर्म घ को निस्तारयो॥ हरि
सिमरन प्रहलाद उबारयो॥ अजामेर गनिका जिः तारी॥ कृष्ण नाम सुन गुन अनुसारी॥३२॥ दो॥ ग्र
स्यो ग्राह गजराज को द्वै अक्षर सिमरयो नाम॥ टरि कन वेल मुनकी मोहि न॥ मुकता पायो घनस्याम॥३३
॥ चौ॥ द्वै अक्षर कति मोहि हता वोऊ॥ सो विधि मोको कहि समझावो॥ जपत नाम हरि शिव ब्रह्मादिक॥ हरि ह
रि जप उधरे सनकादिक॥ राम नाम जपत तरे अपारा॥ वरनित होत ग्रंथ विस्तारा॥ कति हरि नाम विवर्जि
त गुरु मुरु॥ यह सुनत जो हम सा चुक हो तुरु॥ यहि कहि हरि गुन गावन लागा॥ ऊ चीसुर कर मनु अन
रागा॥ गावत गीत सु जसु नंदलाला॥ सुनधुनि सम मोही चटसाला॥३४॥ दो॥ सभ पारीया तजवाल
कन विद्या दई विसार॥ चंद्रहास डीग जोर कर ठाडे हित चित धार॥३५॥ चौ॥ चंद्रहास मोहे सभ बाल
क॥ दास भी उधुन सुन ततकाल क॥ निरखनिरख नपसुत मुख की छवि॥ आज्ञा करी मोह रहे सभ॥ अ
रपठन सब छुन तजि दीना॥ मन लै कृष्ण वरन मन दीना॥ लागे सिमरन करन गोपाला॥ जेतक बाल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कपि चट साला॥ सभ भिल मंत्र कीयो तिः अवसर॥ द्वा अदार सुभ पठहि प्रीति कर॥ चंद्र
ह्रास के संग तम हो वृहि राम नाम जप सभ दुष बीवहि॥२६॥ दो॥ विप्प हृदे अचुर तुभयो
निरष वालकन भ्राति॥ सकल पठन ते रहि गये मन महि उपजी शाति॥२७॥ चौ॥ चंद्रह
सको विप्प उलायो॥ वाह पकर कै नप पाहि ल्यायो॥ अपुना सुत लीजै भूपालक॥ सुक
लषि गारदी ये इन वालक॥ निशदिन यह हरि के गुन गावै॥ षिद्या वीच मनु नि ठहरावै॥
करै अलप उम्र सुर सों जव॥ रीज अशक्तो तिहि वाहि कसव॥ मोहित लेत त्रैलोक ऐक छिन॥
भा विति अ वूरने राम नाम विन॥ सभ सिसु पठने ते रहत गऐ॥ पाटीया तटीया के वसि भऐ
३८॥ दो॥ प्रोहित के वच अवन सुन क्रोधित भयो नरेस॥ सुत अपनाहि जते तीयाद तभयो उव
देस॥३९॥ चौ॥ सुत ले गयो इकांत ठार नृप॥ लकुडी लीनी हाथ घन राधिप॥ नागा सुतहि उरा
वैन नरपत॥ सीष हमारी सुनहु ढुढ एमत्त॥ कत तुम पढहु जलकुल की रीती॥ सी घतन होरा
जेकी नीता॥ पत विराना अपुना खोई॥ कोट उपाइ करै तिन कोई॥ विद्या पठत काहु दुषमा
नऊ॥ कति तुम हृदे विवेक निआनऊ॥ विद्या विनु आवऊ षिः कामा॥ छत्र धरम सीषऊ संग्रामा
स ५०॥ दो॥ मरापतक हाइके पठऊन हि कुलरीत॥ तुम सीषऊ संग्राम मविध छत्र धरम कर प्रीति॥
५१॥ चौ॥ विद्या विनु तुम कै सहि न कामा॥ नाना विध सीषऊ संग्रामा॥ दैस अछर वर हरि को सि
मरन॥ तिन सो तुम प्रीति करत पीतमन॥ छत्र धरम छलाए तुम नाही॥ समझ देषु वालकम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नमाही॥ वेदअरुरजानतसभकोइ॥ तेपढिराजनीतिनहीहोइ॥ नपकुलिंदसुतकोसमझाव
त॥ बहुप्रकारदृष्टांतदिखावत॥ षटगर्भणीहोतगर्भयुति॥ हरिपहिमांगतिहैऐसोसुत॥ ५२॥ दो
॥ गायगर्भरानीकहतिहैऐसेसुतहरिदेहि॥ सहनशीलसंतोषयुतधीरधरनसमजेहि॥ ५३॥ चौ॥
होततुरंगीनीगर्भसहितजबऐसोसुतहरिपहिमांगततब॥ धावततरुनमहिसुजसकरैजग॥ दो
रितकवहनपैरथिमैमग॥ होहैजबसिंघनीगर्भयुत्ति॥ श्रीपतितेमांगतिऐसोसुत॥ माहाबलीज
जसंडविडारति॥ महासूररनकवृनहारति॥ जबमृगालणीगर्भणीहोई॥ मंदकरममांगतसुत
सोई॥ भएवसतुभहनकरिहैसभ॥ वनमैवसमलीनमनतव॥ ५४॥ दो॥ होतब्रह्मणीगर्भयुति
हरिपहिमांगतितात॥ बहुजावकसुतदीजथैभुजकोत्रिभुवनतात॥ ५५॥ चौ॥ नपइस्त्रीगर्भयु
तहोई॥ ऐसोसुतमांगतहैसोई॥ रणसूराहरिसुतभुजदीजै॥ पदमापतिकरुणाभुजकीजै॥ स्रात
उदारसुंदरविशालदविप्रणपराविद्याजानैसभ॥ जानैसकलराजकीरीता॥ चलेसुमारगीकु
लकीरीता॥ ऐसेवचनकुलिंदसुनाए॥ चंद्रहासकोकहिसमझाए॥ वेदवचनभाषेभूपाला॥ हरि
रखशोकउपजेमनहीवालिक॥ ५५॥ दो॥ ईतिश्रीमहाभारथेपरवणेअश्वमेधपार्वनेकथ्रसौ
तकभाषेविष्णुभगतचंद्रहासकुलिंदसंवादेविवंजेमाध्यायःसमाप्त॥ ५६॥ जैमिनोवाचः॥ जैमि
नुकहिसुननृपतजपारथ॥ नारदकहतकथाप्रतिपारथ॥ पुनकुलिंदमुखवचनउचारे॥ विद्या
पढिलेनातनहमारे॥ राजनीतहकलीसंग्रामा॥ दैसरहहमरेकिंःकामा॥ कहिविधिकारकरहोपितमा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प॥
२८०
मेध

ता॥ कुलकी रीति तजउ जिन हीं ताता॥ तुम रामसुत तिलारवउराजनु॥ तुम गृह मैं भयो प्रवेश मुरु भामन॥ तुमके
करौ धर्म प्रमाना॥ है अरु कर तजि सुनहु जिनि काना॥१॥ दो॥ जौ है अरु कर जो तुम पढउ धर्म ग्रहस्ती साई॥ रा
जसुतन के वाली ये शु लूक रै हैं संग्राम॥२॥ चंद्रहासोवाचः॥ चौ॥ बोल्यो चंद्रहास सुन ताता॥ तुम सेंक
हीं सत्य यह ताता॥ है अरु कर मुज पठि विशाला॥ ता ते सखा भयो नंदलाला॥ सखा हमारा भयो कुश
जब॥ होई शत्रु ते मित्र जगत सब॥ इन सम सविद्या अवरन कोई॥ है अरु नर सिमरे गति होई॥ है यह दो आ
स्त विद्या को॥ जैः पर कृपा देति हरि पिता को॥ सिमृत शास्त्र वेद पुराना॥ सभ पढु कृष्ण ते ज्ञान विधनाना
रे दो॥ अंगीकार जु नहि करै ते पठ वौ कोटि काम॥ जो सह ई श्रीपति करै मनु पावै विश्राम॥३॥ चौ॥ ताके
सदा सहाइ गुपाला॥ ताके शत्रु कैसे नभे पाला॥ अप सिधन नवनिध दासी उन॥ है अरु नर सिमरन की नेइन
अंगीकार करत गिरधर जब॥ भगत प्रताप प्रकाश होत तब॥ ज्ञान दरद हो वै जिनके घर॥ मन वच क्रम
जो सिमरत श्री हरि॥ सहत जे ती विद्या सभ आवति॥ मनवांछत फल सभ सुख पावति॥ विद्या कवन वा पुरी ता
कु॥ नैन निधवार वुहा पितवा के॥५॥ मंत्री प्रोवाच॥ दो॥ कहि मंत्री राजा सुनहु कटु वच तुम नहि योजा॥ कु
सभ भगतन करता तत तुम कीये कतार थलो गा॥६॥ चौ॥ जब कासि सुपुर कीयो प्रवेसा॥ सकल नगर ढो नो
उपदेसा॥ दुष्ट वुद्धि जिन हरि नहीं ध्यायो॥ तिन पुरषन को ज्ञान दिठायो॥ जे नर हो तऊ धम अज्ञा
नी॥ तिन नहि त्राण पायो सारंगपानी॥ ऐस पुनगरी भयो धरम पुत्र॥ पर हु बालक हरि भगत महा
दुत॥ पुर महि कष्ट भगत प्रगटायो॥ हृदे समन हरि जस प्रगटायो॥ जे हु पुरषन को चैतन की
ना॥ तुमरा सुत हरि भगत प्रवीना॥७॥ सुनहु नृपति पहु ताता तुम सभ पुर को ध्याक त्याना॥ तुमराकु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लतोसभतरयोमनवचक्रमतीयताने॥८॥ चौ॥ मंत्रीकहतसुनहुराजाना॥ वालककतुमअजहुकहससमाना
इहवालककीसेवाकीजै॥ मरावचनमाननृपलीजै॥ यहसुनिसुनृपदुषपावनयोगा॥ इनसभकीये
कतारष्यलोगा॥ सचिववचनसुननृपपकताना॥ अपुनेहृदेविचारयोज्ञाना॥ हैप्रसंननृपकंठ
लगायो॥ काढिदीयोभैतमुकतयो॥ चंद्रहासमनमाहिविचारा॥ सत्यकहततहैपितामहमारा॥ ९
दो॥ चंद्रहासहरिभगततवदेष्योहृदेविचार॥ सत्यकहिततहैपितामुज्जविद्यापढनअचार॥ चौ॥
भगवनमुषतेश्रुतिउपजाये॥ पढनयोगनिश्चेजीपताने॥ पितावचनमेटननहीयोगा॥ वेदपठ
नप्रससस्तसभलोगा॥ पितुआज्ञालेचल्योहरषमन॥ धावतिभयोद्वारगुरुततछिन॥ प्रमुदितरिदेव
सगुनगावे॥ हरिसिमरनविनुकछुनसुहावै॥ प्रोहिततनरवआनंदितभयो॥ चंद्रहासजवदरसदे
दयो॥ गुरुकोनमसकारसिसकीनो॥ द्विजअसीरवादबहुदीनो॥ ११॥ दो॥ पाटीलैसोदिजभाववैसोदई
भगतकेहाथ॥ शिवसुतउसतुतिप्रथमलीखपुनउसतुतियदुनाथ॥ १२॥ चौ॥ तःपाछैदिजनिगमअचारा
लषदीनोसिसविदधप्रकारा॥ चंद्रहासअभ्यासकीयोअति॥ शीघ्रसुविद्यापढयोविमलमति॥ चारदेवश
मद्दिपढ्योचारश्रुति॥ षटशास्त्रअठदसपुराणयुति॥ चौदहविद्यासभपढलीनी॥ कछुभगतिवरवि
मलनकीनी॥ अस्त्रसस्त्रहयनालप्रहारुन॥ नेगतफेरअरधसरमारण॥ कुःकवाणविद्यासंग्रामा॥ सक
लपढीवालकअभिरामा॥ १३॥ दो॥ जेतिकसिमृतवेदविधआगमविविधप्रकार॥ सभमुद्रीकआकर्णनै
पठतनलागीवार॥ १४॥ चौ॥ पठेविसरतीनआवहनपुन॥ अवररराकसासकलवुधिगुन॥ मल्ल
अखाड़ाउठवैलनो॥ नेजावाजीअसफेरनो॥ जेतककविद्यापावेथितवापरि॥ सभपढलीनीशाघ्रम
गतहरि॥ संध्यादिक [illegible] विध॥ जानधपा [illegible] सिरध॥ जोकछुविद्यारची

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥१२॥
२६१ (?)
श्रु
धा

गुपालहि॥ सकल पढी वालक ततकालहि॥१५॥ दो॥ गुरुमुख कहत तबै लंब है पढत न लागै वार॥ वाल
कपक्षि पंडित भयो विद्या विविध प्रकार॥१६॥ चौ॥ अचरज भयो निरष सिसु ब्रह्मण॥ वेग पढी वालक विद्या
गण॥ मुष ते कहति सु पढ जाई॥ वालक पढो कुसकी न्याई॥ आगे पढ्यो जु तो कीधो वालक॥ सुनते सी
पढि उठि ततकालक॥ गुर मन माहि अनंदित भयो॥ हाथ जोर आगे चलि गयो॥ प्रीति वहुत नैन तीकी
नी॥ कैधो हम तुम को सीष दीनी॥ पढ्यो भवन हित पढन हमारे॥ विनो करी मुरु पीता तुमारे॥१७॥ दो॥ त
व तुम को मृपति पढ्यो पढन हमारे ग्रेह॥ मुरु ऐसे जीय जानि यो कृपा करी हरि तेह॥१८॥ चौ॥ हम तो से
मन माहि विचारयो॥ दारिद हम रा नृपति निवारयो॥ हम है विप्र सदा अरथाधन॥ तुम को नीरष भयो हरि
षित मन॥ नृप सुत मम ग्रह पढन पठायो॥ हम रास कल दरिद्र निसायो॥ दीषी अवर तुमारी रीता॥ त
मन पढ उठ विद्या करि प्रीता॥ तव हम मन हा[र्षि]त वस भयो॥ तुम को लै मृपति पहि गयो॥ तुम को वहुत तात
सम रूयो॥ वहु रि पढन तुम मम ग्रह आयो॥१८॥ दो॥ अव तुम पढि पर न भयो शास्त्रै वे द पढैन॥ मुरु दीजे
गुरु दक्षिना नचति निगम विधदान॥२०॥ चौ॥ चंद्र हास गुरु को लीयो साथा॥ आए नृप पहि प्रफुलत माथा॥
नमसकार दृढ जको नृप कीनो॥ विप्र अशीरवाद नृप दीनो॥ पुनि ब्राह्मण मुष वचन उचारे॥ कुसरूप
नप तात तुमारे॥ महा प्रीति पढवे को कीनी॥ विद्या सकल पान करि लीनी॥ मुष ते कहति वारम रुज लागे
भिसु चो वठति पढ्यो जिम आगे॥ राजा सुनत अनंदित भयो॥ मुष सम हउ पजेइ वगायो॥२१॥ सुत समे
तलागो चरन प्रीति तके मृपाल॥ देवन पाई गुरु दक्षिना वालक भया ततकाल॥ चौ॥२२॥ सुजस विधायो मवं द्रढ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सबको॥ विस्नु भगत अति भ्रम प्रकासको॥ सकल पुरी मधि धरम दिडायो॥ ब्रत ऐकादशी सम भनवता
यो॥ सम पुर धारित है अबंठ ब्रत॥ ग्रह ग्रह को तें न होत रसापति॥ आंन तत्र नाज देत तब धर
नी॥ द्रुम बहु फल गत जात न बरनी॥ औरम धिर तन उपजन लागे॥ मंगल भऐ अमंगल भागे॥ आज्ञा
करी दसोधि गपाला॥ सरताप बनई द्रवर नाला॥ २२॥ दो॥ धरम काशपानी पवन इंद्र अगनि यम राइ
आज्ञाकारी रहै सभ सिस केसरत तस भाइ॥ २४॥ चौ॥ न्रप कुलिंद जी यवात विचारी॥ बालकु भयो राज अ
धिकारी॥ श्रीपति सदास हाकि ताको॥ राज देउ मन व चकारि ताको॥ बीस गाउ का हो होत अधिपती॥ जीवत
दे रु राज सुत हरखत॥ वृद्धि अब स्याम भई हमारी॥ राजु देऊ बालक हितकारी॥ न्रपत ति छिन जोतकी
बुलाऐ॥ सुभ दिन लगन मुहूरत आऐ॥ बीस गाउ के मुख्य है जेऊ॥ लीये बुलाइ न्रपति जन तेऊ॥
२५॥ दो॥ अब्र त वेला सोध के छत्र धरयो सिर बाल॥ सिंघासन बैठाइ के राजतिलक दीयो भील॥ २६
चौ॥ चंद्रहास सिर छत्र झुलावत॥ नगर लोक मंगल सभ गावत॥ प्रेम मै कीयो कुलिंद प्रणामा॥ विस्नु
भगत बालक अभिरामा॥ अवर सभ सुत लोग पग लागे॥ सूरवीर मत तम न अनुरागे॥ दुंदभ बजे अ
नेक प्रकारा॥ बाजित धुन पंच तूर अपारा॥ सहग्रह भयो आनंद महा अति॥ गावत गीत नारनर हरख
त॥ हाट पाट आंगन ग्रह छाये॥ वासु आगर जाम धि चिर काऐ॥ २७॥ दो॥ अए सिद्धि नवनध तहा ग्रह
ग्रह कीयो प्रबेस॥ चंद्रहास राजा भयो धरम प्रकास्यो देस॥ २८॥ चौ॥ कंचन कल सभ बन सभ सोहै॥
जग मग जोति कोटि रवि को है॥ ग्रह ग्रह धुजा पताका रजती॥ चमर तोरण द्वार विराजती॥ राउ रंक
सभ ऐक समाना॥ पुर मधि बस्यो हरखु कल्याना॥ निरवैरी सभ जीय भऐ पुर॥ आधि व्याधि जंता
लगी ऐ दुर॥ करकर्म पुर मधि दुर गायो॥ तब का चंद्रहास न्रप भयो॥ जो कछु कृत्य तीस जगत की रीता॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

३६२ भा श्री मेध

तैसी सभै प्रवीन भक्ति प्रीता ॥ दो० ॥ चंद्रहास के राज महि कहूं न भयो गवियोग ॥ प्रेम भगति हरि वसि कीयो
सुखी कीये सभ लोग ॥ ३० ॥ चौ० ॥ चंद्रहास संग हरि जित राजेत ॥ निमख भगत की गैल न छाडत ॥ सालि ग्राम
जोरि बदी पोदाना ॥ सो ऊंनि सिद्धन बालक कू केम्याना ॥ जो कछु बालक मन सा धारे ॥ सो ई कारज हरि शीघ्र
सवारे ॥ मन वांछित फल देत पढ राई ॥ हरि भयो कामधेन की न्याई ॥ उमग उमग जस गैनु करत हू
रि ॥ वासुदेव का ध्यान हृदये धरै ॥ प्रेम मगन होइ नृत्य करै जब ॥ पाछें लागा कुलिंद फिरै तब ॥ ३१ ॥ दो० ॥ नि
शदिन रछा कु बालक सहस हरि गुपाल ॥ भगत अधीन रहै सदा दरि कन प्रभ नंद लाल ॥ ३२ ॥ चौ०
जीवत दीयो कुलिंद राजसुत ॥ वीसगाउ भयो भूपत महाद्युति ॥ ग्रह ग्रह सकल उछा भयो तब ॥ आ
नी भेट दिसि ग्राम कहू सब ॥ पर संक्षिप्त उं चंद्रहास के ॥ कृस्न भगत पूरन प्रकास के ॥ भले लोग
मे एपुरधाना ॥ भेट देहि जिम राज विधाना ॥ गण गंधर्व अपछरा नाचहि ॥ पावति दान जोऊ म
न वांछहि ॥ भाट द्वार कुल की रतगावति ॥ तिन परम गिम्र कृता पढिरावति ॥ ३३ ॥ दो० ॥ चोआ चंदन
अरगजा सकल तिपुर मस्ति मैर ॥ ग्रह ग्रह मंगल गावही वाजत है पंच तूर ॥ ३४ ॥ चौ० ॥ वि
नती करत कुलिंद कर जोरे ॥ सुन सुत कृस्न भगत सुत मोरे ॥ किन्ह अवस्या देहि भई मुझ ॥ वी
सगाउं का राजु दीयो तुझ ॥ अंजानो तै से अब कीजे ॥ अवर ब्रतांत स्रवन सुन लीजे ॥ हम के
राजडुए बुध दीनो ॥ वीसगाउ कान पमु करकीनो ॥ दुए बुध मंत्री बल वाना ॥ देस करात
ताहि इस्थाना ॥ उही हमरा है पध्विवी पत ॥ वीसगाउ दीने [illegible] कर खत ॥ ३५ ॥ दो० ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बरस षबर्ष तिः नृपति कों भेट देहु हम जाइ ॥ अब हम राजन तुम्ह हित दीयो सुनि फुवचन पितु लाई

२६ ॥ चौ ॥ हमरा वचनु श्रवन सुनि लीजै ॥ वर्ष भेट छिति नृप को दीजै ॥ तौ थिर हो पर राजु तुम्हारा ॥ व

र्ष वर्ष पर सफुन नृपद्वारा ॥ तब तुम राजु होइ है अविचल ॥ दुष्ट बुध मंत्री तो बहु बलि ॥ नृप तो छेदि नु

राजु नि होई ॥ जो मकछि सुकरै विधि सोई ॥ तौ थिर है पतोहि ठकुराई ॥ वर्ष भेट लेभि लुन्नप जाई ॥ तै

से वचन कुलिंद कहे जब ॥ उतरु दीनो चंद्रहास तब ॥ ३१ ॥ दो ॥ नारदो वाचः ॥ कहि नारद अरजत नसुन फुय

हु वचन कहे कुलिंद ॥ उतरु दीनो पिता कों हसि कै भगत गोविंद ॥ ३८ ॥ चंद्रहासोवाचः ॥ चौ ॥ चंद्रहास मु

ष वचन उचारे ॥ सुनहु श्रवन दै पिता हमारे ॥ दुष्ट बुद्धि का ठरुन हीका जै ॥ हमरा वचन मान सभ लीजै

निसदिन सिमरन करहु स्याम घन ॥ दुष्ट बुद्धि का ठरुन करहु मन ॥ श्री गिरधर सम हाय कजाकें ॥ कवहू न

होइ त्रास जाय ताकों ॥ पितातौ ब अगा तोपुन कीनी ॥ सभ सेना इकत्र करि लीनी ॥ सूरवीर वहु जुरे अपारा

चंद्रहास मन मंत्र विचारा ॥ दो ॥ चंद्रहास विनती करी वहुर पिता पहि जाइ ॥ दुष्ट बुध तेना ठरे सिमरहु

श्री यदुराइ ॥ ४ ॥ कै है चंद्रहास सुन ताता ॥ मुझ मन हरि देवि चारी बाता ॥ दुष्ट बुध के गा कंइ का सी ॥ हरि

नहीं सिमरत बुद्धि विनासी ॥ पितातुमारी आज्ञा पाऊं ॥ वेग जा पति न हरि सिमरावों ॥ आज्ञा करी

कुलिंद भूपाला ॥ बालक चढि चलि यो तातकाला ॥ गाउ इका सी घेर ली येछिन ॥ रच्छ कक

छ भगत के निशदिन ॥ भीतर वैठी प्रजा परसपर ॥ मंत्र विचार तभलतिः अवसर ॥

४१ ॥ दो ॥ सकल प्रजा भीतर मिली करत परसपर बाता ॥ चंद्रहास हरि भगत को मि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥३६२॥
प्रश्नोम
ध

लैसतानुकुशलात ॥४२॥ चौ॥ चंद्रहास कान्ह नंद पावत ॥ निशदिन हीये कृष्णगुन गाव
त ॥ गगन धुरन तिः आज्ञाकारी ॥ कीये भजन करि वसि उरधारी ॥ दुए वुधन्य पअध
म दुष्ट मति ॥ रैन दिवस तिः ए दे पाप रति ॥ तिः ते कव कहन है ये कलपाना ॥ चंद्रहास मन रति भगवा
ना ॥ सकल प्रजा को भजन वतावै ॥ स्रुति आज्ञा कृष्ण ज्ञान दृढावति ॥ आज्ञाकारी श्रीपति ताको ॥ अ
पनाम पक रति हम ताको ॥४३॥ दो॥ जो यतिव तावे हरिभजन मे एमुकति दे ताइ ॥ कृष्णचंद तिः
वम कीयो नन्द पहम कर है सोई ॥४४॥ चौ॥ सकल प्रजा या हम मंत्र विचारो ॥ मैले आए जीय आ
नंद धारो ॥ सभ मिल चंद्रहास पग लागे ॥ दीनी भेट है ये अनुरागे ॥ ल्याए भेट सहंस गज
सेता ॥ कनक घंट गज गाह समेता ॥ अंकुश कनक मोती पन रालर ॥ धुजा अरु वारी जगमगात व
रे ॥ इकइ कगज सो अस्व ई कावन ॥ रतन जडत आस वार सु आवनि ॥ दीये एक सो भेई नीशाना ॥ वा
जत्रिधरन अंवर पहिराना ॥४५॥ दो॥ एक अश्रापुत रथ कनक पट मन गगन रतिन अपार ॥ मुकता
हल वह लेभ रीभ सुवन विवध प्रकारि ॥४६॥ चौ॥ चंदन रथ मणि जडत अपारा ॥ तिन पर प्रजा भई असवा
रा ॥ छत्री सहस रप्र जा ती ये साथा ॥ गाऊ इका सी कीये सनाथा ॥ आपुने वसि कीने सभ ग्रामा ॥ लैगे नृप
न सकल हरि नामा ॥ पुनवाल कनि जधाम सिधाए ॥ सुत आवित कुलिंद सुपाए ॥ आगे लेन चले ॥
ता ही दिन ॥ प्रजा संग ले अति हरिखत मन ॥ पितु आवत हरि भगत निहा रे ॥ रथ ते उतरि चरन सिरु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥१५॥ धरे ॥४७॥ दो ॥ लीये चऊरं चंडोल परी हरषत हीये कुलिंद ॥ पुन कीनी परदछना पिता को भगत
गोविंद ॥४८॥ चौ ॥ नगन पाइ बालक चल आवत ॥ राखी बहु कलिपत मन ताहींके ॥ आग्या को सीर रहे दा
सवत ॥ सुं जमदगन ति परशराम गति ॥ पर्शराम पितु वैन मान लीय ॥ माता अरु भाता संघार
कीय ॥ पिता प्रसंन कीयो बहु मन तन ॥ बहुरी लीये जीयाइ तत छिन ॥ मैं दसरथ की आग्या मानी
की योग बन बन सारंगपानी ॥ राज त्याग उद्यान सिधाऐ ॥ पिता बचन मन मह ठहराऐ ॥ दो ॥ चं
द्रहास तैसे रहे पित की आग्या माहि ॥ प्रबिच पवन अति हरि भगत हरष ऐगजी नाहि ॥५०॥ चौ ॥ चं
द्रहास सहऐ भगत महाद्युति ॥ शत्रु जीति आयो कीरति युति ॥ देषत भई सकल पुरबासी ॥ महा
औरषि बदन बदनि बिशाला ॥ तीन तीय सुभमय ककह की छब ॥ मो हृदि निरष सरूप बालि कृपा
वि ॥ कोट अनंग नगन सम सर ताकी ॥ मोहति नाश निरष छबि तीकी ॥ ब्राह्मन बेद उचारन लागे ॥ देत असी
स हीये अनुरागे ॥ जेतक हे तत प्रजा नर नारी ॥ सभन आइ आरती उतारी ॥५१॥ दो ॥ दीपक भऐ फु
लेल बर सखि बाटी घनसार ॥ बहु प्रकार सज आरती ल्याइ पुर नर नार ॥५२॥ चौ ॥ नगर नार न
रषि ले अपारा ॥ पूजा कीनी विविध प्रकारा ॥ प्रजा विचार करत तिकालक ॥ कवन भेट दीजै इह बाल्ह
क ॥ उत्तम बस्तु भवन मह होई ॥ न्पको भेट दीजीये सोई ॥ जोई बस्तु न्पको पय लागै ॥ सोई दे कृम
न तन अनुरागै ॥ पुष्प प्रधान ऐक तिन माहि बर ॥ कह्यो प्रजा प्रति सुनज आवन धर ॥ आठ पहर हऐ
कं पसु गावत ॥ मह बालक जीय अवरन भावती ॥५३॥ दो ॥ रामनाम की भेट ले मन है न्प सुत पाग
पाही मत्र ठहराइ चित मिलन चले सभ लोक ॥५४॥ जैमनोवाच ॥ चौ ॥ सुन जनमेजा न्प प्रति श्रवन

अअमे ध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धर ॥ मेटा दीनी प्रजा नाम मु हरि ॥ सुन सुन चंद्रहास भयो हरषत ॥ अधिक प्रसंन प्रजा पठीन
रपति ॥ सुधा वचन मुष नृपति उचारे ॥ सुनहु कान दै प्रजा हमारे ॥ हमरी बात मान यहि लीजै ॥
कृष्ण नाम सिमरन नित कीजै ॥ दो० ॥ अनित्य सकल प्रानी को जप लीजै सारंगपानी को ॥ जल तरंग
बुदबुदा जैसा ॥ छीन भंगुर वपु जानहु तैसै ॥ ५५ ॥ दो० ॥ जग महि कोऊ नै अमर न रहोई ॥ होय शरीर बिना
सा ॥ ता तै सिमरहु हरिनाम पत भिटै दुष त्रास ॥ ५६ ॥ चौ० ॥ विनसित वपु षवार न हो लागै ॥ ता तै सिमरहु हरि
दुष भागै ॥ आवागवन मिटै सभ तन की ॥ सेवा कीजै हरि भगतन की ॥ जग मै पोतु न्यु सफल तिः होई ॥ हरि
चरनन चिंतु लावै सोई ॥ वेद वचन जप तप संजम व्रत ॥ सुद्ध होय तन व ठिन परम तप ॥ सुद्ध पात्र जवही
॥ जैसे सीप समुद्र महि स्वाती जल की प्यास ॥ बूंद परत मुकता भवत शांत न शा व द प्रकाश ॥ ५७ ॥ चौ०
॥ प्यासे सीप की शांति भयों जब ॥ विच स्वाति तु करि मुष पसारि जब ॥ साध दरस के उ दुष्ट हति
तैसे ॥ पावहु वेग परम पद ऐसे ॥ जिन के हृदे प्यास लषि लेही ॥ शीघ्र साध दरसन तिः देही
स्वाति बूंद जिम साध वचन मुष ॥ परत सो पम हि मेद जात मुष ॥ साध कृपा ते ज्ञान प्रकास ति
सभ घट माहि आतम अभ्यासति ॥ पंच तत्व कौ प्रगटायो प्रभ ॥ प्रथम हि सरुप रची जड जिम
सभ ॥ दो० ॥ अपुनी समावी च जव अरोपो भगवान ॥ सकल जीव चैतंन की ये चीटी ब्रह्म समान ॥
६० ॥ चौ० ॥ वहुर प्रजा मुष वचन उचारे ॥ सुनहु श्रवन दै भगत मुरारे ॥ मेरे हृदे संदेह मिटावहु ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धर ॥ भेटा दीनी प्रजा नभ हरि ॥ सुनसुन चंद्रहास भयो हरखत ॥ अधिक प्रसंन प्रजा पश्न
रपति ॥ सुधा वचन मुख न पति उचारे ॥ सुन हु कान दै प्रजा हमारे ॥ हमरी वात मान यह लो
जै ॥ कृष्न नाम सिमरन नित कीजै ॥ देहि अनि त्य सकल प्रानी की ॥ जय लो जै सारंग पानी की ॥
जल तरंग बुद बुदा जैसो ॥ छीन भंगुर वपु जान हु तैसो ॥ ५५ ॥ दो ॥ जग महि केऊ नअमर नर
होई ॥ होहि शरीर विनास ॥ ता ते सिमरहु रमा पति मिटहि दंड यम जास ॥ ५६ ॥ चौ ॥ धिन सत व
पुख वार न ही लागै ॥ ता ते सिमरहु हरि दुख भागै ॥ आवागौन मिटै तवु तन की ॥ सेवा कीजै हरि
भगतन की ॥ जग महि जनम सफल तिः होई ॥ हरि चरनन चित लावै जोई ॥ वेद करम जप
तप संजम व्रत ॥ शुद्ध होइ तन वढति परम गति ॥ शुद्ध पात्र जव ही ते भयो ॥ साध संग
ते भ्रम भिट गयो ॥ सवद साध का जीय ठहरावै ॥ पारस ते परस हेम हो जावै ॥ ५७ ॥
दो ॥ जैसे सीप समुद्र महि स्वाती जल की प्यास ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करुणा करि हम को समझावहु ॥ तुम भाख्यौ हरि सब घट माही ॥ कत जगु ताहि दिखे लोकत नाही ॥ औरै मा[न म]
हि पूरन न हरि सोई ॥ तौ वा हरि ढूंढहु नहि कोई ॥ तौ इस ही कै मधि नंदलाला ॥ आनति ठौर कति फिर
ति भूपाला ॥ होइ छिमा लै कृपा नृप कीजै ॥ हम को सम वतात कहि दीजै ॥ ६१ ॥ दो० ॥ चंद्रहासो वाच ॥
सुनहु प्रजापति पूरनपुर वस सभ घट ता को वास ॥ तब चौरासी जीव महि जाहि ताहि तेतौ प्रकाश ॥ ६२
॥ चौ० ॥ सुनहु प्रजापति हरि सभ घट माही ॥ सरस सरूप भेद कछु नाही ॥ आवरन रहे आहि कृत के गुन
लछ्यो न परत ति कत भरोरि सर्मुला ॥ ज्यूं शशि को रोकत वादर नभ ॥ त्यूं आए मैं कर तन लत   व
प्रभ ॥ वीच आहि कृत को अंतराला ॥ तातें लखि न सकति नंदलाला ॥ दृक दृति होइ धरो विषया
रस ॥ सुत दारा धन लोभ मोह फास्यो ॥ मेरी मेरी करत भ्रमायो ॥ भगत भाउ हरि कवहू न
ध्वायो ॥ ६३ ॥ दो० ॥ इक इक कहि होइ परसऐ यो जिन का मन नभ व माहि ॥ अंतराल तिन आतमा कव
हू विलोकहि नाहि ॥ ६४ ॥ चौ० ॥ ब्रह्म एक मन दृक अपारा ॥ वाध्यो माहि पूत धन दारा ॥ तव ल
ग ब्रह्म न चीनति कोई ॥ जव लग साध संग न सिलि सोई ॥ संतन वंध कीयो मन आपवस ॥ वां
छत कवहू नहि विषया रस ॥ संतन सवद जिन मनु ठहिरायो ॥ आतम ब्रह्म स्वाद तिन पायो
मगन भए आतम रस माहि ॥ जीव अरु ब्रह्म भेद कछु नाही ॥ द्वयपन अहंमेव मिटि गई ॥ जा
न वुधि ईस्थित चित भयई ॥ ६५ ॥ दो० ॥ जीव वुध दृढ़ ऊ ए कहै अंतराल कछु नाहि ॥ अहंमेव जव म
र गई प्रभु भयो जग माहि ॥ ६६ ॥ चौ० ॥ जिन का मनु विषयन भरमायो ॥ सुत दारा धन सौं लपट

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

यो ॥ दीपक ज्ञान न हृदै प्रकास्यो ॥ तिन न नहीं अंतर राम मन अभ्यास्यो ॥ तिन घट दीप ज्ञान दुति होई ॥ तव
वस्तु पहिचानत सोई ॥ कुंभ माहि दीपक है जैसो ॥ है प्रकाश बाहर करु कैसैं ॥ वस्तु भवन की दृष्टि प
रै तव ॥ बाहर दीप प्रकाश होइ जब ॥ मन भंगुर जिम कागज भयो ॥ ब्रह्मज्ञान तिन ते दुर गयो ॥ ६७ ॥ दो
॥ तिन का मन कूट भ्रम मति अहंमेव के वीच ॥ आतम राम न चीन्हि कर मध रम के नीच ॥ ६८ ॥ चौ ॥ गग
न धरनि महि अंतर जैसो ॥ बादर वीच परे है तैसो ॥ तिम ही परम ब्रह्म पहिचानहु ॥ पर माया जेता
ल प्रमानहु ॥ ताते जीव ब्रह्म द्वै कहई ॥ जे नर माया वसि है रहई ॥ तिन जो यत न ज्ञान ठहिराना
तिन नहिं आतम राम पछाना ॥ दूर भयो माया पर हु अंतर ॥ तिन जान्यो आतम साखि रंतर ॥ ६९ ॥ दो
॥ जीव ब्रह्म अंतरु नहीं नहीं मन वच क्रम जीय जान ॥ माया के सन वंध ते जग द्वै कहत प्रमान ॥ ७०
॥ जैमिनो वाचः ॥ चौ ॥ जैमिनु कहै सुनहु पृथिवी पति ॥ यह वच ईश अगाधे पारु पप्रति ॥ चंद्रहास
कहि प्रजा सुनावत ॥ हित सु मारग मुकति बतावत ॥ ब्रह्म जीव महि अंतरु जैसे ॥ साध संग बिन
भिरतन कैसे ॥ ताते साध संग नित कीजै ॥ नि शब्द न हरि सिमरन चित दीजै ॥ कीर्तनु सुनहु कहु प्र
गुन गावहु ॥ साध समागम सो मन लावहु ॥ तव अंतर उपजै घट माही ॥ ज्ञान प्रकाश कलुष भिर
जाही ॥ ७१ ॥ दो ॥ परम विवेक उचारियो उतपत ज्ञान प्रकाश ॥ सत हु जे प्रापति होत है श्री हरि भगत
निवासु ॥ ७२ ॥ चौ ॥ सु संगु करै भगत अभ्यासा ॥ तं सु अंतराल है नाशा ॥ जीव ब्रह्म अंतरु नहीं राखे
सुं कुंअ कृष्ण भगत रसु चाखे ॥ आवर कलपना सभ मिट जाई ॥ जो जन परै कृष्ण सरनाई ॥ हरि भगत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

९७॥
३६६
भ्र मे
५

नके आज्ञाकारी॥ मन वच क्रम जिन जप्यो मुरारी॥ ब्रह्म जीव एके तिन जान्यो॥ सतगुरु शब
द तत्व पछिचान्यो॥ जिन जी पञ्च वरत जीस भम्यासा॥ जप की नो हरिव सकौम दासा॥१३॥ दो॥ बा
लकु कहै प्रजा सुनऊ जौ सा हेकुमान॥ सिमरनु की जै कृष्ण को जव लग घट मे प्रान॥१४
चौ॥ मानस जन्मु अमोलक पावत॥ जगमहि आई कृस न हो ध्यावत॥ विषया स्वाद मह सुख
जानत॥ निशदिन आव घटत नही मानत॥ सुत दारा धन मोह लुभाने॥ षटरस स्वाद वाद लल
चाने॥ वीतति चंचल आउ रछिन छिन॥ निहफल जनम तिः हो तभजन विन॥ जव लग यह वपु
विनस्यो नाही॥ तवलग हरिसिमरनु मन माही॥ सिमरो वचनु मानु तुम लीजै॥ हरिसिमरनु छि
न विलमु न कीजै॥१५॥ जैमिनो वाचः॥ दो॥ जैमिनि जनमेजक है सुनऊ कथ्या दै कान॥ भज
नु वता या प्रजा को चंद्रहास राजान॥१६॥ सो॥ सिमरो वति भगवान परम उपकारी संत जग॥
सकल सुखन की खान द्रुरस्य परसु कीलविख मिटहि॥१७॥ नारदो वाचः॥ नारद कहै कथा या चार
थ सुन॥ प्रजा प्रबोधत चंद्रहास पुन॥ सुनऊ प्रजा हरिसिमरनु कीजै॥ साध संग करि सभ दुख
दीजे॥ चंचल आयु घटति है छिन छिन॥ ता ते सिमरऊ कृस्न रैन दिन॥ अहि निश घटत जात नित
स्वासा॥ जब कबहि तशरीर विनाशा॥ जवलग तनु अरोग घट प्राना॥ तवलग सिमरलेऊ भग
वाना॥ स्वास स्वास विसवास न आनऊ॥ विन भगु रयह तनु तीय जानऊ॥१८॥ दो॥ जवलग यह
तन मै पवन तवलग करा उपाउ॥ सेवा संतन की करऊ हरख पिये धरि भाउ॥ चौ॥ प्रान जात कछु वा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रनलागै ॥ ताते हरि सिमरहु भ्रम भागै ॥ यह तन अवसर पुन वहु दिन पावहु ॥ सेवा साधहु सगुन गावहु ॥
सत्य करहु मुख अमृत तिन भाखहु ॥ निशदिन हरिदे ध्यान हरि राखहु ॥ त्रि: देही के स्वाद बाद रस ॥ धिस
रि गए हरि बिषै लोभ फसि ॥ आम रूधर अरुन घतु च के मा ॥ सप्रधात तन माहि प्रवेसा ॥ आदि दनु
जिम तरुण उद्यामा ॥ दस द्वारे तन माहि अभिरामा ॥ ८० ॥ दो ॥ मन राजा अहंकृत सचव सदा करत अभि
मान ॥ हरि नही समरति गर्व बसि काम क्रोध अज्ञान ॥ ८१ ॥ चौ ॥ तरुण मंदर तनु देख भुलाने ॥ आप समा
न कोऊ नहि जाने ॥ इंद्री विषया मोह लुभाना ॥ यौं जाने हम री भजवाना ॥ यद्यपि है तन तरुण गढ माहि
फूटा गढ दस ठौर तहा ही ॥ त्रि: गढ के फूटे द्वारे दस ॥ ताही गढ को शत्रु अपने बस ॥ पंच चोर के
रि तस दा नृपत को भंडार ॥ ८२ ॥ दो ॥ नृपति विवेक की बसि करै ॥ पंच चोर गढ माहि ॥ गढ फूटा दस ठौ
र तेत दीप संसै नाहि ॥ ८३ ॥ चौ ॥ त्रि: नृप गढ भंजि न भयो ग्रस ॥ पांच चोर जिन नहि कीने बस ॥ त्रि: न
प को जग गुरु करत धिकारा ॥ करी अहंकृति ज्ञान विचारा ॥ गढ फूटा शत्रु बलवाना ॥ नृप अज्ञान ही क
रत प्रमाता ॥ त्रिन पुरुष नि हरि भजन न कीनो ॥ अहंकार बसि तत्व न चीनो ॥ सुखदाई प्रभ को नहि ध्या
यो ॥ लोभ माहि बसि जन्म गवायो ॥ त्रिन पुरुषनि सिमर्यो पद मापति ॥ भोग विमल धी सदा परमगति
८४ ॥ चंद्र हास सो वा स: ॥ दो ॥ सुनहु जगत जो आइ कै तिन न नहि जप्यो मुरारि ॥ करमी जत सिर क्रोध
न तदु स्व अंत की बार ॥ ८५ ॥ चौ ॥ अंत्र व्रत रूपी प स्ता पुरनर ॥ ली यो फिरत स्व धर दो ऊ कर ॥
उघर चाहि मंगु रा अहंकृत ॥ सो चसम कत न ही भ्रम भ्रमति मति ॥ ईस को चेतना कछु नाही ॥ कहे वा
जीत अंत्र व्रत कर माही ॥ रावस की न ही वस्तु अनन्पा ॥ त स्याम ग्रुद्धाम योगर्त लसरूपा ॥ अंत मत गर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१८॥
२६७

लदोऊ याकेतन॥ साध कृपा विन नहि समझत मन॥ संतन सेव कर्त नहीं जौलौ॥ मन अज्ञान मिटत
नहीं तौलौ॥ ७६॥ दो॥ साधसंग गुन कोभ मोभ्रम प्या ज्ञानी देह॥ भ्रम विन स्योतत न वुधि भई ये हमं म त
विषु ऐह॥ ७७॥ चौ॥ ले वे मी च अंगु री को तब॥ साधसंग जीय ज्ञान होइ जब॥ अं व्रत रूपी आयर ज्ञा
नित॥ तब विचार त्रास जी य मानित॥ सुधा सुरूप आरव लपाई॥ तिए न हि समर रूम तवहि ताई॥ सा
ध संधि ते ज्ञान प्रकाशा॥ ज्ञान्यो सुधाभाव विषु नासा॥ सुधा स रूप चं चल आयु रथ हि॥ सुमर रू
श्रीपति वेग जावहि॥ साधसेग दुवधा सभ हर ई॥ विन संति मर विमल वुधि कर ई॥ ७८॥ दो॥ सुन
रु सवाइम श्रुति कहत हरिको पुरुष अनादि॥ आद अंत नही पाव ई शिव विरं च सेन कादि॥ चौ॥ क
हत कृस्न को श्रुति निराकारा॥ लीला हित कौने अवतारा॥ माया रचीन आपुने काजा॥ क्रीडा निमित्त
जगत हरि साजा॥ तुमरी माया नाच नचावति॥ कहि च रत्र प्रभ तो हि दिखावति॥ सुन नप सभा माहि स्र
ति हरषति॥ नाचति आगे नटी विवधगति॥ भूपति के मन भयो उलासा॥ सभी मध्य उपजो रस हासा॥
नपक्ति नटी को सैन वताई॥ हांसी करि पुरुष नसो ताई॥ ७९॥ दो॥ तो ईसम सया नृपदि ई नटी लई
उरधार॥ सभा वीच वैठे पुरुष पगी पाले हु उतार॥ ८१॥ चौ॥ नृप की सैन नटी उरधारी॥ सकल
नरन की पाग उतारी॥ सभा माहि जे ऊ पुरष प्रधाना॥ सिर नांगे तहि हु से राजाना॥ सुनु सुनु नृप आ
नंदित हसे॥ सुसुं नटी ताइन रंग रसे॥ तीनी पाग उतार स भन की॥ डिगि डिगि स्वांग दिखावति तन की
हसन हार तुम हो भगवाना॥ माया दासी नटी समाना॥ सकल सिष्टि तुम उतपति करी॥ सभ मो ही
माया वुध हरी॥ ८२॥ दो॥ इन माया न टनी प्रभ सभ जगपाग हरी॥ हमन हेत आनंद घन उतप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिं जगत करी ॥८३॥ चौ॥ भगतन मोहित सकै नहीं माया ॥ जिन तुम को मन वच क्रम ध्याया ॥ ताकी पाग
रहत तिं जग अविचल ॥ कुटि न सकत माया नटनी छल ॥ ब्रह्म पजति जिन हृदे रचे वर ॥ औ तकरी गति तेइ
सहि डकरि ॥ अंत हित करन प्रभु दृढ जिनकी नो ॥ अगनि कुंड तन में रचि लीनो ॥ काम क्रोध लोभ की या ईंधन ॥
जब तिलक री वासना तीछन ॥ तृश्ना ज्वारी की यो त्रिगुण घृत ॥ सोह आहुती करी परमाहित ॥८४॥ दो॥ ब्रह्म
पजति नरू करहित जिन ही ये ज्ञान प्रकाश ॥ ब्रह्म अगिन सो जार ही जन्म मरन की आस ॥८५॥ चौ॥ सो ईस
वद नि वास भयो तन ॥ इह प्रकार जिन होम की यो मन ॥ सतगुरु सबद ही ये ठहरायो ॥ सब रचि सभ भ्र
म पजरायो ॥ जर बरिआ अ्रबु अ ही परे जब ॥ ठप ज्यो ही ये प्रुध साति कुतब ॥ ब्रह्म परतले सम तापाइ ॥
भिटगई अहं हि कार विघ माई ॥ ततज्ञान आतमा पछाना ॥ सभ जग ऐक ब्रह्म इ पछाना ॥ ब्रह्म ज्ञान तिन उ
दति भयो हीय ॥ इह प्रकार हरि जन दुरि दे की या ॥८६॥ दो॥ ब्रह्म यजति जिन की यो नहि अवरह ठ वे ज्ञा
न ॥ सो वन हाराम भिकरि ठारे आप समान ॥८७॥ चौ॥ दे ब्यान ही अकाश कदा चित ॥ सत अराध
तिन ही अप मति ॥ बात बना इकर तउपदेसा ॥ दग्ध ज्ञान मन माहि कलेसा ॥ अचर जगत के
ज्ञान दिड़ावै ॥ मन आप नै भिहि शांति न आवै ॥ मायापाग उ जार तक्षिन क्षिन ॥ ते आदंभी नर हरि सि
मरन बिन ॥ ता ते प्रजा सुन हु प्रबन मधर ॥ गति नही पावत बिन सिमरन हरि ॥ जिन सब ब्रह्म की यो
घट माही ॥ माया पाग उतारत नाही ॥८८॥ दो॥ माया करता कृष्ण है सो भगतन के दास ॥ अब चलि प
गीया सी सति: जिन के ज्ञान प्रकास ॥८९॥ जैमिनी वाचः ॥ चौ॥ सुन जन मैं जो न्रप पछि पूछि वी पति ॥ यह बच
क हे कृष्ण नि मगन प्रति ॥ जो प्रभु हम जैसे सदा स बधीना ॥ हम तिन भगतन हा [illegible] ना ॥ चंद्रहास भा खे
बब ऐसे सकल प्रजा की नी निज जैसे ॥ सभ को आतम ज्ञान दिड़ायो ॥ नारायण को भजन बतायो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१४ ॥
२६८
अश्वमे
ध

संधा संग की पहु वडि पाई ॥ तारहि कीट भृंग की न्याई ॥ प्रजा लोग आनंद मगन भये ॥ उपजो ब्रह्म
ज्ञान भ्रम गये ॥ १० ॥ दो ॥ सकल प्रजा को हरि भगत तब दिढ पायो ज्ञान ॥ आप सा न षेकर लीये सभ भ्रम सिम
रित भगवान ॥ ११ ॥ नारदो वाचः ॥ चौ ॥ नारद कहै कथा पारथ सुजान ॥ चंद्रहास मंत्री बुलाइ पुन ॥ दुती
विनोद सचिव को नामा ॥ महा प्रवीन धरम को धामा ॥ चंद्रहास बच कहै सचिव प्रति ॥ यह कारज की प्रेम
न हरषत ॥ दुष्ट बुद्धि की ओर सिधावहु ॥ वरसाती भेट पहुचावहु ॥ उनको कहु देत पाये ता हमारा ॥ भेट
दीनी पै तिसहि प्रकारा ॥ मानी चहति ये आज्ञा ताता ॥ जाते होइ सकल कुसलाता ॥ १२ ॥ सो ॥ भेट करी प्यार
ताहि लीये इकासी असते ॥ मन महि ठर ग्यो नाहि ते सभ पठई हरि भगत ॥ १३ ॥ दो ॥ कंचन कलस जडित
हीरामनि ॥ सीच सुगंध भरे सभ अनगन ॥ मृगमद मलय सुवास अपारा ॥ कंचन रतन अनेक प्रकारा
भूषन बसन सकट भरि लीने ॥ गज तुरंग अरु सकर भसीग कीने ॥ दीने संग अनेक पदाता ॥ चल्यो विदा करि
सचिव प्रभाता ॥ दुष्ट बुद्धि भूपति ग्या तहा ॥ प्रापति भये सचिव पुर तहा ॥ जाइ निवास बाग महि कीनो ॥ प्र
थमै तन मंजन करि लीनो ॥ १४ ॥ चौ ॥ सालिग्राम की सेव करि हरि सिमरन चित दीन ॥ तिलक माल उरमाल
सज चक्र चिह्न तन कीन ॥ १५ ॥ दो ॥ चरनोदक लीनो हरषत मन ॥ पहिरे बसन सुगंध सीचत तन ॥ घसि
चंदन सभ अंग लगायो ॥ वैष्णव भेष विचित्र बनयो ॥ चल्यो मुदित पुर कीयो प्रवेसा ॥ भयो प्रापति जहा द्वार
नरेसा ॥ भीतर पठयो द्वारपाल को ॥ समाचार कहु धरनिपाल को ॥ द्वार कहन नृप को जाइ सुनायो ॥ चंद्रहा
स नृप सचिव पठायो ॥ चंद्रहास जान्यो कुलिंद सुत ॥ मंत्री पठ्यो भेट बहु संयुत ॥ १६ ॥ चौ ॥ द्वारपाल के बच
न सुन आज्ञा कीनी राइ ॥ चंद्रहास के सचिव को भीतर लीयो बुलाइ ॥ १७ ॥ दो ॥ वेग गयो भीतर विनोद दू
त ॥ नृप को कीन प्रणाम प्रथम तव ॥ भिरथ सचिव को नृप को प्यामन ॥ चेतन चक्र वैष्णव भेष तन ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चिहन होत मस्तक के जैसे ॥ भोषद्यार आयो पक्षि तैसे ॥ भेषधार तन रंग्यो तसमे त्रिम ॥ मुखगंगोदक अंगबहि
नतिम ॥ बुरो संग करि मुनि पक्षि आयो ॥ दुष्टबुद्धि मन को पवठायो ॥ जब नृप उनमिभेट निहारी ॥ मुदति भयो तौ
पतेश सदारी ॥ १०८ ॥ दो० ॥ भेट भिर षग्र चरित तम भयो वस्तु अनेक प्रकार ॥ दुष्ट बुद्धि विस्मै महा मन महि करत वि
चार ॥ १९ ॥ चौ० ॥ दुष्टबुद्धि मन माहि विचारत ॥ इतनी भेट कुलिंद दई कित ॥ वीश गाउं उन को मुनि दीने ॥ ऐसे रत
न कहा ते लीने ॥ कवृहन इनी भेट पठाई ॥ यह संपदा कहा ते पाई ॥ भयो कुलिंद वडो भूपाला ॥ ता ते पठई भे
ट विशाला ॥ दुष्ट बुद्धि नृप दुष्ट पाप मति ॥ देषन सकत न और वर की संपति ॥ दुष्टन को सुभाउ ऐसो मन ॥ उदे और वर
की देष जरत तन ॥ १० ॥ दो० ॥ भेट देष कै दुष्टबुधि उपज्यो हिये विरोध ॥ धन वहु भयो गनदास सुत कहो व तातवि
नोद ॥ ११ ॥ विनोद वाचः ॥ चौ० ॥ कहै विनोद दुष्टबुध सुनहु ॥ नृप कुलिंद को पत महा गुन ॥ चंद्रहास ताको वर
नाम्या ॥ अति प्रण पूरन सूर संग्रामा ॥ गाउं मवासमार तिन लीने ॥ लोग सकल अपुने वसि कीने ॥ भेट दई तिन वि
वध प्रकारा ॥ तेसम भपठदीनी तुमद्वारा ॥ अपुने हित महि कछु न राषी ॥ चंद्रहास धन को नहि कांषी ॥ लीनी भेट दु
ष्टबुध सव ॥ मन महि राष्यो दुष्टभाव तब ॥ १२ ॥ दो० ॥ भूपति कह्यो विनोद को जाइ करहु विश्राम ॥ दीनो ठौर विचार
कर हुतो मुनी को धाम ॥ १३ ॥ चौ० ॥ नृपति रसोईदार वुलायो ॥ षट्रस भोजन सिद्ध करायो ॥ पाकु रसोई सिधम
ई जब ॥ नृप विनोद को दूत पठयो तब ॥ होत दिवस तिस एकादशी व्रती ॥ दुष्ट बुद्धि धारत पापमत ॥ दूत विनोद पै सिच
लि गयो ॥ हाथ जोर कै ठाढ भयो ॥ वचन उचार कहे विनोद प्रति ॥ भोजन करहु वुलावत भूपति ॥ मंत्री कहो दू
त सुनि लीजै ॥ हम राउ न रुनृप को दीजै ॥ १४ ॥ दो० ॥ दूत जाय भूपति सों कहे वचन कहे हैं आप ने राज
हम भोजन न लेवहि नही व्रत एकादशी अहि ॥ १५ ॥ चौ० ॥ चंद्रहास हम रा भूपति वर ॥ मन वच
क्रम जानो सेवक हरि ॥ आजु दिवस ताको प्रीतम अत ॥ निराहार उपवास करत व्रत ॥ एक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२०॥
२६९
अश्वमेध

दशी महाव्रत करही ॥ दे तम महापट्ट निगम उच्चारहीं ॥ हम रे न्नप को इकु सौ ग्रामा ॥ इहइ दिन अस्रगामि
जे रत नहीं धामा ॥ आदि दिवस सिमरत भगवाना ॥ प्रभात भई सभ आतम वाना ॥ चंद्रहास हरि
रिभगत न्नरेसा ॥ सभ को ब्रह्म ज्ञान उपदेसा ॥ १६ ॥ दो ॥ हम न नहीं लेवहि आजु दिन भोजन नृतु मरेंगे
न्न ॥ प्रात रसोई करहिंगे कहे न्नपति सों एहि ॥ १७ ॥ चौ ॥ आजु दिवस तेऊ लेत अहारा ॥ ते नर भोगत
नरक अपारा ॥ कुम सम मान भोजन नवह जो मा ॥ घात पुण्य तास्ते तदुख माने ॥ ता ते होत संजुदुए
न सौं ॥ महाकलेस है ततिः मन सों ॥ ते नर पावत घोर नरक गति ॥ जन्म मरन दुख होत अमति
ति ॥ दुष्टबुध न्नप का कहा जाई ॥ जो हम तुम सों कहा सुनाई ॥ उन्न रूलेत दूत फिर गयो ॥ सकु
ल ब्रतांत न्नपति को दयो ॥ १८ ॥ जैमिनो वाचः ॥ दो ॥ जैमिन कहै सुन न्नप न्नपति दूत कहे न्नप जाइ ॥
तेई विनोद भाष वचन कहे सकल प्रगटाइ ॥ चौ ॥ दूत वचन न्नप सुने अवें न जब ॥ भोजन की
पाहूदे को ध्यात व ॥ दुष्टबुध मुख वचन उचारे ॥ यह कुलिंद न्नप दास हमारे ॥ अब उन अपुना
मतु ठहरायो ॥ मंत्री को मुख पास पठायो ॥ गर्व करति अति सचिव मट्टु मति ॥ भोजन छातन
मुख ग्रह हरषति ॥ यह तो रातु योग नहीं वाता ॥ वृद्ध रवर तकुलिंद के ताता ॥ कीये आपुन व
सि गाउ म वासा ॥ ते सभ भूत हमारे दासा ॥ १०२ ॥ दो ॥ सुत कुलिंद का मुख कहू दे ध्या सुन्यो
न कान ॥ ते कहत हे उत्तिबक्षि भयो महा सूर बलवान ॥ २१ ॥ चौ ॥ ते भोगति हैं दर बहु मारा ॥ ले
उ खसोट सकल इकवारा ॥ यह तो नहीं राजुसुख योगा ॥ दंड लेउ दै है तिः सोगा ॥ आज्ञा क
री विनोद बुलायो ॥ ताको सकल वृतांत सुनायो ॥ विदा कीयो निज देस पठायो ॥ ता पाछे न्न

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पकोपवठायो ॥ तत्तिछिन मंत्री कुबुध बुलायो ॥ ताको सकल व तांत सुनायो ॥ पुन ऐसे कहि व
वन सुनायो ॥ सुनहु सचिव कुलिंद मुरदासा ॥ ताके गृह इक पूत प्रकासा ॥ २२ ॥ दो ॥ चंद्रसुत स
त्तिः नाम है धन करू कुरैधि नास ॥ उन का मंत्री भेट ले आया या पा मृगु पास ॥ २३ ॥ चौ ॥ सुत कुलिंद गृ
ह कैसे भयो ॥ इत नाद ईकुकहत तेलयो ॥ मृगु को भेट पठी इत नी तिन ॥ अधिक कहो इगील दुभवन
तिन ॥ उन ते लेउ संपदा सकल हरि ॥ सरवसु लेउ बसो टदंड कर ॥ यह कुलिंद थ्या दासु हमारा ॥
संतत रहु तीन भवन मंझारा ॥ इन यह वालक हता तेली या ॥ राख्यो गृह ता तुछिन कीयो ॥ कहै कुबु
ध सुनहु नृपति मृगु यो सुन्यो सु भाव ॥ इस सु कुलिंद पायो कहह पूत की यो प्रगटाई ॥ २५ ॥ चौ ॥
नृप कुलिंद प्रतिपाल्यो वालक ॥ दीयो तिलक कीनो प्रतिपालिक ॥ वीस गाउं का राजु दीयो तिन
वहुरि ईका सा गाउ ली ये तिन ॥ तुम प्रति कहत मवास कीये वसि ॥ ते सभ तुमरे गाउ ली ये वसि ॥
वालक इल्लटे ग्रास तुमारे ॥ सो ई भेट पठी तुम द्यारे ॥ उनते कनक लछ वहु पाई ॥ आपुनी कर
तुम पास पठाई ॥ सुत कुलिंद अव वली कहावै ॥ तेज वान नित हरि गुन गावा ॥ २६ ॥ दो ॥ कुबुध
कहै सुन दुष्ट वुध हम पास सुन यो कान ॥ वालकु मन मै हरि भगत रणा सूरा वलवान ॥ २७ ॥ चौ ॥
आज्ञा का सीधरै न आकासा ॥ सभ जग वसि की नो तिन मदासा ॥ नि सदिन की रतन कथा हरि ये एत ॥ हृ
रिसिमरति कि तध मैं वि मलमति ॥ ताके पुर मंहि सकल नार नर ॥ व्रत ई का दशी धारत डंड कर ॥ तो
तुम भय दन लेत हरष कथि ॥ ता ही छिन चढि आवत तुम पथि ॥ वरन धरम पुर मांहि दृडायो ॥ सकल
प्रजा को हरि सिमरायो ॥ चलत वेद मग गो ब्राह्मण हित ॥ शत्रु मित्र तिः सम भई जीत ॥ २८ ॥ दो ॥ महाप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२१॥
ऋः
अस्वमेध

राक्रम सस्त्र मारन मन तन तजि क्रोध ॥ जा के वल सम जगत महि अवर नहीं कोऊ योध ॥ चौ ॥ दुरबुध
मंत्री के वचन सुन ॥ उपज्यो क्रोध मीजसि रघुने ॥ वरु रिस विव प्रित वचन उचारे ॥ कहा मंत्र तुम निज
हमारे ॥ गउ हमारे उन हरि लीने ॥ सभ तें दंड लेत वसि कीने ॥ तिन सों कहा कवन विधि कीजै ॥ हृदे
विचार तत कहि दीजै ॥ सुनि विधि मोहि ना बुधि डहोई ॥ मंत्री मोहि वताव रु सोई ॥ वचन कुबुध विचार की
यो मन ॥ दुरबुध सों कह्यो यह वच ॥ २१ ॥ जैमिनोवाच ॥ दो ॥ जैमिन कहै सुन हुन पति मन वच क्र
म करु राइ ॥ दुरबुध को कुबुध यह वचन कहे प्रगटाइ ॥ चौ ॥ कहै कुबुध सुन हुन पकपाला ॥ मो
मन यह विचार ठहराना ॥ सैना सजहु ताताहि काला ॥ पकरि हु जाय कुलिंद भूपाला ॥ सुतस मे
ता वाधि ले लीजै ॥ सर्व सले आपुने वसि कीजै ॥ दुरबुध करत चढोन नगारा ॥ चतुरंगनि सैना दल भा
रा ॥ तान न कहु ठकुर हिं दुरमति ॥ माहा क्रोध चित ही ये पापरति ॥ दुरबुध का सुत अभरामा ॥
मदन सिंघ ता को वरनमों ॥ २२ ॥ दो ॥ मदन सिंघ को पिता कहै तुम पुर करहु निवास ॥ हम कुलिं
द को सुत सम हित वाधन याऊ तुम पास ॥ २३ ॥ विषयानाम सुता तिन के घर ॥ जोवनवंत रूप सुंदर
वर ॥ गावन करत पिता को देख्यो जव ॥ चलि आई कंन्या पिताहि गात व ॥ वचन कहे दुहिता सुन ताता
तुम सों कहें ति यपार यवाला ॥ आज्ञा दीजै मोहि करौ पति ॥ सुनत भयो भूपति मन हर
षत ॥ मदन सिंघ कौ नृपति वुलायो ॥ सकल वत तांत भाष समझायो ॥ मन वांछत विषय
पावर दीजै ॥ यह कारज के विलम न कीजै ॥ २४ ॥ दो ॥ जो वर कंन्या मुष कहै सो वर दीजै मं
गाय ॥ विलम न कीजै मदनजी काजै वेद अचार ॥ २५ ॥ चौ ॥ तो कहुं हम पठनौ आज्ञा कर ॥ तैसे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कीजै सुनहु मुनि वन धरि ॥ सो सब तब आज्ञा पितु मानै ॥ पिता वचन वच वेद प्रमानै ॥ यहि कहि चहुं से
॥ वहतं त्रव जाई ॥ सात दिवस मग गवन्तु त्यो रिसाई ॥ पहुंच्यो भूमि चंद्रहास की ॥ कुसुम भगति आतम प्रका
सकी ॥ चंदन पुर पहुंच्यो तत काला ॥ सुन्यो चंद्रहास भूपाला ॥ सजि सेना सनमुख उठि धायो ॥ पिता
समेत मिलन को आयो ॥ ३६ ॥ दो॰ ॥ चंद्रहास न पुपितासहित भिल्यो दुए को आइ ॥ बहु प्रकार पद ताक
री भेट समर्पी राइ ॥ ३७ ॥ जैमि नी वा॰ च॰ ॥ चौ॰ ॥ जैमिनु कहै सुनहु भूपति वर ॥ चंद्रहास तें जस अभि
गत हरि ॥ काहू सौं मन रोस न करई ॥ शत्रु मित्र सम ताजी यधरई ॥ आइ भिल्यो सैनालीये संगा
पिता सहित तह रथ तत अंग गअंगा ॥ उमगि उमगि चित हरि गुन गावत ॥ कुसुम नाम धिन अवर न भा
वत ॥ दुए बुधि अचरज मन भयो ॥ निरख बालको सुबदु दुख गयो ॥ चंद्रहास की निरख महा छ
वि ॥ वदन सरद शशि रुचिर अंग सब ॥ ३८ ॥ दो॰ ॥ चंद्रहास को देषके चिंता बढी भूपाल ॥ जो हम
मारा वन विषै सोई देष यह बाल ॥ चौ॰ ॥ दुए बुद्धि मुष वचन उचारे ॥ सुनहु कुलिंद तम यदा सह
मारे ॥ यह बालक हम कब हून देषो ॥ सुन्यो न श्रवननै न नहीं पेषो ॥ यह सिस कवन कौरत
मलीनो ॥ सुतकरि राज सिंघासन दीनो ॥ कहौ बतात कवन यह बालक ॥ जिन कौ तम कौनौ भू
पालक ॥ सा सुक कहु जी यक पढुं निरबद्ध ॥ सत्य वचन मुष अगे भाषहु ॥ जैचा हो आपुनी कुस
लाता ॥ हम सौं कहौ जथारथ बाता ॥ ३९ ॥ नारदो वा॰ च॰ ॥ दो॰ ॥ पारथ सुनहु कुलिंद को पद्धि त
यत अज्ञान ॥ कहो कुलिंद तां तुम भपापी के विद मान ॥ ४० ॥ कुलिंद वा॰ च॰ ॥ चौ॰ ॥ कहो कुलिंद सुन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ २२ ॥
३२१
अश्वमेध

ब्रह्मपाल तक ॥ हम वीर जु तें भयो न बालक ॥ इक दिन हम आखेट वन ति गयो ॥ जइ सघन वन पाव पक्षि भयो ॥
काल मृग जी पाछे हम धायो ॥ यो जन चार तहां चलि आयो ॥ पुनि मृग गऊ आगे चल्यो महा वन ॥ धुनि ह
रिनाम सुनी मृग श्रवननि ॥ ताही ओर हां को हम रथ पत तव ॥ देख्यो पहत बालक अद्भुत छवि ॥ पद्
पंक्षी ठाठे कर जोरी ॥ अहि फन छाया करे चउ ओरी ॥ ४२ ॥ दो ॥ मृग व तें तप छात बकि वा कमठ पृ
पाल ॥ सभ वृतांन मा को कहो सो तुम क ह्रां महिपाल ॥ ४३ ॥ चौ ॥ बालक तें पछी मृग बाता ॥ कवन नाम
म तुम स्थित माता ॥ गहबर वन आयो तुम कैसे ॥ कहो वृतांत सकल मुझ तें से ॥ सुन बालक के वै
न्या तत काला ॥ मृग को त्याए इहां चैठाला ॥ नासु करन के न पति पठायो ॥ ते मृग इहां ठगाए
न हि घायो ॥ बहुरि गरी मृग चरनन सीसा ॥ लई काटि ईके ईक महिपाला ॥ मृग से दरसि सु रूप न हि हृ
स्यो ॥ दया परी मन ज्ञान विचार्यो ॥ ४४ ॥ दो ॥ रथ पर लीयो चढाइ मृग मन महि कीयो विचार ॥ मांग पु
न्यो नितप ब्रह्म मृग स्या सुगंद दीयो मुरारि ॥ ४५ ॥ चौ ॥ मृग मन महि प्रथम तु छह रायो ॥ सुत करि आपुने ग
ह लै आयो ॥ मं जी बंधन करी वेद विधि ॥ पाठ पढाइ करी विद्या सिध ॥ तव तें सिसु कीयो नगर प्रवेसा ॥ स
भ को दीयो निगम उपदेसा ॥ ते नपुर जन की हो तदुप मत ॥ सिसु प्रसाद मन न भई चर मति ॥ पुरु महिमा
गंध सिचलाया ॥ वेद सु भगत आरु ज्ञान दढायो ॥ गायत्री संध्या आरु ईसनाना ॥ सभ पुर करत पुन्य आरु दाना
४६ ॥ दो ॥ कोऊ न जानत नगर महि एकादसी उपवास ॥ सकल करत नीहार व्रत वढो धरम परकास ॥ ४७
चौ ॥ व्रत ई कादसी करत नाहि नर ॥ अग्नि प्रकाशन करत कोऊ घरि ॥ धरनी आगनि देत आना जा ॥ बर्षा
करत मर्दित सुररराजा ॥ तरवर लागे देन अमित फल ॥ नदी भर वहहि विमल सुधा जल ॥ गाप नदूध देन व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अभागी ॥ पुरजन सभ बालक अनुरागी ॥ बरन सकत जीभ बालक गुन ॥ सम बरती और इंद्री जीतपन ॥ प
रम पुनीत साध यह बालक ॥ तौ मुनि दीयौ राज भूपालक ॥ ४८ ॥ दो ॥ यह जो हम रा पुत्र नृप सो है तुमरा
दास ॥ कीजै कृपा आनंद सौ पुर मधि करो निवास ॥ ४९ ॥ जैमनो वाच: ॥ चौ ॥ जैमिनु कहै सुन नृप ध्यवीप
ति चंद्रहास की कृपा विमल अति ॥ वच कुलिंद के श्रवन सुने जब ॥ दुए बुद्धि जीय शौक व छौ तब ॥ बालक
उर हीराय जीय जान्यौ ॥ मन वच क्रम शत्रु जीय जान्यौ ॥ कवन एक धन केसस प्रमानौ ॥ हरि जन कव हू
न आसति वषानौ ॥ फूर न होहि वचन रिषीयन के ॥ टरत न कीये कोट जतनन के ॥ आ वक्ष सुभ यौ राज अधि
कारी ॥ सुनीयत महा सुर वल भारी ॥ ५० ॥ दो ॥ नाम करन बन मुनि पढात व बालक अदीन ॥ भयो नृ
पति सो ग्राम का द्वादश वर्ष प्रवीन ॥ ५१ ॥ चौ ॥ इक सुत मुनि अरु हम दन उपाना ॥ हमरे बीरज ते प्र
गटाना ॥ ऐसी प्रभताई नही ताको ॥ मुनि सुत सम जग जानत जाको ॥ ताका सुख दे ब्यो हम नाही ॥ क
रत विचार दुए मन माही ॥ सुत ते वडु कुलिंद सु घपायो ॥ यह धिपह त विरानो त्यायौ ॥ बन ते गहि त्या
यो यह बालक ॥ दीनो तिलक कीयो भूपालक ॥ मन महित कर तब विचार दुए मंत्रि ॥ सो विध करों होइ बा
लक हति ॥ ५२ ॥ नारदोवाच: ॥ दो ॥ नारद पार्थ सो कहे सुन नृप कथा दे कान ॥ चंद्रहास को देष कै न
प जीय चिंता मान ॥ ५३ ॥ चौ ॥ दुए बुध कीनो विचार मन ॥ यह बालक को नास करो तन ॥ पिता समेत तक
रोइ घाता ॥ पिर मुनि राज तहो इक सुराता ॥ पुन वीचार कीयो मन माही ॥ हम आव सर मारे नहि जाही
आव हन के संग सेन अपारा ॥ मुनि ते अधक च्चम दल भारा ॥ जो हम इन को मार लेउ अव ॥ पर सिद्ध हुंद ह
त हो तव मन सव ॥ मंत्र भाउ मुख हृदे कपट अति ॥ वचन कहे नृप तव बालक प्रति ॥ ५४ ॥ दो ॥ दुए बुध ह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सकैकह्योचंद्रहाससोंवात॥ अरुवृकीजेविश्रामनिजभवनजाइकैतात॥५५॥ चौ॥ दुएवुधवोल्योहसि
ऐसे॥ अंधकूपतृणछादितजैसे॥ तापरजोअंधएपगधरई॥ परेकूपमहिनिश्चैमरई॥ अं
तरअग्निसीतमुखभाषै॥ वोलेकटमिएजीयराषै॥ मिसरीलोपनकरतगरलजिमि॥ अंतरनकु
रनदुएजानहुतिम॥ हसिकैआज्ञाकरीभगतिप्रति॥ अंतरुभयोविनासदुएमति॥ चंद्रहाससोंवे
रभाउचित॥ अंतरुकपटकरतवाहरहित॥५७॥ जैमिनोवाचः॥ दो॥ जैमिनुकहैसुनजनपतिम
गतुजगयोनिजधाम॥ हर्षसोंगमननमहिनकछुगुनगावतघनस्याम॥५८॥ इतिश्रीमहाभारते
अश्वमेधपर्वणि जैमिनीये दुएवुधिचंद्रहाससंवादोनाम ... मोध्यायः समस्तः॥५९॥ जैमिनोवाचः॥
चौ॥ जैमिनकहैसुनहुपृथिवीपति॥ नारदकथाकहतिपारथप्रति॥ सुननपसिसुनिजधामगयोजव
पितासहततजगमगतमहाछवि॥ पाछेनृपतिकुबुधवुलायो॥ ताकोसकलवृत्तांतसुनायो॥ सुनुकुबु
द्धिवहीयहवालक॥ जोदिजकहोहोतभूपालक॥ तवमुहिहाथदीयोचंडालनि॥ नासुकरनलेगएसु
घनवन॥ आज्ञामोहिदईवनगति॥ पुरनवचनसवनकेमन॥१॥ दो॥ भयानृपतिसोंगमकायहवोंकल
वलवान॥ पहशत्रुकोनिरवहुदुखलागतहैतनवान॥२॥ चौ॥ तवहमसुनीरघनमोवाता॥ वनमेपठयो
करनकोघाता॥ मुऊदीनोचंडालनिहाथा॥ करहुताइशत्रुकोमाथा॥ आज्ञामोहिदईवनआए॥ पगकी
कारिअंगुरील्याए॥ अवहमणत्रुदेषदुषलागे॥ धरमोनितोईधीरसुभागे॥ नासकरनकोमुजपठियो
जव॥ दीनहोतवालकआधीनतव॥ अतिकृतवलीभयोयहवालक॥ ग्रामएकसेकोभूपालक॥३॥ दो॥
कोचाभीजनहोइजवकीजतिछदमनक॥ जवपापकभाजनभयोकरिसकीयेनहीएक॥४॥ चौ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

शत्रू प्रथमहि छेदीयै ऐसै ॥ उपजत ही हति कीजै तैसै ॥ पाछे पुनहि छेद्यौ न ही जाई ॥ कठन पात्र पर्यौ पक
कीन्याई ॥ जैसै उदै होइ विषतरवर ॥ लीजै प्रथम उपाउ रसु गमकरि ॥ नहु बाधे तव निह चल होई ॥
ताहि उपाउ सकै नहि कोई ॥ तांको तोरन समकहि दुरद वल ॥ जडपियाल लागी भचो आ विचल ॥ सुनकुबु
द्धि वालक भयो तैसै ॥ मंत्र वताई होइ हत जैसै ॥ ५ ॥ दो ॥ चंडल ऊपर पंचकरि वालक की प्रानघात ॥ नीचु
न आज्ञा मानी नहीं नृप कैसै कुसलात ॥ ६ ॥ चौ ॥ नीचन आज्ञा मानत है मऊ ॥ तो हम कैसै भूप
क होतु ऊ ॥ जो चंडाल करत सिसु घाता ॥ तो कित वनत कठन पहवाता ॥ जवलग नासु है
इन ही वालक ॥ तवलग हम कैसै भूपालक ॥ मंत्र वताइ कुबुध मम सोई ॥ जिः प्रकार वालिक हत
त होई ॥ पहुच तहो तुम पहि यह वाता ॥ वालक मृत्ये होय कुशलाता ॥ आपुने मन माहि कर ऊपचा
रा ॥ अर्थिर रहै हि राजु हमारा ॥ ७ ॥ दो ॥ कुबुधो वाचः ॥ कहै कुवुध राजा सुनऊ शेष कनि वार कुपित
सिसु पठवत जमधाम को पूरन होइ निमित ॥ ८ ॥ चौ ॥ सिसु पठराइ मंत्र सुन लीजै ॥ नासु करै त्र
हि चितुन कीजै ॥ यह कुलिंद भूपति हम कही पा ॥ नि शब्द न बात तुमारा दीया ॥ ताको सुत जिम है तनुधता
वम को सोई वीता वो वाता ॥ पत्री लिषदीजै वालक कर ॥ वचन वषानो मित्र भाव धर ॥ मदनसिंघ को
लीषियै ऐसै ॥ जो हम मंत्र कहै नृप तैसै ॥ ९ ॥ दो ॥ मदनसिंघ को लिखऊ इम नासु करऊ रहवाल ॥ जो
यहि शत्रू हतनु को या तो तु मथिर भूपाल ॥ १० ॥ चौ ॥ मदनसिंघ को लिषो यह वचननि ॥ यह शत्रू की जैह
ततति छिन ॥ तिः पाछे कुलिंद गहि लीजै ॥ बांध हाथ दूतन के दीजै ॥ सुत के मृत्ये होइ निरवल तन ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

यह शत्रु कीजै हतत तत्तछिन ॥ पुनपाछे कुलिंद सों हम तुम बांध लेह हतत वशोक तजहु मन ॥ नृपकों मंत्र
कुंवुध वताये ॥ सुन निरदत वअत सु बपाये ॥ लिखी पत्रका मदनसिंघ प्रति ॥ यह कारजु कीजै
मन हरषत ॥ सुत सप्त तआज्ञापितु माने ॥ पिता वचन महि भेद न आने ॥ ११ ॥ दो ॥ सकल शत्रु
हमरा यह हि पत्री लिषि याजोई ॥ पारवती पति कंठ ये जाको दीजै सोइ ॥ १२ ॥ चौ ॥ हम ते अधक व
ली यह तानो ॥ मन वच क्रम शत्रु पहिचानो ॥ हमरे गाउ मार इन लीने ॥ प्रजा लोक वस अपने
कीने ॥ हमरा राजु तेइ अव चलत व ॥ नासु करहु गे यह शत्रु जव ॥ तत्तछिन यह वालकु विषु दीजै
वेग करो हतु धिलमु न कीजै ॥ ध्या ठहुन हीं करहु यह घाता ॥ सत्य मानली जो मुहु वाता ॥ लिष पुत्री
हरि भगत वुलायो ॥ हरिगुन गावत तिस सु चलि आयो ॥ १३ ॥ दो ॥ दुष्ट वुध वल वचक है यह पति आते
जाउ ॥ मदनसिंघ कर दीजी यै समाचार पुन ल्याउ ॥ १४ ॥ चौ ॥ कीयो भगत सों वैर भाव षलि ॥ मुषमीठा हि
अंतर कल मलि ॥ वालक को पसु करत भ पाला ॥ तुम रिस सुत मम यह भगत गुपाला ॥ यह कारजु हमरा तु
म कीजै ॥ यह पत्रि का मदन कर दीजै ॥ भगत तन करहु मद्रकांपतीया ॥ भा षहु जाइ कुशल की वतीया ॥ प
तीया मे वहु लिषया न रेसा ॥ मदनसिंघ को यह उपदेसा ॥ यह शत्रु गुन रूप विशाला ॥ अति वलवान भग
त नंदलाला ॥ १५ ॥ दो ॥ दयानकी जै शत्रु परि वेद वचन परमान ॥ रह आरि को न हि द्या ठी ये विषु दीये ईह
दान ॥ १६ ॥ चौ ॥ तो कछु दुष्ट हृदे महि आयो ॥ लिष्यो सकल अपुने मन भायो ॥ वारं वार लिषियो यह वाता
लिषदीजै का जै यह घाता ॥ रथ सुंदर तति काल मंगायो ॥ आसु जोप रथ पर वैठायो ॥ चंदन रथ मए मुकी
वचीत वर ॥ तापरि वैठो मुदित भगत हरि ॥ रथ मन वेग पवन ते आगर ॥ जगमगाति छवि जोत उजागर ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पत्री दइ भगत के हाथा ॥ दै अन्न चरदीने नृप साथा ॥ १७ ॥ दो॰ ॥ करि प्रणाम सती पालइ हरख त भगत गोपाल ॥ आज्ञा लीनी राइ ते चलत भयो ततिकाल ॥ १८ ॥ चौ॰ ॥ चंद्रहास शेवक भगवाना ॥ शत्रु मित्र द्रिग ऐक समाना ॥ पत्री लै मस्तक पर धारी ॥ मन महि ऐक टेक गर धारी ॥ पूछ्यम हि मात पिता प हि गयो ॥ हाथ जोर कै ठाठ भयो ॥ दुष्ट बुध मुकि निज पुर पठवत ॥ आज्ञा देऊ मो हि मन हरिखत ॥ त्या इ साज्ञि आरती माता ॥ कुस कुंकम अक्षत कुसलाता ॥ दधि गोरोचन रजनी सीकल ॥ धूप दीप आरती बनी कल ॥ १९ ॥ दो॰ ॥ माता दई असीस बहु मस्तक चूम्यो तात ॥ जहा जऊ जै कार तुम होइ पुत्र कुशलात ॥ २० ॥ चौ॰ ॥ पुर के लोक सकल मिल धाये ॥ चिंता मन नहे वचन सुनाये ॥ लोगे करन परसपर बाता ॥ यह कारज नाहन कुसलाता ॥ पहुंचो पतीपा पठत भगत ॥ लोगे ... सब लोगन मिल दइ असीसा ॥ जी वऊ चंद्रहास पुगु वीसा ॥ कर ॥ दुष्ट मंत्र को ऊठ ओही धर ॥ दैअसीस सुभ वच प्रगटाहि ॥ सदा सहइ कुसले इन बालक ॥ त्री पुन पुर के ब्रह्मण मिल आऐ ॥ दै असीस ... २१ ॥ कुल पोहत आऐ बऊ तदानु दीयाति न योग ॥ प्रोहत तक हत तनन सकति तो हि भेपालक ॥ २१ ॥ ... ॥ २२ ॥ चौ॰ ॥ मेघावती कुलिंद की नारी ॥ लागे चंद्रहास महि तारी ॥ कुलिंद को हीये करऊ नहीं सोग ॥ २२ ॥ ... ॥ गावत भावति मंगल चारा ॥ मानो चहुं यो बि वाऊ कर नहि त ॥ गान कर त्याई मिल सकल पुर दारा ॥ दै असीस उन रुचि करे लाने ॥ कीयो प्रणाम तमिल सभ नार न हिति ॥ मुकता हार तीयन को दीने ॥ मेघावती पुन बचन बिखाना ॥ सुन सुत बच सुमात पित गुरु को ॥ हाक दीयो रघु चंद्रहास तव ॥ अंगअंग रक्षा करहि कहि तुमारी तात ॥ रक्ष क तुम रे बदन के प्रण मभगत भजवाना ॥ २३ ॥ दो॰ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Intitative

॥२५॥
२२८
अश्वमेध

मे त्रैभुवनतति॥२७॥ चौ॥ ग्रीवा रछ्छक कुसतुमारा॥ भुजा जनार्दन पीठ मुरारा॥ गात्र अस
सभ रछक हरिदेवा॥ करत सकल जगजाकी सेवा॥ रदताक वक्ष स्थलक रै दामोदर॥ रछ
क पदमनाभ नाभ उदर॥ रछानाभ करै पदमापति॥ हस्तपाद वपु जगनाथ अति॥ नेत्र
श्रवन नाशिका तुमारी॥ रछक सदा तो हरि गिरधारी॥ रछा तुम तन कर रहि गुपाला॥ रछ
क सदा तो हरि नंदलाला॥२५॥ मेधावती माता पुन वचनक हि प्रगटाइ॥ सुन रूप पत्र जव प्राय
मत तुम चडजाते रिपताइ॥ चौ॥ तवरिप जाति लछ वउ आनी॥ आदल्या वुड्गे ता पमन भानी
माताक हि सुत मन वच क्रम करि॥ त्या वृहगे तुम नारि ध्याहि हि घरि॥ कुलिवंता गुनरूप अपारा
आन द्रुगे सुंदर वरनारा॥ आपसारिषा प्रिया शीलयुति॥ व्याहुंगे ऐसी युवती सुत॥ मन अपु
नेनि श्रेज्ञानी मुज॥ मानलेहु सुत तस सकहो तुज॥ वहुअसी सदै मातगई जव॥ रथचडि चले
चंद्रहास तव॥ री॥ दो॥ चंदन रथ जो नव पदी याति: परिवै औ वाल॥ कृस्न चंदको ध्यान धरि रथ चुह
को ततिकाल॥ चौ॥ पवन वेग रथ चार तुरंगा॥ छाठ दीए हरषत अंग अंगा॥ नगर गाउ देष
त सभ जावै॥ वात निलिगादे षसुषु पावै॥ चल्यो जाइ देषि पुरस गरे॥ कौतक हो तन जहा मगठ
गरे॥ काम नदेषहि चंद्रहास जव॥ मर्छितेह हि निरषि वालक छवि॥ कामरूप वालिक अभि
रामा॥ निरषि भूल जाइ सुध वामा॥ पुरकी पुर्ष नारि जुपिआवहि॥ चंद्रहास उरकु समप
हिरामै॥२८॥ दो॥ अपर सुगंध फुलेलई कपान भेटले जाहि॥ एक वेनिति कर भगत को लेजावहि
अहि माहि॥३०॥ चौ॥ ए कल्पावहि पकल विविध प्रकारा॥ एक पावहि रावस नोतन हारा॥ इकता

त५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मत्या वहि मुकट षचैत मन॥ भगत भाल वांधहि हरि षत मन॥ जो ऊ भै षन पहिरे भगति तनि॥ शो
भा अधिक पावहि सो ऊ अभरन॥ इकतीप वस्त्र कुसुंभ लेआवहि॥ मुदित भगति के तन पहिरावहि॥
चला ताइ माहि गर षुआगे॥ जहि जहि नारि नर पाहि लागे॥ नारि ब्याहि के मंगल गावहि॥ निरषभ
गत सुष जो मसुष पावहि॥ ३१॥ दो॥ पाहि॥ ग्र हाहि तले चलहि जैसे कोऊ बरात॥ तैसे नर नारी सु
मद्धि गाकरत संग जात॥ ३२॥ चौ॥ आगे चले जाहि के ऊपाहि॥ निरषत सुषपावहि मन आहि॥ शो
भा निरषत पतिन हि पावहि॥ भगन भे पलागे संग जावहि॥ आगे आइ दुस राग मा॥ तौ वहि
फिर जै है निज धामा॥ सभ पऊ चाहि भगत को तैसे॥ हरि षत चहि वराती जैसे॥ वैकुंठ रन
सक हि जाहि संग लागे॥ निरष भगत छव मन अनुरागे॥ सभ नर नाए कृतारथ भये॥ द
रस परस सभ अघ मिट गे ऐ॥ ३३॥ जै मि नो चः॥ दो॥ सन राजा जैमिनु कहै श्राग न भये
मग माहि॥ कवि टहि कुन जे ऊ हरि भगत ता को भय कछु नाहि॥ ३४॥ चौ॥ भगतन के सहा
इ जदु नो षा॥ कहा करे शत्रु तिन साषा॥ भगतन को प्रताप हरि करही॥ स्वारथ सिंध करे
दुष हरिई॥ भगम हि जो हरि भगत निहारे॥ लोग न चरन सी सुप गधारे॥ अंग अंग बा
लक आनंग छवि॥ देषत वसी होइ नर ती घस व॥ हरि सिमरन नित करत भगत हरि॥
प्राप तिम ये दुष्ट वुध के पुर॥ चहुं दिश नगर वाग वन फूले॥ गुंजकर नित मधुकर अनु
कूले॥ ३५॥ दो॥ सुभग सुरोवर जल भरे दल फल फूल अनेक॥ दिनु मध्याह्न देव के

लद

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Initiative

वालक की पोवतु क ॥२६॥ चौ॥ सुंदर ठौर निरषि मद मुतछवि ॥ रदे विचारी चंद्र हासतव ॥ ऐसी ठौ
र करौ विश्रामा ॥ तौ लगि भि रै तजु आतिघामा ॥ रघु ठा ठाकी नो घारे परि ॥ तही ठौर रघु देदा ऊ मनचर
भी तरजा यो भगत हरषत मन देष्यो एक तलउ मधुवन ॥ प्रफुलत कमलत हाव जुरा जत ॥ सुसुमन
स्याम स्वेत छवि छाजत ॥ तरवर निमित फलनि के भारा ॥ पत्र पुहुप फल विविध प्रकारा ॥२१॥ दो॥ अ
मगा सुरोवर हंस सपिच कर्ता मोर चकोर ॥ शबद करत हरषत तहि पे जंतु तर अंकलि घोर ॥२२॥ सो॥
भगत की या इसनान पारथ को नाथ्ह दकहत ॥ संतोषे भगवान बहु रस भोजन फूल फल ॥२३॥ जे
नो … चः ॥ चौ॥ ते मिनु कहै सुन दुपद्री वीपति मजुन की यो भगत मन हरषत ॥ नित्य करम संध्या
दि कजे ऊ ॥ चैदु तासु कोने सभ ते ऊ ॥ बहु उपरि कु … को भोगु लगायो ॥ बहु रस भोजन नै तो मन भा
यो ॥ ठौर सु ईंक तनिर घमुदित मन ॥ सो ई रहा तता शेवक हरि ॥ विस्मा चंपक मालिनी दोउ
दुशात सषी संग ले सो ऊ ॥ ते कपै चली अंबिका सेवा ॥ गावति गीत मुदित हरि देवा ॥२०॥ दो॥
सेवा कर पुरुषोत्तम चली मग महि तिनि रच्यो बाग ॥ विषिया मो स सषीयन कहो हमरे मन अ
नुराग ॥२१॥ चौ॥ विमल सरोवर पुस्प पंछी सब ॥ शुभग ठौर रमणीय महाछवि ॥ सभ
सषीयन ईछा पति कीनी ॥ विषिया की आज्ञा पुन लीनी ॥ सभ चल गई वाग घारे परि ॥ ठा
ठा देषि रघु सुंदर वर ॥ रघु निरषत व षष्या अचरज मन ॥ हीरा रतन जडित मुकता मन ॥
निरषत रंग विस्मै ता होई ॥ राजकवर आयो इह कोई ॥ विस्मा एदे विचारन लागी ॥ चौप
वटी मन तन अनुरागी ॥२२॥ दो॥ रघु देषन लागी सकल मणक घचत अनेक ॥ चंदन रघु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मुकतालजोकी पोन जाइव वक ॥ ५३ ॥ चौ ॥ लागत कें ऊव होव ऊभागी ॥ देषनकों छिब पाअनु
रागी ॥ हम कों उचत देषु सोई ॥ त्रिः नर कों ऐसो रच्यो होई ॥ सघा घन स तित वाग मधि गई
हा सकरत हरषत मन भई ॥ सभ सषी घन मिल करत विहारा ॥ वहां सहदेस्र ने दुसर पारा ॥ अद
भुत क्रीडा करत परसपर ॥ सकल विचंद्र रूप सुंदर वर ॥ चंपक मलि निभिहा ये हरषत अति ॥ वच
नउचार कहे विधि मांधि ति ॥ ५५ ॥ चंपकमालनी उवाचः ॥ दो ॥ सुनवि चक्राअव तुम भई परन जोव
नवंत ॥ पाणिग्रहण अपुना करहु मन भायो वर कंत ॥ चौ ॥ दुतीय चंद्रमा वदन तुमारा ॥ केश निशा छ
विअति चमकारा ॥ मृकुटी मोल उडगन दुति राजत ॥ मृग कौ नाद गलोल विराजत ॥ चंपकली नाशिका
महा छवि ॥ वेसर मुकता जोति रहीं फव ॥ तन कज तन मति कनक कचोरा ॥ वरनन्न सकों रूप छवि तो
रा ॥ अधर मधर विद्रुम की आला ॥ बोलत अमृत वचन रिशाला ॥ कुच श्रीफल उर मोतन हारा
रोमा वलि जमुना की धारा ॥ ५६ ॥ नाभि कमल त्रिवली रुचिर शोभत भुजा मृणाल ॥ हस्त कमल अं
गुलि रुचिर नष नष्ट किसि सिजाल ॥ ५७ ॥ चौ ॥ कटि तट छीन सिंघ दुति राजत ॥ रंभा जंघ दुरद गति ला
जत ॥ चरन कमल नूपुर रुंनकारा ॥ चंपकली अंगुरी न षतारा ॥ शोभत नषशिष कनक वरन तन ॥
शोभा अमित न सकती कवि वरनन ॥ चंपकमालनि उस्तुति कीनी ॥ षिषघ या सभ श्रवन न सुनली नी ॥ स
भ सषी घन मिल भयी हुलासा ॥ विषा ग्रा सो रसिका जै हासा ॥ ले आई फूलन के हारा ॥ हसत परस
पर करत विहारा ॥ ५८ ॥ दो ॥ विधि या को मुषदायिके मांग बनावहि फूल ॥ माहदी तिवेदी रची भिर बिभिर
हिदि गससतो ॥ ५९ ॥ चौ ॥ तोरक मलदल कंठ बनावहि ॥ मंगल गीत व्याह के गावहि ॥ करत चली सभ हास

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बिलासा ॥ फैलरही सभ सुमन सुबासा ॥ निरख्यो बिमल सरोवर तहां ॥ प्रफुलत नलिन गुंजत अलि महां
अति रमणीय चहुंओर अदभुत छवि ॥ पहुंचे उतार के नग नभ ई सब ॥ मंजन करत सो सरोवर माही ॥ रच्यो
परस्पर हास तहां ही ॥ रीझ पवन परसत तिः अंगा ॥ चलनु सकत विहित बल भयो उतंगा ॥ ५०॥ दो॥ पर
सु भयो कनकातन कतो आनंद अपार ॥ भयो बिमल तजि मैलको कीनी दूर सिवार ॥ ५१॥ चौ॥ परस
भयो कनक जल विष पातन ॥ बिमल भयो तजि सकल मुदित मन ॥ मैल निरखि कन्या तजि ताई ॥ ता ते जब
कीनी उजलाई ॥ कर अंजुली भरि नीर चलावति ॥ सभ मिल गगन और छिरकावति ॥ उलटि परति बूंदें क
मलन पर ॥ बरखा करत हर चलि म जलधर ॥ मेघ जान नाचन क उठि धावति ॥ प्रमुदित ही प बूंद मुख पा
वति ॥ कन्या तन सुगंध बुहु डारई ॥ कस्तूरी चंदन जल पारई ॥ ५२॥ दो॥ जल सभ भयो सुगंध मै परसि कं
न्या का देह ॥ उठि आवति अलि कमल तजि मन सा कवै संदेह ॥ ५३॥ जैमिनु कहै सुन नृप न पआवनन ॥ बि
चिया के लकी ये हर चित मन ॥ जल ते निकस सब सनतन कीने ॥ अंग अंग भूषन सजि लीने ॥ सकल
सची ठाढी जल माही ॥ इक दासी सगलई तरू ही ॥ लागी बिचरन रूप महा छबि ॥ निरख्यो ते
कतला उअबर तब ॥ तजि अवलोको एक पुरख बर ॥ सो आपरा पांउ लावे कर ॥ सिंघ
कैं तिस्टरा बलवाना ॥ तन विसाल छबि रूप निधान ॥ ५४॥ दो॥ भुजा आजान तन चिहन सु
भ जानेया भगत मुरार ॥ बिस्मिया पर देव चारकी या चरित्र करें भरतार ॥ ५५॥ चौ॥ तन मे जा
से जैमिनु कहई ॥ पारथ प्रति नारद उचरई ॥ बिस्मिया निरख्यो भगत महा छवि ॥ अपुनेम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नविचारकीयोतव॥ निकट जाइदेख्योमुखयाको॥ सुंदरतनप्रकासअतिजाको तवउठिचला
विचास्योऐसे॥ नृपरचरनउतारेंकैसे॥ शवदप्रकासनृपुरनाहोई॥ सुनिधुनिजाउठु
ठैठौनसोई॥ दासीकोआज्ञाकीनीतव॥ नृपरपगनिउतारलेहुअव॥ ५६॥ नारदोवाचः॥ दो
सुनअरजननतनकनिकोनृपुरलीयेउतार॥ उभैमरालनीहंससहित तैपगधरेचितार॥ ५७॥ चौ
॥ कामातुरमरालिनीजैसे चलकरिगईभगतढिगतैसे॥ अरजुनभगतदेखवेकेहित॥ छाडीविध
मानहरषतचित॥ चितिंनचक्रतनिभालतिकवर॥ वहुभगतसोंयातीलोउपरि॥ पूरणमासीसु
इंदचंद्रमुख॥ निर्षनैनवियायायोसुख॥ कंठविराजतफूलनमाला॥ तापरगुंजतभवरविसाला॥ दे
असरूपविशालअंगसव॥ किधोप्राकशकोइंदनकरहवि॥ ५८॥ दो॥ चंद्रहासकोदेखकेविषयाकी
योविचार॥ राजकुंवरवरहरिभगतकरिहोंपतिभरतार॥ ५९॥ चौ॥ पितामोहिआज्ञादेगयो॥ द्वारवे
ठेपतिप्रपतिभयो॥ जाइकहोगीप्रथमभ्रातको॥ वहुरथिषानोमदनभ्रातको॥ रंजमानकंन्याभईअति
मन॥ अर्पणकीयोभगतकोनिजतन॥ विषियारीअतिजाकुललाजा॥ कीयोभगतसोंअपुनोकाजा॥ न
नमनधनकंन्याअरपीसव॥ चंद्रहासकोदरसकीयोजव॥ भगतवगलपतिपाणिरषी॥ लेईउठाय
विषयाकरधरी॥ ६०॥ दो॥ पत्रीलीनीकंन्यीकालेराषीकरधार॥ कहिआयोजैहैकहापढितीय
करोंविचार॥ ६१॥ चौ॥ वीचीसोकंन्यामनमाही॥ पत्रीपठनयोगइसुनाही॥ गुरमारेकीहत्या
चढैई॥ जोकाहूकीपतीयापढई॥ पुनविचारदेख्योमनमाही॥ यहहमरापतिसंसेनाही॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पाती अलि के पहिचाने ॥ आदर लै चलि पिता के जाने ॥ पढी पत्रिका चिंत भई ताके ॥ दुष्ट लिख्यो दीजै विष
याके आज्ञा करी हमरे ताता ॥ विषदी जै कीजै अरि घाता ॥ ६२ ॥ दो ॥ हत्या रे षल दुष्ट मति लिख्यो पत्र का
माहि ॥ मदन लखि घड़ सहतु करहु शत्रु को हुहु नाहि ॥ ६३ ॥ चौ ॥ लिख्यो वनाई मदन प्रति ऐसे ॥ यह शत्रु ह
ठ हुनति कैसे ॥ यह कारज को ढल मन कीजै ॥ अरि पहिचान वेग विषु दीजै ॥ पढि विषु या चिंता वृक्ष भई ॥ सु
धि बुध सकल नम्रलि कै गई ॥ नासु कर नय हृषि ता पढायो ॥ सो मुझ पति की नोम नभायो ॥ अति दुरातमा
है पिता हमारा ॥ मन वच क्रम निश्चै ह्यारा ॥ विष आसि मरनु को यो गोपाला ॥ हमिरं पति वसे होइन का
ला ॥ ६४ ॥ दो ॥ पुनि विष पापती पापठै विषु दैनी को ठौर ॥ मन महि ज्ञान विचारियो ऐकु अंकुर दे और ॥
६५ ॥ चौ ॥ अर्जुन नेन उतारे आन सभ मर ॥ मन महि ध्यान कीया सिमुरन हरि ॥ पत्री मांहि प्रभु भअंकु वना
यो ॥ विषया ते विष्या ठहि राउो ॥ विष हु ते पुनि विष्या भई ॥ कंन्या की चिंता सभ गई ॥ कर्ता कीनो कृष्ण
मुरारी ॥ आपु ने भगतन के हितकारी ॥ अंगीकारु करत हरि जाको ॥ विघन ला गसकै केको उताको ॥ वि
षिया वहुरि लपेटी पाती ॥ राषी वगल भगत की छाती ॥ ६६ ॥ दो ॥ यह कारजु कर कंन्या काज गई सहेलि
न पास ॥ गुप्त वात राषी हृदै कहु न करी प्रकास ॥ ६७ ॥ चौ ॥ सुन राजा कंन्या जव गई ॥ जाग्यो चंद्रहास सु
धि भई ॥ भगतन को यसु राषत श्रीपति ॥ रक्षा करत रैन दिन हरि रषत ॥ रथ चढि चल्यो भगत
प्रमुदित तन ॥ हृदै मगन यसु करत स्याम घन ॥ नव विचार कीनो वालक तन ॥ दुष्ट बुध कोपित यह
मदन ॥ ताके भेट उचित कहु दीजै ॥ नपसु तक प्रपीन कहु दीजै ॥ तरकस ते दै वान निकारे ॥ नेभेटा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ठाढे नृपद्वारे ॥ ६८ ॥ दो॥ द्वारपाल निरख्यो भगत कहु चित हित न सम भगात ॥ भगत कह्यो सुन भूपवरी याकु
ज्ञानपति सो बात ॥ ६९ ॥ चौ॥ मदनसिंघ को कहो तुम जाई ॥ पत्री नृप रे देखि ताप ठाई ॥ सत द्वार रथेन नृपके
धामा ॥ सात द्वारपालक अभिरामा ॥ ऐक दूसरे को समझायो ॥ व ज्ञ भगत पत्री नृप पत्यायो ॥ सप्तम द्वार
पालप्या ज्ञो ज्ञ ॥ सकल व्रतांत सुनत भयो सोऊ ॥ उस्तुति भगत श्रवन सुन लीनी ॥ तिन सन्धि ज्ञाइ मदन
को दीनी ॥ ताको नाम सभा व प्रधाना ॥ तिः नृप सुत को वचन वखाना ॥ ७० ॥ दो॥ सिंघासन नग मणि छवि
तजग मग जोति अपार ॥ दस खबर सिरठारहि ब्राह्मण वेद उचार ॥ ७१ ॥ चौ॥ ऐक ओर ठाढे छत्री स
व ॥ अति सूरे बलवान महा छव ॥ ऐक ओर नट गन गंधर्व वागायन करती भए तेहि ॥ ऐक ओर सखी
तनु भगवाना ॥ मदनसिंघ प्रति हाथ जोर करि ॥ वचन प्रधान कह्यो तिः श्रवन सखी द्वारक कह्यो सुन
नृप ताता ॥ तुम सो कह्यो जथारथ बाता ॥ वचन ह्यो हम तुम सो जैसे ॥ तुम रे पित सो कहो न तैसे ॥ तुम
ताहि शेष वक नंदलाला ॥ सो कुल कुण मघ भगत गुपाला ॥ ७२ ॥ दो॥ तम गुण मैं तुम राखि तास ह हीं चे
अभिमान ॥ हम कहि सकोर्त न वचन शुभ दुष बुधि विद्यमान ॥ ७३ ॥ चौ॥ हम मरा वचन श्रवन
सुन लीजै ॥ मन वच क्रम मनि श्रै जो पकी जै ॥ ठाढे द्वार भगत मदलाला ॥ प्रगट श्रात माकु
प विशाला ॥ है साक्षात ब्रह्म को रूपा ॥ तेज वान तन नख शिख सुरूपा ॥ सुंदर मुख शाशि शक्रां
ति विराजै ॥ नेर मती कोट मदन दुति लाजै ॥ शोभा सिंधु नैन चक्र सुद मृत तन ॥ वदन प्रा
को श भगत तर बतमन ॥ ७४ ॥ जै श्री नो चः दो॥ जै मन जन मे जै कहै मदन सुभा तु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२८ २८०. अमेध

प्रधान॥ चंद्रहास सखर अग्रिपुन॥ अरुंदिवा तेज प्रधान॥७५॥ चौ॥ इन चारो मै जोत प्रकाशा॥ स
म महि आतम कला निवासा॥ चारो जोतिन समसर तहा॥ होइ प्रकाशित आतम तहा॥ तिनके नहि
आतम उजिआरा॥ ईद्री सम अवरि अधियारा॥ ते अग्यान सं तज अपराधी॥ आपनु चीन्हहि तत्वन साध
हि॥ ता ते तु मे आतमा सु रूपा॥ ठाढो द्वार ब्रह्मको रूपा॥ पत्री ले ठाढो द्वारवारा॥ वैष्णव भगत तन शोभ
अपारा॥७६॥ दो॥ आतम स्रुति धारा जस तुत भगतसु न्योजव द्वार॥ नांगे पाइन उठ चला माहा प्रीति जीय धा
र॥७७॥ चौ॥ द्वारे सात त उलंघि गयो जव॥ चंद्रहास का दर्शन कीयो तव॥ निरख भगत की छवि अभिरामा॥ प्र
णमै कीयो मदन प्रणामा॥ प्रस्न कीयो जेनेमै गै हित पत्री॥ उत्तरु दीजै मुनि मन हरषत॥ मदन सिंघ नप
दुष्ट बुध सुत॥ सुत कुलिंद का चंद्रहास उत॥ दुष्ट बुध ताव ठानु ऐंदा॥ ताते दास समान कुलिंदा॥ ताका
पूत मदन पहि आउ॥ पाती दै कर नृपति पठायो॥७८॥ दो॥ मदन सिंघ तिः तै नहित दो रोना गे पाइ॥ जैम
न स्वामी कृपा कर उत्तरु मोहि सुनाइ॥७९॥ जै मि नी वा चः॥ चौ॥ जैमिन कहै सुनहु भूपाला॥ उत्तर प्रश्न
ले कुनत ति काला॥ चंद्रहास होतो बालिक जव॥ प्रापति भयो सगुसं तन तव॥ तत्वज्ञान उपदेस कीयो तिन
आतम चीन्ह प्रकास भयो इन॥ हृदे प्रकास भयो आतम रामा॥ प्रापति भई भगति निहकामा॥ जव ही आ
तम तत्व पछाना॥ जो जन सेवक रत भगवाना॥ जो हरि करै भगत की सेवा॥ तौ पहि जगत वस देवी
देवा॥८०॥ दो॥ अपुनै भगतन की सदा कुसल करत जव सेव॥ तीन लोक तिः दास वत पूजहि देवी देव॥
८१॥ चौ॥ प्रेम जेवरी सो वाधो हरि॥ भगतन भगत भाउ ही चेद्ध ड करि॥ छूटति नाहि न कोट जतन सों॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हरि नही साणु करत भगतन को ॥ सदा सहाय करत अपुने जन को ॥ देत अभय पद सुख तन मन
को ॥ भगतन को हरि आज्ञाकारी ॥ रक्षा करत सदा हितकारी ॥ कौन वापुरो मदन का हावै ॥ हरि भ
गतन को सीस नवावे ॥ इन वातन अचरज कछु नाही ॥ समझ देष नृपति मन माही ॥ ८२ ॥ दो ॥ तिन
का आदर हरि करहि सुन जन मैत्री राजि ॥ ऐसो कौन त्रिलोक मधि भगतन करै निरादु ॥ ८३ ॥ चौ ॥ निरष
मदन आतम प्रकाश को ॥ नमसकार कयो चंद्रहास को ॥ तेज भगत का सहि न सक्यो मन ॥ वैठायो
ते अर्ध सिंघासन ॥ मृगमद आदि सुगंध सकल तवर ॥ आनी सोधि आरती भी तकर ॥ पूजा कीनी
विविध प्रकारा ॥ मदन सिंघ मुख वचन उचारा ॥ तुम दरसन ते भय पेस नाथा ॥ मो पर कृपा करी य
दो नाथा ॥ नीका न पति कुल दहमारा ॥ नीका है पुर प्रजा तुमारा ॥ ८४ ॥ दो ॥ तुम सार षे जहा
भगत तहा सकल कुसलात ॥ तुमरे दरस परस भय पापावन हम रोगात ॥ ८५ ॥ त्रै मे नो वा
चः ॥ चौ ॥ जैमिनु कहै सुन जपधिपती ॥ यहि वच मदन कहे मन हरषत ॥ चंद्रहास मुख व
चन कहे फुनि ॥ धंन्य धंन्य तुम मदन प्रावन सुन ॥ वडे धंन्य घर वृधि तुमारी ॥ नि शदि
न सिमरत हो गिरधारी ॥ सुफल भयो आनाह हमारा ॥ परस्यो पावन दरस तुमारा ॥ तु
मरा दरस परस सुख भयो ॥ साध संगत ते सभ दुख गयो ॥ भगत वुध तुमरी दड भइ ॥ देहि वास
ना सभ मिट गइ ॥ ८६ ॥ दो ॥ उपजत साधु संग ते आतम ज्ञान प्रकास ॥ भगत विवेक विचार
कै हो त मिटत जम त्रास ॥ ८७ ॥ चौ ॥ तुम सार षे साध भव माही ॥ जगत उधारे संसे नाही

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥श्री॥
मेघ
२८५

बडभागी संतन संग होई ॥ प्रापति बिन ऊन पावै कोई ॥ केवट नैका पार उतारहि ॥ तैसे साधके
टल षतारहि ॥ मुनप्रपति भयो संग तुमारा ॥ तप तमिटी भयो कुसल हमारा ॥ हमको तुमरे
पिता पठाऊ ॥ पाती लेह्यारे तुम आयो ॥ पत्री लीखी गुपति तुम ताता ॥ लखी बिचार तुमैकछुवा
ता ॥ ८८ ॥ दो ॥ पाती पठऊं इकां तहै आज्ञा माना ताता ॥ जानत हो भारी कछु हीबी तोइ गी वात ॥
८९ ॥ ना २ दो ३ च: ॥ चौ ॥ नारद कहै अवन पारथ्यो सुन ॥ पत्री लेवच मदन कहे पुन ॥ प्रगट पठे
गा पतीया ताता ॥ सगरी सभा सुनै यह बाता ॥ प्रगट पठो सुन है सभ कोई ॥ पाती गुपत पठेन
हि कोई ॥ पत्री षोलि सभा बीच तव ॥ कुसल संदेस लिषे भ्नपतै सब ॥ दुए बुधइ मलिख्यो मदन प्र
ति ॥ यह कारज की जे मन हरषत ॥ तुम पहि मुनय पठायो यह बात कि ॥ विधि पाइ सहि देऊ तत्तिका
लक ॥ ९० ॥ दो ॥ मात पिता कुल ज्ञात तुम कछु न पच्छो बाल ॥ अब र बिचारु न कीजीये दे विधि या
त तकाल ॥ ९१ ॥ चौ ॥ पत्री मधि लिषियो प्रति मदन ॥ यह बालक मुन शत्रु वल तन ॥ आज्ञा मोहि
मानसु तल्ली जे ॥ यह बालिक को विधि यादी जे ॥ पत्री पठ भयो मदन हरष मन ॥ चलत तवे रमु
ऊकहे पित वचन ॥ जो विधि आ मांगे वांछत पति ॥ सो दीजे तत छिन मन हरषत ॥ यह वरु दुए
पवरु लऊ ॥ ९२ ॥ दो ॥ विधि आ वाली मदन प्रति जो पितु पठयो भरतार ॥ सो इवरो गी उची त
मुझ मन वच क्रम जी पध्यार ॥ ९३ ॥ चौ ॥ विधि आ मन आनंद तभई ॥ सषी उपज्यो चिंता दुरि गई ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मदन सिंघ आति भयो मुदित मन ॥ सुष आन गीन तस मतीन हरष तन ॥ धंनद एवुधपि तातुमारा
॥ जितो दुए मति सभ कुल तारा ॥ जिन हरि भगत पठयो कंन्या हित ॥ ता ते म हा धंनंन पकी मति ॥ जैसी
विषया भगति मुरारा ॥ तैसा प्रापति भओ भरतारा ॥ पुन्य उदे कंन्या के भयो ॥ कुल प्रकाश कीनो अघ गए
ऐ ॥ ५७ ॥ दो ॥ ठैर दई हरि भगत को मदन सिंघ शुभ धाम ॥ चंद्रहास हरष तहां चेकी यो तहां धाम सु
ई ती श्री भरथ पर व ऐ आ स्व मेध वि ध्या मे चौ रे ज मो ध्या ष्ट ह हि क न पू नै जा न ५६ सम सा
तै मि नो वा चः ॥ जैमिनि कहै सुनहु कुरु नंदन ॥ भगत कथा अघ ओघ निकंदन ॥ कुल प्रोहित तहं तुम
दन बुलाओ ॥ नग जोतिक सभ चलि आओ ॥ कीयो प्रणाम मदन बोलो तब ॥ प्रोहित तम आदि सुनहु
द्विज वर सभ ॥ आज्ञा कर पठयो मुहूरत ताता ॥ पतीया मांगली कीय यह बाता ॥ चंद्रहास विष आवरु
द्विजे ॥ यह कारज कोग हरू न कीजे ॥ तुम सभ मिलि सु भल विचारहु ॥ पुस्तक काढहु विलम न
वारहु ॥ १ ॥ ना रे दो वा चः ॥ दो ॥ नारद पारुषसों कहै सुनहु कथा चित लाई ॥ सकल नगर के लोत
की भले ऐक ठै आइ ॥ २ ॥ चौ ॥ निरखि रहे द्विज चंद्रहास को ॥ विष्नु भगत आतम प्रकाश को ॥ हरष
द्विजन मुख वचन उचारे ॥ धंन्य मदन धंन्य पिता तुमारे ॥ यह बालक मूरति जगदीशा ॥ तुम कु
लतारै सो ईक वीसा ॥ गुन निधान विव्ह आप्यो जैसी ॥ विष्नु भगति पायो पति जैसे ॥ जाके दुरस प
रस अघ नासे ॥ तिः के कुल तुम की यो निवासे ॥ कंन्या पूरव सुकृत कमायो ॥ तिः प्रसाद ऐसो पति
पायो ॥ ३ ॥ दो ॥ कहि केउ पूछ्यो लगन मदन सुनहु तिधार ॥ साध दरसते होत है मंगलाचार अपार
पार ॥ ४ ॥ चौ ॥ विष्नु भगत को दरसन होई ॥ शुभ दिन लगन मुहूरत सोई ॥ गृह तन दत्र मपैते

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भमेध
३८२

॥२॥ जगुपाला ॥ सो भगतनि के वसि नंदलाला ॥ हरि भगतनि के हृदै कलोलै ॥ रत्नाकर तदास सं
गडोलै ॥ प्रेम जेवरी स्यो वांध्यो हरि ॥ संतनि राख्यो आपने वस करि ॥ साध संगते विघुन ला
गहि ॥ दरसन परसि कोट अघ भाजहि ॥ हरिजन हरि ऐको जीय जानहु ॥ मन वच क्रम मती यस
त्य प्रमानहु ॥ ५ दो० ॥ हरिजन औ हरि एक है भेद न जानौ कोइ ॥ सवद्यान आतमा की मूरति वाल
क जानहु सोइ ॥ ६ चौ० ॥ सुनहु मदन नृप वुधु विशाला ॥ यह कारज की जैतति काला ॥ गोधूल
का समै कृतिकी जै ॥ कन्या ब्याह भगत कौ दीजै ॥ यह वच सुनत मदन हरिषत मन ॥ तिलकु पठ
इदीयो कर व्रह्मन ॥ फूलन माल द्विजन के हाथा ॥ चंदन श्रीफल अक्षत साथा ॥ चंद्रहास के
ते गुन धामा ॥ विप्र तहा कीनौ विश्रामा ॥ नृप प्रोहित चंदन लीनो कर ॥ चरच्यो मुदित भग
त के तन पर ॥ ७ दो० ॥ अक्षत श्रीफल दीपकर उर पहिराई माल ॥ शिव स्तुति की उसतकरी
तिलकु चढायो भाल ॥ ८ ॥ चौ० ॥ चंद्रहास मन हरषत भयो ॥ विप्रन को अति आदर दयो ॥ सस्त्र
रो प्रोहित को दीये दाना ॥ हीरा कनिक रतन विधु नाना ॥ सप्त वेर न वसन पहिराउ ॥ कुल प्रो
हित आदर अति पाउ ॥ अवर द्विजन को दान दीयो अति ॥ चंद्रहास भूपति मन हरषति ॥ जाच
क आई दान जो ऊ मांगहि ॥ ततछिन पावहि जो मन वांछहि ॥ भंगत भए सकल धन वाना ॥
भरे कनक मणि रतन मजाना ॥ ९ दो० ॥ कीरति भई नगर सकल वृद्ध वाल नरनारी ॥ सुनो
न श्रुति देख्यो कहूं ईन वालिक चित ऊदार ॥ १० ॥ जाचक करत परसपर वाता ॥ इन सम अ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वरनहीकोऊदाता॥ अपुनेसाधकहूनहीत्याऊ॥ इतनोद्रव्यकहांईनपाऊ॥ जोऊ
जैसीमनसाकरिआवत॥ सोऊतैसोतत्छिनफलपावत॥ जहंजहंभगतपसारेहा
था॥ त्यपवतवस्तुसोऊकरसाथा॥ जोजाचकतापेसोईहैआवे॥ निश्चैमनवांछितफल
पावै॥ ११॥ दो॥ यहवृतांतुसुनमदनकोलोकनभाष्योजाहु॥ वठेदानयहकरततहइछा
होपुरगराइ॥ १२॥ चौ॥ चंद्रहासयहअतिउदारनृप॥ ऐसेकोऊनअवरनृराधिप॥ साधु
निआन्योद्रव्यघजाना॥ देतकहामनवांछितदाना॥ जोईजैसीमनसाकरिजावे॥ सोईतैसो
तत्छिनफलपावै॥ यहतोअतिअचरजकीवाता॥ हृदैविचारकरैऊनृपताता॥ नृपकंन्या
दीनाइनकैसे॥ हमसिवृतांतुसुनावहुतैसे॥ वहुरिपत्रिपठिकीजेसिध॥ लीवीतेइतिनअव ८का
रकहूविध॥ १३॥ दो॥ चंद्रहासकोजाइकुलपूछहुलोहिनपताता॥ जनमभूमियाकीकवनकवन
नामपितमात॥ १४॥ सो॥ जैसैकह्योराजानवहुरकाठिपत्रीपठऊ॥ हृदैविचारऊज्ञानउच
तहोइसोईकीजीये॥ १५॥ चौ॥ कहितैमिननृपसुनहितुधारी॥ पुनपितुपतीयामदननिकारी
सकलसभामिलवैठीजहा॥ नृपपतीयावाचीपुनितहा॥ लिख्योनृपतिछिनुवैलमुनकीते॥ पहल
लककोविषिआदीते॥ जोचाहततहोकुसलहमारा॥ विषिआदेउनकरऊविचारा॥ जोचाहेकारजु
थिरहोई॥ जोहमलिख्याकरऊतुमसोई॥ हमराषतसुपूततुममदन॥ हमरीआज्ञाधारलेऊ
मन॥ १६॥ मदनसिंघोवाचः॥ दो॥ मदनकहिसुनहोसभाऐसैलिख्योराजान॥ कंन्याकोअवदी
जीयेयहसत्रुवलवान॥ १७॥ चौ॥ हमरेपितासत्रुयहजाना॥ याकोमहावलीपहिचाना॥ म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥३२॥
३८२
अश्वमेध
प्र.जै.
४२

तिन्हे वेप हुराजु मोहि थक्ति ॥ कंन्या देउं करों अपुने वसि ॥ नप विचार कीनो मन माहीं ॥ पा
ती दे पठियो मुझ पाहीं ॥ जो पितु आज्ञा पुत्र न मानै ॥ परै नरक में श्रुति जी पजानै ॥ दान कर
त जो ऊ वर ज रहावै ॥ सो नर घोर नरक गति पावै ॥ तैसे महा नरक मै परई ॥ पिता वचन सुत श्रेठ
त करई ॥ १८ ॥ दो ॥ जोई का भगवंत की बात वखानति है सोइ ॥ निट हृक नटारी नाट रै जो हृ एक रेह
सु होई ॥ १९ ॥ चौ ॥ बालकु पठयो पिता विचार करि ॥ कंन्या लीनो पति सा चौधरि ॥ पिता आज्ञा
मेटी ये कैसे ॥ चारो वेद कहित है ऐसे ॥ वहे कहित सो कीजे बाता ॥ ताते हो इस कल कुसला
ता ॥ यह विचार करि मदन उठो तब ॥ अपुने संग लेच ल्यो सभासव ॥ सभ चलि गये भगत सिः
प्यामा ॥ कीयो परस्पर दु हूनि प्रणामा ॥ [illegible] प्रथम मदन मुख वचन उचारे ॥ सुनह
त चंद्रहास हरि प्यारे ॥ २० ॥ दो ॥ हम सुपित तुझ को पठयो पहि निमित्त जी पधार ॥ कंन्या अरपी
तो हि को कुल की नो निस्तार ॥ २१ ॥ चौ ॥ सैना दई न तुम रे साष्या ॥ पुनि कछु द्रव्य न दीयो संगा ष्या ॥ तु
म तो दान करत हो भारी ॥ कहो लहुत मक हानि कारी ॥ कवन तुमारा कुल पित माता ॥ हम सो कहो
त प्यारि ष्यवाता ॥ जनम भूमि है कवन तुमारी ॥ भाष सुनाव हु भगत मुरारी ॥ २२ ॥ दो ॥ जै ॥ नो ॥ चः ॥
ऐसे वचन मदन कहि सुन नृनि मे जेरा रु ॥ चंद्रहास मुख वचन उचारे ॥ सुनहु मदन तुम नृपति हमा
रे ॥ कुल कुटंब हम कछु न जानो ॥ मात पिता अपुना न पिछानो ॥ जानो एक कृष्ण कुसलाता ॥ जो है
तीन लोक को दाता ॥ सदा सहाई करत मुझ साष्या ॥ मात पिता प्रीत मजा दु नाष्या ॥ हम रा हा प्रभु
विति त्रिः ठाई ॥ पोष्पर ते मुता हो जाई ॥ माटी परसे कंचनु होई ॥ मुझ च हो ये सुकरहि हरि सोई
चंद्रहास [illegible] हरि भगत सुन बोल्यो मदन मुसकाइ ॥ २३ ॥ चौ ॥ ४

॥ ३२ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२४ ॥ दो ॥ जो हि आदि देवो द्रुपम है हरि दीसै सभ ठैर ॥ मन वच क्रम सजीप जानहि ताहि रवि
तुअ वरन कोई ॥ २५ ॥ चौ ॥ तिन को अंगीकार करत हरि ॥ ते निरभै नाहिन को डर
सकल जगत सों मित्र भाउ तिन ॥ अच्युत अवनाशी सिमर्यो तिन ॥ इहा सों विचरत परका
जा ॥ काहू सों नही वैर समाजा ॥ तिन भगतन सिमरे नंद लाला ॥ सम द्रष्टी तिन त सोंत
जो लाला ॥ हम तो सकल ब्रह्म पहिचानो ॥ तुमरे जो चकी तुम ही जानो ॥ हमरे सदा सहाइ गुपाला ॥
जो प्रभ अखिल भवन प्रति पाला ॥ २६ ॥ ना ॥ दो ॥ कहि नारद अर जनेस सुनो भगत कहे
यह वैन ॥ साध संग ते मदन को भए ज्ञान ही ये नैन ॥ २७ ॥ सो चंद्रहास को राइ पूरन जानो
आत्मा ॥ सावधान पाइ राइ मन वच क्रम जान्यो ही ये ॥ २८ ॥ चौ ॥ जैमिनु कहे
सुन हमहू पाला ॥ वसु ऐक दुतीयो अंतराला ॥ ते पद मदनसिंघ को गयो ॥ केवल एकत्र
आतमा भयो ॥ ऐक शरूप भए दोनो ॥ तब मदन अपार आनंद भयो तब ॥ पूरन एक ब्र
ह्म पहिचान्यो ॥ दुतीय भाउ मन माहि मिटान्यो ॥ मदनसिंघ मन माहि विचारी ॥ धन्य दुए
बुध पिता हमारा ॥ तिन यह वरु विधि याको दीनो ॥ कुल अपुना कृतारथ कीनो ॥ २९ ॥ दो ॥
पितु आज्ञा मो को उचित वेग करौं यह काजु ॥ चरन लाग के उठि चलो कीयो ब्याह को साज
३० ॥ चौ ॥ मदनसिंघ अपुने गृह आयो ॥ आज्ञाकारी निशान वजायो ॥ हाट पाट मंदर प
रह्यो ॥ आज्ञाकारी निशान वजा वृद्ध ॥ सकल वजंत्र वजावन लागे ॥ सुनत नरिन
रमन अनुरागे ॥ विधि आमन्त्र आनंद तम भए ॥ सुख उपज्यो चिंता दुरि गई ॥ जो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

३३
३.८८
। अश्वमेध

मुरज बाजन की धुनि मै पति ॥ सो मुजदी यो ऋत्विका हरषित ॥ अब मुरज रुचि तमेट ले जावकु ॥
देवी की पूजा करि आवकु ॥ ३१ ॥ दो ॥ धूप दीप नैवेद लै सखी लइ सम साथ ॥ मंगल गावति उ
ठि चली साजि आरती हाथ ॥ ३२ ॥ चौ ॥ गोधूलिका समै चलि गई ॥ घार मूवका प्रापति भई ॥ पूजा
की नी विविध प्रकारा ॥ तत छिन फार कै आई घारा ॥ आज्ञा कीनी मदन सिंघ तब ॥ फिर कछु गोधु
गली बजार अब ॥ धुजा पताका कलस बनावहु ॥ दुंदभि ठोल मृदंग बजावहु ॥ रतन खचित मणि
मंदर जाही ॥ ब्याह आरंभ की यो नृपत हा ॥ रची तहां कंचन की धरनी ॥ जगमगात छवि जात न
बरनी ॥ ३३ ॥ दो ॥ कंचन खंभ मनगन खचित रोपन की ये विशाल ॥ बाजु रच्यो हरषत ही ऐ मदन
सिंघ भूपाल ॥ ३४ ॥ चौ ॥ भई एकत्र सुहागन नारी ॥ कंचन कलस लीऐ सिर धारी ॥ ल्याई सकल
नीर निरमल भरि ॥ गान करत कन्या गज परिचई ॥ हरषत हीये कुसम बरषावहि ॥ मंगल गी
त ब्याह के गावहि ॥ जुवतीनि षोडश कीये संगारा ॥ उर पहरे मुक्त तन के हारा ॥ भूषन दूट पर
ति धरमा ही ॥ तिन को बरु रि उठावति नाही ॥ नै तन भूषन देत मदन तिन ॥ हीरा मणि कंचन ता
ही छिन ॥ ३५ ॥ दो ॥ गोधूलिका समै भइ बेदी रची बनाई ॥ रतनन खंभ रचे तहां बेद सुनि द्विज गा
इ ॥ ३६ ॥ चौ ॥ कस्तूरी कुंकम कपूर जल ॥ बिंबि आमजुन की पोतन विमल मन ॥ वस्त्र कुसुंभ सा
जि भूषन तन ॥ बेदी पर ठाढे हरषत मन ॥ नीर सुगंध सौच विधि नाना ॥ चंद्रहास की नोइ स नाना
तन दुकूल पहिरे उर माला ॥ हरषत चंद्रहास भूपाला ॥ मुदित मान बेदी पर आयो ॥ विप्रन बे
द विमल जस गाओ ॥ कुल प्रोहित ठाढे बेदी परि ॥ तिन गणपति लीने बेगा दुहन कर ॥ ३७ ॥ दो ॥
मंगल त्रापहरि कंन्या कादाऊ इकठे कीन ॥ बठ बैठे इस्त्री पुरुष गुन निधि दोऊ प्रवीन ॥ ३८ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥चौ॥ वेदी पर होए सविधाना॥ ब्राह्मन करत वेद विधाना॥ होम करत पावक जब तिल घृत॥ जोरी अंचल
गांठ मुदित चित॥ वेदी निकट फिरन दोऊ लागे॥ सुख संभृत उपजे दुख भागे॥ प्रोहित तब पूछ्यो चंद्रहा
स पै॥ कहो आपना कुल प्रकास कै॥ तुम तौ विष्णु भगत निहकामा॥ कहो गोत्र पुन पिता पितामा॥ पहु
न उचत ब्याह के अवसर॥ वेद वचन प्रतिपाल भगत हरि॥ ३९॥ चंद्रहासोवाच॥ दो॥ सुन जु
न मे जै हरि सि कहो चंद्रहास भूपाल॥ सुन प्रोहित मुझ गोत्र कुल है समस्त नंदलाल॥ ४०॥ चौ॥ मा
त पिता पर पिता पिता माहः॥ सभ हमरे जानहु घनस्यामा॥ मेघावती माता अब जानहु॥ नव
ति कुलिंद पिता पहिचानहु॥ जिन हमरी रक्षा कीनी निज॥ सो गोपाल मेरा मात पित॥ चंद्रहास यह
गोत्र विधाना॥ पुरोहित सुनत जीय आनंद माना॥ लागे पढन वेद विध जैसे॥ पूरन भयो ब्याह विध तै
से॥ बहुरि द्विजन मुख वचन उचारे॥ सुनहु मदन तुम नृपति हमारे॥ ४१॥ विप्रोवाच॥ दो॥ तुमरे
गृह प्रगट्यो मदन श्री भगवान सुख्यात॥ सुफल भया कुल गोत्र तुम अब रघ धन्य पितु मात॥
४२॥ चौ॥ प्रोहित कहै मदन सुन लीजै॥ अब कछु दान विप्रन को दीजै॥ यह वेदी कुरुक्षेत्र समा
ना॥ तुम को उचत देहु अब दाना॥ मदनसिंघ दान तब दीना॥ वेद वचन संपूरण कीनो॥ द्वै शत दु
रद स्वेत मद माते॥ कनक घूट मद अंभ चुचाते॥ अस्व आप तदै दीये संगाथा॥ करभ आयुत इ
क दीनो साथा॥ चंदन रथ दै सहस्र दीने भर॥ हीरा चीर मन रतन पटंबर॥ ४३॥ दो॥ कंचन म
णि मुकता रतन वसन अनेक प्रकार॥ गो सहस्र दस संग दई दासी दास अपार॥ ४४॥ चौ॥ विनै करी
पुन मदन जोर कर॥ तुम दीया हम तोहि भगत हरि॥ कहु न दीया हम विष्णु भगत तुज॥ बहुएा सम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ पूवी जथा शक्ति मुरा ॥ कंन्यादान करत है जोई ॥ विधवत दान देत है सोई ॥ सो दै वेगा पिता ह
मारो ॥ सुनऊं भगत हम दासु तिहारा ॥ दासी जानो वहणा हमारी ॥ सदा करैगी टहल तुमा
री ॥ मुरा आतमा समर्पण कीनो ॥ आप नासी सु भगत तुम दीनो ॥ ४५ ॥ दो ॥ द्रूम भेद जो मुरा की
री तुछ तो क्ति विद्यमान ॥ कुन दीनो निजसी सु मुरा मन व चक्रम जीव जान ॥ ४६ ॥ चौ ॥ हम रे गह प्र
गद्यो आवतारा ॥ चंद्रहास साध्यात मुरारा ॥ निंद करऊं जो सी सु हमारा ॥ ले हारऊं उद्यान मंझारा ॥
तासा धलकरऊं चौगाना ॥ तो पह भेट न तुछ समाना ॥ जदपि करो सु मेरमेट हम ॥ भगत विद्यमा
न वहत णासम ॥ साधसेव ते चार वदारथ ॥ सिंधि होत है स्वारथ परमारथ ॥ हरिका भगत दुखावती
कोई ॥ घोर नरक तिः प्रापति होई ॥ ४७ ॥ जैमिनी वाचः ॥ दो ॥ जैमिनु कहै सुनऊं नृपति भगत कथापर
वीन ॥ तन मन धन सर्वसु मदन चंद्रहास के दीन ॥ चौ ॥ भगत प्रसंन मदन परम यो ॥ की यो आलिंग
न भुज भरि लयो ॥ पूरण प्रेम प्यो व्याह कुसलाता ॥ मुदित हीये पव बधपा की माता ॥ सुनत जमात्रा गहले
गई ॥ फूलन तल प विद्या वत्ति भई ॥ कुसम मंझरा वेम हासु वासा ॥ तत्त वै ठाधि वयाह हरि दासा ॥ वि
षि आवि नै करी तिः आवसर ॥ कीनै हास विलास भगत हरि ॥ चंद्रहास हरि भगत मुरारा ॥ हसि विधि
आ प्रति वचन उचारा ॥ ४८ ॥ चंद्रहास वाचः ॥ दो ॥ चंद्रहास हसि वचन कहै सुन विषया वरनारि ॥ प्राप्य
मै सुनले मुरा वचन पा क करहि विहार ॥ ५० ॥ चौ ॥ प्राप्य मैतो को घर मैं दड़ा वो ॥ पतिव्रत तुम को क
ह समझावो ॥ जो विषिआ तुम हत मरजादारा ॥ तो सम की जै वेद आचारा ॥ एकादशी सु दृड व्रत धारो
॥ दान पुन्य मन धर्म विचारऊं ॥ कीर्त्तन कथा पाव थैमि नुलावऊं ॥ पति सेवऊं नि शदिन हरि ध्यावऊ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पतिव्रततापके धर्म जे ऊ सब ॥ विषिआ कों सब कहे भगत तब ॥ आप सारषी तीपकरि
लीनी ॥ चंद्रहास करुणा वरु कीनी ॥ ५१ ॥ दो ॥ धर्म पतिव्रता हरि भजन हु भगत दृढ़ा या ना
री ॥ कुसम जरो षेस हि मुग्ध तला ठेकर न विलास ॥ ५२ ॥ चंद्रहास वाचः ॥ सो चंद्रहास सा
तान आप सारषी तीपकरी ॥ सुन जनमेजा कान पति सौं वचन विषिआ कहै ॥ ५३ ॥ चौ ॥ वचन क
है विषिआ वर नारी ॥ सुन मेरे प्रभु भगत मुरारी ॥ भाग बड़े तुम सों पति पायो ॥ ता ते पूरव सु
कृत कमायो ॥ जा दिन गई शिवै का द्वारे ॥ ता दिन षे बड़ भाग हमारे ॥ सषी पन जी पउपज्यो अ
नुरागा ॥ उन मुज कहत देष है बागा ॥ सम चली गई बाग के द्वारे ॥ पर्यो तहा रथ पद एक हमा
रे ॥ प्रथम मैं सर मंजन कीनो मुज ॥ ता पर्छे मंदिर सम भेयो तुज ॥ निरष सरद शशि वदन तुमा
रा ॥ मन उपजी पैहक रों भर्तारा ॥ ५४ ॥ दो ॥ वगल तुमारी वीच ते पाती औरी निहार ॥ सो मुज
लई उठाई कर पढ़ी जो पकी पावि वार ॥ ५५ ॥ चौ ॥ पढ़ि पत्री हरि एक सिमरनु कीनो ॥ पतन पति मुज अ
षे धरि लीनो ॥ मो पितु पठ्यो करन को घाता ॥ रक्षा की जे त्रिभुवन ताता ॥ दूए वुध लिष पठ्यो मदन
पति ॥ पा को विष दीजै की जै हतु ॥ करुना कीनी श्री भगवाना ॥ हमरे हित ये दीयो पहिचाना ॥ तब
मुज अंजन नैन उतार्यो ॥ हरि सिमरनु करि अंकुस वार्यो ॥ पदमापति की करुणा भई ॥ विष हत ते वि
षिआ हो गई ॥ ५६ ॥ दो ॥ पाती जो रघि विषिआ कहे कुरित वृत्तांत पति सो हि ॥ कवन अवज्ञा न पप
ठ्यो ना सु करन को तोहि ॥ ५७ ॥ चंद्रहास वाचः ॥ चौ ॥ विषिया तुम पढ़ी पहु वाता ॥ सुन जु व
तांत कहे दिषब्याता ॥ विनु श्री कृस्न अवर नहि जानो ॥ मित्र शत्रु दोऊ सम जानो ॥ मुज कुल गोत्र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥३५॥ ३८६ प्रसंग ५

मातपितुभ्राता॥ सकल हमारे त्रिभुवनताता॥ कहो वतांत सुन जुप्रवनधारि॥ हमवन आइपरयो
इक अवसर॥ सरपसिंघ वन मै भैकारी॥ लागे रक्षा करन हमारी॥ कृष्ण कृपा ते पसुपंषी सव॥ भि
त्रभाव करि प्रतिपालहि तव॥५८॥ दो॰॥ निशदिन हो हरिगुन पो॥ करे उचसुर गान॥ इक दिन चंडो
आयो द्रवित नप कुलिंद उद्यान॥५९॥ चौ॥ नपति कुलिं सुनी धुन कांना॥ चल आओ हमरे इस्थाना
मृग मैं रघुआ ना दृष्टि भयो॥ आय चंडाइ भवन लै गयो॥ सुतकरि मुझ प्रतिपालन लगा॥ रक्षाकरी
ही पै अनुरागा॥ पुन आपना राजु मुझ दीनो॥ वीस गाउ का अधिपति कीनो॥ गाउ इकासी तो पिता
को॥ वलु करि हरि लीने मुझ ताके॥ भेट पठी मुझ दुए वुधको॥ कनक लछ वजुही पे आप्रुध को॥६०
॥दो॥ भेट निरष क्रोधित भयो दुए वुध भूपाल॥ वैरभाव तीय धार कै चढि आयो ततकाल॥६१
॥चौ॥ हम तुम पितको जाइ मिलाए तव॥ पित समेत सैना सव॥ वहुत भेट आगे लै धरी॥
वेवकर जोर वेनती करी॥ तत छिन हमकौ नपति वुलाउ॥ पत्री लिष तुम पास पठायो॥ लिष्यो
जे कि कुनपति मन मान्यो॥ यह व तांतु मझ कछू न जान्यो॥ जो कछु इछा पी नंदलाला॥ ते
सै करत भयो ततकाला॥ जो जः समै की उवातें हरि॥ निस्फे होइ सहित तिः अवसम सर॥६२
॥दो॥ दुष सुष प्रापति जिः समै सोइ होइ तिः काल॥ हरि कन हारी नाटरति जो इछा नंदलाल॥
६३॥ चौ॥ अव यह समै इहा वन आई॥ ऐसी ही इछा प्रभु आई॥ आगे सोइ होइगी वाता॥ जो वि
धरची जगति के ताता॥ दुष सुष समै पाइ चलि आवै॥ भगतन विनु नी ही कौ उपिरावै॥
वीत गई निस भयो विहाना॥ ऐसे करत परस्पर ज्ञाना॥ वे आ साजि आरती ल्याई॥ उठ
भगत मुष जय पत ल्याया॥ दोनो हे हरि भगतना रिनर॥ धन्य आउ धरी भगत कृपा करि॥६४॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जैमिनोवाच ॥ दो ॥ आज्ञा कीनी मदन तब भई जु सिद्धर सोई ॥ करि मज्जन फिरि भगत
की पाषट रस भोजन सोइ ॥ ६५ ॥ चौ ॥ भोजन करि कै लोग उठे सब ॥ मील कुर्त बोले तो
षु कीनो तब ॥ भूषन बसन समन पहिराये ॥ ठाडे पहिर जोई ईतिः भाऐ ॥ फूलन ईछा
भई समन की ॥ नृपति दई अभिलाषा मन की ॥ चंद्रहास अरु मदन परस्पर ॥ नेतन प्री
त बढी उर अंतर ॥ निशदिन इक पल बिछुरै नाहीं ॥ परम प्रीति उपजी मन माही ॥ नित प्रति
करत पुन्य अरु दाना ॥ संध्या सिमरन वेद विधाना ॥ ६६ ॥ नारदोवाच ॥ दो ॥ नारद पारथ सौ
कहै सुनहु कथा हरिदास ॥ भगत कृपा ते मदन को आतम भयो प्रकास ॥ ६७ ॥ चौ ॥ भूमि अन्न
नाजु देन बहु लागी ॥ दूध देत बहु गऊ अनुरागी ॥ बन लागे बहु देन फूल फल ॥ नदी उम
गि भई रही विमल जल ॥ सकल नगर मधि धरम प्रकाशा ॥ काम क्रोध दुःकृत भये नासा ॥ व्र
त इकादशी धारत है हु कर ॥ सभ पुर बलक नारि वृध नर ॥ जो को ऊ करत न आव जाके सै
ता को दंड देत विध ऐसे ॥ मारत कुसम दल भुसी सेतिः ॥ कीपा लेइ पुर माहि अवेगुन तिः ॥
६८ ॥ दो ॥ निशदिन हरि सविलास सौं बीतत गऐ बहु काल ॥ विषम पुरी सम पुर की पोचं चंद्रहा
स भूपाल ॥ ६९ ॥ चौ ॥ मन महि मदन बीचार कीयो तब ॥ पित को पत्री लिषी उचित अब ॥ कु
ल प्रोहित को मदन बुलायो ॥ लीषी पत्रिका गहरि मिलायो ॥ लिषो मदन पती याम धजु सै ब
रनस नाव तकि बचनै तिसै ॥ प्रथम ही लिषी सकल कुसलाता ॥ बहुरि बजा तात लिषो सब बाता ॥ सुनहु
तात दुष्ट बुध राजा ॥ भयो भगत विधि आको काजा ॥ तुम लिषि पठायो बीच पती पाइ विस ॥ तात दिन सुज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२८॥

३८ कार जु की नो तिम ॥१०॥ दो॰ ॥ धंन्य धंन्य नृप दुष्ट बुध धंन्य तोहि पितु मात ॥ विष्णु भगत व
रु पठयौ तुम विषि आहि तकु सलात ॥११॥ चौ॰ ॥ जैसी पितु आज्ञा कीनो पति ॥ धंन धंन दु
मेध ष्ट बुधि विमल मति ॥ जैसी पाधिव आवर नारी ॥ तैसी पाऊं भगत क्षर तारा ॥ बहुरि मे
दन वजू लिषी विनै करि ॥ लिष सो पीपत्री नृप तकर ॥ लेत पत्रिका दूत चला गयो ॥ वजूत का
ल प्रापति तिः भयो ॥ पहु च्यो जाइ पुरी चंद्रावति ॥ ताहां दुष्ट बुध नृपति दुष्ट मति ॥१२॥ दो॰
दूत प्रवेश की यो नगर चलि आयो नृप द्वार ॥ जित्यो पवरी या सों प्रिय महूरत करि पु
कार ॥१३॥ चौ॰ ॥ ठाढा जाइ दूत नृप द्वारे ॥ द्वारपाल प्रति वचन उचारे ॥ द्वार कहु कहो नृपति
सों जाई ॥ मदन सिंघ पत्रिका पठाई ॥ सुनति पवरी या उठि कै धीयो ॥ नृप को सक
ल व्रतांत सुनायो ॥ सुनि तन आनंदित भयो भूपाल ॥ कह्यो दूत ल्याव उतत काला ॥ दुष्ट बु
द्धि मन कीउ विचारा ॥ हनी होइगा शत्रु हमारा ॥ लिषी होइगी मदन सकल विध ॥ आ
ज्ञा हमि री मानि करी सिध ॥१४॥ दो॰ ॥ द्वार कह्यो आउ दूत को चंदन द्विर के चार ॥ दूत निर
षि नृप दुष्ट बुध विहृ वल भयो अधीर ॥१५॥ सो॰ ॥ अति आचरज नृप पोरा जपत्री लै पुन कव
कहै ॥ हमरे पुर मति का ज भयो कवन के दूत कहु ॥१६॥ दूत ... चौ॰ ॥ बोल्यो दूत सुन ऊ
व चराजा ॥ भयो तोहि कन्या को काजा ॥ चंद्रहास को तोहि पठायो ॥ पुत्री निमित भउ वरयो
ऊ ॥ तुम पत्री पठाई जितः हा प्या ॥ विषिआ व्याह भयो तिः साप्या ॥ कंन्या व्याहि भगत को दीवी
मदन सिंघ की रति जग लीनी ॥ सुन राजा विसमै है गऊ ॥ येक मुहूरत मूर्छित तन भयो ॥ हृदै

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चै तं न्रप भए पोभ्रु पति जव ॥ पतीया पढी मदन की ले तव ॥ ७७ ॥ दो ॥ पढि पतीया चिंता वढी
न्रप पछ्यो तव दूत ॥ पुर का कहौ वताात मुझ मो सु तभ पोक पहूत ॥ ७८ ॥ चौ ॥ दूत कहै सुन
लिन न्रप वाता ॥ तुमरी पुरी परम कुसलाता ॥ जव का पुर प्रवेस कीयो वालिक ॥ नौतन मग
रु रच्यो भूपालिक ॥ ग्रह ग्रह ह्रै तसु जस नंदनंदन ॥ धर्म वढ्यो अघ भए निकंदन ॥ पु
न्रप दान व्रत साधहि लोगा ॥ भयो आनंद विनस गए सोगा ॥ तुम सुत मदन दान वहु दीनु
वेद विधान सतसत जगली नो ॥ मदनसिंघ अरु चंद्रहास की ॥ प्रीत वढी अति सप्रकास की ॥
७९ ॥ दो ॥ वे कुरत नाहि न रो कुदिन वढी परस्पर प्रीति ॥ मदनसिंघ हरि भगत सों सदा मगन
रस रीति ॥ ८० ॥ चौ ॥ वचन सुनत तन्रप हृदे ऐसा यो ॥ दूत पाउ संग लपकि राय्यो ॥ क्रोधित आ
ज्ञा करी निरिंदा ॥ वांधहु सहित कुटंव कुलिंदा ॥ वांध कुलिंद सहित परवारा ॥ ले ठारो सभ कूप
मंझारा ॥ कठन सास सनादेत रैन दिन ॥ गाढ भिसोट ला ये ता हि छिन ॥ दे सासना कहि त वचन स
जा ॥ तु मलहि विचारयो हमरो काजा ॥ हमरा आरि सुत करि प्रतिपालो ॥ कीयो वहु रिताको भूपाला
॥ ८१ ॥ दो ॥ हमरा शत्रु सवल तुम सुत करि पाल्या वाल ॥ तुम को सभ परवार सों नास करों तति का
ल ॥ ८२ ॥ चौ ॥ यह ह्रै आद्य सभ तुमते होई ॥ जो तुझ की पोक रै न ही कोई ॥ वीसगाउ मुझ तें तुम पा
ऐ ॥ ते सभ वहु तवर मतुम पाऐ ॥ तित नांद डंड देहु मो कों अव ॥ यह अग्या करि न्रप तिउ ठ्यो तव ॥ वै
ठो ठो ई कंत चिंतमन ॥ मंत्री कुबुध वुलायो ततछिन ॥ सुन हो मंत्री वचन हमारा ॥ मदनु भयो कु
ल वीच अंगारा ॥ वह हम आहि शत्रु सों कीनो ॥ जान वूझ मुझ कों दुष दीनो ॥ ८३ ॥ दो ॥ मदनसिंघ म
ति मंद मुझ जन्हि तजनो कुल नास ॥ विधि या आहि शत्रु सों कीनो राज विनास ॥ ८४ ॥ चौ ॥ नास होइ गा वा जु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१८८
मध

हमारा ॥ शत्रु सब लचाहीये मारा ॥ पद्यपि राहु कंन्यका होई ॥ तद्यपि करो शत्रु हतु सोई ॥ तिः प्रका
र होहि अरि घाता ॥ सोई कु बुधिवता ऊबाता ॥ सचिव जोर कर बचन उचारे ॥ चैं तनि बार हुन्पतिह
मारे ॥ चले हे आपु ने नगर मंझारा ॥ ना सु करहि गे शत्रु तुमारा ॥ ८५ ॥ दो ॥ ऐसा मंत्र बताउगा
सोई शत्रु को घात ॥ चैंतनि वार हुन्पति तिये होइ स कुलकुसलात ॥ ८६ ॥ चौ ॥ राजा चल्यो व
जाइ निशाना ॥ चैंतमान निज पुर इस्थाना ॥ बांध कुलिंद सहित परवारा ॥ संग ले चल्यो दु एह
त्यारा ॥ ताका राजु अवर को दीनो ॥ मन महि नृपति विवेकन कीनो ॥ देह कुलिंद सो सनाभोरी ॥
लोह मेल तन कर रहि दुषारी ॥ नासु करोगा सुत समे त तुऊ ॥ कत तुम प्रीति पालयो शत्रू मुझ ॥ क
ति तुम ठाकुर मंदर रसो जे ॥ हम को त्याग आप भए राजे ॥ ८७ ॥ दो ॥ हरि मंदर रसो जे तिन तुझ बाही
लीये बुलाई ॥ तिन दीनो बहु सासना द्रव्य गयो कति थाइ ॥ ८८ ॥ चौ ॥ देषो इ[illegible] कुलिंद कहा
कीनो ॥ पतत अब आपना करि लीनो ॥ बहु रोम पोसु अतिथि कराला ॥ राजु दीयो सुत का
प्यो भूपाला ॥ पुनि भेटा दे सब बपठायो ॥ तिः मुझ गढ़ भोजन नुन हीपायो ॥ कहन लागे
मुझ ब्रतधारा ॥ दिन इकादशी को मिरा हारा ॥ इन तो सभ अपुना मतु ठाना ॥ ना उभगत
भये राजा ना ॥ हम इकादशी सुनी न काना ॥ इन तौ हि मत नौतन ठाना ॥ ८९ ॥ दो ॥ अब
सुनता है राज का अवर न जान्यो कोइ ॥ ठौर दई तजि आपनी मह हाम तमन होइ ॥ ९० ॥ चौ ॥
बज श्रवहन का त्याग गीरीता ॥ जान्यो आप बुधि विपरीता ॥ ब्रत इकादशी नौतन कीनो ॥ मु
झ मति दाडि अवर मति लीनो ॥ पहु जो होता दोश हमारा ॥ नीत चलाई अवर प्रकारा ॥ पुत्र धि ॥ ३ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रानी की यो आपना ॥ ताको दीनी राज तपापना ॥ कहिकै ऐसे वचन निसंका ॥ वहुरि सासनादेत कुलिंका ॥ पुत्र समेत संघा करे तुम ॥ सभी मरे ते तुम न ही जानत हम ॥ ८१ ॥ जैमिनि वाचः ॥ दो ॥ जैमिनु कहै सुन नृप तिकरी घी घृता राई ॥ रथ को तजि शिव काच ढ्यो जगवर लीये मंगाइ ॥ ८२ ॥ चौ ॥ चढ्यो पालिकी पथि भूपाला ॥ चलत भयो भूपति तत काला ॥ तिन पथि को पायो राइ तहा ही ॥ कति को वेग चलउ तुम नाही ॥ चलती वेर कारज वलहीना ॥ देऊ पुत्र भोजन तुम कीना ॥ करत भयो आज्ञा हत्यारा ॥ कर कहा तारनि वास पूकारा ॥ तिन को वहुत सासना दीनी ॥ चलहु निवेग बल सकति कीनी ॥ वेग लेचलहु रिपु संघारे ॥ तुमरा तोयु करहु रिपु मारे ॥ ८३ ॥ दो ॥ तु वर बोले नृपति सुन हम को मारहु नाहि ॥ वेग पालकी लेचलहि दुखपावो मन माहि ॥ ८४ ॥ जैमिनेवाचः ॥ सो ॥ गबने वेग कहार मग मग महि तेहि बोलयो नाग इक ॥ तिन वच कहे उचार दुए बुध मत मंद प्रति ॥ ८५ ॥ नारदो वाच ॥ चौ ॥ बोल्यो नाग सुनहु भूपति वर ॥ हमचार दक तो हि दरपर ॥ जोइ लेत पाद रव तुमारा ॥ हमतां को तन करत प्रहारा ॥ तब मुरु देख डरत नरनारा ॥ मति अति काटे वपुष हमारा ॥ अबलौ रछा करी जतन सों ॥ अब दी जै नृप दो सम दन को ॥ वहत ओई कीनो बलवाना ॥ अति उदार शैव कम भगवाना ॥ मदन सिंघ सो मंत्र विचारा ॥ फेर स जाना धं तुनि कारा ॥ ८६ ॥ दो ॥ दान देत नित द्विजन को मन मै करत न त्रास ॥ हमभागा तव ऊ तातेज वधनु भयो विसना ॥ ८७ ॥ चौ ॥ नागका

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ३२८ ॥
३२८
मध

नसुनचिंतमाननृप॥ वरुरोजीवरकोपनराधिप॥ चलरुशीघ्रदिनवारनलावरु॥ वेगमोहिनि
जपुरपरुचावरु॥ करताउउन्हाकाहारचलाऐ॥ ततिछिननगरनिकटलेआऐ॥ नृपकेपु
रमहिसन्योबावाजा॥ आयावलीदुएवुधराजा॥ सभद्विजचलेमिलनकोआगे॥ वेदउचा
नरकरनमुखलागे॥ नटगंधर्वसुनतउठधाऐ॥ नाचतगानकरतमनभाऐ॥ ९८॥ दो
॥ कुंकमंदिरकेचीरसभपहरेवसनविनाइ॥ निकटजाइकेसभमिलेदईअसीसाराइ॥ ९
९॥ चौ॥ वरुरिकहैनपतुमरेधामा॥ प्रगटभयोपरनघनस्यामा॥ नृपतितुमाराहैकंत्या
ना॥ जाहितुमात्राभगतभगवाना॥ कंन्याकोएैसापतिदीनो॥ अपुनाकुलकतारथकीनो॥ पु
नतुमसकलनगरनिस्तारयो॥ भगतदरससेदपजाउधारयो॥ ब्रह्मणचारणनटगंधर्वसब॥
नृपकोएैसेवचनकहितब॥ आगेपाधिकजरतिअपारा॥ इनवचकहिऊपरधतुडारा॥ १००॥
दो॥ यहवचसुनकोप्यानृपतिदूतरुआज्ञाकीन॥ पकरऊतुमरेवापदेमारकररुवलहीन॥ १
॥ चौ॥ दूतवासलेपाछेपरे॥ गंधर्वभागेअतिपीइडरे॥ कहिगेरीपगरीकहिपोथी॥ भागेब्रह्मण
जाहिसतोथी॥ विप्रजानदिजवरतजदीने॥ नटगंधर्ववांधसभलीने॥ दुकदुककीनेसकलतव
जेत्रा॥ तेऊघनसुरतंत्रविजंत्रा॥ एकननकेफूटेतनमाथा॥ एकननकेटूटेपगहाथा॥ छाडिदी
येसभसिरनीगेकरि॥ मुखंमुखपाटतआऐओपुनेघर॥ २॥ दो॥ दुएवुधभूपतितवत्तिकीनोप
रीपवेस॥ महाक्रोधजीयधरिकेउतरयोघारनरेस॥ ३॥ चौ॥ सोरककीयोप्रणामनृपतिको॥ द्वा
रवधाइदुएपतितको॥ धंन्यदुएवुधसभकुलतारा॥ कीयोजमात्राभगतमुरारा॥ द्वारपालपरिके
हो
॥ ३२८ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प्यो राइ तब ॥ न्हाय धाय उबटन करि नीने सब ॥ रंग महल में आव बैठो जाई ॥ सखि वसमेत तहीं येद्दुबदाइ
॥ कंन्या त्याई कनक थाल भई ॥ ताके बीच प्रकाश दीये धरि ॥ ता मधि आए सुगंध अपारा ॥ गा
वति सुभ मिल मंगलचारा ॥ १४ ॥ दो ॥ तिन कंन्या सों नृपति तब पूछ्यो बचन उचार ॥ कहा बलतु
म सुंदर तम मन षोडश की ये सिंगार ॥ १५ ॥ कंन्या वाचः ॥ चौ ॥ तुम नृप पठै उ भगत मुरारा ॥ कं
न्या के निमित्त भरतारा ॥ धंन्य नृपति आपना कुल तारयो ॥ भलो मंत्र यह हृदे विचार्यो ॥ आजु ताइ
गा दिव आप न जग रहि ॥ अंचरू बांध हि भगत साथ्य हरषि ॥ हम ता को लेग हि पहुंचावा ॥ गावति गी
ति व कुसुमकिर आवा ॥ दुष्टबुध सुनि आत रदह्यो ॥ कंन्या जान कछु नहीं कह्यो ॥ पठत तो यो गसास
नानाहीं ॥ षल विचार दे ष्यो मन माहीं ॥ १६ ॥ नारदो वाचः ॥ दो ॥ नारद पारथ सों कहे सुन जुक
प्या हृदे धार ॥ मदन चलायो पितमिलन को संग ले भगत मुरार ॥ १७ ॥ चौ ॥ दो ना आइ नृप पासि पग ला
गे ॥ नृप जीय क्रोध बोलत अनुरागे ॥ नृप मदन सों आदरु दीनो ॥ मन महि दुष्ट भाउ धरे लीं
नो ॥ भगत तेजु सहि सकयो न राजा ॥ विदा कीयो हरि भगत तही छिन ॥ मदन ससि घ आपुने ठिगरा
ष्यो ॥ चंद्र हास गयो निज इष्ट स्थाना ॥ राष्यो नृपति मदन विद्यमाना ॥ दुष्टबुध जीय बहु क्रो
ध आनि ॥ ताल्यो बचन ऐसा ई तात प्रति ॥ १८ ॥ जैमिनो वाचः ॥ दो ॥ जैमिनु जनमेजै कहे
सुन जुकथा आ कृति धारि ॥ दुष्ट बुध षल मदन को कीनो बहु तध ककार ॥ १९ ॥ चौ ॥ मदन
सिंघ आ ग्यान मंद मति ॥ बोरी या राजु की षोनी हरि पहति ॥ रे दुरात मा कुल जसु नासा ॥ हन्यो
न आरि कीनो उपहासा ॥ तुम प्रगट्यो कुल बीच अंगारा ॥ पितु को पावु न कीयो संघारा ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ३८० उलटि ताहि बहु लोई कीनो ॥ ताते मोहि महादुख दीनो ॥ हो बहुरि दुरधि ए तेआगे ॥ तुम को निरख
मोहि दुख लागे ॥ बन को आपु तो हि मुरदीया ॥ निकस कर के जीव वे कन कीया ॥ ११ दो ॥ मय
सिंघ हसि पिता सो बचन कहे तत काल ॥ हम राद्र बन कहु तहो सुनहु अब न भूपाल ॥ ११ ॥
ना रेद्र ॥ चौ ॥ नारद कहे सुनहु कुंतीसुत ॥ मदन कहे पित सौं बचन अदभुत ॥ सत्य व
चन भाखे तुम ताता ॥ सुत मानो आज्ञा पित माता ॥ पिता बचन सुन राम गए बन ॥ चौदिस बना
कप्रभ त्रिभुवन पत ॥ मैं नही ते के दास समाना ॥ बिन ती कहु सुन हु नृप काना ॥ राम चौद्र लों ब
न महि गए ॥ केकैइ बच सुन पिता पठै ॥ १२ दो ॥ है द्रु बन को जाउ गा आज्ञा तुम री तात ॥
जो दृ बन मुर बन पठहु सोई बतावहु बात ॥ १३ चौ ॥ कः अघ मो को बन हि पठावहु ॥ सोइ
पापु मुरु कहि समझावहु ॥ पठ अमिलाषा तीय नाही ॥ कः हम अपराध पठयो बन माही ॥
मुरु को कहो तपा रखवाता ॥ कवन पाप बन पठवहु ताता ॥ जेतना होइ अघ न को भारी ॥ ति
तना काढु बन हि मंझारी ॥ हम तो आपने हृदय पहाना ॥ अपुना दृ बन को उन ताना ॥ हम
तो तोरी आज्ञा मानी ॥ तुम जो कही सोइ विध ठानी ॥ १४ दो ॥ तात तुम पत्री महि लिख्यो सो मुर का
नी बात ॥ हम को द्रु बन कहु न हो अज्ञा मानी तात ॥ १५ चौ ॥ एक अबज्ञा परी बीच मुरु ॥ सुन
हु अब बन नृप सोई कहो तुम ॥ मकुं लिंद्र को सुधन ही करी ॥ जानो नही चूक मुर परी ॥ सो कुलिंद
पा तुम रे साथा ॥ कतत तुम पठ्यो न पुत्र से गाथा ॥ ब्याह समे चाही पै संगा ॥ सो मह तुम हि न कीन

६२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वाता॥ चंद्रहास ऐकल ठायो॥ मुझ ऊपर कति दोष लगायो॥ तुम लिष पठयो पितु मुनै कौ
जै॥ यह बालक कौ बध वयादी जै॥१६॥ दो॰ नहीं बालो लोक कहु रूप रसन नहि पेह॥ तुम पितु मात॥ वीर
आदि तै बालके आज्ञा हमरी तात॥१७॥ चौ॰ जो तुम लख्यो कीयो मन्न तै सै॥ विष आयौ हरि वदवि
ध जैसै॥ तुम लख्यो कैसौ पितु मतिनवारहु॥ लयो मह हरि रति कौ न विचारो॥ जैसे तुम लिख्यो दुष्टबुध
राजा॥ है तैसै कीनो मुझ काजा॥ मुझ तो गनहु रैन कीयो ऐक दिनु॥ वीर आय आहु कीयो ता दि
दिन॥ अरु तुम क्रोध कीयो जो पजर हृदि धरि॥ तुम हू दान मुझ कीयो आह तपरि॥ अतपदान मुझ दी
आ तोहि हरि॥ अब तुम बहुत देउ अपुने कर॥१८॥ दो॰ आवदी जे नृप बहुत धन सुजस वढै
जग माहि॥ मुझ पर दूषन कहु नहीं क्रोध करहु जोय नाहि॥१९॥ चौ॰ जौ दीजै तन मन धन
प्राना॥ यह सब तुच्छ भेट तम जाना॥ सर्वसु नृपति भगत को दीजे॥ यह का रज कौ वित्त मन
कीजै॥ महा सुजसु बढै जग माही॥ पुनु प्रताप सकल दुष जाही॥ आगे तुम दान मुझ दी
ना॥ हाथी शीघ्रता न पूर्न कीना॥ करहु दान जोई धातु मरी॥ छिमा करहु नृप चूक हमारी॥
ऐसे वचन मदन भाष जव॥ सुनत जरौ पलको तन मन सब॥२०॥ नारदोवाच॥ दो॰ ना
रदो वाचः नारद पारथ सौ कहै सुनहु कथा चितु धार॥ दुष्टबुद्धि सुत वचन सुन
जरि वरि भयो अंगार॥२१॥ चौ॰ क्रोध वचन नृप कहै मदन प्रति॥ कीनो सभ कु
ल नास मंदमति॥ सुत कौ कीनो बहुत धिकारा॥ पुन भूपति मुष वचन उचारा॥ जो
कुल कौ प्रोहित अधिकारी॥ जाहु दूत तिहि लेहु हंकारी॥ वेग दूत प्रोहित पे गयो॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२४१ तिन सौं नृपति वचन प्रगट्यौ ॥ कुलनासक सुत मदन हमारा ॥ तिन मन माहिं न कीयो
विचारा ॥ दीनी वहु एरा हमारे दासा ॥ सभ जग माहिं कीयो उपहासा ॥ २२ ॥ दो० ॥ कुल प्रोहित त
हमरा तुही मदन न वर मो तोहि ॥ कन्या वैरी को दई अस तामे ही मोहि ॥ २३ ॥ प्रो ॥ ऊ ॥ तो वाच: ॥
चौ ॥ कहि प्रोहित सुनहु नरेसा ॥ जैसा तुम मन सपनो संदेसा ॥ मदन कीयो तैसी
विध काजा ॥ पत्री वीच लिख्यो तुम राजा ॥ आज्ञा तुम सभ मे हैं इन नाही ॥ कीयो जु लिख्यो प
त्रिका माही ॥ मदन मोहि कगरी न चाई ॥ वहुत ठौर तुम लिख्यो वनाई ॥ इह वालक को
विषि आदी जै ॥ पत्री देख विलम न ही कीजै ॥ अचरज भयो दुष्ट वुध राई ॥ पतीयाँ पुनी व
हुरि मंगाई ॥ २४ ॥ दो ॥ वेग लिआए पत्रिका पढि देख्यो राजा ने ॥ विषहू ते विख्यात भई यौ ज्ञा भग
वान ॥ द्विज पंडित दुष्ट वुध पतीया ॥ सुनि सुत वदीर ए हतीया ॥ दीयो मार्ग देहि सम्भूत ताता ॥
मह तो अति अन्वर तुम पर वाता ॥ तुम जो कीनो वहुत धिकारा ॥ तात नहिं घन कहहु हमारा ॥ वे
टि कांत लिखी पत्री मुझ ॥ वालिक विषया दीनी लिख मुझ ॥ विषहू ते विषिया पुन भयउ ॥ अंकु
र विधना लिख गाई ॥ हरि भावे तै सै पुनि होई ॥ ता को मेटि सकै नहीं कोई ॥ २६ ॥ दो ॥ विष
दीजे ये वालक को मुरलि घटो वहु ठोर ॥ अक्षर विधाता लिख गई भई और की और ॥ २७ ॥ चौ ॥ ह
मरा तुमरा दोषु न ताता ॥ विषु ते विषिया कर विधाता ॥ वालक परम भगत नंदलाला ॥ रक्षा करी
आई गोपाला ॥ जा कारज कु श्रीपति होई ॥ ता को हत कर सकै न कोई ॥ अस सुनि तिन हो हरिश मन
के चैना ॥ मन सुधि लो कति हो भजत नैना ॥ राजु लैन महूर ही भि वाता ॥ यह तो हमरा भयो तुमा

मेध
भुज
४४

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

त्री॥ वीस गउ पाको हमदीने॥ गाउइकासी हमरेलीनो॥ २८॥ दो॥ पानै पानै यह
नपभेउहमरा गयो प्रताप॥ करमीजत तसिर कोधुनतनृप जीमव धीसंता
प॥ २९॥ चौ॥ पुत्रीविधवा दुख नविचारो॥ मनवचनक्रम शत्रू पहमारो॥ मनमा
हि दुख भी उदंड कीनो॥ अदरकपटमदन को कीनो॥ सुनसुतकहन दो सतुमा
रा॥ छिमा करो अपराध हमारा॥ जाकू पाकै आपने धामा॥ हरखत कीजै सब विश्रा
मा॥ श्रातामान मदन उछगयो॥ अपुने मंदिर प्रापति भयो॥ तापाछे नृप सचिव बुलायो॥
गन कासहित निकट बैठायो॥ ३०॥ दो॥ दुख बुध नृप कुबुधपुनती जो वेस्या ऐक॥ धर्म धिना
सन हित मिले दुख नकरत धिवेक॥ ३१॥ चौ॥ तीनोमिल वीचारी वता॥ कीजे इसबालक को घाता
याका मंत्र बनै नहि कोई॥ जिः प्रकार वालिकु हत होई॥ पुनन्पक्रोधितवचन उचारे॥ राकस प
गट्यो भव नहमारे॥ जोव हवालकु होइ संघारा॥ तब अवि चलहोइ राजु हमारा॥ जोपह शत्रुनहो
इ विनाशा॥ राजु नए महजगउपहासा॥ निश्चै शत्रू भयो मुजतातो॥ वैरी हमरा की चो जमाता
३२॥ दो॥ शत्रू को दीनो वहयो पुनराख्यो गृह माहि॥ दोनो ऐको मतुकीया इकु छिन वि छुरत नाहि
३३॥ चौ॥ वेस्या औरकु बुधमंत्री षल॥ मंत्र धिनायो ऐक बुधबल॥ हसि बोल्यो मंत्री सुन होनृप॥
मुजपायोईठ मंत्र नराधिप॥ जिःप्रकार वालकु हत होइ॥ हमजी यमंत्र विचार्यो सोई॥ तुमरा
कुल अंधिका अराधा॥ तिःपठायै बालक तब होय हत॥ तिः देवीको मंढपघना॥ दस चंडाल प
ठउ वलवाना॥ तिनको भीतर मट बैठावऊ॥ सबबतांत ताको समझावऊ॥ ३४॥ दो॥ वालकसें

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५१

२५८२ ऐसे कहो मेरे कुल की रीत ॥ जौ हम रे गृह्याही ऐम जै अरिव का प्रीति ॥ ३५ ॥ चौ ॥ प्रथम मै द्वार अरिवि
का जावै ॥ पूजा करि सुभ मंगल गावै ॥ देवी सेवा करे न जौ लग ॥ अवर काजु कछु करै न तौ लग ॥ इ
मेध ह विधि कहो भगत को वाता ॥ निश्चै होइ शत्रु तुम घाता ॥ चंडालन सो ऐसे कहो ये ॥ मट के बीच
म छिकर वहीये ॥ बालक भीतर आवन दीजै ॥ लेकर षडुग टूक सम कीजै ॥ यह कृति की जै संध्या का
ला ॥ कहो चंडालन को भूपाला ॥ ३६ ॥ दो ॥ मंत्री के यह वचन सुन हरषत भयो राजान ॥ धंन्य कु
बुध वीचार वर तुम रा मंत्र प्रवान ॥ ३७ ॥ चौ ॥ पुन कुबुध मुख वचन उचारे ॥ सुन नृप श्रवन दै न्रप
ति हमारे ॥ इह प्रकार अरि हो इन घाता ॥ तुम मति विचार हो ये मह वाता ॥ मदनसिंघ अरु भगत
परम हित ॥ एको मन एको तन इक चित ॥ रैन दिवस एकठे रहा ही ॥ इक छिन इत्ति उत बिछुरत नाही
न शदिन सिमरन करत गोपाला ॥ करत वेद वच की प्रतिपाला ॥ छत्र धरम विद्या अरु युध धरन ॥ प
ठत परसपर दोऊ मुद्दित मन ॥ ३८ ॥ दो ॥ दोनो सिमरत कृष्ण को ॥ सुन मत भावत नित्त ॥ शास्त्र
र वेद पुरान ॥ नित सदा रहै धर्म हित चित्त ॥ ३९ ॥ चौ ॥ रहत सदा एकठे रैन दिन ॥ बिछुरत न हि कद
चितु ईक दिन ॥ जौ तुम पठ्ठ अ भगत देव स्थल ॥ मदनसिंघ संग जाइ तही चलि ॥ होइ शत्रु रहत ताइ
तुमारा ॥ करन सकहि चंडाल संघारा ॥ जो यह बात मदन सुन पावै ॥ देवी द्वार सो प्रथम चलि जावै ॥ जि
प्रकार शत्रु हत होई ॥ तुम को मंत्र बतावो सोई ॥ प्रथम मै सुत को कहु पठावोऊ ॥ ता पाछे यह शत्रु
मरावहु ॥ ४० ॥ दो ॥ प्रथम महि आपने तात को पठवहु का हू काज ॥ तौ तुम राज अरि मारीये निहचल
भोगहु राज ॥ ४१ ॥ सो ॥ दुष्ट बुध राजान पुनि मंत्री प्रति बच कहै ॥ तुम रे वचन प्रमान प्रथम मनि का
रो मदन को ॥ ४२ ॥ ना ॥ दो ॥ चं ॥ चौ ॥ नारद कहै तिक पास न पार सुपा ॥ सिध होत तुम रे सभ स्वारथ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कृष्णभगतसैंधोषोहरख्योबलि॥ समझतनहींमंडविसआवल॥ सुनपावरपतिनकोरछ
कुहरि॥ तिनकोविघ्नसकतकोऊकरि॥ भगतवछलरिषीकेसओपाला॥ सदाकरत
भगतनप्रतिपाला॥ रोमभंगकरिसकैनकोई॥ जिःरछकपदमापतिहोई॥ पदपश
त्रुजुरहिअपारा॥ बरूकोटिसमुअंतनपारा॥४३॥ दो॥ हारूजाहिशत्रुसकलेपदप्रतुर
तिअपार॥ परस्कुकरहितिनहिभगततनुपलापविद्युमवार॥४४॥ चौ॥ सूरकिरणम
हिकलीकाजेते॥ पदप्रतिजुरिआवहिआरितेते॥ सगलेभोगजाहिवहुहारी॥ तिनकार
छकुऐकमुरारी॥ भगतफिरहिनिरभयजगमाही॥ हर्षसोगउपजततायनाही॥ चं
द्रहाससनिजभगतगोपाला॥ दुएबुधअतिदुष्टपालाला॥ कीनोमंत्रहीयेजुलासुसों
नासुकरोंगाचंद्रहासको॥ करतनहृदेविवेकविचारा॥ महापतितिअधमीहत्यारा॥
४५॥ जैमिनोवाचः॥ दो॥ जैमिनुजनमेजैकहैयहजीदुडकीयोराज॥ पीछेशत्रुको
हनोमदनुपठोकहुकाज॥४६॥ चौ॥ मनमहितिनपतिदुएतारावे॥ सुमतेवचनभि
एअतिभावे॥ मदनसिंघकेसाथभगतहरि॥ नपघारेआरेतिःअवसर॥ दुहुनतन
पतिकोकीयोपरणामा॥ निकटजाइकीनोविसरामा॥ स्वागतिकहीभंपवहुमवसों॥ अं
तहकरजस्योनपदुबसों॥ तीनोमिलवैठेइकहार॥ तिनमेचंद्रहाससुंदरबर॥ कृष्ण
भगतराजनकोराजा॥ अतिसरूपसभकोसिरताजा॥४७॥ दो॥ प्रजालोगअरुएसुजोऊ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥५२॥ २५२ अ॰मेध

आवहि मिलवे काज ॥ ग्रप्य मभिक्ति हरिभगत को जानहि राजन राज ॥ ४८ ॥ चौ ॥ चंद्रहासअ
दभुत सुंदर छवि ॥ निरषत रीबल की ढकती पात वूं ॥ मुज वैठे इन व हो प्रतापा ॥ दुए बुधजी
य महा संतापा ॥ सहि न परत भगत को तेजा ॥ कहि न सकत कछु जरत करेजा ॥ कुटंव समे
त कुलिंद वुलायो ॥ टांग वांध उलटी लटकायो ॥ मार करी दोनों दुष भारी ॥ दया न परत तुद
ष्ट अविचारी ॥ मदन अरु भगत रहे मोन धर ॥ दो ॥ उठि चले भवन विदा कर ॥ जैमिनो
वाच ॥ दो ॥ जैमिनु जनमे जेक है सुनहु कथा दे कान ॥ मदनसिंघ और हरिभगत गए अ
पन स्थान ॥ चौ ॥ तापाछे नृप वचन ने कहितव ॥ कछु कुवुद्ध सत कहा पठो अव ॥ ऐसे बाते कर
त परसपर ॥ प्रापति भयो दूत तिः अवसर ॥ कौतहल नृप पठी पत्र का ॥ प्रतपाल कीयाध मंद
त्र का ॥ पाती दूत न नृपति कर दीनी ॥ दुए बुध मांथे धरि लीनी ॥ पाती पठी दुए तति काला ॥ ऐसे
लिष्या वतो तुम्ह पाला ॥ कंन्या यौवनवंत हमारी ॥ मांगति है पति इछाचारी ॥ ५१ ॥ राजकुवर सक
ले जुरै महा सूर बलवान ॥ तुम पठोदी जे मदन को ऐसे लिष्या राजान ॥ ५२ ॥ चौ ॥ दुए बुध आनंदि
त भयो ॥ पत्री पढत शोक दूर गयो ॥ जो हम वांछत थे मन वाता ॥ सो ईवना ईस जु सहित विधा
ता ॥ कौतहल पुर मदन पठावों ॥ तापाछे अरि वेग मरावों ॥ मदनसिंघ को पिता बुलायो ॥ सकल वृत्तां
त भाष समझायो ॥ कौतहलपुर मदन सिधारहु ॥ अव ही चलन ढिल मन धिर वारहु ॥ पित आज्ञा ले
मदन सिधायो ॥ रथ चढि चल्यो कछु मन नधायो ॥ सुंदर रथ मनगनन चमकारा ॥ पवन वेग है
चलत अपारा ॥ ५३ ॥ जैमिनोवाच ॥ दो ॥ कौतहलपुर सुत पठयो दुए बुध भूपाल ॥ वैर च्यो हरि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भगत सों उ॥ रछक नंदलाल ॥ ५४ ॥ दो० ॥ नारद आरजुन सों कहै सुनहु कथा चरि भाउ ॥ आस्वमेध
के जग को पच वंत मोध्या उ ॥ ५५५ ॥ इति श्री भा

॥ १५६ ॥ ५५ ॥ समस्त ॥ चौ० ॥ जैमिन कहै सुनहु पृथ
वीपति ॥ मदनसिंघ पठियो मन हरषत ॥ चंद्रहास को वेग बुलायो ॥ दै आदर निज ढिंग बैठायो
हित सों मस्तक चूमन कीनो ॥ मन महि वैर भाउ धए लीनो ॥ बहु विधि पहुताकरी अपारा ॥ पुन
नृप इक वचन उचारा ॥ हमरे कुल की रीसी रीता ॥ सो तुम कहु हो सुनहु धरि प्रीता ॥ जो आहि हैकंन्या
का हमारी ॥ प्रथम पूजहि जग महि तारी ॥ १ ॥ दो० ॥ धूप दीप नैवेद ले ताहि आंबिका द्वार ॥ मनवांछ
त फल पावइ जो सेवै हितु धार ॥ २ ॥ चं० ॥ चंद्रहास कहि सुन नृप दै चित ॥ हमरे है देव
से वा नित ॥ सदा करत है। कुस प्रणामा ॥ अवर देव सों मुझ नहि कामा ॥ ऐ कहि के हम मन माहि
अवर देव जाचो हम नाही ॥ अरु जो तुम री आज्ञा ऐसे ॥ जो तुम कहो तो करों हम तैसे ॥ जे हितु मक हो त
हा चलि जावों ॥ पूजा करि आंबिका मनावो ॥ जहा तहा आत मा वि राजती ॥ आपक सकल है। इक विका
जती ॥ ३ ॥ दु ए बुध भा यह वचन सुन हु भगत नेह सोग ॥ ना त हमारे गोत्र का
उचति करन तुम योग ॥ ४ ॥ सो० ॥ तौ लगि कर हु समान ॥ चार दिवस की अवध तुम ॥ ताहि आंबिका
पान संध्या को पूजा कर हु ॥ ५ ॥ चौ० ॥ जैमिन कहै सुनहु कुरु ताता ॥ भगत सम सुर
की मानी बाता ॥ नृप मन आनंद दिय उपाई ॥ बधिक बुलाए दै धन आई ॥ चंद्रहास निज भवन सिधारा ॥ पाछे नृप चंडार
बुलाए ॥ दै सा सन आवचन तसम मझाए ॥ आतहि भ ऐ तुम मठि वैरा ॥ जो कोउ करे हम री आज्ञान ही मनी
मुझ शत्रु दीनो तु मरे करै ॥ नास करन पठियो वन गहवर ॥ तुम बालक को तजि वन आए

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥२९॥

काटि अंग गुरी मुज पहिलयारो ॥६॥ दो ॥ सो सत्रु अव नृप भयो मगरु पत्री भरतार ॥ वहु दूषन तुम तव
मिटे अवधि करो संघार ॥७॥ चौ ॥ अव वह वालक भयो भूपाला ॥ वहु रो तुम हेतु वही चंडाला ॥ तव ह
म वप स्यो तुमरा अव जुन ॥ जो पहू वालकु नासु करो पुन ॥ जो जु पुरुष दस देवी धारा ॥ गुप्त वैठी ये
भवन मझारा ॥ नरु आवै संध्या मरुट माही ॥ ताको तुम वोलजु कछु नाही ॥ ताको वेग पकरि कै लीजे
तिहि नदि दिदृ कद सकी जै ॥ चौ तुम वजु रिहाठि के आवजु ॥ मन वच क्रम करि अति दुष पावहु ॥८॥ दो
चौ तुम अव की वार पुन हतुन कीयो आए मोहि ॥ तो मारे चंडाल सब दी जन काहो तोहि ॥९॥ चौ ॥ जो तु
म शत्रु तजु हम मारा ॥ तो तुम हत नो महित परवारा ॥ कुल समेत तुम भीति दीनावों ॥ नरु नारी जमपु
री पठावो ॥ अरु जो तोम हम मरा ए पुमारा ॥ वांट देउ तुम आई भंडारा ॥ दिन चौथे कारजु करि लीजै
संध्या समै नासु आए कीजै ॥ या विधा गुप्त रिदे पहुवाता ॥ निश्चै करो जु शत्रु को घाता ॥ पुस्तक दीया जुतन
मे जो दितपति उनरु दी जै मुनि मगरु रहत ॥१०॥ दो ॥ जैमैं जैन्न पपहूँ हत ॥ जैमिनकहुँ समझाइ ॥
कं न्या दीनी कौन को को तल पुरराई ॥११॥ चौ ॥ जैमिनु कहि सुनजु नृपकाना ॥ मन वच क्रम
हू जै सवधाना ॥ जो तुम पूछ्यो प्रश्न कहि अव ॥ करवि सार सुनावीत हो सब ॥ को तुल रा जाव
लवाना ॥ वध मुप्या संतति कीहाना ॥ जतन की ये सुत ते इनि ताके ॥ ई कक न्या जन्मी सुह वाके ॥ चं
पक मालिन रावो नाम्या ॥ गुन निधान तन दुविमा विरामा ॥ अशुभ शकुन सुपने देख्यो नृप ॥ म
न महि अति डरपाइ नराधिप ॥१२॥ दो ॥ तन पर सीसुन देष ई निस शुपने के माहि ॥ तो तेनृप चीता
वडी धीरजु पावै नाहि ॥१३॥ चौ ॥ कुंतल नृप इकु दूत वुलायो ॥ ताको सकल वतांतु सुनायो ॥ गाल
व रषीव सैवन माही ॥ दूत वेग चलि आवहु ताही ॥ जानि तसकल स्वप्न के लंदन ॥ गालव रिषिवर महा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

विचक्षन ॥ रिषपतिपद कहिले सुसभ वाता ॥ यह सुपने नाहि न कुसलाता ॥ ते
विनासा ॥ तौ हरि भै तौ तजै सभ त्रासा ॥ गालव रिषी कुस्म कौ दासा ॥ ते तकदाचितु प्रान
शा ॥ १४ ॥ दो ॥ अर्थ सुपन का कहे मुझ मारग मुनि विताई ॥ तां कौ त्याव रुवि नै करि दूत ता हाच
ल्ति जाऊ ॥ १५ ॥ चौ ॥ पत्र जाले कर दूत सिधायो ॥ गालव रिष के आश्रम मे आऊ ॥ प्रभ नगरी गंगा
तट जहा ॥ कुटी माहि बैठो रिष ता हा ॥ हाथ जोर बच दूत कहे सब ॥ उठ कुंतल पुरि चलु रिष
तब ॥ तति छिनरिष कुंतलपुर आयो ॥ नगर बीच आदर बहु पायो ॥ गालव रिष नृप जह
ले गयो ॥ सिंघासन पर आसन दयो ॥ साजि आरती आगे धर्यो ॥ धूप दीप से वा बहु करी ॥ १६ ॥ दो ॥
कुंतल रिष नृप तो बच याव धव तिप्र जा कीन ॥ रिष नै करी बहु रोन नृपति नै सो महा प्रवीन ॥ १७ ॥ चौ ॥ नि
तप्र ति श्री प्रभु सुपन निशा पेख्यो ॥ तन आपना सीस बिन देख्यो ॥ सी सर हत देख्यो छाया तन ॥ ता
ते मन हा चिंत बाढी मन ॥ यह विचार पुनि तीय पठ हरा जो ॥ तुम कौ दूत पठा बुलायो ॥ रिष बर मो पर
करु एना कीजै ॥ स्वप्न छाया फल दनक हिदीजै ॥ ध्या चआरि ष स्वप्न कौ जोई ॥ मुझ कौ सकल सुना
वहु सोई ॥ दत्तात्रे भाष्यो अलेक प्रति ॥ सोई कहौ रिष हरषत ॥ १८ ॥ दो ॥ स्वप्नविधि पआठि ष जो मुझ
कौ सोई सुनाइ ॥ भाष्यो जो ईश्वर ले कौ दत्तात्रे प्रगट हाइ ॥ १९ ॥ ना [illegible] ॥ सो ॥ यह वच कहे भुआ
लनारद कारण सौ कहि त ॥ गालव भयो कृपाल ध्या उआरे भ्या स्वप्न कौ ॥ २० ॥ गा [illegible] ॥ चौ
॥ गालव कहै सुनतृप पृथवी पति ॥ स्वपन ध्यिप इआ रिष तेऊ आपति ॥ आवत यह आरिष सपनो
कव ॥ वरन सुनावो तो हि सकल अव ॥ जो सुपने मे सीस न देखै ॥ तन छाया सिर बिन आव रेखो
मृ५

२८ एक पलमहि सो नर मरई ॥ जीवन की आसा नहि करई ॥ जो नर रूप अमति वेकी होई ॥ श्री
गोपाल अजर लेवे सोई ॥ अवर सुनो लछन भूपाला ॥ ऐसे सब गवै सहि तिः भीला ॥ २१ ॥
दो॥ व पसची रूक पोत जाइ न पंछिन महि कोई ॥ सुपनो वै सहि भील तिः एक मास म
त होइ ॥ २२ ॥ चौ॥ जो नर यह सुपना अवरेषै ॥ अंधकार गगन अंतर पेषै ॥ आंधी पवन
सवद भैकारा ॥ भ्रमत देषहि को ग अपारा ॥ सवद वगनिके सुन हुआ कासा ॥ सो नर
मृतक होइ दस मासा ॥ जागृति अगद्रिमल छवि ताकी ॥ सपने वीच मलिन दुति ताकी ॥ स्या
म शरीर लिंग अति भारी ॥ क्रूर मचंडाल करै अति भारी ॥ प्रभ गाक मैं जा अत सवधाना ॥ सपने अव
रष प्रकृति विधाना ॥ २३ ॥ दो॥ सो नर मृति को पावही अवर सातहि नौ मास ॥ होइ पवि वेको हरि भगते
जवल ग घर महि सास ॥ २४ ॥ चौ॥ जो नर यह सुपनानि सदेषै ॥ आपुनी देह कए वसि पेषै ॥
रक्त कृ वस्त्र री आरूपा का तनु ॥ अति दुरगंध देहि उपजे मन ॥ जो नर यह सुपनानि स पावै ॥ अ
एक मास निश्चै मरि जावै ॥ स्वप्न अवस्था कै तृ लसुन ॥ हरि को सिमरत जाहि सभ अवगुन
केवल हत तन अस्थल दिषावै ॥ वकुरो व पसु तन महि जावै ॥ कवहु नर नगन सदेद विलोकै ॥ २५
दो॥ सप्त मास लगजावई पुन पावे मृति सोइ ॥ श्रीपति को सिमरनु करै पुरुष द्विवेकी जोइ ॥ २६ ॥
चौ॥ वकुरोक हा सुपन के लछन ॥ सुन को तृ लपत्ति पिचछन ॥ जरत अपुना के शनिहारे ॥
पुनि निज माथा अंगे प्रजारे ॥ दाडीमछ नस मजर होइ ॥ कुइले स्याम अवलोकै जोई ॥ पौठे सेज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

विछुइ अंगारा ॥ षट मास सो होइ संघारा ॥ जल निधि बूठत अपविचारे ॥ कूप बावी च अ
पुनीत नुड़ारे ॥ कुष्टी नरु राषै दूर गंगा गे ॥ उलूक सिर पर बैठनि भागे ॥ २७ ॥ दो ॥ पंच मास
लग सो मरै मन बच क्रम सत जान ॥ होइ बिबेकी पुरुष जो भक्ति लेवै भगवान ॥ २८ ॥ नारदो
वाचः ॥ चौ ॥ स्वप्न ध्याय अब ए होइ कौतूहल प्रति शिष कहहि ॥ कथा सुधा रस भीए कहि
नारद सुन पंडु सुत ॥ २९ ॥ गालवो वाचः ॥ चौ ॥ कहि गालव सुन कौतूहल नृप ॥ दूदे को
नि स्थल राषन राधिप ॥ जौ स्वप्ने महि दर्द निहारे ॥ वेणा कंचन क्रांति विचारे ॥ रूपे औ सोने
दुति जैसी ॥ अपुनी लषी वेलो कै तैसी ॥ चार मास लग जीवै सोई ॥ ता पाछे ता की मृति होई ॥ स्वप्ने
माहि ध्याय घर जो देषै ॥ अति विकराल तरोदन पुन पेषै ॥ कूकर औ वंतर सो लरै ॥ ति जव पुकार देषत डरै
३० ॥ दो ॥ अपुने तन मैं नव चषु मैं देषै सुपने माहि ॥ तीन मास लग सो मरै जिस मैं जीवै नाहि ॥ ३१ ॥ चौ ॥ जो
अरुंधती को न ही देषै ॥ अरु धतार एक को न ही पेषै ॥ दैन दवन नभ दुष्टी न आवहि ॥ द्वादस मास ते
अमृति पावहि ॥ निरषै स्वप्न रूप विकराला ॥ लांबे तन अरु सूल स्यपारा ॥ कारे केश कुरूप स्यामतन
दीरघ समश्रु जुत रपातमन ॥ ताहन शस्त्र गरजत निज हाथा ॥ दृष्टि पति काहि सार षै साथा ॥ ते ऐसे सुकर
पर आस वारा ॥ ते सब भगाकै एक रहि प्रहारा ॥ ३२ ॥ दो ॥ भाजे तिन कौ देष कै धरनगिरे दुर पाइ ॥ वह पाछे
नहि छोड़ हो आगे भागा जाइ ॥ ३३ ॥ वह मारै पछकरै पुकारा ॥ तिन द्वा मास होइ संघारा ॥ गालव कहै
सुन कुंभ पाला ॥ सुपने केल छन ततकाला ॥ अरुए वसन असपावा पटस्या मा ॥ अपुने तन पहिरे अ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ब अन २३

३४६ भिरामा ॥ दक्षन दिशा आपहिं जावै ॥ सो नर एक मास मृति पावै ॥ निज प्रतिबिंब तेल घृत माहीं ॥ देखै सीश
कबंध पर नाहीं ॥ सो नर एक पक्ष महि मरई ॥ है इस साध हर्ष सिमरनु करई ॥ ३४ ॥ दो ॥ जो रितिवंती जु
वति सों करै सुपन महि भोग ॥ तपेश्छीट जु सवला परत आपत्तिः सोग ॥ ३५ ॥ चौ ॥ तिस ही नाए ऐसो जोत
अनुतन नर ॥ भक्षनु करै सुपन के अवसर ॥ जो नर धरत्ले वै अपने कर ॥ आठ दिवस लौ जाइ सो इम
र ॥ दिन को नाई सुरूप निहारे ॥ परै कहूं पहत हाथ हमारे ॥ इस ही सों क्रीडा वनि आवै ॥ काम प्री
ति मन माहि वढावै ॥ दिन की तृसार हीही पेपह ॥ निश को सुपनो मिलि जुवती वह ॥ पहरे वसन अरुने
पुन स्यामा ॥ मृग नैनी तन छवि अभिरामा ॥ ३६ ॥ दो ॥ तिः तीय सो पहन रुकै है क्रीडा की तें काम ॥ भुजा मे
ल कए लेचलै तिस महि पुरुष कै वाम ॥ ३७ ॥ चौ ॥ चले जाहि दोऊ दिस दक्षन ॥ गानु करैत पुन सत्तत म
दितिमन ॥ जो ऐसा सुपना को रूआवे ॥ पलछिन परै वेग मरि जावै ॥ सकर कूकर पर्शि चर्ड धावै ॥
नाचै सै वहुरि सो गावै ॥ जो ऐसा सुपना पावै नर ॥ उठै न सोया जाइ तही मर ॥ सुनकं तु हललस
पनै माहीं ॥ तुन पुरषी रुत मदेषत नाहीं ॥ जिः तन छाया सिर वि न होई ॥ ऐक पदं मृति पा
वै सोई ॥ ३८ ॥ दो ॥ एक पत्त महि नास तुम मन वच क्रम तीय जान ॥ अवर उपाइ नहीं कछू
मन सिमरहु भगवान ॥ ३९ ॥ चौ ॥ ध्याइ अए एसु पन को जोई ॥ गात्न वकह्यो नृपति प्रति सो
ई ॥ पुनि कवि के तीय वखौ उलासा ॥ अभ सुपना अवकहो प्रकाशा ॥ मत ले तीय गं यपक्ष अवरको ॥
वरनत वैद्यक सारंगधर को ॥ लोगन हित की नीधि सारा ॥ इति कन अपुनी बुध अनुसारा ॥ वर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नोसत तजप्यारथ्यवाता ॥ पछस्रानुभूत कहौ विख्याता ॥ शुभ अरु अशुभ सुपन है दोऊ ॥ प्र
गट सुनावति हौं कहि सोऊ ॥ ३४ ॥ र न म ष्या ॥ दो ॥ सोवत सुपन जु देषहि सुषी दुषी
नर नारि ॥ ताके लछन शुभ अशुभ बुधजन करत विचार ॥ ३५ ॥ अथ शुभ स्वप्न लछन ॥ चौ ॥ प्र
थमैं शुभ सुपना सुनि लीजै ॥ सकल गुनीजन निश्चै कीजै ॥ गोशाला तीरथ को परसै ॥ रा
जा को ऊ देवता दरसै ॥ मित्र मिलै ब्राह्मण को देषै ॥ वडो धौरहर परवत पेषै ॥ अति मलीन
पानी तर जावै ॥ वरु शत्रु जातै घर आवै ॥ वेस्या के द्वारे उठ धावै ॥ पुनि आनन्द देषा ठैरसि
धावै ॥ वणाले पुकरै अपुने तन ॥ रोवै मृत्यु क जान भयो मन ॥ ३६ ॥ दो ॥ आम मास
भषि तु करै लरै भवन आहि जोक ॥ जो पहि सुपना दरसइ सुषी होइ निहसोग ॥
अशुभ अशुभ प्रा तम म ष्या ॥ दो ॥ कहौं अशुभ सुपना सुनहु जो दरसै इह भांत ॥
रोगी मृत्यु को पावई सुषी दुषी धनु जात ॥ ३७ ॥ चौ ॥ नगन मुंड देषै अपने मन ॥ र
तो कुसुम अंबर पहरै तन ॥ वृकति अंग गतित काल मदरसै ॥ जल वूडे दावानल पर
सै ॥ पाशा शस्त्र लीये को ऊ देषै ॥ को का हु के मारत पेषै ॥ को ऊ दुष्ट हने मारन आवै ॥
महिषी ऊठ षर पर चढि धावै ॥ उठा हरतेत नुठईई ॥ के पावक कै जल महि परई ॥ पैहु
सुपने निश को को ऊ आवै ॥ रोगी मरै सुषी धन जावै ॥ ३८ ॥ दो ॥ मारत जै है चरन सो कुक
र सुपने माहि ॥ निगल जाइ जिः मीन तन मृतक आपवाढुव पाइ ॥ ३९ ॥ चौ ॥ निरषे दीपक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

३८७ ॥
३६८७
समेध

जो तप बिनासी ॥ सुरा तेल पावै सुख नासी ॥ पंक अन्य पलो हा तिल पावै ॥ वैसै कूप महि जल
सों न्हावै ॥ यह सुप्न निश पाइ नाहि नर ॥ सुख हो इ दुख दुखी जाय मरि ॥ सो वति अशुभ
सुपना अभिलाखै ॥ कहा हट के आगे न हि आखै ॥ जो नर परम विवेकी होई ॥ इह विध करै स्व
सुपन सोई ॥ उठ कै प्रात करै इसनाना ॥ तिल कंचन दे वै दिज दाना ॥ ४७ ॥ दो ॥ उसतु ति देव त
न की पढै विध वत कर है दान ॥ इह प्रकार मिट है कहै अशुभ सुपन की हान ॥ ४८ ॥ चौ ॥ जो
नर अशुभ सुपना निश पावै ॥ करै स्वस्त्ययन दोष मिटावै ॥ मत को मेट सकै नहीं कोइ ॥ उ
तन की पेदु घट न होई ॥ रैन विष्णु के मंदर वसै ॥ जाग्रत रहै दुख सम भन तसे ॥ अथवा शिव दु
र्गा के मंदर ॥ सिमरन करै हो इ दुख कुंदन ॥ इह उपचारा मिटहि सुपने दुख ॥ जा हिय मंगा
ल हो हि महा सुख ॥ यह मत रत्न दाम को जानहु ॥ टहक न सकल जगत मै तेन मानहु ॥ ४९ ॥
ना रदो वाच: ॥ दो ॥ कहि नाहि दवार घसुन हु यह वचन रषपग टाइ ॥ कौतुहल रूप कह तप
न सुनहु आवन चित लाइ ॥ ५० ॥ जानकी वाच: ॥ चौ ॥ सुन राजा सुपनो भै कारी ॥ ते ऊदर से र
जिन भज विसारी ॥ जिन के मन उपज्यो न हि ज्ञाना ॥ न हि सिमरेो हित सों भगवाना ॥ सत गुरु
की सेवा न ही कीनी ॥ साध संग मिल सीख न लीनी ॥ जिन गुरु शबद न हि ठहराया ॥ कब हु न
हरि सिमरन चित लाया ॥ गुरु उपाइ न की यो जो इ नर ॥ तन को आपा पाय यथा गयो मरि ॥ जिन नैन
हि करी देव तन सेवा ॥ न ही की नी पूजा गुरु देवा ॥ ५१ ॥ दो ॥ जिनक हु सिमरे न ही आग्य तै [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पोनाहि ॥ देववरुण सुरजक्ष गनि नहि पल्योभव माहि ॥ ५२ ॥ चौ ॥ जिन के भवन वल्लभपित मा
ता ॥ ताकी सेव कीनी नहि ताता ॥ अभ्यागत की करी न सेवा ॥ नहि आराधे देवी देवा ॥ वेद वच
न मारग तजि दीनो ॥ अपुने मन तरंग मतु लीनो ॥ ऐसे पापी भव पग टाने ॥ पावत सुपने भ
मुभ हराने ॥ दुख भाव माहि दिवस वीता वहि ॥ भै करी सुपने निसि पावहि ॥ नहि उपाइ कर
न मति ताको ॥ नाहि सिमरति पति पद मा को ॥ ५३ ॥ दो ॥ पुरुष विवेकी होइ जो मन मर्दि करै
विचार ॥ सत्य ज्ञान लछन सुपन ततछिन भजै मुरारि ॥ ५४ ॥ चौ ॥ पुरष विवेकवान है जोऊ
॥ योग साधना साधत सोऊ ॥ ते नर करत जोग अभ्यासा ॥ होत सबद गुरु ज्ञान प्रकासा ॥
मनु दृढ करि सेवत बनवासा ॥ मन मर्दि करत संकल्प विनासा ॥ जिन शब्द न प्रीत अनात मान लागी
इंद्री जीत नींद तन त्यागी ॥ तिः पुरुष न तम कोउ रुना ही ॥ मद मात्सर आतम रस माही ॥ तिः को
न हि व्यापति सुपने डर ॥ हरि चरनन नसौ जगै ध्यान धरि ॥ ५६ ॥ दो ॥ तौ ते कौतुक हल सुनऊ तु मजो
सुपने बीच ॥ तन पर सिंसि रुदे षत नहीं ऐकपद तू समीच ॥ ५७ ॥ चौ ॥ ऐकपद नप तो हि विना सा
तो ते करऊ योग अभ्यासा ॥ त्याग कुराज बेगवन धावऊ ॥ सिमरन करऊ मुकति पद पावऊ ॥ वि
नसत सकल तिमर अज्ञाना ॥ पावहि विष्णु लोक अस्थाना ॥ मन अभिलाषा भोग मिटावऊ ॥ इंद्री
जीत शांत चित पावऊ ॥ तां ते होत सकल दुख नासा ॥ समता आतम ज्ञान प्रकासा ॥ होत योग सा
धन ते सम सुख ॥ कव. हृद न हि व्याप हि सुपने दुख ॥ ५८ ॥ दो ॥ पची होत तन हि भव वधि सै पावत पद सि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२७ ॥

३४८

मेध

दीन ॥ सदा सुषी क वहत नंद ष ए सो यो गरा जान ॥ ५८ ॥ चौ ॥ जे नर अति मति मंद गवारा ॥ सु
पना पाइ न करति विचारा ॥ अमुभ सुपना देषत निश माही ॥ मन महि ज्ञान विचारत नाही ॥
मेरी मेरी करति रैन दिन ॥ सिमरत नाहिन कुसो एक छिन ॥ धि ध बन के लाल च ललचाने ॥ सुत
दारा रस लोभ लुभाने ॥ सुपने को नही करत प्रतीता ॥ आयु जाकार ष पजात वितीता ॥ हरि न हीये
बत करत न दाना ॥ इष्ट प्रभु पु जानत अज्ञाना ॥ ६० ॥ दो ॥ सुपनो अमुभ विलोक के हरि न हीय
जेत गवार ॥ आयु रवीतो यम ए सठ जनम गवाए जग हार ॥ ६१ ॥ ज्ञानलोवाच ॥ चौ ॥ सुन कौतूह
लन पसुर ज्ञाना ॥ हरि सिमरन जो लोघ ट प्राना ॥ जब लग तुम वन स्या तु मे तन ॥ हरि को सुम
रन ताइ व सुफ वन ॥ मन अभ्यास संयोग का कीजै ॥ सोहं ब्रह्म जोन ती मलीजै ॥ जाको घट घट २
माहि प्रकाशा ॥ जैसे है नभ पाल अकासा ॥ व्यापक ब्रह्म सकल तन तैसे ॥ मारुत परस सकल
घर तैसे ॥ वास कुवास एक रस ताको ॥ समता भाउ सम भनसा ताको ॥ ६२ ॥ दो ॥ जैसे व्यापक
ब्रह्म है ऊंच नीच महि सोई ॥ नही वनत घट ब्रह्म बिन घट बिनु ब्रह्म न होइ ॥ ६३ ॥ ज्ञानलोवाच: ॥
चौ ॥ जे पुद धसु तको नभ महि वासा ॥ पर तनो रप्रति विंव प्रकाशा ॥ ऐको चंद अनेक दिषावत
जे जल दुलैन चंद दइलावत ॥ जे जल तपत कल्लस महि डारै ॥ ता महि शशि प्रतिविंव निहारै ॥ तौ श
शि को सीतल सुभाउ नित ॥ उसुनशी तन नहि होत चंद चित ॥ अरु जौ कुंभ भगन तन होई ॥ शशि
को विघन लागै कोई ॥ शशि तैसी छवि गगन विराजत ॥ तैसे ब्रह्म वपुष महि राजित ॥ ६४ ॥ दो ॥ ते
सेप हितन नखिन सई आतम हो इन नासु ॥ मानो जीरण वसन तजि पहरति नौतन वासु ॥ ६५ ॥ चौ

॥ ७७ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ऐसो परमातमा जगत प्रभ ॥ तिः न्रप भजकृत तजु विषियासव ॥ ईंद्री रस तेवर तिरहावजु
मन वसिकर आतम रस पावजु ॥ मन आरु वुहृ ईंद्रीयन साध्या ॥ ताकी वर नसु ना वोगा
ध्या ॥ जो कछु करी पत है ईंद्री रस ॥ तिन कछु स्वाद नही रसं कैस ॥ जो नप है घट मंदर मा
ही ॥ स्वाद भोग ता जानकु ताही ॥ ६६ ॥ दो ॥ दस वारी घट भवन को ति न ते आइ वियार ॥ नही
वारी पन पवन सुष भ्रूपति को सुषसार ॥ ६७ ॥ चौ ॥ वे घट मंदर मतकाछा दस ॥ तिन के कछु
न सुष दुष रस कसि ॥ माटी को सुष पवनन होई ॥ सुष भोगत मंदर न्रप जोई ॥ मन ते जीव
करम करि भयो ॥ वसि लाल चज्ञान दुर गयो ॥ रस की वांछा जीउ करै जव ॥ दस ईंद्री सवधाना
होत तव ॥ ईंद्री पन पीछै मनु चलि जाई ॥ मन पाछै वुध ज्ञान सिधाई ॥ पहती नो मन वुध अ
रु ज्ञाना ॥ नहि आकोइ न को कि न जाना ॥ ६८ ॥ दो ॥ सुन जन न्रपति मन जीउ पुनि वुध तासरी
जान ॥ इन को रूप न रंग कछु नहि आकार पछान ॥ ६९ ॥ सो ब्रह्म कहत जग ताहि जाका
रूप न रेष कछु ॥ तो ते आतरु नाहि पहती नो है आतमा ॥ ७० ॥ [illegible] ॥ दो ॥ ब्र
ह्म कह्यो सिष ब्रह्म इक वजुर कहे तुम तान ॥ तीन भ ऐक म ओक ते सो कहु सिष पर वान ॥
७१ ॥ [illegible] ॥ चौ ॥ जाल वक है सुनहु कंत ल्ल ॥ ऐक ब्रह्म है सव मो जल च्यल ॥ ईंद्री
न के रसि विसि विकराला ॥ तां ते जीव न नाम भ्रूपाला ॥ वही वासना जीव कहायो ॥ विषयन
के रस वस भरमायो ॥ प्रथम ब्रह्म आतमा है एक ॥ इहा सौं पुनि भयो अनेक पुन ॥ ताका
सुन दष्टांत नरेसा ॥ मन वच क्रम पहु स्रुति उपदेशा ॥ पांच कगृह को टकां पकहावे ॥ तः

मेर

२

सेर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

३८८

प्रबोध
नज
४५

करशावदअवरसुनपावै ॥१२॥ दो ॥ सुनि वह शावद हृदै कहत भीतर पंचक क्रोइ ॥ करतलस्त
दृष्ट वनपरै करतां कोऊ करसोइ ॥१३॥ चौ ॥ वै पापक पुन शास्त्र लीये कर ॥ भयो सिध बुद्ध चतु
रवपर ॥ सोई पापक सूरमा कहाउं ॥ वह त्याग बुद्ध को हृदे रिशा यो ॥ वहुरि शास्त्र तजि कीनो सा
जा ॥ वैठो सिंघासन भयो राजा ॥ सिंघासन तजि अवरस भाजा ॥ हलु कर वी पोधर निअनाजा ॥
ताहा नाम किरसान धराउं ॥ हलु तजि पुनि प्रपंच मन भाउं ॥ वहुरि कहा यो नाम प्रजापति ॥
तजि प्रपंच पुनि करी अवरगति ॥१४॥ दो ॥ वहुरो पुस्तक हाथ लै वैठो आसन मास ॥ भेअ
कहाउं नाम तव उपज्यो ज्ञान प्रकास ॥१५॥ चौ ॥ जैसे तो वही एकु पांच कुतव ॥ तैसे हा धारे भे
भ अवरसव ॥ जहा भेसु धारयो है तैसा ॥ ताको नाम भयो है तैसा ॥ गालव को तु हाल प्रतिक
हई ॥ तैसे ब्रह्म एकु जग कहई ॥ मनवुध जीव भेषवहु धारे ॥ ज्ञानवान सोइ आदि विचारे ॥
ईश्री सव व भेष अनेका ॥ आदि अंत ब्रह्म है एका ॥ जउ तावुधि ज्ञान नही जहा ॥ ब्रह्म अभीव
जानीयै तहा ॥१६॥ दो ॥ जउ तावुध जहा नही तहा आतमा एक ॥ दृतीय भाव तहा [illegible] कै रै
साधसंग टेक ॥१७॥ चौ ॥ सुनत सुत का तु हालै भूपाला ॥ एक समै हरि गये धियाला ॥ सु
त देवी कीलैन के काजहि ॥ [illegible] ॥ वहु प्रकार सेवा वलकीनी ॥ कु
सचंद मान जी चलीनी ॥ वल पर भए प्रसंस मुरारी ॥ हरषत है हरि वचन उचारी ॥ मुझ
ते मांगलेहु वांछन फल ॥ जो तुमरे मन अभिलाषा वल ॥ दो ॥ जै साधसंग हरि मोको ॥ [illegible]
मरतरहि निदंन ताकौ ॥१८॥ श्री कृष्ण ॥ वाः ॥ दो ॥ कुसक हो वलराज प्रति हम साधा सब धान
रै

[illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४

तुमसंगत ले साधसंग मुझको कोउ राजा नान ॥७८॥ चौ॥ सुनवति
राजा वचन उचारे ॥ सत्य कहत तुम प्रभ हमारे ॥ तुम साधन को मो
लर मापति ॥ तुम बिन नहीं सकत को तुमरी गति ॥ तब मुझ मो
हजन मुझ जग लीनो ॥ पहत तुमरा दरसन न नहीं चीन्हो ॥ देह धर
त बिन सत पुन पानी ॥ किन हूं तुमरी सुध नहीं जानी ॥ म्हा दि
ंत केवी चसु मोहरि ॥ मुझ अवलो के साध भगत तुव ॥ करुणा
कर तिन सब दुव तापो ॥ दुष समुद्र ते मुझ ति कढो पो ॥८०॥
ते साध तुमरे भगत मुझ पर भए कृपाल ॥ घट ही मे पर साइ प्यो
तुमको श्री नंद लाल ॥८१॥ सो॥ साधन कृत तो कछु मरम तुमारी
कठन ठौर तुम वास मुरारी ॥ तुमरे भगत मिले जब मोको ॥ घट
ही बताइ दी आप प्रभ तो को ॥ साध प्रसाद तुम कहत हम पायो ॥ घट
ए ही ये भरोसो आयो ॥ तो ते साधसंग मो ज्यो मुज ॥ मन वच क्रम क
ए सत्य कहत तुझ ॥ बलि पर भए प्रसंन गुपाला ॥ टरहि कन भगत
वछल नंदलाला ॥ गाल व रिषी ज्ञान न पभाष्यो ॥ कौतूहल अंतर
रस चाख्यो ॥८२॥ सुन कौतूहल नृपति वचन सा
ध वचन प्रभ सार ॥ हाइ द्रिमाल बताव ही सरवात मामुरारि ॥८३॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मस्त्रमेध

॥ जिम कौ ए महि अगानि निवासा ॥ मथन की पेखु न जो तप प्रका
शा ॥ तैसे साध वचन धार हृदै त ॥ मथन कीते है जो गपं थहित
जैवे का ए कौम अग्नि जरावै ॥ जव जरै धूम शांति है जावै ॥ सर्व विकार
साधन के दरसन ॥ कुशल होइ हित तसों पग परसन ॥ जव द्विवि
कार वासना जारै ॥ इंद्री विषया स्वाद निवारै ॥ तव ज्ञान उपजैति:
हो पपरि ॥ प्रेम दाम सं बांधली ए हरि ॥ ८४ ॥ दो ॥ प्रेम भगत की दा
म सों भगतन वांध गुपाल ॥ छैड कै दिर राख्या हृदै धर टहिकन प्रभ
नंदलाल ॥ ८५ ॥ दो ॥ संत सवद हरि ही यहै हिरायो ॥ जातन इस्तउ
तव प्सकु रिपापा ॥ निजमन तर जाग्रत ते ऊं नित प्रीति ॥ उपजो तन
विचार विमल मति ॥ साध सवद गुरु हण तिनकी नो ॥ सर्वातमा ज
गत तिह चीनो ॥ कहि वल साध संगम ऊं दीजै ॥ करुणा सिंध क
पाव कुकीजै ॥ साध संग ते होहि सकल सुख ॥ होत परम मंगल
विनसत दुख ॥ युग युग दीजै साध संगम ऊ ॥ शरण परे की लाज
कृपानुज ॥ ८६ ॥ ॥ गालव कहै सुन नृपति जि
नके हृदै विचार ॥ ते उत्तम हृढ़ तत है साध संग पनि मन तेसी री रउधार
८७ ॥ ॥ पहमन नृपति जपिंद समाना ॥ का पावनता कोइ स्याना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तिः वनकै दावानल लागा ॥ पोषत काम क्रोध अनुरागा ॥ म
रकस लोभ मोह तम हंकारा ॥ फूंक देत सभ वारंवारा ॥ मन
कुंजर पायो तिः वन माही ॥ जर तो लागो बीच तताही ॥ तव ह
स्ती जल ढूढन लागा ॥ उपज्यो ग्यान नगर बुद्धी पस्यागा ॥ ति
रकसांति शरोवर पायो ॥ पान कीयो जलत तपत्त घायो ॥ पो
६८ ॥ दो ॥ तहनिकस्यो चाहै नहीं पायो सुख विश्राम ॥ साधजना
कैवचनसुन जान्यो आतमराम ॥ ६९ ॥ जिन जल शांत सरो
वर पायो ॥ विषय दावन को अगनि जरायो ॥ वन जर गयो शांति उप
जी अति ॥ गाल वुभी वत कोतुहल पति ॥ कुंजर रूपा न पतिभयो
मन ॥ सुतदारा कुटंव धन इंधन ॥ काम क्रोध माया दावानल ॥ का
पावन नहि जरावै तिस अतिवल ॥ मन हस्ती ढूढत जल जान्यो ॥ शांति स
रोवर मिल सुख मान्यो ॥ जल रूपी साधन को दरसन ॥ सोई ढूढत
पायो अपंद मन ॥ ७० ॥ जल रूपी साधन दरस जब वर्ते सो मन र
जाइ ॥ ग्यान प्रकास भयो ही ऐन तपत्ति ऐक समइ ॥ ७१ ॥ सुनत क
थ्या सभ वेद पुराना ॥ श्रवन न नहार करे रस पाना ॥ नैन न नहार दृष्टि
जो इस आवे ॥ सकल ठौर भगवान ठहरावे ॥ घ्राण उतर एक लै वैना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४०१

अस्वमेध

सा ॥ सुषते हरिजस करै प्रकासा ॥ रसना रस सौं ब्रत उपजायो ॥
सोई जलु सरवर शांति समायो ॥ मन हस्ती सोई नार शांति बर
साधन दीपो वता इक कृपा करि ॥ संत स बृंद करै जल महि पस्यो
वन के बिषु जान्यो पार हस्यो ॥ ८२ ॥ दो ॥ बिषिया वन परिहरि
पस्यो शांति सरोवर माहि ॥ सुष पायो मन गज न तहां निकस्यो
चाहत नाहि ॥ ८३ ॥ चौ ॥ लीन भयो मन ब्रत जलु पायो ॥ ज्ञान उद
ति भ्रम तिमर मिटायो ॥ देषी पतदा बाम्हन तम पारा ॥ जिन दाधो
सब लोक संसारा ॥ मन लिव लागी रही हरि चरनन ॥ साधन के उ
पदेस सुन म्रवन ॥ जैमिनु कहै सुनै जय पिर्थीपति ॥ नारद क
था कहत सुर जन प्रति ॥ गालव रिष को तु हल न पसो ॥ पाग
वचन भी बुधवत्त सो ॥ सुने म्रवन भवति धरि भाउ ॥ परन
म पायो दिवउ माध्याउ ॥ ८४ ॥ ५६ ॥ [illegible]

८५

कहि गालव सुनन पति म्रवन धर
कहो पुरातन कथा महाबरि ॥ चार बेद हरि प्रगट कीये जब उ
साति करी म्रातिन प्रभ की तब ॥ हाथ जोरि ठाडे सवधाना ॥ बीर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जरूपा तुम भगवाना ॥ तुम अघ नद सरस वरन कोई ॥ आदि अंत
मध्य पूरन हरि सोई ॥ माया तुमरी विविध प्रकारा ॥ तिन ठगियो
सगरो संसारा ॥ तुमरी माया कहु अन सकै तिन ॥ तव ज्ञान विचार
उपजै जन ॥ १ ॥ दो० ॥ माया लागि न आइ जब करम समस्त विसोइ ॥ कर
म करता होइ जब सोई बंध तिन होइ ॥ २ ॥ दो० ॥ जो नर सुपर सब वेरो
की होई ॥ कर्म समर्पै तुम में सोई ॥ ताको पाप पुन्य न हि लागै ॥ ज
नम मरन संसै भ्रम भागै ॥ जो नर कर्तीक कर्म करतावै ॥ जन्म मरन बंध
न दुख पावै ॥ काटत हैं कर्मन को फांसी ॥ जो तुम विषे समरपै धर मा
कर्म करै फल की नहीं वांछा ॥ कर्म समरपै अवरनि को इछा ॥ सो नर
भवसागर तर जावै ॥ जन्म मरन न फिर जूनि न आवै ॥ ३ ॥ दो० ॥ कर्म
करै हरि अर्पई फल मांगै कछु नाहि ॥ कैली के गल मन मणि उप
दूधन ही उन माहि ॥ ४ ॥ चौ० ॥ पद्म में जे ऊं करम इन कीने ॥ श्री
पति विषै समर्पण टीने ॥ ते पुन कर्म काटी परि है जैसे ॥ वरनत सुना
वति है पुवध तेसे ॥ बहु रोक मनि फल मन तु सरई ॥ तुमरे विषे समर्प
ण करई ॥ उन कर्मन पर हु काटत हैं तव ॥ जे ऊं कीने हरि समर्पण व
न सव ॥ सु फल कर्म सो निफल निवारहि ॥ निफल करम सुफल
कर डारहि ॥ पहुँच वमन तिन न वषा न हरि प्रति ॥ ते ऊं तुम सों हम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४०२

अस्वमेध

कहेमहीपति ॥५॥ जैमिनोवाचः॥दो॥ जैमिनकहेसुनजनमपतिगा
लववचअतिसार ॥ कतहलनपसौकहीहितसौकरुणाधार
॥६॥ गालवोवाचः॥दो॥ गालवकहैसुनजनमपअवनतन ॥ साध
तयोगयोईजोगीवन ॥ सोईसमरनहरितौहितवतायो ॥ जिःप्रक
रयोगिनिहरिध्यायो ॥ हरिकोवसिकरिलीयोदासवति ॥ सोभोग
नभोगछाडुतुरपति ॥ इकइतध्यावतिसाधहितयोगा ॥ इकम
नभजहिमिटहिसमभोगा ॥ वेदकरतहरिसोमहवाता ॥ एककहि
भजहिहरविधजगताता ॥ इकनरमजहितयोगअभ्यासा ॥ करत
वसीमनज्ञानप्रकासा ॥७॥दो॥ प्रथमकरमेरचककरतदेह
शुद्धकेहेत ॥ वज्जरउपालिपपालिकेइकरतशरीरसुचेत ॥८
ची॥ पवनउदरपूरकपुनकरई ॥ तःपाछेकुंभककमनुसरई
पाछेबांधहिमूलदुआरा ॥ भेदननाभितचक्रपटधारा ॥ वज्जरो
मारुतकरतमहारो ॥ मूलद्वारकोकरतकिवारा ॥ पवनचढावति
नाभिचक्रपरि ॥ ताकोभेदतमनेकजतनकरि ॥ नाभिचक्रकोभेद
लेततव ॥ ऊपरकोआरंभकरततव ॥ वज्जरोइदचक्रपरगयो
ताछीपवनअस्थंभनभयो ॥८॥दो॥ हृदेकमलउलटावहोपव
नहठतआई ॥ कवलरहतसुधावजरिमारुतऊपरजाइ ॥९॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ कंठचक्र पुन करत निवासा ॥ भेदत करत योग अभ्यासा
भेदत द्वादश के नव द्वारा ॥ तालचक्र कुं वश करत किवारा ॥ तालच
क्र को भेद कीयो वसि ॥ ततन नसोरा के द्वारे दश ॥ रोकत है दस द्वा
र यह नभित ॥ मति चलि जाइ पवन चंचला चित ॥ तालचक्र पन
नु भेद्यो जब ॥ वसि कीनो है षट्चक्र पतव ॥ पाछें पवन एक नाइ प्र
वीनी ॥ सो वत गगन दिशा करि लीनी ॥ ११ ॥ फेरत मारुत द्वा
र दस तालु चक्र की ओर ॥ फिर उलटाइ चढाइ वइ राषत त्रिकु
टी ठोर ॥ १२ ॥ टीका पवन त्रिकुटी इस्थाना ॥ कीयो त्रिवेणी
को इस्नाना ॥ नासाग्र निरीछन लागा ॥ भयो सावधान ब्रह्म
भ्रम भागा ॥ शशि के ग्रहत जब सूर समाना ॥ जमना जल गं
गा हृदि राना ॥ निःशब्द न सदा चंद्र ग्रहत निरषत ॥ सावि चल
भयो न डोलत इत उत ॥ भयो ब्रह्म महि लीन गयो भ्रम ॥ साध
पापी भयो एक सम ॥ कंचन लोह एक सम भयो ॥ मधुर कटु
कर सर एक है गयो ॥ १३ ॥ उपजो समता शांत रस सुनि रष्यो
ब्रह्मस्वरूप ॥ भेद बताया योग रूप सो दीबी वस्तु अनूप ॥ १४ ॥
गालव के हिय सैन फुंकत हल ॥ एक मजो लि इस

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४०२

अश्वमेध

भांतमहाबल ॥ नासाअग्रनिहारतनिश्चिन ॥ पाइनिरभौ श्रांतिहृदै
तिन ॥ ऐकरिषीमनिइहविधध्यावति ॥ चितवतिजहांतहां चलिजा
वत ॥ भावदेतत्रिभुवनकीवता ॥ कवनहीशोकसदाकुशेलाता
एकउपासीकृष्णसरूपा ॥ तेनितमजाहिचतुरभुजरूपा ॥ हृदै
कवलमहिदरसनुदेष्या ॥ कृष्णसरूपहृदैमहिपेष्या ॥ १५
वजरजेऊपोगी पुरुषकराहिपोगअभ्यास ॥ मूलद्वारबांधहि
प्रथमचितुनहीकराहिउदास ॥ १६ ॥ पवनपश्चमसुषम
नसरई ॥ ऊरध्यतठौरपुनीतसकरई ॥ पहिलेरेचकपूरकश
रीरा ॥ पाछेपूरककुंभमनुधीरा ॥ तापाछैकुंभकमनुलावै ॥ मा
रुतनाभिचक्रलेजावै ॥ वजरोपवनआरंभकरैजव ॥ हृदैकमल
कीऊरचढैतव ॥ ऊऊकमलनाभिकेमाही ॥ आठपाखुरीनेलना
सहाही ॥ ऊधोमुखरहताहिकमलको ॥ सुधाकवहूनहोतअ
चलसो ॥ १७ ॥ नाभिचक्रकेभेदकेकमलऊऊकेताइ
मारुतनीचेवलकरलेवेकमलउठाइ ॥ १८ ॥ हृदैकमल
महिपवनवसावै ॥ आठपाखुरीतबविगसावै ॥ तामधएकसो
जसहसदल ॥ ताकोपकरतयोगसाधनबल ॥ ताकेमधकृष्ण

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

को वासा ॥ दरसे ताहि योग अभ्यासा ॥ देषै कृष्ण सुरूप विधाना
प्रफुलित कमल नैन भगवाना ॥ वाजंतीमाला कौस्तुभमन ॥ व
नरासी सगुपाल स्याम घन ॥ कुंडल श्रवन पीतपट सोहै ॥ मुष
मुरली धुनि त्रिभुवन को मोहै ॥ १८ ॥ दो० ॥ ऐसे सत्य सरूप को निर
ष शोभित मन आइ ॥ ध्यान करत हृदै कमल को जऊ भगत पद राइ
२० ॥ चौ० ॥ तेऊ निरषत है प्रगट गुपाला ॥ रूप चतुरभुज जोति विशाल
ला ॥ तामहि लीन होत है सोइ ॥ महाप्रकाश तांहि तन होई ॥ चौदह भ
वनष्टु एतिः आवहि ॥ चितवत जहां तहां चलि जावहि ॥ हरि हरि है ताको
म हरि दासा ॥ रोम रोम रवि कोट प्रकाशा ॥ ताके भेद परे चलिन लागांहि ॥
पवन आराधि हि ती पम अनुरागांहि ॥ जो जग मांहि पवन अभ्यासी ॥ प्र
मुदित तही पसदा सुषवासी ॥ २१ ॥ दो ॥ करत पवन अभ्यास जे सुद्ध
मकरत मन हार ॥ वज्र भोजन नजव षाव ती होत देह को भार ॥ २२ ॥ चौ
दृष्टि जात है नाहि शरीरा ॥ वपु व विनास होत अति धीरा ॥ जो नर वज्र
तपान जल करई ॥ पवन चढावत कोप्र न सरई ॥ तिनको उदर कौ
ल दुष होई ॥ महाकष्ट पावत है सोई ॥ जल अरु च्यार प्यारो व हले वै
जो नर योग साधना सेवै ॥ पर कना डा पवन चढावै ॥ अरु मलना
डउतार तन आवै ॥ सनै सनै सुष पाइ अपारा ॥ परन योग इसी परा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४०४

अश्वमेध

कारा ॥२३॥ दो॥ पूरन तिनको याग है इह प्रकार जीनकीन ॥ चींटी
हस्ती लौं सकल ऐक ब्रह्म लिव लीन ॥२४॥ कैतु हलो वाच:॥ चौ॥
पुन कैतु हल वचन उचार ॥ अतिसै वर नर बदत हमारे ॥ ब्र
ह्म कह्यो तुम ऐक समाना ॥ चींटी अरु हस्ती वर माना ॥ गज के तन
मस्थूल निहारा ॥ चींटी के है तनु कम आकारा ॥ कंसु समसर कहौ है
तःमाही ॥ यह तव वच मो मन ठहरत नाही ॥ हमरे हृदे संदेह मिट
वहु ॥ करतरण करि सब विध समझावहु ॥ इन माहि ऐक वस्तु किम
होई ॥ मुझ उर धरा जब ताव हु सोई ॥२५॥ गालव वाच:॥ दो॥ गा
लव कहै सुनि नृपति ब्रह्म ऐक जी पछान ॥ गज चींटी माहि रमर
ह्यो जंह त तह ऐक समानु ॥२६॥ चौ॥ पिंड प्रकास की या प्रभ जैसा
की या निवास ताहि मधि तैसा ॥ अग्नि निवास दारु मध जानहु ॥ ते
स ब्रह्म वास घट मानहु ॥ दीरघ दारु मध्य अगनि जारत जब ॥ वहु तप्र
का पा अगान उपजनत तब ॥ अरु जो सूछम दारु जरत है ॥ तहा प्रक
की अल्प वधिक सत है ॥ तैसे ब्रह्म ऐक जानन जीय ॥ जहा तहा जैसा
निवास कीय ॥ ब्रह्म ऐक सुनन नृप कौतुहल ॥ पात्र भेद माहि रह्यो अ
मथल ॥२७॥ दो॥ लख चारासी जून माहि ऐको ब्रह्म नरेस ॥ जहं त

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हैं जलथल मै रह्यो घटि घटि माहि प्रवेश ॥ २८ ॥ चौ ॥ ऐसे कौ ब्रह्म जु
न जौ रासी ॥ रहत अलिप्त सकल घट वासी ॥ दुष सुष ताकौ कछु
न होई ॥ सूरज जुसा बीजग सोई ॥ सदा प्रकास मुद्दि तनि शूर
सूर ॥ तिमर हरन दूरि सरोन समसूर ॥ ताकौ पाप पुन्य नहीं कोई
ई ॥ विमल प्रकाश मैं षंडित सोई ॥ जैसे रवि प्रकास जग जागत
त ॥ पाप पुन्य वृत्तिः कछु न लागत ॥ म्लेछ वा सूरम्य होत न कौ अंकुरई
म्लेछ वा गौ छेदन कौ अंकुरई ॥ २९ ॥ दो ॥ रवि प्रकाश कौ सुष न दु
ष पाप पुन्य न होइ कोइ ॥ लिप्त न कछु मैं शास्त्र म सदा अषंडित सोइ ॥ ३
चौ ॥ दीप प्रकाश भवन मांहि जैसे ॥ द्रही मध्य असमा तमा ते से ॥ गृह मे
करे कोऊ मद पाना ॥ कोऊ करे स्मरन भगवाना ॥ कोऊ करे ती
प भोग विलासा ॥ कोऊ कीर्तन क पाप प्रकाशा ॥ दीपक पाप पुन्य
नहीं लागै ॥ क्रोध न करे होवे मनुरागे ॥ दीपक सदा अलिप्त भव
न माहि ॥ सुष दुष कछु न लागत मन माहि ॥ दीप प्रकाश भवन म
हि जो न रू ॥ सु तन माहि आतमा सा न रू ॥ ३१ ॥ दो ॥ का पाप अंतर के
धनी जो इक हा वे आप ॥ तिस ही के दुष लगत है जे नम मरन संता
पु ॥ ३२ ॥ चौ ॥ सा ही मे आतमा जानरू ॥ सुष दुष क तो कर्म प्रा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५८५

आत्मबोध

मानऊ ॥ आतम ज्ञतउ कवहू न ही होई ॥ सदा असू चेतन्य अलेप कसो
ई ॥ गालव कहे सुनउ पृथ्वीपति ॥ इह कदिन वेद कहत मए ह
प प्रति ॥ ऐक पुरुष ऐसे हरि भजही ॥ अंतर ध्यान जु रहि रस तजु
ही ॥ ब्रह्म मग गानस एक मे जरावहि ॥ गुरु वचन सव दहि सुरति मिला
वहि ॥ लीन हे तन मन हद धुनि माही ॥ सिमरन स्वास सव ध्यान ही ॥
जाही ॥ ३३ ॥ दो ॥ सोहं हंस समावही अंतर हो पञ्च अभ्यास ॥ लीन भ
ई सव देहि सुरति आतम ज्ञान प्रकाश ॥ ३४ ॥ चौ ॥ वैठति ऊठति सो
वत जाग्रति ॥ अंतरि गति सुख कवहू न त्यागत ॥ मिटग पो अभ्रम म
न ते संधि पारा ॥ विनु रसना गुन करत उचारा ॥ दृष्ट नासिका अग्रम
निहारे ॥ तनु साधत मन ज्ञान विचारे ॥ सोहं राम आतमा सो ज्ञव
सुख उपज्यो जग भ्रम तउ पज्यो तव ॥ ह्रदै सरूप मध्यो सम से सारा
त्रिगुणातीत पाइ सुख सारा ॥ कवहू नि तै कर तक कवहू गावत ॥ सो
वत कवहू हास उपजावत ॥ ३५ ॥ दो ॥ सोहं ब्रह्म निवास कपि सुख उ
प जुपाधि ते चार ॥ हर्ष सोग ते रहित गपो शत्रु मित्र सम भाइ ॥ ३६ ॥
चौ ॥ साधु पावो एक समाना ॥ कंचन लोह एक सम जाना ॥ जो व
ह कर्म सकाम अकाम करही ॥ कर्म फास ते नेकु न डरई ॥ मना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धान होत है जैसे ॥ वो घो उदै होत न रहे तैसे ॥ कर्म बंध ते मुक्ति प्र
धाना ॥ सदा निरंतर आतम ध्याना ॥ जिन शरीर की सुरति वि
सारी ॥ कर्म अकर्म फास कटि डारी ॥ ज्ञान ध्यान तिन सकल
भुलाना ॥ प्राप्त भयो शुद्ध विज्ञाना ॥ ३७ ॥ दो ॥ आतम राम अ
मल पद मगन भए लिव लीन ॥ जाइ समाने उन मुनी पाई मु
क्ति प्रवीन ॥ ३८ ॥ चौ ॥ भस्म कीए इंद्री रस स्वादा ॥ ब्रह्म अगनि
जरा विषय प्रमादा ॥ सब्द सुरति कर बिंद उठाई ॥ दसमे द्वार अग
नि ठहराई ॥ बिंदु गगन मिलइ स्थित भई ॥ आहरण को न्याई
है गई ॥ तत्त गुरु शब्द भयो हत पसारा ॥ अनहद धुनि उपरि
जी ऊनका [illegible] ॥ देह प्रबल विन प्रबल अहारा ॥ मौत न देह भयो
सुख सारा ॥ ताते अमर अजर पद पायो ॥ तिः दरसन ते जगमृत
यो ॥ ३९ ॥ दो ॥ तीरथ रूपी दरसे तिः विचरत है जग माहि ॥ आत
म ब्रह्म पद छाति पायो जन हवे चितवे तिः जाइ ॥ ४० ॥ [illegible] ॥ गा
लव कहै सनऊ कौतु हल ॥ इक अभ्यास कर मन अतिबल ॥ पवन
गुरु शब्द भयो अभ्यासा ॥ पवन न रोक सकहि ब्रत नासा ॥ षट
वायु देही मंदिर रहई ॥ प्राण वायु इक निगम उचरहि ॥ ऊपर नाभि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

ताहिवि आमा ॥ प्राण वायु ताकौ वरनमा ॥ नाभि तउपान केष्पाना
व हृत गुदा द्विसति: अस्थाना ॥ वाइ ती सरीर हौ तिरु देवरु ॥ चतुस्थ
वारकें ठमाहि इस्थिर ॥ ४१ ॥ दो ॥ ताहि वाइ पंच मकु है वषी इस्थिरभा
र ॥ इहसम व्यापक देह में जः करवषठ हराइ ॥ ४२ ॥ [illegible] ॥ छठी वार
की गंठ नाभि पर ॥ वाइ फिर ततन अधक ऊरधव ॥ अंतस में बुह
जात गंठ जव ॥ तन तें निकस जाइ प्रान तव ॥ वाइ अपान गुदा कौ
रा ॥ निकस जात तव देह कौ जोरा ॥ तले नाभि के तन है जोई ॥ ताकें ज ह
जात पुन सोई ॥ प्राण वाइ दोऊ व सत नाभि पर ॥ क्रम क्रम देह तज
तम तस वसर ॥ सब रोग ऊ चार परकारा ॥ तन तें जात तन लोगति
वारा ॥ ४३ ॥ दो ॥ सोई द्वार जाके निकट निकस जात प्रति: द्वार ॥ प्राण हो
इ प्राण सहित तरह तन देह में ऊर ॥ ४४ ॥ [illegible] ॥ सुण कें नहि लन पति
माहावर ॥ योग साधना कहत योग सुवर ॥ षष्ठ वाइ जव रोक रहावृति
तौव हब्रह्मपकास हिपावत ॥ षष्ट वाइ अपुने वस त्यावत ॥ तन रया
गपुगति का पावत ॥ ते ऊ पावत हे ब्रह्म में ट भ्रम ॥ पावन नरो को जाइ
मही भ्रम ॥ रोक पवन कौ सकै न कोई ॥ आनक जतन मन वस्य न ही
होइ ॥ चंचल मन कौ वेगन रोधप ॥ मनु पुण्याधन वजत सुनकु
व ॥ ४५ ॥ [illegible] ॥ मन आगे ईश्वा प्रवल मोक्षितें व रमाइ ॥ प्रथम इंद्री पर
ते

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नवसिकरैपाछेयोगककमाइ ॥४६॥ चौ॥ इंद्रीजीतसाधसंग्रभयो
मनतुरंगनिजवसिहेगयो ॥ जंजलनलहरउठेतितलाई ॥ तिनमन
कीवासनाभिटाई ॥ जिनेउरिबीकवसीनहीकीनी ॥ मनकोजीतोजी
पधुरलीनी ॥ मनकोजीतसकैनहीकोई ॥ जबलगपोनवस्यनही
होई ॥ जोकेआकहैपवनगहिराषो ॥ उपमकालतस्वादरसचाषो ॥ ता
केवचनमसस्यप्रमानउ ॥ रोकनपवनकहेनजीपड़ानउ ॥४७॥
पहमनजाउपवनसुजीतसकैनहीकोय ॥ जोमनजीतहितपर्वता
सनतोकारजसिधहोइ ॥४८॥ चौ॥ वपुमांहिपंचदोइरहतेहै ॥ इक
तनपिंजरमांहिवसतेहै ॥ इकभोगतइंद्रीरसस्वादा ॥ दूसरबगनि
रलेपअनादा ॥ देहआतमाभोगरसलेई ॥ दूजोपरमातमहैई ॥ शां
तिसरूपवसदाअनंदमन ॥ लागतिनहीतादुषसुषतन ॥ दोनोकोइ
कठोरनिवासा ॥ आतमबगकोमहतप्रकाशा ॥ देहात्माबगकोतमछा
या ॥ इंद्रीअनेकस्वादलुभाया ॥४९॥ दो॥ देहआतमादेवईपरमात
मकोराज ॥ परमातमसमभजानईजिकहुदेहकेसाज ॥५०॥ चौ॥ जीव
आतमासदारिषीवस ॥ बबयास्वादवादेलालचपस ॥ अज्ञानीअ
हंकृतिउपजावहि ॥ मेरीमेरीकरिदुखपावति ॥ कोऊनजानतआपस
माना ॥ कहतआकोहमवुधवाना ॥ मेऊसमाननहीस्वरजगतपर ॥ ह

प

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५०७

आश्वमेध
जुज ४९

महीहैं पंडित विद्याधर ॥ जीवात्मा अविद्या राता ॥ अहं मेव अवरम
दमोता ॥ सोई अविद्या के सीहैं नप ॥ सो वादर नभ बीच नराधिप ॥
५१ ॥ दो ॥ वादर मे सुंदरता वर्ही नभ माहि विविध प्रकार ॥ कारे पीरे अ
रुन कंध कव हुं स्वेत रंग धार ॥ ५२ ॥ चौ ॥ कवि आंधी कवि पवन उ
ला वहि ॥ कव हुं मेघ घटा चमकावहि ॥ कव हुं इंद्रधनुष मधि रा
जत ॥ कव हुं मेघ वर्षहि वि छाजत ॥ नभ को यह सरूप गुन नना
ही ॥ वीच परा है परंतः माही ॥ वादर द्वांदते को यो प्रकासा ॥ द
र्शन आवर्ति गगन प्रकाशा ॥ तिमत पअतमअतम ज्ञानउ
पद्यपिइक हरा सप्रमान ॥ वीच अविद्या पटअ हंकारा ॥ र
विप्रकास दुर पो अंधयारा ॥ ५३ ॥ दो ॥ अहं मेवको पटपरयो ज्ञाव
आतमा माहि ॥ तौ पंबी पहदसरे गहमेदव तनाहि ॥ ५४ ॥ चौ ॥
देषभाष्यो सुनेकत हल नप ॥ श्रोतातीन प्रकार न
राधिप ॥ उत्तम पुनि कनिष्ठ मध्यम कीय ॥ सो उत्तम सुजन कुसम गत
हीप ॥ उत्तम श्रोता ते ऊंरा जाना ॥ कीर्तन कथा सुने सविधाना ॥ हा
रजसु श्रवन सुने चितु लाई ॥ मन वच कर्म सचे तु अनत न जाई ॥ ने ज्ञा
वन रहि हरि जस सुनई ॥ पप्रपूछ मन हरिगुन गुनई ॥ उत्तम श्रो
ता के रहल छन ॥ ते सैन्य पतु मम कहा विचछन ॥ ५५ ॥ दो ॥ श्रोतादिती

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पकरि ए जो कृष्ण सुजान तिनकी वार ॥ नैनन सों अवलोकई अव
तनन सु नैन उचार ॥५६॥ चौ॥ जः ते सिद्धि होय सम काजा ॥ सो मन
ठौर न सु नेम काजा ॥ कोऊ न प्रगट लीयो सठ तत्व ध ॥ यह
ध्यान बैठो माइ कृष्ण पद ॥ तौ जो तामध्य मन जाने ॥ ताकी लछ
न सुन ज्ञवखानो ॥ कृष्ण सुजान नेकी ठौ जाई ॥ देह मन मन स
नत अमाई ॥ ठौर सुन तनै ननको ध्याना ॥ ठौर सुतै कसु न तव
धकाना ॥ मन न अभिलाषा विवध प्रकारा ॥ प्रेम तत्व रति ताकी व
ज्ञवारा ॥५७॥ गा ल ते वा वा चं ॥ दो॥ तुम प्रीता ताउ त्र मन न पति सो
मरन कर ज्ञ मुरारि ॥ सब धर होइ नेपां चंद सम पुनाकर ज्ञउ
धार ॥५८॥ चौ॥ सब पुनारा जकी सी कोदी ते ॥ पागो मध्यास जाइ वन
कीजै ॥ जो मुज कहीसाधना तुम प्रति ॥ तै से तुम साधज्ञ वा ध्यावव
ति ॥ षी ग्रजाइ से वज्ञ वन वासो ॥ कीजै त होप्रवल सम्भ्यासो ॥ रूध
ज्ञ व्रह्म गा गने मछि रा वज्ञ ॥ पवन साधज्ञ व्रत रस चाव ज्ञ ॥ व्रह्म
लोक मछि वसतनाडुइक ॥ ते ऊले तहे पवनव सिंच ॥ मुकति
कर तिम्मा वाहृदि ग्रीता ॥ वगसटा वर्ति मन को भौती ॥५९॥ दो॥ र
नसन मुख स्वरा मरेसा ऊ सति गति पाइ ॥ सरन न परे कौ निमत जो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४०८

अस्वमेध

मरैमुकतितेऊजाय ॥ ६९ ॥ चौ ॥ सुनस्रुतिकेोतहलमपाला ॥ सुबत
मवनजावऊततकाला ॥ मुकतिनपाइकरऊनपतोलो ॥ पऊस्थान
हीकोलितुमजोलो ॥ मुकतिहोनकोसिमरनजोई ॥ तुमकोमोहिवतो
पोसोई ॥ करिहोजाइजोगअभ्यासा ॥ राजुसोगकीजैवनवासा ॥ त
होसिमेरनहरिमनविस्रामा ॥ करऊपग्यामस्रतमोरामा ॥ पह
कारजकोविलमनकीजै ॥ हमरीसीषस्रवनसुनलीजै ॥ ६१ ॥ नार
दउवाच ॥ दो ॥ कहिनारदसरजनसुनऊइहविधगालवज्ञान ॥ २
कोनृहलनपकोकह्योमनवचक्रमहितमान ॥ ६२ ॥ भईतुर
तेकोनृहलनपको ॥ निस्रकरीजाउस्रववनको ॥ गालवतेप्रबो
धसुनिपायो ॥ मनवैरागउनिपतिकैआयो ॥ मनरुचवढीयोगअ
भ्यासा ॥ तज्योराजसुषभयोनिरासा ॥ गालवकीपेजाकपेविधव
त ॥ रिषबैलागीतबरनमहीपत ॥ कोनृहलकोदरकीयोभ्रमु ॥ गा
लवगवनकीयोनिजआस्रम ॥ नारदकहैंविजैसुनकाना ॥ जोयह
सुनैसुपनविष्यानो ॥ ६३ ॥ दो ॥ तोयहधावेउसुपनपढेसुनै दध
रमाइ ॥ कविटहकनवहपुरषनिसस्रेपनैहरोनहीपाइ ॥ ६४ ॥
जैमिनकहैसुनऊपावीविवीपति ॥ नारदेकप्याकर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हीअरजनप्रति ॥ तोई संवाद कौतूहल गालवतव ॥ नरद पारषप्रति
भाष्योसव ॥ भयो वैराग कौतूहल के मन ॥ राज त्याग अव हो ग्रे हो
वन ॥ भूपति जी प उपजी पहुवाता ॥ हमरे तो नाहि नकोऊ तीता ॥ पु
कौ देहु राजसमाजा ॥ पुष्प मै करों कन्या का काजा ॥ चंपकमालिनि अ
ति योबनवति ॥ ताकौ देहु मनवांछति पति ॥ ६५ ॥ दो ॥ कंन्यावर प्रापति
करौ कुसम भगति सुरज्ञान ॥ राज समर्पण तिःकरौ हम सिमरै भगवा
न ॥ ६६ ॥ चौ ॥ चंपकमालिनि नृपति बुलाई ॥ कहि व तात वृझ विधसमझा
ई ॥ मागलेऊ दुहिता वांछति पति ॥ लीये बुलाइ कुंवर स्वयंवरि पति ॥ राज
कुवर तहां भिले अपारा ॥ मदन भिमायो तिनाहि मंझारा ॥ पूर्वक पाक
हु नलागेपुन ॥ कहि जनम जा प्रति जे भिन मुन ॥ तहांन पतिसुत जुरे
अनेका ॥ कंन्या मन मदहि की यो विवेका ॥ कोऊ नपति वांछ्यो कन्यतव
ठाढे रहे नरेसकुवर सभ ॥ ६७ ॥ दो ॥ कंन्या मीच्यो पिता सो पहु मदन
पाहि वात ॥ धिषियाको जो ऊ पतिदी यो के सो पहुत तात ॥ ६८ ॥ [illegible]
[illegible] वाच: ॥ चौ ॥ वात्यो मदनसु नृप पतिवर ॥ धिषियाको पति मयो भगति
हुए ॥ चंद्रहास ताको वरनामा ॥ गुन सागर तन छवि अभिरामा ॥ सम
दृष्टीनि जुभ गत मुरारा ॥ वल गुन रूप तेज नहि पारा ॥ जाके एद दृत्व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नही सोगा॥ भए पुनीत दरस वुर लोगा॥ सुधासूर तेजस्वी महाबल॥ छ
त्रधर्म सिवराऊ मीरन मचल॥ गो ब्राह्मण रछक पुण्यवाना॥ सदाक्षत्र
मरणाकरत भगवाना॥ ६९॥ दो॥ नित शब्द न हरि सिमरन करै व्रत इ
कादशी धार॥ धर्म दडावै जहत तहां सुकृत सबसार॥ ७०॥ चौ॥ भल
ठाढे प हंस कलतरा जाना॥ नही भगत केन बन समाना॥ मदन भगा
त की उसतुति कीनी॥ चंपकमाल न सभ सुनलीनी॥ पुन कंन्यो वच क
हपि ताप्रति॥ इन माहि को ऊन वांछति होपति॥ जहा ठाढे सभ राजकु
मारा॥ चंपकमाल तिन वचन उचारा॥ इन माहि को ऊन करो भतारी॥
वांछति नाहि न हृदा हमारा॥ आपो सुपुने चले गए सब॥ पुन कंन्या
पितु को भाषी तव॥ ७१॥ दो॥ मदन सिंघ उसतुति करी जाकी सुन हित
त॥ सोव हृदै तै मोहि को मन वच क्रम कुसरात॥ ७२॥ [illegible]
चः॥ चौ॥ कहे के हितहित वचन मदन प्रति॥ सुझ पाहि ल्याव ऊ वेगह
ए भगत॥ जाको नाम पुनो वहलाई॥ शीघ्र जाऊ ल्याव ऊ इत साई॥ स्ना
वही जाऊ सुपति हरि दीजै॥ यह कारज कैगह रुनकीजै॥ साटक हुना
ही नगर मग माही॥ चंद्रहास स्नान ऊ सुपाही॥ कीजै नही भवन विस्रा
मा॥ ल्याव ऊ भगत करऊ सुजकामा॥ चंद्रहास या सिंघ मदन तव॥ जौ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नत्याउ उपहत पाप लगहि सब ॥ १३ ॥ दो ॥ जो बहु होई त्याउ नहित्य
हत्या गहि अपराध ॥ चंद्रहास कों त्यों उगा जो हरि सेवक साध
॥ १४ ॥ चौ ॥ ब्रह्मघातकी पापी जिन कोई ॥ द्रोह मित्र सों करहि सोई ॥ अ
रु निरदया हृदै नहीं जासों ॥ कंन्या धन लेते वे पुर मासों ॥ जो नर बे
चत हैं मद कों नित ॥ पुन गौ वेचत करत द्रव्य हित ॥ वहु दोस करवे
चत जो नर ॥ भोजन करत जाइ मसुक घोर ॥ जे नर पुस्तक वेद
चुरावति ॥ पर धन हरै के यज्ञ रचावत ॥ वपा जरावत हैं हित ए
वन को ॥ वन्न षसोट लेत निरधन को ॥ १५ ॥ दो ॥ धरनी लेत ष
सोट जे देवस्थल द्विज राइ ॥ वस्तु जु त्यागी पुन न महिचर न छु
वावति गाइ ॥ १६ ॥ चौ ॥ सुन मकृति पजो चितु नहि लावति ॥ मासा वे
त निरास पठावत ॥ पुनि जाके गृह में द्वै नारी ॥ इक सों वैर एक
हितकारी ॥ जे नर साधम गत हि दुषावति ॥ करत कुसाष पाप
मति लावति ॥ के ऊकी सासों वस्तु मंगावै ॥ जो नरु कछु वीचत
षावै ॥ विनु दूषन जोई दोष लगावत ॥ कंचन आदि जोई धातु च
रावत ॥ जे नर मेष कंव हूर्र मन नहि भाष्यो ॥ तपाक हतो इव षेर
सुचा ष्यो ॥ १७ ॥ दो ॥ इन सम कों अपराध फल मदनक है छ्छ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

३५१

अश्वमेध

है इ ॥ जैन लिया वो हरि भगत तब षषपा पावत है सोइ ॥ १८ ॥ चौ
॥ चलैयो सपकरि मदन पेसे घातव ॥ वीच पर्यो निशा मार ग मै
जब ॥ सोवत सुपन सुगन तिन देष्यो ॥ तेल वूड तसुपुना
तनु पेष्यो ॥ कुछी आगे फिर तिन हास्यो ॥ देष्यो ने जको षरस
सवारा ॥ तैल चोपरे देह मत्रवरे षी ॥ स्याम वस्त्र धर परती पर्ये
षी ॥ देष्यो सूधर चुवत तसुपुना भषे ॥ सुपन विचार मदन उपा
ज्यो दुष ॥ १८ ॥ दो ॥ भोर भये वी तीनि शा मदन चल्यो जी पे सोग
पर्यो जो देषी पतसुप शगुन वने विषम संपाग ॥ ८० ॥ चौ ॥ ऊ हा
भगत को कहो दुष्टबुध ॥ वलिदा जे मंविका तो इ सुधि ॥ सेध्या सो
मैं तहा चलि जा चढ़ ॥ म छुनु है पुनि गए हा फिर आवद् ॥ तो लौ आहे
हम रकुल माही ॥ प जे चलि मं विका तहा ही ॥ मरे जो वलि दे वना
होवा को ॥ मछुन करे मैं विकाता को ॥ चंद्रहास पुन वचन उचारे ॥ स
न फ़ुद्रु दुष्टबुध नृपति हमारे ॥ इकु हरि को निवा उ है सो सो ॥ जे होहू ती
न लोक को ईसो ॥ ८१ ॥ दो ॥ नहा चिंता जीय अवर का ज तन देवी देव
त्रिभुवन पति को छांडि के को करे कवन की सेव ॥ ८२ ॥ चौ ॥ तुम रोहता
मानो पहवाता ॥ हम नठीक रो जी प को घाता ॥ चंदना द्वप जो समै

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करह ॥ जीवघातकर तेजी पउरह ॥ चल्यो भगत फूलले ता

ला ॥ धूपदीप कुंकम लीए साथा ॥ गोरोचन हरदी अरु कपूर

चोवा मृगमद अगर संधूर ॥ बहु प्रकार फूलन की माला ॥ सं

ग लै चल्यो भगत नंदलाला ॥ सुंदर रथ चढि चल्यो भगत तब

रथ बसी टली याद एवुद्ध तब ॥ ९१ ॥ दो ॥ भगत चढा यो मन्दि

र रथ पठ्यो संविका थान ॥ दुए बुद्ध मन दृढ की यो अवत्याग

पहुथान ॥ ९२ ॥ चौ ॥ भगत चल्ला तिपा छै मेपति तव ॥ ली पोढि ना

रि जु दी यो मदनसव ॥ वेदी पए गजरथ समस्या दीने ॥ सकलब

सट दुए वुद्ध ली ने ॥ मेबन वसन रतन जो ऊदी ये ॥ विविधपासे

र सपै समली ती ते ॥ चंद्रहास सेवक भगवाना ॥ प्रापति भयो निक

ट अस्थाना ॥ हरष नसी गहि एउ पजा यो ॥ मगमहि हरषन

गावति आयो ॥ दूरहु ते कृपा भगत आवत ॥ मदन सिंघ रथ पुशा

घ्र चलावति ॥ ९३ ॥ दो ॥ मदन सिंघ आयो निकट मिल्यो भगत को

आइ ॥ की यो दंडवत भगत को पाइ नलागो धाइ ॥ ९४ ॥ चौ ॥ दोनो अ

तिआनंदित भये ॥ कुशल संदेस पूछ विगसत ए ॥ मदन सिंघ सबब

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४५५ अश्वमेध

चन उचारे ॥ कहा चले हो भूपति मारे ॥ चंद्रहास कहि मदन सिं
घहि तं ॥ पूजा न भूमि तप बोमु हि भूपति ॥ जहां अंध विको कोइ स्था
ना ॥ तहा करो पूजा विधि नाना ॥ सभव तौ तपुन मदन सुनाये
हम तौ भगत लैन तु जमायो ॥ उहां करी मुज सपत अपारा ॥ वे
गल्यायउ गति भगत मुरारा ॥ ८७ ॥ दो ॥ मदन कहै सुन हो भगत
सप्रकरी वज्र मोहि ॥ हत्याला गति अपार मुज जौ न हौ पठव जि
वजन नहीं वारा ॥ कौतु हल सों सपत करी मुज ॥ दुरसन जौ न दे
घाउँ भगत तनुज ॥ तौ तेहत्याला गत मो कौ ॥ पठवौ जौ न भगत हि
मतौ कौ ॥ नृप कौतु हल मति अभिरामा ॥ कपक मालिनि दुहिता ना
मा ॥ पति वांछित है इछा चारी ॥ तन व ऊ उसुति सुनी तुमारी ॥ भगत
नम ई सुन न सुजस तुमारा ॥ विदा की ये सभ राजकुमारा ॥ ८८ ॥ [illegible]
[illegible] वचन कहत तु मता त ॥ चंद्रहास कहि मदन सुन न
उलट करत तनु घात जो नहीं वरस तमंध विका ॥ ५॰ ॥ [illegible]
मदन कहै सुन भगत प्रवन चाप ॥ दोषमंधविका को
सभ मुज पद ॥ जम कै मदपत हो तु मद रसन ॥ लोगत है त्यास

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पतमोहितन॥दूटारघुदीजैयहमोको॥हमरारघुवंशभतनो
कौ॥अदलबदलरघुकोयोपरस्पर॥कुंतलपुरचंद्रहचल्योभगत
हरि॥नारदवचनकहितपारथप्रति॥रक्षाभगतकरतत्रिभुवनो
पति॥ताकोविघ्ननलागेकोई॥रक्षकुंजःपदमापतिहोई॥८१॥दो
पठ्योहरिभगतनुमाहपरेकुंतलपुरकीओर॥मदनचल्योपूजा
लीएजहांअंबिकाठोर॥८२॥चौ॥चंद्रहासकुंतलपुरआयो॥मदन
अंबिकाइस्थलधायो॥पहुच्योनिकटअंबिकाथाना॥रथतेउतरिप
सैबुधवाना॥चंदनअगमदसभसुगंधधूप॥मदनतपसंयमपैलीयो
पावकरै॥रीछव्याघ्रसभलरतपरस्पर॥आइपरेदोऊमदनचरन
पर॥मदनमनछोडइपरैपाधरैन॥तनथकुलगतिजाइनबरनी॥चंद
नादिपदजोजोसाया॥पदलिपाबगीरपरैपोढाप्या॥८३॥दो॥मस्तकु
लागोधरनपरैस्राप्राणतिचल्योअपार॥नैननासिकाश्रवनतनु
रुधिरभस्रोतिःवार॥८४॥चौ॥भयोसुचेतमदनशरीरजब॥कु
ह्नानाममबलतेउठोतव॥मदनतपसंघकीनोविचारमन॥बुरेहो
तअपवसगनमोहितन॥अबनेहदेविचारीबाता॥भिप्रेहोइमोहि
तनघाता॥जोहमममसापरमकल्याना॥जीकेचंद्रहाससराजाना॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चंपक मालिन अरु वृष पासौ ॥ सुष विलसे हरि भगत तमासौ ॥ यह

५५२ विचार उठि चल्यौ मदन पुन ॥ मन मे सुमरन करत तक कृष्ण गुन ॥ ध्य

दो ॥ मदन सिंघ के सी सपए ऊलटे वैठो आइ ॥ ऊपर स्यौ हरि शङ्कर

रस मेध तता ते अति डरपाइ ॥ ५६ ॥ चौ ॥ सो सुन देष तप रक्षा हरि पर ॥ अपु

नी मति जानी निश्चै कर ॥ चढ्यो हो सपष्ट याम उज ताती ॥ मन व च

ई हाकर नको घी ता ॥ हम राषि ता दुरा तम पापी ॥ संतावी है काल

सं तापी ॥ जो पितु द्रोह हम भगत सौं कीनो ॥ सो सुजस प्रापति भयो पवी

नो ॥ इह प्रकार अपुना कह्यो ना ॥ सुजस हरि दीयो भगति भगवाना

अपु नासी सुष्म रूपि सुजस दीनो ॥ निभै भगत सुकृत करलीनो ॥

५७ ॥ दो ॥ अव हो वांछत हे हृदै विषयाप तिक त्यान ॥ जुगजुग के रैष

लो सत जग अचल भगत भगवान ॥ ५८ ॥ चौ ॥ भौ गेगा पहरन्त प्रसगन

त पाल ॥ पहकादि चल्यो अविकास स्यपल ॥ प्रापति भयो जाइ ततक्षा

लो ॥ आगे हो ठे अति च डालो ॥ तिन गहि शास्त्र वदारन कीनो ॥ ततक्ष

न दस टूक कर करलीनो ॥ जो यधर चौ जगत के ताता ॥ निर्भौ होइ सो

कुशलाता ॥ इहा च शित्र हो तन पहम पा ॥ ऊहा भगत कुं तल पुरग पो

वे द्रहा सप्राप तिम पोत हो ॥ जतो न्रपति के हलजे हो ॥ ५९ ॥ दो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

इति श्री भारथ पर्व [illegible] अश्वमेध वर्णनं ॥ कवि [illegible] में [illegible] ॥ १०॥ ५७ ॥ [illegible] ॥ ४११ नोवाच: ॥ चौ ॥ जैमिनि कहै सुन जन्मेपाला चंद्रहास की कथा
विशाला ॥ नारद कथा कहत पारथ पूंति सुनत होत अरजन
जीमत रपत ॥ केतहल पुर भगत गयो जब ॥ उतरथा जाइ वाग
भतर तव ॥ रजनी वस्यो वाग तः माहीं ॥ साइर ह्वै हर भगत ता
हीं ॥ कौतहल राज अपुने घर ॥ देख्यो सुपने पन शके अवसर
सुंदर पुरष भवन इक देख्यो ॥ सहा प्रकूपस भवन मांहि देख्यो ॥ १
दो ॥ राजकुवर सुंदर सुघर ॥ वैष्णव भगत गुपाल ॥ भवन मांहि
प्रापति भयो नर व्यो स्वप्न में पाल ॥ २ ॥ चौ ॥ पहुच्यो स्वप्न वीच वन वे
तासौं ॥ कवन नाम अरु पी तुम कासौं ॥ आगे ते उतर वचन प्रकासे
हम हैं नपति कुल के दासे ॥ पुन केतहल जागत भयो ॥ पुत्री को
वतो तकहि दयो ॥ मदन कहि गयो च्याव न रुजोई ॥ स्वप्न वीच देख्यो
मुज सोइ ॥ मन मन जत ह भे कुसुमन हासयो ॥ भोगव है मन मांहि
विचारयो ॥ [illegible] कीगम जनकौ पो सधायो पिभर न कीन ॥ भोगवति गा
यो कुसुम को रप च[illegible] त्यो पवीन ॥ ४ ॥ चौ ॥ चंद्रहास पुर की पो
उहां वाग के वीच भगत वर ॥ जागत भयो सुजस जागवति हर ॥ ३ ॥ दो ॥ २

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४१२

अश्वमेध

कुशजन्म

प्रवेशा ॥ सुनत भयो मन मुदित नरेसा ॥ तत छिन न्रप आगे उठि
धायो ॥ प्रेम सहित भगत को सुख तीय पायो ॥ आदर सो दंडवत परि हरि ले
गायो ॥ नंद पेम भाति तन अति सुख भयो ॥ हरि सो पति भो गति ज्यो तें
सो ॥ मन वच क्रम पति पायो तैसो ॥ कुंकुम मृगमद कनक कटो
ल समारि ॥ आरती तत छिन भंग साजि सँवारि ॥ पुनि कंत हुलस पद ता
कीनो ॥ साजि आरती निज कर लीनो ॥ ५ ॥ सो ॥ आदर सो की पोंछ
पार कंत हुलस हरि भगत को ॥ मन वच क्रम मति तु धारि वैठा पाव
र पैक पवरि ॥ ६ ॥ चौ ॥ कुल प्रोहित तम पाल पवठायो ॥ पंडित लोग
सकल चलि आयो ॥ लगन विचारि सोधि अगम हेरत ॥ कंचन व
भक्त रीभ सुभग हरित ॥ वेदी रची निगम मधु कीनी ॥ कंन्या लेन
पति कर दीनी ॥ वेद मो फेरे दंपति तन ॥ ह्रा पुलकाय पवरि साजि मन
दति मन न ॥ मंच रु गांठ जोरत पहरावत ॥ भयो सुप्र ओंकार राति
कार जय धवल ॥ राजु समरपि तौ काम न्रप पतित तव ॥ चंद्रहास क
र मन न सदा पातव ॥ ७ ॥ दो ॥ छ गेर प कंचन रतन न भकतामरो
भठार ॥ राजा सन सरवसु दीयो अपने राज समेत आर ॥ ८ ॥ चौ
पुनि कंत हुलस विवेक कर जोरे ॥ विनय पति मार्गी सुनप्रभ मोर ॥ रा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जेसमग्री तुछ समाना ॥ जे मंजद ई भगत भगवाना ॥ सब सो
भगत जरा जु महिमा सब ॥ वचन हम मारे सुनउ भगत अब ॥ सु
पुरह मरी रही मल पद्दिन ॥ कह्यो वांता तसु पना ताहि ति
न ॥ अव हम जाइ करौं वन बासा ॥ सो पपिकु पाकर उहरि
दासा ॥ गालव पव मुउ जानंद हापो ॥ साधन पाग अंरे
मवु तापो ॥ ९ ॥ दो ॥ राजे तिलकु दीयो भगत कौ कुन कछु त्रव
रसो सब ॥ कौतू हल वन कौ गयो गालव वच धीरसब ॥ कौतू
हल न प वन कौ गयो ॥ चंद्रहास प्रायी वापति भयो ॥ सु सुर गौ
त्र परोहित जेऊ ॥ भगत बुलाइ लीये सभ तेऊ ॥ तिन कौ दी
यो भगत वउ दाना ॥ हेगे रथ कंचन विध नाना ॥ इक इक
द्विज कौ दीयो उमंगा ॥ इक गज इक तुरंग एक तुरंगा ॥ सो
सा भार कंचन को दीनो ॥ स्वस्ति बोल इक इक पद लीनो ॥
वंदी जन जाचक बहु राए ॥ सभन दान मन बांछित पाए ॥
११ ॥ दो ॥ चंपक मालिनि सपु कहे सुवचन भगति प्रगटाइ ॥ ऐक
बार हम जाउ गाज हाँ हरिपद बुद्धि राइ ॥ १२ ॥ चौ ॥ जब हम कुंतल पु
र कौ [illegible] ॥ [illegible] पा ॥ वेद वचन हम कौ वर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri Vedic Bharat Inititative

बन्ना ॥ पितु आसम कराए एक समाना ॥ ऐकुं निशा तहां बस्या भगतनु
४१४ रि ॥ प्रात भए ते उठि चले त्यां बिदा करि ॥ चंपक मालिन के धार जुदे ॥ च
ल्यां संग चलतु रंग चमले ॥ भगत तम पां ग जपर भसबारा ॥ बजत
अश्वमेध बजंत्र अनेक प्रकारा ॥ कंचन दंड छत्र सीस दुबि पात तु ॥ चवरदारि
र चवर ढुरावत ॥ १३ ॥ दो ॥ कैत हलरा जानेको ताक दुरा जसम
ज ॥ सकलं समग्री ले चल्या सा थ भगत मा हारा ज ॥ १४ ॥ चौ ॥ अ
भग ज रथ्य सु रेबल बीना ॥ बाजत दुंदुभ भेर निशाना ॥ बजंतर
होल सुरनाइ प्रकारा ॥ गान तबा जंब बध प्रकारा ॥ सक
ल पुरी केन कटगाए जब ॥ सुनि तब जंत्र धुनि दुए बुद्धि तब ॥ प्र
भुद्ति तरिद महाल बमान्या ॥ आगम मनसंघ को जान्या ॥ मया
ताइ गा व्याह मदनका ॥ नपति सुता चंपक मालिन के ॥ म यासे
इगो शत्रुह मारा ॥ पर सन गया मां बिक द्वारा ॥ १५ ॥ दो ॥ इ एव
द्वार हजान जी पु मन मोहिम पा अनंद ॥ दहिकन यह जानत
न हा अबरठ डीनंदनंद ॥ १६ ॥ चौ ॥ भयाकुलाहलनगरहि
कहै जब ॥ मंत्री सां यह बचन कहे तब ॥ सभ मो बीरु ल्या बज तुम
जाई ॥ सकल बतात कहा समुझाई ॥ मंत्री गया बेगपिहर आया

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

डुष्टबुद्धि को भाव सुनायो ॥ यह तो है नृप तोहि जमाता ॥ चंद्रहा
स भेद वर्तेव ख्याता ॥ कुंन्यादानी कौन तू हल्लनप ॥ राजुतिलक दे ।
को यो नराधिप ॥ आयो सोई बंझेत्र बजावत ॥ दुष्टबुद्धि परतीन
आवत ॥१७॥ दो॥ मंत्री पुर के धतिम यो दुष्टबुद्धि राजान ॥ चंद्रहा
स गयो काल कौ देवी के आस्थान ॥१८॥ चौ॥ मदन सै एकांत लो
पुर माहौ ॥ द्विवस चार कुाग पातु हाहौ ॥ मंत्री सौं वचच कहि नृप
जो लौ ॥ प्रावति मयो भगति पुर तौ लौ ॥ उतक्यो आइ नृपति द्वारे
पहि ॥ पर्यो समसरे के व ऐसो सम धरि ॥ चंद्रहास न ह लख्यो दुष्ट
मति ॥ जान्यो मदन भयो मन हरषत ॥ कहर गयि तप गते सो सउ
ठायो ॥ तेर बोध्य गति महा दुष बपायो ॥ दुष्ट भेग तमोव चउ चोरे
नुमतो गयो आवि काहू द्वारे ॥१९॥ दो॥ चंद्रहास नुमतो गयो भवने
मे विकाता त ॥ फिर आयो तात तत्काल नुमसे व करी नहीं मात ॥२०॥ चं
द्रहासो वाच ॥ चौ॥ सुन ऊससर जवहीं ठ मउगायो ॥ मग महि द
रस्यु मदन को भयो ॥ मदन ने सघ व ऊर्ध्व ने करी मउ ॥ देवी द्वार न
जान दे ऊनुठ ॥ कौन तु हल्लनप मुऊहि पठायो ॥ कपवऊ सपले
न तुहि आयो ॥ हमकि है हर गाउ स्थाना ॥ प जा मात्त कर रों विध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४५५

भ्रमरगीत।

नामा॥ मदन मंत्र कौ हार गयौ चलि॥ हमकौ प्रेम पुरी कौ त
हलि॥ चंद्रहासकौ निषि वदन अनूप॥ तन मन जरि विरग यौ नरे
श भूप॥ २१॥ दो॥ सुनत वृतांत तहँ तातत कौ विस्मय भयौ अनूप अति॥ ताहां
दशा छंद गोला॥ सो विधा ईस भ्रमन भूपाला॥ तुम से रामेस रूप मय स
हो हम॥ अनेक रवि इंगट्ट कौ कीने दर्शन॥ जैसे भूपन के है फिर नहि अनूप वाति
वर॥ हो हु कीया प्यारी साके भगति हरि॥ नृपवर पछतायौ पापरगटा
जब॥ महि सों तन हेरि रव रहे साधर ननि तव॥ पागउ तार घुवान पर गा
रा॥ करतौ विलाप महा भेकारी॥ वीटत मुख वसुर मेल तद्धारा
मदन लोम अनेक करत पुकारा॥ २३॥ दो॥ कूप पवन तत सो पावत ति
भव रों नें सन्ताप॥ इको सो नंदलाल को उलटि परत है सोव
२४॥ चौ॥ तौ तवर हव लव विहूल भयो॥ प्यान मंत्र विकाके मगनाय
ऊ॥ चोम ताको पामर बकारा॥ मगम सों हु रावत कर त पुकारा॥ व
पुहमतौ नम सम कहुं कहे सा॥ चलौ मंत्री कौ भवनन रेसा॥ रूप
मे यानन कुजात न चौ नौ॥ नवानि हरि रस्पी मवैर नति तन कौ नौ॥ कैरत
पुकार गयौ चलि तहा॥ प्रेत इस्थलौ पापी वन जहा॥ भूत प्रत देव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नति: ताहे ॥ केउ निरख गेह तजि भागे ॥ २५ ॥ जैमिनि उवाच: ॥ के
जैमिनि कहे सुनु नृप पति भै ते ठरे बलदेव ॥ भै तजि ते सभ जग गु
रु रे तिन ते दुःख एव सेव ॥ २६ ॥ दो ॥ भै तपे तजा के नव न माहि ॥ म
रम दुःख केउ ठरे तत होहि ॥ ऐक प्रेत बोल्यो प्रेत: माहि ॥ हम ते वऊ तो
[illegible] हनाहि ॥ कहत अपो जो पाप प्रीत मन न ॥ हम सब रधारे मान सते
तन ॥ २७ ॥ दो ॥ प्रेत जन न हम मरी मइ हम सब पापी नाहि ॥ इह पापी नर
देहि धरे विचरे तहि जग माहि ॥ २८ ॥ चौ ॥ सुनि बोल्यो ताके निरख प्रेत
प्रेत ॥ इह हते सगुन तहि तुम रगति ॥ मानस देह तर्क पूछ्यो तुम सरन को
मातम अपराध सम पातन जिको ॥ इस पापी ते प्रेत भले हैं ॥ इन हम भ
गत दुःख पाइ छुटे हैं ॥ याकी जन्म प्रपंच तदु एव मति ॥ कर हम न सब वेसा
ध पाव इति ॥ व्रत इकादशी कव हम न राख्या ॥ कृष्ण नाम सम सब तेन हे
भाष्या ॥ सदा वैर वैष्णव सो राख्या ॥ भजे न कव हम नाम न नाम प्या
२८ ॥ दो ॥ वपु मगत ते सो हो हम रहे चर वल छल की पर धन के ॥ इन प
पामती मदन बल की पान रिदे धिक ॥ ३० ॥ दो ॥ पुन इकाम ते कही
मब नाता ॥ सुन उप्रेत तिन सम हम मरे भीता ॥ चाय पाप की एतु म भीरी
ताते प्रेत जन न वपु धारी ॥ गुरु तत त्यों अहता तन घाई ॥ सुरापान
कर हे मम चुराई ॥ ता ते मघ तम को पता घाई ॥ ताते प्रेत जन्म जव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४१६

अश्वमेध

पधारी ॥ अन पापी अघ की ये अनेका ॥ कब हूं मन मति की ये
बवेका ॥ अबर पे तबो लै पातः अवसर ॥ सत्य कहत ते है हत म
ते यह तवर ॥ ३१ ॥ दो ॥ इन पापी के दरस ते हत्या चढै अपार ॥
भी गगए स्रम जे हत तजमन मति की या विचार ॥ ३२ ॥ चौ ॥ भूत
पत समज हत तजे भोगे ॥ इह पापी के भुवन न हो लोगे ॥ ऊंचौ भ
जा प्रकार तगयो ॥ द्वार संत विका पापात भयो ॥ नारद कहे कृपा
सुन अवरजन ॥ है सवधान प्रीति करइ कमन ॥ देख्यो जाइ म
दनत तकाला ॥ न्यरबत तगि स्यां धरनि भय पाला ॥ अपनाम ब
धरिनापर मारत ॥ रुदन करे तसु रखि सब रप्रकारत ॥ सुतका
मस्तक कूटे अपुने कर ॥ छाती सा पत लगावति हत तुधर ॥ ३३ ॥ दो
॥ मदन सिंघ का रुधरु लै नपति लगावति गात ॥ बहु अवस्था
कुसमै दीपो मातहि दुखतात ॥ ३४ ॥ चौ ॥ मदन सिंघ मदि दो पुनके
ई ॥ सकल ते अब जो जन ते होई ॥ चंद्रहास शेवक भगवौना ॥ भैन
सौं वैर मोहि जीय जौना ॥ मोहि दीयो प्याक छ भगत तहि ॥ कोया
हमारा वर्स्यौ मदन पर ॥ यह देवे पागन भगत सुरारा ॥ मसूजकी
ने अपराध अपोरा ॥ मोहि पर देव च भगत सौं कीनो ॥ प्राप मे हाथ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चंडालतनदीनौ ॥ लेवनगएकरनसंघारा ॥ तहांभगतकेकु
ष्मउवारा ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ वकरेभगतनकुं लेदरगहजगयोजतांमैको
ल ॥ पुनमउजुपठेयोमदनपठित रनविषुदैततकाल ॥ ३६ ॥ चौ
तहांविषुतै पठियापाभई ॥ अकअवरविधनालिवगई ॥ त
ताभगतुविषियापतिभयो ॥ मदनसिंघकारजुकरिदयो ॥
पुनमउजमहहरिदेनविचारयौ ॥ नामकहुनकामतुजीवधा
रयौ ॥ देवीद्वारपठैचंडाला ॥ नामकरनकोभगतगुपाला
पाछेमोहिभगतुपाठदीनो ॥ वधनाउलटिमदनहितकी
नो ॥ जैसाकरैसुपावैतैसा ॥ अवरपततनाहिमउजैसा ॥
३७ ॥ दो ॥ दोहाहकीयातिरभगतकोमुहिपापीजीयजान ॥ तामे
रसकरिमदनकोहतकीनाभगवान ॥ ३८ ॥ चौ ॥ लेप्रभाव
जसवचहोसको ॥ छिमाकरावौकुसदासौ ॥ विसभग
तकेचनसौसुधपर ॥ दोषछिमावौवजतवनेकपर ॥ फोरदेज
रुपदरदतुरंगा ॥ दीयेजुमदनसुतामुजसंगा ॥ जाकेहितम
जवैरेपरसेहरि ॥ ताकोसाकेरताचाइपर ॥ वांध्योमोहिभग
तकोतांता ॥ ताकोतनजहोइकुशलाताता ॥ दीजैफेरगाउसभवा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४७)

अस्वमेध

के॥ मोहि बसो टली पै जे ऊता के॥ ३८॥ दो॥ गा ऊबसोटली ए
जे ऊदी जोहि केर कुलिंद॥ धमा करा वज पाइ परे ता तभगत
गोविंद॥ ४०॥ चौ॥ हर्ष सोग नही चंद्रहास को॥ विस्न भगत
मात म प्रकास को॥ कृस्नचंद को विसे की नो जिन॥ भगत जो
मा वे मदन ए क छिन॥ श्री प्रभ गत पा हिद्र त पठाया॥ लेब
पती पाव तो तसमझा यो॥ दृष्टि बुद्धि बलये हत की नो जब॥ दस
दक ऐक कौ ठकी नेसब॥ लेउ रदे वी वध माना॥ रोवत दुख प
दुख मा ना॥ करत वला पु ऊ च स्त्र टेरी ती॥ कत स ते हम
सेजो रन हरत॥ ४१॥ दो॥ सो वकरे न कांस्र व कातु म मो ए
महि ठोर॥ छत्रधर मे रण कै समा उठ जै ऊदल जोर॥ ४२
॥ चौ॥ गाइ हमारी ली पे जात मारि॥ तिन रख्या उठ कर जस
रवर॥ मोज न हे तत तुमारी माता॥ तु ऊहि बुलाव त उठ चलु त
ता॥ जुवती वा ग वी चले जो वज॥ हांस वे बला सकर ज सुबका
वज॥ वृत मखेड़ को भूत तुमारे॥ ऊठि बलि ता हि बुलाव त धा
र॥ वज न वर स्रो ए भइ ताको॥ ऊठ दी जे दे सैने सत मोको॥ स
त को के ठल गाव त पुन पुन॥ लोग न नेग र कै जाए सकल सेन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४३ ॥ दो० ॥ सुनि कै धाए लोग सब हाहाकार करंत ॥ मात पिता बिलाप
करत बोली नाथ कर तहां कंत ॥ ४४ ॥ चौ० ॥ पीव या कै उलगावत
भी ता ॥ रोवै बङत करै बिलपाता ॥ दृष्टि बुद्धि मन नम्र यो चेता
कवि मूर्छित तव बेता ता सचेता ॥ सकल नगर के लोग नारि न
र ॥ रुदन करत आए तिः अवसर ॥ मदन सिंघ को देखन लोग
हा हा करत सुख सम त्यागे ॥ मात इस्त्री बहु ए। मदन की मूर्छित
परी सै भार न तन की ॥ नव नव दीर ए। वदन की ये जन ॥ गरेता
वसि गार स कल तिन ॥ ४५ ॥ दो० ॥ व पुर रर देकु च समन के रुध
र र र खोल पटाइ ॥ मूर्छित देधरि नीठि रोहत बार बार दुख पाइ ॥
४६ ॥ चौ० ॥ पुन पुन कंठ मदन के लागहि ॥ रोवत कव हूं रोस तन
सागहि ॥ रुधर कीच लस्यौ गत लगावहि ॥ हो इस चेतव हरि मूर
छावहि ॥ विष या कै हे कहां गयो भी ता ॥ तु मन तिस हर जगत विख्या
ता ॥ कोतु म गतसौ को प्याहत मारा ॥ होर कै [illegible] ति ब उते: वारा ॥ १
तस्या वै को उक भ मगतको ॥ दै हउठाइ जो जाइ मदन को ॥ ४७
दो० ॥ मदन सिंघ मन व चकुर मह तु भगत कै दोस ॥ दृष्टि पता के
पाप कर मात भैया व नासै ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ कहि वगो स्या मदन भगत
को ॥ त्याग को पाव लाय तो पतत को ॥ पदे चंद्र उमस को के ना सा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तेकृष्ण मदनहनुकी नो ॥ वहतोरा इमि तदपि तात त्योजिन ॥ पहसुनी
तपुन नासु अंसकौ दिन ॥ हमरा पनु तन मे शोवकु हुए ॥ सो जीवावै
मदनकु पोकार ॥ देवी देव सुधी न भरात को ॥ सदा सहाय कतात
जगतको ॥ ४९ ॥ दो ॥ जलु भोजन लेवे न कछु जेव लगायो सुतन
भ्रात ॥ विधि पाली नो नेम पदहथ रनि गीरी मे रक्षौत ॥ पं ॥ चौ ॥ अ
तिदुख मदन सिंघ की नाश ॥ रोवत यी टृप्ति करु तेपुकारा ॥ दोनेउ
पुत्र त्याई ते संगा ॥ लपटाए लै मदन सिंघ संगा ॥ लेपनकुधर
कीयो अपने तन ॥ करत विलाप संताप विकल मन ॥ कहागार
एहोतु मसहमरे पति ॥ तुमविन हमराकवन है जगत पर ॥ मर
तोविन जुवती किं कौ मी ॥ विधवाध मि कठन जेग बामा ॥ तोप्तिसा
पतनु अगनि जरावौ ॥ कैतके तुम पाकै दुष पावौ ॥ ५१ ॥ दो ॥
शपुनसुत देकसाको जो कर स्वपति पाले ॥ तुम पाके हम मनोर
होंसुत जरोंत तत्काल ॥ ५२ ॥ चौ ॥ पहुव वचको हितिय पाव समय मर
सुतन सहित तसपिधित है गइ ॥ रोवत दुखति मदनकी माता ॥ पाट
तवदन करत विलपाता ॥ दुःख वृषकै कै करतेधकारा ॥ तुमतोमहा
पतिंत हत्यारा ॥ कृष्ण भगात सोवै रचाया ॥ ताते हरि हमरासुत
घोषा ॥ रैपति महेड सुधम सासानी ॥ भगतनकी मातिमानहो जो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ना ॥ संतन कों रघुनंदलाला ॥ संकट हरन तुरत तत्काला ॥ ५
३ ॥ दो० ॥ रघुपति पतित उद्धारन माको धाम गात सौं द्वै हु ॥ जैसो तुम कौ
मो अज अघ पापति भ धान तौ हि ॥ ५४ ॥ चौ० ॥ अपुना दुःष स्वी पति
न विचारति भगतन के दोष वितु न मारति ॥ भ० मनोमत दीनों द
ष साधन ॥ रुद्र विद्वंक की पोन हीरा जन ॥ प्रथम भगत करद्दो
पाचें डोलन ॥ द पाव रंतन न तजिम्म ऐवन ॥ तातें तुम तेम नेत्र
गला ॥ तिन तजि दी धाम गनु नंदलाल लाप ॥ पुन हद भगत भयो
पाप वाचति ॥ तब तुम की धान विचार दूछ मति ॥ पुनि पुत्री शिव
भगत पठायो ॥ गरल दैन को मतु ठाहिरायो ॥ ५५ ॥ दो० ॥ विष
हु ते विषयामई करु ताकरी गपाल ॥ तो पुन तुम समम ज्योन
होइ दुछ बुद्धि भ० पाल ॥ ५६ ॥ चौ० ॥ व जरी तुम यह मनु ठहरायो
हो रध्रावकी भगत पठायो ॥ प्रथम भआपठे चे गला ॥ आवै भगत हे
नज तत तत्काला ॥ उलटि हनुम यावनु तुमारा ॥ श्रीपति भगतन
कौ रषवारा ॥ ध गृह समरा जीवन बन्धुता ता ॥ ठत संग गअग्र जरा
वांजाता ॥ यम अरु व तातें मरा हद गी सौ व्याहि ॥ हे या सकल तुमा
रे मा पाहि ॥ राजें नाम तकों नेतु मपापा ॥ राजगया पावन में मा संता
भगतन तरा हि ते हम सकल मंद नस घके साप्प ॥
पा ॥ ५७

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५१८

अस्वमेध

६३ रा

वैरु की पातु मभगत सों राजुन आयो सा प ॥ ५८ ॥ चौ ॥ चंद्रहास
के पाइ परे जस सव ॥ दूषन की यहदि माइ ले जसव ॥ मदन न जीया
वे भगत मभले लीपति ॥ नहीं ते चु ता वे नाइ हत मुज रति ॥ जहे व चको
हत मर्छित हे गई ॥ धरम निगरी विकुल हो पड़ी ॥ कवि मर्छित कोव
तन सुधि पावति ॥ विषय जननी तौ पदुष पावति ॥ ठाढे रोदन क
रति सभ लोगा ॥ नरि नरन के मन नमति सोगा ॥ मूर्छित कुटी उठा
राजा पुन ॥ टेर रहो रे लोक प्रावन सुने ॥ ५९ ॥ दो ॥ जतनन सों
प्रापति भयो मुरझ गहिए के तात ॥ जो सुत हो स्न कुल नो विषे वसु ।
सकारण जात ॥ ६० ॥ चौ ॥ नर्क जन न मातपितर सम पारा ॥ सुत तै
हतिन करे उधारा ॥ कोऊ पुन ऐसा कोई करई ॥ जप्रसाद सग
राकुल तरई ॥ गया जाइ पुन पिंड भरावे ॥ कुल रकी सप्रभ गति
पठवावे ॥ सुत बिनु लागत भव नेम साना ॥ जः ग्रह सुतक रु
ता भगवाना ॥ सुत बिनु शोभन पावत राजा ॥ फीकी लागत सेन
सभाजा ॥ हे गरप कंचन भूमि साजा ॥ सुत बिनु सब संपति कः
काजा ॥ ६१ ॥ दो ॥ शत्रु हमारे सबल सुत सुन पावत पहवात
लव छिरा जु छिनाइ सब मम मोवली सुनतात ॥ ६२ ॥ चौ ॥ हयपज्ञ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लोगकहाहैगयो ॥ हमसरापापुबढ़ैहैगयो ॥ कहुभगतसो
बैरघरचायो ॥ पुनमारइनकोमतुठहरायो ॥ रथकैजाकोकह्यो
चढ़ानित ॥ ताकोदुष्टमारहितकौनोचित ॥ जानबूझशस्त्रलेहाथ
कोयोविदारणत्रासुनोमोया ॥ लेआयोवो हरिभगतेइहाआव
लोगोन्चरननाहिमाउटोषसव ॥ चंद्रहासतपहरवनसोगा ॥
करुणाकरहितमिटाहृतसेभसोगा ॥ ६३ ॥ दो ॥ ऐसेवचनकहितन
पतिभगतदरसदीयोआइ ॥ चंद्रहासकोदेषबनपचरनपरसो
लपटाइ ॥ ६४ ॥ चौ ॥ नपपुनहरिभगतहिचरनपर ॥ वारवार
लागतधनतौकार ॥ हमरेदषनसकलनिवारिऊ ॥ तुमहरिशं
वकधिरदुसेमारिऊ ॥ विधिपाहदेचितआतिभारी ॥ भोतविभागपं
तातुरभोरी ॥ दुषबुडवनतौवज्रकरई ॥ पुनपुनभगतचरननेमे
ऋधरई ॥ मदननेपसिंघकीत्रीयासुतसोपी ॥ भगतचरनपरधारतमे
पा ॥ चौ ॥ रावलेनगरकेजेआ ॥ भगतपाइलागेसमतेआ ॥ ६५ ॥ दो
॥ दुमोकराजहरिकेभगततुममननहपिनुसोग ॥ दुषसबतुमरे
समसकलनाहिकछुहदेवियोग ॥ ६६ ॥ चौ ॥ विधिपावचनकेकेहे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सनक्रुपति॥ भ्रातादानदेक्ष्मनहरषत॥ जौनकरजभ्रातास
वधाना॥ तौहमदूषितत जौजीप्राना॥ इछ्वबुद्ध पुनपसोचर
नवद्वि॥ हमाकरैजहतमदोषभगत हपि॥ ससुरपि तादोऊ
एकसमाना॥ कौजैकृपाभगतभगवाना॥ अपुनाकर्मसापह
मपापो॥ कृष्णभगतसंग्रोहरिचापो॥ मदनपेषघकोदोजहि
प्राना॥ करुणाकरकीजैसविधाना॥ ६७॥ दो॥ करुणाकीजैहरि
भगततनुमवासिकी योगुपाल॥ प्रानडारिदी जैमदकृपाधारतत
काल॥ ६८॥ चौ॥ मदनपेषघमहदोषनकोई॥ सकलमवज्ञा।
मजतेहोई॥ सतहमराहरिभगतजीवावद्ध॥ करिस्राजोमज
मुकतिवताबद्ध॥ वारवारचरननससधरहो॥ इछ्वबुद्धिवन
तौअनुसरई॥ बद्धपप्रभुजनमजैकीनो॥ उनसदै मुनिराज
पर्वानो॥ इछ्वबुधसाशत्रुभगतको॥ सदाइछमनमेछपतत
को॥ कतिहरिशिवताकोठ्यतमारुयो॥ कृष्णैववकनहुदेववा
रुयो॥ ६९॥ दो॥ जोऊपशत्रुपकाभगतकासोकतितथ्याश्चराप॥ ह
मरेजीयससेवरेजैमनदेहनिवार॥ ७०॥ इति श्रीभारथपथ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ अश्वमेध विधान ॥ कवि रहि कनपूरन भयो अश्वमेध सो अध्या
पपूवान ॥ ७१ ॥ ५८ ॥ समस्त ॥ ४१८ ॥ जैमिनी वाच: ॥ कहि
जैमिन सुन जनमेजय महीपति ॥ नारद रिष भाषत पारथ प्रति ॥ प्रो
छ्यो पूत सूवत तनु मम गुरु जैसो ॥ सकल तत्व तातनु सुनावो तनु जैसो ॥ पौ
निर्दोष मदन हनि पाठ ए ॥ अपनै मन न भैय हृदि विचार करए ॥ दु
एहु इहि हरि भगत दुषा पो ॥ तातै हरि ताकौ नहीं घायो ॥ सौ प्र
पमेव लकरो वनोसो ॥ तो नहीं दैवेगा दुव ज्ञासा ॥ लागो श्री
सुमर गयो तातछिन ॥ तो दुब प्राप तिम यो न बल तन ॥ १ ॥ व
॥ कोपे कपट छल भगत सौ दु हुतु द्वैरा ज्ञान ॥ व फ दु वलय
कढु ए प हृ हरि हनि पाय हृ ज्ञान ॥ २ ॥ चौ ॥ प्रकब जे स्यध
रमे महि जो ई ॥ सत समान तः हितु तनकोई ॥ प्रान तजे दवहे
हे एको ॥ सुतपन सदुव होत मूनेको ॥ पतम ए कै लेहोत
नासा ॥ हे तजह स्यध रमकौ नासा ॥ सुनमव नै लागत
हे सुतपन ॥ सुतम नम पाइ दु बीत्व तान कादिन ॥ नरदवन
हृप मदन पं चासो ॥ पितु दु व लागे कुछव चासो ॥ भग

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४२१

स्वप्न मेध

जुज ४८

तप्रतापवडावनकेहित ॥ तातेगीरधरमदनकीयेहति ॥ ३ ॥ दो ॥ भगतोत्सुकीरतिकरनकोप्रसदइषदैनरात्रान ॥ मनमहेकोभगतुजिवावे ॥ तीनलोकमहिकीरतिपावे ॥ यहतजीयजानमदनहरिधायो ॥ इछबुद्धजीपरगतदुष पायो ॥ तुमप्रद्योपापप्रनमहीवति ॥ पहनैभतहरिसुनततप्रवनपारष्पहरषतमन ॥ दइछबुद्धवउप्रसंनभगतमनमाही ॥ हर्षसोगउपजतिजीयनादहीं ॥ ५ ॥ दो ॥ चंद्रहासहरिभगतकेनशादनहरदेसार नंद ॥ हर्षसोकव्यापैनकछुगुनगावतनंदनंद ॥ ६ ॥ मदनकीयोहति ॥ नारदकथाकरतिप्रतिसारजन ॥ ८ करतविलापा ॥ सुनतनारैनरवच्यो सैतापा ॥ सदा

चंद्रहासोपाख्यानः ॥ चौ ॥ चंद्रहासहसिवचनउचारे ॥ सु ८

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नउअबनहैसरूरहमारे ॥ हमरातुमरादोउनकोऊ ॥ लबात्ति
लाटहोतहैसोऊ ॥ पहुतजगमाहि शरीरधार्यापुनः ॥ दुखसुख
कर्मभुगावतिहैतिः ॥ पापहितहुतकैपुनःकोला ॥ सोनहिहृदरत
कहेभपाला ॥ सुखपापपत्तहोहैतिःअवसर ॥ सोईवनतुहैम
नवचक्रमकरि ॥ कछुकालमहिसुखनहोहै ॥ कोटउपा
इकरैजिनकोई ॥ ७ ॥ दो ॥ कछुसमैसुखहोतनाहिदुखनहोहि
इसुकाल ॥ जिनकेदुखसुखसमनहीतेनरमहाभूपाल
८ ॥ चौ ॥ चिंतारूदनेकैरैदुखलागे ॥ संपतसमैमुदितअनुरा
गे ॥ कोटकाभिनामनउपजावत ॥ दुखसुखसमैपोइचलिआ
वत ॥ होनहारहोतहैसोई ॥ जोरहोगरधरकोहोई ॥ तातेम
नमाहिसोगनकीजै ॥ जानदहोइहदेसुवलीजै ॥ दुखहुजस्या
गउमनसोगा ॥ कालेउपदहुवनतसंयोगा ॥ नोगहिनिज
करअरुनछत्रसब ॥ नशाहिनसकलभूमतमारगतब ॥ ९
॥ दो ॥ ताकेरथनभमाहिचलतकालपाइफलजाइ ॥ सोमिवा
इशशिराहुरथमारगतेचलिजाइ ॥ १० ॥ चौ ॥ करतेविरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४२२ धपरस्परस्सो ऊ ॥ चंद्रराहुर पश्चाटकोहुदो ऊ ॥ होतावे
श्रग्रमध धकालतेअवसर ॥ प्रात्रुदा ऊ मगभलतपरस्पर ॥ १
तातेभुयोउपद्रवभारी ॥ सकललोकजगहोतदुषारी ॥ व
नजवसारकरतसवदाना ॥ पजुहेमतपवेदविधाना ॥
तौलगसभजगहोतवेहाला ॥ जौलगहोतवेरोधीकाला
समैघतीतछुटकोहुरषतिन ॥ सभजगसुषपावतहेत
तछिन ॥ ११ दो ॥ सुसुषदुषसंसारमेकालपाइहुआइ
समैमदनकीपहुवनीचंतनिवारजराइ ॥ १२ ॥ चौ ॥ भग
तनपतिकोज्ञानदृढायो ॥ वारवारवजुवधसमजायो ॥ अ
तरभवनगयोहरिदासा ॥ जहापरततनमदनविनासा ॥
दसेदृकएकठकोएसभ ॥ ततछिनभीतरभवनमेंआए ॥
मेंगमंगसोजोरलीएसव ॥ विद्यमानमोधकाधसोतव
पुत्रविरहदुषदुषवडुषल ॥ मास्यासीसक्षलावएसन
वल ॥ ताहितासमैदुषमेंरगयो ॥ गएप्रानदुषजगमयो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१३ ॥ दो ॥ जस्यो स्नाग गध्रं वका हो तम पावज सोग ॥ हाहाका
र प्रकार ही जठे पुर के लोग ॥ १४ ॥ चौ ॥ उद्यम की ये भग
त भगवाना ॥ ठाढे देवी के विद्यमाना ॥ प्र जा पात्र के ये सबंध
ना ॥ मन मंहत की ये कुसम को ध्याना ॥ धूप दीप सेवा विध वत
कए ॥ ठाढे भये भगत इक पग पर ॥ लागे उस्तुत करन अ
पारा ॥ मात जान मुझ भगत तम्ह रारा ॥ म्ह सुलोगत मप ठा गु
पालन्हं ॥ आज्ञा करी ताहि नंद लालन्हं ॥ हम भगतन की रक्षा
कीजे ॥ संकट सोध दूर कर दीजे ॥ १५ ॥ दो ॥ आज्ञा कीनी कृपा
लु जर रनाकी जैसाध ॥ सभ भगतन सुषदी जो पेको जेदूर उपा
ध ॥ १६ ॥ चौ ॥ हर तुम माहि भेद कछु नाही ॥ इ एन को हन ती
छन माही ॥ जः पर को प्रकर त नंदलाला ॥ तः को तुम छंद तत
तकाला ॥ इछा सदित कर त सभ काजा ॥ आज्ञा करत जो इय
दुराजा ॥ तुम ते तीन भवन की रानी ॥ मन वांछत फल दे त भवा
नी ॥ सहस्त्र नाम मुष सहस्त्र तुमारा ॥ तुम सा व्यात रूप पद

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४२३

जुज ४६

र धारा॥ पांचचक्रअरुगदापद्मकर॥ चतुरभुजजीक
रतीयेशासूहर॥१७॥दो॥ श्रीपतिअपुनेरूपकाभे
सदीयाहरितोद्धि॥ निश्चैजानऊमातसुरुतिःहरिशे
वकमोद्धि॥१८॥चौ॥ तुमसोंकारजुपराहमारा॥ ताते
कीजेपरउपकारा॥ हरिसोंकहततसुकचजीपरहजं

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नु कवसु हरि सो नहि कहु आ ॥ तुम को कह्यो तुव यह काजा ॥ प्रभुता दई तुमहि यदुराजा
तुम हरि की माया वरदानी ॥ आप रही सभ जगत भवानी ॥ मदन जो वाइ दीजो थै मुज को ॥ सा
रथ्य यह हम राहै तुजु सों ॥ उसतुति करत रैन सभ गई ॥ ब्रह्म मुहूरत वेला भई ॥ १९ ॥ दो ॥ ठाकु
रो कै पाइ पर सकल रैन हरि दास ॥ मतहि विचारयो ह्रदै तव नव रवि की यो प्रकास ॥ २० ॥ चौ ॥ ह देवि
वारु का पोत वमाता ॥ यह हरि भगत जगत विख्याता ॥ ठाढ़ा सभ निशा ऐक पाइ परि ॥ तिः सुमर
नु करि वसि कीनो हरि ॥ चंद्रहास पऐ कृपा मुरारी ॥ निहकामी शेवक ब्रत धारी ॥ जो यह कहु क
छु सों कह हई ॥ मनवांछत पावै जो चहई ॥ तिन इतनो मुजु सों मम कीनो ॥ अ जहु लै मुजु वरु नही
दीनो ॥ सेवमात्र जो कहत विसुपुत ॥ मदन जो वाइ देत चित हर घत ॥ २१ ॥ दो ॥ निहकामी यह
हरि भगत माँगत पहि न मुरारि ॥ तत छिन देत जो मुझ हरि को दमदन इकवार ॥ २२ ॥ चौ ॥ हमरे दू
रि कए ई नकीनो ॥ रैन सकल मुज कौ श्रम दीनो ॥ हम [illegible] लोन ही वोली पासो ॥ कृष्ण भग
त आ ई त्य प्रकासो ॥ अव जो हम करि होन ही काजो ॥ भगत करा वै कहि यदुराजा ॥ तो मु
जु पर क्रोध छत्य घन सयामा ॥ कीयो न मो हित भगत को कामा ॥ तिः हरि के आयुध मुज हो था
दी पे कृपा करि महि जग नाथा ॥ शंख चक्र अरु गदा पदम कर ॥ अरु त्रिसूल दीने मा को हरि
२३ ॥ दो ॥ सो हरि भगत न वस सदा निरशांद न रहत अधीन ॥ भगत हित मन क्रोध करऐ ते वे
आयुध दीन ॥ २४ ॥ चौ ॥ तव वलु चलै न कछु हमारा ॥ दुरगा मन मे यह हि विचारा ॥ तैसे
यह देही जा पतु तानउ ॥ धनु हरि भगत नु सकल तदु ष मानउ ॥ मानि स जन्म हो न हीं पुन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ५२५ ॥
अश्वमेध

प्रन॥ तांतेभजीयेकुअनतपतिसुन॥ म्राहीऐकसकलभाजनकीहे॥ अनकभांततनविधसं
पतकीय॥ आउंआपुनेभागयपकहै॥ जीयतुंततजलयलअंमृजिकहै॥२५॥ दो॥ सभनामा
हीऐकहैघटुनहारपुनऐक॥ आपुनेआपुनेभागरविविधनाकीउंववेक॥२६॥ चौ॥ सुनउडुगख
धआपुरकीगति॥ दिनदिनघटतिजातनहीवाढति॥ जैसेराषीअंजुलभरजल॥ ठरगयोसकर
लनिरंचरहोकरि॥ वानुधनयतेहूटति जैसे॥ जावतवारनलागततैसे॥ तंहीघटतआरवल
नरकी॥ सुफलतेऊलागीनिवहरिकी॥ सावनकीशलितातुमजाप्रेम॥ प्रवलप्रवाहणरतद्रु
मतएतिम॥ जैसेजोवनवानप्रवलनर॥ पापकरतयौवनकेमदकरि॥२७॥ चंद्रहासपुनियौंक
होयवनकरोजुराज॥ नीतिरहतिकिलविषचडाहितेद्दिनपूरनकाज॥२८॥ चौ॥ दुष्टबुधक
कं॥ दुष्टबुधपुनिवचनउचारे॥ सुनहुअवनदेभगतमुरारे॥ हमयहराजसमर्प्यौतो
कों॥ अपुनीनीतिदंडावहुमोकों॥ जोतुमकहोसोऊहमकरऊं॥ तुमरीआज्ञामाथेधरऊं
मुहअपराधकीयेअतिभारी॥ छमाकीजेयभगतमुरारी॥ हमननहीजान्योमर्मतुमारा॥
तुमसाक्षातकृष्णअवतारा॥ योंभाषतहैवेदपुराना॥ पितासमसुरदेऊऐकसमाना॥२९॥
राजनमितवधिहततुभई कीयेकपटछलद्रोह॥ छमाकीजीयेहुएभगततलाजहमारीतोह॥
३०॥ सो॥ ततछिनमचीर्दिआलचंद्रहासनिरवैरुमन॥ कीजैमुजभूपाल तोतुमरीइछासस
र॥३१॥ चौ॥ कि देवीकीयोविचारमनकर॥ येहैभगतमुरारिमित्रकरि॥ देवीबाचः॥ हमरी
वजेशास्त्रतवहोया॥ काटतकिरोदानवकेमाथा॥ तातेकरोभगतकोकाजा॥ वेगतोघलवो
यदराजा॥ देवीव्रह्ममुहूरतकालौं॥ दरसुनदीयोभगततेगोपालहि॥ वस्त्रकुसुमभन्त्रमूलहि
यवंदि॥ शंषचक्रलीयेगदापदमकरि॥ चंद्रहासवडकीयोप्रणामा॥ हरषतहोयेभगततिहकामा

॥५२८॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मा ॥ ५२ ॥ दो ॥ वक्र प्रसंन देवी भई देष भगत की क्रांत ॥ चंद्रहास निज हरि भगत महा तेज रवि अं
त ॥ ५३ ॥ देवी उवाच ॥ चौ ॥ देवी कहै भगत सुन श्रवनन ॥ कति तुम श्रमु दीनो अपुने तन ॥ तुम
श्रम की उ दुष्ट सुत के हित ॥ दुष्टबुध षल पत तिन एमति ॥ अजहूं है देरी गीतिः माष्या ॥ देवी जो
योगिन के हाथ्या ॥ पापी के तन कर रहित प्रहारा ॥ देष रावो गीक ए अपारा ॥ हरि भगतन सो वैर
की यो जिन ॥ मनवच क्रम नि श्चै मारो तिन ॥ कीयो कपटु छलु कुभ्रम भगत सो ॥ शीघ्र करो गोना
सु पत तको ॥ ५४ ॥ चंद्रहासोवाच ॥ दो ॥ सुन माता मन भाऊ फल जे सो जाके जीइ ॥ ते सो प्राप्त
हो इतिः जो पर वां छत जीइ ॥ ५५ ॥ चौ ॥ वां छा सम का भला अंबिका ॥ आदि शकति तुम नाम चंडिका
॥ चंद्रहास के वचन श्रवन सुनि ॥ देवी भई प्रसंन भगत पर ॥ निज कामी निर वैर भगत हरि ॥ भ
ई संतुष्ट मात धन धन कहि ॥ उद्यम की उ भगवती तत छिन ॥ प्रथम भगत का तोष की यो मन
दसा दृक ए कठे की ये तव ॥ अंग अंग सो जोर ली ये सब ॥ जल छी टे ले मुष पर सा रे ॥ प्रान
परे तन नैन उघारे ॥ ५६ ॥ दो ॥ मदन उ ठ्यो सुर जीत है तत छिन राजकुमार ॥ भगत प्रताप व
ये तहा लोक करत जै कार ॥ ५७ ॥ चौ ॥ कृपा धाम एक काल का भवानी ॥ चंद्रहास की हृदै धाए मानी
वक्र रजी वा या दुष्ट बुध को ॥ भगत हेत अति भ्रात सुध को ॥ मदन उठंत ही की प्रणामा ॥ चंद्र
हास सेवक भगवाना ॥ नमस्कार दुरगा को की नो ॥ पुन प्रणाम मात पित दी नो ॥ वे विया कंठ
लगा यो भ्राता ॥ नाहि मदन की मन कुसलाता ॥ लोग सकल आनंदित भई ॥ करत भगत जस सु
दुष्ट मिट गाऐ ॥ ५८ ॥ दे वो वाच ॥ सो ॥ सुन सुत भगत गोपाल ॥ दीनो है तुम राज सभ ॥ आज्ञा आ
नंदलाल ॥ दुष्ट बुध षल हत करो ॥ ५९ ॥ दुष्टबुधो वाच ॥ दुष्ट बुध षल वचन के हेतव ॥ सुन

दृ २ चौप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ॥
४२५ मातहि मरा जुत त्यो आव ॥ कुहि भगत का संग भयो भुज ॥ मात कृपा करु सब सकहौ तु

अश्वमेध
ज ॥ अपूनाकिर्तकी चोम्रग पाऊं ॥ विष्नु भगत सो वैरु मचाऊं ॥ तो बीन्न्रपति तुगतकी मा

ता ॥ चले विदा करे प्रभुदत गाता ॥ हरषु वश्नी जो पअति कुसला ता ॥ न्रपति मदन हरि भगत

विष्याता ॥ रथ अरुढ है पुर महि आऐ ॥ नर नारी प्रभु मंगल गाऐ ॥ वाजत है पंच तत्व अव

रा ॥ पुर महि भयो भगत जैकारा ॥ ५० ॥ दो ॥ चर न परे या हरि भगत के रानी सहित भूपाल ॥ ह

म प्रताप जान्यो नही तुम सरूप नंदलाल ॥ ५१ ॥ चौ ॥ हम सभ राजस मर्थ्याती जको ॥ कर

ऊ सनाथ कृपा करि मुजको ॥ तुम भूपत हम दास तुमारे ॥ तम दर सन अघ घटे हमारे ॥ ज

द्रहा सपुन वंचन उचारो ॥ कहा करें गा रातत तुमारो ॥ विष्व पारस तुजि भयो मुरारी ॥ प्रि:

प्रभ रक्षा करी हमारी ॥ जो तुम चलऊ वेद मग चाला ॥ हम है वैतु मरा भूपाला ॥ प्र

दो ॥ हम नही वांछु राजु तुम भोग ऊस हत आनंद ॥ हम को सेर अनाज सों चोचा फुल

द नंद ॥ ५२ ॥ चौ ॥ राजु नरक को मूल नरेसा ॥ सत्य जान जीय आनो उपदेसा ॥ यह देही

माटी को भाजनु ॥ कृटत वार न लागै राजन ॥ दुए बुध आ ज्ञा कीनी तव ॥ जेतक पुरमहि

पुरष नार नर ॥ मिलि आऐ सभ द्वार भगत हरि ॥ वनती करी हाथ जोर करि ॥ ग्राम नके

परधान वुलाऐ ॥ लोग वरग एके सभ आऐ ॥ प्रजा सम मस्तो एकठे भये ॥ सभ मिल चंद्र ह

स पधि राए ॥ की उ प्रणाम भगत गरधारी ॥ तुम भूपति हम प्रजा तुमारी ॥ वो ल्यो भगत सुन

ऊ सभ लोगा ॥ धनसहि गे तुम रेस भ भोगा ॥ ५४ ॥ दो ॥ सेवा हरि माधो धरऊ सफल प्रजान

रनाई ॥ धार ऊ वर्न इकादसी सम रुऊ सदा मुराऐ ॥ ५५ ॥ चौ ॥ कौ तै सदा पुनन अरु दाना ॥ से

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धर्मादिक तीरथइ सनाना ॥ देव करम पितृ करम विधाना ॥ गायत्री आदि षट कर्म प्रमा
ना ॥ चारु वेद कहि हरि का नित पीजै ॥ पुनि जो ब्राह्मण की कीजै ॥ जो तुम करउ सकल इह
काजा ॥ तौ हम हैं है तुम से राजा ॥ पावउ गे सुष विविध प्रकारा ॥ सुनत ली जै दुष्यंत हमारा
॥ सैतन शालिग्राम मगउ दीनो ॥ सो हम मुदित ते सीस धरि लीनो ॥ ५६ ॥ दो ॥ सालग्राम मगु संक पाकर
गुर नदी पास विमान ॥ तिः प्रसाद मगउ दीया सव सिमरनु करि भगवान ॥ ५७ ॥ चौ ॥ जा हा तुहा मगुर
संकट परी ॥ ततछिन पद मा पति सम हरी ॥ हम कौ न पकर दीयो चंडालन ॥ ना सु करन हित
लेआ ऐवन ॥ रछा कीनी तहा मुरारी ॥ दीनो राज विपति सभ टारी ॥ बहुरि दुए वुध पुष्य वीपति
॥ विषदी जै कहि पठ्यो मदन प्रति ॥ तहा करी रछा यदुराई ॥ वे हते विषिआ हम पाई ॥ बहुरि अंव
का द्वार पठाउ ॥ ना सु करन हित मंत्र दिडाउ ॥ ५८ ॥ दो ॥ तहं हम रीं [illegible] करी भगत वछल नंद
ल लाल ॥ पुत्री दई विवाह मगुउ कंत हम पाल ॥ ५९ ॥ चौ ॥ देवी द्वार मदन भयो नासा ॥ पतद षन तिः र
भयो विनासा ॥ सालग्राम मगुउ पम सकति वडा पो ॥ सेवा करी परम पद पाउ ॥ ता ते सालग्राम तुम
से वउ ॥ पुनि जान अति तद जन ते लेवहु ॥ नित प्रति चरनोदक हित लीनको ॥ दंड न करि साकत यमु ति
तु को ॥ हरि चंदन [illegible] जो तिन अंगा ॥ चिहन चक्र तन की एउ अंगा ॥ तेउ मके सिर ताल विता वहि ॥ हो
है मुकति परम पद पावहि ॥ ६० ॥ दो ॥ व्रत ईकादशी का धारै भी रहि को टअपराध ॥ ता ते या को छड
गहे भिटत सकल अघ व्याध ॥ ६१ ॥ भो [illegible] पाक रसोई सिध जव ॥ पुष्प मति अरपउ सालग्राम सव ॥
वे न अरपे ते ऊ ले त आहारा ॥ सोउ पाक क्रम विविध प्रकारा ॥ वे न अरपे पहरिती पर तोई ॥ चरम स
मान हात है सोई ॥ जल अरपे विनु मद सम जानो ॥ वेद वचन यह सत्य प्रमानउ ॥ ता ते साधउ एकाद

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥५११॥
४२६
अश्वमे
ध

शिव्रत ॥ की जै सदा कृष्ण सों मन रीति ॥ या ते होइ सुमहा इस दास हरि ॥ कीरति होत तीन लोक वशि ॥ ६२ ॥ दो ॥
साधसंग की जै सदा हृदे कमल सों प्रीति ॥ चंद्रहास कहि सुन प्रजा विषयासुख विपरीत ॥ ६३ ॥ चौ ॥
विषयासुख सो भजन विनासा ॥ तां ते होत दंड यम त्रासा ॥ जन्म मरन पुन पुन दुख होई ॥ नर्क मह
ल विषै सुख लोई ॥ मनुज कहि ज्ञान वताऊं जैसे ॥ जौ तुम लोग करऊ सभ तैसे ॥ तौ तुम प्रजा हो
वऊ हमरा तो ॥ नातर मोहि राजु कहि काता ॥ प्रजा लोग वोले तिः अवसर ॥ हम सब तुमरे दास सम
गत हरि ॥ लागे चरन हीऐ धरि भाउ ॥ अश्वमेध कहि तिउ एग हठ मो ध्याउ ॥ ६६ ॥ इति श्री भारथ
परवाणे अश्वमेधव ख्यान ॥ कौ बटीत कनउ नाहठ मो प्रन ध्याउ प्रमान ॥ समस्त ॥ जैमिने
वाचः ॥ चौ ॥ जैमिन कहै सुन जनमेजय वीपति ॥ नारद यह वचन कहेउ तै प्रति ॥ प्रश्न कीयो रि
ष को पारिषतव ॥ सालग्राम की विधि भा वऊ सद ॥ तुम भाख्यो वसि भयो मुरारी ॥ सालग्रा
म सेवा हितकारी ॥ शिला महातम मोहि सुनावऊ ॥ हमरे हृदे संदेह मिटावऊ ॥ वऊ फल
सालग्राम की सेवा ॥ कैसे वसि होवहि हरिदेवा ॥ जैमिन कहै सुनऊ सवधाना ॥ अंव्रतक
पासुन जन पकाना ॥ ४ ॥ दो ॥ सालग्राम महिमा आगम कहि न सको सभ मोहि ॥ कहिना
रिदसुन पंडसुत अलप कहित हों तोहि ॥ २ ॥ चौ ॥ परन फल कहि सकत न कोई ॥ अलप
मा व्रतु जस सुनावो सोई ॥ पूजा सालग्राम की को फल ॥ सेवत देत भगत फल अवचल ॥ नित
प्रति शिला द्रुप ऐन अंगावै ॥ ताके हृदे कृष्ण ठहरावै ॥ जो जन करै कृष्ण को रागा ॥ तौ हरि फा
रै पीठ तिः लागा ॥ नैन निरख हरि पमै दुडराचे ॥ सो हरि भगत सुधा रस चाखै ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प्रेमते वरी बांधत्ति हैं हरि॥ अवरनि को अ जगपत्ति तिः समसर॥३॥ दो॥ संघली पेकर हार ईशा
लिग्राम पधरि नीर॥ शबद करै कर घंट ले ध्यान धरै वलवीर॥४॥ चौ॥ तिन के नास होत त्रिविकल
विघगन॥ जैसे अग्नि जरावति तृन बन॥ तिनके वा जहि प्रगटनि शाना॥ प्रापति हो तम कीरति
स्याना॥ घंटा शबद परै तिः श्रवनन॥ जन्म जनम के पाप मिटहि तन॥ सालग्राम चरचे ह
ले हाथा॥ पातक कोटि टरहिं तिः साथा॥ कुसुम वस्त्र जोई कोउ तात लित करि॥ टरति विकार
होत प्रीत मन हरि॥ सम जगत समरत्ति श्री गिरधारी॥ हरि समरत्ति जु सिला अधिकारी॥५॥ दो॥
तिलक उतीर एण भाल पर चक्र चिहन तन कीन॥ तिन यम का डरु कछु न तिनि शद्दन कछु
अधीन॥६॥ चौ॥ सो नर और न के अघ हरई॥ सालग्राम पद जल जो करई॥ तिन लोकन मे
वठत प्रतापा॥ सदा प्रसंन मिटत पम तापा॥ सालग्राम का चरनोदक मन्त॥ जो नर लेवत
मन तन करि हित॥ अघ सम हतिन के उर जाहीं॥ कृष्ण भगत वंछति मन माहीं॥ निरषत सा
लग्राम इस नाना॥ विधवत पद जा कर तघधाना॥ तिः फल लहु जो के वरन सुनावों॥ तुम रेएदे
संदेह मिटावों॥७॥ दो॥ कहि नारद सुन फल गुन सिला नाम हा तम जोहि॥ जो तु सपद कहा सुगम
ऊवर सुनावों तोहि॥८॥ चौ॥ दान करति जे ने मधार नर॥ इक गुन ते द सगुना फल तवर॥
तिः ते होत शत गुना फलतव॥ तिः सो नर परत पराग जव॥ पुन्य पराग ते द सगुन होई॥ गं
गा सागर संगम जोई॥ तिः ते द सगुन पुन्य हो तत्तिः परस्पाहित सो कुरुषेत तिः॥ जग मध्यित
सु कुरुषेत अपारा॥ दान फल तत हैं विवध प्रकारा॥९॥ दो॥ तिः ते होवत सौ गुन फल पावति
अभिराम॥ जिन पुरुषन के सो सपद सेवा सालग्राम॥१०॥ चौ॥ पुन्य देत्र तीरथ जग हजा के॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥४२२॥
ग्रा.स्रु.मे
५

शालिग्राम सेवाकृतः माधो॥ ते नर भौ ऊत्पत तजग माही॥ जमका डरु तिनको कछु नाही॥ जग्यतक
तारथ हेत दर सुत्तिन॥ शालग्राम का धयान धरै ऐसा तिन॥ ज्ञान पदारथ तिन ह्न पाऊ॥ भवस
रू तसे वामनु तोऊ॥ ग्रात मावे ताभुऐ तेऊनर॥ जीवति मुकृकृपा कीनी हई॥११॥ दो॥ ग्रा
पतरे सवकुल सहित ग्रवर उधार तलोग॥ विचऐत सदा ग्रनंद मह विन सगोऐ सव सोग॥
पर॥ चौ॥ शालिग्राम ताके उर राजत॥ विधवत संपुट षे षे राजत॥ जव चलतेऊ शेवकम
गमाही॥ ताको परसति पवनत हाही॥ पवन पवित्र हेत तिः ग्रवसर॥ लोग कल्हे तारथ
करतपरसकर॥ मारुत परसकीऊ ताके मज॥ कीये कृतारथ लोग जगत तजगा॥ तिन
पुरुषन वज्रपतत्ति उधारे॥ पवनकी घेमहा हत्यारे॥ शालेग्राम होते शेवक हुऐ॥ भचो
रुपावन हुवत शिला वर॥१३॥ दो॥ तिः मारत मारग चलत तपरसकी यो तिः गात॥ कीयेकृता
रथ लोग ते तेऊ ग्रधम ग्रघ व्यात॥१४॥ चौ॥ तेनर सालग्राम परसत भित॥ कोऊन वरनस
कति ताकी कृति॥ नारद कहै सुनऊ वचपारथ॥ शालग्राम परवत सम स्वारथ॥ जाकी उसु
तिग्रगम ग्रपारा॥ तुम सौ कहि ग्रलप विस्तारा॥ मुजसौ विधवति कहि पितामा॥ वरपनुताज
गसालग्रामा॥ शालगराम चरणोदक पद जे कहि॥ लेवै सोई प्रसाद माषे धरि॥ करमस
मर्प श्रीभगवाना॥ मुकति करै सेवा वधनाना॥१५॥ दो॥ सालग्राम के तोष सोत पुहो
त ब्रह्मंड॥ तीन लोक तत पतावही ग्रारुपांपविनवषंड॥१६॥ चौ॥ सोचत नीरमलद्रम जैसे
हरे हो साघा दल तैसे॥ सालग्राम तव भोगल जावंत॥ तवही तीन लोक त्रपतावत॥ नौ वैसा
लगरी मके ग्रा ऐगानु करै ग्यन मग्रनु रागे॥ पा केलागा फोरै कुष्ट तन॥ ताकी रनाक हैरे
प नै
॥५२॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नदिन॥ श्रापमुकति मै रोमुकतावै॥ सालगराम माथेजे उधारै॥ ते नर सालग्रामा सवधा
ना॥ गायत्री जपु जपै विधाना॥१७॥ दो॥ जैसे श्राशीक पास को दिन मधि लेत तराइ॥ भस्म हो
हि तिम अघ सकल सालग्राम गुन गाइ॥१८॥ चौ॥ जो नर सालग्राम सवधाना॥ तदपि
जापु करै सवधाना॥ ताको कुल सो तीन उधारति॥ श्रीपति वेग स्वरग पति हारति॥ यद्यपि
होत तिः पितर पापरति॥ इक वैष्णव कुल प्रगट करि गति॥ जो कुलनि हवै स्व प्रगट्या
सो कुल सकल मुकति ताने॥ जीवति ही तिः भई नरक गति॥ ध्रुग ली तो जग जन्म श्म एम
ति॥ सालग्राम पद जाधि तकी जै॥ पारथ श्रवन सु न अचितु दीजे॥१९॥ दो॥ अंतसमै की वे
र जो चरनोदक मुख लेत॥ ताको ततछिन रमापति मुक्ति पदारथ देत॥२०॥ चौ॥ यद्यपि
होत अध मग्न ज्ञानी॥ वेग उधार लेत दुख दीनी॥ अंतसमै कफ कंठ विरोधति॥ नहि
कर सकति पुन चर्नोदक॥ तव स्मिर कृत चनौदक तिः तन॥ न घिठरत जम किंकर त
नमन॥ इहा ठौर न ति हमरी श्रव॥ चरनोदक रको श्रव ततन सव॥ कृत कुटेव तिः ह
रिसमरावति॥ चरनोदक मुख पति तिलकु लगावति॥ चरनोदक हरिसिमरन जहा॥ श्राव
ततैन कुसगन नत हा॥२१॥ दो॥ चरनोदक हरिनाम हरि अंतसमै जे उ लेत॥ तिन वहि
श्रावत र्कुसगन जमकिंकर तजि देत॥२२॥ चौ॥ जमकिंकर वच कहत तपस्वर॥ वन्याय
हश्र जामलको श्रवसर॥ हमको इहा निरादरु मचो॥ कुसम नाम सुनि वलहि रगयो
पतत्ति पुरुष को गति पद पावै॥ श्रंतसमै जो उं न हरिसिमरावै॥ ईक चरनोदक श्रव
रनाम हरि॥ न [illegible] ठर॥ सिधकर तस्वारथ परमारथ॥ चरनोद
CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अ स्रम ध

चरनोदक संग नी द्रग न पारष्य ॥ याकी कृति कहि सकत न कोइ ॥ तऊ सो कहीं अलप मज
सोई ॥२३॥ दो॥ जो कोई पुरष कंध्या करै सालग्राम विद्यमान ॥ ति: अवन नव कृधनप
रै पावै पद नरवाण ॥२४॥ चौ॥ अरघ प्रसप्य छन रू तो ॥ प्रापति ताहि मुकति पद होई
हरि मंदर दरशन जाऊ तावै ॥ सो नरू चापदा रथ पावै ॥ नित हित सों चरनोदक लेई ॥
तिलक प्रसाद भाल पर देई ॥ अठसठ तीरथ को फल ताको ॥ मन्न मदान पुंन्य फल वाको ॥
सालग्राम चरन चत लगाइ कर ॥ मं सं प्रापति ते तितस्वरगा वश ॥ सो धसंग मै जात अघमन
र॥ उधरत सालग्राम दरसन कर ॥२५॥ दो॥ पतत पुरष के संग भिल परसत सालग्रा
म॥ हरिगण आवहि लेन तिन नहि जमगण को काम ॥२६॥ चौ॥ ति: ग्रह साग्राम की सेवा ॥
ति: घर सम तीरथ सव देवा ॥ अनत तुलसी द्रुम मंदर जाके ॥ पत्रनर चअघ विनसत ताके ॥
जो अनत तुलसी पावत नि हारे ॥ उधरे आप सकल कुल तारे ॥ मुंतर होइ त तुलसी की माही
मन वचक्रम महि विसत तन ही ॥ जो नर आवि लोके मुंतर नित ॥ ता को करे कुसमन तनाहि
ति॥ चरचै सालग्राम मंजरि करि ॥ तुलसी दल संप्रापति माउधरि ॥२७॥ दो॥ सालग्राम सुधरि २
डोल महि पुरष जलावै कोइ ॥ कोटप जा आ रुद्र न फल ताके सम नन हि कोइ ॥२८॥ चौ॥ तो
नर सालग्राम मनित सेवै ॥ मक्त होइ पुन जम न हि तलेवै ॥ अंनत सौ ति: सुहृपद पठवाना ॥ पठव
तऊ पुनोगगा भजवाना ॥ वै सव को नवास है जहा ॥ ठौर देत ताको हरि तहा ॥ कहि नारद पार
थसन लीजै ॥ मन वचक्रम मति अंजाप कीजै ॥ सालगराम हि माधव मुऊको ॥ कहा सुभाव
सनाई तुऊको ॥ कहि धिता महि विवध प्रकारा ॥ हि मतुम कहि अलपवि स्तारा ॥२८॥ दो॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पद्‌जाके फल बहु कहे ब्रह्म सम्रुज हि अपार ॥ अल्प कहे हम तो हित कों की यो न बहु विस्तार ॥ ३०॥
चौ॥ जो नर सालग्राम यस गावै ॥ सुनै पढे अरु नेह बढावै ॥ तिन को प्राप्ति होइ भगति हरि
कों ॥ टरत न मके पाप पद्‌जाहि तुरि ॥ सालग्राम कौ यस सुनि पारथ ॥ सिधमही तुम रे सम स्वार
थ ॥ जैमिनु भाषित जनमे जे प्रति ॥ सुत कृ कथा न्प वाचन सुधा वति ॥ बहु रो कहि हौ प्रथ
म प्रसंगा ॥ कुमित स हित हरषित अंग अंगा ॥ बरनन करो हा वेधध सिभाउ ॥ परन मठौ सा ठमे
ध्याउ ॥ ३१ ॥ दो ॥ इति श्री [illegible] सठमो ध्याय [illegible] कन प
रन जान ॥ २२ ॥ सम सम ॥ जैमिनो वाचः ॥ चौ ॥ जैमिनु जनमे जे प्रति कहि हि ॥ पारथ प्रति नार
द उचरई ॥ सत्य रस भा मध चंद्रहास तव ॥ ऐसे वचन कहे विवेक सव ॥ दुए बुधि उठि चरनन ला
गा ॥ प्रजा सहित सन न को मुभागा ॥ दीन वचन मुख न पति उचारे ॥ चंद्रहास हम दास तिहा
रे ॥ हम सो वचन कहे तुम जैसे ॥ प्रजा समेत करै हम तैसे ॥ मुदित प्रजा वच कहत परस्प
र ॥ महा प्रुरुष [illegible] भगत हरि ॥ १ ॥ दो ॥ हम हदडाव त भगत हरि मुक्ति करन के हेत ॥
पह हम रा कत्य न करत जो ऐसी बुधि देत ॥ २ ॥ चंद्रहासो वाचः ॥ चौ ॥ चंद्रहास सम सब वचन अवा
ह
रे ॥ सुनहु अवन दै प्रजा मारे ॥ तुम को हए की आज्ञा जैसे ॥ जो हम कहै करो तुम तैसे ॥ जो तुम रे
स हम्मा गे को धन ॥ सो सम दे [illegible] भगवन ॥ [illegible] काम वनत तुमारे ॥ दान करहु तु
म [illegible] ॥ प्रजा भगत वच की उप्रमाना ॥ सर्वस सकल करत मह दाना ॥ जो आग तध
नु संग हरि को नो ॥ राख्यो रंच न सम्रुत दीनो ॥ ३ ॥ दो ॥ प्रजा [illegible] ॥ वचन कहि भेप
त
दीन ॥ हम को करज सनाथ अब तुम हरि भगत प्रवीन ॥ ४ ॥ मह प्रसन चंद्रहास तव ॥ कृपा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥श्री॥
४२५
अश्वमेध

दिए कीनी ऊपर सब ॥ सेवा सालग्राम की दीनी सकल प्रजा माझे धरि लीनी ॥ प्रजा सभ करी
आप समाना ॥ करुना करी आप भगवाना ॥ बरनत कौटि भ्रंग गति तैसे ॥ कीनी प्रजा आप
सम तैसे ॥ नौनिध संपत्ति भई सभन के ॥ पूरन भए मनोरथ मन के ॥ कंचन कलस आहन
पशि भए ॥ दुघ दाशिद सभन के गए ॥५॥ दो॥ आह ग्रह ग्रह मे उसतुति भई ॥ धन कथा गोविंद ॥ ध
एवुद्धि मुष सों कहै धन धन प्र कुलिंद ॥६॥ चौ॥ दुए वुध पुन वचन उचारे ॥ धन कुलिंद व
ठ भाग हमारे ॥ बन ते आन्या पत विराना ॥ महा प्रवीन रूप भगवाना ॥ तुम आपुना कुल सक
ल उधारयो ॥ वजरे प्रजा प्लोग निसासेयो ॥ दुए वुध लागो कुलिंद पग ॥ धन धन तुम धनि सासेयोज
ग ॥ आपुने सते ते हात नघात सुघ ॥ जो तुम प्रापति भऊ जग चोद्दष ॥ तुम पर श्रुति करुणा की
नी प्रभ ॥ तुम प्रसाद ते लोग त स्वास म ॥७॥ जैमिनोवाचः ॥ दो॥ जैमिन तुम तन मजै कहै सनउ
कष्पा दे कान ॥ वचन कहे चहत प्रजा सों चंद्रहास राजान ॥८॥ चौ॥ चंद्रहास तेऊ वचन व
खाने ॥ ते सभ प्रजा सव करि मानन ॥ प्रभ भग महरि हीत हेय फला समे सो ॥ राजु तिलक दीयो चंद्र
हास सैं ॥ चवर छत्र प्रभु मसीस वनाऊ ॥ आदम त सिंघासन वैठायो ॥ मुख्य ए श्री स्वथि समऊ
रि आऐ ॥ दै असीस मन आनंद वठाए ॥ टीका दीयो भगत के भाला ॥ कीनो यष्पि वी को भक्ता
ला ॥ परम प्रीत हित मऊ जैकारा ॥ गावत नारि सुमंगल चारा ॥९॥ दो॥ दुहु भव तै आने कर
तव आति हरि षत सभ लोग ॥ चंद्रहास राजा म ऊभिटे प्रजा अघ सोग ॥१०॥ चौ॥ वेद उचार
करत भए ब्रह्मण ॥ दी ऊ दान सव को वांछत मन ॥ स्वर्ग लोग पुन म सुष आनंद ॥ की र
ति करत भगत नंद लोल हि ॥ चंद्रहास म्प पति कीनो हरि ॥ अवर म्प पन हीइन के सम सर ॥११॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मदनसिंघकोमंत्रीकीनो॥कृपाधारआपुनाकएलीनो॥पुनकुलिंदकेपगलपटाउ॥ह
मरेनमितकरहुतुमपाचो॥सोपएदमाकीजीयैताता॥होनोहोतवनतसोईवाता॥११
॥दो॥तातेदुषसुखधिरनहीसिमरनसारंगपाल॥रहितकनतिनठरुकौनकोप्रीतःसहाइनं
दलाल॥१२॥चौ॥अबकोमराजुकरौयतुजाई॥मनमहिधरमलेजुठहिराई॥कीजैरा
जुआपनेदेसा॥आधिकग्रामसौतुहिनरेसा॥आज्ञादीनभगतगोविंदा॥गयोआपुनेदेस
कुलिंदा॥पुनप्रसंननहोइदुएबुद्धिपए॥कह्योभगतअबससुरभजहुहरि॥बहुअवस्था
भयीतुमरी॥सिमरहुमुकुंदमलगिरधारी॥हरिसिमरनतुदीनोतिःदाना॥चंद्रहाससेव
कभगवाना॥१३॥जैमिनोवाचः॥दो॥सुनमहीपतितुनमेजनपतिःहरिकेभगतकृपाल॥
समदृष्टिअमित्रवैरताधारजुबुधिविशाल॥१४॥चौ॥क्रोधनहीहीयहरिभगतनके॥निरवै
रीनिरमलतमिमनिके॥वैरकरतजोईसंतनसाथा॥ताकोआपदीनदेहनितमाथा॥बुरा
भलासुखभगतनकहही॥निशिदिनसदाशांतिमनरहितहही॥भगतनकोदुखसहिनन
सकतिहरि॥नासकरतदिनसंतनकेअरि॥भलेहोनतजेउभगतअपारा॥भयोस
मनकुलकोनिस्तारा॥सालग्रामसेवामनुलावहु॥भलीवस्तुलेभोगलगावहु॥१
५॥दो॥सबहुपात्रलेसवहुगृहसेवहुसालगराम॥ब्रह्मचरयपईद्रीदसनधयानधा
रहुभगवान॥१६॥चौ॥षटकरमसंध्यात्रैकाला॥चलहुवेगमगभतजुगुपाला॥
गायत्रीचतुकरमसंधाना॥सरधासहितदेहुदुदाना॥यहवचकहिआज्ञाकीनी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ॥
४२०
अश्वमेध

तब॥ आयो अपुने धाम जाऊ सब॥ भै गो कीट हेत धाम कै जिस॥ चंद्रहास सम प्रजा करीति
म॥१७॥ नारद वचः॥ दो॥ कहि नारद पारथ सुन जा तुम पूछा था मो हि॥ चंद्रहास को ज
नम मजस कल सुनाऊ तो हि॥१८॥ चौ॥ अरजुन नारद के पग लागा॥ भगत कथा सुन म
न अनुरागा॥ नारद एक समय पुर को गयो॥ हरि गुन गावत प्रमुदित भयो॥ कहि जैमि
नि नृप जनमेजा सुन॥ पूरव कथा वषानित हो पुन॥ चंद्रहास जिमि जनमे तोहु रंगा॥ सु
न ऊ अवनदे सोई प्रसंगा॥ विचरति प्रमुदित अश्व युधिष्ठिर॥ पापति भयो चंद्रहास के
पुर॥१९॥ दो॥ पकरो जाइ तु रंग को विषया सुत हरिदास॥ ततछिन आ उपत ताप ति
हा< हि पै मै वह्यो जलता स॥२०॥ चौ॥ नेरचत तचंद्रसा भयो हरिषति॥ आतित्र विचंत्र तन है सार
द भुत गति॥ देष्यो पत्र पढा इ भगत तब॥ अश्व युधिष्ठिरा लष्यो तब॥ है धर्मराज
को स्वार पथ अरजुन॥ भगत अनंदित भयो आवत गुन॥ भगत तात तप्रति वचन उचा
रे॥ आज उदित बस बड भाग हमारे॥ पहिले रंग आयो मुज हाथा॥ निश्चै दरस हो इज
गनाथा॥ जाहि होइ गावि जैतहा हरि॥ स सजान होमन वच क्रम करि॥२१॥ दो॥
अरजुन और श्रीकृष्ण महिमा तरातन हि कोई॥ जहा होइ गाइ दरसत हरि निश्चै सं
ग होई॥२२॥ चौ॥ नीश पुत्र रंगम ताता॥ हि प्रसाद रसै तंगनाथा॥ सुच पावहिगे मि
हा विलासा॥ दरसि विलोकहिगे नंद लाला॥ अरजुन संग सहा जो पाला॥ पृथक रैहम
पारथ सा था॥ ऐसे जु जैगा अरजुन सों॥ सच पावहिगे श्रीपति मन सो॥ प्रजा करो स ॥५५॥

के२ द२

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रनकीरनमो॥ होयकहि प्रसंनकृस्नतनमनसों॥ आपितसुखपावहिगेजै॥ सै॥ रनमहितो म
करोगा तैसै॥२३॥ दो॥ नीकेराखुतु रंगकों धिषिआसुतहरिदास॥ योंकहितेप्रापतिभयो
दूतऐकइनपास॥२४॥ चौ॥ दूतसुनाईन्रपकोंवाता॥ आयोदिजैसंगजगताता॥ चतुरंगन
सैनसंगपारथ॥ वैठैआगंकृस्नरथसारथ॥ दूतवचसुनभगतमुदितमन॥ उद्यमकीयोंद्व यु
करहोंरन॥ इष्टदेवकोंकीयोप्रणामा॥ सैनचल्योलैकितमसंग्रामा॥ अनगनसैनाभितीआपा
रा॥ वाजतवंत्रअनेकप्रकारा॥ षोडशवरषतवयसधनी॥ वरसत्तसिंगारतनचलेयुधप
ऐ॥२५॥ दो॥ हैगैरथपायकनिकरगनेनजाहिअनेक॥ जैसेउडगनगगनमधिकीयोन
जाइविवेक॥२६॥ चौ॥ वारूकीरेणपातवनजैसें॥ गनीजातनहिसेनातैसे॥ उदधिलहरिजेसेत
णधर्नि॥ तैसेंचमूजातनहिवरनी॥ दृष्टिपरीआरजुनकोंसेना॥ पारथकहैकृस्नसोंवैना॥
सुनकृपाकरिअघनासनहरि॥ चंद्रहासलायोसेनावर॥ देषीयतसकलसुरसमपाला
सभवैस्नवहैमहाविशाला॥ धरमजुकेमषमहिदिनथोरे॥ पूरणकाजुकरहुप्रभमोरे॥२७॥
दो॥ महासूरतनुमराभगतचंद्रहासराजान॥ इनकोंकैसेजीतीयेकरुणानिधभगवान॥२८॥
चौ॥ श्रीभगवानोवाचः॥ सुनपारथयहभगतहमारा॥ चंद्रहासशेवकमुरुप्यारा॥ जैयहहर
नकरईसंग्रामा॥ इनसोंयुधनतुमराकामा॥ इनकोंजीतिसकैनहिकोई॥ तीनोलोकऐकंहीहो
ई॥ इनआगेवलतुछतुमारा॥ जीतसकैनहिजततनअपारा॥ हमपुनजीतसकैनभगतकों॥ आ
तमज्ञातहिगतशकतिकों॥ शेवाकरिमुजकोंवशकीनो॥ हीयेतेइतउतजाननदीनो॥२९॥ दो॥ भ
गतहीयेकोंफेरिहीप्रेरकसोवसआप॥ न्रपतियुधिष्ठरयज्ञकोंपूरनकरोप्रताप॥३०॥ चौ॥ मन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥७८६॥

४३१
स्र्प्र मे
ध
जुज
५०

मतिचिंतनकीजैपररप्य॥ सिद्धकरोंधरमजनकोस्वारथ॥ नहितजैगाचंद्रहासरन॥ फेरलेउंगा
हमउनकोमन॥ नहीचलावैमुझसनमुषसर॥ आइपरैगामुझचरननपरि॥ जबहितसनहिर
गाहमरेनामा॥ आइपरैगातमुझचरननपरि॥ जबहिसुनहिगाहमरेनामा॥ आइपरिलैगा
तजिसेआमा॥ पषपितउनकेछत्रधरममन॥ लेवाहदेहिनाईताहीछिन॥ निहकामीवहमगर
तहमारा॥ सेवाकरीमुझपिवधपकारा॥ ३१॥ जैमिनोवाचः॥ दो॥ जैमिनकहेसुनरूनपति
यहवचककहेगुपाल॥ मैनसहतिआयोततैचंद्रहासभूपाल॥ ३२॥ चौ॥ चंद्रहासनितप्रभ
गतगुपाला॥ तरुनदेहछविमहछविणाला॥ तैसेवरषराजुतिनकीनो॥ तपकरहरिकोर
वशिकरलीनो॥ तिलकशरवचक्रभगवाना॥ नेशिद्धिनेरिदकरुएकोध्याना॥ तेतेसीम
लककंठविराजै॥ गौरवरनतनअतिछविछाजै॥ नपदेषैअरजनकेरथपरि॥ वैठहम
रेईएकुलहरि॥ एविनसुरूपवतायोतैसो॥ सावधानहमनेरष्योतैसो॥ ३३॥ दो॥ तिंके
वालप्रपंतहमहदेलगावतध्यान॥ सोईअरजनकोस्वारथीरथपैवैठोभगवान॥ ३४॥ चौ॥
चंद्रहाससतोषअनंदवढायो॥ दरसनइष्टदेवकोपायो॥ सोईसरूपनयपरिघनवतायो॥
सोइसुरूपअरजनकेरथपर॥ शंषचक्रअरुगदापदमकर॥ कौसतुभमणिउरप्रभुभृकुटिल
वर॥ शोभितवैजंतीउरमाला॥ मोरपक्षसिरवरछविविशाला॥ रूपचतुरभुजिधारेएक
रूपन॥ वैठोहेरथसारथिअरजन॥ वैठोरूपअनूपधारछवि॥ पारथकेरथआ
मकुसतव॥ ३५॥ जनमेजयोवाचः॥ दो॥ तैमिनसोपूछोप्रभुजनमेजैराजान॥ रूपच
तुरभुजधारिएकजैरथवैठेश्रीभगवान॥ ३६॥ चौ॥ जोसरूपदुरलभसनकादिहि॥ ॥७८६॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जो जतन किरतई पा ब्रह्मादिक॥ इंद्र आदि सुर सकल रिषीस्वर॥ कठन तपस्या करत तत
पीस्वर॥ ऐसा दरशनु चंद्रहास हए कैसे मोउ कहो प्रकाश करु॥ जैमिन कहै सुनु हुउ
तर नृप॥ जो तुम पूछीयो प्रश्नु मैं राधप॥ चंद्रहास रन महिमा उ जब॥ निरख बिचा
रकी ओ हरि हीय तब॥ अरजन जी तस कै न भगत को॥ जे संग ल्यावे सकल जगत को॥
३१॥ दो॥ अरजन जी तस कौन हो चंद्रहास राजान॥ नृप चतुर्भुज धाय पद घो पहि विचार ताय
जान॥ ३२॥ चौ॥ कौ पा चाह हो पै पार्थ युधिष्ठिर॥ पहि विचार की नोगि रथ रउर॥ दे या भगत
को दरसनु सोई॥ ओ सो नृपति शांति मन नहोई॥ जो न पहि बन वत उ रूपा॥ कहु म चतुर्भु
ज व एाो आन नृपा॥ दर्शनु सोई भगत को दीनो॥ चंद्रहास का मन व सि कीनो॥ जान्यो भग
तवहि भगवाना॥ जो मज इए बन वता यो जाना॥ रथ को ताके निकट चिलाया॥ इए देव
को दरसनु पाओ॥ ३४॥ दो॥ रथ ते उतर्यो भगत तब हरि को कीयो प्रणामु॥ कीउ दंडवत
भगत न है मन पाउ विश्रामु॥ ४०॥ चौ॥ तनु सुध भूल गई सुध पाता॥ तब रथ ते उतर्या नं
दलाला॥ नृप को भुज भर कंठ लगाओ॥ सुद्ध भगति के कंठ लगायो॥ आनंद तरह गद्
ल ना सुं॥ सो च सुधा जनन को तृप ताउ॥ चंद्रहास सों वचन कहो हरि॥ भगत आरूढ हो
हु नि जु रथ पए॥ रथ आरूढ भउ चंद्रहास तब॥ ठाढे जा हाथ पार्थ अपना सब॥ कृष्ण सु
रूप हृदे महि राख्यो॥ मुख ते वचन कछु न हि भाख्यो॥ ४१॥ जैमिनो बाचः॥ दो॥ जैमिन कहै
सुन हुं नृपति पार्थ की उ विचार॥ पुन रथ चढ़ि ठाढा भउ देखी पति पुध प्रकार॥ चौ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ॥
४३२
अश्वमेध

तिन मिलके कछु भेट न दीनी ॥ पुनउ स्तुति हरि की नहीं कीनी ॥ हरि पग परस्यो न भा
खे बैना ॥ ठाढ़ा ठाढ़ा ताइ आ पुनी सैना ॥ संसै रूप ज्यों अरजन के मन ॥ वचन कहे है पारथ
प्रति भगवन ॥ मिलऊ धनंजै चंद्रहास कौं ॥ मुझ सेवक आतम प्रकाशकौं ॥ तब अर
जन मुष वचन उचारे ॥ सुनऊ अबुन देव मम हमारे ॥ प्रथम भगत तुम पग मिरधी
रा ॥ पुन ठाढ़ा निज वचन मंझारा ॥ ५३ ॥ दो० ॥ सनमुष ठाढ़ा जो रद लहद पुत्र की बात ॥ हह
र न अबु बसर सरमिलो हम छत्री धर मल जात ॥ ५४ ॥ चौ० ॥ हरि से वचन कहे पुन पारथ ॥ तुम मम
भेर्म की कहो मधि भारथ ॥ छत्री होइ क्रोध त्याग जै मन ॥ नरक योनि भोगे सो ऊस्यो न गन ॥
आवै कहत हो मिलु न पजाई ॥ कृपा नाथ मुझ कऊ समझाई ॥ पुनि बोले श्री कृष्ण जै प्र
ति ॥ मुझ कौ चंद्रहास प्रीत समआति ॥ मन वच क्रम निज रूप हमारा ॥ निशिदिन मुझ को हीये
मधि धारा ॥ भगतन की मो ला हमरे गर ॥ सभ का मेर चंद्रहास वुन ॥ ५५ ॥ दो० ॥ याकों मिलत
नु प्रस सु है निरवैरी मम रूप ॥ चंद्रहास तन मै भगत ज्ञान ऊँ मेरा रूप ॥ जै मि नी ना वा त्ता ॥ ५६ हरि
चौ० ॥ अरजन प्रति मह वचन कहे हरि ॥ सुने अबनन न प चंद्रहास वर ॥ ताक्षिन लेपा पारथ र
थ तव ही ॥ श्री पति आज्ञा दीनी तब ही ॥ विद्यमान दोनो तब भए ॥ दरसन नृप रसि वैर मिट गए
चंद्रहास हसि बैन उचारे ॥ सुन पारथ निज सषा मुरारे ॥ हम तोइ हाथ युध हित आए ॥ अब र
कहि की जै मद मुसकाए ॥ अरजन वचन कहे तत काला ॥ हम तुम मध पुरुष नंदलाला ॥ ५
७ ॥ दो० ॥ यह बातै कहि परस्पर परका यो अलिंगन गात ॥ चंद्रहास अरु फाल्गुन देऊ भगत
जगतात ॥ ५८ ॥ चौ० ॥ चंद्रहास अरु पारथ देऊ ॥ नागेसा इक रूप ज सोऊ ॥ धन्य धन्य सब ॥ ५७ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ते भी ख्यो हरि ॥ चंद्रहास सम्याधीन भगत हरि ॥ चंद्रहास सिनि जु भगत हमारा ॥ तन मन
धन सुत जु परवारा ॥ वरुण भगत मुष वचन उचारो ॥ आजु दिवस वड भाग हमरे ॥
हम सको प्रभ सनाथ करि लीनो ॥ करुणा करि हरि दरसन दीनो ॥ धरम जु के मन भिसिव
गु धायो ॥ कृपा धार हम कों निसतारयो ॥ ५८ ॥ दो० ॥ ताते मोहि वड सुकृत विध मिराई केता
त ॥ जाके सदा सदा सहाइ हरि निसि दिन त्रिभुवन तात ॥ ५० ॥ चौ ॥ हम से उधरे पतित प्रणा
दा ॥ दरस्यो दृग हरि पुरुष अनादा ॥ महा भय प्रभ जो तुम कीनो ॥ भार सही उतार सम
दीनो ॥ धरि नीभार उतारन काजा ॥ तुम चव जि कीनो यदु राजा ॥ यह इछा पद प्रभ तुमारी
कैरव नास करी वलभारी ॥ भीषम आदि नास कीने रन ॥ ससे उपजायो धरम तनन ॥ तुम
रे मन प्रभ सभय हत सारथ ॥ करी यश जगत कृतारथ ॥ ५१ ॥ दो० ॥ व्यापक जु हो तुम तुम
सर्व मह घट घट तुम सवास ॥ सब जात है चलि तहा जहा हि भगतन वास ॥ ५२ ॥ चौ
भगतन भवजल तारन काजा ॥ यह हन अन्न तेरो यदु राजा ॥ धर्म ताते तेय जु करायो ॥ न
रदृषन को दे सुत गायो ॥ व्यापक सर्व तुही भगवाना ॥ जलथल सम घट माहि समाना
भवसार गते काढुलीयो सुत ॥ दृौ कृपा करनि तद्दरसुन तुज ॥ बाल वैस सुत जसंतमि
लाए ॥ तिन सुत तुम्हरे वि हन वताए ॥ तुमरी करुणा तें नपमउ ॥ तु मसिस मरणा ते सम
दुषगजे ॥ ५३ ॥ दो० ॥ संत जना की कृपा ते दरसन दीनो मोहि ॥ भगतवछल ने दला ला
तुम करि सनाथ लीजो मोहि ॥ ५४ ॥ चौ ॥ जिन पर ते रेसंत कृपाला ॥ तिन कौ रछाकर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ४३५ ॥
अश्वमेध

तनु पालो ॥ प्रथम मैं हम बसि पस्यो चंडालो ॥ तिन ते राखि लीयो नंदलालो ॥ उपजाई
कृपा उनके मन ॥ हतु न कीयो मुझ छाडु दीयो बन ॥ पुनि तुम नृपति कुलिंद पठाओ
सो मुझ बन ते गहि ले आओ ॥ तिः मुझ दीओ राज सिंघासन ॥ गाढ़ ए कौसिल ऐ मवा
सन ॥ वक्र रीति दुष्ट बुधि पापी मन ॥ ना सुकरत तब पठ्यो तुम भवन ॥ ५५ ॥ दो ॥ तहं प्र
गटाई कंन्या का विषु ते विषिया कीन ॥ वक्र रीत स्रब काढ़ार मु स पठ्यो दुष्ट मतिहीन ॥ ५६
चौ ॥ तहा तुम्ह देव चाहुल्लि गाठो ॥ कौतुहल पुर मुझः पठाओ ॥ ताहि नृपति सुता की
यो मुझ पत ॥ हार स्रंध का मदन भयो हति ॥ पुन उनको दीने तुम प्राना ॥ भगत प्रता
प कीओ भगवाना ॥ ऋः षिः रछा करी हमारी ॥ भगत वछल तुम नाम मुरारी ॥ हरिप
गला नि उठे दोनो तब ॥ प्रभ सो बचन कहे पारथ तब ॥ एसी करुणा करी भगत परि
मन बच क्रम करि कीनी गए धरि ॥ ५७ ॥ दो ॥ चंद्रहास को कृपा करि कंठ लगायो नाथ ॥
ताकी महिमा कहत हो कीने भगत सनाथ ॥ ५८ ॥ चंद्रहास पुन वचन उचारे ॥ सुन ऊ
प्रभु तुम बचन हमारे ॥ कहा कहों महिमा मुख पारथ ॥ सुन के तुम हो रथ के सार
थ ॥ भारथ वीच सदा प्रभु राख्यो ॥ तीन लोक जाको जस भाख्यो ॥ सुन के तुम हरि एहा पखि
कानो ॥ रहत अधीन दास बत मानो ॥ तुम तो आज्ञाकारी भी छिन ॥ सदा संग विहरु रुकु
नहीं इक छिन ॥ पंडव प्रीति पछान ही पे हरि ॥ नास की ये तुम सब भइ न के सारि ॥ ५९ ॥ दो ॥
ताते पारथ भाग की महिमा कही न जाइ ॥ प्रेम जेवरी बांधि जिन बस कीने जदुराइ ॥ ६० ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चौ॥ धर्मराजसुत कुंती माता॥ पुनि द्रौपदी भगति जगताता॥ अर्जुन भीम नकुल सहदेवा
ईन तुम बसि कीनो हरि देवा॥ जेतक पांडव के परवारा॥ हम तैं होय सभ के वलिहारा॥ य
ह कहि चंद्रहास राजा ना॥ सनमुख ठाढे श्री भगवाना॥ वहुरि भगत मुख वचन उचारे॥
चलहु नगर हम दास तिहारे॥ पुरप्रवेस कीजै श्रीपति अव॥ चलहु सहित सैना पांडव
सव॥ ६१॥ दो॥ चले कृपाकर नगर हरि पांडव सैन समेत॥ पुरप्रवेस कीनो प्रभू तहां
भगतन हेत॥ ६२॥ चौ॥ दरसु देषि धाय आय अनुरागी॥ सौति सहित हरि के पग लागी॥ त्या
ई सोति आरती हाथा॥ पूजा करि तो षेउ गुनाथा॥ षटरस पाक सिधत व कीने॥ होय प
हितु धार॥ कृष्ण के दीनो॥ चंद्रहास पद षड आले साथा॥ धाय कृष्ण चरन चरन परि माथा
वारंवार दीनता करई॥ पुनपुन दोऊ कृष्ण पग परई॥ हम कौ तौ चौउधारि कृपा
कए॥ अंतरजामी भगतवछल हरि॥ ६३॥ दो॥ जुति मति मंद पति दीनता करहि कृष्ण वि
द्धमान॥ ति मति म हदै प्रसंन हि पिपाला गहि भगवान॥ ६४॥ चौ॥ पुन हरि ए वचन कहे
पारथ प्रति॥ देषहु अरजुन चंद्रहास गति॥ दीन वचन मुष कहत विशाला॥ यद्यपि
भउ महा भूपाला॥ दुएवु द्ध मम मम सेवक साथा॥ वैरा की ओकहु चलै न हाथा॥ तव
इन भगत बुरा नहि भाष्यो॥ वैरभाव मन मैं न हि राष्यो॥ राग द्वेष मन महि न हि आ
नहि॥ शत्रु मित्र सम मम सरि कए जानहि॥ ६५॥ दो॥ सदा शांत मन मति रहै॥ मम भगतन
की रीति॥ शत्रु मित्र वांछहि जन मम स्वषेव प्रतीति॥ ६६॥ चौ॥ मम भगतन को दुषन होई॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ आवरन सुष उपजावति सोई ॥ तनु मनु धनु सुत को आरप्यो तिन ॥ हमरे लिषे
प्रतीति करि तिन ॥ शत्रु मित्र तिन के दोऊ सम सरि ॥ भगतिन की महिमा वरनी हरि ॥ सुनि पार
थ आनंद भयो मन ॥ वचन उचार कहे प्रति भगवन ॥ ईछा सौं भारथ तुम कीनो ॥ लोगन
मैं सुत के जस दीनो ॥ करन सारथे धरम जगरो ॥ दुरयोधन से हरि मुरझाए ॥ १७ ॥
दो ॥ द्रोण आचारज सारथे कृत कीने रन योध ॥ तिनके वें हूं संग्राम मैं तुम्हें न दीयै तै क्रोध ॥
१८ ॥ चौ ॥ वज्र पितामा से वलवाना ॥ महा सूर त्रै लोक निधाना ॥ भीर थमे की नो हतु ऐसे ॥
सूरे आश्वथामा जैसे ॥ और सूर रमे हनेम नेका ॥ आनगन की षोन जाई विवेका ॥ सो भई ना
को हनी अकार्न ॥ महा सूर वलवान अपारन ॥ राजन भि तह मैना सकी पेस व ॥ त्रास जा
न जीय राजुत जोवन ॥ पाप मह तपहि वान राज सुष ॥ अंगाकार न करहि जान दुष ॥ १
९ ॥ दो ॥ श्रीपति तुम उपदेस कर पराजु युधिष्ठर दीन ॥ पुन धरम जकुल घात को दाषु धा
र जीय तीन ॥ १ ॥ चौ ॥ पुनहि चरन हरि ताहि वताऊ ॥ धरम सून पहि यज्ञ कराऊ ॥ तिं ते
यह गुन अधिक भयो अव ॥ अविलोके तुमरे शेवक सव ॥ आस जो होत नाहि महाभारथ
धन होत जगत के स्वारथ ॥ चंद्रहास हरि भगत महा वश ॥ अवलोको तुमरे प्रसा
द करि ॥ कहा गज पुरी कहां भगत तुमारे ॥ क्युं कर दरसन होइ तुमारे ॥ कुल के आघ तेय
हकृत भयो ॥ हाहि तुरंग हमहि सुष दयो ॥ ११ ॥ दो ॥ तव का हुन तातु रंग यह तव के भगत
मरारि ॥ तुम दरसा एक पाक रहि हम को लीयो उधार ॥ १२ ॥ चौ ॥ महाभारथ की यो षित हमार ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

चंद्रहाससे भगति निहारे ॥ तुम हम परी सहाई यदुराजा ॥ पूरन कीए हमारे काजा ॥ भगत
न को दरसन मुझ भयो ॥ तुम करुणा ते दुष्ट मिट गयो ॥ तीन दिवस कुं तत्पुर माहीं ॥ सैन
सहित हरि बसे तहांहीं ॥ कैतक काल और नृपति कुलिंदा ॥ ता नृप लीये तब भगत गोविंदा ॥ हारे
आन कृष्ण के पग परे ॥ भए सुपावन निरख दरस हरि ॥ १३ ॥ दो० ॥ दुष्टबुद्धि वसदेव शके भ
ऊ तो वसी काल ॥ ता ते निह पाप पति भए ऊ दरसन प्रीनंदलाल ॥ १४ ॥ चौ० ॥ विषिया आ चंपक
मालिनि दो ऊ ॥ हारी भगत कृष्ण पग सो ऊ ॥ चंद्रहास नृप हीए आनु राजो ॥ सरवसु भेट
धरी हरि आगो ॥ आयुत नव पक सो रथ चंदन भए ॥ मणि मुकता हल रतन दीए भए ॥ सा
त आयुत हल के गज माते ॥ कनक घंट मद और भचुचाते ॥ जगमगात तनु मुकता झालर
भए कंचन सम भकाये भेट हरि ॥ चीरपट वर आयुत चाली सा ॥ रथ भर दीए भेट जगदी
सा ॥ १५ ॥ दो० ॥ चौशित आयुत तुरंग वर भेट दीए भगवान ॥ तन मन धन सरवसु दीयो चं
द्रहास राजान ॥ १६ ॥ चौ० ॥ चंद्रहास यह भेट करी जब ॥ हरि प्रसन्न है वचन कहे तब ॥ चलहु
भगत तले सभ परवारा ॥ पुर के लोक प्रजा नरनारा ॥ चलहु हमारे संग दुरदपुर ॥ सुघटे
बहु सब नृप जुधिष्ठर ॥ धरम तात को सो मुनि बाबहु ॥ वेग चलहु बांधि तिस पावहु ॥ चंद्र
हास सुनि मुदित भयो मना ॥ उद्यम करत भयो ता हीं दिन ॥ जेतक पारथ सेना सव हीं ॥ ई
सोई हरि भवत तत वहीं ॥ १७ ॥ दो० ॥ पहराई सैना सकल लेआज्ञा नंदलाल ॥ राजन छत्र मुक
दीयो चंद्रहास भूपाल ॥ १८ ॥ ई ती श्री भारथ परव ऐ असुमेध वीवगने रकाशठो मो प्रभाउ
१४ ॥ ६१ ॥ समस्त जैमिनी वाच ॥ चौपाई ॥
परतहरि कनपर्वनाम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ॥

४२५

अश्वमेध

जैमिनु कहै सुनु कुरुराजा ॥ सारदेस फिर चलो बाजा ॥ चल्यो तुरंग और हंसनपुर ॥ ज
हां रह्यो वरपरपजय युद्ध एर ॥ ठैरा जाइ दीयो पुर बाहर ॥ रथ चढ़ि चले भगत पारथ हरि ॥
चंद्रहास संग सुर अपारा ॥ चतुरंगिनि चमूदल भारा ॥ आज्ञा करी धुजै को गिरधर ॥ सा
गर तट बकदालभ ऐव बर ॥ हाथ जोर बिनती करता को ॥ ल्यावउ जयजज्ञ बीच तुम बाको
५ ॥ दो ॥ आज्ञा ले पारथ चल्यो गयो सु सागर तीर ॥ तं तंक वि[illegible]दालव ध्यान मगन हि
वो ल्यो ऐव धीर ॥ २ ॥ चौ ॥ ठाढ़े वितै ऐषी प्रवर आगे ॥ धिव कर जोर हरि पै अनुरागे ॥ ऐक

क)

मुहूरत वीत गऊ तव ॥ ध्यान उत्थो वकदालभ तव ॥ ठाढ़ो पारथ अरजन कर जोरे ॥ ऐव
चीर ब्बो पारथ की ओरे ॥ तव हि विनती करी फालगुन ॥ पजयुध एर तहां चल ऋमुन ॥
ठाढ़ा कृष्ण सहाय क जहां ॥ कृपा करि चलीये रिषवर तहां ॥ मुनवर मुष तै वचन उचा
रा ॥ सुनह साधय यह वचन हमारा ॥ ३ ॥ दो ॥ जो न पकरता जग जो का ताको पद्धु जाई ॥
का होय तहां कवन के पितु आपनाव तलाइ ॥ ४ ॥ चौ ॥ पह वचन कहि रिष ध्यान लगाउ ॥ पु
न अरजन गिरधर पहि आउ ॥ वचन कहे वकदालभ जैसे ॥ हरि प्रतिवि तै कहे तव तैसे ॥
सुनि आज्ञा की नीदद ला ला ॥ अब गजपुर चली ऐत तकाला ॥ उहां जाइ के भीमप ठावा ॥
वकदालभ गजपुरी बुलावा ॥ चित्रांगदी नो चंद्रहास तव ॥ सैना चतुरंगिनी सुरवर ॥ हं
सी रथ अश्व करभ अपारा ॥ आरूप हंस तके संत न पारा ॥ ५ ॥ दो ॥ जकवरी छनी च ते चं
द्रहास के साथ ॥ मस्तक शोभित तिलक वर तुलसी माला हाथ ॥ ६ ॥ चौ ॥ चंद्रहासन पके

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

संग सैना ॥ उपमा कहीं न परत कछु बैना ॥ महा सूर छत्री बलवाना ॥ सभ वैष्णव शेव क भग
वान ॥ चक्र चिह्न स्रुभ अंग धरा जत ॥ तुलसी माला कंठ छवि धारत ॥ सालग्राम संपुट राज
त गर ॥ शोभित द्वादश तिलक अंग पर ॥ संग रे चंद्रहास सम लागत ॥ छत्र धर्म मन क्रोध
न त्यागत ॥ अन गनत सैना निधि महा छवि ॥ पारथ वचन कहे हरि सों तब ॥ १ ॥ दो ॥ सुन पृथी
पति सैना भगति सकल उपासक तोहि ॥ आशिरवाद तुम कृपा ते दरसन पाऊं मोहि ॥ २ ॥ च
ौ ॥ गवनत इच्छा सह तनु रंगा ॥ चली जात सैना सभ संगा ॥ वैष्णव आचंपक माल न साथ ॥
स भा अपुत इक चली संग आपा ॥ रतन बचन तिकंचन चंडो लपटि ॥ मुदित चडि चली वचन मा
न हरि ॥ मातदेव की आदि जुवति जन ॥ तिन के दरसन को गांछ मन ॥ आदि रुकमनी अरु एना
इ कनि ॥ देषन की अभिलाषा मन तन ॥ षोडश सहस्र एक सैनारा ॥ तिन देषन को चाहति अपारा
८ ॥ दो ॥ कुंती वज्र रोद्री पदी अवर सुभद्रा तीय ॥ इन का दरसन हित इक वर्ष आस मेटी
तीय ॥ ४ ॥ चौ ॥ ब्रह्मा इंद्र महेस सना दिवरी तेऊ हितोहि गीत हित पापर ॥ सावित्री गौरी इंद्राद
िणी ॥ तेऊ विलोक हि गोमुषसानी ॥ जीव मुक्त तेआदि सकलसुर ॥ सकल निहारहि गति रसपर
नपुर ॥ यों ता अव वरन उत्तम काजा ॥ तित पति देषत हैपदुराजा ॥ चली जात हैं चमू स्व
शाला ॥ तिके चारु दिश भूपाला ॥ पुनि हरि वचन कहै पारथ प्रति ॥ चंद्रहास मुकुंद को प्र
तम प्रति ॥ ११ ॥ जै श्री नोवाचः ॥ दो ॥ जैमिनु जनमेजे कहे सुनजु कृपा भूपाल ॥ पार
थ प्रति भगत की उस्तुति करी गुपाल ॥ १२ ॥ चौ ॥ जनकी उस्तुति करसि चले हरि ॥ चरदि
श जाति चल्यो हितु मषपरि ॥ पाछे चले ताहि सभराजा ॥ इच्छाचारी गवनति वाजा ॥ जन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥श्री॥

४३२ मेध अस्वमेध

निधतीर तुरंग गयो तव ॥ पोहुंचि गयो है समद्र बीच तव ॥ अरजन के जीय चिंत बढी अती ॥
वचन उचार कहै भगवन प्रति ॥ यह तो है अति अचरज भयो ॥ सागर बीच अस्व चलि ग
यो ॥ करुणा कीजै श्री नंदलाला ॥ है को काढि ले आवत काला ॥१३॥ दो॥ पन्नग है इ तुरंगि
विनु कृपा करउ नंदलाल ॥ सिध मनोरथ को जीये मख धर्म जुध भूपाल ॥१४॥ श्री भग
वानोवाचः चौ॥ कृष्ण कहै अरजन सुन लीजे ॥ मन मधि तिक कछू चिंत न कीजै ॥ सागरम
तिरा जान नही कोई ॥ जो तुरंग ले बांधै सोई ॥ पवन वेग रथ भूपति जेई ॥ पाछे जाहि अस्व
के तेई ॥ देवै अस्व जाइ गाक हा ॥ चले जाहि पाछे रथ तहा ॥ पवन वेग रथ पंच महावर ॥
संग लै चल्यो उदधि मै तरि हहु ॥ चंद्रहास प्रद्युम्न हंसध्वज ॥ अवर कुरन सुत सबा च
तुर्भज ॥ ४ ॥ दो॥ ता कदी ये पांचो सुरथ उदधि उलघन कीन ॥ जल मै ऐ कवि ही उठी
निरखी जाइ प्रवीन ॥१६॥ चौ॥ विचरत है वीरी उठी माही ॥ ता कदीये रथ चले त
हा ही ॥ तह हरि देखे ऐक तपीस्वर ॥ महापुरातव हो एवा स्वर ॥ वचन कहे पार्थ
ग्रह धर प्रति ॥ वक दालभ रिष यहां रमावति ॥ करत महत तप रिषवर जहा ॥ पांचो
ठाढे सनमुख तहा ॥ वट का वात ऐक रिष हाथा ॥ नित प्रति लीये रहत रिष साथा ॥
दृन महि रथ आवत जिः ऊरा ॥ या करत ऐषातिः हेरा ॥१७॥ दो॥ वृंद ऐक सौ पात
को जो रिष के कर माह ॥ हरि आज्ञा लै इंद्र सुत वचन हरि पाहि ॥१८॥ अरजनोवाचः
तव पार्थ मुष वचन उचारे ॥ सुन ऋषि एवा स्वर प्रभु हमारे ॥ तुम मांडा तुम सागर मा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ही॥ सोअगनितकठनउचरति तुम नाही॥ सोधिकृपा करि वाततल चोकर॥ वै ठउदधि मधि सुर उठा
ट करि॥ यहि तत पुकठनक्राहि ऐषदीजै॥ यातेवरगहस्थ ऐवकीजे॥ ऐककी अमुपावतका
को॥ करऊगहस्थ भजउ श्रीपतिको॥ तवववकदालभ वचनउच्चारे॥ सत्य कहो क्या नाम
तुमारे॥ १९॥ श्री रजनोवाचः॥ दो॥ हम अग्र रजन हो सुनऊ ऐषऐषवकत्रिभुवनतात॥
पहत तपते तुमस्य भला सुनऊ अग्र वनमुऊ वात॥ २०॥ चौ॥ ऐषवर तुम अग्र पुनावपुदेष
ऊ॥ भचोविदे हरूप मुऊपेषऊ॥ ततकतुचानही रहति सरीरा॥ उपजत नहीं तुमारे पी
रा॥ अवनन मधपषु गन की ऐधामा॥ जहं तहं मधमधि विश्रामा॥ सपतन मधि पवीर
लका विदारती॥ कतिऐ सो अम मुकरत मुनीपती॥ कतितुम कं उविषै कुशपाई॥ वपु षविदेह
भई कुशताई॥ तनमनकी सुधतजीतु पायउ॥ यहि अग्र सतेग हम लोऐषीप्रवर॥ २१॥
वकदालभोवाचः॥ दो॥ यहतव सुन चैतनभउ अतिरखो नैन उघार॥ कृष्णप्रणाम कीयाउ
वह्निरिष लषि लीयो मुरारि॥ २२॥ चौ॥ वकदालभ मुष वचन उचारे॥ सुनपारथ तुम सषा
मुरारे॥ धरमगहस्थ सार तुम जान्यो॥ हम तावधन मलपधान्यो॥ त्रिः तेजन्म मसर
नवऊवारा॥ उपजत है वहुविध हंकारा॥ धर्मगहस्थी स्वान समाना॥ गहस्थ हुधिक
रतन कवु अग्रघान॥ भ्रमत उदर हित ताषुन हेई॥ त्रिःधिकार करहै सभकोई॥ नेसे भ्र
मत गहस्थी याजग॥ पोषन निमित उदर जैसे ठग॥ २३॥ दो॥ धर्मगहस्थी स्वान सम भ्र
तछांकि वहु न अग्रघाइ॥ तपसी गाजसमशांत मन ठाऊ अपुनी जाइ॥ २४॥ चौ॥ ग
जा को

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४३१

अश्वमेध

जुज

५१

तके भोजन विविधप्रकारा ॥ चलत आवत गछत कर तस अहारा ॥ ठाढे तोषसहत तनिश
वासर ॥ जहां गछ हडोलत पिरत नआतुर ॥ भक्त नु वस्त्र आन को देई ॥ भोजन कुशिकि
र मांगन लेई ॥ ठाढो धीरज काल नगु लावति ॥ तिः प्रसाद आदु रव ज्ञपावति ॥ तिः पाके
कीत नेजन षवति ॥ अप सुषी आवरन सुषपावि ति ॥ सकुल धर्मे तत पवर पारथ ॥ श्र
धकर तस्सार थपर मारथ ॥ ६ ॥ दो ॥ जबग छहस्थी जु वृती करै उपजत मा हस वार ॥ प्रथम
दुकूल भए षन भव नदीपे चा हीये नाहि ॥ २६ ॥ चौ ॥ स्वा दइ दीपन मन नहि दिन दिन ॥ कंदर्प ना
सुकरत है तिन शद्दिन ॥ नाते जपत पहित त विनासा ॥ वेदज्ञ संत तप्त होत प्रकाशा ॥ कं
न्यापुत्र पौत्र उपजावत ॥ सदा मोक्षे वृसि जो पदु षपावति ॥ सांत से तो बधर्म की हत
ना ॥ अति निशा विषया हाथ विकानी ॥ वत वन कर त व्याहि तमु तकाे जे ॥ का व हकर तंक
न्या वस्त्रादी जे ॥ लक्ष न मृतक निशद्दिन जगडोलत ॥ गृह ठो साब उदर हित तवे लत ॥ २७ ॥
दो ॥ द्रव्य आर्थ कण्ल्या वई सुतदारा के हेतत ॥ पाप आपने सिर धरत कर त विवेक न
प्रेत ॥ २८ ॥ चौ ॥ निमित कुटंब पाप चरित कर ई ॥ सभ दष न आपने सिर धर ई ॥ तिन
के निमित कर तय ह पापा ॥ तिन को विपत्ति न कदह संतापा ॥ बर अंभु भारउ ठावत निशि
दिन ॥ सदा दुःष सुष कहेत तिन ई क दिन ॥ जव गछहि विषे पुरष मरजाई ॥ तव तीयहोत
महादुष दाई ॥ संतति आवर अधीन होत तव ॥ ता विनु मा हाकष्ट पावत सव ॥ अरु जो
गृह मै नाहिं नात मई ॥ दुष पावति कंन्या सुत पति वर ॥ २९ ॥ दो ॥ अति दुषधर्म गृह स्थ
पर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कोसुनुसुरजनविवकान॥ सुतदाराधन लोभफासि तजिदीनो भगवान ॥३१॥ चौ
पई॥ भजनगृह स्वामी कामनु निशिदिन॥ ताते हरिसि मरति नहीं एक दिन॥ तपसी
नत क्षिमरत भगवाना॥ निशिदिन शब्द सुरसि तज्ञानु॥ करत गृह स्थन यह
विवेक करि॥ गृह बंधन फासि विसरजात हरि॥ जैमिन कहै सुनजु युधिष्ठिर पति॥ रि
षय हवचनु कहै पारथ प्रति॥ पुन अरजन मुख वचन उचारा॥ सतत कभी उहृदै
सहितधारा॥ जैमिन हीक रोगृह स्थ एषी ध्यर॥ कुटी साजि तप कर अतपी ध्यर॥ २
४॥ दोहरा॥ सुरजन ते जुन लागई तनु व अकएन पाइ॥ सैधि दुद्का पातक रत तजि
दीजै एबराइ॥३२॥ वकदाल्भ्यो वाच॥ सो॥ तन आपर के काज कुटी साजि क
ति श्रम करै॥ पात होल प्रभु साजवी तजा हिं गंगा जल पद्दिन॥ ३३॥ अर्जुनो वाच॥ चौ
पई॥ कहु वकदाल्भ तप करि तकि तनै बीते काल॥ ति तनी वीती अरजा कहे लोक
पाकरि हाल॥३४॥ जैमिनो वाच॥ दोहरा॥ जैमिन कहै सुनजु युधिष्ठिर पति॥ अर
जन यह वचन कहै ऋषि प्रति॥ पुन वकदाल्भ वचन उचारे॥ सुन पारथ तुम सु
वामरारे॥ अपुनी आपरहत मन नहिं जानो॥ कछु कतो दिह प्रति भाष वषानो॥ मार कं
डे अरु रोमस मुन की॥ सो को कुछ नहि संधि हि उन की॥ निज आपर की जो मित
मारे॥ आगे प्रगट वषानो तारे॥ जैमिन ने कहै सुनजु कुरुराई॥ एषय हवच
न कहे प्रगटाई॥३५॥ वकदाल्भ्यो वाच॥ दोहरा॥ कहै वकदाल्भ ऋषि जैसे सुन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आपुर कहत है जो हि ॥ बीसवि रंच प्रलै भये आयु तें सो हि ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ विध
आपुर प्रमाण सुनि लीजै ॥ मन वच क्रम मन प्रतीत कीजै ॥ चार सहस्र पु
ग बीत तज वहो ॥ होत एक दिन विधकौ तब ही ॥ निशा पुनि ऐसी जानि लेहु मन
जैता दिन तेती रजनी गन ॥ ऐसे निशि दिन तीश जात जब ॥ ऐक मास विधकौ
बीतत तब ॥ ऐसे द्वादश मास जात है गन ॥ तौ बरस का ऐकु वर बुध मुनि ॥ पचरन व
र्ष होत तजात है दिन ॥ होत पात इकु छिन ता हो छिन ॥ ३७ ॥ दोहरा ॥ पचै वर्ष बिरंच
कौ होत ऐक छिन तसाच्य ॥ छिद्र होत तई कृपात महि जो रहे तमारे हाप्प ॥ ३८ ॥ चौप
ई ॥ वर्ष ऐक सेआपु द्रति गज व ॥ वीतत तस पि लीन होत तब ॥ सभ जग विधके
उदर समावत ॥ सपि सहत विध हरि उर आवत ॥ विधकी आयु वरष सौ ऐ
सी ॥ बीतत जात तब पुरह तत नकैसे ॥ जोहि नना स ब्रह्म को होई ॥ प्रलै काल जग जा
न असोई ॥ प्रलैकाल ता हि न आवै ॥ विध जग लै हरि उदर समावै ॥ हरि पिधपिदे
ह हसंगुण समान ॥ सो वत वद पत्र वर स्पान ॥ ३९ ॥ दोहरा ॥ पात ब्रह्म बट पछि
प्रभ सैन करत तब आई ॥ होत छिद्र सो पात मझ हाप्प सो ऊदर सइ ॥ ४० ॥ चौपई
मह वट पात तजु हाप्प हमारे ॥ पचरन होत छिद्र सोन्यारे ॥ तब ही ब्रह्माणी रापचार
नौ ॥ प्रलैकाल की समै प्रमानौ ॥ तब हि जात है उनमहि तरु ॥ राजत तब बट ब्रह्मलोक जा
ता ॥ तहा देखत है एक रूप तब ॥ देखि संगुण प्रमान महा छबि ॥ सैन की यो को म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लपल्लव वपष्ट ॥ मुषमा अंग प्रत्यंग एमेल संदर वर ॥ ताको कहे शेष न पावत मुषदीसे मनु ॥
तोरत से उ वट पल्लव सोतन ॥ ४१ ॥ दोहरा ॥ पात पुरातन को तजै लसा वो नौतन
न पात ॥ आपुने आश्रम में आइ कै बैठ रहे ह कुसलात ॥ ४२ ॥ चौपई ॥ वर्ष ऐक सौ
ना सविधि धाता ॥ पर तपसि कुसौ हमू रे पाता ॥ तो हम बड़ कर वृक्षवट जे है ॥ तो रषा
त इ कौ सो तन लेहु ॥ मुनि तकरत वीते वहु काला ॥ सदा रहत है ठौर सिरात्ता ॥ शर वि
सविधि मुनि वह सुमाना ॥ सत्य कहत है वचन प्रमाना ॥ एक वेर मा पुर भई हमारो
षे ति आवत सुन समाया मुरारी ॥ अब वरक हो मचरज की बाता ॥ सुन ऊ प्रवन कहा हो
विष्याता ॥ ४३ ॥ दोहरा ॥ ऐक बूंद हि ए गज बरोर रत देल्या वो ह तम इक पात ॥ प्रलै काल पा
के वर ऊरि में समान जगता ता ॥ ४४ ॥ चौपई ॥ सैन करत तव वटपल्लव पष्टे ॥ देखा को
ति मुषमा सहित अंग गुन धरि ॥ सो इहि विधि सहित तउदर मे झारा ॥ सो इध रत तन तन कुसमका
रा ॥ वटपल्लव परि करत जु सैना ॥ सोई सुरूप देष्यो अव नेना ॥ सो सरूप तुम रे रष्य
ष्यो रष्य ॥ सोई मुनि तह निहारे पारण्य ॥ सैन करत वट पर तिः अवसर ॥ सई
वेठो तुम रष्य नि कर ॥ सो सरूप देष्या सव धाना ॥ तुम रष्य वप पुरन भग
वाना ॥ ४५ ॥ दोहरा ॥ जो सरूप वट पात पर मुनि देष्या तिः वार ॥ सोई वैठो रष्य
तो हि पर निश्चै वही मुरारि ॥ ४६ ॥ चौपई ॥ पुनि रिषि कहि प्रति वचन उचारे ॥ स
न ऊ अब वने देषु भ्रमे हमारे ॥ जव कवि प्रलै काल के अवसर ॥ तुम सो वत वह

का५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ब्रह्मपातक परि ॥ धारत देत अंग गुण समाना ॥ अविनाशी तुम पुरुष पुराना ॥ ज
व ही करत तुम अवतार विश्रामा ॥ तब हम भजत मकौं करत प्रणामा ॥ भोग न लीयो का
हू तुम ते कबि ॥ सब भजत मरादेहु है ॥ तजब ॥ आवत तुम परे न पुरुष प्रधाना ॥ सुद
दीजै मन बांछित दाना ॥ ४७ ॥ दोहरा ॥ अपनो केठ लगाइ अस हमरे जग्य बड़ व्या
स ॥ आपुनी कीजै कृपा करि देहु साध संग वास ॥ ४८ ॥ चौपई ॥ देष ऐसी मन प्रेम
विशाला ॥ तत छिन भए प्रसन्न गुपाला ॥ रथ ते उतर परे तब गिरधर ॥ ऐष को
कंठ लगाइ लीयो हरि ॥ बकदालभ पुन वचन उचारे ॥ आजु दिवस बड़भागी हमरे
तप तप ध्यान सुफल सब भयो ॥ करुणा करि हरि दरसनु दयो ॥ पग्य पुधि ए र
हि की पाका जा ॥ इह पावउ धारे यदुराजा ॥ पांडु पुत्र है पर उपकारी ॥ मष रचि हम
से लीये उधारी ॥ ४९ ॥ दोहरा ॥ श्रीपति न श्रीमत है वचन कहे प्रगटाइ ॥ हमरे
परन पुन्य पेद रस भयो ऐष राइ ॥ ५० ॥ चौपई ॥ परकार जतु म विचर जलोगा
तुमरे दरस मिर्दि सभ सोगा ॥ दरस पर सभि टताहि से ता पा ॥ तत छिन विनस
ज[illegible] त्रै पापा ॥ बकदालभ तुम पुरुष पुरातन ॥ ति[illegible]ली जे मन मोहि वचन
[illegible] हु पग्य पर करुणा कीजे धर्म सुतन को दर्सन दीजे ॥ जै भिन कहे स्रन ज
म पाला ॥ रिष प्रति पहचत कहे गुपाला ॥ मरजन न हरष तभ यो अवन सुन
बकदालभ प्रति वचन कहे पुन ॥ ५१ ॥ अरजन सो बांच ॥ दोहरा ॥ बकदालभ तुम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

देषतेग्रैरेविधातावीस॥ कुटीरहततुलवीचतुमभजनुकीपोजगदीस॥ पर

॥चौपई॥ इत्तिनीचितीआपुतुमारी॥ सागरवीचनकुटीसवारी॥ कवहूंकिसीसोगो

ष्टिकीनी॥ वरमोहकोतहैठरलीनी॥ देषीकहहमाराजा॥ कुहोवृतां

तुसकलषरराजा॥ तीनवातकेउत्तरुदीजे॥ वकदाल्भकरुणामुरकीजे॥ गोए

कुटीमरुममकीवाता॥ कहेकृपाकरिमुजविष्याता॥ पुनमुषतेएषवचनउचा

रे॥ सुनहुमवनदैसषामुरारे॥५३॥ वगदाल्भावाचः॥ दोहरा॥ कहिवकदाल्भ

विजैसुनतनकआपुरकेहेत॥ कुटीसोजुहमकयाकरोआजुकाल्लजमलेत॥५४॥

॥चौपई॥ वासहुपिकीआपुरजैसेवीतगईहमरापहततैसे॥ सीतउष्णकेनिमतदे

हसुष॥ कुरोनकुटीउरोलागेदुष॥ देषिपामाहिमगनमनजाको॥ सोजुतकुटी

उचीतहैवाको॥ पहरएकानहीनहमरेमन॥ नहिविश्रामसासकेंईकन

निवसजातजोवऊडनआवे॥ तापहकुटीकाजकिंआवे॥ जिनआपुनेतनकी

सुधित्यागी॥ दरषशोगदुषतासचभागी॥५५॥ दोहरा॥ आसातजिहूपैध्यानहि

वतिनकोकुटीनजोग॥ श्रीनरतपुरुषमनाहकेतिनजीपहरषनसोग॥५६॥

॥चौपई॥ घीमसीतवर्षासमताको॥ विसरगईतनकीसुधिजाको॥ तेमटसोजि

कालहूलेकरई॥ हरिविनुअवरआसनहिधरई॥ संजुतनारजातवडूजैसे

देहआनित्यभगतपिनुतैसे॥ जिनपुरुषनविनरासपदलीनो॥ नहिआरंभकु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४५०
अश्वमेध

टीको की नो ॥ आसदिनि रो सपवत्र हैं देऊ ॥ तिनको आप्यन आवति कोऊ ॥ ताते कुटी
करो नहीं पारथ ॥ आपुर देह आपके स्वारथ ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ सिमरन की जे कछु
काज बल ना घटि मति प्रान ॥ तपसी को तप उचरति है नाहि न कुटी प्रमान ॥ ५८ ॥
चौपई ॥ जोग की तुम पूछत वाता ॥ ते सुन लेहु कहौ विष्याता ॥ नहि उपजत हम मरे को
ऊ आसा ॥ सदा ऐक रस रहौ उदासा ॥ कोउ न ठौर वास वन माही ॥ आवत जात ई
हा को कोउ नाही ॥ सुनत सु नावन को नही वाता ॥ उपजत नाहि न अवधि की काहा ॥ इक
दिन प्रलै काल के अवसर ॥ देष्यो भुजरा तब छिद्र पात पर ॥ परन छिद्र पात
भुव भयो ॥ तब हम चलि आदि वट गयो ॥ ५९ ॥ दोहरा ॥ वट के कोमल पात त
र देह अंगुष्ट प्रमान ॥ मुष महि लीयो अंगुष्ट को सोपे ष भगवान ॥ ६० ॥
चौपई ॥ तब हरि को मुष की पा भ्रमा ॥ देह अंगुष्ट रूप भगवाना ॥ ना तन पात तो
र मुष लीनो पात पुरातन को हिरदी नो ॥ तत छिन इसी ठौर चलि आवो ॥ अंघि नाभी
को ध्यान लिगावो ॥ सृष्टि रचन को पुन पद राई ॥ क्षीर समुद्र मो जल छाई ॥ नाभ
कवल ते कमल निकासा ॥ ताही कवल ते ब्रह्म प्रकासा ॥ कहै मारकंड तब ब्रह्म बडा ये
अतुल तै कहा ते हम आयो ॥ ६१ ॥ दोहरा ॥ अंतुल हम को दृष्टि तब गयो सत
म ध्याल ॥ पारुन पायो ब्रह्म कहु फिर आयो सो निकाल ॥ ६२ ॥ चौपई ॥ वर्ष सहस्र र
कु आयो गायो ॥ कबहू मन इस्थिति न हि भयो ॥ जो लगि ध्यान धजी ... अभिमाना ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

म मोउग्र पार द्रहू दे अम मुमाना ॥ जब विधि के जी पग गर्व मिटो सम ॥ तब अकाश
वानी कीनी प्रभ ॥ वानी मक्ति हरि शबद उचारा ॥ सृष्टि रचो विधि चार प्रकारा
जगत दिडावउ हमरी सेवा ॥ तै सेक सो निरंजन देवा ॥ मउ सेवा तउ अबवरव
तावउ ॥ तो तुम बंधन वसिह दुख पावउ ॥ ६३ ॥ दोहरा ॥ तेइ रचउगे सृष्टि तुम जोम
उ रक्षा कान ॥ तिः ते अधिक न रचि सक कउ प्रपंच सम तप प्रवीन ॥ ६४ ॥ सोरठा ॥ सम
आप क मुक्ति ज्ञान जो तुम सो जो सृष्टि सम ॥ मन के स्व त्र प्रमाण ते सेउ जग हम रम
रहो ॥ ६५ ॥ त्रेभि नो बा चौपाई ॥ तेमि नु कहे सनक प्रभृति वी पत्ति ॥ हरि विप हत वचनक
हे अरु जन प्रति ॥ हरि एक मल ते प्रगट भयो जब ॥ चार वेद हरि ब्रह्म दीये तव अ
त्ति शोभित तते रे मुख चारो ॥ इक इक वेद ऐक मुख धारो ॥ चारो वेद कृष्ण के स्वासा जे
गता रन को कीय प्रकाशा ॥ प्रगटे विधि अंभ जते जब ही ॥ ही पर जो गुण उपदेवात
वहो ॥ पुनि वाणी प्रकाशा ते भई ॥ कारज विरंचि तप स्या जाई ॥ ६६ ॥ दोहरा ॥ वाणी भ
ई अकाश ते सु नी श्रुति ए दे कान ॥ तब हरि जो गुण मिट गयो ध्यो विधी ता ध्यान
॥ ६७ ॥ चौपाई ॥ वर्ष सहस्र ऐक तप कीनो ॥ पुनि विधि को हरि दर्सन दीनो ॥ हरि विरं
चि को आज्ञा कीनी ॥ सृष्टि रचन की विधि कहि दीनी ॥ विध मस्त क धारे हरि आज्ञा
अंतर ध्यान भय जगनाथा ॥ हरि की आज्ञा ले विरंचि तब ॥ सृष्टि अनेक प्रकार
रचो सब ॥ वउर रजो गुण उपजत भयो ॥ मायाप्रवल तप्यान दुर गयो ॥ हम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४८१
अस्वमेध

हो हो जगके करतारा ॥ मैं तुम जेंअभिमानअपारा ॥ ६८ ॥ दोहरा ॥ ज्ञानदृढा
पाइ तप भे विसरगा सो विधसोइ ॥ माया प्रबल गोपालकी जीति सकै नहीं कोई ॥ ६
९ ॥ चौपई ॥ सुनपारष ब्रह्मतौइअवसर ॥ चल्यो मुद्दितलेचारवेदकर ॥ प्राप्तिभ
यो हमारे असख्याल ॥ वचन कहे मुषसों अहंकृतवल ॥ रे रिषकहि वचनउचारे
मति मदमत न ज्ञान विचारे ॥ रे रिषतुम सागर जल माही ॥ तपु मांडहै आइततही
तुमतो मुझते वडा न होई ॥ दूजे तए चार मुष हम महो सोई ॥ चारवेद मुझ वदनतेनि
वासा ॥ हम कीना सभ सृष्टि प्रकाशा ॥ १० ॥ दोहरा ॥ केतेनेतुम से सृष्टि मझ उपज
त होत विनास ॥ तुम से केते कहत मझ अहिकी पा तुलतधि सहितवास ॥ ११ ॥ [illegible]
वाचः ॥ चौपई ॥ कहि रिषि पारष सुनकौला ॥ वचन विरंचि कहे अभिमाना ॥ मुझ
कौ तुम उपज्यो अहंकारा ॥ वचन कहे सुन हृदि एगवारा ॥ रे विधदुए रतो
गुण मांही ॥ कर्ति के मायापर चनतनाही ॥ मझदेषत विधवड फुतप्रकाशे ॥ सृ
ष्टि सहित ले वड ऊर विनासे ॥ तैसे एक तूहि अज्ञानी ॥ भगतनकी महिमा नहि
जानी ॥ दूर होह हम दृगन आगे तुम देषत मझको दुषलागे ॥ १२ ॥ दोहरा ॥ य
हु वच कहि प्रगटतम भयोअंधीपवन अपार ॥ तोप्पति हू पन सृजई ॥ भ
यो महा अंधार अपार ॥ १३ ॥ चौपई ॥ दोनो जीय अभिमान वंधोतम ॥ मझजीय
कहो वडो विध ते हम ॥ विधजीय कहो वडा हम सम ते ॥ चारवेद पाए मझ
के४

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प्रभ ते ॥ मुरुअरु विध जी पग रखु वढायो ॥ तव कहि दुहन को पवन उडायो ॥ वे
ग पवन लै चल्यो आकासा ॥ पायो महा वफ़ुत जी पच्यो सा ॥ अंधकार न भगवान
उठायो ॥ दोनो को अति दुख उपजायो ॥ उरध्यो ब्रह्मलोक के तत्ता ॥ अष्ट मुख धारि विरंचि
पाजहा ॥ १४ ॥ दोहरा ॥ अष्ट मुख विधि पाय जहा तहा परे हम जाइ ॥ महा पवन तव
भिटगायो द्वार पर रेविधि आइ ॥ १५ ॥ चौपई ॥ द्वारक प्रति भाषी हम बाता ॥ भीतर जा
व कहो विधाता ॥ विधि कोह मरा नाम सुनावउ ॥ सकल वृतांतु भाष समझाव
उ ॥ द्वारपाल निरखो चतुरानन ॥ भीतर गयो हरष्यो प्रभु ने मन ॥ अष्ट मुख बेष
हि जाइ सुनायो ॥ विध मुख चार द्वार तुम आयो ॥ चारो मुख महि वेद विराजत ॥ अरु
द्वार मेहि छवि छाजति ॥ विध मुष द्वारक को पकहि बाता ॥ भीतर ल्याउ चतुर्मुख धाता
॥ १६ ॥ दोहरा ॥ द्वारक प्रति विधि अष्ट मुष भाषे वचन उचार ॥ वेग लियावउ चतुर
मुख जो ठाढा विध द्वार ॥ १७ ॥ चौपई ॥ द्वारपाल आज्ञा लै धायो ॥ दुहि ठा चतुर्मुख
भीतर ल्यायो ॥ आवत दृष्टि ए निवायो माथा ॥ वकदाल भ हम विधि के साथा ॥ वैठा
मान विधि मैं देखो जब ॥ अष्ट मुख हम के भिरष्यो तब ॥ अष्ट मुख विधि कहयो
हि कवन ॥ कवहु न देख्यो सुन्यो मुरु अरु वनन ॥ सस्य पुरि विध होइ कदाचित ॥ आ
यो इहां कवन कारज हित ॥ अष्ट वक्र मुख वचन उचारे ॥ तुम है कवन लोक पग धारे ॥ हां
॥ १८ ॥ दोहरा ॥ अष्ट मुख कहि चतुर मुख अपनो नाम सुनाई ॥ को है तुम आयो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४४२

प्र सुभाम
ध

कहा से ग कवन प्रगटाइ ॥ २८ ॥ इति श्रि ... वाचः ॥ चौपाई ॥ चतुरमुखविधवचनउचारे
मै ब्रह्मा से ग सिष्य हमारे ॥ सप्तपुरी का दृष्टि ए जान मुक्ते ॥ संग रिष शोकक
सोचक हातुउ ॥ अ ए मुबे सुने ऊचपु कोरा ॥ दे षीपत वडो प्रताप तुमारा
दे षफ लोग सिष्य भ्र सगुरु के ॥ का पतिभ ए हमारे पगुरु को ॥ चारवर्द्धन पु
नब्रह्म कहत वत ॥ शेवके सेगद्ध सशेवतावत ॥ भली होइ गो सपष सेवक
ः ए से गुरु द व सि ष्य कुहत ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ ए से गुरु भ्र रुसिष्य के आसुन
तार उलोग ॥ वी सन से चा चार का टहल उपचित इ हि धाग ॥ २१ ॥ चौपाई ॥
सोरठा ॥ पहवच कहत प्रगटाइ ॥ सन जन मे जा भ्र ए मुब
त्या ए हत उठा इ वा सन से चा चा की ॥ २२ ॥ इति श्री ... वाचः ॥ चौपाई ॥
कहि व कदा ल वि तै सन फ प्रीति ॥ अ ए मुब वचन कहे तगरव प्रीति ॥ च
तुरमुख विधके अभिमाना ॥ उतर गापा उनके विद्यमाना ॥ अ ए मुबे जीप
व द्वार जोगन ॥ क हाद तकप फले फउन ॥ वी सन से चा चार हमार ॥ सं
बभी री ॥ संग्रा ल लाहि भरवा री ॥ जौ नके रविधर हल हमारी ॥ तोरी तेइ सकोदु
॥ चतुरमुखविधमत रुम ऊफिट तफ पकरता आइ ॥ दोनो केव उवा सुद्ध भावो ॥ २३ ॥ दोहरा ॥
हाता से नीपधार ॥ २४ ॥ ... ॥ हमदे नोवि सभ भए मा
अ ए मुबे जी प व द्वार जोगन ॥ महापवन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अंधी धार भयो पुन ॥ हनुमत तीनों पुन उठे अकासा ॥ भ्रमत गगन पायो बजरासा ॥ तीनों लेजरे हनुमत तहां ॥ षोडश मुख विध के पुर जहां ॥ तीनों गए द्वार हनुम ता के ॥ तिः विध थे षोडश मुष जा के ॥ द्वारपाल भीतर सुधि दीनी ॥ षोडश मुष विध आज्ञा दीनी ॥ जाहु रुनला व जतु मदरवारी ॥ तीनों भीतर ते ऊहं कारी ॥ ८५ ॥ दोहरा ॥ द्वारक हनुमको लेगयो षोडश मुष विध पाहि ॥ निरष दृष्टि एन के तम यो पहल विध प्रगटे कहि ॥ ८६ ॥ चौपाई ॥ षोडश मुष विध हदे विचारो ॥ हनुमको ऐक दृष्टि एक हरि धार्यो ॥ यह दो ऊ ब्रह्मा कहा ते आए ॥ हरि न कही अनेक उपाते ॥ इन कपि कपट भेस वदलायो ॥ जग मोहन नाम विरंच कहायो ॥ मे ब्रह्मा सभ जग करतारा ॥ यह दोनों कपटी छलु धारा ॥ हाथ पपार तमाटी जहां ॥ इन को ठौर दीजीये तहां ॥ तीनों उस ही ठौर वसावहु ॥ सुक देव तप वहां लेजावहु ॥ ८७ ॥ दोहरा ॥ हनुमत तीनों को पकरके दूत चले ले तहि ॥ षोडश मुष के अति वडो रजतम गुन जो पमाहि ॥ ८८ ॥ चौपाई ॥ कपि वक दाल भये ते अवन सुन ॥ आंधी पवन उड्यो वजरा पुन ॥ दुन मीए को भटगयो पुकाशा ॥ आंधका अति भयो अकाशा ॥ लेगयो पवन उडाइ सभनको ॥ प्रापति भयो महा दुष तनको ॥ रक हम मन हि तीं पचतुर मुष धाता ॥ अप एम मुष धातीस रोवे धाता ॥ चौरयो षोडश विरंच सब ॥ भ्रम भ्रम अकाश कठ पायो तब ॥ अंत कालन आ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४४२

म० स्था० म
५

ऐ तव षआना ॥ सभ हरि के जीय गर्व मिटाना ॥ ४९ ॥ दोहरा ॥ म न म्र भि मा न मिर
दौ जब हि प व न दी पो त व डार ॥ ब्रह्म ऊ हा व ती स म भ ष म्रा इ प रे तिः ह्र र ॥ ५० ॥
चौपई ॥ तिः विध के पु नी त व ऊ लो का ॥ पुरुष ना ए सभ जी य निः सो गा ॥ ह म को
ता सा क र हि म्र पा रा ॥ पा हे प र हि दे हि म भ ष गा रा ॥ बो ड श व दन व ती स व क्रोत
व ॥ ह स्या म्रा ० पु न ह सी स भी स व ॥ विध व ती स म भ ष जी य म्र भि मा ना ॥ क्रोध
ति ह म सो व च व ष आ ना ॥ दुहिता क हा व ऊ म ऊ वि ह मा ना ॥ त म स र ष न ही म्र
प व हा ना ॥ ५१ ॥ दोहरा ॥ तु म म्रा ए स भ भे ब धा ए क व न तु मा रे ना म ॥ स स
व च न म ऊ को क हि क ति म्रा ए म ऊ धा म ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ त व इ न मु ष ते व च प्र
गटा ए ॥ ह म हे दुहिता ए दर स तु म म्रा ऐ ॥ सु न व ती स म भ ष जी य म्र भि मा ना ॥
क्रोध ति ह म सो व च न व षा ना ॥ म ऊ म्रा गे व स स की ति तु म्हा री ॥ दुहिता ए क हि व त
हि म्र वि चा री ॥ वा ह त हे ज ग व हे प्र ता पा ॥ उ न म त भ ए न सं भा र त म्रा पा
क हि बा ड स मु ष मु हि वि दा मा नो ॥ सु भ वा र मु ष त ह स मा ना ॥ ह म तो से ऊ
गा ह क वि धा ता ॥ म्र व र ब्रह्म की सु नी नि वा ता ॥ ५३ ॥ दोहरा ॥ सु न पा र ष ज व प
ह व च न भा ष व द न व ती स ॥ प्र ग ट भ या म्रा धी प व न इ का सो ज ग दी स ॥ ५४ ॥
चौपई ॥ उ ठे दुहिता ए स व प व न सं गा पा ॥ ह म पु न उ ठा दुहिता ए के सा पा ॥ चा
र म्र ष बा ड श व ती स्या ॥ उ ठे ग ग न इ क ज ग दी सा ॥ मे म त ग ग न पा यो व

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रू सोगा ॥ परेब्रह्मचौ सठ मुष लोगा ॥ पर मधुनी त ठौर ध्वर रहत ॥ सु
षी घालोग वसत सव तहा ॥ हम कौन रषकूर तभ ऐ ॥ तासो ॥ ऐ से सि
धकहि भऐ प्रकासा ॥ प्ति: नगरन कै मुष्य वहत ते पुर सदा उजार ॥ घहा
स्या ऐ सभ कपट करि वे बुद्धि एता नधार ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ जि: नगरन कैर
ष्य ऐ ऊ ॥ कै सै लोग वसै तपुर ते ऊ ॥ चौसठ मुष बुद्धि पा सुन पाऐ ॥
मनुपुर मूढ वरविधा तऊपाऐ ॥ वचन कहे चौसठ मुष विधतव ॥ मुनपद्धि तुम्ह व
रूवे गए बुद्धि एता सव ॥ लेगऐ हम घाचौकै तह ॥ चौसठ मुष विधक्रौंच तभ पो
तुम तो सैठ सव मूढ गवारा ॥ मऊ स्या गै विधकै वपुधारा ॥ यह जगम हि हम
ऐक विधाता ॥ सा ठचतुर मुष जग विष्याता ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ काष्ठ [illegible] तकराव
लि ट हल दे फूरन घोजा ॥ सेवक [illegible] हि घहि समनकी [illegible] हमारै लोगा ॥ ५८ ॥
चौपाई ॥ जैमि नु तनमे जै उचरई ॥ पारषा सोवक दा लभकहई ॥ चौसठ
मुष विधता पश्वभि माना ॥ अंधी पवनव रूरि प्रगटा ना ॥ हम षोडश
मुष ऊ ऊ अकाशा ॥ भ्रमत गगन पा चोव रूत्रासा ॥ बुद्धि एता सकल उव तुम
वरू सोगा ॥ वरूरे तुरूप रे विधलोगा ॥ ईक सौष्य ए वो समुष जाकै ॥ ठारे
हम हि पवन पुर तां कै ॥ तह पुर फूल तबागा महि कवि ॥ स्याने हि लोग वस

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥६५॥
४४४
अश्वमेध

रिपुर महि सब ॥ ६६ ॥ दोहरा ॥ लागे हासी करन सब हमरी उरनि हार ॥
पहुंचि रंचि आए कही ऊ वै करत पुकार ॥ १०० ॥ चौपई ॥ इक सौ अरु एवी सम्मु
ष जहा ॥ भूपति भए जाइ हम तहा ॥ हम को निरषग पावध जरवर ॥ रक्षा
नै न कीनै तः अवसर ॥ क्रोधत है मुष वचन उचारे ॥ कति आए तुम लो
क हमारे ॥ हम को बिध ऐ को जग माही ॥ देषे सुने अवर बिध नाही ॥ इन
सनै बिधन नभ बवना ए ॥ हम रे द्वार रषि बावन आ ते ॥ मरूपुर ते इन बेग नि
कार ॥ पहल तक रह [illegible] बिनि वारऊ ॥ १०१ ॥ दोहरा ॥ जैमिनि कहे सुन जन
न पति बिध उपज्यो अभिमान ॥ महा पवन प्रगट्यो बहुरि इक सो भगवा
न ॥ १०२ ॥ चौपई ॥ उठे पवन सो सकल बिधाता ॥ उपज्यो क्रोध करत बिलप
ता ॥ पवन उरदीन पुर तहा ॥ द्वै सत बहु पी वा सम्मुष जहा ॥ जाइ परेसि
बिध के लोका ॥ पवन [illegible] माइ दी पावह सो गा ॥ सकल भए ता के बिध मा
ना ॥ क्रोधत है उन वचन नबिषाना ॥ भेषधार को सो तु [illegible] आए ते ॥ अब तुम
माफि मले कपि पाए ॥ इनके पग सेगल पतिरा वो ॥ लाग मेल गलद बर
दि बरा वो ॥ १०३ ॥ दोहरा ॥ द्वै सत बहु पचा सम्मुष बिध उपज्यो अहंकार ॥
प्रगट्यो माधी पवन पुन ई का कर रो मुरारि ॥ १०४ ॥ चौपई ॥ पुन सम बिध उ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ठि चले अकाशा॥ ज्यु ध्यार सों उडति कपासा॥ पवन जाय दीने फुनि तहा॥ पंचा
से धाय दश मुख विधि जहा॥ जाइ परे तिः वध आगे सभ॥ क्रोध्यो ले कर खड्ग
हि एतव॥ उठ्यो कर न संग्राम क्रोध जुति॥ उर पति हनमंत सब भाँति गाएं तब
विध के अति अभिमान व ज्यों मन॥ आधी पवन उठ्यो ता ही छिन॥ उठ्यो स
कल विध गगन मंझारा॥ मनत नपा घा कप आपारा॥ ९५॥ दोहरा॥ सो
सुत ले ऊपर चरन उठे जाहि नभ वीच॥ सहाक ए प्रापति भयो मानो पङ्
वी मीच॥ ९६॥ चौपई॥ नासु हे न लागे त्व प्राना॥ भयो सभ नके म
न अभिमाना॥ सहस्र वदन ब्रह्मा घा जहा॥ पवन जाय दीने हनुमत तहा
कहि वक दाल भवि जैसु न क्रमति॥ तिः विधि को सरूप अति अद्भुति॥
पांचे तिसु रूप सभ रहत तवि कारा॥ आदि ब्रह्म जग को करतारा॥ रूप हस
वदन चहु ग सहस्र विराजत॥ सहस्र सुवननाम धा छवि छाजत॥ सहस्र च
रन भुज सहस सुहसाला॥ जग कर तार सृष्टि प्रतिपाला॥ ९७॥ दोहरा॥ द्वि
रपाल हनुमत सभन के लेग यो विधि विधमान॥ नमस्कार उठि के की यो म
ज को रिघ पहिचान॥ ९८॥ चौपई॥ मज को पछ्यो वचन विधाता॥ कहु रिखी
अर मम पनी वाता॥ कत तु मउ ठ्यो विधन के संगा॥ घाउ को कप रा तन मो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

गा॥ विध सभ उडे रजो गुण तम सों॥ तुम रा कवन कजु पाइन सों॥ छव
तुम रा वकदालभ नी मा॥ प्रापति भयो हम मारे धा मा॥ मजु सौ पर मम
न ग्रहु की नो॥ करुणा करि तुम दरस न दी नो॥ हम री पुरी कृतारथ भई
आधि व्याधि सकल मिट गई॥ १८॥ दोहरा॥ तुम रे चरण पग धारे इहा हम रे
हे अति भाग॥ पुरा पवित्र भई सकल तुम रे दरसन लाग॥ ११॥ चौपई॥ जैमिन वाच:॥
जैमिन कहे सुनु नृप हरखंत॥ वकदालभ रिष कहत तबि जे प्रति
कछि वकदालभ सुनु नृप कालगुन॥ सहस्र मुखा वोल्यो हम सों पुन॥ अजु
दे न सरिष बभाग हमारे॥ भए कृतारथ दरस तिहारे॥ हम रे लोग सकल तन
स्ना रहो॥ तुम रे चरण राज इहा पग धारो॥ कत तुम उद्यो विधन के साध्या॥
महा भगा त तुम श्री पदु नाथा॥ तुम देखबिन से विध वी सा॥ तुम रे सदा
ध्यान तजा दी सा॥ ११॥ दोहरा॥ महजो उठे मकाशके मागे दुहिताए व
कान॥ रज तम गुण वो धो हौ हे पे उपज्यो अति अभिमान॥ १२॥ चौपई॥ इ
न को गर्व मिटावन के हित॥ ऐसी हरि इच्छा धारी चित॥ ता ते पवन सं तो गव
नो यो॥ अस दुहिता के गगन उठायो॥ महा मेघ त स्तु जो हाई॥ भौर मा
हे कुतन एक सम सोई॥ पद्मपिप्पवि रंच वल वा ना॥ की योगर व भए तु हस
मा ना॥ कोरि जो विध गोर एक मतिभीर॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

साधु सज्जन को रचे मुरारी ॥ १३ ॥ दोहरा ॥ तन सम मान है उठि चले मन की नो
अभिमान ॥ रजत मयूष ए बांधो है यो भ्रम लग यो भगवान ॥ १४ ॥ चौपई ॥ तुम
इन के संग उड़ो शशि अंबर ॥ मह पुरातन बड़े तप अंबर ॥ भयो प्रसंन सहुं
समुझ धाता ॥ दृष्टि एक सम न उपजो मन सांता ॥ कहयो सहुं समुझ सन अहं
हि एक सब ॥ तम ही पर रजत मयूष एक बांधो सब ॥ ताते तुम उठि चले सको सां
भ्रमत गगन पायो मन त्रासा ॥ अब तुम रजत मयूष एक त्याग जस तन ॥ शांति
भवन विश्राम करहु तन ॥ हृदय सि सर रन धारहु हो पध्याना ॥ ताते हो इश्वर
सकल ध्याना ॥ १५ ॥ दोहरा ॥ यह वच स सहुं सुवदन कहे सु ने सम नविध कान
साध मिले समुत्तिसु बभ यो मिट गयो मन अभिमान ॥ १६ ॥ चौपई ॥ दृष्टि एक सम
मन धारयो जो पध्याना ॥ पल कभे दसिम सों भगवाना ॥ उत एगयो मन ते
सभ सोजा ॥ प्राप्ति भए वड पत्तिज लोगा ॥ उत कोयध्यान भए सुचेत तव
अचरज नि र्भय देवि सो सब ॥ तुं गउ घार देवि सभ जोई ॥ यह पुर लोकु
हमारे होई ॥ आप वीच पुन न किं नु केई ॥ यह सभ वात सुपन सम होई
१७ ॥ दोहरा ॥ सुन अचरज न हम सों दृष्टि एक की नाश्यो अभिमान ॥ ता के मद मे
टन निमित की यो चरि तभ गवान ॥ १८ ॥ चौपई ॥ [illegible] ॥ जै मन कहे
सुन रूप प्रभु तो कहि ए ॥ यह वचक कहे सि जे प्रनि रेभव वर ॥ पुन अचरज न भो ऐसा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

७५
४४८
अश्व
मेध

गिरधर प्रति ॥ बडो पुरातन दिषीयत श्रीपति ॥ पुन पारष्य दोनो कर जोरे ॥ कह्यो
कृपा करि रिषि प्रभु मोरे ॥ पूर्व पुरातन तुम रिषि देवा ॥ मुझ को उचित न करें तुम
सेवा ॥ तुम देषत विनसे विधवीसा ॥ धर्म सहस्र मुष तुम पग सीसा ॥ तुम को
जानो कृष्ण समाना ॥ सचि सो सेव करी विधनाना ॥ १८ ॥ दोहरा ॥ दरस तुम्हारे ते
कृपा करि वेग धर्म के तात ॥ यज्ञ कृत पारष्य की जीते होइ धरम कुसलाति ॥ २० ॥ चौप
ई ॥ रिषि को आज्ञा करी कृष्ण पुन ॥ चले हस्तनपुर वकदालभ मुनि ॥ होइ प्रसे
न कृष्ण पग धारहु ॥ दरसन दे सभ लोग उधारहु ॥ श्रीपति की आज्ञा रिषि भ्रा
नी ॥ जान पुर को मनसा उठ रानी ॥ सिव का पर चडाइ वकदालभ ॥ आपुन सं
ग ले चले जगत प्रभ ॥ तौ ही छिन हस्तनपुर प्रापति भयो ॥ वड्यो आनंद राजा कद्रु र
गयो ॥ चल्यो तुरंग जहां यदुपति भाउ ॥ पूरन दै साठ मो ध्याउ ॥ २१ ॥

इति श्री भाषाय ... अश्वमेध वषाने ॥ दै साठ मो ध्याउ ॥ दोहरा
... ना ॥ १२१ ॥ ६२ ॥ ... जैमिन कहे सुन जनमेजय भूपति
वर ॥ सुहृत तुरंग आसरि रिषि वल्याए हरि ॥ सेन महा आनंद हित भई
वधित तदु रिगई ॥ रत्न वचित चेठो लड्व ... त ॥ ताके मधि वकदालभ
भरा जतै ॥ चंदन रष्य मतारा वधे तवि शाला ॥ तापुर ... द भुज तमहरू वि रा
ला ॥ वे ठत ता मुदित तनंद नंदनै ॥ आवना शो अव जतादु वकदून ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

इच्छा स्यपनु निचलेम तुरंगा ॥ चली जइ सैना सम संगा ॥ १ ॥ दोहरा ॥ अस
तहा ग्रापति भयो जे धन तसुत पुर माहि ॥ बाढे चतुरंग निचमू गई सकल
चलितताहि ॥ २ ॥ चौपई ॥ जैयद्रथ न पभार खा मांहि मारा ॥ प्रणकपि अर्जुन की
यो संघारा ॥ चंद्रभानतिः सुतको नामा ॥ बालक वै सरूप अभिरामा ॥ सावा
लक पुरके भूपाल ॥ तिः माताको नाम दुसाला ॥ तः दीना प्यारा जनुता तको ॥ व
ठा होइ सबु देस मा तके ॥ दूत नताके आनसुनायो ॥ तुम रे नगर तुरंग म
आयो तिः तुरंगके अरजन संगा ॥ साथ अमित सैना वहु रंगा ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ च
लि आयो तुम रे नगर अब युधिष्ठिर राइ ॥ जो शत्रु तुम पिताको अरजुन संग
सहाइ ॥ ४ ॥ चौपई ॥ हम दे ख्यो है आप नेनैना ॥ पारथ साथ प्रबल अति सैना ॥ तु
म राषि ता भा रख्या महि मारा ॥ तु जहि न छाडै शत्रु तुमारा ॥ बालक सुनम दुखित है ग
यो ॥ पुनि संभार उरि ठाढा भयो ॥ लागो मन महि करन विचारा ॥ इन तो हम राषित
संघारा ॥ जिस तुरंग मा परि चढि आयो ॥ हम राना सुकर न को धायो ॥ मु जहि न
छाडै गा मारै विनु ॥ हम रा बलु उनके आगे तिन ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ पितु रन अर्जुन सु
न निबल तनता पर चढ न न यो गा ॥ आयो अस नगनन चमू लैयेवि जे हत सुहि गे लोग
॥ ६ ॥ चौपई ॥ हम निरबल तब हत्या अति बलवाना ॥ हम रा बलु न हीं वै जेस माना
जो हम मजा गत हैर नमाही ॥ बलविनु लेउ न छत्तु लजाई ॥ रन कपि जीति सकै न

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४४१

अश्वमेध

हो सोई ॥ युद्ध की येती नु जीति न होई ॥ पुनि विचार कीयो मन माही ॥ या तुंग मोइ ईश्वर
कोई नाही ॥ आगे पाछे होइ नाश तन ॥ ता ते मोहि उचित जे ऐ रन ॥ यह विचार की
नो तिं: अवसर ॥ उठ्यो वभ्रु रिशी रिप योध रन पद्री ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ ता ही छिन अ
स्तु कभ पायो वालक आगे आन ॥ ऐसे ते अवसर वन्यो इछा सौं भगवान ॥ ८ ॥ चौ
पई ॥ अस्तु कभ यो न रथो सुत मो ता ॥ सो वत करत महा दिन लपाता ॥ सब पोटीति
व्रह्म करत पुकारा ॥ कहत परे रोगी आगन मझारा ॥ सुत को ले छाती परिधारा ॥ व
लौं वठ्यो मन शोक अपारा ॥ रथ्य वे के हरि पार पयजहा ॥ सुत ले गई दुशाला तत
ह ॥ के स उषार कीयाम सब कारा ॥ ठाढे सभ तन ता रथ सिंगारा ॥ वचन कठोर
करे अरजन प्रति ॥ पापी प्रबल महा न्यो हम रो पति ॥ ९ ॥ दोहरा ॥ रे अधमा नि
र्दै वित्ते प्रथ्यो रांडकी यो माहि ॥ पुनि हम रा सुत हतकी पोने कुलाजन ही तो हि ॥ १० ॥
चौपई ॥ भारथ महि मारयो हम रा पति ॥ बभ्रु रि आइकी नो वा लक हति ॥ हवा पोजो रि
चमूं वऊ संगा ॥ कीयो कुप रभि सपाइतु रंगा ॥ पितपा चमूं आगम सुन वालक ॥ भेक
रम तकु भयो ततकालक ॥ निजवल हीन ज्ञान मऊ ताता ॥ तां ते की पा आपु नो घाता
तुम अति वली कृष्ण के दासा ॥ वालक हनत न कीनो त्रासा ॥ पति को मार रांडकी नो अप
अव सुत हन्यो न परी द पातुऊ ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ हम सुत के संग जरोगी अरी पति के विहू
मान ॥ निरद्ई निनवलक हन्यो अरे अधमी अज्ञान ॥ १२ ॥ चौपई ॥ तुम को उचत निचडो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वालपरी ॥ लोग कहत हैं तुम ऋद्धि भगत हरी ॥ प्रथ्य मति मुकुंद दुख दीयो हन्यो पति
पुन दुखदी पोको कीयो वालक हति ॥ यह वच कहति सुरऊ चपुकारति ॥ सुतको ले अप
नेसिर धारती ॥ करत विलाप उठ अगम अउ ताता ॥ प्रथ्य भि अगानि जरा वजमाता ॥ पति
दुख सस्यो महा कठनाई ॥ तुमरा दुख सुत सह्यो न जाई ॥ जो नाथ निते अरजन सुत मा
रत ॥ तो पति स्यों तन अग्नि जरावति ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ सुतको आधिक संताप मो पहि
सह्यो न जात पह ॥ अग्नि जरावो आप केसुत दे जिपाइ प्रभ ॥ १४ ॥ चौपई ॥ वहुत
वेनती करि दुशाला ॥ सुन प्रभ तब कहत पोनंद लाला ॥ केसुत देऊ जीवाइ हमारा
केमुंज की जै अग्नि अहारा ॥ शरन तुमारी दीनदयाला ॥ संकट मोहि हरऊ ततका
ला ॥ दीन वंधु करुणानिधि श्रीपति ॥ आदि पुरुष अविनाशी अवगति ॥ हमरे सुतको
दीजे प्राना ॥ अव हीय हत की जै सविधाना ॥ तुमको शरन परे की लाजा ॥ कीजै सि
द्ध हमारे काजा ॥ १५ ॥ जैमिनो वाचः ॥ दोहरा ॥ जैमिन कहै सुनऊ न्रपति कृपा
श्रवन मन धार ॥ ऐसे वचन गुपाल को कहे दुशाला नारि ॥ १६ ॥ चौपई ॥ वातेया
वि जैदया उर धारी ॥ तुमको लागति है वहिण हमारी ॥ जै यदुपथ जो भारथ मो मा
रा ॥ गति पाई तुमरे भरतारा ॥ जो सुन मुख जुद्ध संग्रामा ॥ तिनको हित स्वरग
विश्रामा ॥ सोई सूर भाष्य मोमारा ॥ क्षत्र धर्म कीनो उपकारा ॥ जस पायो त्रैलोक
अपारा ॥ सत्य मान वच वेद उचारा ॥ हम जे आए न गर तुमारे ॥ सैना अनगन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२६
४४८

अस्वमेध

संग हमारे ॥ १७ ॥ दोहरा ॥ वैर भीउ हमरे नह चलि आऐ है काज ॥ अस्वमेध
कुत गजपुरी कौ पौ पुहचे एर राज ॥ १८ ॥ चौपई ॥ मै कर तुम राषत डरा ना
कौतिक मत कुभ चौत निधाना ॥ इहा न कहू परद्रसे ग्रामा ॥ मिलत आइ इह हरि क
र तप्रणामा ॥ पद्रुन उचत यज्ञ के अवसर ॥ है तक ता रष की ये दरस हरि
आवह हम रछा करै तुमारी ॥ चैतन की जे वहत एा हमारी ॥ बोली वजु रेदु शा
ली नारी ॥ सुन हो प्रैम हा हकारी ॥ मु अप तभि आवत नही तेरी ॥ तुम र
छा करि सक जन मेरी ॥ १९ ॥ दोहरा ॥ नगन होत षल सभा महि राषि सबी
न ही नारि ॥ कैसे रछा कर कमुग कहत वचन वीचार ॥ २० ॥ चौपई ॥ नगन क
रत ध्ये द्रुपदसुता जब ॥ तुम पांचौ ठाडे देषत तब ॥ षैचत वसन देत वज्र त्रा
सा ॥ सभ मिल करत परस्पर हासा ॥ सकी न राष आपनी नारी ॥ कैसे रछा

क रो हमारी ॥ कहु न सरयो जब तुम रे हाथा ॥ तब आए त्रिभुवन के नाथा ॥ द्रुप
दसुता आचे रुद सनन सौ ॥ गई ह राषौ लज करि जतनन सौ ॥ तजु आदसन नैच
द्रु भई निरासा ॥ करी एक श्री पति की आसा ॥ २१ ॥ दोहरा ॥ जब लग दासा आदस
न पद द्रुपदसुता वलु धारि ॥ तौ लौ हदे विचार करि आए न ही मुरारि ॥ २२ ॥ चौ
पई ॥ जब लग द्रुपदसुता कहु आसा ॥ तब लग हरि न हो कं पी निवासा ॥ दासा
दसन तजु आस संचे रु जब ॥ द्रुपदसुता सिमरयो गिरधरि तब ॥ जो अपना सकल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बलहारा ॥ अब हारे बल पांच भतारा ॥ ऐक क्रुसकी आस हीये धरि ॥ सिमरन
कीनो वेग स्याम घनि ॥ कहै दुसाला सत्य कहो तुज ॥ नहि प्रतीति आवति तुम र
री भुज ॥ द्रुपदसुता विपत जिन टारी ॥ तेहि रक्षा कैहे हमारी ॥ २३ ॥ दोहरा ॥
जिन राषी बल सभा महि द्रुपदसुता की लाज ॥ सो हमरी रक्षा करहि दुषभंजन
यदुराज ॥ २४ ॥ श्रीमनो वाच ॥ चौपई ॥ जैसि मनु कहि सुनहु भूपाला ॥ यह वचन सु
ब सों कहे दुशाला ॥ त्रिति आदिक रखपरी चरनन परि ॥ रक्षा करहु हमारी गिरधर
जगतगुरू देवन के देवा ॥ अखिल भवन महि तुमरी सेवा ॥ तुम अनाथ के नाथ
मुरारी ॥ परी आइ हम शरण तुमारी ॥ भवन चतुर्दश के तुम नायक ॥ संकट हर
न दीन सुषदायक ॥ भगत अधीन कृपानिधि स्वामी ॥ सकल घटन के अंतरजामी
२५ ॥ दोहरा ॥ जैसे राषी द्रौपती करुणासिंधु गोपाल ॥ तैसे रक्षा करहु प्रभु कहि
कन प्रभ नंदलाल ॥ २६ ॥ चौपई ॥ जैसे अजामेल को तारेया ॥ भस्मासुर तेई शर
उवारेया ॥ जैसे अंबरीक निस्तारेया ॥ द्रुपदसुता को आपु निवारेया ॥ जैसे गज ग्राह
ते राष्या ॥ ता कहित वाहन तजि धाया ॥ जिन संकट महि तारति चिता रेया ॥ तत छिन प्र
भुता को दुख टारेया ॥ भगत अनेकन को दुख हीनो ॥ संकट से मै भजन जिन कीनो ॥ ते
से रक्षा करहु हमारी ॥ दीनबंधु हम शरन [illegible] तुमारी ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ शरन शर
नि करि सुत सम हत लागी चरन गुपाल ॥ तुम बिनु हम राको न हि रक्षा करि नंदलाल
२८ ॥ चौपई ॥ उद्यो नैन ते नीर दुशाला ॥ तिन सों भीजे चरन गुपाला ॥ तिः जल को जा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४४४
अश्वमेध

न्हे हरि ऐसे ॥ अरघु दीपो विवधन तलतै से ॥ राषु राषु हरि कहे प्रीति पुति ॥ दीनै वे
ग प्रान अपुने सुत ॥ देषी दुषत दुशाला नारी ॥ तत छिन भए प्रसंन मुरारी ॥ भु
जभरि हरि उछाइ लीयो बालक ॥ मष पर कर फेर्यो ततकाल कु ॥ बालक के आए
घट प्राना ॥ उठ्यो लागो सिसु पग भगवाना ॥ २९ ॥ दोहरा ॥ मुदित दुशाला सुत
सहित लागी चरन नृपाल ॥ राजु किसी को देव चलहु करु एा कहि नंदलाल ॥ ३०
॥ चौपई ॥ वचन सुनि भए प्रसंन नृपाला ॥ सुत को दीनै राज दुशाला ॥ सुत समेत
तुम चलहु हस्तनपुर ॥ दरसन दीजै नृपति युधिष्ठर ॥ संग ले चलहु प्रजा नर
नारी ॥ लीजै आज्ञा मान हमारी ॥ पत्र सिपह रन कछिछ का रस्सा वजा अपुना राजु
करहु सु बपाहु ॥ आज्ञा फेरी नगर मझारा ॥ चलहु गजपुरी सभ नर नारा
सुन सभ प्रजा अनंदित भई ॥ उपजुयो सुष चिंता दुरि गई ॥ ३१ ॥ दोहरा ॥ औमल कहे
सुन कृन्न पति तै दृष्यता पसुत साथ ॥ सकल प्रजा ले उठि चली आज्ञा ले यदुनाथ
३२ ॥ चौपई ॥ चल्यो तुरंग पग जपरि हरि षत ॥ संग अच्छ हुहि शस्त्र रमति पति ॥ सभ मन
पवी चच्छन जै शाजित ॥ कुसुम सहित मदमत छवि छाजित ॥ चारो दिशधिकार चल्यो तुरं
गा ॥ ल्यायो जीति महीपति संगा ॥ वचन उचारक हे गिरधर तव ॥ हम तो जीय अब निह
चिंत भयो अनु ॥ पूरन भयो भगत के काजा ॥ वृषध पूजे तब चल्यो गज हवाजा ॥ चारो दि
शा को जीत चल्यो घर ॥ तन मन पद मसा भगात युधिष्ठर ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ वृषधपति के
छनन कु पाकरी युधिष्ठर राई ॥ कोमल तनु अंग भजा तेकर मति प्रभ मस हो न जाइ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

३४ ॥ चौपई ॥ आजु वि बैठा मके अवसर ॥ ठाढ़ार ह्यौ एकही पग पर ॥ नित
प्रति सहस्र चौरासी ब्राह्मण ॥ चरन पषारत अति हरषित मन ॥ ठाढ़ा नित प्रति कि
रत हैं मनि त ॥ अग्नि बीच है मत जव तिल घृत ॥ वर्ष प्रथं तम है अमुपा योर
भयो सभ म सुफल जो तिह पआयो ॥ क्युं न करै अम सम सुफल विधाता ॥ जिः सा
हा इश्वर जन सेआता ॥ अम मु की यो ब्रह्म चर्य मंदि पार रष्य ॥ तो ते सिध भऐ सभ
स्वारष्य ॥ ३५ ॥ दोहरा ॥ चारौ दिश के नृप प्रबल जी ते विजै प्रधान ॥ भयो अनंदि
त आज हम कहत भए भगवान ॥ ३६ ॥ जैमिनोवाचः ॥ चौपई ॥ जैमिन कहै सु
न जनमे पाला ॥ सो से वचन कहे नंद लाला ॥ तव पारष्य हए एके पग लागा ॥ वोले
तव वचन ही येअनुरागा ॥ यह जो चारौ दिस के भूपा ॥ छत्र मुकट सिर महा स
रूपा ॥ चवर सीस उर मोतन माला ॥ सभ नृपत मजो ते नंद लाला ॥ कप्र जो कार
ण रूप मुरारी ॥ भगत वछल प्रभ कृपा तुमारी ॥ अपुना विरद सत्य तुम की
नो ॥ नृप सभ जी त सुजस मुजदीनो ॥ ३७ ॥ दोहरा ॥ करन केशव नंद रत
म मम ष अरे भकी यो तो हि ॥ चहुं दिश के नृप जी ते लुम सुजस वढायो मोहि ॥ ३८ ॥
चौपई ॥ तौ तुम रक्षा करत नृपाल पति ॥ मो पहि जी ते जात न किन पति ॥ ऐक सुध
ध्वे सूर भगत तुज ॥ किन मंहि दीयो उठाई गगन मुज ॥ सुरष्य सुधन्वे वाल्ला
रन अचल ॥ ति सौं नहि जीत हि त्रिलोक बल ॥ वज्र रव भ्रवाहन वल भारी ॥ तिन
नी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४५०

अश्वमेध

तेरहकाकरीहमारी ॥ पुनताम्रधजअतिवलवाना ॥ जिनकेवलनहीकोऊसमा
ना ॥ हीरवल्लकेअवरनसमसर ॥ तिनतेदीनीकंन्यासमहरि ॥ ३९ ॥ दोहरा ॥ वा
लपपंतहिभगततुमचंद्रहासभूपाल ॥ जिनतेजीतनसकेकोवसिकरिदीयोगु
पाल ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ ऐसेभूपतिजीतगुपाला ॥ संगलेचल्योधरमकीसा
ला ॥ केऊनृपतीतेकरिसंग्रामा ॥ केऊमिलेसहुतेघनस्यामा ॥ ति
महीन्योवीनोतमतेसै ॥ कारजभगतसिधकीयाऐसे ॥ वकदाल्भ
अविवतलनिधवासा ॥ जिनकोसदातुमारीआसा ॥ पुरुषपुरातनस
वरिवीअवरि ॥ तेपतपकरमहातपीस्वर ॥ तिनकोतुमलेचल्यासंगा
था ॥ भगतआधीनजगतकेनाथा ॥ ४१ ॥ तोरा
भनतेनमैएकहुसुनउअवनदिगजोहि ॥ ऐसेवचनगुपालसोंकहैपिता
मातोहि ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ बोलेकृपासिंधतुमपारथ ॥ सिद्धकीयोधमिजुकेस्वा
रथ ॥ सहिनसकेतुमभगतनकेदुष ॥ तातेदीयोदिछपरकोसुष ॥ धमिता
तद्रिडभगतहमारा ॥ हमभगतननतेकवहूनन्यारा ॥ मैहोसदाअधीनभग
तके ॥ ताकेवलकरिचलेनगतको ॥ ठाकुरलोहुरजिमदासा ॥ ताकेशत्रुकरो
सभनासा ॥ मेरेभगतनकोकोऊदुषावे ॥ सोईनिजपापपाईदुषपावे ॥ ४३ ॥ दो
॥ हमआरुहमरेभगतमहिअंतरालनहीकोइ ॥ तोभगतनेदुषदेवहीमुझै

वा५

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दुषावै सोइ ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ जपतपपूजादानविधाना ॥ पढ़ते मती रषाइ स
नाना ॥ शास्त्रसुम्रितवेदपुराना ॥ पढ़तसुनावतकथाकथाना ॥ गावतना
चतवजंत्रवजावत ॥ षटदरसनवज्ञभेषदिषावत ॥ निकटन ताउकुवहै हम
ताके ॥ भगतभीड़ सेवहि तहँ मताके ॥ धर्मता तेप्रियभगत हमारो ॥ तातेहम आधी
नतुमारो ॥ हमधर्मजके हाथविकानो ॥ रहे आधीनदासवतमानो ॥ ५५ ॥ जैमि
नोवाचः ॥ दोहरा ॥ जैमिनि कहै सुन जनपति पारथ प्रति भगवान ॥ ऐसे वचन क
है मुष्टित सुनै पितै सुषमान ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ शीघ्र सुचलतिभे नंदलाला ॥ स
म्रथ चढ़ि दशकै भवाला ॥ छत्र चमर सिर मकुट विराजित ॥ हीरा जड़ित मनन
पछवि छाजित ॥ चोआ चंदन अगर गज भीने ॥ वसन विचित्र विविध रंग कीने ॥ म
गमद आदि सुगंध सकल वरि ॥ शोभित गज मोतन माला गरि ॥ हरषहीयेपठ
लेततकाला ॥ धर्मजादेषनहित नंदलाला ॥ उपजीप्रीति हृदे जगवेदन ॥ निर
षोवेगधर्मकोनंदन ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ ऐकु वर षुप्रनमभयोनहीदेष्योपमता
त ॥ देषनकोहीयचाहितहरि चलेउताइलजात ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ शीघ्र चलत कहि
है भगवाला ॥ निरषों दरसु धरमराजाना ॥ चलेजाहि मारिग नरिसिवाशर ॥ दि
नकोचलनिप्रकासप्रभाकरु ॥ निशिको दीपकु गंधअपारा ॥ उपजेतवासु अ
नेकप्रकारा ॥ काहूं नकरहि नेकु विश्रामा ॥ चलेजाहितनपमन श्रीरामा ॥ पुनि
हरिवचनकहेसुनपारथ ॥ तुमसोंकहि हो वात जथारथ ॥ ५९ ॥ दोहरा ॥
म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वहम आगे जात है हस्तनपुर की ओर ॥ देउं वधाई धर्मसुत पग लागो कर जो
र ५० ॥ ॥ तत छिन चले कृष्ण हस्तनपुर ॥ हृदै प्रीति कछु मिलहि पुन्य पुर
वी छै सकल छाडि के सेना ॥ चले एकले अंबुज नैना ॥ पंकज चेता ही छिन नहि गगज
पुर ॥ वाग वीच उतरे परमेस्वर ॥ दूत जाइ कह्यो धर्मज प्रति ॥ उतरे आई वा
ग मद्धि श्रीपति ॥ हस्तनपुर की दाहिनि ओरा ॥ उतरे परे है हय मिलि ठौरा ॥ पीछे च
ली तुरंगम आवत ॥ संग सैना अरजन छवि पावत ॥ ५१ ॥ ॥ सुनत पृथ
ए र मुदित मन विन सगरो सभ सोग ॥ दै हू वधाई धर्मसुत मन हरख तसमहेलो
ग ॥ ५२ ॥ ॥ दुंदुभ शब्द बजावन लागे ॥ उपज्यो सुख सभ मन सभ भागे ॥ द्रु
पद सुता आरती लै कर ॥ वरसन चली मनो धन पहुरि ॥ हरि दरसन कौ
चाहति ही ये अति ॥ देखन चली द्रोपदी हरखत ॥ रखै एक की प्यास फुरती मन ॥ वि
वध प्रकार की ऐसु गार तन ॥ तव वच कहे धरम के ताता ॥ सुन हो द्रुपद सुता
मृग वाता ॥ अंबुरु गाढ तो हित मुजसा पा ॥ प्रजा के कल्याण हम रेहा पा ॥ ५३ ॥
सदा प्रजा के कर्म महि हमसु अरु तुम सवधान ॥ उत कृष्ण उतरे वाग मद्धि कैसे व
नै विधान ॥ ५४ ॥ ॥ कहै द्रोपदी सुन वच्छ दीपति ॥ प्रजा हे
मजे ऊं करत पहतु जगत ॥ अरु जे ऊं करत पुन्य अरु दाना ॥ पुन्य मे ताको
त भगवाना ॥ पतौ ताकर तव पाप महुरि जवही ॥ दान वहुत न पहें है तव ही ॥ दान
पुन्य आवत कि काजा ॥ तव नहि तो श्री वृजराजा ॥ पस दान के मल्ल रमा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पत्री॥ तिःसे वे चिन्ह हेत तन ही गात॥ पुष्प मै हरि सेवा करि ली जै॥ जावत हता
आज्ञा मुजरी जै॥५५॥ दोहरा॥ धंन्य धंन्य तुम द्रोपदी कह्यो धरम भूपा
ल॥ साजि आरती लै चल जु त्यावउ तो षग पाल॥५६॥ चौपई॥ तेग द्रोप
दी चली तहां ही॥ हरषत भए हृदे यदुराई॥ द्रुपदसुता को दई वधाई॥ जी
तचतुरदिश आरत न आयो॥ पत्र धरम सुत तसु फल कराये॥ हसि द्रोपदी चर
न हत ऐला गी॥ भयो आनंद चिंत सव भागी॥ कहै द्रोपदी सुनउ गुपाला॥ करु
नामे ले सभ तुम नंदलाला॥५७॥ दोहरा॥ करन करावन हार तुम करुनासि
धगोपाल॥ सिद्ध मनोरथ की ये तुम धर्मसुत नृपाल॥५८॥ चौपई॥ जैमि
ना वाचः॥ जैमिनु कहै सुनउ नृपाला॥ गजपुर महि आए नंदलाला॥ द्रुपदसुता
आन्यो हरि साथा॥ हरि धायो धर्मसुत पग माथा॥ धर्म तात हरि को उठ इंकर
ली पा लागा इके ठ सौ भुज भए॥ मुष मस्तक चूमन की ए हरस सो॥ महा आ
नंद भयो न पवित तसो॥ धर्मज हरि को कीयो प्रनामा॥ पायो सुष मन तन विश्रा
मा॥ और भी तस महर पग लागे॥ वड्यो आनंद ती ए अनुरागे॥५९॥ दोह
रा॥ दई वधाई धर्म को आनंद भे भगवान॥ आरत जन आयो जीति के सकल
नृपति वलवान॥६०॥ चौपई॥ पूरन भए तुमारे काजा॥ आयो कि स्वारोहि स
वा जा॥ नर्क संपूरन ऐ कम भयो अव॥ आरत जन त्याये जीति नृपति सव॥ आए

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४५२

अश्वमेध

सवन पदरस तुमारे ॥ महाबलीकुलके उजिआरे ॥ हुए केतक नृपाल नील
धुज ॥ पावकसुतनि समेत हंसधुज ॥ सुरथ सुधंन्वा बली सुरु भगत ॥
तिनकों प्रापति भई परमगति ॥ रनमति उतरे तिनके सीसा ॥ कंठमाल धरे
उरईसा ॥ ६१ ॥ दोहरा ॥ नृपति मोरधुज महातमा ताम्रधुजके तात ॥ दीपे
श्रद्धा तन विप्रकों कृष्ण कही सब बात ॥ ६२ ॥ चौपई ॥ वीर ब्रह्म राइकी कंन्या पुन
पतसों पतिली पायौ भोग पकाल गगुन ॥ ताकौ व्याह्यौ यमराज जमाता ॥ पुत्र करन
ल्यायौ सेज ताता ॥ निःदारुण संग्राम रचायौ ॥ तहां पारथ्य सुतन वंतकुंतायौ
तव यमराज पलायन भयौ ॥ पुन तुरंग कुंतलपुर गयौ ॥ चंद्रहास सुतःपु
रकौ राजा ॥ विन मुरु भगत तम्रवरु नहीं काजा ॥ बाल प्रथयत भगत मुरु कीनौ
तनमनधन सर्वसु मुरु दीनौ ॥ ६३ ॥ दोहरा ॥ जनमें कंन्या तिः भगत की नार
दशैं वप्र गटाइ ॥ सकल सुनाइ ईवि जेकों कुरुण करहि तुधार ॥ ६४ ॥ चौपई ॥
चंद्रहास निज भगत हमारा ॥ नृपनि कीनौ मुहि विवध प्रकारा ॥ सामो तुम
रे दरसन हित चलि ॥ सव नृपति नहीं समवा के बल ॥ वदुऐ तुरंग गस्सु मुद्र म
ह्नि गयौ ॥ सकल चमू मन अचरज भयौ ॥ हम पाछि लागे तुरंगके ॥ पांचौ
रन पवली संगके ॥ इक धरी उडी सागर माहीं ॥ पांचौ सरह मगऐ तहांहीं
वकदालभ पवत तप सीं वरमांति ॥ विनसे वीस दृक्रिणातः निरषत ॥ ६५ ॥ दोहरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सो अब कहा लाभ ए वन नृपति त्या ए हैं हम साथ ॥ धन सत देखे वी सवधि बूट का
पछताव हाथ ॥ ६६ ॥ चौपाई ॥ नृपति वभ्रु वाहन वलवाना ॥ सुत पारथ के तें लोक
पेधाना ॥ तिन सो युद्ध की चोव बाधे जे ॥ धन्य करन नक तस्कर मह मुज ॥
की पोव भ्रवाहन पितु हत तत तब ॥ मणि का दर्भ मत ग पोषि गाल तव ॥ नव कुल ना
ग की पे वसि काला ॥ त्याकी पो मणी वा क ततकाला ॥ तह ग्रा व र ग्रा च र ज पुन भ
ये ॥ पारथ के सिर जु पहिले गयो ॥ तह ग्रा न्यो सिर जु वाल कपु धक ए ॥ जो स्यो
ग्रान पिता के तन पर ॥ ६७ ॥ दोहरा ॥ सावधान ग्रर जुन न भयो ग्राइ परे घर पा
न ॥ वजुए व भ्रुवा हन करी सभ सेना सम धान ॥ ६८ ॥ चौपाई ॥ सो ई व भ्रुवा हन ग्र
रजुन सुत ॥ ग्रा यो तुम रे दरसन मात युक्ति ॥ ग्रा व र व डे भे पति वि ख्याता ॥ त्या पो
साथ जीत तुम भ्राता ॥ तुम रे पुण्य प्रताप विशाला ॥ ता ते सभ गए भे पाला
पुन धर्म जको कह्यो मुरारी ॥ प हि न ग्रो भ ग हृदै विचारी ॥ भ ग्रो ग्रो रे तुम सु
जसु व थ्यो ग्रा पति ॥ स म ह उ लघ ग पा पथ वी पति ॥ ती न लो क पुन भ व न च तु
र द श ॥ जे हि तं तं तु म से व थ्यो वि मल जसु ॥ ६९ ॥ [illegible] ॥ दोहरा ॥
नृपति युधिष्ठर मुदित मन वचन कहे नंदलाल ॥ भगत व छल तुम राधिरद रा
बीला जगपाल ॥ ७० ॥ [illegible] ॥ चौ ॥ तेहि छिन उक है सुन नृप पति वर ॥ मुदित
म है ह र ध भये पर स्या ए ॥ भल वे ह त उठे नंद नंदन ॥ प्रथम की यो कुंती को वं
दन ॥ हरि म सु क कुंती पग धारे ॥ मन तन को दुख दुंद निवारे ॥ कुंती ह पम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ स्वा ॥
५५३
अश्वमेध

जउ
५३

बहुवनकीनो ॥ परमआनंदमानचितलीनो ॥ पुनपगपरेदेवकीमाता ॥ ह
रषतहीचेपदीकुसराता ॥ पुषमेकुंतीपगलागोहरि ॥ मनअपुनेमेंप
हविचारकर ॥ ७१ ॥ दोहरा ॥ जननीतेकुंतीवडीऊतीवहुतलाकीतात ॥ तातेप्र
थमप्रनतादई हुतीभगतकीमात ॥ ७२ ॥ चौपई ॥ वहुरिसुभद्राकेपगलागे ॥
कुसलसंदेसपूछअनुरागे ॥ फिरैदोपदीइतउतहरिसंगा ॥ ऐकवरषकीप्र
समझामन ॥ पुनधृतराष्ट्रओरगंधारी ॥ तिनकेपगलागेगिरधारी ॥ पु
नहरिविदुरभगतकेआयो ॥ अतिआदुरदैकंठलगायो ॥ जैसेआदरहो
तपाउपति: ॥ तैसेआदरदीयोकृष्णजि: ॥ वहुरोभीमनकुलसहदेवा ॥ हरि
पगलागिकरीवहुसेवा ॥ ७३ ॥ दोहरा ॥ तिः पाछेश्रीकृष्णजीचल्योरुकमिनी
धाम ॥ आरतिसाजुभीषमसुतातोषेश्रीघनस्याम ॥ ७४ ॥ चौपई ॥ पटरानिभि
अवनसुनपायो ॥ रुकमनिकेग्रहप्रभुपतिआयो ॥ चलिआईसभतहाँतिहिछि
न ॥ वुझिऐककीप्यासफुतीमन ॥ इकसोआठसहस्रषोडशतीय ॥ हरिआईस
नमुषतभईजीय ॥ सुनधाईहरिषतसभनारा ॥ रुकमनग्रहमेजुरीअपार
तपतिनहितदुषहरिकोमुष ॥ मदतिदेसमातिनाहीसष ॥ अतिआदभुतह
पकेमुषकाछवि ॥ रीझरहीदयाजारनाथिसव ॥ ७५ ॥ दोहरा ॥
सुनफुलपतिरुकमनभवनजुवतीजुरीअपार ॥ सतिभामाहासीवचनह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

परसंपक हेतु चारु ॥ ७६ ॥ सतिभामोवाच ॥ चौपाई ॥ सतिभामा मुष वचन उचारे
सुनउ श्रवन दै प्रभु हमारे ॥ कीनो पतन संपूरन काजा ॥ आयो नीति चव हृदि
धाराजा ॥ कीयो धरम को पतन सनाथा ॥ वरषा पीरे तुम है के साथा ॥ आरज
न वर त्याघो है नानी ॥ प्रथम वधू वाहन महतारी ॥ वीर ब्रह्म को कैन्या आ
तगुन ॥ तमपरमाद्व हवरी फलगुन ॥ तुम हे प्रभ चारोदिशदेवी ॥ कहै
मुथुकुवजा कहू पेषी ॥ ७७ ॥ दोहरा ॥ दासी होती कंस गृह व्याह करी वरन
रि ॥ भूपति तो दीनो नही तुम हेतु अहीर विचार ॥ ७८ ॥ चौ ॥ ऐाकलतजि तुम
मथुरा माही ॥ वरी कुवरी नाशिततमाही ॥ अविचारोदिशपीरआयो हरि ॥ क
तिकुवजाको नहि त्याग्यो वरि ॥ दासी अवर कोऊ नहि पाई ॥ जो तुम घर ल्या
बऊ पद दुराई ॥ सतिभामा के वचन श्रवन धरे ॥ हसि भाष्या वचन सुनऊ वको दर ॥ हृ
सु करत सतिभामा मुष सो ॥ नृजाकरत नेकु नही तुमसो ॥ वालप्पनकी वात चितार
त ॥ ते दिनवीते बऊरि विचारत ॥ ७९ ॥ दोहरा ॥ अब यह अब वसरी मैं भई पुत्र पौत्र पर
वार ॥ सतिभामा मुष को कहत दासी को भरतार ॥ ८० ॥ चौपाई ॥ सतिभामा मुष हास
करति अति ॥ मुष को कहत योग दासी पति ॥ नृप कंन्या को ऊ देत न तो को ॥ देत अहि
र उचारन मोको ॥ हम रे राज हुकुल रवंती बामा ॥ कतिके प्रकट वक ऊ सतभामा ॥ सो ला

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४५४
अश्वमेध

सहंससोंएकसैनारी ॥ अष्टनारकाअधिकविचारी ॥ तेकंन्याअतिपृथिवीप
तिकी ॥ सकलकुलीनदासवतिपतिकी ॥ सकलराजपुत्रीअभिरामा ॥ ऐसीपु
वतीहमरेधमा ॥ ८१ ॥ अनुसाल्वोवाचः ॥ दोहरा ॥ भीमसेनभाखेवचनसुनहु
कृष्णदेकान ॥ सतभामातुमसोंकहतिसमवचनपरमान ॥ ८२ ॥ चौपई ॥ दासी
योगपकहतहैतुझको ॥ भलीबाततलागीपदहमुझको ॥ दासभावतिनकेजोयहतोई
तुमकोयोगहोतहैसोई ॥ दासभाउकीनोकुवजामन ॥ तुझमहिअरपनकीयेप्रान
तनन ॥ तुमदासनअधीनगिरधारी ॥ तातेवरीकुवरीनारी ॥ राजकंन्याजोयहराजर
सगुनअति ॥ तेतमजोगनहीजादोपति ॥ सोततछिनतुमकोपदुपावति ॥ ८३ ॥ दो
दासभावहैसो तगुनतुमकोवसिकरलेत ॥ राजसगुनपावतितुमहैहमदासनतुमदे
ते ॥ ८४ ॥ चौ ॥ दासीयोगतेतिधनस्यामा ॥ कहेयप्यारप्यवचसतिभामा ॥ तुमतोदा
सअधीनरमापति ॥ कुलसरूपनहीकृपाविचारत ॥ पुनतुमकोभाख्योकुलहीन ॥
कंन्यादेतननृपतिप्रवीना ॥ सतिभामापहसस्यवताचो ॥ सुनतवचनमुहितजोपढह
रायो ॥ इकसौअष्टसहसबाहुपातीय ॥ राजनतेंतिनदईमुदतिहीय ॥ जेतनाराजसु
तातुमरेघर ॥ दीनोनहीमातपितुहितकरि ॥ ८५ ॥ दो ॥ केसनृपकीकंन्याकावन्न
करिलीनी ॥ ताहि ॥ केसहतिनृपकीसुताकोहरिलीनोमनमोहि ॥ ८६ ॥ चौ ॥ सरधार
सोंनृपकेसहितनदीनी ॥ कहूपढ़कहूछलकरिलीनी ॥ प्रथमेरुकमसनसोपाविशा
ला ॥ मातपितादीनीससिपाला ॥ आईतोदुजपठ्जाको ॥ रथचढिलेभाग्योतुमताको ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सोलासहस्रवरीतुमनारा ॥ पुष्प मै नरकासिरकोमारा ॥ नरककासुरआपुनेहितआ
नी ॥ तेतुम ब्याही सारंगपानी ॥ पुष्प मै नरकासुर कीनो हतु ॥ [illegible] छेम पोसदंत स्त्र
षोडशपतु ॥ ८७ ॥ दो ॥ किसहितन दीनी तोहि केहुसिकंन्या पितु मात ॥ शत्राजित जादव
बडो तिन रविकी पोउपाइ ॥ ८८ ॥ चौ ॥ शत्राजित रविको तपु कीनो ॥ रवि प्रसंन दिनमणि
करि लीनो ॥ ताको मणि रविदई कृपा करि ॥ त्यो पो जादव तिन सो मंगी हरि ॥ सरधीक
रै तुमको नहि दीनी ॥ सिंघरूप है तुम हरिलीनी ॥ सभ यादव तुम दोषु लगायो ॥ का
हे कृष्ण शत्रासु तुघायो ॥ यह सुन तुम दौरे ततकाला ॥ पर्जचे जामवानकी शाला
ता हातु मै कीनो संग्रामा ॥ इकवीस दिन ताके धामा ॥ ८९ ॥ दो ॥ जामवान को युद्ध कर
जीत सकयो तुम नाहि ॥ तहा तुम धार्यो रामवपु तिसो कंदरा माहि ॥ ९० ॥ चौ ॥ जामवा
न मन माहि सचानो ॥ इष्टदेव देखो सविधानो ॥ जामवान मन माहि विचार्यो ॥ मनि
कंन्या लेतु पगधार्यो ॥ जामवती ब्याही तिः काला ॥ भेसु राम को धरि नंदलाला ॥ मणिर
कंन्या लयो पो आपुरे घरि ॥ तहा तो हि परपंच कीयो हरि ॥ मणि दीनी तुम शत्राजित को
विद्यमान सभ को धति चित सो ॥ सभ कारज तुम ते विनि आयो ॥ जु हे उन को दोषु ल
गायो ॥ ९१ ॥ दो ॥ लोग न वजतिधिकार दे यो शत्राजित को आई ॥ कति को पह मणि को
तु जै दोषु धर्यो वजराई ॥ ९२ ॥ चौ ॥ शत्राजित सतभामा रुकमनि ॥ तुमको दई ब्याहि
ताहि छिन ॥ दीनी कही जुतो अकरजधरि ॥ तहा नदीनो प्यो प्रापति हरि ॥ [illegible]
शत्राजितदीनो न हो चितसो ॥ लोगलाजके लीयो अहित सो ॥ भत्रवंदा कलंदा ओमरस

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४५प्र
अश्वमे
५

प

म ॥ केऊ स्वरूप बरनी तनलई प्रभ ॥ केऊ ग्यानी हरि केऊ निज बल करि ॥ कसी नन्द दी
नीजी पद्धति धर ॥ देत न न न प कंन्या तुऊ जानत ॥ तुमरा वंस ग्रहीं रच छाने नत ॥ ६३ ॥
वंस हीन तुम कह्यु जाति कुल तुमरा न हीं कोइ ॥ कृपा हीन तुम आदि कोऊ व कुली
न न ही होई ॥ ६४ ॥ भगतन के अधीन नंदलाला ॥ तुमरी जात न पात तग पाला ॥
मात पिता न हीं कोऊ तुमारा ॥ रूप न रेष न वर्न आकारा ॥ तुम को पुत्री देत न राजा ॥ तु
म अहीं रज्ञा वतउ न लाजा ॥ अगम अगाध अलष तुम रो गति ॥ धंन्य ते ऊ जी पर्म
भगति ॥ हरि सिकरी कहयो धन्य सतिभामा ॥ प्रिय पला गति मुक्ति अति अभिरामा ॥ धंन्य
नीम तुम ज्ञान विचारा ॥ नि जशेवक तुम भगति हमारा ॥ ६५ ॥

६३

६६

नर्द
र जें ग जय वरी मिति प्यो युधिष्ठिर आइ ॥ १ ॥ जैमि नो वाच ॥ जैमि न कहे सुनऊ रा
जाना ॥ कहो संवर न क र्यो विधाना ॥ प्राय गेम आयो हरि हस्तनपुर ॥ दई वधाई नृप
ति युधिष्ठिर ॥ सभ सैनापति कैत जि आयो ॥ भगत हेत आगे उठि धायो ॥ श्री पति वचन
कहि युधिष्ठिर प्रति ॥ विजै जीत ल्यायो सभ छिति पति ॥ म हाव ली न पन आने संगा ॥ आ
यो वृषकेतु अरु ज्ञा ॥ वृकोदर लभए सुष पुरुष पुराना ॥ गरे वी सब विधि ति वहु माना ॥ २ ॥
आदर दैन प्रशंसा हूय हम आगे चलि जाउ ॥ वृकोदर लभ भार ज

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

न सहित तहं रथ तुरत गजपुर ल्याउं ॥ ३ ॥ चौ० ॥ रथ धुम की पोव चलन को गिरधर ॥ पुनि कुं
ती वचन कहे सुन जदुवर ॥ तुम पायो मग को श्रम भारी ॥ फिरे तुरंग साथ पुनि रथ धा
री ॥ तुम सब श्रम करहु हस्तिनापुर ॥ देखुं महा सुख नृपति युधिष्ठिर ॥ भीमसेन को आ
नंद कीजै ॥ चतुरंगनि सैना संग दीजै ॥ पुनि हरि वचन कहे कुंती प्रति ॥ हम आगे चलि
जाउ नहीं कत ॥ अरजुन मोहि भगत को भ्राता ॥ पुनि हम राव [illegible] ऐसी माता ॥ ४ ॥ दोहा
पारथ हम राखि जस षा ॥ फिरे सो तुरंग म साथ ॥ चारो दिश के जीत नृप सब ल्यावो
हे साथ ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ आपो जीति चतुरदिश पारथ ॥ सिद्ध की यो धर्म जको स्वारथ
ताते धरम को भ्राता लागे ॥ आदर देउ जाउ ति: आगे ॥ चारो दिश पृथ्वी जीती
जो: ॥ कुंती न करो सतकार उचत ति: ॥ ताहि छिन ठटि चल्यो पारथ आपत्ति ॥ निकसी
चतुरंगन सेना अति ॥ ऐक युधिष्ठिर विन सेना सभ ॥ चलहि सकल आगे ताको ना
प्रभ ॥ पुवतनि को पुवतन की वांछा ॥ अरु रवि बद दरसन की मन कांछा ॥ ६ ॥ दोहरा ॥
दुंदभ भेर निशान वजवाजत पुन पंचतूर ॥ सकल वजंत्र वजावहीं तुम लर है आभ
रपूर ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ राजनीति साजी सभ सैना ॥ अति छवि विकट पाति नहीं वैना ॥ पूछ
रे चले अन गगन भूपाला ॥ आभरन वसन बनाइ विशाला ॥ [illegible] दिश
वासा ॥ चले मुदित दरसन की प्यासा ॥ आई चंद्र [illegible] सभा वनाई ॥ पारथ [illegible] च
ले विगसाई ॥ आगे पंडित वेद उचारा ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ दोहरा
[illegible] गावति मंगलचार ॥ पारथ के अभषेक [illegible] हो पे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४५१६

हितुधार ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ प्रमुदित भया खरन नर नारी ॥ चले लैन पारथ हितुधारी ॥ पुन आज्ञा
कीनी गिरधर तब ॥ छिरकु अगंध गली बजार सब ॥ मृगमद आदि सुगंध सकार
लबर ॥ छिरको द्वार नगर आंगन घरि ॥ धजा पताका कलस बनावऊ ॥ भूषन बस
न सकल पुर छावऊ ॥ मर्दन तैल सुधर रसु धारऊ ॥ आंकुस घंट कनक के साजऊ
आवर्ति मेल तेम छवि छाजऊ ॥ १० ॥ दोहरा ॥ मानिक मुकता जाल रे सोभित सीस गयंद
॥ ते नृप चरि आई बारी बनी जगमगात छबि बृंद ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ सुभग गज मरगज गादि
बिराजति ॥ चलत मंद गति अति छवि छाजत ॥ निरतत नट अदभुत सत लीने ॥ गा
न करत गंधर्व प्रवीने ॥ बजरी कृष्ण कहि तै पहु बाता ॥ कुंती सुन अदेवकी माता
जुवती नव सत साजि सिंगारा ॥ पहुर दुकूल चलहि सम नारा ॥ वीरब्रह्म केन्या उजु
लमति ॥ ताको तुम आदु रुदी जैमति ॥ मोहि भगत की त्रीया मसता गुन ॥ विधिया अरु
चंपकमाल निपुन ॥ १२ ॥ दोहा ॥ सम बक कदाल भरि षचरन मसो कुंधार ज जाइ ॥ पर्य
त्पा योद्धा तन बतिनु कुंदेद जब धाइ ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ जैमिन कहैं सुनु जनमे
पतिवर ॥ गजहस्ती लीन मंगाइ हरि ॥ रतन खचित बर कनक अंबारी ॥ मुकता हल जगम
गत कनारी ॥ तापरि कुंती मात चढाई ॥ अति प्रसंन भए जादु राई ॥ कुंती मध्य अंबारी रा
जति ॥ चार सखी ठिग चवर ढुलावति ॥ पितु भगनी को आदु रुदीनो ॥ श्रीपति परम मन
सखि कीनो ॥ नीपा मंगाइ अबरु गज माती ॥ तापरि चढई देवकी माता ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ दोनो ग
जज हि चले मदमाते गुनमंड ॥ कुंती जननी देवकी तापरि भई आरूड ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ साके

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मुनित्रिआदिसकलजुवतीजन ॥ चढीचंडोलमहाप्रमुदितमन ॥ तेचंडोलजेदुति
तेरामन ॥ कहांनिपवृतिमहाछविअनगन ॥ प्रथमकीयाजनमेजेकिंतपकी
उत्तरुदेउकृपाकरिमुनिपत्नी ॥ कुंतीकोप्रभताप्रभकीनो ॥ हितुकरिवरुनवहाईदी
नो ॥ अपुनीमाताकोत्रिभुवनपति ॥ दईप्रभुताप्रभकुंतीसुमकति ॥ कतिनदईदेव
कीवडाई ॥ जैभिनुमुजकोकछुसमुझाई ॥ १६ ॥ दोहरा ॥ जैमिनेकहेसुनउन्नप
ति हरिविचारपहवात ॥ देवकीतेकुंतीवडीवहुरिभगतकीमात ॥ १७ ॥ चौपई ॥ प
नैलगतिपीभगतीताता ॥ जानीहरिविशेषकरिवाता ॥ वडीविदितक्रमवाचजान
प्रभ ॥ नृपमाताताचकउपमासभ ॥ जाकेहितभारपहरिकीनो ॥ राजतितकथ
रमसुतकोदीनो ॥ तेःधर्मसुतकीमाताजानहरि ॥ दीनीअधिकवडाईरुचुकरि ॥ अंत्र
मगजकुंतीअसवारा ॥ मातदेवकीकोगजन्यारा ॥ प्रभुकुंतरपरिचडी ब्रजसामरा
ति ॥ सभतेकुंतीकोप्रतापुअति ॥ १८ ॥ दोहरा ॥ रुकमनिआदिजुवतीसकलशिवु
काभईअरूडभीषमसुताकुअभपटवहरि चलीगजनगरुड ॥ १९ ॥ चौपई ॥ सजि
सिंगारषोडुशशतभामा ॥ भूषनवसनसोजअभिरामा ॥ जामवतीकीनेसिंगार
सुभ ॥ अंगअंगपकविताहामहाछवि ॥ पुनिसुलछमनाजगमगातदुति ॥ कालिं
द्रीशोभाअतिअदभुत ॥ वंदाकीउपमाउजिपागर ॥ सत्राअतिविचित्रगुनसाग
र ॥ मित्राकीछविअतिविशालकी ॥ आठोपटरानीगोपालकी ॥ रतनषचितचंडोल
सभनके ॥ सुकताझालरपुंजमननके ॥ २० ॥ सोरठा ॥ षोडशसहससधिचारअधि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४५७
अश्वमेध

कएकसैआठतीप॥ पहसमहरिकीनारि साजिसेअपारप्रमुदितचली॥ २१॥ चौपई॥
प्रजायुवतिलैलैआरतिकरि॥ कंचनथालबीचदीपकधरि॥ अगमदसौचपुले
लकीबाती॥ दीपकजारचलीमुसकाती॥ अछतदभहरदददधिहाथा॥ सकल
सुगंधसमग्रीसाथा॥ शोभितबीचतीनगजगाजो॥ चलेजातअदभुतछविछाजे
कुंतीअरुदेवकीजसोभति॥ तापरिचढीजाहितआतिशोभित॥ २२॥ दो॥ आगेपंडि
तवेदधुनिपीछेगंध्रबगान॥ नटऐनटनीभाटई प्रभुसंग्रीतविधान॥ २३॥
चौपई॥ अंबचंद्रकासभासाजिहरि॥ पारथपलेनचल्योहितहीयधरि॥ जनमेज
नापछत जैमिनपति॥ कहोकृपाकरिकथामुनीपति॥ पंकतिजोरचलेगिरधा
री॥ प्रमुदितसंगलीयेनरनारी॥ पारथआइमिल्योहरिजैसे॥ कहोवतातना
कृपाकरितैसे॥ जैमिनुकहेसुनऊप्रथिवीपति॥ इततेगएकृष्णजीयहरिषत
हरिआगमसुनियोपारथजब॥ चतुरंगनीसैनासाजीतब॥ २४॥ दोहरा॥ पार
थआपुनीचमूकीपंकतिलईबनाइ॥ आगेकीनोअश्वकोतिःपाछेरथसाइ॥ २५॥
चौ॥ आगेचलातुरंगमजाई॥ पीछेबकदालभरिबराई॥ तिःपाछेरथस
राजति॥ पीछेरथअदभुतछविछाजति॥ तिःपाछेवरखरेतुरंगा॥ चलेपदंतजाति
अतिसंगा॥ पारथसंगनृपतिछविपावत॥ रिवीवकापाछेसभआवत॥ चंद्रहा
सनृपसहरभगतहरि॥ नृपतिवभ्रवाहनसुरावरि॥ पुनप्रद्युम्नकरनकोनंदन॥ नृ
पतिहंसधुजअरिदलगंजन॥ २६॥ दो॥ वीरब्रह्मनृपताम्रधुजअवरनीलधुजरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ई॥ पारषवाी चवी राजईदिन मणि कौतिल जाइ॥२७॥चौ॥ चारोदिस केन पतीपे
साष्या॥ विजै भयो सनमुष षदुनाथ्या॥ इतते श्री गिरधर चलि गयो॥ उत ते पारष्प
सनमुष भयो॥ चऊदिस आइ जुरी वऊ सैना॥ संष्या कही परत नहि वैना॥ दुहु ओ
र धुन भेर निशाना॥ कहुं वाता सुनी परत नहीं काना॥ देषत भए सकल भूपाला
ल्या यो आदभुत चम-गुपाला॥ छत्र मुकट सिर रव ने रुकत मणि॥ उदित भए कैधा को
टक दिन मणि॥२८॥दोहरा॥ मकुट छत्र मणि एक रथ सम भई कांत॥ भ-प
सभी विस्मै भई निरष चम-हरि भांति॥२९॥चौपई॥ जेतक थे पारष्प संग
राजा॥ निरष चक्रत भए सैना समाजा॥ तण समान निजको करि जाना
मिट गयो सभ के मन अभिमाना॥ लागे कहन परस्पर वाता॥ सैना अमित
धरम के ताता॥ अपनो पौरी चम-अपारा॥ श्रीपति ऐसे हृदे विचारा॥ देषी
पत महा प्रवल दल अपारा॥ राजन को मेटो अहंकारा॥ मति यह हुलस मुझै ऐ
सैक रिउपि॥ सैना आवरन छोक कु गजपुरि॥३०॥दोहरा॥ तात हरि भंज
नकीयो राजन को अभिमान॥ शांत रूप सभ कुरली येकु पाधाी भगवा
न॥३१॥चौपई॥ धर्म चम-दूव को टप्रकाशा॥ पूरि रही छवि आवनि आकाशा
सभ चरित्र क एकु सुदषावे॥ राजन को अभिमान नसतटावे॥ पञ्च धर्म सो
छाई सो नभ॥ निरष अनंदित भए नपति सभ॥ विमल वेद धुनि धुनि उचा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रा ॥ वरुणा हृदै आनंद अपारा ॥ प्रथम मै सभ भए रिष के पग लागे ॥ दर्शन देष कलम
षभागे ॥ पुनि जाकरि हृदै हितु धारी ॥ ध्रुव दीव आरती उतारी ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ जा
नै मै जे जैमिनु कहै संभ्रम हृदै निवार ॥ चारो रिषि सकेन्द्र पजु रे तिनकी सेम अपार
३३ ॥ जैमिनोवाच ॥ सोरठा ॥ प्रथम मै कांति अपार भई धिरम तकी चमत्की ॥ जव हि
मिले हितु धार दुतीप भाउ सभ मिट गई ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ जैमिनु कहै सुन द्रुउत्त
रतन्प ॥ चार कुं ह के मिले नराधिप ॥ देवन्पति जी पक प्रविचारा ॥ इन कप्ट्र
करा आहंकारा ॥ इ जत मन न पआ ग हि मषअवसर ॥ ता ते रिष राई प्रभता हूए
सम सैन इक सम है गई ॥ अहं मैव मन ते मिट गई ॥ दुतीप भाउ तजे एक भई
सव ॥ कृपाधार करुणा कीनी प्रभ ॥ आपि क सकल अप्रात मागिर धर ॥ दोऊ ओर से
ना कीनी इक सम सर ॥ ३५ ॥ दोहरा ॥ दो नो दिस कौ चमत्कृत कहै आमा रूप
निरषी कृपा कटाक्ष सो है गई एक सरूप ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ सभ राजन के भई शां
ति मन ॥ मिट गयो रजतम गुन ता हि छिन ॥ सभ न्रप कहै परस्पर वाता ॥ से
ना प्रवल न धरम के ताता ॥ कहुं न है इस्त हते जु मही पत्ति ॥ जिन के श्री पत्ति सदा
दा सवत ॥ जाके द्वार वेद धुनि नित प्रति ॥ धर्म जधं न्यक है सव कीत पति
धर्मराज की चहू वडाई ॥ सभ चरित्र की ने पडु राई ॥ सै ना सहंस गु
नी दिष रावती ॥ सभ राजन के गर्व मिटावति ॥ ३७ ॥ दो ॥ अर्जन की प्रभता

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नमितपत्तसंपूरनकाज ॥ सेनाअधिकदिखावईकृपाधारिपदुराज ॥ ३८ ॥
॥चौपई॥ सभराजानकीदृष्टिभ्रमाई ॥ सेनाअधिकेंवुझतदिएउनपाई ॥ नमि
तयुधिष्टिरकेंजेकारा ॥ श्रीपतिऐसेरच्योप्रकारा ॥ जैमिनुकहैसुनजन्मेभूपती
वर ॥ मिलेतेपरस्परआइविजेहरि ॥ राजनकोंअभिषेककीयोप्रभ ॥ हरदद्युधदधि
अरुसुगंधसभ ॥ मुकतामणिपारथपरिवारत ॥ जुवतीजनआरतीउतारत ॥ पुष्प
दृतगावतमंगलगीता ॥ करहिकेलोलवढोमनप्रीता ॥ ३९ ॥दोहरा॥ हरिआदरुदेव
जैकोअपुनातेजपसार ॥ पारथपरवृष्टनकीयेहीरारतनअपार ॥ ४० ॥चौपई॥ दुह
दृशवाजतभेरनिशाना ॥ जैजैकारकरैराजाना ॥ हृदैपियपासधरमदरसनकी ॥ वऊ
रिकृष्णकेपगपरसनकी ॥ चलिआएसभअरजनसाथा ॥ न्यायोसभनिकृष्णकोमा
था ॥ ठाढेऊतेजोरपंकतिप्रभ ॥ धृतराष्ट्रअरुभीष्मविदुरसभ ॥ जेजेरिषसेनानरनारि
त्याएऊतेसंगगीरधारी ॥ हरिपारथप्रतिवचनउचारा ॥ धृतराष्ट्रनृपवऊतुमारा
४१ ॥दोहरा॥ पारथपृथ्यमहिपगलागऊधृतराष्ट्रकेजाई ॥ पुनिपाछेसभनृपति
कोलैलैनामसुमिलाइ ॥ ४२ ॥चौपई॥ धृतराष्ट्रनृपतिदृगविहीना ॥ तिसहिमिलावऊजन
पतिप्रवीना ॥ कहाउचारनृपतिकेनामा ॥ पाकोनृपसभकरहिप्रणामा ॥ कौरवकुल
उजलअभिरामा ॥ वऊपहिवरतोतिपितामा ॥ तुमकोउचितमानवऊदीजै ॥ मनव
चक्रमपद्मसेनकपतीजै ॥ इकइकुभ्रमपुमिलावऊपासौं ॥ गांधिभजनामकहतिप्रभुता
सो ॥ त्यायोचौनृपतिजोतितुमजेतै ॥ नृपकोंआनमिलावऊतेतै ॥ ४३ ॥दो॥ जैमिनुजन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स्रमे
५

मैजैकहै सुनज्ञकपामपाल ॥ अरजनकेपहवचकहैगिरवरधरतिहिकाल ॥ ४
४ ॥ चौपई ॥ तबघरष्पपगपर्स्योपितामा ॥ धतराष्ट्रकोकीयोप्रणामा ॥ पुनिमे
अरजनचंद्रहासको ॥ भुजगहिलीनोहीपजलासो ॥ पहन्नपकुष्णभगतिअभि
रामा ॥ चंद्रहासयाकोवरनामा ॥ मैनहीजीत्योपहमपाला ॥ तनमैभजशोवकोन
दलाला ॥ जेनकीरक्षाकरीगुपाला ॥ वालप्रपंचत्करीपतिपाला ॥ कौतूहलपुरको
पहराजा ॥ महाबलिएसुरसिरताजा ॥ ४५ ॥ दो ॥ पहन्नपकेवलतेजसम ॥ अवर
नपतिनहीकोइ ॥ तणसमजाकेलोकत्रैतोहिभलतहैसोइ ॥ ४६ ॥ चौ ॥ पहन्नपशे
वकहरिकोदेवा ॥ मजकोउचतिकरोपहसेवा ॥ विसुपराऐणभीतसहावर ॥ मि
लताउनकेहिलेक्षनपमजमधि ॥ सुनज्ञपितामापहमपाला ॥ विषियासुखसहितमज्यो
गुपाला ॥ मनतरंगआसाउपजाई ॥ ततरंगइनलीयेमिटाई ॥ जैसेअंभुजलमह
रउपजावै ॥ वज्ञरलहरिजलजलमाहिसमावै ॥ मनकीलहरिनृपतिइनजैसे
हीपधरिकवहूनआपीकैसे ॥ ४७ ॥ दो ॥ तुमकोकरतप्रणाम मुअवसोभूपतिव
लवान ॥ बालवैसग्रिनवसिकीयोत्रैभुवनपतिभगवान ॥ ४८ ॥ चौपई ॥ वज्ञरअ
वनदैसुनज्ञपितामा ॥ वीरव्रसेनपकरतप्रणामा ॥ महाबलीअतिधीरजवाना
जोनृपतुज्ञहितमिलतराजाना ॥ वज्ञरहंसधुजमहाबलीनृप ॥ सोतुमकरतप्र
णामनराधिप ॥ धर्मभगतपदहोसुतजाके ॥ सुरथसुधंन्वानामवरताके ॥ मजा
केआत्यौउनदोपजोधा ॥ रनमहिकवहूनतज्यौनाहिक्रोधा ॥ तिनकेसिरहैवंजन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कीने ॥ श्रवनते सुठिमान सहकीने ॥ ४८ ॥ दो० ॥ तिन्हि पितान पहं सध्वज महासुन्दर
अभिराम ॥ सो ईमिलत है तो हितकों हित सों करत प्रणाम ॥ ५० ॥ चौपई ॥ पुनय
ह मिलत ताम्रध्वज राजा ॥ ता तुमोरध्वज नृप सिरताजा ॥ अर्द्ध शरीर रदीयो आर
न केंपित ॥ कृष्ण अरपद द्विजकों हरखित चित ॥ सो नृप तुमकों करप्रणामा
सुनऊ अवण ऐहैं नामु पितामा ॥ वऊ पैकरन सुत अतिवलवाना ॥ महासुन्दर त्रै
लोक निधाना ॥ जहां तहां महा पराक्रम कीने ॥ वालवहित सक्रम योधप्रवीने
याकी उपमा कहां वखानो ॥ वडावडन ते पहं सिसु जानो ॥ ५१ ॥ दो० ॥ धंन वालकव
बके तपहं जहंत तहं कीयो संग्राम ॥ वानन सों ता षे नृपतितु ऊकों करत प्रणाम
५२ ॥ सो० ॥ वडे वडे नृप जीत पेइने ॥ महासुन्दर वल वडकरन सुत ॥ कीये सुरन सों फत दुत्त ८
पति भूपाला ॥ यह वालक निजभगत गुपाला ॥ करन तात तप एक रूपा की जै ॥ कें ठल
गाइ वऊ भुजभरि लीजै ॥ वऊरव भूवाहन सुरावर ॥ विद्यमान की नाथ तराएरु
विजै कहो सुन अव नृपतामा ॥ पहंमऊ तात सुन्दर अभिरामा ॥ मा हां पता पृत्रान आति
सुरा ॥ तीन लोक जानत प्रण पुरा ॥ ५३ ॥ दो० ॥ यह हैं मणिपुर के नृपति पौत्र तुमा
रा राज ॥ जै हंसीतापुर महिं तनमि यो विश्वकर्मा प्रभु साज ॥ ५४ ॥ चौ० ॥ जे न विश्व
कर्मे रची द्वारावति ॥ भवन सुदामा रचे प्रभु भगत अति ॥ आज्ञा करी जति जदुराजा
इक दिन मंदिर रच्यो प्रभु साजा ॥ विश्वकर्मा वर ब्रह्माका सुत ॥ मणिपुर नम हि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नन भयो प्रताप पुपुति ॥ तिहि मणिपुर कौ नृप अभिरामा ॥ भिलत ततो तिको करत प्र
णामा ॥ करि उश भिलत तु उन्नृपति नीलधुज ॥ महिषापुर कौ नृपति जानम अ
ज ॥ पुत्री पति पावक है जाको ॥ महाप्रचंड पराक्रम ताको ॥ ५५ ॥ दो ॥ ते पा
वक अरु नीलधुज तु मको भिलत राजान ॥ जीते ऐसे नृप वली करुणा स्यभ
गवान ॥ ५६ ॥ चौ ॥ जौ वना सन्नप भिलत सदित सूत ॥ महावली सूरा प्रतापु
पुति ॥ त्या ए जीत अस्व केसाथ्या ॥ वहु नृपन्यो वत दै तु गु माथ्या ॥ यह अनले रा
त भिलत है सोई ॥ अस्व मत काश लेच छो है जाई ॥ चारो दिशा के नृप अभिरा
मा ॥ सभ तु उ कर तु प्रणाम पितामा ॥ पुन चह वकदालभ्य रिषराई ॥ ता केव
रा ए लग उतु मजाई ॥ वडो पुरातन रिषि प्रधानो ॥ समुद्र वीच या को इस्थाना
॥ दो ॥ वकदालभ्य रिषदेष तेगी रेखिधाता वीस ॥ वटपत्र वलेक रवैष अमरत
सव जगदीस ॥ ५८ ॥ चौ ॥ धृतराष्ट्र नृपसुन जन्म वनधर ॥ सिंधु धारउ नृप रिषचर
नन पवि ॥ ऐसे रिष अरु ऐसे भूपति ॥ ज्ञानेरूपा धार पद मापति ॥ जैमिन कहै सुन
उ नृप सत धूप ॥ जौ नृप ल्यापो ताषि जेवर ॥ जितनृप की पोपराक्रम जैसे ॥ वरन सु
नायो पारष्प तैसे ॥ जैसै भिलत तउचत नृप जाको ॥ तैसै भल्यो पारष्प ताको वरि ॥ कीयो न
मस्कार नृप धृतराष्ट्र ॥ प्रथम धारयो सिसरि षचरन नन पवि ॥ ५९ ॥ दो ॥ जैसे आ
ड र पो गजति हसो तिः दीयो विचार ॥ धृतराष्ट्र नृप भाउ धरिक पसे तो षनरनार

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥६०॥ जैमिनोवाचः॥ चौ॥ जैमिनु कहै सुनजन्मपकाना॥ कहो कथा ह्यजैसबधा
ना॥ प्रथमसन्यपतिमिलाइसबअरजन॥ सुनहुबहुरिजुमिलीजुवतीजन॥ कुं
तीअरुदेवकीसंगचली॥ पुनिजसुमतिमातागंधारी॥ चारउकेपगपारथला
गा॥ प्रमुदितहियेभयोअनुरागा॥ चारोहर्षतदईअसीसा॥ चिरजीवअ
रजनजुगवीसा॥ पारथल्यायोजीततनयपुनको॥ भयोआनंदसभनकेमनके
॥६१॥ दो॥ वीचपराप्यावर्षईकुजुवतीनकेमनप्यास॥ पारथआयोजीतन
पसभहीयवढ्योहुलास॥६२॥ चौ॥ हरषतहृदेभईसभदारा॥ गावतगीतसु
मंगलचारा॥ कुंतीचरनकरनकेताता॥ सबकोआइकहतिकुसलाता॥ कुंतीमा
ताकह्योधंन्यसुत॥ तुमकरीनोसंग्रामहर्षिपुत॥ मनवचक्रमजानीसुतवाता॥
रक्षाकसभनकृष्णकुसलाता॥ तुमरासुजसभयोवहुकालक॥ ल्यायोपाजीतिसर
कलमहिपालक॥ धन्यमातपितुवालतुमारा॥ भलाकीपोनिरवाहतुमारा॥ ६
३॥ दोहरा॥ पुनिगंधारीदेवकीलाजोतजसुमतिपाइ॥ करनपूततसरावलीह
देखिआनंदबढाइ॥६४॥ चौ॥ पुनसभजुरेनृपतिबलवाना॥ रिषकीपदताकरीव
धाना॥ हरषतभएसकलमहिपाल॥ प्रमुदितचलेजहामखसाला॥ वैठेजहा
धरमराजाना॥ जोतिलघृततेलसुमततवविधनाना॥ चलेतहानृपमखउमंगा॥
सभकेआगेकीयोतुरंगा॥ पीछेचलीजाइसभसैना॥ उपमाकहीपरतिनहा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ६८ ॥
४६७
अश्वमेध
जुज ५४

वैनाँ ॥ रिषहरि नषपति चले धरे भाउ ॥ प्रनिमे पौ चौ हठमोधाउ ॥ ६६ ॥ दो
इति श्री भारथ पर्व [illegible] अश्वमेध व्यान ॥ सो हठमोधाउ पकट [illegible] नप
रन ज्ञान ॥ ६४ ॥ समसे ॥ जैमिनी वाच: ॥ चौ ॥ जैमिनि कहै सुन जनमेजय पाला
उग्रसेन तुरंग चलत्यो ततकाला ॥ होती जहां पत्रशाला वर
मुनिपरे ॥ तहां अनेक रकुरै बीछवि पावत ॥ धर्मि तात कौ हो मकरावत ॥ दाडे जहां धर्मक
अग्निकुंड बहु कौण महाद्युति ॥ चहुं दिशा चारो द्वार कंचन पति ॥ द्वार द्वार पट दै
है षंभा ॥ कंचन मनन गगन जड़त अचंभा ॥ ति हतपं भनन पर छत्र विराजत ॥ बचत
रतन मणि अति अति छविछाजति ॥ १ ॥ दो ॥ जहां पट्टहि वानी विमल दै जवर वे
दउचार ॥ तहां शंसषं भीरचे मानक बचे तअपार ॥ २ ॥ चौ ॥ पुनबटवं
मवला सबनाऐ ॥ अग्निकुंड बट हि गठहराऐ ॥ अश्वकुम पार प सभराजा
प्रापति भऐ तहां प्रभसाजा ॥ धर्मि जनिर्ष अनंदित भऐ ॥ वैजीत अशापोदुषग
ऐ ॥ तातेधं न्यपूर्ति शिरधारी ॥ जनपहराबा पैतहमारी ॥ तौकै सो हैध मिराज
सुत ॥ पत्रकर म सबधान महाद्युति ॥ कालीम गकासी जुवेराजत ॥ हृष्यदा हृ
नमहि छवि छाजत ॥ ३ ॥ दो ॥ लता पात्र वरवामकर पत्रकर मपरराज ॥ जैसे
साज्ञा वेदकी तैसो कीयो समाज ॥ ४ ॥ चौ ॥ पुनि निहान मै भीग जो नित प्रति ॥ अग
नि देव चहोमतनि तहरषत ॥ निहान मै भीग तिल होमत नित ॥ अरुनि डान मै मण
होमत धीघृत ॥ परनाला न कंरि घृत मेलतवर ॥ ब्रास अचार जेपठत निगमसब

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जवतिनघतसबऐकसमाना॥ अग्निअहुतीदेतप्रमाना॥ प्रापतभऐसकुल
मखशाला॥ धंन्यविजैकोकहोम्भूपाला॥ वकदालभरिषप्रापतिभयो॥ नरू
षपुष्चिएरमनविगसयो॥५॥ दोहरा॥ वकदालभऐषचरनपरधर्मधीजयो मिजर३
सीस॥ वडेभागहमरेभऐकृपाभईजगदीस॥६॥ चौपाई॥ नृपरिषकोअधी
सुनदीनो॥ पूजाकरिप्रसंनकरिलीनो॥ नरनारीसवरिषपगलागे॥ दरस
नुपरसहीयेअनरागे॥ रिषआगमतेमुदितयुधिष्टर॥ मखपूरनकीयोधं
न्यसबाहरि॥ निःपाछेआऐसभराजा॥ चारोदिशिकेनृपसिरताजा॥ सभआ
ऐश्रीपतिकेसाथा॥ हरिधर्मजकेन्पापोमाथा॥ भगतप्रतापुववठावनकेहित
श्रीपतिपहवीचारुकीयोचित॥७॥ जैमनुवाच॥ दो॥ जैमनुकाहैसुन
जनपतिप्रापतिभयोतुरंग॥ आयोमखशालाविषेपारथअरुनृपसेग ला८
८॥ चौपई॥ अगजजहैआयोनंदलाला॥ कहतधरमप्रतिसुनजमेपाला
आऐसभमचहुदिशिकेक्षितपति॥ ताकामजरालेमनहरषत॥ पारथत्या
योजीतनृपतिसव॥ तेनृपतुमरेपगपरसतअव॥ प्रथमसुधिमजगक्षि
चंद्रहासको॥ वोलेकृस्नहृदेहुलासमसो॥ सुनजधरमराजनृकेराजा
पहनृपमोक्षिभगतिसिरताजा॥ वालपनेतमभगतमकुकीनो॥ हमरी
सेवसासधरलीनी॥८॥ दो॥ राजाजीयहभगतमजयाकोमिलतोयेधा
इ॥ दोनोहमरेभगततुमकरउअलिंगनआइ॥१०॥ चौ॥ मिलत्योभग

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४६२
अश्वमेध
पृ०

तकौ मुदित तपुधिष्ठिर ॥ लीनौ कंठ लगाइ भुजनभर ॥ वज्र एव भ्रवाहनकौ अव
ति लीयौ भुजन गहि मन तन हरषत ॥ यह महीप रकौ न्रपविख्याता ॥ महाव
ली अरजनकौ ताता ॥ सुधनुधरम सुत कंठ लगायौ ॥ धंन्य धंन्य कहि जीय सुर
षपायौ ॥ मुषमस्तक चूमन कीयौ हित सौं ॥ धर्मनन्रपति आनंद तचित सौं ॥ ति
हपीछे वृषकेतु भुजन गहि ॥ हुए धर्मज प्रति कह्यौ धंन्य यह ॥ ११ ॥ दो ॥ करन
न्रपतनय राखव लइन जीते सेराज ॥ जहा तहा संग्राम कए राख्यो तुँराबार
ज ॥ १२ ॥ चौ ॥ धर्मतात भयो अति हरषत मन ॥ करणि पूत कौ कीयौ आलिंग
न ॥ मुषमस्तक चूमन कीयौ हितकरि ॥ धंन्य धंन्य मुषकहति युधिष्ठिर ॥
पुनि हरि भुजन भरि लीयौ नीलधुज ॥ सुनधर्मज यह न्रप महाज्ञानु भुज ॥ सं
गल्यायौ अतिवली जमात्रा ॥ पावक नाम जगत विष्याता ॥ जिन तुमरी स
म सैन जराई ॥ करत प्रणाम मिलत अति हि धाई ॥ वज्र हंसध्वज न्रप भुज ग
हि हए ॥ सुनज धरम के तात प्रवन धए ॥ १३ ॥ दो ॥ जाके सुत तुमरे भगत
सुरथ सुधंन्वा नाम ॥ शंकर जिनके सीस ले मेरकी ये उर माल ॥ १४ ॥ चौ ॥
वज्र रो सुनौ भगत के ताता ॥ यह ताम्रधुज न्रपति विष्याता ॥ अर्द्ध अंग जा
के पित दीनौ ॥ हम रे विषे नैवेद जन कीयौ ॥ सोई न्रप तुम कौ करत प्रणामा
महावलि एस्सर अभिरामा ॥ वज्र रो वीर वृहभ्रपाला ॥ भुजन गहि लीयौ नंद

म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

केलाना ॥ इहनृपअतिआदरसहितदीनो ॥ रनमहिवचनमानसुजलीनो
त्याहृदई पुत्रीपारथ्यकों ॥ प्रमुदितसुभद्राकीपोसुखारथ्यकों ॥ १५ ॥ दो ॥ याके
लेजपद्धानकेवीरहनृपनाम ॥ पुत्रीदीनीबिजेकोंसोनुजकरतप्रणा
म ॥ १६ ॥ चौपै ॥ पुनिजेद्रुपदकोंताततलीयोहतेए ॥ लेगौरयोधर्मजचरननृप
ति ॥ बजरोहहरिदानवअनशालहि ॥ लीयोभलाइधरमसभपालहि ॥ पुनि
हरिजैवनासनृपहत्यायो ॥ हर्षतधर्मजतकंठलगायो ॥ पुनियहहठाठेसा
कलमहीपति ॥ अरजुनत्यायोजीतवलीअति ॥ सभनृपतुमकोंकरतप्रणा
मा ॥ आज्ञादेहुकरहिविश्रामा ॥ सुखागतिकरीधरमकेताता ॥ राजनकोंपट्ट
दीकुसलाता ॥ १७ ॥ दो ॥ आउधीराजेनृपतिसभमवशालाकेमांहि ॥ कीये
कृतारथ्यकृष्णसवनिहवेअप्पानाहि ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ अदभुतरचीयज्ञकी।
शाला ॥ योजनतीनपर्यंतविशाला ॥ ताहांकंचनअस्थंभअपारा ॥ मणिम
कुताऊलरविसारा ॥ ताहांचौरासीसहसपरबीअवर ॥ जुरेआइबहुमनीत
पीयंबर ॥ इकभोजनदेतसभनकें ॥ नृपतिपृथ्वीएरहरबतमनसों ॥ गेणा
शतऐककरतनितदाना ॥ ताम्रपीठहुरस्रूपविधाना ॥ तीनलाखबटतोर
सहजारा ॥ कनकआभूषनघडतसुनारा ॥ १९ ॥ दो ॥ छत्रमुकटवरम
द्विकाकुंडलअरुकंठमाल ॥ नितप्रतिघडतसुनारसभपहिरावतिभूपा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ [yellow-marked] ॥
४६३
अश्वमेध

ल ॥ २० ॥ चौपई ॥ कुंनसौं गहुर रूप व ना वति ॥ तासु पीठ साजि तसन भा
वत ॥ रावत साजि नमित गोदाना ॥ जै सै शास्त्र वेद विधाना ॥ जे ऊ रिषव
सुति सुर सरीत टपरि ॥ वीस सहंस ते ऊ जुरे पत्र पवि ॥ ते ऊ पाठ कस
व वेद उचारा ॥ सदा निगम धुनि करत उचारा ॥ जिन बांध्यो कंकन नृप हा
था ॥ ते रिषव रहत सदा नृप साथा ॥ पाकर सोई लेहि नृपति सों ॥ चारा वे
द पठहि नित प्रति सों ॥ २१ ॥ दो ॥ तीन पहर नृपति चरित्र के पत्र करम परिजा
त ॥ दान देत पुण्य मै दिज नपाहि भोजन षात ॥ २२ ॥ चौ ॥ चौसठ सहस औ र
रिषव ब्राह्मन ॥ दनर सोई लेत मदति मन ॥ फिरत सुइ हुत परमदत गाता
रिषव न कहि धर्मज प्रति बाता ॥ पठवत हैं नृप भीम महा माहु ॥ पाकर सोई।
नि मत सवारे ॥ हम सौं कहत उतावल कीजे ॥ वेग चल जग्य भौ जन कपरली जै
हम ब्राह्मन सम ई ब्रह्मचारी ॥ संध्या सुमरन केहित कारी ॥ के ऊ करत तरप
ण ति हं काला ॥ के ऊ संध्यादिक कर्म भूपाला ॥ २३ ॥ दो ॥ पकरहु लावै जंगम
हि कहै भयो इसनान ॥ हम उरपत सब उठि चलत है तन कुंभि री जान ॥ २४ ॥
॥ चौपई ॥ धर्मज [yellow-marked] हु ठ रिषी पन पगलागा ॥ की पो लोभ मनस
मम भागा ॥ धर्मज कहौ बुलाई दे जे पति ॥ रिषव न बुलाइ लेजतु मनि नितप्रति
धर्म ता तात पुन भीम बुलायो ॥ सकल वृतांत भाष समझायो ॥ गाल्ह वे रिषव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नमाहिवसततहै ॥ जिहदेषतनअरातानुनसततहै ॥ कह्योभीमसकौंनृपतियुधिष्ठिर ॥
गालवरिषल्यावऊहस्तनपुर ॥ चल्योपवनसुतउठितततकाला ॥ पुनिआज्ञा
लीनीनंदलाला ॥ २५ ॥ दो० ॥ भीमसेनततछिनगयेगालवरिषआस्थान ॥ हाथ
जोरउस्तुतिकरीदखेरिषविद्यमान ॥ २६ ॥ चौ० ॥ कीयोयज्ञसअरंभयुधिष्ठिर
तामहिविद्यमानवैठेहरि ॥ तहांजुरैत्रैलोकमुदतमत ॥ चाहततोहिदीजोथ
दरसन ॥ तहांचलौऊरिषकरुणाकीजै ॥ वेगकृपाकरिदरसनदीजै ॥ तव
गालवरिषवचनउचारे ॥ कवननामपितुनृपतितुमारे ॥ कह्योभीमसेना
पवनरिषीप्रवरि ॥ धर्मराजपितुनृपतियुधिष्ठिर ॥ पुनिरिषकह्योवचमिसु
तनकौं ॥ सुजकौभीमनामकहुताकौ ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ सत्यपिताहैधर्मकै
भीमसकह्योप्रगटाइ ॥ सत्यतातहैकवनकैपुनिपछ्योरिषराइ ॥ २८ ॥ चौपई ॥
सत्यपितासंतोषवषानऊ ॥ मनवचक्रमनिश्चैतौपजानऊ ॥ पुनरिषभा
षवचनकृपाप्रति ॥ सत्यवचनतुमकहेतैंपवनसुत ॥ हमवैठेसंतोषधारमन
कंदमूलअहारनगनतन ॥ ठौरइकांतपांतमनपाई ॥ आतमरामध्यानमिलि
वलाइ ॥ उहांयज्ञपरिराजरसोई ॥ षटरसभोजनपावतलोई ॥ तहांलालसाव
डैअपारा ॥ भूलजाइततवज्ञानविचारा ॥ २९ ॥ दो० ॥ भूपतिजगहभोजनकीचेतसा
वउतिअपार ॥ जन्मवादहीजातहैवनसततत्वविचार ॥ ३० ॥ चौ० ॥ श्रीपतिकोंपहवच

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध

नप्रमाना ॥ जेऊ जगमहि भगत भगवाना ॥ नहीं वखाँवत तत श्रासोई ॥ हमरे भगत कहावत जोई ॥ वडरि जीविका सरूजनाजा ॥ उद्यम करि ल्यावे प्रभु साजा ॥ कछु आवहि कछु दान विधाना ॥ मन संतोष विचार तत्त्वज्ञाना ॥ ताते वहे नर उत्तम गनयत ॥ वर्ण चतुर्भे जसं राखे कृत ॥ जो नर भगत करत कछु दाना ॥ लेत देत को कल्याना ॥ ३१ ॥ दो० ॥ राजन को बल लक्ष्मी राज गुन तिहँ भाउ ॥ पुन्य करत राजा सिवि वैष लोगन को दिखराइ ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ पुण्य मै फल वांछा मन धरई ॥ पाछे दान पुण्य व्रत करई ॥ पुण्य करत अपुनी कीरति हित ॥ कोटकाम ना की हित है चित ॥ मन मैं धरत है अभिमाना ॥ ताते निहफल होत सभ दाना ॥ लेत देत को दुख होई ॥ जान वूझे कृत लीजै सोई ॥ विधवत दान करत हैं जो नर ॥ तिन को प्रापति होत स्वरगफल ॥ दीपा अप्सरा पना भोगति तेऊ ॥ ३३ ॥ दो० ॥ राजस दान करत जेऊ ॥ राजस दान करत जेऊ जन्म राजसी पावहि ॥ राजत तुरंग गमहि तइ सो अवर भूप गृह माहि ॥ ३४ ॥ चौ० ॥ जिन कछु दान राज कै दीनो ॥ राजस जन्म वडरि उन लीनो ॥ तसी राजस जन्म प्रकारा ॥ गर्व सहित तन सजत सिंगारा ॥ जि: विधदानु करत है जैसा ॥ अवर जन्म भोग निधरी तैसा ॥ दाता को प्रापति भई पह गति ॥ दान लेत हारे ससार हित ॥ वेद मंत्र पुन करत न ताको ॥ हृदय प्रकाश विना सत ताको ॥ ५ ॥ छप्य तम हत ध्यास ताप्य ताके कहे लगे नर्हती प्या पा ॥ ३५ ॥ दो० ॥ दई अससी सा नहि फल तेजो ईलेत न व दान वीरवंड भोजन ... अभिमान ॥ ३६ ॥ चौ० ॥ भीम सैन सन वचन उचार

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जाउ न हीन पके हम द्वारे ॥ केंदम लपरि मन ठहराना ॥ यह अहार सातका
जीप जानो ॥ नृपग हमो जन बीर बंइ घत ॥ बाऐते लाल सावठत चित ॥
वडी लाल सा तो षुमिटाना ॥ भट्ट कृत पकिरत द्वार जन स्थाना ॥ संतो बी हसी ति
म होई ॥ ठागा रहत भ्रम तन हीसोइ ॥ ३१ ॥ दो ॥ तैसे संतो बीपुरुष हृदै विवेक
विचार ॥ ताकी सेवा जग कर तम हा प्रीति उरधार ॥ ३८ ॥ दो ॥ ना तम ऊ सेंतो बसु
मन पापो विप्राम ॥ जहा धर्मसुत की सभा हम राक हे प्रणाम ॥ सोरठा ॥ पृथ
सां वचन विचार व ऊरिक हत भ्रपाप वलसृत ॥ अश्वमेध कृत सार पंचसाठ मे
ध्याउ पहू ॥ ४० ॥ दो ॥ इति श्री भारथ्यवं ऐ अश्वमेध वष्याने ॥ पंच साठ मे
ध्याउ पहूट ष्ति कन पूरण जान ॥ ४५ ॥ ६५ ॥ समस्त ॥ जैमिनोवाचः ॥ चौ
जैमिन कहे सुन जन्मे पतिवर ॥ विनो करो पुन भीम जोरकर ॥ सत्य वचन तुम
हृदे विचारा ॥ राजस के गुन इस विधि प्रकारा ॥ धर्मतात राजस जीय नाही ॥ सदा कृ
ष्ण सिमरत मन माही ॥ सदा धर्म रति ज्ञान विचाररति ॥ असत वात मन मे नही
धारित ॥ न्याय द्रव्य ले जज्ञ रचायो ॥ श्री पति तहा सहाय कराया यो ॥ तह पृथ्वि
वीपति जुरे अनेका ॥ तिनका कीयो न जाइ विवेका ॥ १ ॥ दो ॥ धर्मतात के यत्त
पर जुरे अनेक भूपाल ॥ कोऊ जीति ल्याये पाथ जे कोऊ दरसन दे लाल ॥ र
वै ॥ तहा जुरे त्रैलोक भूपाला ॥ आऐ सुरनर लोगपपाला ॥ महादेव गौरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४६५
अश्वमेध

संगाध्या ॥ अरु चौ द्रुति तिणी सावित्री सा प्या ॥ मघवा इंद्राणी संग लीने ॥ अरु गंगा
ण गंध्रप रवर्ग वीने ॥ अत्रि अंगिरा सप्रशिब प्रवर ॥ तहां जे रेवर मुनी तपो धव
र ॥ अरु दुरवासा नारद मुनि वकदाल्भ मज्ञवाल मीकं कुपुन ॥ विश्वामित्र वि
शिष्ट पराशर ॥ वेदव्यास सुकदेव महा वरि ॥ ३ ॥ दो ॥ कोटि तेतीस जे रे महत्त
अरु ऋषि संग लीऐ नाऐ ॥ आऐ लोकपाल के कुंभ चर नीति तु धार ॥ ४ ॥ चौ ॥ स
तसमुद्र तहां चल आऐ मूरति वंत मुदित मन भाऐ ॥ अरु नौ सै निंडीन मे सलि
ता ॥ अर्ध देह धाऐ उज्जलता ॥ जेरे तहां जमवरुण एकुबेरा ॥ अष्टकोटि गीरकन
कसु मेरा ॥ आऐ मेघनाग वसु गाड़े ॥ मूरति वंत देह धरि ठाढे ॥ पितर चतुर्दस
लोग जेरे सभ ॥ दरसन परसन हित जगत प्रभ ॥ ५ ॥ दो ॥ रंभा आदि अपछरा
निरत तविवध प्रकारा ॥ दरसन परसन कुंभ के सभ आऐ हितु धार ॥ ६ ॥ चौ ॥ ल
कुमीस हित कुंभ त तिस आऐ ॥ बोड़ सस सहस्र नारि संग ल्याऐ ॥ छप्पन कोटि ज्जा
दव वलवाना ॥ जेरे तहां सभ नर पति प्रधाना ॥ प्रापति होत सकल सुख तहां ॥ नं
दलाल को दरसन जहां ॥ दरसन परसन मिटत सभ पापा ॥ दूर होत मन को सं
तापा ॥ सुनगाल वतु सभ भगत गुपाला ॥ पत्र करत है श्री नंद लाला ॥ नामबु
धप्र रन्नप को कीनो ॥ अपुना भगत जान जसु दीनो ॥ ७ ॥ दो ॥ श्री मुक है गा
लवसु नोउ ठवली पेत त काल ॥ दरसन परसन मत मन ट त्रिक नप्रभ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नंदलाल ॥ ९ ॥ चौ० ॥ भीम वचन सुनि हरष बढ़त चित ॥ तहां तें उठि चल्यो धारहि-
त ॥ प्रापति भये वेग हस्तिनपुर ॥ अति आदर कीयो नृपति युधिष्ठर ॥ परस्यो दर-
सन श्री नंदलाला ॥ मुदित भयो निरषत मष शाला ॥ अग्नि कुंड की ठौर चौबर ॥
की योजन विस्तार तीन योजन पर ॥ तहां ठाडे हैं आप गुपाला ॥ ओवर चतुर्दिश केमि-
पाला ॥ चारों दिश प्रभु भये तिवनाई ॥ पित शाल वज्र भीत तत पाई ॥ ८ ॥ दो० ॥ चित्रशा-
ल मंदिर निषे वगमग जपंथ्या वज्र भीत ॥ जगमगात अति छवि वनी कोटि सूर की कांति ॥
९ ॥ चौ० ॥ वीस सहस्र ऐसी भ्रवरत तहां ॥ करत उच्चार वेद धुनि महां ॥ नित्य करम सम सरु-
हो मकरावत ॥ पाकु रसोई नित्य प्रसंग पावत ॥ चौसठ सहस्र कौ मार रषि बजे ऊ ॥ पाकु
पाई सिमरत हरि तेऊ ॥ आपनी इच्छा सों विचरत नित ॥ नित्य कर्म करि तत सों हरिसों
हित ॥ सभ राजनि की चमू जमित वर ॥ उतर पर कित तने पोजनपर ॥ केऊ नवर-
न सकत भित ताकी ॥ आभा कोटि सूर सम ऐसि जाकी ॥ ११ ॥ दो० ॥ तीन लोक की नारि ।
मिल गावत मंगलचार ॥ कुंती देवकी आदि ले सभ मिल करत विहार ॥ १२ ॥ सो० ॥
रुकमन आद नाइका जे ऊ ॥ षोडश सहस्र आनंदित तेऊ ॥ वज्र रस भद्रा
आदि जुवति जन ॥ गावहि गुन गोविंद मुदित मन ॥ विष्णु आ सरु चंपक माल-
न पुन ॥ चित्रागति सभ गावत हरिगुन ॥ पारथ तेव ऊदान कराये ॥ नवस-
भ ज्ञात थे जे गहत आये ॥ गजगा पुन परके चुनदाना ॥ दान दीयो अरजन वि-
धनाना ॥ पारथ को कहि धन्य युधिष्ठर ॥ पुनि पुनि कंठ लगावत भजमर ॥ १३

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४६६

अस्वमेध

दोहरा ॥ बज्र रिधंन्य कहत कृस्न को स्तुति पृथिएर राज ॥ पांडव सेवक जानह
रि को पोस पूरन काज ॥ १४ ॥ चौ ॥ अब रोम हरषी बी बज्र भाए ॥ कृस्न नाम सुन
ग्रहत तजि धाए ॥ एक यज्ञ है धर्म भुपाला ॥ कोट यज्ञ फल दरस गुपाला ॥ सेव
नाग पुत लोगपि पाला ॥ प्राप्त भए यज्ञ की शाला ॥ काम धेनु सारु तउडश
शिरवि ॥ यज्ञ पृथिएर सनि आए सव ॥ कृपा कृस्न की धर्म तात पवि ॥ आए एस
ध्रुन बनि धबुला इहरि ॥ ठाडे की ए धर्म द्वारे पर ॥ दान करत न पृ विवध प्रकारा
॥ १५ ॥ सोरठा ॥ कल्प बक्त न यज्ञ आनि ॥ वो यो धर्म जद्वार पवि ॥ चंदन मृगम
द सानंधि र केया पुर मगज छत सकल ॥ १६ ॥ दोहरा ॥ कोच भई मग गअर गजा जह
तहि परम सुवास ॥ हस्तिन पुर के नारि नर सभ के हृदे उलास ॥ १७ ॥ चौ ॥ भिक
स बरीती पद्वार द्वार पवि ॥ घसि सुगंध भरक ल सली येकर ॥ हरषत नक्का
सत सुजा जवी गारा ॥ नून पहिरे पट विवध प्रकारा ॥ भिक सहिमाइन पति मग मा
ही ॥ कूर कहि तिन पएनी पितता ही ॥ हसि विला सपर स्पर करही ॥ बस्त्र सकल
सुगंधित भर ही ॥ हरषत हिर दे हो हि भुपाला ॥ धंन्य धंन्य कर है नंद लाला ॥ पु
र की नोवै कुंठ समाना ॥ ऐसे कहै सकल रा जाना ॥ १८ ॥ दोहरा ॥ मुक्तो पुरी गज पुरि
भयो सभ होकहै तनरिंद ॥ जन्म सुफल हम सरे भए देख्या दरस गोविंद ॥ १९ ॥ चौ ॥
मृगमद घसि भरि कल सली ऐकर ॥ हरषत धिरकत लोग परस्पर ॥ हासव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

लासकरतमनभावत॥ प्रमुदितहांयेगुलालउडावति॥ बाजतहैंपंचतूरअ
पारा॥ अनगनवाजेविविधप्रकारा॥ घररहांधुनिअवनिअकासा॥ बढ्यो
सभनकेहृदेउलासा॥ अतिआनंदलादेवढ्योहितसनपूर॥ धंन्यधंन्यसभक
हैंपृथिएर॥२०॥दो॥ ईंद्रआदिसभदेवतानवरखहसआदि॥गणेश॥ दुरवासा
तेआदिरिषगजपरकीयोप्रवेश॥२१॥चौपई॥ जुरेतहांअनगनअवनीसा
तीससहसससातढ़तीसा॥ तैसाऐकुपृथिएरराजा॥ तैसेनृपतिजुरेसिर
ताजा॥ अवरनृपतिकोअंतुनिपारा॥ अनगनभूपजुरेसुअपारा॥ कनक
मुकटशिरचवरढुरावति॥ मत्तप्रतापपवनद्वविपावति॥ देवजकरुनाप्री
नंदलालढ़ित॥ सभैनिवतिसिरधर्मभूपालहि॥ महाबलीसूरेअतिपोधा॥ पृ
नरनकवहृतजुध्योनहिंकोधा॥२२॥दो॥ भूपतिजुरेअनेकतहांदरसनहितप
डराज॥ जोतेधनअराऐविअूतदवनपजसमाज॥२३॥चौ॥ शिवसुरमुनिनृप
जुरेअपारा॥ चतुरंगनिसैनानहींपारा॥ तिमकापाकुइकत्रनहोई॥ इकुरधु
वीटद्दीचोनृपसोई॥ जोइधर्मजसोपेनृपतिनको॥ सोसभकछूपञचावत
तिनको॥ पाकुरसोईबसनअभरननित॥ ईकईककोनितदेतमंदहीचित॥ जो
ईनपसोपेजेसहिराजाना॥ तोतिनपरीक्षिएदिनसबधाना॥ बवरदारहैभी
मसभनपरि॥ आदुरुकरतसभनकोप्रीतिकरि॥२४॥दो॥ मतुकेऊनृपयो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्व मेध
४६७

॥ भाबई मुक्त को पद ऊच्यो नाहिं ॥ ताते मैं शुद्दिन पवन सुत बर ले तस भ पा
ति ॥ २५ ॥ चौपई ॥ इक दिन धर्मज सभ मध्य विराजति ॥ कोप इक नि वत्र तस भा
भूपति ॥ ऐक ठौर कौं पोषा कुसमन को ॥ ततछिन लौ पाबुला इमवन सो ॥
पं कतिजोर सकल वे छाए ॥ मनबांछित भोजन तिन पाए ॥ बीरस्वाद रस सब
टू परकारा ॥ अद्भुत तिनरे सन की पोम हारा ॥ वचन कहत हरि धर्मज केतव ॥ पूज
करउ तुरंगम की अब ॥ त्याव उजग्य पत्त की शाला ॥ मन हरषत भयो परम भू
पाला ॥ २६ ॥ दो ॥ इस्थापन नन वग्रह करउ अग्नि कुंड पद्र जाइ ॥ ततछिन लौ पो
मंगाइ है अनता सौ पदुराइ ॥ २७ ॥ चौ ॥ त्याए अश्व पत्त की शाला ॥ उठे प्रधान
रषी ततकाला ॥ हरि आज्ञा लेगए कुंड वरि ॥ इस्थापन कीयो नवग्रह विधक
रि ॥ अग्नि मंत्रनि की धुनि उपजाई ॥ सुनि मन शांति तुरंगम पाई ॥ ब्रह्माचारी
वर्षप्रमाना ॥ फिरयो तुरंग जहां मनमाना ॥ सोई तुरंगम अतबलवाना ॥ आ
नि कुंड की इँगढ़ हराना ॥ वेद मंत्र करि ठाढ भयो ॥ नरषधरम सुत संभ्रम मंग
यो ॥ २८ ॥ दो ॥ वजप्रकार पत्राक्रर री रिबनहु पैधपै हित ॥ दरसन को आए नृप
ति हरषत आपन समेत ॥ २९ ॥ चौ ॥ सभ भूपति [illegible] के पग लागे ॥ देव प्रदछिना
ही ऐ अनुरागे ॥ वचन कहे सभ नृपति परस्पर ॥ यह तुरंग बलवान चतुरवर
इ ब्रह्माचारी फिरयो वरष भर ॥ आइ ठाढ भयो वेद मंत्र करि ॥ सभ नृप देखि असो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सवै जै पुति ॥ सुफल यज्ञ यह करहु धरम सुत ॥ देअ सीस सब मन पति सिर
धारे ॥ कहै सकल बड भाग हमारे ॥ जन्म प्रपंच तन यह सुष पायो ॥ करुणाक
र हरि दरस दिषायो ॥ ३० ॥ दो० ॥ नित प्रति दर्शन कृष्ण कौ अरु गंगा इस्नान ॥ करहि
दरस सम भए षन को हमरे भाग प्रधान ॥ ३१ ॥ चौ० ॥ देषहु यज्ञ नभ तपद मा
पति ॥ सावधान ठाढे मन हरषत ॥ महा भगत यह राज युधिष्ठर ॥ जिनके
नित आज्ञाकारी हरि ॥ ताते धंन्य धर्म को ताता ॥ धंन्य धंन्य या को पितु माता
वउरि युधिष्ठर सकल ऋषीश्वर ॥ लीये बुलाइ तहा विनतीकर ॥ देउ असी
स वेद धुनि कीजै ॥ यह तुरंग इस्थित कर दीजै ॥ वकदालभ तेजाद्य ऋषीश्वर
वचन कहत भए परमतपीश्वर ॥ ३२ ॥ दो० ॥ यज्ञ सेपूरन भयो तुम जहा वे
हे नंदलाल ॥ मन क्रम वचन जीय ज्ञानी ये वतन करउ भूपाल ॥ ३३ ॥ चौ० ॥
ऐसा वली तुरंग तुमारा ॥ ठाढा सगरनि कुंड के द्वारा ॥ ताते यज्ञ जानन जानि
श्रेव करि ॥ यज्ञ तुमारा सुफल की यो हरि ॥ वउरि युधिष्ठर वचन उचारे
सस कहत हो प्रभु हमारे ॥ लगाहि तीनउ नयन यहु ज्ञाप ए ॥ ताते हम
रे जी उपजत डर ॥ वैष्णु देव के यह सवधाना ॥ ठाढा करुना सो भगवाना
मंत्र पुरी षत शावद मतिकरई ॥ तव हि परम हित दूषन परई ॥ ३४ ॥ दो० ॥
ताते हमरी लाज तुम कृपा करउ रिषराइ ॥ निगम मंत्र पढि ज्ञान देली जैसा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प्रसिद्धि डाइ ॥ ३५ ॥ चौ० ॥ कहै शिवि नृप चिंतन कीजै ॥ पदमावति दरसन चित
दीजै ॥ यज्ञ मह्ल है श्री नंदलाला ॥ सो हरि तुरि सखा भूपाला ॥ शिवनृप
शीरवाद बउ दीनो ॥ वेद मंत्र इस्थित करि लीनो ॥ है की पूजा करी शिवन
तव ॥ एक दिशा पढि निगम मंत्र सव ॥ उपजी शांति तुरंग मके मन ॥ स्रग
कुंडहि गठहि राखे तन ॥ इति यद्दिव ससव जुरे मही पति ॥ पूजा कौ तुरंग
मन हरखत ॥ ३६ ॥ दो० ॥ परदछना तुरंग को दीनी सकल नरेस ॥ विप्र मा
न पूजा करी यथा वेद उपदेस ॥ ३७ ॥ चौ० ॥ दिने तीसरे सकल जुवती जन ॥
पूजा है की करी मुदित मन ॥ धूप दीप आरती उतारी ॥ शुभ मंगल गावति मि
ल नारी ॥ संपूरन पूजा कीनी जब ॥ पाकुर सो ई सिध भई तब ॥ वचन कहे त
व कुल धरम पती ॥ पंकति ऐ कूकर जु शिवनृपति ॥ आपो आपुने पात्र दीये र
कर ॥ प्रथम कप्रभु मरंग पट की जहु ॥ एक दूसरे हु कहुनन दीजो ॥ षटरस
भोजन रुचि सु पावे ॥ ३८ ॥ दो० ॥ नृपति रीषी स्वर स्मरु स्मर जुर वै है इक ठौ
र ॥ दूध अरु दधि षटरस तहा ले मुष मेलहि कैर ॥ ३९ ॥ चौ० ॥ भोजन वने अने
क प्रकार ॥ वरनत होत मंथ विस्तारी ॥ इछा चारी भोजन कीनो ॥ जो द्विजः भा
या सो हित लीनो ॥ तो शिव नरपति रिषि सभ देवा ॥ कीनी जपा उचति द्विजः सेवा ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

भे जन कुपि सभ वठे मुदत्तिमन ॥ मुष तें बोल्त चंदन चरचित तन ॥ चौसठस
त सप्रेषी न कौ न नृप पुन ॥ दीनी पहद दक्षिना ले जुसुन ॥ इक इक पात्र कनक
का अदभुत ॥ इक रथ इक गज ऐक अश्व युत ॥ ४० ॥ दो ॥ सवा भार भरि कन
क कौ इक इक प्रबकौ दान ॥ दीयौ युधिष्ठर मुदत्ति मन वेद उकत परमान ॥
४१ ॥ चौ ॥ चौसठ सहस्र रिषीश्वर कौ नृप ॥ दीनी पहद दक्षिना नरधिप ॥
बीस सहस्र और रिषी जेऊ ॥ सदार हत तधर्म जु संग ते ऊ ॥ तिन कंकन एकौं
धौ नृप हाथ्या ॥ भोजन लेत सदा नृप साथ्या ॥ तिन कौ दान अधिक नृप दी
नौ ॥ कहि मुष स्वस्ति जन वरली नौ ॥ अग्र अग्रगन मधि है मधि गे जब
पद्दि राव दिगे राजन कौ तब ॥ जैसी बात उचत नृप ताकौ ॥ तैसी पद्दि राव दिये
गे ताकौ ॥ ४२ ॥ दो ॥ जब हीं अग्र अग्रगन धि बे हो मधि गे घनस्याम ॥ तब सब
भूपति करहि गे धर्मज कौ परणाम ॥ ४३ ॥ चौ ॥ भेट देहि गे धर्मसुत कौ तब ॥ चा
रो दिशा के महीपाल सब ॥ ता पाछे पुनि सम सु तभुपालौ ॥ पद्दि राव देगा सकल
भुपाला ॥ तिः पाछे दै पावक सभ नृप कौ ॥ सकल पृथ्वी न अरु सभ राजन कौ
वि नै क रैगा धर्म तातपुन ॥ तेऊ जे रेत हान नपति पृथ्वी अरु सि ॥ धन्य कहै गा भा
गह रे ॥ भए कृतारथ दर सु तुमारे ॥ क्या हम कीन्ह तुम मधि बड राजा ॥ नहीं
परोजन मोहि आन नाजा ॥ ४४ ॥ दो ॥ तुम अत्रौ ऐसभ कृपा कर हम रेषु तुम सम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४६४
अश्वमेध
जुज५५

माजउ ॥ हम तुम भए सनाथ अब दरस परस पद राज ॥५५॥ चौ० ॥ जैमि
नु कहै सुन जनमेजय पति वर ॥ भीम गाय यह ह्व वचन युधिष्ठिर ॥ अश्व अगनि म
हि होम हितो जब ॥ विनै करै गा धर्म तात तब ॥ प्रथम धर्म यह ह्व वचन उचा
रई ॥ पाहै नृपति निमंत्र तकरई ॥ तुम पितर न परिकृपा मरारी ॥ पञ्च सु
फल करहै ससितु धारी ॥ हय पठा डो भयो अगनि कुंड वए ॥ करत नल घुपु
री ष करुना हुए ॥ करत वेद धुनि ए षध ए भाउ ॥ सोठ सात मोपदु रन धाउ
५६
॥ दो० ॥ इति श्री भारथ पर्व ... अश्वमेध ... ॥ सोरठ सात सो
ध्याउ ... ॥५७॥ धी ... ॥ जैमिनी वाच ॥ चौ ॥

जैमिनु कहै सुन जनमेजय पाला ॥ यज्ञ कथा वर महा विशाला ॥ भगत न जस
राषति निज तन श्रीपति ॥ धारे भेष अनेक रूप अति ॥ भगत बुझलभ गत नहि
तिकारी ॥ धर्म संकेर ह कश रधारी ॥ तिः तिः को सम भाउ है जैसो ॥ आदर देत
तहा हरि तैसो ॥ गंगा तट बैठे शिव जहा ॥ ओ ष्ट करत सदा हए तहा ॥ जहा छ
त्र धारी वड राजान ॥ तहा हरि वचन कहत सुष सा जान ॥१॥ दो० ॥ जहा होहि
लघु नृप तहा हरते साध ए रूप ॥ तो षु करत है सम मन को निश्चै सस्प सुरूप
॥२॥ चौ० ॥ तहा रसोई बाट सर रसा जत ॥ तहा हरि नित सवधान विराजत ॥ वी
सस छस्व रबिश्वा तधु निज हा बैठ सुन तै सदा हए तहा ॥ जहा अस हत तौ स्याग

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कुंडपरि ॥ देखीयतत्त हासदाबडे हरि ॥ जहांकुंतादेवकीजसुमति ॥ विचरतित
हासदाजादौपति ॥ रुकमनिआदिअष्टवरनारी ॥ राजततहासदाशिरधरी
सोलहसहस्रऐकसैवामा ॥ तेजानहिहमपरहितघनस्यामा ॥ ३ ॥ दो० ॥ पत
कआऐपत्रपरिसुरनरलोगदिगपाल ॥ नृपतामैहरिदरसुकरिकृपाकरीप्र
भुचाल ॥ ४ ॥ चौ० ॥ तहांभऐजनबटरसभोगा ॥ हरिदरसनउधरेसबलोगा
देखीपतजहांततहांहरिराजत ॥ आचनीचसभठौरविराजत ॥ भएषथ्यासमिटा
गईसभनकी ॥ आसासाभईसंपूरनमनकी ॥ सभमिलवातैकरतपरसपर ॥
सुखसमृद्धहमकोंदीनोंहरि ॥ भऐकृतारथप्रतापगसकलतैकहि ॥ वसेआइवै
कुंठपुरीमाहि ॥ जहंततहंदरसेकृष्णकोंहाईआपवेकसकलहौरहरिसोई ॥ ५ ॥ दो०
हैसोधारीहरिकृपाधर्मजपरिभगवान ॥ ठाढारहततसाधीननितजहांतहांसवधा
न ॥ ६ ॥ चौ० ॥ वीतेदिनकोंद्वादसमासा ॥ देतआहुतिअगमिनिरासा ॥ भैज्ञानमैममा
णघतभिस्थहौतहवि ॥ अरुमिज्ञानमैमएहौमतजव ॥ अरुमिज्ञानमएतिनभित
प्रति ॥ अग्निकुंडमध्यतडारतहरषत ॥ बोलेसबनागतिहितआवसर ॥ वचनहितमारास
नलीजैहरि ॥ हमरैमनउपजीयहवाता ॥ अरपौंसुतनाधर्मकेताता ॥ श्रीपतिमजु
कोंआज्ञादीजै ॥ यहकारजकोंवेगमनकीजै ॥ ७ ॥ दो० ॥ कृष्णकह्योपुनिसेबपृथिवि
सहचर्पमध्यराज ॥ समैनपुत्रीदैनकोंआवपहतपत्रसमाज ॥ ८ ॥ चौ० ॥ पुनिठहरिकह्यो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४२०
२५

सेवसुनलीजै ॥ उत्तमसमणिभेटाअवदीजै ॥ पाछेकरजसुतहजदाना ॥ कारजुकी
जेवेदविधाना ॥ ठाजाफुताभीमहाद्वारेपर ॥ ताकेलीयोवुलाइवेगहरि ॥ मनेवुरे
कीजोविचारिकरि ॥ वीहिआवनदीजैभीतर ॥ रिषअरुभूपतिजुरेअपारा ॥ हितर
साईविवधप्रकारा ॥ टहलकरतराजनकीनारी ॥ अद्भुकरतभोजनहितुधारी
॥८॥ दो॥ भरतेउनकेन्रपतिसभटहलकरतरुचिमान ॥ ऐकपरोसनपरषरे
रकपढुचावतिआन ॥१०॥ चौपई ॥ धर्मतातअरुद्रुपदसुतवरि ॥ धोवतिचरनप्रे
बनकेरुचिकरि ॥ तिलकतंवोलदक्नानितप्रति ॥ देतरिषनकोअतिमनहरिषव
त ॥ वषिऐकुकीनीकृतऐसे ॥ आज्ञावेदकरीविधतैसे ॥ धर्मसुतनअरुजनप्रति
भाष्यो ॥ धंन्यभ्रातहमराप्रणराष्यो ॥ त्याप्योजीतिसकलभूपाला ॥ शोभितक
रीपत्रकीशाला ॥ धंन्यधंन्यपहमभुजातुमारी ॥ तुमसारषोनपरउपकारी ॥
११ ॥ दो ॥ चारोदिशाकेभूपतुमजीतकीयोजेकार ॥ धंन्यतुमारोमातपितसाचे
सबाम्हराहि ॥१२॥ पारषकेहैसुनहुभूपाला ॥ पहुन्चसमजीतेनंदलाला ॥
भगतजानहमकोजसदीनो ॥ पहकारजुसमश्रीपतिकीनो ॥ तुमरीभगतिमान
लीनीहरि ॥ समनपजीतेतुमपसादिकरि ॥ तुमराधर्मप्रगटजगभयो ॥ तातेस
भकलेसदुरगयो ॥ वडुधपतिव्रतद्रुपदसुताके ॥ जीतेन्रपतिशीलसतताके ॥ ज
तंजदिहमकोअपदापरी ॥ तहासहायद्रोपदीकरी ॥१३॥ दो॥ जहतेकोअपदाव

म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रीकी नीत हा सहाइ ॥ तहां द्रुपदी कृष्ण को सिमरन दीयो बताइ ॥ १४ ॥ चौपै ॥
दुरयोधन पठियो दुरवासा ॥ पंडु सुतन को करन विनासा ॥ आपु दैन
आयो ताही छिन ॥ मांगयो आंनु सीत कछु ताछिन ॥ तहां द्रौपदी हरि सिमरा
यो ॥ आंनि वदन नीत प्रगटायो ॥ दुरवासा रिष हरष तम भयो ॥ दै असीस मुनि
जस्नान गयो ॥ आयो वडपेट सेरी वारा ॥ दुरवासा ता पच्छो धआवारा ॥ त
बहु मरहु ते पेवन माहि ॥ चलि आयो रिष राज तहां ही ॥ १५ ॥ दोहरा ॥ तब
हम को चिंता बडी आग नि जरन मत कीन ॥ रिषु दे वे गा आप हम तां ते भय पे
अधीन ॥ १६ ॥ चौ ॥ तहां द्रौपदी सिमरन कीनो ॥ हरि पद पंकज सो चितु दी
नो ॥ तत छिन आपति पावक भए ॥ दरसु परस हम रे दुष गए ॥ शाक पत्र ह
रि मुष मे ल्यो तव ॥ तृप्त भए मन मत तिरिषी सब ॥ हम को तहां क ए ते डाउ
दुरवासा को आप पनि वा स्यो ॥ वडरो नगन करन के अवसर ॥ चीर कोट लै
नभ ठाडे हरि ॥ राषी द्रुपद सुता की लाजा ॥ वस्त्र प्रवाह कीयो पद राजा ॥ १७ ॥
दो ॥ पुनि आदि वट के तलै जुरे ब्रह्म सुर शंभ ॥ सभा मे लंकी यो मंत्र हरि महा
भारथ आरंभ ॥ १८ ॥ चौ ॥ द्रुपद सुता हम को त वराष्यो ॥ कपट दीनता कृष्ण प्र
ति भाष्यो ॥ प्रभु कीयो जनम मे जै कितपति ॥ उत्तर दीजै मम तिम सुज हरि बत ॥
द्रुपद सुता कीर दत्ता जैसे ॥ हरि कीनो भाव जमजत सै ॥ आदि वट के तले भले

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४७८

४७१ ग्रमध

किम ॥ जैमिन मुनि म जकै भाषे तिम ॥ जैमिन बचन कहे तिन पै सौं तब ॥ सुनि जन्मे
वन भाखे तो तस व ॥ रक्षा करी द्रुपदी की हरि ॥ तुम सो भाष सुना वा न पर
रि ॥ १८ ॥ दोहा ॥ नारद आपु दीया कृता आज्ञा सा पद्राइ ॥ जिह गति ते है द्रोप
ती तहां दुःस रो न जाइ ॥ २० ॥ चौपाई ॥ जो दुःस रो जाइ तो केउ ल्ह ॥ वर्ष ऐकु वनवास
हो इतिह ॥ नारद आपु धार मन माही ॥ ऐकु दृस रे निरखत नाही ॥ इक दिन
कौसी हवि जै प्रति भाखे ॥ धर्मज ब्रह्मचर्ज न हि राखे ॥ द्रुपद सुता अर तन पे
ति युधिष्ठर ॥ काम दृष्टि तकर त पैर सपर ॥ अर जन के मन संभ्रम भयो ॥ धर्म
तात के मंदर गयो ॥ पारथ पहिने अजै पधारा ॥ आपु स होदे बोइक बारा ॥ २१ ॥
दोहा ॥ धर्म तात के भवन मधि तु तो द्रोपदी ताहि ॥ गयो तहा चलि इंद्र सुत दा तो दे
षे जाइ ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ अरजन देषा द्रुपद सुता तब ॥ नप पग चांपति नगन अंगा
सब ॥ पारथ निरख भयो अचर जैमन ॥ सत्य कहत पुलोग मत वचनन ॥ कै
से र हे धरम को ताता ॥ निरखत नगन द्रोपदी गाता ॥ हारइ कोंत ऐकशि हजाव
र ॥ कै से धर्मज सके धीर धरि ॥ तीन लोक मधि नाहि न ऐसी ॥ सुंदर अंग द्रोप
ती जैसी ॥ नगन भई अपु नी तजि लाजा ॥ चांपति चरन युधिष्ठर राजा ॥ २३ ॥ दोहा
पहि विचार जी पउठे चलियो धि तापु मन धारि ॥ धर्म धि जे को कहा तब नारद व
चन चितार ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ लागो चलन धर्म जै बन जब ॥ वडजि युधिष्ठर बचन क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हेतव ॥ जवहीं वर्षसंपूरन होई ॥ तिन मंदिर हें एक दिन सोई ॥ गए पांडव श्रीदेव
दर्शना ॥ चढ़ि बैठे उपर सिंहासन तहाँ ॥ जाय अंतर रहे रैन धर्म जहाँ ॥ प्रातप्रवेस
कर हस्तिनापुर मांहि ॥ ऐसे वचन सुनत चले पांडव तब वन ॥ निःशब्द नभ मंत कहि सो चं
चल मन ॥ वर्ष वीते तऐ कुंदन रह्यो ॥ तव पारथ अपनें जी पकरह्यो ॥ २५ ॥ दो॰ ॥ च
लत वेर में सोक ह्यो वचन धरम के तात ॥ अरजन मन मोहित कीयो आ बैठे वट के
वात ॥ २६ ॥ चौ॰ ॥ राधा माधव आ बैठे वट जहाँ ॥ अरजन कह्यो जाउ चलित तहाँ ॥ आ बैठे व
ट की उर सिधायो ॥ ततछिन शीघ्र ऊहाँ चलि आयो ॥ वट वंशी चढ़ि बैठे वन वाना
मन सिमरत कौ नाम भगवाना ॥ जाग्रत अर्द्ध निशा वीती जब ॥ प्रथम देखि तरे दास हे
ऊंतव ॥ राधे वैद्य प्रयंक तिन अद्भुत ॥ जगमगात हे विसाति प्रताप पुंज ॥ की ये विछ
वन सप्त सुंदर छवि ॥ विधि शिव इंद्र विबुध आए सब ॥ २७ ॥ दो॰ ॥ नारद गण सन
कादिक रिष जु रे आ त्रैलोक ॥ निरखि जे मेचर जम थोकें तक वन्यो संजोग ॥ २८
सो॰ ॥ पारथ हृदे विचार तत ज्ञाना ॥ जो लौं लोग मधि मुख्य प्रधाना ॥ ते सभ वटके त
ले विराजत ॥ पुनि चहुँ दिस प्रयंक छवि छाजत ॥ इक वंशी वे ठे गो नंदलाला ॥ पुनि
दूसरो प्रयंक धर्मशाला ॥ इक पद वैठ ते गोपी पति हर ॥ तिः पर बैठे ज्यों इहाँ अव
सर ॥ करत विचार विजे तिः काला ॥ आइ गए तिः छिन गोपाला ॥ चढ़ि बैठे प्रथम इक
प्रयंक पर ॥ प्रफुलित हो ये आनंद हरख तहँ पर ॥ २९ ॥ दो॰ ॥ सभ लोग आपत चार

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ पृ० ॥
४२२
अश्वमेध

नसुरषावुरिषसनकादि ॥ तिनलोगकेमुषसमनारदरिषतेआदि ॥ ३१ ॥ चौ ॥ पु
नविचारजोपकरतवि तेतव ॥ पहदसरोपृथंकमहादेवि ॥ कोवैठोगोपहग्रा
यंकपरि ॥ ऐसाकोनजोसमनहेपहरि ॥ आईदुपदसतातिहकाला ॥ लोगोआ
इवरननंदलाला ॥ तवआज्ञाकीनीश्रीगिरधरि ॥ वैठद्रुपदीइहप्रयंकपरि ॥ वै
ठीद्रुपदसुतातिऊपर ॥ आवरलोगराजतिसमभवर ॥ मातमातकहिहुउहेसकु
लसुर ॥ कीनोसमभक्षिप्रणामभुदक्षिउर ॥ ३१ ॥ दो ॥ उस्तोतलागेकरनसमभगुणविविध
ईद्रादि ॥ रूपसारदाहेतुमहिकहतमएसनकादि ॥ ३२ ॥ चौ ॥ तौबीनजाइतासुगत
माता ॥ तुमभगवतीजगतविष्याता ॥ जोनरमजहितोहिकरदारा ॥ तेऊपगुरुषमतिमं
दगवारा ॥ यद्यपिउगतिपतितुमहि [illegible] ई ॥ तदपितोहिगतिलषनकोई ॥ तुमअखिलभुवन
तरहततसमनते ॥ कावहुनटरतध्यानहरिमनते ॥ हरिविनुआवरनहितनुमारा ॥ लोग
कहततनुपांचभरतारा ॥ समसरूपतुमाराजननी ॥ तुमरीमहमाजातनवरनी ॥ ३३ ॥
दो ॥ पारषसुनविसमैमपोमनमभमुदीपोषिसार ॥ ब्रह्मादिकउस्तुतिकरहिइनसारवी
ननाइ ॥ ३४ ॥ चौ ॥ विधिशिवइंद्रआनंदितमनसों ॥ वचनकहतमपेश्रीभगवनसों ॥ तु
महरिधरकोभारउतारा ॥ भगतनकोसुषदीयोअपारा ॥ जुकहुरहतिसकलउतारा ॥
पुनिप्रभअपुनेधामसिधारा ॥ तौहमलोगसकलसुषपावहि ॥ तुमविनुरकढिनक
लपवितावहि ॥ तवहरिवचनकहेविबुधनप्रति ॥ सुनउसकलब्रह्मादिकहरषत ॥ म

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ही भार मुक्ति सकल उतारा ॥ ऐकु रहत कैरव परवारा ॥ ३५ ॥ दो० ॥ ते कैरव मद मत भए सन
व छो आहंकार ॥ हम रे भगत दुखाव हीं तिन का करो संघार ॥ ३६ ॥ चौ० ॥ पाडव करावे ग्या
उन पाही ॥ तिन का गोत्री कहा डो नाही ॥ मंगहि गे कुरु खेत जाइ रन ॥ नास करहिंगे से
ना आन गन ॥ म त होहि ते हो हत एणी आठारा ॥ उतरे सकल महि को भारा ॥ द्रुपद सुता तत
व वचन उचारे ॥ कहो तुम प्यारे प्रभू हमारे ॥ करहे कैरव युद्ध परस्पर ॥ दो महि जी
ते कौन कहो हर ॥ वचन कहत मुसकाइ कृष्ण मन ॥ ते जीतहिंगे ले आवन सुन न ॥
३७ ॥ दो० ॥ जिन को तुम नहीं ठग सकयो कहि रहि जतन अपार ॥ ते जीतहिंगे हरि कहो
मन क्रम वचन विचार ॥ ३८ ॥ चौ० ॥ तब द्रोपदी वचन उचारा ॥ हम तो ठगा सकल संसारा
ठगी नहि सके आमुहि एक युधिष्टर ॥ जिन परि तुम री आतिकरुणा हरि ॥ जोग तजा उ धर्म
के ताता ॥ चाये चरनन गनक सिंगाता ॥ साजो तन षोडस शृंगारा ॥ हावभाव बहु बराउ आ
पारा ॥ चितुरा जनकातुम चरनन पर ॥ आन तन चित वाहि ही ऐ ध्यान हरि ॥ हम बुधि वल ह
रि रही सभ ॥ ठगी न सकि युधिष्टर को प्रभ ॥ ३८ ॥ दो० ॥ कृष्ण कह्यो सुन द्रोपती जो ठगी
सकेयान तोहि ॥ जीते गा रन धर्मसुत सत्य जान जीय मोहि ॥ ४० ॥ चौ० ॥ सुन द्रोपती आनं
दित भई ॥ उप ज्यो सब चिंता दुरि गई ॥ बहुरि कृष्ण मुख वचन उचारे ॥ पंडव सुत है भग
त हमारे ॥ हम को सदा धिरद की लाजा ॥ सिद्ध करो भगतन के काजा ॥ यह ही मंत्र हृदै ठहरा
यो मन ॥ नास करों कैरव कुल आन गन ॥ पंचाली द्रुम द्रोपती सिर पर ॥ कुरा पुकार सरा ई
ह सवसर ॥ पुन है हो रन को मतु की नो हरि ॥ तहा मुजस अंडे दीए जन मकर ॥ ४१ ॥ दो० ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अस्व ॥
४९३
अमेध

तहां होर संग्राम की तुम कीनो नंदलाल ॥ सुनत मैं हरि जी पद दुख बढ्यो सुत हाँ है बसि
कौ लाल ॥४२॥ चौ॥ तब द्रोपती कहो गिरधर प्रति ॥ सा चुक हति है पद्मित्र भव न पति
विन अपराध जीवन हो मारा राजा ॥ रक्षा करि उनका दुख टारहु ॥ पद्म द्रोपदी की पा
हस्पा द्वई ॥ राखिले फिर गोरव गरस्त्रा करि ॥ चक्र सहत दुर दशरा वो ॥ ता के गीव घंट
मेहि त्यावो ॥ जहां परे बग के सुत भस्म पर ॥ घंटा वद्धि रावो हति हत ऊपर ॥ तिन पंछिन
कीर छा लेई ॥ उनकी मार सकै न हति कोई ॥४३॥ दो॥ यह वच सुनि कै उठि चले शिव
विरंच ब्रह्मादि ॥ आपा आपने गग ह चले विबुध न पुति इंद्रादि ॥४४॥ चौ॥ निज निज आ
श्रम प्राप्त भए ॥ पारथ मन संभ्रम मिटि गए ॥ रथ चढ़ि अर्जुन गजपुर आयो
धर्मज के चरननि लपटायो ॥ नृप को जानो कृष्ण समाना ॥ द्रुपद सुता को देवी जा
ना ॥ सदा अलि पद द्रोपती नारा ॥ परस्यो की योन हति पंच भरतारा ॥ पारथ वचन कहे जु
वती प्रति ॥ हम न हरि जान सकी तुम री गति ॥ रक्षा करी बगन की जैसे ॥ हम री रक्षा की जो
तैसे ॥४५॥ दो॥ अदैवट की ठौर तुम अस्व गही पे उवार ॥ त्यो हम री रक्षा करहु अनी
क सुआ धार ॥४६॥ चौ॥ बोली द्रुपद सुता वर नारी ॥ रक्षक तुमरे गिरवरधारी ॥ अरु
दूसरो पुहिर राजा ॥ जाके सदा धर्म सु काजा ॥ द्रुपद सुता अरु नृप तब युधिष्ठर ॥
मन वच क्रम जिन वसि कीनो हरि ॥ जेमिनु मुनि कहि जन में जे प्रति ॥ तुम सब द्वापर
ह्म मही पति ॥ रक्षा करी द्रोपदी जैसे ॥ तुम को कही अलप मजु तैसे ॥४७॥ दो॥ पर

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

बकष्यासुनऊनृपति ॥ कहि जैमिन मुभसाज ॥ अरजुनको सतकार वड़ौ कीयो युधिष्ठर
राज ॥ ४८ ॥ चौ ॥ धंन्य धनि तर्को नौ जपकारा ॥ ल्याये जीत नृपति दिसचारा ॥ पुनपारथ
मुषवचन उचारे ॥ जीते नृपति प्रताप तुमारे ॥ हरि अरु द्रुपदसुता तुम तीनो ॥ सभ नृ
प जीत सुजस तुम दीनो ॥ हो तुम नृपति धर्मको रूपा ॥ वड़ शैके शवसस स्वरूपा ॥ द्रु
पदसुता अरु तुम प्रसाद करि ॥ जीत दीये मोको सभ नृप हरि ॥ सुन ऊरहि धरमसतकार
कर ऊकति ॥ तुम ही जीत दीये नृप श्रीपति ॥ ४९ ॥ दो ॥ एक तो हरि अरु द्रुपदी वसि कीने
नंदलाल ॥ तुम ऐसी स्याते सकल जीते है भूपाल ॥ ५० ॥ चौ ॥ जे नृप जिन नृप वांध्यो पा
हवाजा ॥ ते सभ स्वरूप्रवल वड़ राजा ॥ तो हम जीति सकै नही भूपति ॥ तुम करुणा ते
जीते श्रीपति ॥ द्रुपदसुता और धरम युधिष्ठर ॥ रक्षक मोहि जान्यो इहि अवसर ॥ तु
म ही वसि कीनो भगवाना ॥ क्यो हम ऐसी मति तुछ समाना ॥ तुम रहि हय वांध्यो जन्य पा
जेन जिन प्रनऊ भाव न अवना मकहो तिन ॥ प्रपमदि नृपति नीलधुजके सुत ॥ ग
हि वांध्यो तुरग यह अदभुत ॥ ५१ ॥ दो ॥ ताको मार्यो करनेसुत करुणा सो भगवान ॥ ९
न संग्राम पावक सहित चलि आयो वलवान ॥ ५२ ॥ चौ ॥ लागत अनल जमात नीलधुज ॥ मा
हाव ला अरु स्वराज जानभुज ॥ कीनो मुष ते अग्नि प्रकाशा ॥ सैना कीनी सकल विनाशा
ताहा कीर रक्षा नंदलाला ॥ पावक को जीत्यो ततकाला ॥ वऊर हंसधुज अरु वड़ राजा
वल कए तन ऊटक पो वाजा ॥ सुरथ सधंन्या सुत ताके वर ॥ महा सूरवल वंड भगत

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४२ ॥
५२४
मेध

हरि ॥ तिन संग्रामकी यो अति भारी ॥ नासकरी वज्जव म्रह मारी ॥ ५३ ॥ दो० ॥ कहौ जम अस रुप्र
द्युम्नकौ म्रह दीयो वजवार ॥ धंन्य करन सुत राजजी कीनौ युद्ध अपार ॥ ५४ ॥ चौ० ॥ कपिता
तत हाकी यो महारन ॥ सरस्यु छादनकी यो मह एगगन ॥ पितु रन वालकसी सउताशा ॥ कु
व्रधर्म रनकव हूँनहारा ॥ सिस कुल मंडल अति वर योधा ॥ रन मधि तिकव हुत ज्योन हत्कौ
धा ॥ कृष्ण भगति पावन षट्कर्मी ॥ गो ब्रह्मण हित महा सुधर्मी ॥ सुरथ सुधंन्या ताता हंस
धुज ॥ महावली सरे अज्ञान भुज ॥ तज प्रान वैकुंठ सिधारे ॥ तिन के सिर शेष वउर मधि पा
ते ॥ ५५ ॥ दो० ॥ महा सुजस तिन का भयो हितै ते भगति नंदलाल ॥ तिन के मस्त कशिकी ये मेरु
रुंड की माल ॥ ५६ ॥ चौ० ॥ तिन का पिता हंसधुज राजा ॥ त्याग ऐक्षति नयज्ञ समाजा ॥ वफुर
मोरधुज नपरन धीरा ॥ हरि हित दीनो अर्ध शरीरा ॥ कृष्ण भगत विदेह प्रेम जाकी ॥ उप
मा कह्नि नस कोनु षताकी ॥ तः नय सुत ताम्रधुज नामा ॥ विवध प्रकार कीयो संग्रामा
महा पराक्रम मसर निधाना ॥ ताका वल नहि जात वषाना ॥ ऐसे महा वली जीते तव ॥ नृ
म री कृष्ण सहाइ कर जव ॥ ५७ ॥ दो० ॥ वचन कहै पुनि द्विजे प्रति मुदित धरम के तात ॥ नृ
पति वभ्रवाहन वली ताकी वरन ऊ वात ॥ ५८ ॥ चौ० ॥ कैसे तुम रासीस उतारा ॥ पुनि कैसे
तन ऊपर धारा ॥ विजै कहै धर्मज सुनि लीजे ॥ दास वभ्रवाहन नहि दीजे ॥ मुजकौ
श्रापु सुरसुरी दीनो ॥ जु वतिनी लधुज यह कुतिकीनो ॥ जव हम ताम्र नीलधुज मा
रा ॥ पुनि सम सैना करी संघारा ॥ नृपति नीलधुज आइ भेत्यो जव ॥ ज्वालाग
हत जिसकठि रसी तव ॥ ज्वाला करम प्रकारना मनीलधुज की तीय ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अपुनेमातापतिप्रकारकीय ॥५८॥ दो॰ ॥ ज्वालाकरीपुकारवज्रमातनिआगगज
इ ॥ अहैमानीलघुजबिजैके हमरातातुमराइ ॥६०॥ दो॰ ॥ मातनिवचनकहे ज्वालाप्रति
तुमरासुतअरजुनकीनोहति ॥ पारथ्यमहासूरबलवाना ॥ हमराबलुनहैताहिसमा
ना ॥ पुनज्वालाजीपक्रोधितभई ॥ तवहीचलिगंगापहिगई ॥ गंगाकोयहवचनविता
रा ॥ तुमरासुतअरजनबलमारा ॥ छगतुमसुतकाबैरुनलीनो ॥ तुमसुतभीषम
महाप्रवीनो ॥ क्रोधितभईसुरसरीजबही ॥ मुजकोआपुदीपापहततबही ॥६१॥ दो॰
जिनहमरासुतहतकीपारनमहिहुलजीपधार ॥ ताकासिरसुतछेददईदीनो ॥ आपुप
कार ॥६२॥ दो॰ ॥ आपवचनपूरनकरबैहितत ॥ पहमविचारउपज्योहमरेचित ॥ सुज
सुतकोबज्रकीयोधिकारा ॥ धिनदुष्टबनकीनेपृसकारा ॥ हमरेसुतमहिदोसनकोइ
होनहारहैतिपुभिसोई ॥ जबहीबनतअप्रमकीरीता ॥ सभैबिनासुबुद्धिबिपरीता ॥ स
लसआपगंगाकेकीनो ॥ हमरासासुकाएसुतलीनो ॥ बसु[illegible]बभ्रुवाहनकीमाता ॥ प्र
एकीयोआगनजराबोगाता ॥६३॥ दो॰ ॥ बज्रएबभ्रुवाहनगयोमणिकोलेनपिपाल ॥ ना
गनसोंसंग्रामकरिमणित्यायोततकाल ॥६४॥ दो॰ ॥ त्यायोवेगबभ्रुवाहनमणि
हरखतप्रापतिमयोआइरण ॥ पुननागनचुराइहमराशिर ॥ लेरा[illegible]समद्रबीचि
र ॥ पुनबालकसागरपहिगयो ॥ स[illegible]संधतजीपक्रोधितभयो ॥ महादीनमनभये[illegible]
बरुणतब ॥ दीनेवेगदुबाइनागसब ॥ तबहीबभ्रुवाहनबलुकीनो ॥ सर्पसंघारसौम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५२

प्रतुलीनो ॥ जोरेश्राजनहमारेतनपरे ॥ प्रानदीऐम्रजकसएणसोहरे ॥ ६५ ॥ दो ॥ वड़
रजीपईसैनसमकीपोपरान्नमवात ॥ करनकरावनहारप्रभटष्ट्रिकनपमनंदद
लाल ॥ ६६ ॥ दो ॥ वड़ेशचंद्रहासमपतिवर ॥ नेहकामीतनमयशेवकहरि ॥ वालप्र
पंतसेवहरिकीनी ॥ पजातादिमानहरिलीनी ॥ ताकेरक्षकनितनंदलाला ॥ सिमरत
कृष्णनिमकीचाला ॥ राजुलीपोहमकोष्ट जतनकरए ॥ उनकेप्रजादीपोपाइनवरि
प्रजावेनतीकरीअपारा ॥ तवहरिभगतछत्रसिरधारा ॥ प्रथमदठापोधर्मप्रजाप
ते ॥ वेदचालवरभजनरमावति ॥ ६७ ॥ दो ॥ चंद्रहासप्रथमेप्रजासिमरापानंदलाल
प्रजावेनतीवडकरीपाहेमपमिपाल ॥ ६८ ॥ दो ॥ ऐसेवेष्णवतुमसबशाला ॥ आएकरु
णसोनंदलाला ॥ द्रुपदसुतासुधर्मतुमारे ॥ ऐसेहरिभगतनपगधारे ॥ उधरततो
नलोकजितदरसन ॥ तेआएतुमरेपगपरसन ॥ मरतिवंतकृष्णसवधीन ॥ राजकर
तकिजश्रीभगवाना ॥ सुफलतपुन्यनपमपोतुमारा ॥ सत्यमानुन्नपवचनहमारा
पुनुपारषमुषवचनउचारे ॥ रक्षकहैतुमतीनहमारे ॥ ६९ ॥ दो ॥ पदमापतिअरु
धर्मसुतद्रुपदसुतापरवीन ॥ प्रतिपालकनितकरतहैरक्षकहमरेतीन ॥ ७० ॥ दो ॥
पहुवचककहतविजैधर्मजपति ॥ जुएआएतवसकलमहीपति ॥ समनप्रणमुयुध
एरकीनो ॥ धर्मतातआदुरउदीनो ॥ प्रथमप्रद्युमनसंततिसमेता ॥ मेघवरनवजरो
वषकेता ॥ जोवनासनपसुरथजातसंग ॥ पनिअनुसालसराजपमदितअंग ॥ सा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तक आद्रवन पति नीलधुज ॥ पावक बज्ररोन पति हंसधुज ॥ कृतबर्मा औरु चंद्रभा
नपुन ॥ औरो अमर बभ्रुवाहन गुन ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ पुनि ताम्रधुज महावली भूपति
जुरे आपर ॥ आइ युधिष्ठिर को सभन कीनो है नमस्कार ॥ १२ ॥ चौ ॥ स्वागति कहि धि
भजज्ञोरकर ॥ तुम आए हम और कृपा करी ॥ पूरन भाग हमारे भए ॥ तुमरा दर्सप
रस दुख गए ॥ तुम सभ पृथ्वीपति बलवाना ॥ आए करुणा सो भगवाना ॥ हम राय
शक्तारथ्य कीना ॥ करुणा करि दरसन तुम दीना ॥ सुनै वचै यह कथ्या जु कोई ॥ र
क्षु कता को मृत्तीपति होई ॥ हरि को सिमरे हेत चेध धरि भाउ ॥ पूरन सात साठ अध्याउ
॥ अश्वमेध विख्यान ॥ कवि रति के नप निमय
२३ ॥ दोहरा ॥ इति श्री भारथ पर्व ए अश्वमेध ॥ समस्त ॥ जेमनोवाचः ॥ चौपई ॥ जैमिन
सत साठ अध्याउ प्रमान ॥ १५ ॥ ६७ ॥
कहै सुन जन्मेजय भूपाल ॥ पूजा अस्त्र करन के काला ॥ साक्षि चलीं नव सात सिंगारा ॥ पट आभ
रनतन विविध प्रकारा ॥ देवकी अरु कुंती पुनि जसोमति ॥ सतभामा रुकमनि और जाववव
ति ॥ सत्राजित्रा अरु वृंदा सुन ॥ कालिंद्री लक्षमना महा गुनि ॥ आठो पटरानी गिरधरि
सोला सहस्र एक सौ नारी ॥ बज्र धरि सुभद्रा द्रुपद सुता तीन ॥ बज्ररो सेना चित्रांगद भीम
मन ॥ १ ॥ दो ॥ वीर ब्रह्म की सुता भामिनी अरु उत्तरा विचार ॥ नारी बज्र प्रभावती जौनना
सकी नार ॥ २ ॥ चौ ॥ पुन बभ्रुवाहन ता अरु वरनारि सब ॥ मंगल गावति मुदित अंग छबि ॥
तीन लोग चोग परब राजा ॥ जुरे आइ सभ पञ्च समाजा ॥ जेतक जुबती हैं जग माहि

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१४
अश्वमेध
४१८

आरजुरी सब मुदित तहां ही ॥ मष पारवती औरु रुद्राणी ॥ सभ सुरनारि सहित
इंद्राणी ॥ रंभा आदि अपसरा नाचैति ॥ सुष पावति अपुने मन वांछित ॥ आई स
कल रिषन की बाला ॥ गावति मंगल गीत विशाला ॥ ३ ॥ दो ॥ तीन लोक की जुव
ति जन चार वरन की नारि ॥ मष शाला प्रापति भई आनंद जी यधारि ॥ ४ ॥
चौपई ॥ छपन कोट जादव की नारी ॥ पृजा कर न चली हितु धारी ॥ विजो पाना
मना रिसहत देवी ॥ हरषत चली करन हित सेवा ॥ पुन कुरुन नवंती हेवर नामा ॥
नकुल नारि केहि यहु नामा ॥ सभ ती पसा त्रिबोडश सं शारा ॥ गावत है सभ मंग
ल चारा ॥ कंचन थाल ली पे कर माही ॥ दीपक चौमुख धरे तहां ही ॥ चंदन मृगमद
सुगंधि पारा ॥ कुंकम गोरोचन घनसारा ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ दीप चली ले जुवति सभ हुया
पृजा न चित चाइ ॥ मषशाला प्रापति भई जहां पृथि ष्वर राई ॥ ६ ॥ सो ॥ तीनये जनप
र हैं मषशाल ॥ कनक षंभ मणि षचित तहि साला ॥ पावक कुंड ठेठे ठयो तनपर ॥ निस
होम जहां करत पृथि ष्वर ॥ शोभित पञ्च कंकण हाथा ॥ अंचरु गाठ द्रौपदी साथा ॥
अग्निकुंड परि है सवधाना ॥ ठाढा ओजासी भगवाना ॥ प्रापति भई तहां सभ नारी ॥
धूप दीप आरति उतारी ॥ चरचत अक्षत लाट संधूरा ॥ सभ सुगंध मृगमद
कर पूरा ॥ ७ ॥ दो ॥ सभ ती पला गत अश्व पग पृजंत वेदविधान ॥ हाथ फेर प
र दछन देत हां ये दितु मान ॥ ८ ॥ सो ॥ हाथ जोर विनती सभ करही ॥ मंगा हित फल

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

आसा जी पधर ही ॥ धक्कुर जोर कहत भई बाला ॥ सुन ऋतु रंग सम है हृदियाला
पर ऊन ही पावक [illegible] दि जो लो ॥ शबद उच्चार करऊँ न हीं तो लो ॥ बज्र रोल घुप
री षन ही की जे ॥ मम पूर न धर्म जु कर दीजै ॥ पर जाकरु उठि चली सकल जब
लागी आइ चरन हत पके तब ॥ ८ ॥ दो ॥ करत जाहु सम भीम को हासी वचन उचा
र ॥ चलत भई सम भवन को हर्ष आज्ञा जी पधार ॥ १० ॥ चौ ॥ जु वत निसो तव वच
न कहे हर्ष ॥ भीमसेन ठाडो द्वारे पर ॥ हा सुर च्योत हाथ मल सम नारी ॥ लगा
दै न पवन सुत गारी ॥ भीम बीचार देषु अपने मन ॥ तीन लोक की कुरी जु व
तीनन ॥ जेतक सुर रिषन प की बाला ॥ सम आइ धर्म जु मरव शाला ॥ आ
ही तो हि राबसी बामा ॥ अति विकराल देह मुष स्यामा ॥ दीरघ दसन उदर अति भारी
स्याम अधर आस्य लघु कारी ॥ ११ ॥ दो ॥ कुच दीरघ अरु विरध तन महा भयानक
रूप ॥ जाका मुष सम कंदरा नैन अंध सम कूप ॥ १२ ॥ चौ ॥ अवन दुरद सम घट सा
मना सा ॥ दीरघ देह सुमान अकासा ॥ जंघै ताड वृक्ष सम जाकी ॥ दीरघ भुजा कुटिल छ
वि ताकी ॥ अति दुरगंध भरयो जा को तनु ॥ वचन भयानक कहे ठिठ रमन ॥ माता ध
न्यानाम ह्डिंब राषो ॥ सब ते प्रगट बिंदुवा भाषो ॥ नित प्रति हैम पाक रत अहारा ॥
आप सार बीध्या ही हारा ॥ ऐक समै वर को वरजत ना ही ॥ ल्ताजु तभी म [illegible] न गा
री ॥ १३ ॥ दो ॥ पुन बोली इक समै वरतीय उनको मपकराई ॥ भीमसेन हमरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५११
अश्वमेध
जप५६

त ५

वचनसुनऊ श्रवनसुषपाइ ॥१४॥ चौ॰ ॥ पहसबहसतपवनकेताता ॥ हमरुस
न कुसलकीबाता ॥ ऐसौतीपष्यौहौकिहकौजा ॥ देषततुमकोभईमिलाजा ॥ जौतु
मसमाहीजानवृभतीय ॥ ऐसीसुंदरनारीमदतहीय ॥ हमसौंसाजचलैसंगारा ॥
गावैगीसुमंगलेचारा ॥ जौऐसीतीयहैतनतुमघर ॥ तोकतिलजातिहैतवकेंदर
तीपवचसुनतहसेरिपुधारी ॥ तवहिंभीमजीपताविचारी ॥१५॥ दो॰ ॥ हासनभीर
नकोपहैछादीनीसीषअगुपाल ॥ हमपुनकृष्णहसाउंश्रवववचनकहे
ततकाल ॥१६॥ चौ॰ ॥ हमसौहासकरेनंदलाला ॥ पहतुमकोनहीयो
गगुपाला ॥ कृपाधारसुंदरवरनारी ॥ तुमदीनीसमकोशिरधारी ॥ दे
षोपहपुरषनकीवामा ॥ शशिवदनीतनछविअभिरामा ॥ षोडशसह
स्त्रएकसौअतिगुन ॥ आएनाइकातेश्रवनसुनि ॥ नारिसरूपाहैसबनी
नी ॥ हमकोनारिराकसीदीनी ॥ दईश्रवरकोसुंदरदारा ॥ बूढगयाहरैहम
रीवारा ॥१७॥ दो॰ हरा ॥ पटकुलकीनारीसकलपठीसावदेतोहि ॥ हासकरन
केनभितहरिगारदईवावज्ञमोहि ॥१८॥ सो॰ ॥ श्रवरनकेसुंदरतीयदीनी ॥ हमव
रहरिकरुणापहकीनी ॥ दीनीमोहिदराबसीनारी ॥ हूटेनत्रासुकीयोऊएधारी ॥
ल्यावतहीश्रवेतीमषशाला ॥ भक्तनकरैसकलपहवाला ॥ तुमरोपुवतिकरैसमना
सा ॥ ममकोकरैएककोग्रासा ॥ कौरकामकीप्यासतहारी ॥ सोकैसेकभैटमरारी ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जवसवकाभिनिभईविनासा ॥ तवन्हिकुररैगोतुमवजवासा ॥ १८ ॥ दो० ॥ वकराधेनुखुरा
ऊगेगोपसुतनकेसाथ ॥ वनवनडोलततस्करऊगेतनकनकुडीयाहाथ ॥ २० ॥ चौ० ॥
जवहिथिंडवासभतुमरीतीय ॥ ग्राइसंघारेगोकाधतितीर्थ ॥ तुमतवउपजेगावैसा
गा ॥ तवहीराजुकरऊगेत्यागा ॥ वासुकुरऊगेगोकुलमाहि ॥ तवयहसखवितसरहि
गेनाही ॥ नंदभवनकरहेगेवासा ॥ प्रिटैनकवह्रम्भबाषिघासा ॥ रोवऊगेतेसेवप्र
पाला ॥ जैसेआगेऊतेऊपाला ॥ वालवैसक्रीडातुमकीनी ॥ अवतुमवऊतरुणताहि
नी ॥ २१ ॥ दोहरा ॥ वऊसभैपावऊनहीवालपनकेषेल ॥ कुंचकीटारतितीयनकीक
रतकामरसकेल ॥ २२ ॥ चौ० ॥ वालपनलेतेदधिदाना ॥ अवनसकऊकरिसुनहरिका
ना ॥ तवपरतीयसोंहासुविलासा ॥ अववऊदेषकरहिगोत्रासा ॥ वऊअवस्यादेव
तुम्हारी ॥ षटरसभोजनदेतमुरारी ॥ आउबलाइघिडवाकेजव ॥ पछनेकरैदेवको
अव ॥ जवतुमदुषपावऊनहमाता ॥ मानऊसखहमारीवाता ॥ २३ ॥ दो० ॥ कतहिवि
डंवातेप्रभुअपनीजुवतीमराई ॥ इकतीयपतीजैमोहिकेसगलीलेऊछुडाइ ॥ २४ ॥
चौ० ॥ भीमकहेसुनकृष्णअवनधरि ॥ इतिनीसुंदरतीयतुमरेघर ॥ इनमऊंतेऐ
जो कऊदीयेमोको ॥ करोअसीसरैनदिनतोको ॥ हसिहसिपरैकृष्णतिःहरिअवसर ॥ दू
ईभीमकोइकतीयजोरधरि ॥ इनमेंतेलीजेभीमएकतीय ॥ जैसीभावतहैतुमरेजी
य ॥ तवहिगदालेउठोभीमकर ॥ जवहीयहआज्ञाकीनीहरि ॥ उपतिभागचलोस
भवाला ॥ त्यातेघेरभीमततकाला ॥ २५ ॥ दो० ॥ भीमकहेसुनहाजुवतीआज्ञाकरीगु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पाल॥ सुजस के दानी ऐक तीय कर हुनाक पर्ने लाल॥२६॥ सो॥ ऐकु दिन वासु करउह मरे घयी
मान लेउ आज्ञा कीनी हरि॥ नहीं तो पुत्र उ विडे वाको अव॥ ना सुकरै गाइ कछु दिन मैं सव॥
तुम सव वदन दिषाव हु सुजस को॥ हित सो वचन कहत हे तुजसों॥ जो ती यभावे हृदे हमा
रे॥ ले जावो तिः अपुने द्वारे॥ उरवी सकल भी मते वामा॥ कछु प्रकार ताप न घन स्याम सा
रहु वलाइ तेहम हि कु जावहु॥ ऐसे न सो कति हाँ सुकरा वहु॥२७॥ दो॥ हम को ढाग घेर
कै भीमसेन वलवान॥ उर पति है हम सकल ती यसु कता वहु भगवान॥२८॥ सो॥ भीम
सैन हि सकल सुवुलायो॥ सभ जुवतीजन को सुकतायो॥ दुती येहि विसपुजा सव भई॥
तीय सवा कपटि निज गृह गई॥ देनती सर भयो मन हरषत॥ उग्रमकी यो युधिष्ठर
नरपति॥ आज्ञा कीनी आपदुरापति॥ भयो अनंद दुवजा व जवा जा॥ तव वाजे पंचतन अवा
रा॥ आनगन वाजे विविध प्रकारा॥ स्वर्ग धियालव जेतव जावत॥ करत कलोल अप
न मन भावत॥२९॥ दो॥ जुरे पत्र शाला विषे दक्षिण दिशि के राजान॥ लागे वजन सभ
न के दुंदभ भेर नीशान॥३०॥ चौ॥ जहाँ जहाँ हुता तपत्र को काजा॥ तिहूँति ठठाडे अपिव
जराजा॥ वक दाल्भ रिषमहा प्रवीनो॥ सकल रिषन के आगे कीनो॥ हरषत चले
कुंड की ओरा॥ ठाढे जहाँ यज्ञ को घोरा॥ चारवरन के पूजेउ दुरद पुर॥ सभ को भोज
न दीयो युधिष्ठर॥ धर्मज की योप्रणाम हि जन को॥ विवक रजोर अनंदित मन सों॥
वकदाल्भ वचन कहे तकृष्ण प्रति॥ प्रथ्यम प्रणाम कीयो मन हरषत॥३१॥ दो॥ छं॥ प्र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

थम करावो ऊ अस्व के अ एगेध इस्नान ॥ सो चऊ सकल संधूं व स्वेद वचन परमा
न ॥ ३२ ॥ दो ॥ पुनरिषव चनक हेति हत अवसर ॥ त्याव ऊ प्रथम नीर गंगा भरि ॥ कंचन
कलस नाशि सिर धारंहि ॥ गाव तजा हि गंगा जल भरहीं ॥ सो सउठाइ ई हाते अवहि
ता हीसों हय मजन करावहि ॥ चंदन म्रगमद अगर अपारा ॥ धूप करऊ तहि विविध
प्रकारा ॥ कुंकम गोरोचन घनसारा ॥ सकल सुगंध अंत न हीं पारा ॥ मरदन कीयो
सुगंध तुरंगा ॥ नव सिवलेप की यो अंग अंगा ॥ ३३ ॥ दो ॥ देषकांडी पढि वेद की अछित
मारह्ति आई ॥ करी प्रदछना अस्व के प्रमुदित हेत लगाइ ॥ ३४ ॥ दो ॥ दै प्रदछना हय यव
गल्ला गे ॥ पर फुल्लित मन तन मन राजे ॥ धर्मज हय पूति वचन उचारा ॥ सुफल या
त अव करऊ हमो [illegible] ॥ प्रन करऊ हमारी आसा ॥ तो मुऊ नन्य पन करहि उ पहा।
सा ॥ द्रुपदसुतात ववचनव षाना ॥ पजसुफल की नो भगवाना ॥ करुनाकरि श्री
पति वऊ धारे ॥ भए मनोरथ सिध तुमारे ॥ द्रुपद सुता प्रति कह्यो युधिष्टर ॥ सत्य
वचन तुम कह्यो महावरि ॥ ३५ ॥ दो ॥ पत्नी की यो जाके नमित तेठाठे सवधान ॥ स
त्य कहत है वेद वचन करुणा करि भगवान ॥ ३६ ॥ दो ॥ निश्चै वेद कूह्र के स्वासा सा
मुवते श्रीपति की पेप्रकाणा ॥ [illegible] सावधान नंदलाला ॥ कर तनिगम वचन की
प्रति पाला ॥ यह वचक रि हरि के गल्ला गा ॥ धर्मज के मन न का भाव भोगा
कृष्ण कहै तम न हैतो प्रम पाल्ला ॥ दी जे अस्व छेडि ततकाला ॥ ति सपीछे प्रम

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स्वमे
धि

दित नरनारी ॥ सभा जोपि सजि चले संगारी ॥ गजपुर के चौफेर फिरावहु ॥ देवप्रद
छिना पुन लेआवहु ॥ ३७ दो ॥ कृष्ण वचन सुनिकै करी आज्ञा धर्म भूपाल ॥ छिरक
लेऊ सौरभ सकल गजपुर मग ततकाल ॥ ३८ ॥ चौ ॥ चहुंदिसि पुर सुगंध छिर
कावहु ॥ तापर उत्तम कुसुम विछावहु ॥ अरु सब फेरै गा नगर चहुंदिसि ॥ पीछेला
गहि गेह हरि रिष सव ॥ नगरन पाद देति रिषी जगतप्रभ ॥ देवदति गै प्रदछिना पुरस
म ॥ दूत नगरु चौफेर छिरक मग ॥ कुसुम विछाइ करी कृष्ण जगमग ॥ आज्ञाक
रत भए नंदलला ॥ वाजेहिं विव जंत्र सकल भूपाला ॥ वाजेहिं निशान अरु वर पंच तूर
नभ धरे शवदर सोनर पूना ॥ ३९ ॥ दोहरा ॥ यज्ञभूमि प्रापति भए रिषी मुनी अव
हराई ॥ सकल रिषीन तत धुनि करी स्तुति शास्त्र रचितु लाइ ॥ ४० ॥ चौपई ॥ वेद
मंत्र अभिमंत्रत कीनो ॥ अछत डारि वसीकर लीनो ॥ मुख्य चतुर्दश लोगजऊ रस
व ॥ चल्यो तुरंग मान आज्ञा प्रभ ॥ प्रथम प्रदछिना धर्मज अरु हरि ॥ चल्यो तुरं
ग सह चक्रधर धर ॥ वाजे दुंदुभि भेर अपारा ॥ अरु नगन वाजे विविध प्रकारा ॥ कं
न्या हस्ती पर असवारा ॥ गावत गीत सु मंगलचारा ॥ ४१ ॥ दोहरा ॥ अंचुरुवां
धवा धर्मसुत दुवद सुता के साथ ॥ आगे चल्यो तुरंग तिः पाछे श्री यदुनाथ ॥
४२ ॥ चौ ॥ हरि के पाछे नकुल पति युधिष्ठिर ॥ संग लीयो द्रोपदी ताऐवर ॥ ता पाछे आ
वति सभ राजा ॥ प्रभ हित हीये स बरसर ताजा ॥ दरख आवहि चौफेर तुरंगा ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पढ़ंति चरित तदविध वेद प्रसंगा ॥ तपति मयो हत पसुनि स्रूतवानी ॥ चलयो
तुरंग महीप सुविमानी ॥ पाछैं रिषय सुत पति सुदति मन ॥ चले जाति न
रनार पगन नगन ॥ सभ जुवती भर तारन संग तव ॥ करि स्नाई गंगा मंजन स
व ॥४३॥ दो॰ ॥ पहिरे वसन कुसुंभ तन कनक प्याल लपे हाथ ॥ ता मधि दीपक
चौमुखे वार धरे हित साथ ॥४४॥ चौ॰ ॥ गावति मन भावति सभ गीता ॥ वषत कुस
मस्रनं छित तचीता ॥ हस्रान ऊपर कंन्या जेऊ ॥ गावति गीत समंगल तेऊ ॥ डंदम
मेरनि शान वजत तव ॥ पूरर हत धुन तीन लोक तव ॥ गजपुर केचह स्रोरतुरं
गा ॥ फिरयो सकल भूपति शिब संगा ॥ है पद हुना पुरत तुकाला ॥ फिर स्रायो तुरंग
मष शाला ॥ स्रगनि कुंड पशि ठागा स्राई ॥ धर्मजु कौ सभ देत वधाई ॥४५॥ दो॰ ॥ दान
की यो धर्मजत हा गोरूप्य कुंचन चीर ॥ गजतु रंग भर कनक वसुंदी पन पति मन धी
र ॥४६॥ चौ॰ ॥ इहप्रकार वीते त्रै वासर ॥ धर्मजता पुनि पैरयो चरन हरि ॥ भई प्रभात स्नान
तत्रोगा ॥ करत कलोल कलानि हसोगा ॥ हसन पुर संग धरि रका वछ ॥ पुरत सुइ कत
रिषभ पति हरि ॥ फूलन नयपगधरत मुंदि तउर ॥ भाठी नि कुरजुवति निजद्वारा ॥ नि
शधि ननवसत साजि संगारा ॥ वैचत्रति त हाल पतिविष स्रावति ॥ तिन परितीय संग
धरि रकावति ॥४७॥ दोहरा ॥ जो पसु सब मान तन पति र पंकिरत सुरछत होई ॥ म
कति पुरी भी वहि लोक तगजपुर कहै न कोइ ॥४८॥ चौ॰ ॥ एक फिरहि देषत सस्त उप
र ॥ एक वाग मधि केलक रति वर ॥ एक फिर हि देषत स स्त नपुर ॥ एक कपाह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ९२ ॥
४८.
अश्वमेध

रसुनहि मुयदति उर ॥ ऐक पजनु शाला महि राजत ॥ ऐक सुन तड़ुंद मधुन वाजत ॥
इक धुनि वेद सुनहि हित वाठै ॥ ऐक अहूती देषत ठाढे ॥ ऐक एबन सींगेण एकुति
नित ॥ षेलत इक नित पूतञ्च षडग्रत ॥ इक चौपर षेलहि राजाना ॥ ऐक उंठ येहि
वलवाना ॥ ४९ ॥ दो ॥ इक फुहा पन षेलहि मल्ल अषाडे ऐक ॥ ऐक सुरछत
डोलही कीयान जाइ विवेक ॥ ५० ॥ चौ ॥ ऐक सदा निरषत दरसन हरि ॥ टरत न
इत उत रहत धयान धरि ॥ दोई हहल है भीमसैन परि ॥ ठाठार हद्वार पशिहितु
धरि ॥ दुतीय टहल भोजन के काला ॥ ल्यावत सर्व बुलाइ भूपाला ॥ सकल रिष
न को लेत बुलाई ॥ जिनको तु धयार घर हर जाई ॥ वऊ तट हहल है पार षपर
तब ॥ आदर करत फिरत राजन सब ॥ अमर नजहा सुनार वनावति ॥ तिनको ना
ना भांति वनावति ॥ ५१ ॥ दो ॥ गाइन के छुर सींग पुन पुए वनावति जाहि ॥ तहा पक
लगुन मुहित मन न करत उताइलताहि ॥ ५२ ॥ चौ ॥ पोवति जहा मकति मणि हारा ॥
हीरा माणक रतन अपारा ॥ अरजनत हा रहति नित ठाठा ॥ करत शीघ्र ताही ये हि
तु वाडा ॥ दरजी वसन वनावति जहा ॥ सोवत नील कमब मल जहा ॥ भांतभांकी वा
नक करही ॥ तहातत हापार षपसवि वहहि ॥ साजत सम सामग्री समर्षिनाना ॥ जहा तहा
ईद्र सुत ठाना ॥ लेत देत है जहा भंडारी ॥ तहा विजै सों पूछ विचारी ॥ ५२ ॥ दो ॥ नकु
ल अरजन सहदेव पुन सोंधति मंत्र विचार ॥ धर्मराइ सहदेव सों पूछति वचहितु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धार ॥५४॥ चौ॥ पृछत भयो धर्म कौ ताता ॥ कहु सत देव उचत की बाता ॥ प्रथम मै
करौं अस्व मेध को काजा ॥ कै प्रथम मै पूजौं सभ राजा ॥ कहत सत देव धरम सुनि लीजै
जै ॥ प्रथम मै अस्वमेध मख बदी जै ॥ पाछे सेवउ सकल नरेसा ॥ सत्य मान पउ श्रुति
उपदेसा ॥ पुनि पृछीन पकुंती माता ॥ जनी नी कहे वचन कुसलाता ॥ प्रथम मैसे
व करो हम कौं की ॥ हृदे विचार कहो तुम जा की ॥५५॥ दो॥ कुंती वचन कहत भ
ई सुनहु प्रावन भूपाल ॥ प्रथम मै पूजा की जिये टहिक कनक प्रभ नंदलाल ॥५६॥ चौ॥
सोच उ प्रथम मन मंगल कउ तात ता ॥ जिहू कर सोहे देखि सभ घाता ॥ पूजउ उवउ ए
करन को नंदन ॥ पिता भ्रात सुतं की घानि कंदन ॥ ता की सेवा विधवत कीजै ॥ हि
मरा वचन अनुमान सु तत ली जै ॥ पुन धर्म जु त्यो वात विचारी ॥ तुमरा वचन सत्य
महतारी ॥ रहा जु रे चतुर दिसि के राजा ॥ महा वली ऐस रसिर ताजा ॥ पहल
वै कै तहमारा बालक ॥ जो या कौ पूजो त तकालक ॥५७॥ दो॥ होत निरादर
सभन को जेतक है भूपाल ॥ सकल कहै गेध मेस तप जा अस्प नो वाल ॥५८॥
चौ॥ पहमा नु जत सुत हमरा वालक ॥ या कौ उचत टहल भूपालक ॥ तो व होइ
सभ राजन जैसे ॥ पूजा उचत करो हम तैसे ॥ द्रुपद सुता हो है हरिखत म
न ॥ जहा देवकी कुंती नंदन ॥ मुदित सभन के चरन पखारे ॥ चरनोदक
मस्तक ले धरे ॥ धर्म तात तम रु द्रुपद सुत वरे ॥ चरनोदक धारे स्याम मा थे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४८१

मेध

परि ॥ प्रमुदित तो सुभयो मन ततनतव ॥ बज्जर युधिष्टर राइ प्रवीनो ॥ ५८ ॥ दो० ॥ ध
तराष्ट्र पति आइ चौ [illegible] रु गंधारी पाहि ॥ द्रुपद सुता को संग लै दरसन लागे ताहि ॥
६० ॥ चौ० ॥ सदा यज्ञ की टहल करत हर्षि ॥ विधि संयुत [illegible] करत तहां यद्यपि तुधशि ॥ रचित मं
डली यज्ञशाला की ॥ ठौर करत सभ महीपाल की ॥ पावक कुंड डेढ योजन व्यास
तहां कनक मणि खचित तहीर धरि ॥ मधि कुंड षट कोण विशाला ॥ तापर पंच भाव
चित रिसाला ॥ तिन परि कनक छत्र [illegible] कता मणि ॥ नग [illegible] छवि दिनम
णि ॥ कुंड चतुर दिश खचित रतनन सों ॥ [illegible] वति [illegible] मनसों ॥ ६१ ॥
दो० ॥ हस्तनपुर के लोग सभ चार वरन की जाति ॥ [illegible] रखत हो ये यज्ञ की टह
ल करत दिन राति ॥ ६२ ॥ चौ० ॥ जोई करत करजानति जानहि ॥ सोई दीनी [illegible] नकी ति
ह अवसर हि ॥ जेते क है गजपुर की नारा ॥ टहल करत सभ साजि सिंगारा ॥ ती नव
रंग नव वसन बनावति ॥ करति सिंगार जोई मनभावत ॥ टहल करत प्रभु मंगल
गावति ॥ वर्षित [illegible] वीर उठावति ॥ काल सभ रे [illegible] गजा सुवासा ॥ [illegible] रक
त करहि परस्पर हासा ॥ [illegible] रत उर हारा ॥ लेत उठाइ नहि पुनि दा
रा ॥ ६३ ॥ दो० ॥ [illegible] तात के लोग ॥ जा का [illegible] परे धरन अ
वर देहि ति ह भोग ॥ ६४ ॥ चौ० ॥ आज्ञा धर्म तात की ऐसें ॥ ठाढे लोग करत [illegible] धि
तै से ॥ [illegible] परत धरनी पर ॥ ताको देत [illegible] रति [illegible] वसर ॥ मत जाय

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वंत करत जुवती जन ॥ ता ते देत असुभ बन नौतन ॥ यज्ञ समग्री जहां तहां हुए ॥
देखी यहत सकल काज एप गिरधार ॥ धर्म तात चितु कृष्ण चरन सों ॥ निश दिन ला
गि रहति वि मन सो ॥ सेवक रति हरि ही ये धरि भाउ पूरन भयो आठाह मो ध्याउ
६५ ॥ इति श्री भागवत [illegible] ॥ [illegible]
नृप [illegible] ज्ञान ॥ ६६ ॥ ६८ ॥ [illegible] ॥ जैमिन कहे सुन द्रु
म पति वर ॥ जैसे सुकृत कीये पृथ्वीश्वर, कृष्ण सा [illegible] नाम सुनि देवर्षि श्रीश्वर
आए सकल मुनीन्द्र तपीश्वर ॥ आ [illegible] जुरे अगनित रिषराजा ॥ धर्म तात के
यज्ञ समाजा ॥ बालमीक वज्र रो रिष गालव ॥ आवर उद्दालक रिष वकदालभ
वज्र एअंगिरा शोभ रिष कुनि ॥ सौरभ रिष गौतम विशालग्गन ॥ २ ॥ दो० ॥ विश्वा
मित्र वशिष्ठ पुनवज्र रिष पराशर जान ॥ सं [illegible] रिष भ [illegible] शुक च एवा वलकु रिष प
रवान ॥ २ ॥ चौ० ॥ कृष्ण द्वैपायन रूप रिष समुझि ॥ मांडव आ रु उ रिष [illegible] गन
सनक सनंदन रिष अपारा ॥ वरन तहां त [illegible] स्वारा ॥ रिष इकला ख सहस्र
चौरासी ॥ जुरे अवर अगनित गन वन वासी ॥ जुरे कोट मुख्य भूपाला ॥ नृपति यु
धिष्ठिर की मख शाला ॥ सभ राजन वच कहे धरमपित ॥ प्रथम संदेह प्रजा कर द्रु
रमापति ॥ पुनि धर्म नृपति वचन कहे हरि ॥ प्रजा ऊ ब्यास प्रथम मइ हि अवसर
३ ॥ दो० ॥ नृपति युधिष्ठिर व्यास प्रति वचन कहे रुचि मान ॥ जैसी प्रजा तुम कहे तो ते
से करो प्रमान ॥ ४ ॥ ब्यास कहे सुन हे भूपाला ॥ प्रथम महिं प्रज ऊ श्रीनंद लाला

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४८२ अश्वमेध

॥ उतपतिकरतिनाष्पत्रैलोगा ॥ सेवकृकृसउचतितुमयोगा ॥ सनकुमारासबोले
ओरधारी ॥ पूछ्यमैप्रजापोउपतुमारी ॥ हमरेसेसचयज्ञकेभ्काजा ॥ संसैककुनक
रऊमुनराजा ॥ पहतहमरेगहृहाँकीकानु ॥ करोपरापतिधर्मकेतता ॥ जहृतह
निरषैसकलराजाना ॥ सकलसमग्रीपरिभगवान ॥ ५ ॥ दो ॥ पहाँसमग्रीयज्ञ
कीकरतलोगसभकाज ॥ जहाँतहासभनिर्बहीठाढेहैमद्दुराज ॥ ६ ॥ चौ ॥ लोग
करतमबकारजजहा ॥ सभदेषहिहरिठाढेतता ॥ अश्वहितत्रदिजकरतजहा
हो ॥ तेसभकहहिकृसहमपाही ॥ जहाँलोगसभकरतधिकावन ॥ निमितवैठ
वैसउपजावन ॥ तेभाषहितहरिवीचहमारे ॥ हमसोंकवहहेतनन्यारे ॥ भ
षहिवऊरिरसोईकारा ॥ सदाहमारेवीचमरारा ॥ फिंकतवोलेदजनभूपाला ॥
देततहाँठाडेनंदलाला ॥ ७ ॥ दो ॥ जहाँसमग्रीयज्ञकीकंचनघडतसुनार ॥ तेऐ
सेअवलोकहिहमहीवीचमराराए ॥ ८ ॥ चौ ॥ दरजीसीवहिजहाँअपारा ॥ तेजान
हिहरितातनन्यारा ॥ पात्रशुद्धकरतेहैजहा ॥ तेजानैहरिठाढेतहा ॥ वेदमंत्र
कीधुनजिहपाना ॥ तहाँकृसठाढेसविधाना ॥ तेजानहिहरिनकटहमारे ॥
निशादिनहमरीवीचमरारे ॥ जहतीपगावतिमंगलचारा ॥ तेजनहिहरिहम
हिमंजारा ॥ ९ ॥ दो ॥ जुवतिनिसोंठाढेकरहिगावहमंगलचार ॥ हाँसानिमित
वतावहीदेहिनपतिकोगार ॥ १० ॥ चौ ॥ होमकरततेजतजवतिलघृत ॥ तेजान

ल८

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कहि हरि हम महि वाचनित ॥ भीमसेन ठाढे द्वारे पर ॥ तिहु सों हास्य करत नित प्रति
हरि ॥ भीम कहे हरि सदा हम मारे ॥ हम सों कबहू न होत नैन्यारे ॥ अरजन यो जा
नत मन माही ॥ हम सों हरि बिछुरत कबि नाही ॥ नकुल अवर सहदेव कहत म
न ॥ हम सों दूर न होत स्याम घन ॥ मात देवकी कुंती रुकमनि ॥ अरु द्रोपदी स
कल जुवती जन ॥ ११ ॥ दो ॥ ते ऐसे मन जानहीं सदा कृष्ण तम पाहि ॥ हम सुं वाते
करत निनइ कछु छिन बिछुरत नाहि ॥ १२ ॥ चौ ॥ गंगा पद्धरी बांघ नको वासा ॥ तिन सों
गो छकर तब लासा ॥ ते जानति हरि आन न तन जाई ॥ हम ही बीच सदा पदुराई ॥ जे त
कत हाकु तेभ पाला ॥ ते जानत हम संग गुपाला ॥ जो न प[illegible]लत है अखंड ब्रत
ते जानत हरि हम ही सौंभित ॥ प्रजा गृहस्थ लोग विचारे ॥ ते जानत हरि सदा हु
मारे ॥ भो जन सभै सदा सवधाना ॥ जहं तहं व्यापक है भगवाना ॥ १३ ॥ दो ॥ जहं
सम गुण पत्रकी तहां ठाढे हरि आप ॥ पंडसुतन की प्रीति हित करत भगत प्रता
प ॥ १४ ॥ चौ ॥ जहं को ऊनि रषव कृष्ण तहां हु ॥ व्यापक हो हरि सकलन माही
सभ को ऊ गिरधर को मुष देषे ॥ हरि की पीठ न को ऊ देषै ॥ जहं तहं सनमु
ष हरि सवधाना ॥ भगतवछल त्रैलोगनिधाना ॥ पुनि श्रीपति मुषबचन प्रक
श्रा ॥ प्र[illegible] धरम सुत ब्यासा ॥ धर्म ज मो हित भगत नि हित कामा ॥ हम को
मो ल लीयो [illegible] सदा मा ॥ पुन धरम जहं हरि के पगलागा ॥ विनती करी हरी पे

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४९ अनुरागा ॥ १५ दो॥ मन अंतर पूजा करी धर्म तात राजान ॥ प्रणाम तो बहु कीयो कृस
को धरि चरनन मे ध्यान ॥ १६ चौ॥ धर्मज प्रणाम [illegible] हरि लीनो ॥ मन मधि कृस
चरन हितु कीनो ॥ वहुरि पूछि पुरहीये फलास सों ॥ पूछो विधवत वेद व्यास कों
पुनि हरि कह्यो धरम सुनि लीजै ॥ पूछ्यो मैं अश्वमेध जग्य सबदीजै ॥ कौ जैसिद्ध
तुरंगम कोजा ॥ ताप्याछे पूजे हरि षिराजा ॥ हरि एक वचन मान चित लीनो
उछो धरमसुत उद्यम कीनो ॥ धर्म व्यास प्रति वचन विधाना ॥ कृपधारि हेत
वहु सविधाना ॥ १७ दो॥ ठाठे है हरिकुंड पर आचारज भयो व्यास ॥ द्वाव
ति धर्म भूपाल पढि अति अहुती ग्रास ॥ १८ चौ॥ वीस सहस एवी स्वर महत
कोडी वेद उचारत जहा ॥ स्वाहा व्यास कहत मुष तवही ॥ अग्नि अहा रूदे हत न पत
वही ॥ अवहि व्यास स्वाहा कहै तेवे ॥ तव न प अग्नि अहूती देवै ॥ वठे रिषीस्वर ठाठे
द्वार परि ॥ वेद उचार करहि हिही चौहि तुधर ॥ चार रिषीस्वर महा पवीना ॥ तिन
के द्वारपा हरि कीना ॥ लोमस वसिष्ठ विश्वामित्र पराशर ॥ चौथे मारकंडे रिष अस्ति व
र ॥ १९ दो॥ चार रिषीस्वर महा वुए आकृति ॥ अभ करत उचार ॥ ताते विघ्न नसा
हुई धर्म तात के द्वार ॥ २० चौ॥ पढी राम भांडु रिष द्वोई ॥ वेद पए ठाठे भए ऐसो
ई ॥ वन मधि वसत योग अभ्यासी ॥ अवर जते रिष पवन गरासी ॥ ते सभ सैनि
आऐ सम धपाला ॥ हरषित दरस नहित तमंद लाला ॥ जनमेजे पूछो जैमिन पही

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हृदे संदेह निवारहु मुनिपति ॥ योग पवन अभ्यासी ऐसे ॥ यज्ञ विषे आऐ कहु कैसे
यज्ञ विषे आवति जिन आसा ॥ जिनको होवत सरब धन प्यासा ॥ २१ ॥ दो० ॥ निराका
र को ध्यान तजि कबहु आऐ मख माहि ॥ जिनको होत निरास पद ते कछु वांछति ना
हि ॥ २२ ॥ जैमिनि उवाच ॥ चौ० ॥ जैमिनि कहै सुनहु राजाना ॥ उत्तर कहो सुनहु स
वधाना ॥ आऐ पवन अहारी जैसे ॥ कहो वृतांत सुनहु नृप तैसो ॥ सो हंस ब्रह्म आ
तमा जोऊ ॥ तिनके हृदे होत न वसोऊ ॥ पहुन भिनु आऐ सभ तहा ॥ अपवना रूप
देवता जहा ॥ ऐसे रिषि आने मख पाला ॥ भगत पाता हेत नंदलाला ॥ तहा आइ जिन
रषे भगवाना ॥ जिको धरति हृदे मधि ध्याना ॥ २३ ॥ दो० ॥ धर्मता तति हरि षवनको
स्वागति करी अपार ॥ भयो मुदित मन सभन को निरष्यो प्रगट मुरारि ॥ २४ ॥ चौ०
पहत चरित्र कीने नंदलाला ला ॥ कीयो पूतता बुध मिभ पाला ॥ धर्मज द्रुपद सु कैसा
पा ॥ जनकंकण शोभित तहा ष्या ॥ कुंचन पात्र द्रोपदी के कर ॥ तामधि सोच्योस
मसु गंध जल ॥ जेतक हैं सुगंध पदारथ वीपए ॥ ते सभ सीच पात्र लीनो भए ॥ जोद्रु
मल ताम अमिवरि उतपति ॥ दल डारे मधि समन नासपति ॥ ऐसा पात्र द्रुपद सुताकर
दलसा बासी चत शोभित वर ॥ २५ ॥ दो० ॥ विघन दूर करिवे न भगत करत है करत आभवे
क ॥ द्रुपद सुता अरु धर्मज पहुंदे कृष्ण की टैक ॥ २६ ॥ चौ० ॥ जैमिनि कहै सुनहु पृथ्वीव
ति ॥ अपुने पितर नकाम ताता पुरे अति ॥ वेद व्यास प्रति आ गिरधारी ॥ प्रमुदित वचन क

ता

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

स्त्री मे
५

ह्येंहितनुधारी ॥ चौसठ जातिसु तांगीननारी ॥ कंचनकलस लेहिसिरधारी ॥ अंच
रुगाठ जोरि पतिसा आछा ॥ जलउठाइ धरत्या कहिमा आछा ॥ वजतवजंत्र संगले जातकी
हरखवतहृदेसुमंगलगावहि ॥ २७ ॥ दो ॥ गंगाजलभरित्यावहीधर्मकरैइस्नान ॥
पुनराजासनवैठनपकूरैवदविधदान ॥ २८ ॥ चौ ॥ प्रथमेयहत्कारजकरहैजव ॥ आ
श्रआगनिमुषहेमकरहितव ॥ आजाकरतभयेनंदलाला ॥ वजेवजंत्रसकलततत
काला ॥ कंन्यागजपरहैअसवारा ॥ गावतिगीतसुमंगलचारा ॥ जलसुगंधले
वकिकुसहाथा ॥ ठारतिताहिशांतिहितसाथा ॥ ऐसेवचनकरतिहरिगयो ॥ रु
कमनकेगहपापतिभयो ॥ कुंतीअरुद्रोपदीपुंथिएर ॥ रुकमनकोवचककह
तपरस्पर ॥ २९ ॥ दो ॥ वसनिविचित्रपटंवरीत्यायोधर्मभुआल ॥ हाथजोर
विनतीकरीपहिरोजुगलगुपाल ॥ ३० ॥ चौ ॥ केसरमृगमदलीनीसुगंधवर ॥
धिरकेरुकमनचीरपटंवर ॥ वहुभूषनततनुपहरिविशाला ॥ अदभुतजोरी
वनीरसाला ॥ कुंतीलोचेदुहनकेअंचर ॥ जोरीगठविचित्रनिरंतर ॥ कृष्णरुक
मनीप्रमुदितहहृदैमन ॥ वजितवजंत्रवठाअतिसुषतिन ॥ पुनितोवेहरिगवरी
ईसा ॥ धर्मजधरयोचरनेपरिसीसा ॥ सभसुगंधजलसींचमगाये ॥ गौरीकेढा
सानकराये ॥ ३१ ॥ दो ॥ भूषनवसनवनाइतनगौरीकीयोसृंगार ॥ शंकरतन
मरदनकीएविमलविभूतिसुधार ॥ ३२ ॥ चौ ॥ आकुधतराधर्मजल्यायो ॥ सेलस

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तापति अति मन भाये ॥ शंकर के उर नाग धिराजत ॥ जटा मुकुट सिर अति छवि छाजत
त ॥ अद्भुत चंद्र विराजत भाला ॥ शोभित कंठ रुंड की माला ॥ अचुरु वांध्यो चौर वतासं
ग ॥ वजत वजंत्र चले प्रमुदित अंग ॥ वज्र रवि विरंचि संतोष धर्मसुत ॥ सावित्री संगरु
प महादुति ॥ चतुरानन तापकुर इसनाना ॥ भ्रबन वसन बहि रविधनाना बा ॥ ३३
दो ॥ सावित्री सों दुहिता की जोरी गांठ दुकूल ॥ तीनो देवता पन सहित चले मुदित
अनुकूल ॥ ३४ ॥ चौ ॥ शिव विरंचि को धर्म भ्रपालहि ॥ धनती वज्रत करीति हकानि
कृपाधार कैर पावन कीजै ॥ हमरा यज्ञ सुफल करि लीजै ॥ शंकर विधि पुनव
चन वखाना ॥ मन क्रम वचन सुध मेरा जाना ॥ तुमरा यज्ञ सुफल कीया तव
हो ॥ कृपाधाम आए हरि जबही ॥ कोट यज्ञ फल भो भगवाना ॥ सो तुमरी सहा
त ॥ जैमिनोवाचः ॥ दो ॥ जैमिन कहै सुन जन्मपति पुन धर्मत्रम
रसवधाना ॥ ३५ ॥ पुति इंद्र को संतोष सत हकाल ॥ ३६ ॥ चौ ॥ अंभ सुगोध सौ विधि नाना
वाल ॥ इंद्राणी ... ॥ जोरी मघवा गांठ शची पुति ॥ बोड शकी येस गार
दंव सि मुदित कीया इसनाना ॥ इशि एअरु धति ॥ चंद्रहास वेषि याके संपुति ॥ ओ मर्व स्राव
माहादुति ॥ जोरी गांठ धिशि एअरु सेवी पति तव ॥ अचुरु वे तेस भद्रा साध्या ॥ वांध्या
ट वांध्यो जव ॥ दैकर तोलह है से वीपति तव ॥ कतिज सें वांध्यो पटु सैना ॥ अति छवि कहीपर
ही यह हरषत नेज हाथ्या ॥
ला

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तनछी वैना ॥३७॥ दो॥ मा पाछें और प्रद्युम्न सों संग चरु बांधो जाइ ॥ ऊषा सों अनरुद्ध
जी जोरी गांठ बनाइ ॥३८॥ चौ॥ वज्र रोनकुल नारि पतनी संग ॥ जो सो में चुरु गां
ठ मुदित अंग ॥ पुनि सहदेव सांप्यनि जनवामा ॥ जोरी वसन गांठ अभीरामा ॥ जोऊ
द्रुती श्रुबती यम पाला ॥ तिन के संग द्रुती निज बाला ॥ तिन महि चौसठ सुरन पतिव
र ॥ संग चरु बांध चले तिहि अवसर ॥ जैमिनक है सुन ऊपर्यो पृथ्वी पति ॥ अरु रजन कलध
रे सिर हरखत ॥ प्रथम हि कलसधरे आसिर रुकमनि ॥ पाछे सुरपति नवजुवतीजन
॥३९॥ दो॥ चौसठ कंचन के कलस लीये तीपन सिर धार ॥ बजत बजैत्र वेलीसक
ल गावति मंगलचार ॥४०॥ चौ॥ जुवती अवर चली वज्रसाथा ॥ कुंतक वाचे ली नेति
न हाथा ॥ चौमुखदीप जोति तिन माही ॥ चंदन अक्षत धूप तहाहीं ॥ चले बजावति धु
नि पवतारा ॥ धरनी अकाश गगन भरपूरा ॥ कंन्या सजत पंच मंगल गावति ॥ हास
विलास करत मन भावति ॥ सभ तीपन वसन साजि सिंगारा ॥ गावति चली सु मंगल
चारा ॥ सभते सरस वने रुकमनि हरि ॥ ताकी अवर न ही कोई सम सरि ॥४१॥ दो॥
कोट काम छवि लाज ई हरि रुकमनि की कांति ॥ मोहति तीनों लोग को बने अनू
पम भांति ॥४२॥ चौ॥ प्रमुदित चले सकल नरनारा ॥ हसत परस्पर करत तर्क
हारा ॥ नारद रिष देख्यो तिह अवसर ॥ बनी अनूपम छवि रुकमनि हरि ॥ ना
रद सति भामा पहि गयो ॥ ताकों सम भव तातक हि दयो ॥ कहति तुम वैठ रहीं ग्र

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

म

हु माता ॥ देषहु छबि रुकमनि जगताता ॥ सुर रिषन पै त्रैलोग जुरे सभ ॥ अंचरु
रु बांध्यो हरि रुकमनि तब ॥ लै दुकूल कुंती माता करि ॥ अंचरु बांध्यो प्रगट्ट
तहि तु धरि ॥ ४३ ॥ दो० ॥ जुरे तहां प्रमुदित है ये सुर नर लोग पयाल ॥
जोरी अंचरु गांठि दृहत रुकमनि स्युं नंदलाल ॥ ४४ ॥ चौ० ॥ त्रैलोगन ऐसे
जी पजान्यो ॥ रुकमनि प्रिय भगवान प्रमान्यो ॥ अब एना इकी महिपटरानी
भो बमसुता सकल जगजानी ॥ हरि रुकमनि कौ वनी महा छबि ॥ भवन बस
नर है अंग अंग पावै ॥ बहुरि न तुमकौं जै अभिमाना ॥ कहत हमारे प्रिय भगवाना
ऐसे कहत सकल भये पाला ॥ रुकमनि अति प्रीतम नंदलाला ॥ रुकमनि कौ अति आ
दर कीनो ॥ तुम राममानु भंग हरि कीनो ॥ ४५ ॥ दो० ॥ लोग कहत है परस्पर जहां त
हां यह बात ॥ सतभामा सों हीं ये कृत करत नश्रि भवन तात ॥ ४६ ॥ चौ० ॥ धर्म तात केय
स समाजा ॥ जुरे सकल सुर रिषब हु राजा ॥ रुकमनसुतान्ह पति की जानी ॥ तो आड
रुकी यो सारंग पानी ॥ उतौ न उचपति कृष्ण कौं ऐसे ॥ तुम सम्पुकरौ सबाई जैसे ॥ रुक
मनि की भ्रमता हरि कीनी ॥ चौदहि भवन प्रगट करि दीनी ॥ जो जगनाए ती पखांठ
जुरावति ॥ कोऊ सुनपति कोऊ नंद्हि सुनपावति ईहां समाज जुरे त्रैलोगा ॥ दीयो मा
नु रुकमनि तुम सोगा ॥ ४७ ॥ दो० ॥ मद्य विचक पराकृ तुम सर्व विषय विचार ॥ ऐसी उ
चित न प्रीत बढि जे सो करी मराए ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ तुरु मद्दि ओर परी नहि कोऊ ॥ ह
रि कीन्ही ऐसी कृत सो ऊ ॥ मद कुलकन्या तुम सति भामा ॥ महा पवीन रूप गुन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ॥
४८६
अश्वमेध

भिरामा॥ रुकमन जानी राजकुमारी॥ तौ आदर दीनो भार धारी॥ तुम पितु क
रत न आपु समाना॥ आपुना कुल हरि को बिसराना॥ हम हारि के धन ले चराव
त॥ आरनि के नवनीत चुरावत॥४८॥दो॥ आपुना कुल हरि दूर करि परस कुल
की पाप्र कीश॥ पटरानी रुकमन करी तोहि दीयो उपहास॥ दं॥ चौ॥ रुकम
नि को प्रताप हरि कीनो॥ तुम को अति आप जस हरि दीनो॥ तुम को आप संग आ
गे चलते जाहि रुकमनि हरि॥ याहि व जाहि व जंत्र सकल वश॥ जिंहि नर के गनहि
प्रव कहो होई॥ प्रुरुष बिवेकी चहौ ये सोई॥ आपुने हृदै बिचार अजाना॥ समतो
पजा ने एक समाना॥ कीयो न मन बिबेक भार धारी॥ तोहि नरा दर रुकमनि
हितकारी॥ क्षत्रुधर सो रुकमन के सीसा॥ अंचरु गांठ जोरि जगदीसा॥५१॥दो॥
नाती जिन अनिरुद्ध से अरु प्रद्युम्न से तात॥ क्यों न होव है प्रतापु तिः वसी कीयो जग
तात॥५२॥ सतभामोवाच॥ चौ॥ तब सतभामा वचन बषाना॥ एब तुम रान अंत्र
मुऊ जानु॥ एक बात की सात बनावऊ॥ हमरे बीच कलहि उपजावऊ॥ आप बी
च ले तुम ति लरावऊ॥ आप हसऊ पुन लोग हसावऊ॥ हम तो नहीं बावरी बाला॥
तुमरे कहे लोगो ततकाला॥ जान तहि तुमरे बाते सभ॥ कुसम स्वर्ग ते ल्या पाया
जब॥५३॥दो॥ नै से तुम रुकमनी सों तु ऊल राधो मोहि॥ ते से बऊ प्रेल रा इहो बच
न सत्य नहीं तोहि॥५४॥चौ॥ ऐसे सबे द कहत सभ लोई॥ मंगल सभै बढी ता घर होई

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करतपत्रदेतजहांदाना॥ वामअंगतीयकरतप्रधाना॥ गांठप्रसससवधीती
यसाष्या॥ तातेयहकीनीयदुनाष्या॥ जोतुमकोपहिचानतनाहीं॥ तेनहिलरा
वज्ञआपसमाहीं॥ तुमभीवहमसुंयहवैना॥ सत्यतवेदेषोनिजुनैना॥ ह
महुचलीजातहींताता॥ जेगल्लवनेहरिरुकमनजुता॥ ५५॥ दो॥ जैसीतुमउ
स्तुतिकरीहरिरुकमनकीआई॥ जोहएसीजारीवनीतौहेरैपटजाइ॥ ५६॥
चौ॥ रेषजैसीउपमातुमकीनी॥ हरिरुकमनप्रभताबहुदीनी॥ देषोगीअब
नेनैनोजव॥ तुमरावचनप्रमानकरेतव॥ कैरोगीअंचरुमेजहांप्या॥ बाधो
मीपटुआपुमेसाष्या॥ हरिरुकमनपितुमहपतिजाना॥ हमरापितातुहुपहिचा
ना॥ तातेरुकमनदईवडाई॥ हमसौंकीनीनिपटरुषाई॥ सतिभामाजोयको
धवढायो॥ हरिहमसौंउपहासकरायो॥ ५७॥ चौपि नोकावचः॥ दो॥ जोमितुक
हैसुनऊनवपतिजनमेजादैकान॥ सतिभामाक्रोधितभईउपजोमनअभिमा
न॥ ५८॥ चौ॥ सतिभामाउठिचलीक्रोधिकरि॥ प्रावपतिमईजहांरुकमनहरि॥ सति
भामावचकहेकुसमपती॥ भेददृष्टिकतिकरीरमापती॥ रुकमनिकोप्रभताबहुदी
नी॥ जादवकुलकीलाजनकीनी॥ रुकमनिमानीराजकुमारी॥ तौमादरुकीनागि
रधारी॥ हमरादूषनकहेतिप्रकाशा॥ कत्तमजकीयाजगतउपहासा॥ देष्योनैन
सन्योजोकाना॥ नारदवचनसत्यप्रमाना॥ ५९॥ दो॥ सतिभमाकेवचनसुनकह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अश्वमेध ४८७

सुहृद से मन माहि ॥ मत्त करी सुन सुन वचन मुख वोल हि कछु नाहि ॥ ६० ॥ चौ ॥ वच
न कहे हरि सो रुकमनि तव ॥ कत तव मोन गह्यो पति अव ॥ सतिभामा सिस
वचन सुनायो ॥ ता ते तुम मन माहि डर पायो ॥ अंचरु वाध उठत सार
थो ॥ कत को डर पति हो पदुनाथो ॥ जो वड जग तव वृत हस सतभामा ॥ कुरै अनु
डर तुअ घनस्यामा ॥ वह तुम को मग सो अति प्यारो ॥ निशदिन जाके वसि अरधारे
की नै मघवा सो संग्रामा ॥ कुसमन नभ तप हि यो सुरधामा ॥ ६१ ॥ दो ॥ तव के लोक
तु रहि है कहा हर स्वी जित जगनाम ॥ सतभामा को हि तु की यो मघवा सो संग्राम ॥ ६२
चौ ॥ तव अस्त्री पति अव विलोकी नैना ॥ नारद हस तव जावत वैना ॥ जान्यो हृदे जग
त के ताता ॥ यह तो समभना रै की वाता ॥ यह चरित्र नारद के जानत ॥ हसी छिमत
लराई ठानत ॥ हम तुम वीच कलह ति उपजावत ॥ आप हस तप न लोग हसा
वत ॥ तुम तो वेद वचन जान हु सव ॥ शुभ मंगल को समै होइ जव ॥ ६३ ॥ दो ॥ वे
ण जुवती चाहही ये वाम मं गति हु काल ॥ ता सों अंचरु वाधी ये वेद वचन प्रति
पाल ॥ ६४ ॥ चौ ॥ ता न वृज कति करी रुपाई ॥ ऐ बके क हे लरन तुम आई ॥ उ
वति न सकमनि सो इह मा व सर ॥ पुन तुम सतुल्ल च लो क हो वहि ॥ तो नि
त और सको सतिभामा ॥ ऐसे वचन कहे घनस्यामा ॥ निज अंचरु ली नो
निज हाथा ॥ वांध्यो पट सतिभामा साथा ॥ व ध्यो पट मोद चिंत हु ऐ गाई ॥

८८

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जुवती हृदै मानंदित भई ॥ वजत वृंद तंत्र महा घनकारा ॥ जहां कहां होत भयो जै
कारा ॥ ६५ ॥ जैमिनी वाच ॥ दो ॥ जैमिनु कहै सुन जन्मेजय सतभामा के साथ
संचरु बांध्यो कृष्ण लै हरषत नारद पुनि हाथ ॥ ६६ ॥ चौ ॥ ताही छिन नारद पुनि गये
जामवती गृह प्राप्त भयो ॥ कहि नारद सुन जामवती वैश ॥ तुम गृह है वैठि रही
इह स्याम वसइ ॥ जुवती के साथ वनै हरि जहां ॥ तुम कहि सो तत जात नहीं तहां ॥ उन
तुमको न ही लीयो बुलाई ॥ हरि कीनी तुम सों निठुराई ॥ तुम ऊहां चलि देषहु
जाअ वहीं ॥ हरि रुकमनि सतिभामा की छवि ॥ सतिभामा अरु रुकमिनि सौं सा ॥ धर
त्यो मदन छवि जगदीसा ॥ ६७ ॥ दो ॥ रुकमन सतभामा सहित तंत्र संचरु बांध गुपाल
त्रिवरा यो त्रैलोक को सुर मुनि शिव महिपाल ॥ ६८ ॥ चौ ॥ सभ लोगन मिलवा तहि चा
रो ॥ दुई तरुनी हरि के हित कारी ॥ इक रुकमनि दूजी सतिभामा ॥ इनि दोनों संहित
घनस्यामा ॥ रोके सुता तुमको पहिचाना ॥ तौ न ही दीयो मान भगवाना ॥ ऐसो
उचति न पर्यो गिरधारी ॥ तुमरी को यो अनादर भारी ॥ तुम हरि को आगे पटरानी
एक सार वी सभ जग जानी ॥ तिन महि किरत भयो अवहेला ॥ ऊंती न पहु प्रशंसा
गोपाला ॥ ६९ ॥ दो ॥ वैठि रही गृह मैं कहा तहां जाउ ततकाल ॥ आपहि आ चरु
जाट है वांधहु संग गुपाल ॥ ७० ॥ चौ ॥ सो इह सुनु पावक हि त्रैलोक जौन ऊ
हां चलि जाऊ तुम ॥ ऊंती न आदर पो गस कल धिकार हि गेतु गृहि ॥ ७१ ॥ चौ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

२९. ४८८

जैमिनोवाच:॥ जैमिनु कहै सुनजनमेजय भूपाला॥ नारद वचन श्रवन सुन वाला॥ ज
मवती मनक्रोध ति भई॥ ता दिन हरि पति चलिगई॥ एक मनि सति भामा
हरि जहा॥ प्रापति भई विगचलित तहा॥ श्रीगिरधारी निरषहु से तब॥ पीछे रिष
आवत देष्यो जब॥ जामवती मुषवचन बषाने॥ अब मुरहरिनी के पति जाने॥
अब मुक्ति जानी प्रीति तुम्हारी॥ वचनन के साचे गिरधारी॥१२॥ दो॥ वेद तुम्हारे सा
स है जगत कहत भगवान॥ तिहि निगमन के वचन को तुम ही करत प्रमान॥१३
चौ॥ वेद कहत पहले वचन सुनऊ हरि॥ वऊ ती पहि ते वसतिजिः नरके घर॥ सभ
सुंवरते एक समाना॥ निगमन के वच सत्य प्रमाना॥ अब तो कोई कद्रम सर
मन को॥ भेद भाउ राषो न हीमान सौ॥ शुभमंगल दिन समो होइ जब॥ दै हेतम
नै वड़ी तीय के तब॥ अब रस मै तीय समकरि जानै॥ वेदवचन इम सति करि
मानै॥ अब पहत पशु करम के काला॥ तो दिन ऐसी उचित गुपाला॥१४॥ दो॥
अंचरु गां दप्रशस्त है रुकमनि सो इह काल॥ नहि तिसम सरजु वती अबर रुक
मनि वड़ी गुपाल॥१५॥ चौ॥ जो रत पर इक रुकमनि सा प्या॥ तुम को यह प्रस
न्न यद्दुनाथ्या॥ तौ तीय मबर नषिउत गुपाला॥ करते वेदवचन प्रतिपाला॥ वो
धो अंचरु संग सद तभामा॥ उचित न तो को यह घनस्यामा॥ तुम राष्यो जुवतीन
सी भेदा॥ वचन प्रमान कीयो न ही वेदा॥ हम मत्रा ठाती यऐ क समाना॥ तुम नि जु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ताप

वचननकीयोप्रमाना ॥ हसिजांचरलीनोगिरधारी ॥ बांध्योसापजामवतिना
री ॥ ७६ ॥ दो० ॥ नारदशिवनाचेहसेगावैबैनुवजाइ ॥ कालिंद्रीकेगृहगयोकह्यो
वतांतुसुनाई ॥ ७७ ॥ चौ० ॥ जामवतीसतिभामारुकमनि ॥ तिनकाकीयोप्रतापुर
स्यामधुन ॥ तीनलोककेसुरएवराजा ॥ जुरेधर्मकेयज्ञसमाजा ॥ तीनका
कीयोप्रिपुहरि ॥ तुमकोसुधिनकरीइहअवसर ॥ रुकमनिसोंत्रिभुवनकेताता
जोरतिगाढउचतिप्यीवाता ॥ तीनपुवतिकोकीनोआदर ॥ अवुरसभनकोकीयो
अनादर ॥ जाऊंदेषुतुमअपुनेनैना ॥ सुसमाननलीजुजुमजुवैना ॥ ७८ ॥ दो० ॥ का
लिंद्रीत्रापकोधकरितहागईचलिआप ॥ तीननारिसोंहरिवनेदेष्योसहप्रताप
७९ ॥ चौ० ॥ कालिंद्रीवचकहेकरुणापति ॥ भलाकामुनहीकीयोजगपति ॥ तीनजु
वतिकोआदररुदीनो ॥ अवरतीयनकेअपजुसकीनो ॥ तुमकोउचतिनयहजगजी
ताता ॥ कुनीतिपटकपटकीवाता ॥ हमअबजानीजुवतीहैसमसर ॥ कततुमभेदुकी
योहीमगिरधर ॥ हसिकरिकालिंद्रीपटसाप्या ॥ मैचरुगाढकरीनिजुहाथ्यो ॥
पुननारदशिवकोनिरष्योप्रभ ॥ हरिजान्योशिवकेचपित्रसभ ॥ ८० ॥ जैमिना
वाचः ॥ दो० ॥ जैमिनकहैसुनजनपतिकालिंद्रीपगुचाइ ॥ अवरनाइकापहि
गयोपुननारदशिवराइ ॥ ८१ ॥ चौ० ॥ पुननारदसत्राजापहिगयो ॥ ताकोसभवृ
तांतकहिदयो ॥ सत्राकोहरिपहिपगुचायो ॥ पुननारदमित्राजापहिआयो ॥ ता

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ५८४
मेध

कौसकलवतांतुसुनाउं ॥ भिज्ञालेनंदलालमिलाउं ॥ पुनश्रिषगयोव्रत
धुमनाकेगृह ॥ सकलवृतांतुसुनाइदीयेकहि ॥ होयलधुमनाक्रोधउप
जायो ॥ चल्योसापलेहरद्विषरायो ॥ मुनिनारदआयोवृंदागृह ॥ कह्यो
वृतांतुसकलअवसरतिह ॥ ८२ ॥ दो॥ वृंदाश्रिषकेवचनसुनउपज्योक्रोध
अपार ॥ श्रिषलेपऊचाईतहांजहांतांपसक्षतमुरारि ॥ ८३ ॥ चौ॥ सभलेरि
षपऊचाईतहां ॥ पऊंसमाजऊतेहरिजहां ॥ आठोजुवसिक्षिसोगिरवरध
रि ॥ नौरागांठमुदतिसि:अवसर ॥ नारदनिरतिकरैपुनगावै ॥ हरिसनमुष
हंसिवेनवजावै ॥ हरिजानतयहनारदकीकृत ॥ यहकारजकीयोहांस
करनहित ॥ सभजुवतनिकेरिसउपजाई ॥ सकलआनमुजसांयल
राई ॥ हरिहसवचनकहेनारदप्रति ॥ यहतपरिहासकीयोहमसोंकत
८४ ॥ दो॥ कृष्णकहेनारदसुनउयहतुजऊतीनयोग ॥ मुऊवांधयोपव
टआठसोंदेषहसहत्रैलोग ॥ ८५ ॥ चौ॥ नारदकह्योसुनजगरधारी ॥ तु
मतोसबसरूपमुरारी ॥ मायाकेगुनधरअवतारा ॥ प्रगटभयोहैयह
संसारा ॥ तुमअलिपप्रभसभतेन्यारा ॥ इछासोंव्याहीवऊदारा ॥ धर्मगृ
हस्थदंडावनकेहित ॥ तातेतुमकीनीऐसीकृत ॥ लोगनकोंकीनाकल्याना

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अविनासी तुम पुरुष पुराना ॥ आन मेल मोहि सम भती पूजन ॥ मनु को ऊक है
भेदु की यो भगवान ॥ ८६ ॥ दो० ॥ सकल तीर्थन को भेद हरि कही यो ऐक को मान
त वे सो से भाषत जग तम विभई ऐक समान ॥ ८७ ॥ जैमिनो वाच: ॥ चौ० ॥ जैमि
नु कहै सुनहु भूपति वर ॥ जुवतिन साथ हरख सुकरि तहरि ॥ चले व जंत्र व जा
इ मुदित मन ॥ पहुचे जाइ सुरसरी तट छिन ॥ चौसठि कलस नारि गंगा भरि
हरषत होइ लीये सीस नवरि ॥ आ जाउ ती आतिन की तैसे ॥ लये उठाइ क
लस भरि तैसे ॥ अति पावन वशिष्ट की वामा ॥ जाकौ वर अरुंधती नामा ॥ त
ल अरुंधती भरि निज हाथा ॥ कलस सुधर्स्यो रुकमन के माथा ॥ ८८ ॥ दो० ॥ चौ
सठि जुवती कलस भरि लीये सीस पधारि ॥ हरखि विलास करत चली भाव की
मंगल चारि ॥ ८९ ॥ चौ० ॥ कलस उठाइ चली मग माहि जब ॥ तम कहि अति रु
कमन की अति छवि ॥ अरुंधति वचन कह्यो रुकमनि प्रति ॥ कनक वरन तुम
तन सुख हम अति ॥ सखिन सकत फूलन को भारा ॥ जब मग कलस सीस पर
धारा ॥ गंगा जल स्यो भस्यो कनक घट ॥ हो ठर पारिन ते टूटि जाइ कटि ॥ य
ह वचन कह्यो वसिष्ट नारि जब ॥ सुन्यो सुभद्रा निकट ठाढी तब ॥ सुनि बोली
पारथ की नारा ॥ सुन अरुंधती वचन तुमारा ॥ ९० ॥ दो० ॥ सुनहु अरुंधती
तुम कहौ रुकमन सो पहवात ॥ भीषम सुता महा वली पति त्रिभुवन तात

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

८१ ॥ चौ० ॥ जिन के पति गोवरद्धन धारयो ॥ सतदेव कर तेन ही टारयो ॥ तिन
समान गिरि को तुही जान्यो ॥ गोपी सा लगा इसु ब मान्यो ॥ टारयो मघवा
को अति माना ॥ ऐसो रुकमनि पति भगवाना ॥ चौदह भवन उदर मधि जाके
उपजे सम्र वति कोन तीय ताके ॥ रुकमनि उर धारति तस जगपति ॥ ता ते अविम
सुता वली अति ॥ रुकमनि यों तुंने धारत मुरारा ॥ जैसे उर फूलन को हारा ॥ ८२
दो० ॥ कलस उठावन तुम्ह ति हतुं श्री कृष्ण भतार ॥ जिन तधारत हे उर विषे जो त्रि
भुवन करतार ॥ ८३ ॥ चौ० ॥ तिहुं हरि भवन चतुर्दश धारे ॥ सो श्री पति सम हुते
न्यारे ॥ तिः हरि को तुं नित धारति तन ॥ ता ते महा वली पह रुकमन ॥ नाहि
न एतीन पतिव्रत द्रुढ वा के ॥ मा वरन इह जगती प सम जा के ॥ लक्ष्मी रूप के
सकी नारा ॥ ता को तुम्ह कलस को भारा ॥ पुनि वोली रुकमनि गुन सागर ॥
सुनहु सुभद्रा नारि उजागर ॥ तुम के सा पति ले उर धारहु ॥ मन मधि ता को
भार विचारहु ॥ ८४ ॥ दो० ॥ जाकी तुम उसतुति करी ता को मै तु नि पार ॥ सो हरि
रहत अधीन नित तुम रे पति के द्वार ॥ ८५ ॥ चौ० ॥ सो कैसे है कृष्ण मुरारी ॥
जा को अखिल भवन को भारा ॥ तै सो श्री पति भ्रात तुम्हारा ॥ जिह दिन सात गोव
र्द्धन धारा ॥ सो हरि सदा सखार थी अरजन ॥ तुम पति आज्ञा मांहि सदा मघन
जान तहि जप आप ते भारी ॥ जा के नित अधीन गिरधारी ॥ पार पाहु देसदा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हरि धाना ॥ तां ते पांडव अति बलवाना ॥ कीयो गरि ए आपते श्रीपति ॥ ताको
तुम उर धारत नित प्रति ॥ ५६ ॥ दो ॥ ऐसे सहास करत सकुल पुनि आए सब
शाल ॥ जहां ठाढे हैं विकुंड पर श्री यदुवर मंगल पाल ॥ ५७ ॥ चौ ॥ प्रमुदित
सबद करत नर नारी ॥ लोग करत सब जै जै कारी ॥ राषे कलस उतार सी
सते ॥ गावत मंगल जगत ईस के ॥ आगे न कुंड की प्रभु भग ठौर परे ॥ बंजबी
तके राजत है वर ॥ बांध्यो तिन के साथ तुरंगा ॥ है सम धान की ये सम भंगा
आज्ञा करत भए भगवाना ॥ आव धर्मज की जैइ सनाना ॥ कृत विचकी जाहि ही
ये धरि भाउ ॥ पूरन भयो उन हत्र मो ध्याउ ॥ दो ॥ इति श्री भा [illegible] पर्व ए [illegible]
[illegible] ध्यान ॥ कवि [illegible] पूरन भयो उन हत्र मो ध्याउ [illegible] ॥ ५९ ॥ ५८
[illegible] ॥ जैमिनी वाच ॥ [illegible] ॥ जैमिन कहे सुन जनमेजय नृपति ॥ आप ने पत
रन को प्रताप अति ॥ आप ब्रह्म ते सहित तधर्म भूपाला ॥ उद्यम करत भयो तिहिं का
ला ॥ प्रथम मेन पद की नोइ सनाना ॥ निगम मंत्र पढि वे द विधाना ॥ पाटंबर त
नप हरि विसाला ॥ लागो मदद ति चरन नंद लाला ॥ प्रथम मधि जन को भी जन
दीनो ॥ इछा चारी पाक प्रवीनो ॥ कृष्ण भी मअर जन मन हरवत ॥ धोवति
चरन ऐ षन के धिधवत ॥ १ ॥ दो ॥ आप तदानंद दी यो जन को ॥ मुक्त त पु थप
रराइ ॥ वजरि अगन के कुंड परि हाम करत भयो जाइ ॥ २ ॥ चौ ॥ जैमिन नृप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४८७
मेघ

ति तैं भिन पत्ति ॥ तन रूप हरि अबलभ वन पत्ति ॥ २ सो ई [illegible] सो ईद्दिज
न के चरन पषारे ॥ अति अचरज भयो हृदै ह मारे ॥ तै भिनुक हे सुन
हु भूपति वर ॥ नवति युधिष्टिर परकरुणा हरि ॥ श्री पति भगति प्रता
प वठावत ॥ पज्ञ टहल तब परगा हरुन लावत ॥ पडु सुतन को भी रउ ता
रत ॥ मुद तृद्दिजन के चरन पषारत ॥ सभ नरिश वी पहत सुब उप जावत
ति ॥ भि जक रि द्दिज के चरन छुहावति ॥ २ ॥ दो ॥ द्दिज वर दे तु असी स सभ
सु फल यज्ञ भूपाल ॥ जा के सदा सहाइ है टहिक न प्रभ नंद लाल ॥ ४ ॥
चौ ॥ धर्मज यज्ञ सुफल के का जा ॥ द्दिज पग धोवन श्री यदु राजा ॥ पुन
दीनी दछना युधिष्टिरा ॥ इक इक ब्राह्मण को ही एहि तु धरि ॥ इक गज इक
रथ पे एक तुरंगा ॥ गो सहस्र इक विधवति संगा ॥ ऐक भार कंचन को दीर
नो ॥ क्रतिम बस्त्र द्दिजन वर लीनो ॥ दै असीस द्दिज चले मद ति हीये ॥ आ
छत चंदन सभन हाथ पलीये ॥ अग्नि कुंड प्रवरि है प्याज हो ॥ भा पत्ति भए स
कल रिखत हो ॥ ५ ॥ दो ॥ श्रुक कोउ हस होते हो म पए आप्रिम आहू ती देत ॥ निग
म मंत्र कोई डावरति तो अवै सकर लेत ॥ ६ ॥ चौ ॥ पुन धर्मज वच वकहिहर ईजी
प्रति ॥ दीजे गा सम अगनि मुख विधवति ॥ हो वहि तप तप समर सभ जैसे ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

अग्नि मख हुत तो द्वाजन्हि तैसैं ॥ पुनन पथ नै कर राम अंगु को तब ॥ उर बुधु होत्हि प्रसंन
देव सब ॥ तैसे गनाम संग गत मख बदीजै ॥ कृपाधार करु एलव ब्रह्म को जै ॥ बकदाल
भए बनात मी कपान ॥ ऐ अ कर रत मन मद त्ति वेद धुनि ॥ गौतम ऋषि वशिष्ठ ए
कौशि रधर ॥ हरषत वचन कहेत हम अवसर ॥ २ ॥ दो ॥ यज्ञ करायो रामर
का जैसे तुम क्षत्रि धार ॥ तैसे हमरा यज्ञ यह तकी जैतिस प्रकार ॥ ८ ॥ चौम
धर्म तात पुनि विवकर जोरे ॥ कह्यो व्यास प्रति सन प्रभ मोरे ॥ मरुत य
ज्ञ की नो तुम जैसे ॥ हमरा यज्ञ करउ तुम तैसे ॥ बड तउरत हो सुबम
बव्यासा ॥ कैसे कुरे अगनित पग्यासा ॥ व्यास कहै न पर्वत नकी जै ॥ ह
एपदपंकज स्तुति तुदीजै ॥ पहत तुमरा मब अपरच्यो हर ॥ भयो नअ
वर यज्ञ यह समसर ॥ सकल लेष्ण रो मण्ए यज्ञ तुमारा ॥ जहा ठाढे सब
धान मुरारा ॥ ८ ॥ दो ॥ यज्ञ सम न का मे रूप हम सब तुमरा पमतात ॥ ह
साके भयो न होइ पुनस कह तैहवात ॥ १० ॥ चौ ॥ यज्ञ बड तप व्यव वी
तम ए ॥ राम अदिव उन पक ए गए ॥ होहि न तुमरे यज्ञ समाना ॥ जहा ठा
डे श्रीपति भगवाना ॥ वेद व्यास के वचन सुन तन पमुदत भयो मन माहि
नराधिप ॥ वचन कहत भ मानंद लाल तब ॥ त्याव ज(?) जैसुर सुरी केअव ॥
अरजन गे गापर्प्प(?) चलि गयो ॥ हाप्य जोर कथ ठाठा भयो ॥ बन ताकरावि जैसन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

माता ॥ तो कि बुलावति है जगताता ॥ ११ ॥ दो० ॥ कृपाधार माता चल जग्य गृह धरम
भूपाल ॥ करत अकुतार थपालो ग सब आज्ञाकारी गुपाल ॥ १२ ॥ चौ० ॥ सुनि सुर
सरीरा नंदित भई ॥ पग्ग पुधि ठर मधि चलि गई ॥ मूरति वंत भई तिहं आवस्सर
कृष्ण मलागी चरननन हरि ॥ सब लोको सुर सरीदाए भई ॥ रूप अनेक
की घे गिरवरधरि ॥ आचरज भई देव अपुने मन ॥ आपर हे सम होर स्याम
घन ॥ करत पूजा कृत नर ती पतहि ॥ देखी घत सकल होर हरि तहि ॥ धन्य भाग
धर्म जन्म पालो ॥ अपुने व सी जी ने नंदलाला ॥ १३ ॥ दो० ॥ उतपति करता यज्ञ
का टहलों पर सोई ॥ आपर ह्यो सम है र मूर्ति गति लख सकै न कोइ ॥ १४ ॥ चौ०
हरि राखत भगतन की लाजा ॥ कीनो सिद्ध पुधि धर र काजा ॥ जोगा को स्वागति
कछि दीनी ॥ नपति पुधि धर रक्षा जाकी नी ॥ पुनधर्म जगत सब वचन उचारे ॥
आनंद्द व सब वड भाग हमारे ॥ मेउ वरि कृपा करी यदुराई ॥ आपु घं बड नी द्वा
ए चलि आई ॥ नो ग्गा हम मूरतिवंत बुलाऐ ॥ सवाधीन तेतक्षिन चलि आऐ ॥ जा
को ठोर उचित पाजहा ॥ सो सो ग्रह है वैठा या तहा ॥ १५ ॥ दो० ॥ नवग्रह मूरति
वंत की विधवत पूजा कीन ॥ आज्ञाकारी होर रहे सकल भए आधीन ॥ १६ ॥ चौ०
बहुरि नक्षत्र सताईको नव ॥ लै वैठाए निज ठोर सब ॥ जो हल्य ग्रह का जे ठोर अता
वले ॥ ता को वैठायो तिःस्म स्याल ॥ बीस सहस्र पृथ्वी सब धाना ॥ चार वेद दस
अष्ट पुराना ॥ पट सास्त्र रिसि मत बषाना ॥ पठतवि प्र जे उ म हता सुजाना ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

जुवतनिसहत्तिसकलसिवराजा ॥ पूजाकरतभऐसभवाजा ॥ ठाढेआएसं
गंधलीयेकर ॥ पूजततआस्वहरखहीयेहितुधर ॥ १७ ॥ दो ॥ तीनलोकवाज
वजैआज्ञाकरीगपाल ॥ हपकेदईपदछनाजुवतिनिसंभ्रमपाल ॥ १८ ॥ चौ ॥
पुनयवगरछितराषेहपलाजा ॥ कीजैसफलपुधिएरकाजा ॥ आस्वदेवयह
पजधरमसत ॥ सपररणकीजैकरुणापुत ॥ पुनिआज्ञाकीनीनंदलाला ॥
सुनकआवनदैसभभ्रमपाला ॥ सभपंचतरवजेत्रवजावज ॥ मनमछितआतिआ
नंदउपजावज ॥ स्वर्गलोगभ्रमआलोगधिपाला ॥ वाजेवजेत्रआनंदवेशाला ॥
१९ ॥ दो ॥ मुछतभऐभ्रमपासभैकुरतपरसपरवात ॥ जहांठाढेसधिधानहु
रिमुकुतपुरीसब्यात ॥ २० ॥ चौ ॥ धर्मजहपकमुकटउतारा ॥ जवहीआज्ञाकरी
मुरारा ॥ कुंकमचंदनअगरकपूरा ॥ गोरोचनअरगजासंधूरा ॥ मगाम
दसकलसुगंधमहावर ॥ धर्मजभएलीनीआपुनेकर ॥ लैचरचेहपकेम
बभाला ॥ हरखतहीऐधरमभ्रमपाला ॥ जलसुगंधसींचेविधनाना ॥ कीयो
विधवतहपकोइसनाना ॥ सभसुगंधतनलेपनकीनो ॥ हपकेतुष्टिमान
कारिलीनो ॥ २१ ॥ दो ॥ हपकोकरीप्रदछनाछपदसातामरुराज ॥ होपजोर
विनतीकरीकरउसेपूरनकाज ॥ २२ ॥ चौ ॥ हरखतरिषधुननिगममउचारा
वेदमंत्रपढिआछतजरछि ॥ आछतपरछितआस्वकेआगा ॥ संसंसेआधी

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

श्री
४८३

अश्वमेध
४८४
जयपुर

न तुरंगा ॥ सुन धुनि वेद तुरंगम काना ॥ प्रमुदित अंग गाकरै सविधाना ॥
अग्निकुंड परिपूरित बड़ावे ॥ निरभय है इनि कट चलि जावै ॥ धर्म भूपा
ल द्रौपती सा थ्या ॥ यज्ञ के कारण शोभित हा थ्या ॥ अंचुर गांठ विचित्र रही
फवि ॥ अश्व प्रदक्षिन देत महा छवि ॥ २३ ॥ दो ॥ जव ही ऐक प्रदक्षिणा पूरन कर
रति भूपाल ॥ तै जै कपर उचार हीं लोग सकल तिह काल ॥ २४ ॥ दो ॥ बार इकी
स प्रदक्षिना दीनी ॥ विधवत हय पूजा कर लीनी ॥ पुन श्री कृष्ण रुकमनी र
सा थ्या ॥ अंचु रु गांठ जोर निज हाथ्या ॥ दई प्रदक्षिन वेर ईकीसा ॥ हरषत ही
ये जगत के ईसा ॥ जिन निज पट वांध्यो तिय साथ्या ॥ हरि रिष नृपति आदि ज
दुनाथ्या ॥ दीनी सभन प्रदक्षिना वाजी ॥ प्रमुदित हीं ऐ अमर एव राजा ॥ वा
र इकीस करत सभ तहां ॥ ठाढो यज्ञ तुरंगम जहां ॥ २५ ॥ दो ॥ धर्म तात आरु दे
पदी पुन कीनो इसनान ॥ ऐक लाख गो द्विजन को दी यो वेद विध दान ॥ २६ ॥
चौ ॥ गज रथ अश्व दीने वहु दाना ॥ मणि मुकता हाटक विधनाना ॥ दो
पद सुता संग नृपति युधिष्ठर ॥ वहु रोमा चाम पोकुंड पर ॥ धन्न ती
करी धर्म के ताता ॥ पावक सन जु हमारी वाता ॥ तीन लोक कौ सुर्व्व ज
न तुज ॥ ताते तुम सो विनै करी मुज ॥ मति जानजु यह पज्ञ हमारा ॥ यज्ञ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

करत हैं आप मुरारी ॥ करउ प्रकाश हेत उ सविधाना ॥ हय कौ जोग जुवे दवि
धाना ॥ २७ ॥ दो० ॥ ते सभ छनन की जीये शवदन करै तुरंग ॥ इत उत हय र
ह्यौ लै न ही फुरकावै न ही अंग ॥ २८ ॥ चौ० ॥ अग्र मुक है सुन वचन युधिष्ठि
र ॥ यज्ञ तुम्हारा करत आप हरि ॥ तो वे हम है हैं सविधाना ॥ ताते भेद भि
टा वहु नाना ॥ यज्ञ करत है श्री गिरधारी ॥ जिन जग प्रभ ता करी हमारी
ता का अश्वक रौं हम अग्रासा ॥ देव दिग सभ लोकत मासा ॥ तुम रा यज्ञ स
फल भयो तब ही ॥ कृपा धार आये हरि जब ही ॥ ताते हम देखे नंद वंश
वड ॥ जीय ते संभ्रम सकल मिटा वड ॥ २९ ॥ दो० ॥ नेम न कहे सुन सुन
वल्लीन ज पितरन को दान ॥ जे सब संतर की पा अश्व देव को पान ॥ ३० ॥
चौ० ॥ वाल्मीक मारकुंस सप्त रिषीश्वर ॥ यज्ञ कंकण जिन बांधयो कर ॥ गौत
म आदि रिषीश्वर जे ऊ ॥ सभ रिष सावधान भए ते ऊ ॥ वकदाल्भ ते आदि
रिषी सब ॥ निगम उचार करन लागे तब ॥ पुन वशिष्ठ रिष अग्र वृहस्पति
कौं डी वेद पढंति मन हरषत ॥ सभ महा महिम रिषीश्वर जे ते ॥ ठाडे कुंड चहु
दिस ते ते ॥ तब प्रभ भयो हय वेद मंत्र करि ॥ चल्यो कुंड की ओर हरि तु धर ॥ ३१ ॥ दो०
रिष अग्र दिति वर्ह मार ही वेद मंत्र के भाइ ॥ तुरंग अश्व ही यह हरष चल्यो कुंड
दिशा जाइ ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ अश्व कुंड पर आइ चल्यो जब ॥ नरवर युधिष्ठिर हरष

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

४८७
अश्वमेध

भयो तब ॥ पुनध र्म्मि ब्रह्म हरि पग लागा ॥ विनती करी हृदय के अनुरागा ॥ यद्
प्रभु सकल तपफल ताकौ तुम्हारा ॥ यज्ञ की यो तुम नाम हमारा ॥ श्रीपति त्रिविधि वे
द पर पंक्ति वरि ॥ अग्नि कुंड की ठौर हि अवसर ॥ अरध रजनि की उतरि नृप
र ॥ करै सनान पुलोग निस्तारे ॥ हरि चौके पर रिषी स्वर राजत ॥ कोटि वेद पढ़ त
छवि छाजत ॥ ३३ ॥ दो० ॥ ऐसे रिष ठाढे भए अग्नि कुंड पए आइ ॥ जाकी माया सु
रपति से सकादृ भव विगसाई ॥ ३४ ॥ चौ० ॥ ऐसे रिष धुन वेद उचारहि ॥ पढ़ि आछत तह
यक तन मारहि ॥ ठाढे बीच आप नंदलाला ॥ चहुं ओर रिष पांत विशाला ॥ रिष उ
पशांत ठाढे विबुध सब ॥ तिनके पर नरेस महा छवि ॥ तिन उपशांति बरे लघु राजा
तिनके पाछे सेन समाजा ॥ तिनके पाछे नगर के लोगा ॥ ठाढे हृदे नृप तिन हु सोर
गा ॥ ३५ ॥ दो० ॥ ठाढे सभ के मध्य हरि कमल करै [illegible] भांति ॥ टहि कन प्रभ नंदला
ल छवि कोट ससि की क्रांति ॥ ३६ ॥ चौ० ॥ इक इक पांकति रिषजु आवहि ॥ उचारत व
द तुरंग सुनावहि ॥ आपी मंत्र कर लछि तमारहि ॥ जे जे मंगल शवद उचारहि
दे प्रदछना ते फिर जावहि ॥ पंकति और रिष उरै आवहि ॥ वालमीक ते आदि रिषी स्व
र ॥ इंद्री जित रहा ह्म ज्ञानी तपी [illegible] ॥ सभ आभि मंत्रित करत तुरंगा ॥ आछत ठार
हित पके संगा ॥ पुनि हूपके पद छना करहीं ॥ मषते जे जे शब्द उचरहीं ॥
३७ ॥ दो० ॥ वज्र सुमार कंहि रिषी सकल रिषन के संग ॥ वेद भेद पढ़ि के सवे दई प्र
दछना तुरंग ॥ ३८ ॥ चौ० ॥ गौतम आदि जते रिष जेते ॥ वेद उचार करत भए तेतो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

निगम मंत्र पढि अछत मारत ॥ सब ते जै जै शब्द उचारत ॥ पुनि हय को पद छनादे
ही ॥ पढि अति मंत्र शुद्ध करि लेही ॥ आदि अगस्त रिषि श्वर ते सू ॥ पूजा करत भ
ए हय की तब ॥ वेद मंत्र अभिमंत्रित कीनो ॥ अग्नि कुंड को हय चितु दीनो ॥ करि ले
नौ प्रदना वाजा ॥ आए वज्र रिषवर रिषराजा ॥ ३९ ॥ दो ॥ द्रव वासा ते आदि ले आए
रि बाअ अपार ॥ हय को दई पद छना अति धुन करी उचार ॥ ४० ॥ चौ ॥ आदि छत मारि
अभिमंत्रित करि ॥ जै जै शब्द करहि चित तहि तह धर ॥ भृगु रिषि आदि दुर्वा श्वर हरष
त ॥ पूजा करी अश्व की विधवत ॥ पढि अति मंत्र पद छनादीनी ॥ जै जै करत षि अरस
र लीनी ॥ जीव आदि सुरपति रिष जे ऊ ॥ पूजा अश्व करत अमचे ते ऊ ॥ अभिमंत्रित
की चो वेद वचन सों ॥ करी पद छना हरषत मन सों ॥ अछत डारत विधवत का
रा ॥ सकल लकुर तरु छिसों जै कारा ॥ ४१ ॥ सोरठा ॥ गात लव रिष बन समे तु पूजा
करी तुरंग की ॥ मुदित हीये धपरे हेत दै पद छना जै करहि ॥ ४२ ॥ दो ॥ आदि वसि
ष्ठ रिषी जै ऊ पूजा करी तुरंग ॥ वार इकीस पद छना दीनी हृदे उमंग ॥ ४३
॥ चौ ॥ वेद मंत्र पढि अछित मारहि ॥ जै जै मंगल शब्द उचारहि ॥ विश्वामित्र
रिषन सों आए ॥ वेद मंत्र हय पर्व बनु सुनाए ॥ अछत डार पद छनादीनी ॥ हि
प पूजा विधवत करि लीनी ॥ करत भए पुन जै जै कारा ॥ पढि तनि गम रिषि बहु
धुने कारा ॥ आदि पराशर रिषि आए पुन ॥ दै पद छना करी वेद धुन ॥ पढि
हारत अछत हय के तन ॥ जै जै कार करत हरषत मन ॥ ४४ ॥ दो ॥ वाक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Intitative

८५
अश्वमेध

द्विजन्ह भरि षट्मास द्विजे ते स्तुति करहि उचार ॥ दैप्रदछना स्वकीय सुदति के
रै जैकार ॥४५॥ दो॰ ॥ पठि अछ्छत डारहि हय पगा ता ॥ उपजा वहि हय केस
न सांता ॥ वजुर उद्दालक नारद आसा ॥ सकल वेद धुनि करहि प्रकासा ॥
अछ्छ तडारत आभ मंत्रित कर ॥ जै जैकार करहि ते यहि तुधरि ॥ आदि अस्थ
राशि षी अनेका ॥ तिन का की या नजाइ विवेका ॥ पूजा कर तम ऐसम वाजा ॥
तो ऊं स्वा एशि षपत्नसुमाजा ॥ दैप्रदछना वार इकीसा ॥ धर्म नपति कोदई
आसीसा ॥४६॥ दो॰ ॥ जै जैकार करहि सकल तै तक रिषसुर राज ॥ अछ्छत मा
रहि वेद पढि ज्ञान हि डाव त वाज ॥४७॥ दो॰ ॥ रिषन कहे स्तुति मंत्र विधाना ॥ है
तम पेयानु रंग सविधाना ॥ हय चलि आप कुंड पहि गया ॥ शीत रूप है ठाढ भ
या ॥ पुनि दीनी प्रदछना औरधरि ॥ वार इकीस फेरया हय पहि तुधरि ॥ वामउ
र ठाढे है हय केहरि ॥ तीन लोक के नाथ कृपा करि ॥ पुनि कीनी पूजा सम रा
जा ॥ सम न करी प्रदछना वाजा ॥ भीम सैन अरु सहदेव जे सूर वर ॥ करी प्रदछ
ना हय पति: अवसरि ॥४८॥ दो॰ ॥ अरजुन भीम सप्रदछना दे तम ऐ स्तुति कीन्ह त
सो तम रतिव अश्वमन ठाडे हैं मन हर्षित ॥४९॥ दो॰ ॥ पुनि सहदेव नकुल दोउ
भाई ॥ पूजा अश्व हृदै चित लाई ॥ ठाडे भए पृछ की ओरा ॥ ठाडा कुंड कुल
पहि घोरा ॥ अग्नि प्रताप सी तकर जाना ॥ अश्व हृदै की नो दृढ ज्ञाना ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

वेदवचन सुन मगन भयो मन ॥ नेजु अगनि को नदी लागत तन ॥ चौआ चंद
न विविध प्रकारा ॥ मृगमद अरु सुगंध अपारा ॥ पुनि हय पद जिहि पदीना
री ॥ धूप दीप आरती उतारी ॥ ५ ॥ दो ॥ द्रुपद सुता चरचत कीयो ॥ सभ सु
गंधतन वाज ॥ हाथ जोर विनती करी कर जस पूरन काज ॥ ५५ ॥ चौ ॥
पुनि करुणा करि श्रीगिरवरधर ॥ अपुनो कर फेर्यो हय तन पर ॥
हय प्रति वचन कह्यो पदुनाथा ॥ धर्मसुतात को करो सनाथा ॥ हमरा
वचन मान हित लीजै ॥ सुफल यज्ञ धर्मज को कीजै ॥ पुन ताको गति दी
पति होई ॥ जो हम कहै सो करो कृति सोई ॥ ऐसे वचन कहे श्रीपति जब ॥
मख पूरण सकीयो हय कै तब ॥ पुन हय अपुन नदि गनिकारा ॥ सभ एक
र तम ऐसे जै जैकारा ॥ ५७ ॥ दो ॥ लिंग तुरंगम हाथ मह धर्म तनय ... तु धार
र ॥ ऊपर जलढार तम भई द्रुपद सुता वर नार ॥ ५६ ॥ चौ ॥ धर्म तात हय
लिंग पषारा ॥ चरचति करी सुगंध अपारा ॥ चंदन ने चर्चित कीयो लिंग गज
व ॥ पफुलत आभूषम यो अंगतव ॥ आग्या कुंठ पद दहना के हित ॥ मधुहित तनु
रंगमय पहधरी चित ॥ ताहि चलले जाहि धर्मसुत हए ॥ अग्नि तिधु पिकरी शिव
नषित: सुवसर ॥ तीन लोक हरषत नर नारा ॥ प्रमुदित सभ जन कीयो जैकार
रा ॥ आग्या कुं ... तैसे करत रंगा ॥ करी पद दहना दुंदउ मंगा ॥ ५८ ॥ दोहरा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥३०॥
४५६
अश्वमेध

दीनी अश्व प्रदछना आगें कुंड की ओर ॥ कश्यप आग मगीर धरनको पु-
न ठाढे निज ठौर ॥ ५५ ॥ चौ ॥ बहुरो रिषन वेद धुनि कीनी ॥ तिन हुति
गा अश्व के ऐलीनी ॥ पुनि हय पर चहुंघा ते रिष हुती यहि तिन धर ॥ पुनि प्रदछना द
ई कुंड परी ॥ पाछे रिषय धुन वेद उचारे हि ॥ निगम मंत्र पठि अछत गारहि ॥
ता के पाछे धर्मज मौ रहि ॥ अश्व पुनि ठौर गयो पुन घोरे हि ॥ रिषन की यो धुन
वेद उचारा ॥ बहुरो शब्द भयो जैकारा ॥ बहुरो रिषन तिंग मचरचत जब ॥ की
नो जै जैकार मिले सब ॥ ५६ ॥ दो ॥ बार तीसरी तिंग की विध वति प्रजा कीन ॥ ह
रषत दे न प्रदछना चहुंघा तुरंग प्रवीन ॥ ५७ ॥ चौ ॥ तिहि अश्व समर प्रमुदित यदु
नाथा ॥ अश्व पांव पछार के धाये ता पाथा ॥ अश्व देव करुणा आव की जै ॥ धर्मज यह
तस फल कर दीजै ॥ है सव धान चहुंघा तब बाजा ॥ पाछे चले रिषी सब रा
जा ॥ कृष्ण चद्द धर्मज लै संगा ॥ फिर आयो कुंड चहूं ओर तुरंगा ॥ करत तजा दि
सभ जै जैकारा ॥ जुवती गावहि मंगलाचारा ॥ पुनि मख तेस भद्रेहि अश्व सी सा
धर्मज ला जत राषु जगदीसा ॥ ५८ ॥ दो ॥ दे प्रदछना कुंड को अश्व भयो सवधान
बहुरि अश्व इढ ठाम यो हय मपु नेइ स्थान ॥ ५९ ॥ चौ ॥ तीन प्रदछना पूरन क
री ॥ विधवति हिरदे सेव उरधरी ॥ पुन लागे रिष वेद उचारन ॥ पढि अछत हय
के तन मारन ॥ उसे परत तिंग मधुन प्रावनन ॥ सुसे हा तत तुरंग मगनम
न ॥ अंग अंग सब मंत्रित कीनो ॥ रिषन तत रंग मध वसि कप ती नो ॥ तब तुरंग उध

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मकौ नौमन ॥ आऊं कुंड मधि होम नन कौ तन ॥ ६० ॥ दो० ॥ अस्त्र भयो सावधान तव व
ह्यो सगुन की ठौर ॥ व ग जाइ ठाढ़ो भयो निकट कुंड की ठौर ॥ ६१ ॥ चौ० ॥ धर्म जा
वि नेक री हरि सों तब ॥ ऐसी कृपा कर कृस्न श्रीपति अब ॥ अस्त्र प्रवेस अगनि
जो कर ई ॥ तव मुष ते न हो शब्द उचरई ॥ कुंड वीच जब परे तुरंगा ॥ तव
नहीं फुरकावै कौ अंगा ॥ जौ मुष शब्द करै फुरकै तनु ॥ परै न हूनन ताय जतस्यो
मघुन ॥ तांते कहों अगन कौ श्रीपति ॥ तिः अव सर ज्वाला धारे मति ॥ करै म
हा दुति तेज प्रकासा ॥ ततछिन करै तुरंग मग आसा ॥ ६२ ॥ दो० ॥ वैसे तर प्रत
हरि कह्यो कौ जै हम राका ज ॥ ततछिन भछन कौ जी येध मम कृत वाज ॥ ६
३ ॥ चौ० ॥ हरि वच सुनत अगनि तिहकाला ॥ कीनी प्रलै काल की ज्वाला ॥ पुनि
रि षहत यकौं मंत्रनि लागे ॥ सुदत तगर तहाँ यस तुरागे ॥ चह्यो अगनि की
ओर तुरंगा ॥ सावधान कीने सम अंगा ॥ भीमसैन कौं कृस्न बुलायो ॥ ता
छन बड़ हाथ गहि ह्यो यो ॥ ठाढौ कीयौ दाह हने उरा ॥ हृता जहाँ कुंड पर
घोरा ॥ वड्ढ हरि वभ्रुवाहन नवषकेता ॥ तिन कौ हरि करि लीयो संचेता ॥ ६४ ॥
दो० ॥ बाम अंग ठाढे कीऐ दोऊ स्वरवलवान ॥ मतु यह बार करै कछु लोर
रहो सावधान ॥ ६५ ॥ चौ० ॥ उठि हरि ववाल सी कवक दालभ ॥ मुष्य पृथी वार
उठे मदति सम ॥ सोर भई रिव दिसि पृथी तम मपुन ॥ दवी शास्त्र कबौनारु
दमुनि ॥ मार कं ... सनि निज गास्ता वर ॥ स अंगारा उठे बरोपारे ॥ मजु

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

मुनिविस्वामित्रवदतस्वति॥ सुक्रअस्वादिसभएवमननहरषत॥ तीनलोककेउ
अमुष्यएषीस्वर॥ उठेसकलमननमुदितततवीस्वर॥ समरिबहाइर
हसविधाना॥ ठाढेलेसंताजाभगवाना॥ ६६॥ दोहा॥ वीससहस्त्रएवौजेअ
वदपठहितिहतठार॥ निगमवचनसुनिकैचलेमसंस्गानकीओर॥
६७॥ चौपाई॥ तहीसमेधरमराजाना॥ विधवतिदीयोदिजनकोदाना॥ पुनहय
कोनपदईपददछिना॥ दूपदसुतासंगदोउमुदतमन॥ पुनिहयकेमव
परफेस्योकर॥ वजतवेनतीकरीपुधिष्ठर॥ पुनिब्रह्मासावित्रीसाथा
केस्योहाथपतुरंगममाथा॥ मततदेवगवरीसंगाथा॥ मसविदनपए
फेस्योहाथा॥ पुनिहुकमदिसहूतिनदलतो॥ फेस्योहाथतुरंगममधी
ला॥ इतकाद॥ सचीसहततलेईदूतवकरफेस्योहथभाल॥ सुफलय
तनपकोकरजुसंताजाकरेगुपाल॥ ६८॥ चौपाई॥ जैमिनोवाच॥ चौपाई
जैमिनकहसुनजनमेजयवर॥ जुवहयमषपरकरफेस्योहरि॥ त
वहितुरंगमसीसुहलापो॥ तवपदमापतिनकुलवुलापो॥ स्रापत
पहुंचावचननकुलप्रति॥ पमषगकीभावातुमसमजति॥ कतिको
धुन्योतुरंगसीसस्रव॥ देवकहोमजकोवटतोतसव॥ कवनवातप
हदयविचारी॥ प्रगटकहोभाषौगिरधारी॥ हमरेहृदैसंदेहिमिटाव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रू ॥ रु यहा ये की विधि प्रगट सुनावहु ॥ ७० ॥ दो ॥ नकुल कहो श्री कृष्ण र
प्रतीति मज्ञान तसभ वात ॥ अंतरजामी नाम तुम सकल जगत्ति धिख्या
त ॥ ७१ ॥ चौ ॥ नकुल धर्मे युत्त वचन कहे तव ॥ कृष्ण आदि र वसुरम तु
नि नपसव ॥ श्री: नमित नृपा याप्सि रुवा जप ॥ कहे वचतात सुनरू पद राजा
हु पमन मध्ये तु उप उयो यह ज्ञाना ॥ धेल्प जनन मसा पुना करि जाना ॥ कहहुर
ता है सजु आव र न सम सर ॥ हरि फे स्यो मृवहा प्प कृपा करि ॥ सतयुग त्रे
ता द्वापुर माहां ॥ ऐसा यज्ञ भयो कोऊ नाहीं ॥ उनके तप नम ई गति ऐसी ॥
मैं नहीं पावो स्ल गति तैसी ॥ ७२ ॥ दो ॥ वह यज्ञ ऊंचे है सुरपुरी तहते फेरि गिरावहि ॥
मैं पज्ञ चोगा ठौर रक्षिः जन्म मरन पुन नाहि ॥ ७३ ॥ चौ ॥ आगे यज्ञ कीऐ जग मैं
जे हृत ॥ कृष्ण प्रताप देवता थे तिहृ ॥ हय पति सम ते स्वर्ग ते ऊ गऐ ॥ भोगो भो
गमि रत पुन भऐ ॥ यज्ञ करत वहु फल के काजा ॥ पावहि स्वर्ग समेत पतिःवा
ता ॥ धर्म यज्ञ पऐ हरि स वधाना ॥ ठाढे विघमान भगवाना ॥ धर्म सुता तके दान
सु फल हेित ॥ करत यज्ञ कीट सकल मद्धे तजि चित ॥ सुजु को हरि आपुनी गति दीना
हा पाप फेर करुणा वहु कीना ॥ ७४ ॥ दो ॥ जेऊ आऐ इहि यज्ञ पर सुरि वन पन
र नापि ॥ वांछित फल पा घो सभ मन दुरस नभ रस जुपाल ॥ ७५ ॥ चौ ॥ भऐ स
मन के कितल विवनासा ॥ सु फल भई मन की सभ आसा ॥ धर्म सुत पापन सो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

दकामना॥ सिद्ध भई मन सकल भामना॥ या ऐसे कृति पदारथ चारा॥
करुणा की नी कृष्ण मुरारा॥ मन वांछित फल सो ज्यों जिन जिन॥ सो सो
फल पायो तिन तत छिन॥ मैया वो गा सुकृति परम गति॥ यह वचु क
हत तुरंगम पदु पति॥ ७६॥ दो॥ सो सुत रे हलाइयो यह निमित्त जो पा
जान॥ तुम जानत हो सकल विधि न कुलक हो भगवान॥ ७७॥ चौ॥ वहुर
कहत हैं हैं जी पहरषत॥ जो ईह मारा ता तजु गत पति॥ जाइ समा वेगा
यह तहा॥ तत्व स्वरूप कृष्ण को जहा॥ जिन का तत्व निकस के जावै॥ जाइ
कृष्ण के विषे समावै॥ जन्म मरन दुःख हो इ विनासा॥ वहुरि न होइ गर्भ मे
ह वासा॥ सो जो ऐसे यज्ञ के वाजा॥ जो गति उन पाई यदु राजा॥ सो गति मै
पावो नही तैसी॥ सवर हू मन पाई गति जैसी॥ ७८॥ दो॥ तप करी पशु नर दे
वता पाइ सुरपुर ठौर॥ सो गति मै पावो नही जो गति पावत और॥ ७९॥ चौ॥
उन पशु सब मखुज तन पावति॥ ता ते उन पाई ऐसी जगति॥ धर्म यज्ञ मख हर
ह ऐस वधाना॥ सतति वंत भाप भगवाना॥ शिव सुर रुद्र ति एतव पति तिन
को मे॥ वह तो सुरगण मे है ती मे॥ प्र पति मएलो गउन केतिन॥ फल के
निमित्त यज्ञ की नो जिन॥ गणधर्प सजे ऊकप गाऐ॥ ते सुरपुर को धाव

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

त्रिभऐ॥ करतापञ्चतुरंगससमेता॥ तपप्रावतिमऐअमरनकेता॥८॥दो॥
मैरहुजातिपावौनहीअम्बकहूतमननमाहि॥ पञ्चकरतहिधर्मसुतके
लसंगातिकहुनाहि॥८१॥दो॥ धर्मजकरतपञ्जनिहकामा॥ संकलपेम्या
करिभगवान॥ सोप्रभसकलग्यननतेन्यारा॥ अविनाशीगतिअमअपारा॥
जिहकामसीनवधर्मिभगतहरि॥ पञ्चपुन्यमनसेगाहएकरि॥ पञ्चपुन्यह
रलेवहितेजव॥ अपुनीजतिमजदेवहितेतव॥ अपुनेतनमजदेहससमा
ई॥ पानेउत्तमगतिनाहिकाई॥ तातेअप्रधुनतहैसासा॥ नकुलकहेसुनप
भजगदीसा॥८२॥ जैमिनिरुवाच॥दो॥ जैमिनकहेसुनजनपतिभूपावदेह
हतुरंगा॥ चल्योअजानिकेकुडपरअतिहरषतअंगअंगा॥चौ॥ वैसंतरके
कुसकहोतव॥ महाप्रबलज्वालाकीजैसव॥ हरिवचसुनतअगनतिःकार
ला॥ कीनीप्रलैकालकीज्वाला॥ पुनिलागेअभिमंत्रणसिवबर॥ पठिअछि
तडारततुरंगपर॥ अभिपरनेकोचल्योतुरंगा॥ वेदवचनसुनहृदेउमं
गा॥ कृसभीमप्रतिवचनवषाना॥ बडुलीपेरहीपोसविधाना॥ धूमसरिब
मैशिवकदालभ॥ उठेसहतरिबवीससतिस्रसभ॥८४॥दो॥ वेदमंत्रपठो
मारहरिशिवअद्भुततहपअंग॥ अग्निकुंडमधिपरनकोहरषतचल्योतुरंगा॥८
प॥चौ॥ धमसरिशिवमाहाहरिलीनी॥ हरषततैकरुणाहपकीना॥ प्रिथीप्रसे
रेहपकेकाना॥ निकसीहृदचधारसवेधाना॥ निकसाहपअवननवेधारा

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सम लोगन की नातै कारा ॥ सुरेश बन्न पन्नग चर जग मन नमन ए ॥ दै बहीऐ
विस्मै हैं गए ॥ मन घोर धरते दूध अस्त्र अस्त्र तन ॥ धंन्य धन्य सम कहै स्याम
घन ॥ श्रोता तत मन चोद धर्म अस्त्र जब ॥ निकट कुंड चलि गए वा जतन ब॥
८६ ॥ दो ॥ करुणा करि हरि वदन पर कर फेर्यो घनस्याम ॥ हरबत हौ चेतु
रे गत बहुरि कै कीनी प्रणाम ॥ ८७ ॥ चौ ॥ कृदि पर्यो हरि पग सिर मंजारा ॥ सु
दति की पालो गन तै कारा ॥ आज्ञा कर तम एं जगदीसा ॥ काट द्रुम भी मतु रंग
मसीसा ॥ भीम अस्त्र अस्त्र कासी सु उतारा ॥ सकल तक बंध भयो घन सारा ॥ अस्त्र अस्त्र
सीस उठि चल्यो आकाशा ॥ दिव्य क्रांति जगमगत प्रकाशा ॥ सीस सु सु सापो सु
जै मति तब ॥ अस्त्र अस्त्र कबंध कपूर मयो सब ॥ तिः कपूर कौ ठ मन लागे ॥ सुर
पबन पति हो एमनु राजे ॥ ८८ ॥ दो ॥ तिः अब सरत हुलोक मैं हो तम पांजै
कार ॥ व्यापर हीं चढ्यो प्रभाव न महा सुगंध अपार ॥ ८९ ॥ चौ ॥ उठी सुगंध
महा प्रकासा ॥ पूरर हौ ब्रह्मंड गंधव सा ॥ सातदीप नव खंड जगत सम ॥ सु
परही सोरम जल थल नभ ॥ तप्रभ ए सम लोक गंध सु ॥ अस्थावर जंगम
सुगंध सु ॥ पुण्य संपूर्ण धर मन मह वाला ॥ कीनो सुफल नंद के लाला ॥ पाबक
कुंड देठ पाजन परि ॥ सम कपूर सो परर हो महि ॥ उसु उसुं हो मकरत सरद
बत ब ॥ धम जात ब्रह्मंडु खंड मब ॥ ९० ॥ दो ॥ तप्रभ ऐ सम वास कटि सात दीप

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

नवखंड ॥ जैजैकरहैसुररसकलपूररह्योब्रह्मंड ॥ ८१ ॥ चौ ॥ कृस्नधरम
कोदईवधाई ॥ धर्मजपस्याचवर्णिपदुराई ॥ हर्षमानद्रौपदीभईमन ॥
धासैयोसीसकृस्नकेचरननन ॥ पुनधर्मजमुखवचनउचारा ॥ सुफल
पसप्रभकीयोहमारा ॥ दईविधाईसभनधरमपति ॥ जेतकखेटववववधमा
हीपति ॥ भएआनंदमानत्रैलोगा ॥ मंगलभएविनसगएसोगा ॥ स्यामकुंड
कोकरीप्रदछन ॥ प्रमुदितहृदेकृस्नअरुरुकमनि ॥ ८२ ॥ दो ॥ करीप्रदछन
कुंडपरिदृपदसुतासंगराज ॥ कहतपरस्परहरिकीयोसफलहमारेकाज ॥
८३ ॥ चौ ॥ तहपाछेअनेकपतिचवापति ॥ कीनीकुंडप्रदछनहरखपति ॥ करतकुं
डवंदनाजोरकर ॥ प्रपत्तिहोततोईवांछतिवर ॥ तीनवारदीनीपरदछन ॥ सभ
नकुंडचौफेरमुदतिमन ॥ कुंतीअरुद्रोपदीपृथपुर ॥ भीमसेनअरुविजेमद्र
तमन ॥ नकुलअरुवरसहदेवविचछन ॥ सकलपरेश्रीपतिकेचरनन ॥ पुन
करजोरधरमकोताता ॥ विनतीकरीसनकुतगताता ॥ ८४ ॥ दो ॥ करनकरा
वनहारतुमजगतईसजदुराज ॥ रहहुसोपूरनकीयोअसअसमोधकृत
तकोदोषमिटायो ॥ पुनहरिचरननपरहपद्रव
कोज ॥ ८५ ॥ चौ ॥ जोत्रघातकोदोषमिटायो ॥ जगतमाहिहमकोजसदीनो
ताप्यो ॥ कृपाधारपूरनतुमकीनो ॥ कीनोपूरनपुएपप्रकाशा ॥ तुम
कोटजन्मअघकीयोविनासा ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ३६ ॥
५००
अस्वमेध

दरसन तें भए कृतारथ ॥ सद्य भए हम रे सभ स्वारथ ॥ तीन लोक के
सुर रिषराजा ॥ तिन को दरसु भयो यदुराजा ॥ दूषे वै सव भगत तुमा
रै ॥ तुम करुणा बहु भाग हमारे ॥ ८६ ॥ दो० ॥ तजु आराधी विरद की सुजस
सकल तुम्ह माप ॥ भगत वछल तुम को कहत सब वचन घन स्याम ॥ ८
७ ॥ चौ० ॥ एह वचन कहत तब धर्म नृपाला ॥ लागो चरन नंदलाला ॥ कृ
ष्ण पग सें न भए धर्मजपरि ॥ लौ ना अंक लगाइ भुज नेंमरि ॥ मनहुं मनो हि
तम पायो धर्म सुत ॥ करुणाकर गुपाल कृपायुत ॥ धर्मज भोजन सिद्ध करा
यो ॥ रिषन नंदित को मुदित जिवायो ॥ तित ने लोक जु रहे सकल पुरि ॥ सभ
को दीयो महा रुपुधि एर ॥ राजा प्रजा सकल नर नारी ॥ धर्मज सभ को दी
यो महा तारी ॥ ८८ ॥ दो० ॥ बहुरि दिजन को दछना दई पुधि एर राइ ॥ प्रजा की नी
वेद विध हरषत हो पसु बपाइ ॥ ८९ ॥ चौ० ॥ चौरासी सहंस्र जे ऊरि षवर ॥
पुष्प मे म्हा इजु रे षेमत पर ॥ तिन्ह उपरांत लाष इक ब्राहमण ॥ तिन की पूजा क
री हरषत मन ॥ विद्यावान सकल बटु करमी ॥ इद्रूजीत दृढ बुद्धि सुधर्मी ॥ १
मुर्धाभिषिक्त एक वसन ने का ॥ तिन को की पानजा इच्च वे का ॥ सभ धर्मज के क
र तम्ह हारा ॥ रिषनहि दिजन को अंत्र नपारा ॥ चौरासी सहस्र रिष जे ऊ ॥ ब उप
धान सभ मन मादित ऊ ॥ ९० ॥ दो० ॥ सहंस चौरासी रिषन मंदित वौ सहसप

स

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

धान ॥ तिन बांध्यो कर कंकण । विधवत वेद विधान ॥ १०१ ॥ चौ० ॥ जे ऊ रिषब बा
स सहंस्र प्रधाना ॥ तिन को दीयो नृपति जो दाना ॥ इक इक रिषन वदानद्दी
यो तव ॥ सुन ऊ सम्रबन दैवरनंत हेम अब्ब ॥ पंकपीठ षंध जुदई दुधजुत ॥ कं
चुन सींग रूप खुर ग्रदभुत ॥ तांब्र पीठ सं पुत ग्रभवरनी ॥ वछ न सहत दी
नी वैतरनी ॥ दस गज दस रथ दस तुरंग वर ॥ कंचन बीस भार दीने भर
हे गै रथ ग्रस वाबु संग गाथा ॥ धर्म जदी ये वेद विधसाथा ॥ १०२ ॥ दो० ॥ चौस
ठ सहंस ग्रब रंग बी ग्रगण महावर धान ॥ ऐक सार षीद छना तिन कोप्द
ई राजान ॥ १०३ ॥ चौ० ॥ गाइ ऐक सो वेद विधाना ॥ दुरद ऐक सो ग्रति बलवा
ना ॥ इकु सौ रथ पुनि सो ऐक तुरंगा ॥ ऐक भार कंचन तेतः संगा ॥ इक इक दई र
तन की माला ॥ हरष तहं चे धरमभूपाला ॥ इक इक रिषब को पहन पर्दार
नो ॥ कहि मुष स्वस्ति रिषन सभ ली नौ ॥ धर्म जब ऊपर रिषन पग लागा ॥ देव
नती करी हाथ अनुरागा ॥ तापाछे धर्म जभूपाला ॥ वैठे ताह यज्ञ हय यश
ला ॥ १०४ ॥ दो० ॥ मनि मुकता छल को तहा धर्म ज कीयो सवारु ॥ जोई चाहे ले
वे सोई नृपति कह्यो हितु धार ॥ १०५ ॥ चौ० ॥ मुकता रतन जोई जिह भायो ॥ मुद
त मान तिन सोई उठायो ॥ जोई जोई जिय मन साधा ऐसो ऐ ॥ सो तिन मन को
छित फल पाऐ ॥ दीनो विधवत दान युधिष्ठर ॥ कीये पद संन रिषीअन के जबै

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥३४॥
५·१
अस्वमेध
तुज ५५

र॥ प्रश्न की पाजन मेजैन पतुव॥ यह तव तौ तम्र जकज जैमिन अव॥ पावक
प्रबल तनुतिः काला॥ कीनी प्रलै काल की ज्वाला॥ कै से अग्नि कुंड महि गयो॥
अस्थि दहत तन त्रास न भयो॥ १०६॥ दो॥ सो अस्वरछत अग्नि महि तनु जरयो
कति जाइ॥ नहीं डुलयो वो ध्यान कछु जैमिन कह प्रगटाइ॥ १०७॥ चौ॥ सं चरु
अब रमन सो हमरे मन॥ कहौ प्रगट सुनहि रष अबु नन॥ सुगनति लोग तुरे
गज पुर बर॥ है जे सुर रथ बम्र पति नारनर॥ कै सै तिन को दीयो अहारा॥ सभा
को धर्म ताति इक बारा॥ विदाकी ऐ ए बन पतिः अवसर॥ जैमिन मुज को कहौ कु
पा करि॥ ता पाछै कीनो हत ए जैसे॥ पंडसुतन को भाव अजु तैसे॥ कहिव तातु सभ है
पधए भाउ॥ प्रेरन भयो इक सत माधवा उ॥ प्रमान॥ १० ॥ दो॥ इति श्री भारथ
पवरीअश्व मेध पर्वनी सत्र मेदयो पच टहिक न पूरण जान॥ १०८॥
स मस्ता॥ जैमिनोवाचः॥ जैमिन कहै सुन जुप प्रथवी पत्ता॥ उत्तर प्रश्न कहत
हौ तुज प्रति॥ हौ भयो अग्नि तुरंग आपको॥ मन वच क्रम हत ए के प्रताप सो॥ छा छे
त हौ अब भग वाना॥ ह्रत वंत कृष्ण सवधाना॥ पत्नी धरम को आपर खो हत
र॥ श्रीपति सद सहाइ पृथ्वी पर॥ फेरयो हय पवहि हा छ कृपा करि॥ अश्व विदेहत
भयोतिः अवसर॥ तेजु अग्नि को जल सम जान्यो॥ तातै हय जीय त्रास न आ
न्यो॥ १॥ दो॥ तेजु कृष्ण को जहित तहां सभ ठास्यो समाइ॥ तेजु तुरंगम अग्नि
को सम सरली पाप मिलाइ॥ २॥ चौ॥ जो कछु की पाचाहत जग ताता॥ अचरज त

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हानु छि यह वाता ॥ पुनश्च बकहत उचार निगम सभ ॥ वालमीक आदि वकदास्तम
वेद मंत्र है पवसिक पैली नो ॥ ता ते आ मशवद नहीं कीनो ॥ ३ छ्या श्रीभगवानके आर
जैसें ॥ ह यह ही पेहर्ष करी विधते सें ॥ सभ घट मद्दि आप कुं गिरधारी ॥ तिह ते को
ऊ ठैर नहि न्यारी ॥ जो हरि कहत होत है सो ऊ ॥ आज्ञा मेटि सकत नहि कोऊ ॥ ३
दो ॥ जो इच्छा गिरधरन की सोई करत दिन माहि ॥ करन करावन हार हरि ताते आ
चरज नाहि ॥ ४ ॥ चौ ॥ पुनन्नप तुम पूछी विधि ऐसें ॥ होत इकत्र रसोई कैसें ॥ ऐ
सें करत सम जौ नित प्रति ॥ ल्यावत बीनलता वनासपति ॥ नृप प्रकार करत चा
स ठ विध ॥ तैल पाक छत्रीस करत सिध ॥ पुन घृत पाक ऐकसौ ऐका ॥ ताकौ की
पान जाइ विवेका ॥ चावल दाल सभी विना जा ॥ नित प्रति वनत रसोई राजा ॥ पंचा
मृत भावत अति मन सों ॥ मुष्याद्दूध कौ पाक सम न सौ ॥ ५ ॥ दो ॥ ऊजल वीर वाना
वही आभा चंद्र समान ॥ षट रस भोजन नृपति गृह सद्ध होत हि निसान ॥ ६ ॥ चौ
सूर जतें ल्या ऐ वल टोहा ॥ विधसों राषी वीच रसोई ॥ होवे जोई परोसन हारा
जो त्ति गै आपन करे अहारा ॥ तप रदूप दसु ता वरनारी ॥ बैठत सोई परोसनि
हारी ॥ सव कों देवे बांछित हारा ॥ षटरस भोजन विविध प्रकारा ॥ प्रथम सभ हा
प सभन कों देवै ॥ ता पाछे निज भोजन लेवै ॥ इह प्रकार भोजन सभ करही ॥ मु
ष ते जै जै शब्द उचरही ॥ ७ ॥ दो ॥ जो विध रची अनादि सि धवर तदिन राजा रसोई ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५·२
अश्वमेध

कुद्दास नवदुरौ जेऊं यज्ञ न त्यावत सोई ॥ ८ ॥ चौ० ॥ जैमिनि कहै सुनहु भूपति
वर ॥ पछ्याप्यात सप्रम कृपा करि ॥ उत्तर तुम सो मैं जु भाष्यो सब ॥ क्षितिहु उपवरित
कृष्ण कहि तिके सुनव ॥ दई दच्छना पठवतो बनन ॥ पढ़ि तराऐ पुन सकल तन राधप ॥
पुनि धर्मजु की नोइ सनाना ॥ तन दुकूल पहिरे विधनाना ॥ कृष्ण चरन को ध्या
न हीये धरि ॥ नृपति यज्ञफल मन न सदा पाद ति ऐ ॥ तन मन सकल समर्पण
कीनो ॥ करि संकल्प हाथ हरि दीनो ॥ ९ ॥ दो० ॥ हरि कर मन न स्यो यज्ञफल मे
त) हति पृथिवर राइ ॥ पुनि अश्व प्राप्त न धर्म सूं वे ठो हो पर सुषपाइ ॥ १० ॥ चौ० ॥ पूछ
मेध मंत्र की पूजा हटि ॥ प्रमुदित कीन्हे दक्षिणा हतु धरि ॥ हरि कै कन बांधि ध्यान
पहला ध्या ॥ राखे पाछ तु धरम के माप्या ॥ पहिराइ उर मोतिन माला ॥ बज्र रक्त टि
बांध्यो भूपाला ॥ पुनि हरि धर्मज के पग लागा ॥ भगत वल्लह हरि हीये अनुरा
गा ॥ धर्मतात पग कृष्ण परस्यो जब ॥ अचरज भये निरषि रिषन सब ॥ तीन
लोक के जु रे महीपति ॥ तिन मधि को ऊ न सम सरस्वी पति ॥ ११ ॥ दो० ॥ धर्मता
त के चरण परिसि रुधा स्यो जगदीस ॥ तै सो कौन त्रिलोक मधि जो न हि न्यावे
सीस ॥ १२ ॥ चौ० ॥ सेस नाग भेटा मणि त्यायो ॥ धर्मतात को सीस नवायो ॥
को ऊ न पदुर द भेट लै आवे ॥ आइ धरम सुत सीस नवावे ॥ को ऊ न पार
त्यावै भेट तुरंगा ॥ को ऊ त्यावै रथ द्रद उमंगा ॥ को ऊ त्यावै कंचन मुक

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

तामन ॥ लागति आइ धरमसुत चरनन ॥ पुनि आज्ञा कीनी नंदलाला ॥ सुन
हु श्रवन धरि धर्म भुआला ॥ जेतक लोग यज्ञ पर आए ॥ ते सभ अब वचहि
पठाए ॥ १३ ॥ दो० ॥ धर्म तात तुम यज्ञ पर आइ जुरे त्रैलोक ॥ भेट दीजी
ये सभन को जो जिह लायक होइ ॥ १४ ॥ चौ० ॥ पुनि धर्मज प्रति वचन कहे हरि ए
सुनहु श्रवन दै नृपति युधिष्ठिर ॥ कहहु न भेट इन को दै हो हम ॥ सभ को कु
रे सनाथ दृष्ट सम ॥ दृ तन को हरि आज्ञा कीनी ॥ तिन को विधवत ताइ सभ दी
नी ॥ सो समवेल है द्रोण और रथ ई ॥ ता को लेआ बड इह अवसर ॥ जाकार सु
अचवत अघ नासहि ॥ कोट जनम के किलविष बनासहि ॥ ततछिन दृत तत हो
चलि गए ॥ द्रोण और पद प्राप्ति भए ॥ १५ ॥ दो० ॥ सो समवेल ल्याए तहरस
को छोत तत काल ॥ ते अचवायो सभन तें को आज्ञा सु नंदलाल ॥ १६ ॥ चौ० ॥ सो
मवेल को जल इह अवसर ॥ अचवयो सभन मान आज्ञा हरि ॥ पहमटा दीनी
पदुराजा ॥ पूरन कीये सभन के काजा ॥ जो जैसी मन सा धपआ यो ॥ तिः ते सो
वंछित फल पायो ॥ निर्मल देही भई सभन की ॥ अभिलाषा पूरन भई मन की
दीनी ऐसी भेट रमापति ॥ सभ लोगन को दई परम गति ॥ बहुरि युधिष्ठिर दी
ऐ भाउ धरि ॥ दीनी भेट सभन को हितु धरि ॥ १७ ॥ दो० ॥ नृपति युधिष्ठिर भेट दी
तो ब की ये सभ लोग ॥ जो जैसी लायक कहु ता सो दीनो तिः पाग ॥ १८ ॥ चौ० ॥ जाको

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५२
अस्वमेध

भेटउ चाहति त्या जैसी ॥ ताको दई पुधि एर तैसी ॥ काहू न पवकै मुकट बधित
मणि ॥ काहू कै कुंडल छबि दिन मणि ॥ किन हू सूद्रिका जडत रतन वर ॥ की
न हूं कौ दीये शस्त्र विवध करु ॥ कीन हू वस्तर दीऐ विवध गति ॥ किन हू कों
दुकूल मन न हरब त ॥ आऐ जे ऊ पजन पर तो गा ॥ सभ को दी पो ऊ तो जुः योगा
४६ ॥ दो ॥ धर्म तात अस्रम रनवस नदीय अनेक प्रकार ॥ ताबे रिष राजे सकल व
ऊत करी मनुहार ॥ २० ॥ चौ ॥ एबम्‌ पति सभ भऐ मद हित उर ॥ लोगे की रतिकर
न पुधि एर ॥ पुन धर्म जन मु ष वचन उचारे ॥ मन वच क्रम हम सदा सति हारे ॥ तु
म हम को करि ली पोसना ष्या ॥ मृग ज पर कृपा करी पदुना ष्या ॥ आगे पजन राम को
पो तैसा ॥ पह म बश लपते इन हतै सा ॥ म हा पाप वन म जर घुराई ॥ पछ ऊ
ए ब वश एके जाई ॥ २१ ॥ दो ॥ आगे पजन व ठनै की ऐ तिन का माहा प्रताप ॥ पषा-
शक्ति पह म पजन हरि की पो कृपा करी आऐ ॥ २२ ॥ चौ ॥ आगे ते जगा भऐ वि ष्या ता ॥ पर
हमारा धंच्छितु माता ॥ हम रे म ब को पसु वरन ऊ कत ॥ उप मा पो ऊप पजन की पोर
घुपति ॥ पछ देवी पौरि ब वक दात भ ॥ तिन के देष त पजन भऐ सभ ॥ वडन की ऐव
र पजन पराक्रम ॥ तिन के आगे तु छ पजन दम ॥ हम तो केवल हीन अना ष्या ॥ का
मकृपा करि भऐ सना ष्या ॥ पह तो पजन प्राव की नो हरि ॥ हम को पजग पसु दी पो
कृपा करि ॥ २३ ॥ दो ॥ धर्मि तात की षै नै सुनरि षन्न पभऐ कृपाल ॥ मुब तै सभ लो
गक हन धंन्य धरम मम्‌ पाल ॥ २४ ॥ चौ ॥ व चन क हत भऐ सुन ऊ पुधि एरा ॥ प

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

थामे तो सहाइ तुमरी हरि आगे यज्ञ व उन कें भए ॥ सत युग त्रेता मधि क एगा
ऐ ॥ वजत यज्ञ होत ते तिह त काला ॥ अब द्वापुर को अंत भए पाला ॥ धर्मवान सभ लो
ग होत तत व ॥ कलि युग लागो आदि न पति अव ॥ ऐसे समे यज्ञ तुम कीनो ॥ भव
न व तु र्दश मै जस लीनो ॥ सुफल जन्म तुमरा अब भयो ॥ मन का सभ संशय म
मिट गयो ॥ २५ ॥ दो ॥ यज्ञ कीयो कलि आदि तुम परन धर्म प्रतिपाल ॥ विद्यमान ठा
ढे जहा ईष्ट कनन प्रभ नंद लाल ॥ २६ ॥ चौ ॥ सत युग त्रेता द्वापुर माही ॥ ता दिन क
पट होत कछु नाही ॥ ऐसे यज्ञ समा जन हो सव ॥ कलि युग आदि अंत तम अब द्वा
पुर ॥ यज्ञ अंशी शरमा कीयो युधिष्ठर ॥ यज्ञ सुफल सेशो सभ गयो ॥ कृपा
धाश हरि करणा कीयो ॥ तप तम भए चौदह ब्रह्मंडा ॥ तीन लोक रहि पते नव खंडा
महा प्रसन भे स्व करि र ल यो ॥ तीन लोग तुमरा जस भयो ॥ २७ ॥ दो ॥ सुफल यज्ञ
तुमरा भयो जुव हए करी सहाइ ॥ सावधान ठाढे भए करुणा कुए पदु राइ ॥ २८ ॥
चौ ॥ वऊए युधिष्ठर वचन उचारे ॥ सुन ऊए वा श्वर प्रभ हमारे ॥ मुझे तुमकौं कं
वनु दी पादाना ॥ अपुना करि कै वेद विधाना ॥ सकल लछमी मस्त तराज की ॥ परी
छुती धरि यज्ञ काज की ॥ वेद आसम हक कें फल दीनी ॥ तामु ऊ लछ ऊहा तेती नी ॥
यज्ञ सता सहि मरुतु की पेज व ॥ कहो आदि जन कें मरुत तन पर्सत व ॥ ले जाव ऊ तुम पह
के चन न सव ॥ संख्या करन हित दे उदान अव ॥ २९ ॥ दो ॥ कंचन ले दिज वर चले तत क
सको उठाइ ॥ जौन हो सके उठाइ धन द्विज गए तिः छाइ ॥ ३० ॥ चौ ॥ आस वचन मुझ

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

कीयेप्रमाना ॥ कै वचनु जाइ उहातें म्माना ॥ सोई द्रुमद्दान मुकुंको नो ॥ अपुना
करि तुमकों मकरंद दीनो ॥ यह तौ है सब द्रव्य तुमारा ॥ कैसे फल है पुण्य हमारा ॥
हम तो कहू जीतन हि त्याए ॥ पराभव भिपद जाइ उठाए ॥ सो मन तें संसा नही
जाई ॥ तातें सब सकहें एक बराई ॥ मो सो कहौ जथारथ बाता ॥ जिहतें होइ सकल र
कुसलाता ॥ ३१ ॥ इति श्री भुवनेश्वरोवाच ॥ दो ॥ सुनत क्रन्त पति यह बात कों संसा लें क्रनमा
न ॥ हमकों बार ई की सभ संग पर्श सम दई दान ॥ ३२ ॥ चौ ॥ आहुन तो वल हीन अभी
मारी ॥ नप वलवान महाभुज भारी ॥ हम ते बकु रिब सौं टलई उन ॥ [illegible] दान
करी तिन पुनपुन ॥ तद्यपि भव सम हमारी न हु भई ॥ यदपि वार ईका सौ हि दई ॥ म
रुतन्न पति हमकों न ही दीनो ॥ सके उठाई सोई हम लीनो ॥ सोई हमारा ज्ञान हम
लीयो ॥ रह्यो सु पृथ्वीपति कों भयो ॥ ३३ ॥ दो ॥ जेतक धन है महीपर पृथ्वीप
ति का जान ॥ संसै दूर कर क्रन्त पति वेद वचन परमान ॥ ३४ ॥ चौ ॥ सुफल दान न
भयो तुमारा ॥ सत्य मान ले वचन हमारा ॥ सावधान ह्वै पढुराई ॥ सधर्म
ज तुम्ह सदा सहाई ॥ रकुन्त पराजकरे मतु पावै ॥ सर्व सुतातें मोहर नव बावे
जु कर संपदा उन भव पन कीप ॥ द जो [illegible] सत [illegible] हरषत हीय ॥ [illegible]
नीपति तुम इह कालो ॥ संसै दूर कर क्रभव पालो ॥ तुम राय जस कल राजा [illegible]
ढाढे [illegible] सवधाना ॥ ३५ ॥ इति श्री पृथ्वीपति उवाच ॥ दो ॥ हम होते वल हीन कृत
कह [illegible] वर्तमान ॥ पृथ्वीपति कैरव [illegible] ते दुरयोधन वलवान ॥ ३६ ॥ चौ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

पुन हम निरधन न होत अधीना ॥ चिंता विकिआ तरसाति दीना ॥ सगान हमरा को
ऊ हेत तव ॥ करत्तिन रादु रनिरब लोग सव ॥ करुना कीनी प्रीति रच्यो रनि ॥ हु
मको स्रात रदी तदु बासुन ॥ श्रीपति अघ नाव कर दु संभारयो ॥ हमर दुष मन न माहि
विचारयो ॥ पुच्य मै हरि वलभद्र पठायो ॥ कृपा धाम हम तन पर आयो ॥ पच्छप
हम महो लेदीनो ॥ दुरयोधन ते हलधर लीने ॥ ३१ ॥ दो ॥ हलमा पु धवल भौ जवे
धरे नील लई उठाइ ॥ पांच पच तव ही दी घेदु रुयोधन अमृपाइ ॥ ३८ ॥ चौ ॥ पुन
करु एक रभी पति आयो ॥ पजराजसू तव कृति विता यो ॥ इहां संभु कीनो मह हार
भारथ ॥ सरवा की ये हम सेरे सम स्वारथ ॥ पुन हू चरन पुनप ही वतायो ॥ अग्रमे
धवर यसल कराया ॥ द्विः प्रसाद दरसन तु मभयो ॥ चरन पर रहि सम भस कटगयो
वजत है रमा पद यह मारी ॥ करु एक रजार धर सभटारी ॥ दुर वासा को आप वा
न वारयो ॥ लाबाग हू मो तरत उवारयो ॥ ३९ ॥ दो ॥ जल कर रत्नाकर हमरी आ
भगवान ॥ विलम न कीनो एक द्विन अपना विरद पहिचान ॥ ४० ॥ चौ ॥ करनक
रावन हार रग पाला ॥ कीनो पजनसप नंदलाला ॥ अग्रअण्गासु कीनो जव
निकस्यो तब तुरंग मकौ तव ॥ तबकूप मच्छि ताइस मानो ॥ पुण्य सुफल तव
हो हम जानो ॥ दान पुण्य सम कसोई वर ॥ अंगीकार करत जाको हरि ॥ सुफ
ल हेत जपतप व्रत तव ही ॥ मानलेत रुचे सो हरि जव ही ॥ करतम कृत सो तो
दाना ॥ सोन ही मानलेत भगवाना ॥ ४१ ॥ दो ॥ पच्छ में सजपतप कर तसरधा सो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ ५३ ॥
५.५

सर्व स्नान ॥ दान करत ही यमा उधर स्नान लेत भगवान ॥ ५२ ॥ चौ ॥ जौ न ही
स्नान लेत पदु राजा ॥ यज्ञ होम जप तप किं काजा ॥ अपुनो यज्ञ भाव हरि कीनो
अश्वमेध सम ताहु भाव मन लीनो ॥ महा ऋषीश्वर तुम नच जैसे ॥ दरसन परसत
भयो विधि ऐसे ॥ अंगीकार करत हरि जाको ॥ सुफल यज्ञ जप तप व्रत ताको
यज्ञ फल श्री पति सब धाना ॥ लेन देन हारे भगवाना ॥ धर्मज्ञ वचन कहे थ
रम्भो उपरन होत इक सत्त माध्याउ ॥ ५३ ॥ दो ॥ इति श्री भारथ [illegible] अश्वमे
ध व्याख्यान ॥ [illegible] उपदेश कलप रन जान ॥ ४४ ॥ ११ ॥ समस्त
जैमिनी वाचः ॥ [illegible] ॥ जैमिनि कहे सुनहु नृप अब वीपत्ति ॥ सुनन नृप वचन क
हरि बहुर बखत ॥ पुनि ऋषीश्वर वचन उचारे ॥ सुनहु धरम सुत भगत मुरा
रे ॥ कलि को मोद यज्ञ तुम कीनो ॥ तीनो लोक माहि जस लीनो ॥ सुफल भयो
यह यज्ञ राजाना ॥ हाठे जहा कूरम सवविधाना ॥ इह विधि पुनि यज्ञ न होई ॥ के
र उपाइ करे तिन कोई ॥ कलि मे कन्या दान महा वर ॥ पुण्य होत हय यज्ञन को
सम सर ॥ १ ॥ दो ॥ सरे धा सो अति विधि सहित करहि कन्या का दान ॥ कलि मह
अश्वमेध पुण्य यह [illegible] परवान ॥ २ ॥ चौ ॥ भाव रहत कन्या को दाना ॥ पुन्य
न फल तधरम की हाना ॥ स सो करत जनम के बेरी ॥ काहु कन्या उपजा गेह
मेरे ॥ हम री लघु वड़ जतले जाई ॥ चिंता करमन मह पछिताई ॥ ताते पुन्य फल तत
न ही तिनके ॥ पह विचार उपजत मन जिनके ॥ पितर दंडु जैसे जगभरही ॥ दिन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

संपुको ऊ श्राद्ध नहीं करहीं ॥ काहू कौ पितु भ्राता मरई ॥ तौ न करम सो घ्रम नस
रई ॥ ३ ॥ दो० ॥ कृपा करम की नौ न कछु जग गुड़ि करतोधकार ॥ सपनेंनं दाश्र
पु नेश्र वनमन नमहि करत विचार ॥ ४ ॥ चौ० ॥ कृपा की पेवन्त रहत नहीं आवे ॥
जग महि लोग अमी रक्ष पावे ॥ श्रद्धा रहत श्राद्ध नहीं करहीं ॥ निहफल जा
त दंड व तुम मरई ॥ नहि पञ्चत महा रपितरन कौ ॥ जो ई कृत कर रहै ऐसे मन
सां ॥ पितर दंड पकौ उच्चरहीं ॥ सरधा रहत श्राद्ध जे ऊ करहीं ॥ तैसे दंड
कंन्पका दाना ॥ जन्म तहां संसा जो यमाना ॥ करत जनम की नीधन हीना
सुता दान दें जो यपद्धि ताना ॥ ५ ॥ दो० ॥ भाव रहत ते ऊ दें वहां आहक कन्यका प्र
न ॥ ताको पुण्य फल ते न कछु मन वच क्रम जी ये जोन ॥ ६ ॥ चौ० ॥ सात वरष
की कंन्या होई ॥ आहदा नु दें वैति हकोई ॥ रहत तक कल्पना हृदे भाउ धरै ॥ तौ
व हदान पजाके समसर ॥ सरधा सहत कन्यका दाना ॥ पुण्य फल तहै पञ्च
समाना ॥ कलि महि कंन्या दान पञ्चसम ॥ सत्य वचन मान नम मन वच क्रम ॥
व फुररे वन वच कहे धरम पति ॥ कलि युग माहि पञ्च को पाव धपित ॥ पुस्तक
व डा प्रमान न भयो आवै ॥ कुस कृपा कर सु फल भयो सव ॥ ७ ॥ दो० ॥ पुत्र वराह
म लव कुस ए वर नाहि हे ग कलि माहि ॥ अवर वली त्रिऊ लोग महि इन के सम स पना
हि ॥ ८ ॥ चौ० ॥ तुम सर बाय न तइ हलोई ॥ पाहे भयान आगे होई ॥ कलि महि वर
न हिगे दो ऊ बीना ॥ लव कुस पुध पञ्च यमता हा ॥ उपमा ताहि पञ्च की पाते ॥ क

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥श्री॥
५०९
अश्वमेध

लिके आदिक कोयो तुम ताते ॥ तुम ही ये सब होइ पदु राजा ॥ ताते भयो संपूरन का
जा ॥ यह तो बात कठिन अचरज मानी ॥ कलि युग आदि यज्ञ भयो विधिवत ॥१
कलि युग को व तात युधिष्ठिर ॥ पूछत ले कृष्ण भा बात है सति हरषि ॥९॥ श्री भगवा
नोवाच ॥ दो० ॥ कृष्ण कहै सुन धर्म सुत जो भावत पूछ राइ ॥ कलि युग महिमा अ
पराध वड अपरन की यो नही जाइ ॥१०॥ चौ० ॥ सुन धर्मज कलि युग के लछन ॥
होवहिंगे सव लोग कठर मन ॥ पुरतना मते वे नही कोइ ॥ यद्यपि महा साधु
मन होई ॥ तजि दे वहिंगे श्रुति की रीता ॥ हृदे मध्य मे पाप से प्रीता ॥ वूर दुहि
गे विषयन के माही ॥ गो ब्राह्मण पूजहिं तुनाही ॥ होइगा है नम मना जुधरव
रे ॥ उपता वहिंगे कोटजत तनकपर ॥ हो वहिंगे सम मनपति द ए मति ॥ चौ इहि
गो सम पूजा मएमति ॥११॥ दो० ॥ कपट हृदे सर धारहिं मनै महिमा ति अभिमा
न ॥ मल्लीन देव तक हि सकहिं मति मधि मे सम ज्ञान ॥१२॥ चौ० ॥ सुनहिं न वेद
पुरा पद्धति को मानै नही ॥ हरि जस सुसुनहिं न कान जहि एभांउ न चाव ही ॥१३॥
चौ० ॥ कीर्तन कथा सुनै न ही काना ॥ जु ऐ खेल करहिं मद पाना ॥ वेश्या रत ता
म सवसि लोका ॥ हृदे कहं मना नित प्रीति सोगा ॥ वस्त्र पे हरि जग भले कहा व
ति ॥ काम नामित वेस्पा गहि जा वहिं ॥ कलि महि न ही पति व्रता नारी ॥ होवहिं
गी सभ पाव भिचारी ॥ पर पुरषन उठि आ पद आवहिं ॥ पाप वृद्धि न ही नेक
लघा वहिं ॥ परनर भा गहि तजि अपु नेपति ॥ पति सो वर अभारपु रुषन रति

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

१४ ॥ दो० ॥ हावभाव पर पुरुष सों मोहति करि शृंगार ॥ लाज रहित नग्न हग्न हु
फिरत ऐसी कुल की नारि ॥ १५ ॥ चौ० ॥ पुनि ऐसे लछन कुल माही ॥ पुत्र पितु के
माने नाही ॥ पिता पुरातन वस्तु करैं तन ॥ सुत पहरै दुकूल नैं तेन तन ॥ इस्त्री
जित तउ पजर्हि गेतातता ॥ नहि मानहिं गे वचपित मातो ॥ तो जिद वहिंगे कुल की रीता
सदा पाप रत बुध विपरीता ॥ नित परनिंदा सदा उचारहिं ॥ दुएन की उपमा
वऊ करहीं ॥ जुरै रति विभचार करत चित ॥ भालोन का दुःख को वांछति चित ॥ १६
दो० ॥ आज्ञा मानहिं नारि की तजिदे वपितु मात ॥ कलि युग महि सुन होन पति ऐसे
जन महि तात ॥ १७ ॥ चौ० ॥ खेती वो वहिंगे ब्राह्मण तव ॥ चार वरन को दान लेहि
सव ॥ ले वहिं गृह सूत की आहारा ॥ कृपा करम तजि भये विकारा ॥ कलि महि स्त्री
पुरुष सी सलग हि ॥ अशुद्ध स्नान विध वति नहि जागहि ॥ वैसे धर्म बरं काम न क
रहीं ॥ सदा पाप चित वस महि रहहीं ॥ कलि महि कपटी लोग अपार हैं ॥ काहू के
नहीं तत्व विचारा ॥ ऊंच नीच की सेवा करहीं ॥ लोभ न भित धरम परिहरहीं ॥
१८ ॥ दो० ॥ भ्रम तु लोभ के सुता को अंग भंग पति देहि ॥ करहि विचार न पाप वर
ति कन्या दै धन लेहि ॥ १९ ॥ चौ० ॥ अंगीकार करहि विधवा को ॥ दूदै न ज्ञान उप
जै न हीं ताको ॥ ती घर जस्वला के भोजन कर ॥ लेति निशंक रति हीये भाव धरि
देवहिं गृही साख निरादर ॥ वाद गवाहि तिजन्म पदारथ ॥ कवहूं न द्याप रत
देव हिंकू ही साषनिरादर ॥ वादग वाहि जन्म पदारथ ॥ कवहु न दयापरत
उरमाही ॥ परकार जस्ह रेते ऊना ही ॥ आप स्वारथ वि भस्म भए मति ॥ से

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५०

अश्वमेध

वहिन ही साधन अभ्यागत ॥ धनवांन ताकूं ठाढो होवै जब ॥ ताकै सचाकर
हि लोग सब ॥ २० ॥ दो ॥ सो चेतनि रधन को सकल जू ठ्यक है वषान ॥ सो तप
ताअरु भ्रात सो वैर कर हि अज्ञान ॥ २१ ॥ चौ ॥ सो लहै मोरस सुसरे सो प्रीता ॥
रैद्री वसि है विधिव परीता ॥ कलि महि उपजहि वडुत वियाधी ॥ पांडु त होव
हि अस्य भउपाधा ॥ कलि महिमा वरगुन हि हि अपारा ॥ वरनत है ताते गुरु पंचवी
स्रारा ॥ कृष्ण कहि सुन वचन हमारा ॥ सुफल यज्ञ नप भयो तुमारा ॥ ऐसा
पुन्य तुमारे समसर ॥ कपि न सकै को ऊ कलि के अवसर ॥ ऐसे वचन कहि ने
दलाला ॥ विदा कीये सुर ये भूपाला ॥ २२ ॥ दो ॥ कपि प्रनाम महरि के चल सुर ईश
नप निजधाम ॥ आयो धाम अपुने गज हथ चलते आज्ञा घनस्याम ॥ २३ ॥ चौ ॥ वडुरि कृ
ष्ण मुष वचन उचारा ॥ सुफल यज्ञ नप भयो तुमारा ॥ द्वापर युग को अंत तुम
त्यागव ॥ कलि को आगम भयो सुनउ सब ॥ जे ऊ महाभारथ के लोका ॥ सम
वैकुंठ माहि सुष लोगा ॥ हम तुम वहुरि मिलहिगे तहा ॥ भारथ जुध ऊ गये जन
पजाहा ॥ वर वैकुंठ जाए तज सोगा ॥ तव हरि एसम उतार कै लेऊ ॥ २४ ॥ जन
मेजय वाच ॥ दो ॥ जन्मेजे पूछो प्रस्न जैमिन कहो प्रकार ॥ सुन यह वचन अव
र जभयो सो भूमंड जनिवार ॥ २५ ॥ चौ ॥ कृष्णचंद भी व्याकुल तऐसे ॥ सो हृदण को
ए कहो मुझ ते से ॥ पांडव तन के कार जप्रीपति ॥ कीने सद्ध सकल ही घेह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रबत ॥ पुनिकत ऐसे वचन कहे हरि ॥ आज हह तुम राधारमण मुकुंद सरवरी ॥ ए
सो राधारमण आज हहन कृष्ण उतारा ॥ र ह्लाकी नौ विधि वध प्रकारा ॥ सो राधारमण कवन मा
हि कहि ति दीजै ॥ जे भिन्न मुनि करुणा मउ कीजै ॥ हमरे हृद संदेह मिटावउ ॥
सभव तां तकरि कृपा सुनावउ ॥ २६ ॥ [illegible] ॥ जे भिन्न कहे सुन कृत्व
तप्र [illegible] प्रवृत्ति या तांहि ॥ सकल वतां तक होतु जे सुन कृष्ण आवन दिग जांहि
२७ ॥ [illegible] ॥ पूर्व जन्म पितरतु मरे नत्व ॥ पांचो ब्राह्मण कृतेन राधिप ॥ कांशी
सहि वस ते बहु करमी ॥ नित हरि सिमरत माहा सुधर्मी ॥ कातक मास
क्रिड ब्रत धारे ॥ आवहि जगंनंनाथ के द्वारे ॥ ऐसा इष्ट की यो मन मांही ॥ ज
गंननाथ कार्तिक मै जांही ॥ पांचो मस्तर सकु गा पन वर ॥ इनकौ गान सुन
तरी जत हरि ॥ दुपद सुता ब्राह्मणी होत तव ॥ वध वाऊ तां धरम पालत सब
२८ ॥ [illegible] ॥ जे गंननाथ पर प्रवन कि सुनि तसिमरत भगवान ॥ विधवा कमजु
तिकहि तन प्रति पालति रुचमान ॥ २९ ॥ [illegible] ॥ तीरथ परटन कर तनित्याना ॥ दती
ति करिकै कैदाना ॥ प्रति पाल तवेद की रीता ॥ निशदिन हृदै कृष्ण सा प्रीतो ॥
पचा पाकै कै दाना ॥ प्रति पालत वेद की रीता ॥ निशदिन हृदै कृष्ण सांप्रीतो
हृदै उम जाहरि के गुन गावति ॥ की तैन करि आकृष्ण री जावति ॥ पांचो ब्राह्मण
वितरतु मारे ॥ आवहि जगंननाथ के द्वारे ॥ पांचो कां पीते चलि आवहि ॥ दर
सुनपर सवे [illegible] ॥ व बि प्रचंत ने मपुनि कीनो ॥ जगंननाथ चरन

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

प०८
अश्वमेध

नचितु दीनो ॥३॥ दो० ॥ कंसी ते चलि आवही पांचौ कातिक मास ॥ उतरहि
आरम आनंद सौं गंगहि द्रौपती निवास ॥३१॥ चौ० ॥ पांचौ दिन हरि की नैन करही
जगनाथ के गुन उचरही ॥ द्रुपदसुता तिः आरामकारी ॥ पांचौ विषे प्रीति
समधारी ॥ द्वारे जहि जगन्नाथ के ॥ हरष तही ये द्रौपदी सब के ॥ दिन की
कीर्तनु करहि मदति मन ॥ सकल रैन पुनि करहि जागरन ॥ जगन्ना
थ को अति प्रसंन करै ॥ आवहि वरुण द्रौपदी के घरै ॥ मदति द्रौपदी पाक
करावै ॥ पांचौ आदर सहित तृप्ति पावै ॥३२॥ दो० ॥ पांच रुक्को सेवा करै मदति
द्रौपदी नाथ ॥ दासी जिम ठाढी रहहि पै परमति तुधार ॥३३॥ चौ० ॥ लागी ल
गन द्रौपदी के मन ॥ उनन त न्यारी होत न इक छिन ॥ दिन साथ जावे हरि
द्वारे ॥ लोग लाज तजी पक छुन विचारे ॥ कविन ताचे कावि हरि गुन गावै ॥
निसिदिन ऐसी भाँति वितावै ॥ लोग कहि रै दिन जन के संगा ॥ हरि रसि मरनमें
लागी रंगा ॥ यह पांचौ दिन जावि चरति जहाँ ॥ ताके साथ द्रौपती तहाँ ॥ निरख
लोग सभ हृदै विचारनि ॥ यह ब्रह्मा एति भली विभचारनि ॥३४॥ दो० ॥ निंद्रा
प्रगटी नगर महि लोग करहि उपहास ॥ पांच हि जन संग ब्राह्मणी क्रीड़ा
करति विलास ॥३५॥ चौ० ॥ निंदा करन लोग सभ लागे ॥ पांचौ को वह दिन ऊन
हि खागे ॥ [illegible] माही ॥ तन स्यंय

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

सुकर तीविभचारा ॥ ब्राह्मण पांच एक पहनारा ॥ पांचो दिन जब एमी ब्रा
ह्मण ॥ पांचो सो पाकी समपूर्णता ॥ वि
हलणी ॥ निंद्रा लोक सु न कहिनि जप्र व णी ॥ पांचो सो पाकी सम पूर्णता ॥ वि
हलणी ॥ निंद्रा लोक सुन कहनि जस्त्र वणी ॥ हर्ष सोग उपजै कछु नाही ॥ हरि कीर्तन
धवा तीपकी बुधि विपरीता ॥ हर्ष सोग उपजै कछुनाही ॥ हरिकीर्तन
धवा ती पकी बुधि विपरीता ॥ ३६ दो ॥ दुष लोगनि द्रा करहि पति सुन पावहि कान
नि तिकरहि कनाही ॥ ३६ दो ॥ दुष लोगनिद्रा करहि पति सुनपा वहि कान
नितिकरहि कनाही ॥ ३७ ॥ चौ ॥ कार्तिक मास वती
जगन्नाथ के द्वार परि निर्तक रहि पुनगान ॥ ३७ ॥ चौ ॥ कार्तिक मास वती
जगंनाथ के द्वार परि निर्तक रहि पुनगान ॥ पांचो ब्राह्मण छठमी नारा ॥ सभव
तम चोपत व ॥ भीषम के दिन पांच रहत व ॥ पांचो ब्राह्मण छठमी नारा ॥ सभव
तमचोपत व ॥ भीषमके दिन पांच रहत व ॥ पांचो ब्रतधारे
मदतिभी षम ब्रतु धारा ॥ जैमिन कहे सुन ऊन्पम हा वनन ॥ पांचो ब्रतधारे
मदति भीषम ब्रतु धारा ॥ जैमिन कहे सुन [illegible] वनन ॥ पांचो ब्रतधारे
मदतिभीषम ब्रतु धारा ॥ जैमिन कहे सुन [illegible] ॥ कीर्तन करत है चे हितु वाउ ॥ पां
तु मपि तरन ॥ जगन नाथ द्वारे वरठाढे ॥ कीर्तन करत है चेहितु वाउ ॥ पां
तुमपितरन ॥ जगननाथ द्वारे वरठाढे ॥ भीषम ब्रत भाषत प्रा
वारे न जाग्रन की नो ॥ हरि पद पंकज मे चितु दीनो ॥ भीषम ब्रत भाषत प्रा
वारे न जाग्रन कीनो ॥ हरिपद पंकज मे चितु दीनो ॥ ३८ ॥ दो ॥ पांचो नि शदिन द्वारपर रहे
ति जै सें ॥ मन क्रम वच धारे इन तेसे ॥ ३८ ॥ दो ॥ पांचो नि शदिन द्वारपर रहे
तिजैसें ॥ मनक्रम वच धारे इनतेसे ॥ ३९ ॥ चौ ॥
इर हे स विधान ॥ न सुगान ताग्रन करहि ता बकी पो भगवान ॥ ३९ ॥ चौ ॥
इरहे सविधान ॥ न सुगान ताग्रनु करहि ता वकी पो भगवान ॥ गोगोव
पप श्राचमन पप मर्दिन कीनो ॥ दिनन दूसरे तन कदंध लीनो ॥ गोगोव
पपश्राचमनपप मर्दिन कीनो ॥ दिनन दूसरे तनकदंध लीनो ॥ पांच मत पांच मर्दि
सली नो तीसरे दिन ॥ चौथे दिन सा मली जी सो तिन ॥ पांचमत पांचमर्दि
सलीनो तीसरे दिन ॥ चौथे दिन सामली जी सोतिन ॥ पांचो नि शदिन दीपक जारे ॥ वि
न ली चे ॥ हितु चितु धार करम सभक्ति चे ॥ पांचो नि शदिन दीपक जारे ॥ वि
नलीचे ॥ हितुचितु धारकरम सभक्ति चे ॥ हे प्रसनद
धवित जगन नाथ के द्वारे ॥ निहकाम नाम जाति कीनी वए ॥ हे प्रसनद
धवित जगननाथ के द्वारे ॥ निहकामनाम जातिकीनी वए ॥ इन मज के सब दीयो ॥
रसनदा ना हरि ॥ तव [illegible] साहिव वाया ॥ इनमज के सबदी यो ॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५.८
अश्वमेध

नचितु दीनो ॥ ३ ॥ दो ॥ कौसी ते चलि आवही पांचो कातिक मास ॥ उतरहि
आरन्य आनंद सो गृह द्रोपती निवास ॥ ३१ ॥ चौ ॥ पांचो दिज हरि की सेन करही
जगनाथ के गुन उचरही ॥ द्रुपदसुता तिः आरती करी ॥ पांचो विषे प्रीति
समधारी ॥ द्वारे ते हरि जगंनाथ के ॥ हरखत हृदय ये द्रोपदी सब के ॥ इनकी
कीर्तनु करहि मदति मन ॥ सकल रैन पुनि करहि जागरन ॥ जगन्ना
थ को सु तिप्रसंन करै ॥ आवहि ब्रह्म ए द्रोपदी के घर ॥ मदति द्रोपदी पाक
करावै ॥ पांचो आदर सहित जिवावै ॥ ३२ ॥ दो ॥ पांच ब्राह्मण की सेवा करै मदति
द्रोपदी नारि ॥ दासी जिम ठाढ़ी रहै हरि पै परम प्रीति सु धारि ॥ ३३ ॥ चौ ॥ लोग नि
गान द्रोपदी के मन ॥ उन तन प्यारी होत न इक छिन ॥ इ जन साथ जावे हरि
द्वारे ॥ लोग लाज तो पक हु न विचारे ॥ कविना चेका विहरि गुन गावे ॥
निशिदिन ऐसी भांति वितावे ॥ लोग कि कैरै इन जन के संगा ॥ हरि रसि मगन म
लोग उरगा ॥ यह पांचो दिज व्रत जहा ॥ ता के साथ द्रोपती तहा ॥ निरख
लोग सभ हृदे विचारनि ॥ यह ब्रह्माणी भली विभचारनि ॥ ३४ ॥ दो ॥ निंदा
प्रगट नगर महि लोग करहि उपहास ॥ पंच दिजन संग ब्राह्मणी चोडा
करति विलास ॥ ३५ ॥ चौ ॥ निंदा करन लोग सभ लागे ॥ पांचो को यह दुहिन ठन
हि लागे ॥ यह पांचो का पांचो दिज आहा ॥ उतरे हि या के गृह माही ॥ तन संपंय

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

हुकरतीविभचारा ॥ ब्राह्मणपांचएकपहनारा ॥ पांचोपद्विजवछमीब्रा
ह्मणी ॥ निंद्रालोकसुनखुनिजश्रवणी ॥ पांचोसोपाकीसमप्रीता ॥ वि
धवातीपकीबुधिविपरीता ॥ हर्षसोगउपजैकछुनाही ॥ हरिकीर्तन
नितकरहिकनाही ॥ ३६ दो० ॥ इछलोगनिंद्राकरहि प्रतिसुनपावहिकान
जगंनाथकेद्वारपरि निर्तकरहिपुनगान ॥ ३७ ॥ चौ० ॥ कार्तिकमाससवती
तमपोतव ॥ भीषमकेदिनपाचरहितव ॥ पांचोब्राँह्मणछठमीनारा ॥ समभत
सुदतिभीषमव्रतुधारा ॥ जेभिनुकहेसुनऊनपमश्रवनन ॥ पांचोव्रतधारे
तुमपवितरन ॥ जगननाथद्वारेपरठाढे ॥ कीर्तनकरतहरीचेहितुवाढे ॥ पां
वारेनजाग्रनकीनो ॥ हरिपदपंकजमेचितुदीनो ॥ भीषमव्रतभावतअ
तिजैसे ॥ मनक्रमवचधारेइनतेसे ॥ ३८ ॥ दो० ॥ पांचोनिशदिनद्वारपररहे
ररहेसविधान ॥ नत्यगानन जाग्रनकरहि ताबकीपोभगवान ॥ ३९ ॥ चौ० ॥
पपश्राचमनपपमहि नकीनो ॥ दिनदसरेतनकदीधलीनो ॥ गोगाव
सोलीनोतीसरेदिन ॥ चौथेदिनमोमलनीसोतिन ॥ पांचोचम्रतपांचमहि
नलीपे ॥ हितुचितुधारकरमसभकीपे ॥ पांचोनिशदिनदीपकजारे ॥ वि
धवितजगननाथकेद्वारे ॥ निहकामनामभगतिकीनीवए ॥ हिपसंनद
रसनदीनोहरि ॥ तबश्रीपतिमनमाहिविचारा ॥ इनमऊकोसबदीघो

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

॥ [illegible] ॥
५०८
श्वमेध
[illegible]
नुज ६०

अपारा॥४०॥दो॥ भगत करौ नित कामना मांगत तौ याकहु नाहि॥ इनकौ दै
हौ परम सुष कछु सक हौ मन माहि॥४१॥चौ॥ इन तौ मोहि महा सुष दी
नौ॥ कीनी भगति मोहि मन लीनौ॥ इम इनकौ सुष देउ जगत पति॥ हे प्र
भु मन मोहि आज्ञा कीनी हरि॥ कुंती उदर जनम तुम लेवहु॥ मन क्रम वचन कृता करि मु
झ सेवहु॥ पांडव कुल महि करहु प्रकाशा॥ पुरवौ गातु मेरी सब आसा॥ यह
[illegible] भगति अभिरामा॥ लेवै जन्म द्रुपद नप धामा॥ रूप भगवती याकौ
होई॥ याकी गति लषि सकै न कोई॥४२॥दो॥ रूप भगवती का इस सहि विचरी
गौ जग माहि॥ लोग रीत समुझे कै [illegible] गति पतत होइ गौ नाहि॥४३॥चौ॥ तुम करु
हौ पावन गृह वासा॥ मैं जादव कुल करौ निवासा॥ सब दैहौ तुम विविध प्रकारा
कीरति करै सकल संसारा॥ हम सों भगति करौ तुम हित धरि॥ [illegible] तुम मेरी
[illegible] हम मेरे सिर पर॥ जादव कुल मैं हम अवपु धारौ॥ [illegible] तुम मेरा तब ही उ
तारौ॥ [illegible] यह दैहौ जब॥ हरि आज्ञा कीनी ऐसी तब॥ आज्ञा मान
दै हतभगत ते॥ पांडु नृपति गृह हतुत पति भये॥४४॥दो॥ [illegible]
नैम सकल कुंती उदर मैं झार॥ पांचो प्रगट तहीं की या पांडव कुल जैकार॥
४५॥चौ॥ जन्म लीया द्रोपती नारी ए वर॥ रूप भगवती द्रुपद राज घरि॥ ब
[illegible] महा तेक त्रदेह धरि॥ महा पराक्रम सूरम भगति हरि॥ जादव कुल महि ह

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

रिआवतारे॥ सवदुषदंडसतनकेटारे॥ जैमिनुकहैसुनुजन्मेजराजाना॥
पूर्वजन्मसेतेभगवाना॥ वचनकहतभयेकृष्णधर्मसेप्रीति॥ यहकहिका
रजसभकीयेपातुकमाति॥ पूर्वजन्मभगतितुमकीनी॥ तुमरीप्री
तिमानमनमेलीनो॥४६॥ दो॥ पांचोमासब्रतकीयेतुमहितहृदैधरिपा
ति॥ कीर्त्तनुनिसिजागनुकीयोजिकहुवेदकीरीति॥४७॥ चौ॥ मोललली
पोतुमसमजेभगतिकरे॥ ससकहतहैंमनवचक्रमकरि॥ ऐकुरात
काभजनुतुमारा॥ सोइरिएमझआजहैनउतारा॥ वनमेंबदेवोगा
तुमकोंआति॥ श्रीवैकुंठधाममेंदियेहरिबात॥ हपिमेंबवचनसुनैध
रमजनव॥ चलेद्वारकाओरकृष्णतव॥ भ्रातनिसहिततवधर्मभूपाला
लागेचरनसकलनंदलाला॥ श्रीपतिसहितद्वारापुरिकोंगमनो॥ यहकहिकेत
संपतिसंपूरनभयो॥४८॥ दो॥ जैमिनुकहैसुनुजन्मेजयपतिपुरुषएकवता
मातेही॥ जिकहुकीयोपूरवजनमसुनुजप्रतिभाकोजानत॥४९॥
चौ॥ जैमिनुकहैसुनुजन्मेजयपतिवर॥ जोयहकथापावनहोयेतु
धर॥ सुनेंभ्राववनेहूमनवचक्रमकरि॥ तापरहितवपसंतसदाहि
र॥ ताकोफलवरनोंसधिलीजै॥ जनमेजयसनिश्रोजायकीजै॥

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

औद समन्द करैं जो दाना ॥ षट सुगढुर वेद विधाना ॥ सो तद्दो पुम
मन से होई ॥ सो फल या के सम नहीं होई ॥ अठसठ तीरथ को इस
नाना ॥ सो फल या को नहीं समाना ॥ ५० ॥ दो० ॥ जुवती सो कुरूप तन मही
तो लहु बड़े नर को इ ॥ कन्या कोट जो दान दे या के सम नहीं होइ ॥ ५१
चौ० ॥ पिंड गया पावप विधवत भरई ॥ है गौ महादान बहु करई ॥ अश्वमे
ध को पुन्य महा बरि ॥ जो नर रूप है सु नै ही यो हितु धरि ॥ तत छिन चा
र पदारथ पावै ॥ अश्वमेध सुन मन चित लावै ॥ धर्म अर्थ पुत्र मो
क्ष कामना ॥ तिः प्रापति तिः हृपक तसु ना ॥ अर्थ न मिलतु सुनै न रु
को ई ॥ तिः को हतु तके प्रापति होई ॥ पुत्र अर्थी वेग सुत पावै ॥ बुद्धा र्थी
बुधिवंत कहावै ॥ ५२ ॥ दो० ॥ धन अर्थी धन पावई जस अर्थी जे
कार ॥ पाप नास वेहितु तसु नै कलि विष भ्रष्ट हम कार ॥ ५३ ॥ चौ० ॥
लोगन को वहु अर्थ सुनावै ॥ सो नर मुक्ति पदारथ पावै ॥ जो नर
पुरन सु नै हितु धरि ॥ कोट जनम के पाप जाहि हरि ॥ गर्भ यान व
ह रो नहीं आवै ॥ यो नर अश्वमेध गुण गावै ॥ देहि अरोग सदा रु
कल्याना ॥ हृपकत कथा सुनै निदाना ॥ षट दस नै हितु सों नित जोई

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

ताकरसुफल जग मैं सि हु लो ई ॥ प्रापति होत अनंद भगत हरि ॥ अ
वर पुन्य पाके न हों सम सरि ॥ ५४ ॥ दो० ॥ अस्व मेध [illegible] महा व
र कुरुक्षेत्र दक्षिणा आप ॥ सुजस पृथिएर के दीये को तो भगत
प्रताप ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ कलियुग आदि अंत अव द्वापुर ॥ अस्व मेध क
त योग पृथिएर ॥ करी सहस्र नंद के लाला ॥ भगत न वछल प्रभ दी
न दयाला ॥ पुनि ऐसो मख करै न कोई ॥ पर यपि तीन लोक पति हो
ई ॥ यज्ञ पृथिएर स्यफल भयो तव ॥ सावधान ठाढे हे धर रजव
तीन लोक सुर रिषि न पंच आऐ ॥ करुणा कर परमो कृसम तुलाऐ ॥ न२
ही तो यज्ञ कठन इह अवसर ॥ पट एकी यो कु पाक रे गीरधर ॥
५६ ॥ दो० ॥ प्रगट भयो तिउ लोग महि यज्ञ धरम भं पाल ॥ पटन को
यो कुपा करि टहिक न प्रभ नंदलाल ॥ ५७ ॥ चौपई ॥ टहिकन कव जला
ल पुर वासी ॥ दुपधर मनंद लाल उपासी ॥ पिता रंग [illegible] सत [illegible] ना
मा ॥ जात चोवरा कुल [illegible] रामा ॥ सभै पाइ कर रंग यो [illegible] ॥ ह
पक नभी बाकरी तहां ही ॥ प्रथमे संसकृत [illegible] ति सुनली नी ॥ ता१

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

५११
अश्वमे
घ
गुजे ६१

याके भाषा वर कीनी ॥ चौपई ॥ और दोइ सूरा प्रभु भवानी ॥ कृपा करी
कालका भवानी ॥ अदभुत चोप्यो भई विशाला ॥ करुणा कीनी श्री
नंदलाला ॥ ५८ ॥ दो० ॥ सुनि मन मुदित नसु धर्म भई भाषा वनी रिसाल
हृपकृत ग्रंथ सकल की पोटहि कन प्रभ नंदलाल ॥ ५९ ॥ कृपे
यष्पा वुद्धि अनुसारी कृपा वरणन ही पहर्षित ॥ अश्वमेध ग्रंथ भारग्रं
षकवि कृत अलपमति ॥ कहु उकत वल वुद्धि कहु कपरकृत हरिनी
नी ॥ वानवीन अक्षर प्रवीन पोथी प्रभ कीनी ॥ नंदलाल की कृपा
सो हृपकृत की भाषा करी ॥ कवि टहित कन प्रभ जन सुधकर रहु जहाँ चूक
वरनन परी ॥ ६० ॥ दो० ॥ इति श्री भारथ पाप वृते श्री अश्वमेध धर्म विधान ॥ कवय
श्री ॥ ६१ ॥ इति श्री महाभारथ पर्वे
हट हृकन पूरण पाच हत भाषा पुरामाना ॥ इति श्री महाभारथ पर्वे
धर्मसुत पाप्यान्ये कृष्ण केति कभीम ॥ धर्म परम अश्वमेध पर्व
तेमिन जन मेजा सम्वादे ॥ दा भी सौदा प्पापति का मन ॥ वहत्र भाष्य
पा ॥ २२ ॥ सम सु ॥ संपूरणं समाप्तं सुभं भूयात ॥ संवत १८८३
भतीका श्रीकम सुदी तीती पा ॥ लिषतं गुसाई इन्द्र गिरजी ॥ जमनागिर
पठनार्थ पसु सुसा ने जमिसेर मध्ये सुभं भूयात

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

SKM 117/90

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative

CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative



CC-0 Shri Krishna Museum. An eGangotri-Vedic Bharat Inititative